

অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

(প্ৰথম খণ্ড)

সাধাৰণ সম্পাদক

শোভা ব্ৰহ্ম

সম্পাদক

বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকা



विद्ये वेद्ये पराये

আনন্দৰাম বৰুৱা ভাষা-কলা-সংস্কৃতি সংস্থা

অসম

Asamīyā Sāhityar Burāñjī. Pratham Khanda (History of Assamese Literature, Volume I), edited by Bisweswar Hazarika and published by Dr. Prafulla Mahanta, Director, Anundoram Borooah Institute of Language, Art and Culture, Assam

- প্ৰকাশক : সঞ্চালক
আনন্দৰাম বৰুৱা ভাষা-কলা-সংস্কৃতি সংস্থা,
ৰজাদুৱাৰ, উত্তৰ গুৱাহাটী, গুৱাহাটী- ৩০
- প্ৰথম প্ৰকাশ : ডিচেম্বৰ, ২০০৩
- মূল্য : ৩৫০.০০ টকা (শোভন সংস্কৰণ)
২০০.০০ টকা (বিদ্যাৰ্থী সংস্কৰণ)
- মুদ্ৰক : ডাউন টাউন কম্পিউটাৰ, অৰুণোদয় পথ,
অমিতাভ কুটীৰ, শ্বাইচ গেট, ভৰলুমুখ, গুৱাহাটী - ৯

আবিলেকৰ দুআষাৰ

অসম আৰু ইয়াৰ চুবুৰীয়া অঞ্চলৰ থলুৱা ভাষা, সাহিত্য, কলা আৰু সংস্কৃতিৰ ক্ষেত্ৰত গৱেষণা আৰু চিন্তা-চৰ্চাৰ বিকাশ সাধনৰ উদ্দেশ্যে, অসম চৰকাৰৰ দ্বাৰা স্থাপিত *আনন্দৰাম বৰুৱা ভাষা-কলা-সংস্কৃতি সংস্থা* ৰ কৰ্মক্ষেত্ৰ যথেষ্ট বহল। সংস্থাই ভালেকেইখন অনুসন্ধানমূলক আৰু গৱেষণামূলক আঁচনি ৰূপায়ণ কৰি আছে। যিবোৰ কামত এতিয়ালৈকে কোনোও হাত দিয়া নাই অথচ থলুৱা ভাষা সাহিত্যৰ বিকাশৰ ক্ষেত্ৰত নিতান্তই প্ৰয়োজন তেনেধৰণৰ কামৰ আঁচনিকেই সংস্থাই হাতত লবলৈ যত্ন কৰি আহিছে। গধুপ আঁচনিৰ ভিতৰত ছটা খণ্ডত অসমীয়া সাহিত্যৰ এখন বহল বুৰঞ্জী প্ৰণয়ন অন্যতম। বুৰঞ্জীখনৰ প্ৰতিটো খণ্ডই যিহেতু স্বয়ং সম্পূৰ্ণ গাঁতকে প্ৰকাশ কৰাৰ ক্ষেত্ৰত ধাৰাবাহিকতা ৰক্ষা নকৰি যিটো খণ্ডৰ কাম যেতিয়াই শেষ হব তেতিয়া প্ৰকাশ কৰাৰ ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰা হৈছে। ইতিমধ্যে ষষ্ঠ আৰু দ্বিতীয় এই খণ্ডদুটা প্ৰকাশ হৈ গৈছে। প্ৰথম খণ্ডটো পঢ়ুৱৈৰ হাতত তুলি দিবলৈ পদূলিমুখত থিয় দিছোঁহি।

অসমীয়া সাহিত্যৰ এখন বহল বুৰঞ্জী প্ৰণয়নৰ আঁচনিখন গ্ৰহণ কৰা হৈছিল ১৯৯১ চনত, সংস্থাৰ সাহিত্য আৰু অনুবাদ উপসমিতিৰ অনুমোদন ক্ৰমে। সমিতিৰ ফালৰ পৰা সঞ্চালকে অধ্যাপক ৰঞ্জিত কুমাৰ দেৱ গোস্বামীক এখন আঁচনি যুগুতাই দিবৰ কাৰণে অনুৰোধ জনায়। অধ্যাপক গোস্বামীয়ে যুগুত কৰা আঁচনিখনকেই বহল ভিত্তিত আয়োজন কৰা পণ্ডিত লেখকসকলৰ এখন সভাই সকলো দিশ আলোচনা কৰি গ্ৰহণ কৰে আৰু সেইমতেই কামত আগবঢ়া হয়। পঢ়ুৱৈ সমাজৰ সুবিধাৰ কাৰণে অধ্যাপক গোস্বামীয়ে যুগুতাই দিয়া মূল আঁচনিখনৰ দ্ববহ পূৰ্ণ পাঠ তলত তুলি দিয়া হ'ল —

ଅନନ୍ତରାମ ମାନ୍ବିତ୍ୱ ଟ୍ରଷ୍ଟି

ଆରମ୍ଭ
(ଆରମ୍ଭନିତ ତଥା ଟ ୧୫୭୦ ଟଙ୍କା)

ସ୍ୱତନ୍ତ୍ରତା
(ଟଙ୍କା ୧୫୭୦ ତଥା ଟଙ୍କା ୧୫୭୫ ଟଙ୍କା)

ପ୍ରତିଷ୍ଠା
(ଟଙ୍କା ୧୫୭୫ ଟଙ୍କା ଟଙ୍କା ୧୫୮୦ ଟଙ୍କା)

ବ୍ୟବସାୟ
(ଟଙ୍କା ୧୫୮୦ ଟଙ୍କା ଟଙ୍କା ୧୫୮୫ ଟଙ୍କା)

ନିର୍ବାହ
(ଟଙ୍କା ୧୫୮୫ ଟଙ୍କା ଟଙ୍କା ୧୫୯୦ ଟଙ୍କା)

ଅନ୍ତରାଳ
(ଟଙ୍କା ୧୫୯୦ ଟଙ୍କା ଟଙ୍କା ୧୫୯୫ ଟଙ୍କା)

|| ଅନନ୍ତରାମ ଟ୍ରଷ୍ଟି ଟ୍ରଷ୍ଟି-କର୍ମ-ମଣ୍ଡଳ, ଅନନ୍ତରାମ, ଓଡ଼ିଶା ||

অসমীয়া সাহিত্যৰ ইতিহাস (প্ৰথম খণ্ড)

A comprehensive history of Assamese literature in five volumes that will serve as a major work of reference for years to come

ক'ৰ বঁটাৰ ইতিহাস ?

অসমীয়া সাহিত্যৰ ইতিহাসৰ ২০ খণ্ডৰ ইতিহাসৰ সাহিত্যৰ ইতিহাসৰ
ইতিহাসৰ ইতিহাস

- i) A.C. Bugh (ed), *A Literary History of England*,
London, Routledge & Kegan Paul, 1967
- ii) David Daiches, *A Critical History of English Literature*
(in four volumes), London, Secker & Warburg
Ltd, 1960
- iii) Emile Legouis, Louis Cazamian & Raymond de Vaugnas,
A History of English Literature,
London, J.M. Dent & Sons, 1964
- iv) George Sampson, *The Concise Cambridge History of
English Literature*, London, C.U.P., 1911
- v) Boris Ford (ed), *The New Pelican Guide to English
Literature* (in nine volumes),
~~Harmondsworth~~ Harmondsworth, Penguin
1983

ചരിത്രം അതിന്റെ രൂപം (ഭാഗം 1)

ചരിത്രത്തിൽ ഒരു ചരിത്രം ഒരു ചരിത്രം അതിന്റെ
 ക്രമപരമായ (chronological) രീതി.

(കുറേ രീതി (description) നൽകി, ഒരു രീതി, ചരിത്രം
 ചരിത്രം ക്രമപരമായ രീതിയിൽ ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം.

ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം
 ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം
 ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം
 ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം
 ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം
 ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം

ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം
 ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം
 ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം
 ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം
 ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം

ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം
 ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം
 ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം
 ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം
 ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം ചരിത്രം

୫ ଆଧୁନିକ ଶୁଦ୍ଧିତ ମଧ୍ୟ ସାମାଜିକ ମତ ଧାରା
 ନିରାକରଣ ହୋଇଥିବା ଦର୍ଶାଯାଏ । ଏହାଦ୍ୱାରା ତଥ୍ୟ
 କର୍ତ୍ତା (text) ଓ ସାମାଜିକ-ନୀତି, ଉପାଦାନିତ କର୍ମ
 ଧାରା ମଧ୍ୟମରେ ଏହା ବିବରଣ (narration) ଓ
 ଚଳଣି ଏହି ଶୁଦ୍ଧିତ ଧାରା ।

ଏହି ଟୀକା ମନୋନିତ ହିତାଧିକାରୀଙ୍କ
 ଶୁଦ୍ଧିତ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଡିଜେନା କଥା ନୂଆ ଧାରା
 ଧାରା ଏହା ତାଙ୍କ ଶୁଦ୍ଧିତ ଧାରା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ
 କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଆଧାର ନିତା ନାମ ଏହା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ
 ଏହା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଶୁଦ୍ଧିତ — "an account
 that is at once scholarly and readable,
 capable of meeting the needs of mature
 students and of appealing to cultivated
 readers generally"

୬ ସାମାଜିକ/ଡିଜେନା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଧାରା ଏହା
 ଓ ଏହା ଧାରା ସାମାଜିକ/ଡିଜେନା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ
 କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଧାରା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ମଧ୍ୟମରେ ଏହା
 ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଏହା ଧାରା ।

୭ ଏହା ଡିଜେନା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଧାରା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଧାରା;
 ଏହି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଏହି ଟୀକା ଶୁଦ୍ଧିତ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଏହା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ
 ଧାରା ।

ମେଧବତୀ ଦାମିନୀ

၁။ နိဗ္ဗာန် (အာရုံ) ✓
 ၂။ နိဗ္ဗာန် အာရုံ
 ၃။ နိဗ္ဗာန် အာရုံ
 ၄။ နိဗ္ဗာန် အာရုံ
 ၅။ နိဗ္ဗာန် အာရုံ
 ၆။ နိဗ္ဗာန် အာရုံ
 ၇။ နိဗ္ဗာန် အာရုံ
 ၈။ နိဗ္ဗာန် အာရုံ

നിർദ്ദേശ : 1. വിജ്ഞാപനം മുൻപ്
 ✓ 2. നിർദ്ദേശങ്ങൾ
 3. നൽകേണ്ട തീയതി
 4. തയ്യാറാക്കേണ്ട രേഖാസംഖ്യ
 5. വിജ്ഞാപനം മുൻപ് 3 മാസം മുമ്പായി
 6. വിജ്ഞാപനം മുൻപ്
 7. വിജ്ഞാപനം മുൻപ്

ਪ੍ਰਤਿਪਤ : ੭ ਜਨਵਰੀ ੧੯੭੧ (ਸੋਮਵਾਰ) ✓
੭ ਸੋਮਵਾਰ
੭ ਭੁਵਨੇਸ਼ਵਰ
ਸ਼ਿਵਕੀ ਮਥਾ

2007 : 2007-08-01
 2008 : 2008-08-01
 2009 : 2009-08-01
 2010 : 2010-08-01
 2011 : 2011-08-01
 2012 : 2012-08-01
 2013 : 2013-08-01
 2014 : 2014-08-01
 2015 : 2015-08-01
 2016 : 2016-08-01
 2017 : 2017-08-01
 2018 : 2018-08-01
 2019 : 2019-08-01
 2020 : 2020-08-01
 2021 : 2021-08-01
 2022 : 2022-08-01
 2023 : 2023-08-01
 2024 : 2024-08-01
 2025 : 2025-08-01
 2026 : 2026-08-01
 2027 : 2027-08-01
 2028 : 2028-08-01
 2029 : 2029-08-01
 2030 : 2030-08-01
 2031 : 2031-08-01
 2032 : 2032-08-01
 2033 : 2033-08-01
 2034 : 2034-08-01
 2035 : 2035-08-01
 2036 : 2036-08-01
 2037 : 2037-08-01
 2038 : 2038-08-01
 2039 : 2039-08-01
 2040 : 2040-08-01
 2041 : 2041-08-01
 2042 : 2042-08-01
 2043 : 2043-08-01
 2044 : 2044-08-01
 2045 : 2045-08-01
 2046 : 2046-08-01
 2047 : 2047-08-01
 2048 : 2048-08-01
 2049 : 2049-08-01
 2050 : 2050-08-01
 2051 : 2051-08-01
 2052 : 2052-08-01
 2053 : 2053-08-01
 2054 : 2054-08-01
 2055 : 2055-08-01
 2056 : 2056-08-01
 2057 : 2057-08-01
 2058 : 2058-08-01
 2059 : 2059-08-01
 2060 : 2060-08-01
 2061 : 2061-08-01
 2062 : 2062-08-01
 2063 : 2063-08-01
 2064 : 2064-08-01
 2065 : 2065-08-01
 2066 : 2066-08-01
 2067 : 2067-08-01
 2068 : 2068-08-01
 2069 : 2069-08-01
 2070 : 2070-08-01
 2071 : 2071-08-01
 2072 : 2072-08-01
 2073 : 2073-08-01
 2074 : 2074-08-01
 2075 : 2075-08-01
 2076 : 2076-08-01
 2077 : 2077-08-01
 2078 : 2078-08-01
 2079 : 2079-08-01
 2080 : 2080-08-01
 2081 : 2081-08-01
 2082 : 2082-08-01
 2083 : 2083-08-01
 2084 : 2084-08-01
 2085 : 2085-08-01
 2086 : 2086-08-01
 2087 : 2087-08-01
 2088 : 2088-08-01
 2089 : 2089-08-01
 2090 : 2090-08-01
 2091 : 2091-08-01
 2092 : 2092-08-01
 2093 : 2093-08-01
 2094 : 2094-08-01
 2095 : 2095-08-01
 2096 : 2096-08-01
 2097 : 2097-08-01
 2098 : 2098-08-01
 2099 : 2099-08-01
 2100 : 2100-08-01
 2101 : 2101-08-01
 2102 : 2102-08-01
 2103 : 2103-08-01
 2104 : 2104-08-01
 2105 : 2105-08-01
 2106 : 2106-08-01
 2107 : 2107-08-01
 2108 : 2108-08-01
 2109 : 2109-08-01
 2110 : 2110-08-01
 2111 : 2111-08-01
 2112 : 2112-08-01
 2113 : 2113-08-01
 2114 : 2114-08-01
 2115 : 2115-08-01
 2116 : 2116-08-01
 2117 : 2117-08-01
 2118 : 2118-08-01
 2119 : 2119-08-01
 2120 : 2120-08-01
 2121 : 2121-08-01
 2122 : 2122-08-01
 2123 : 2123-08-01
 2124 : 2124-08-01
 2125 : 2125-08-01
 2126 : 2126-08-01
 2127 : 2127-08-01
 2128 : 2128-08-01
 2129 : 2129-08-01
 2130 : 2130-08-01
 2131 : 2131-08-01
 2132 : 2132-08-01
 2133 : 2133-08-01
 2134 : 2134-08-01
 2135 : 2135-08-01
 2136 : 2136-08-01
 2137 : 2137-08-01
 2138 : 2138-08-01
 2139 : 2139-08-01
 2140 : 2140-08-01
 2141 : 2141-08-01
 2142 : 2142-08-01
 2143 : 2143-08-01
 2144 : 2144-08-01
 2145 : 2145-08-01
 2146 : 2146-08-01
 2147 : 2147-08-01
 2148 : 2148-08-01
 2149 : 2149-08-01
 2150 : 2150-08-01
 2151 : 2151-08-01
 2152 : 2152-08-01
 2153 : 2153-08-01
 2154 : 2154-08-01
 2155 : 2155-08-01
 2156 : 2156-08-01
 2157 : 2157-08-01
 2158 : 2158-08-01
 2159 : 2159-08-01
 2160 : 2160-08-01
 2161 : 2161-08-01
 2162 : 2162-08-01
 2163 : 2163-08-01
 2164 : 2164-08-01
 2165 : 2165-08-01
 2166 : 2166-08-01
 2167 : 2167-08-01
 2168 : 2168-08-01
 2169 : 2169-08-01
 2170 : 2170-08-01
 2171 : 2171-08-01
 2172 : 2172-08-01
 2173 : 2173-08-01
 2174 : 2174-08-01
 2175 : 2175-08-01
 2176 : 2176-08-01
 2177 : 2177-08-01
 2178 : 2178-08-01
 2179 : 2179-08-01
 2180 : 2180-08-01
 2181 : 2181-08-01
 2182 : 2182-08-01
 2183 : 2183-08-01
 2184 : 2184-08-01
 2185 : 2185-08-01
 2186 : 2186-08-01
 2187 : 2187-08-01
 2188 : 2188-08-01
 2189 : 2189-08-01
 2190 : 2190-08-01
 2191 : 2191-08-01
 2192 : 2192-08-01
 2193 : 2193-08-01
 2194 : 2194-08-01
 2195 : 2195-08-01
 2196 : 2196-08-01
 2197 : 2197-08-01
 2198 : 2198-08-01
 2199 : 2199-08-01
 2200 : 2200-08-01
 2201 : 2201-08-01

[illegible]

சென்னை நகராட்சி
9 32.22.20

আঁচনিত উল্লেখ কৰা লেখক-লেখিকাৰ নাম পিছত কিছু সাল-সলনি কৰিব লগা হয়।

ড° প্ৰফুল্ল দত্ত গোস্বামীয়ে এই খন বুৰঞ্জীৰে বৰ্ষ খণ্ডৰ 'সাধাৰণ সম্পাদকৰ ভূমিকা'ত লেখিছে — *বহলভাৱে কবলৈ গলে সাহিত্যৰ ইতিহাসো সমাজ আৰু জাতিৰ ইতিহাসেই হয়গৈ।* জাতিৰ জীৱনৰ পৰা সাহিত্যক সুকীয়া কৰি বিচাৰ কৰিব নোৱাৰি। কিন্তু যিটো যুগৰ সাহিত্যৰ আলোচনাই এই খণ্ডটোত ঠাই পাইছে, সেই প্ৰাচীন যুগটোৰ সমাজ ইতিহাস এতিয়াও সম্পূৰ্ণ পোহৰলৈ অহা নাই। প্ৰাচীন যুগৰ ইতিহাস এতিয়াও মহাকাব্য, পুৰাণ আদিৰ আখ্যানৰ খুটিতে বান্ধ খাই আছে। আখ্যানৰ উপকথা ইতিহাস নহয়। ইতিহাসৰ সমল আখ্যানৰ মাজত গলি-পমি সোমাই থাকিব পাৰে। আখ্যান সমূহ ভাঙি তাৰ ঐতিহাসিক সম্ভাৱা-সম্ভাৱনা বিজ্ঞানসন্মতভাবে পৰীক্ষা কৰি চোৱাৰ কাম এতিয়াও ঐতিহাসিক-গৱেষকৰ অপেক্ষাত। তদুপৰি মহাকাব্য পুৰাণৰ প্ৰাগ্জ্যোতিষপুৰ, কুণ্ডিন, নৰক, ভগদত্ত, ভীষ্মক আদি যে অসমৰ নহয় সেইবিষয়ে পণ্ডিত গৱেষকৰ অধ্যয়ন-অনুসন্ধান আঙুলিয়াই দিয়াৰ পিছতো, বিজ্ঞানসন্মত বস্তুনিষ্ঠ দৃষ্টিভঙ্গীৰে অসমৰ প্ৰাচীন যুগৰ এখন নিৰ্ভৰযোগ্য ইতিহাস ৰচনা কৰাটো হৈ উঠা নাই, যাৰ ফলত প্ৰাচীন যুগটোৰ সাহিত্যৰ সামাজিক-ঐতিহাসিক পটভূমিৰ আধাৰ হিচাপে পৰম্পৰাগত ইতিহাসকেই বিদগ্ধজনে গ্ৰহণ কৰিছে। তাত সংস্থাই হাত ফুৰোৱা নাই। বিজ্ঞানসন্মত ইতিহাস চৰ্চাকহে সংস্থাই গুৰুত্ব দিছে।

অসমীয়া লেখকৰ পৰা লেখা আদায় কৰা কিমান কষ্টকৰ সেইটো গ্ৰন্থ আলোচনী আদিৰ সম্পাদকসকলে ভালদৰে জানে। ইমানৰ পিছতো সম্পাদক অধ্যাপক বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকাই যি তৎপৰতাৰে অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ প্ৰথম খণ্ডটো নিয়াৰিকৈ সম্পাদনা কৰি প্ৰকাশৰ বাবে সাজু কৰি উলিয়ালে তাৰ বাবে তেখেত সংস্থাৰ ধন্যবাদৰ পাত্ৰ। যিসকল পণ্ডিত ব্যক্তিৰ ৰচনাৰে এই খণ্ডটি সমৃদ্ধ তেখেত সকললৈ কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন কৰা হ'ল। শাৰীৰিক অসুস্থতা সত্ত্বেও সাধাৰণ সম্পাদক শ্ৰীশোভা ব্ৰহ্ম ডাঙৰীয়াই যি তৎপৰতাৰে ৰচনাসমূহ চাই এটি দীঘল 'ভূমিকা' লেখি দিলে তাৰ কাৰণে সংস্থা তেখেতৰ ওচৰত কৃতজ্ঞ। গ্ৰন্থখন ছপাওঁতা শ্ৰীসদা শৰ্ম্মালৈ ধন্যবাদ জনালোঁ।

যথেষ্ট পলমকৈ হলেও এই খণ্ডটো পঢ়ুৱৈ সমাজৰ হাতত তুলি দিবলৈ পাই আমি সুখী হৈছোঁ।

গুৱাহাটী

২৭/১২/২০০৩

প্ৰফুল্ল মহন্ত

সঞ্চালক, আৰিলেক

সাধাৰণ সম্পাদকৰ কথা

আনন্দৰাম বৰুৱা ভাষা-কলা-সংস্কৃতি সংস্থাৰ দ্বাৰা অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী প্ৰণয়ন কৰিবলৈ লোৱা সিদ্ধান্ত, এটি অত্যন্ত সময়োপযোগী পদক্ষেপ হোৱা স্বত্বেও এইটো এটা সমানেই বিৰল সাহসিকতাৰ নিদৰ্শন তাত কোনো সন্দেহ নাই।

এই বুৰঞ্জীৰ প্ৰথম খণ্ড সুসাহিত্যিক, পণ্ডিত, অন্ধেষ বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকাই সম্পাদনা কৰিছে। আৰু অতি সৰুত কাৰণত প্ৰকৃত সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ পাতনি মেলাৰ আগতেই (১) অসমৰ ৰাজনৈতিক বুৰঞ্জী (২) অসমৰ অৰ্থনৈতিক বুৰঞ্জী (৩) অসমৰ সাংস্কৃতিক বুৰঞ্জী (৪) অসমীয়া ভাষাৰ বুৰঞ্জী আৰু (৫) অসমীয়া লিপিৰ বুৰঞ্জী, এই খণ্ডত সন্নিবিষ্ট কৰিবলৈ যত্ন কৰা হৈছে। আদি যুগৰ কবিসকলৰ শিতানত (৬) চৰ্যাপদ/চৰ্যাপীত (৭) গোপীচন্দ্ৰৰ গান (৮) ৰামাই পণ্ডিতৰ শূন্যপুৰাণ (৯) চণ্ডীদাসৰ শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তন আলোচিত হৈছে আৰু প্ৰাক-শতাব্দীযুগৰ কবিসকলৰ শিতানত (১০) হেমসৰস্বতীৰ প্ৰহলাদ চৰিত্ৰ আৰু হৰগৌৰীসম্বাদ (১১) হৰিবৰ বিপ্ৰৰ লৱকুশ যুদ্ধ, বত্ৰবাহনৰ যুদ্ধ আৰু তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ (১২) কবিৰত্ন সবস্বতীৰ জয়দ্রথ বধ (১৩) কদৰুৱালীৰ সাতাকী প্ৰবেশ (১৪) মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণ আৰু দেৱজিতৰ পাণ্ডিত্যমূলক আলোচনা সন্নিবিষ্ট হৈছে। সম্পাদক বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকাই জনোৱামতে ইতিমধ্যে প্ৰকাশ হোৱা খণ্ডকেইটাত লোক-সাহিত্যৰ সম্পৰ্কে আলোচনা নোহোৱা কাৰণে বাধ্য হৈ লোক-সাহিত্য সম্পৰ্কীয় অধ্যায় এটা প্ৰথম খণ্ডটোত দিবলগীয়া হ'ল।

সম্পাদকৰ প্ৰস্তাৱনাত উল্লিখিত ডঃ সুনীতি কুমাৰ চেটাৰ্জীৰ 'The Place of Assam in the History and Civilization of India' গ্ৰন্থৰ উদ্ধৃতি মতে প্ৰাগজ্যোতিষ আৰ্যীকৃত হৈছিল খ্ৰিঃ পূঃ প্ৰথম সহস্ৰাব্দৰ দ্বিতীয় বা প্ৰথম অৰ্দ্ধৰ ভিতৰত।

"But the History and Puranic traditions that developed or were established in Assam from the period of the first Aryanisation of Assam and the settlement of Brahmanas there, which may well go back to second half or even the first half of the first millenniums B. C., linked up Assam with the Aryanisation of North India, even though not as belonging to the Aryan pale..... but as a vassal or friendly land of Kirata or Mongoloid peoples the upper classes of which had become or were becoming Aryanised". (P.13)

অৰ্থাৎ ডঃ চেটাৰ্জীৰ মতে অসমত হিন্দু আৰু পৌৰাণিক পৰম্পৰাৰ সূচনা হৈছিল এই দেশৰ প্ৰথম আৰ্যীকৰণ আৰু তাত ব্ৰাহ্মণসকলৰ বসতিৰ সময়ৰ পৰা; এই সময় প্ৰথম সহস্ৰাব্দৰ দ্বিতীয়াৰ্দ্ধ অথবা প্ৰথমার্দ্ধৰ ভিতৰত হ'ব পাৰে। যি প্ৰক্ৰিয়াই

অসমক উত্তৰ ভাৰতৰ আৰ্যীকৰণৰ লগত সংযোগ স্থাপন কৰিছে, কাৰ্যতঃ আৰ্যমূলৰ অংগীভূত নকৰিলেও কিৰাত বা মংগোলীয় গোষ্ঠীৰ মানুহৰ তলতীয়া বা বন্ধু ৰাষ্ট্ৰ হিচাপে, যিসকলৰ উচ্চ শ্ৰেণীসমূহ ইতিমধ্যে আৰ্যীকৃত হৈছে বা হোৱাৰ পথত গতি কৰিছে” (পৃঃ ১৩)।

“অসমৰ বৰ্মন বংশ (৩৫৫-৬৫০), শালস্তম্ভ বংশ (৬৫০-৯৯০) আৰু পালবংশৰ (৯৯০-১১৩৮) ৰজাসকলৰ তামৰ ফলিবোৰত নৰকক কামৰূপৰ আদি ৰজা বোলা হৈছে। কালিকা পুৰাণমতে জনকৰ তোলনীয়া পুতেক নৰকক বিষ্ণুৱে প্ৰাগজ্যোতিষৰ ৰজা পাতে” — সম্পাদক। অধিকন্তু, “নৰক আৰু তেওঁৰ অনুগামীসকলৰ যোগেদিয়েই প্ৰাগজ্যোতিষত প্ৰথম আৰ্যবসতি হয় আৰু নৰক ৰজা হোৱাৰ পাছত পৰিকল্পিতভাৱে আৰ্যবসতি ত্ৰিঃ পূঃ পঞ্চম শতিকাৰ পূৰ্বে হয় বুলি যুক্তিসম্মতভাৱে সিদ্ধান্ত কৰি ল’ব পাৰি”, — সম্পাদক।

সেইবোৰ সূত্ৰৰ পৰিপ্ৰেক্ষিতত, বৰ্তমান বুৰঞ্জীমতে (অঃ সংঃ বুঃ) অসমত আৰ্যীকৰণ, ব্ৰাহ্মণসকলৰ বসতি স্থাপন, তথা আৰ্যীকৰণ সূত্ৰে অসমৰ লগত আৰ্য উত্তৰ ভাৰতৰ লগত অসমৰ মঙ্গোলীয় গোষ্ঠীৰ জাতিসমূহৰ তথা কিৰাতসকলৰ সংযোগস্থাপন, নৰকৰ পিছৰ ৰজাসকলৰ দ্বাৰাই সংস্থাপিত পণ্ডিতসকলৰ দ্বাৰাই ৰচিত সংস্কৃত ভাষাৰ তাম্ৰফলি, শিলালিপিসমূহত ৰজাসকলৰ শাসনকাল, ৰাজ্যজয় খ্যাতি-কীৰ্তি অৰ্জন, ভূমিদান সম্বন্ধীয় বৰ্ণনা ইত্যাদি এইবোৰেই অসমৰ ৰাজনৈতিক বুৰঞ্জী, অৰ্থনৈতিক বুৰঞ্জী, সাংস্কৃতিক বুৰঞ্জী, ভাষাৰ বুৰঞ্জী. আৰু লিপিৰ আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ খ্ৰিঃলৈ বুৰঞ্জীৰ উৎস আৰু পটভূমি।

নিঃসন্দেহে ক’ব পাৰি, এইবোৰ উৎস বা শিলালিপি-তাম্ৰলিপি-পটভূমিৰ তথ্য-বৰ্ণনা-বুৰঞ্জীৰ লগত শাসক তথা ৰাজন্যবৰ্গ নাইবা অভিজাত শ্ৰেণীৰ সম্বন্ধ থাকিলেও হিন্দুকৰণ, আৰ্যীকৰণ বা ব্ৰাহ্মণ্যবাদৰ লগত সেইযুগৰ সাধাৰণ শ্ৰেণীৰ মানুহৰ জীৱন যাত্ৰাৰ লগত আংশিকহে সম্বন্ধ আছিল।

“উত্তৰ গুৱাহাটীত থকা কানাই বৰশী শিলালিপিৰ পৰা জনা যায় — ১১২৭ শকাব্দৰ (১২০৬ খ্ৰিঃ) চ’ত মাহৰ ১৩ তাৰিখে তুৰ্কীসকল কামৰূপলৈ আহি ক্ষয় পালে। মিন হাজৰ তবাকৎ-ই-নাচিৰি অনুসৰি বখতিয়াৰ খালজীয়ে কামৰূপ আক্ৰমণ কৰিবলৈ আহি ইয়াৰ ৰজা বৰ্জু বা ব্ৰিতুৰ হাতত পৰাস্ত হয়। ইয়াৰ পৰা সিদ্ধান্ত কৰিব পাৰি — বিহাৰ, উড়িষ্যা আৰু বঙ্গ জয় কৰি অহা বখতিয়াৰ খালজীক পৰাজয় কৰিব পৰাকৈ বৰ্জু বা ব্ৰিতু বা পৃথুৱে প্ৰয়াত মেদিনী চৌধুৰীৰ কথাত ‘বাথু বাথৌ’ — সাঃ সংঃ ১২০৬ খ্ৰিঃত যুদ্ধৰ প্ৰস্তুতি কৰিছিল। ১২০৬ খ্ৰিঃত লক্ষ্মণাৱতী বা নদিয়া খালজীয়ে আক্ৰমণ কৰাৰ সময়তেই পৃথুৱে যা-যোগাৰ কৰিবলৈ লৈছিল যেন লাগে। ইলতুৎমিচৰ পুতেক নাচিকদ্দিনৰ হাতত ১২২৮ ত পৃথুৰ মৃত্যু হয়। উত্তৰ বঙ্গত পৃথুৰ সোণৰ মুদ্ৰা এটা আবিষ্কাৰ হৈছে”, — সম্পাদক।

বখতিয়াৰ খালজীৰ আক্ৰমণেই কামৰূপত প্ৰথম মুছলমান আক্ৰমণ। গতিকে ১২২৮ খ্ৰিঃৰ পৰা কামৰূপত প্ৰথাসিদ্ধভাৱে বা আংশিকভাৱে হ’লেও বুৰঞ্জী লিখাৰ

পৰম্পৰা আৰম্ভ হয় বুলি ক'ব পাৰি। তদুপৰি আহোমসকল অসমলৈ অহাৰে পৰা অসমৰ ধাৰাবাহিক লিখিত বুৰঞ্জী পোৱা যায়। এই বুৰঞ্জীবোৰৰ পৰা অকল যে আহোমসকলৰ কথা জানিব পাৰি এনে নহয়, অসমত বাস কৰা আন আন জাতি-উপজাতিৰ বিষয়েও এই বুৰঞ্জীবোৰত পোৱা যায়,” — সম্পাদক।

তাম্ৰফলি বা শিলালিপিৰ ভাষা সংস্কৃত, এইবোৰৰ বচোঁতা ব্ৰাহ্মণ পণ্ডিত, শাসক তথা ৰজাসকলৰ বংশলতিকা, নাম, গোত্ৰ ইত্যাদি ব্ৰাহ্মণ পণ্ডিতৰ দ্বাৰাই উদ্ভাৱনৰ ফল। গতিকে সন্দেহ নাই, নৰকাসুৰ, ভগদত্ত, ভাস্কৰ বৰ্মাৰ পৰা আৰম্ভ কৰি পাল বংশ, কমতাপুৰ, কছাৰী ৰজাসকল, আহোম ৰজাসকল সকলোৰে বংশলতিকা তথা নাম হিন্দু আৰু আৰ্যীকৃত, সংস্কৃত ভাষাত ৰচিত বৃত্তান্ত আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ খ্ৰিঃলৈ সকলো তাম্ৰৰ ফলি আৰু শিলালিপি সেইখিনি সময়ৰ পৰা গণ্য, বিবেচিত, গৃহীত হৈ আহিছে। উদাহৰণস্বৰূপে নিম্নলিখিত অংশ (পৃঃ ২২, অং সাঃ বুঃ) উদ্ধৃতি দিয়া হ'ব পাৰে—

(ক) শালস্তম্ভ বংশ (৬৫০-৯৯০) বৰ্মন বংশ অন্ত পৰাৰ পিছত শালস্তম্ভ বংশ আৰম্ভ হয়। ৰত্নপালৰ (১০১০-৪০) — বৰগাওঁ তাম্ৰৰ ফলিত কোৱা হৈছে — “এবং বংশক্ৰমেণ ক্ষিত্ৰিত্যং নিখিলাং ভূজ্ঞতাং নাৰকানাং ৰাজ্যং স্নেচ্ছাধিনাথো বিধি চলনাৱশাদেব জগ্ৰাহ ৰাজ্যম্। শালস্তম্ভঃ ক্ৰমেস্যাপি হি নৰপত্যো ৱিগ্ৰহস্তম্ভমুখ্যা বিখ্যাতাঃ সম্ভূৰুধিগুণিত দশতা সংখ্যা সংবিভিন্নাঃ ॥৯॥”

অৰ্থাৎ বংশানুক্ৰমে এইদৰে সমস্ত পৃথিৱী পালনকাৰী নৰকবংশীয় ৰজাসকলৰ ৰাজ্য দৈৱগতিবশতঃ স্নেচ্ছাধিপতি শালস্তম্ভই অধিকাৰ কৰিছিল। এওঁৰ বংশতো ক্ৰমে বিগ্ৰহস্তম্ভ প্রভৃতি বিখ্যাত ৰজাসকল হৈছিল আৰু এওঁলোকৰ সংখ্যা দহৰ দুগুণ হৈ সংবিভিন্ন হৈছিল”।

অং সাঃ বুঃ ৰ ৩৮ পৃষ্ঠাত আছে “১২২৮ৰ পাছত কামৰূপ ৰাজ্য ভাগি ছখন সৰু সৰু ৰাজ্য সৃষ্টি হয়। সেই কেইখন ৰাজ্য হ'ল (১) কমতা ৰাজ্য (১২২৮-১৫১৫), (২) কোচ ৰাজ্য (১৫১৫-৮১), (৩) ভূঞাসকলৰ ৰাজ্য (১৪৯৮-১৫১৫), (৪) কছাৰী ৰাজ্য (১২২৮-১৮৩২), (৫) চুতীয়া ৰাজ্য (১১৮৯-১৫২৩), আৰু (৬) আহোম ৰাজ্য (১২২৮-১৮২৪)। ইয়াৰ ভিতৰত কোঁচ ৰাজ্য আৰু ভূঞাসকলৰ ৰাজ্য ১৪৭০ ৰ পাছত স্থাপন হোৱা কাৰণে এই আলোচনাত ৰাজ্য দুখনক স্থান দিয়া নহ'ল”।

“কমতাপুৰৰ ৰজাই “কমতেশ্বৰ” আৰু ধৰ্মনাৰায়ণে “গৌৰেশ্বৰ” উপাধি ধাৰণ কৰে। সেই সময়ত সম্ভৱতঃ দুৰ্লভনাৰায়ণে গৌড়েশ্বৰৰ পৰা চণ্ডীবৰ প্ৰমুখে ৭ ঘৰ কায়স্থ আৰু ৭ ঘৰ কনৌজীয়া ব্ৰাহ্মণ উপহাৰ স্বৰূপে লাভ কৰে। তেওঁলোকৰ ভিতৰত চণ্ডীবৰ পণ্ডিত আছিল বাবে দুৰ্লভ নাৰায়ণে তেওঁক শিৰোমণি ভূঞা পাতিছিল। এওঁৰ বংশতে মহাপুৰুষ শঙ্কৰদেৱৰ জন্ম হৈছিল।..... দুৰ্লভ নাৰায়ণ কমতাৰ এজন প্ৰসিদ্ধ ৰজা আছিল। তেওঁৰ ৰাজত্বকালত হেম সবন্ধুতী, হৰিবৰ বিপ্ৰ, আদি কৰি কেইবাজনো বিখ্যাত পণ্ডিতে কেইবাখনো বহুমূলীয়া গ্ৰন্থ লিখে। এই পুথিবোৰত তেওঁলোকে দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ বৰ গুণানুকীৰ্ত্তন কৰিছে। (অং সাঃ বুঃ ৪১ পৃঃ)।” শিৰোমণি ভূঞা বংশত মহাপুৰুষ

শঙ্কৰদেৱৰ জনম, আৰু কমতাপুৰৰ ৰজাৰ পৃষ্ঠপোষকতা হেম সৰস্বতী আৰু হৰিবৰ
বিপ্ৰৰ নিচিনা কবিৰ কাব্যচৰ্চা এটি উল্লেখনীয় ঘটনা।

কছাৰী ৰজাসকল ১২২৮ খ্ৰিষ্টাব্দৰ পৰা ১৮৩২ খ্ৰিঃলৈ ৰাজত্ব কৰাৰ কথা অঃ
সাঃ বুঃত উল্লেখ কৰা হৈছে। কছাৰীসকল জাতি-গোষ্ঠী-সংস্কৃতি-ভাষা তথা
ৰাজনৈতিকভাৱে চুতীয়া বা কোঁচসকল বা কমতাপুৰ বা ডিমাচাসকলৰ লগত একেটা
উৎসমূলসমূহত সেই কথা অঃ সাঃ বুঃ প্ৰথম খণ্ডত আলোচিত হোৱা নাই যদিও সিবোৰৰ
ঈঙ্গিত দিয়া হৈছে।

“অসমৰ অতি পুৰণি অধিবাসীৰ ভিতৰত কছাৰীসকল অন্যতম। গোটেই ব্ৰহ্মপুত্ৰ
উপত্যকা জুৰি (বৰাক উপত্যকাৰ কছাৰী ৰাজত্বৰ কথা ইয়াত উল্লিখিত হোৱা নাই - সাঃ
সঃ) বাস কৰা কছাৰীসকলৰ আৰু এওঁলোকৰ লগত মিল থকা ভাষা কোৱা লোকসকলৰ
অধিকৃত অঞ্চললৈ চাই কোনো কোনো পণ্ডিতে অসমৰ অধিকাংশ ঠাই আৰু উত্তৰ-পূব
বঙ্গদেশ জুৰি অসমত এখন বৃহৎ বৰো ৰাজ্যৰ অস্তিত্ব অনুমান কৰে। উদাহৰণ স্বৰূপে
ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকাত থকা কছাৰীসকলে নিজকে “বডো” অথবা “বৰো ফিছা” (ডাঙৰ
নদীৰ সন্তান) বুলি পৰিচয় দিয়ে *। সমূহীয়াভাৱে তেওঁলোকক “কছাৰী” নামেৰে জনা
যায়। যদিও এই নামটো তেওঁলোকক অনা-কছাৰীসকলে দিয়া নামহে (সাঃ সঃ)। ত্ৰয়োদশ
শতিকাত অহা আহোমসকলে এওঁলোকক প্ৰথমে “টিমাছা” আৰু পাছলৈ “কছাৰী” বুলি
কৈছিল। ধনশিৰি উপত্যকাত বসবাস কৰা সময়ত বোধহয় তেওঁলোকে এই নামেৰে
পৰিচিত আছিল” (পৃঃ ৪৩, অঃ সাঃ বুঃ)। বিশেষ দ্ৰষ্টব্য — “বৰোসকলৰ লগত চুতীয়া
ভাষাৰ বহুখিনি সাদৃশ্যলৈ চাই কোনোৱে কোনোৱে বৰোসকলৰ লগতহে এওঁলোকৰ
সম্পৰ্ক থকা বুলি ভাবে। শক্তিৰ উপাসক চুতীয়াসকলৰ মাজত শদিয়াত থকা কেঁচাইখাতী
গোঁসানীৰ পূজা প্ৰচলিত আছিল।” (অঃ সাঃ বুঃ ৪৫ পৃঃ)

“(৫) আহোম ৰজাসকল : (১২২৮-১৮২৪)। চু-কা-ফা আছিল অসমত টাই
ৰাজ্য আৰু আহোম ৰাজবংশৰ প্ৰতিষ্ঠাতা। তেওঁ মাও-লুঙৰ পৰা আহোঁতে লগত নিজৰ
পৰিয়ালৰ উপৰিও খাও-লুং-মুং (পাছলৈ বৰগোহাঁই), চাও-ফাং-মুং (পাছলৈ বুঢ়াগোহাঁই)
পদবীৰ দুজন বিষয়া, পাচজন ফ্যু-কিন-মুং (পাচলৈ ৰাজখোৱা) আঠজন খুন, ৰু-চাও,
ৰু-পাক, ৰু-ৰিং (পাচলৈ যথাক্ৰমে কোৱঁৰ, বৰা, শইকীয়া আৰু হাজৰিকা) আদি বিষয়সমূহ,
তেওঁলোকৰ পৰিয়াল, ন হেজাৰ মানুহ, দুটা হাতী, ৩০০ ঘোঁৰা লগত লৈ আহিছিল। চু-
কা-ফাৰ ৰাজ্যই ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকাৰ দিখৌ আৰু বুঢ়ীদিহিং নদীৰ মাজৰ প্ৰায়বোৰ অঞ্চলেই
সামৰি লয়। সমগ্ৰ অঞ্চলটো পৰ্যবেক্ষণ কৰি ৰাজ্যক পূৰ্ণাঙ্গ ৰূপ দিয়ালৈকে চু-কা-ফাৰ
সময় লাগিছিল ২৫ বছৰ কাল ১১২৮-১২৫৩ খ্ৰিঃ। ... চু-কা-ফাই ৰাজ্য পতা
অঞ্চলত সেই কালত মৰাণ আৰু বৰাহী নামৰ দুই জনজাতিৰ বসবাস আছিল। কথিত
আছে বৰাহী ৰজা থাকুমধাৰ পৰামৰ্শ লৈ চু-কা-ফাই চৰাইদেউত ৰাজধানী পাতিছিল।
চু-কা-ফাই মৰাণসকলক খৰিভাৰী, বাৰীচোৱা, বৰাহীসকলক চাংমাই, কাঠকটীয়া
বেজ, জৰাধৰা, ভঁৰালী, ককুৰাচোৱা আদি বাব দি আহোম শাসনযন্ত্ৰৰ অন্তৰ্ভুক্ত কৰে।”
(অঃ সাঃ বুঃ ৫১ পৃঃ)

উপৰি উক্ত তথ্যৰ পৰা চ্যা-কা-ফাৰ অধীনত আহোমসকলৰ অভিযাত্ৰী বাহিনীৰ তৎপৰতা কূটনৈতিক সময়োচিত ব্যুৎপত্তিৰ কথা সন্দেহাতীতভাবে প্ৰমাণিত হয়।

আহোম ৰজাসকলৰ ৰাজত্বকালত শুল্লাবদ্ধভাৱে প্ৰজ্ঞী লিখা হৈছিল। মুছলমান পৰিৱাজকৰ ৰচনাতো কিছুমান সমল পোৱা যায়। কামৰূপ আৰু প্ৰাগজ্যোতিষ নগৰৰ উল্লেখ আছিল। তদুপৰি কামৰূপৰ পৌৰাণিক ৰজা নৰক, ভগদত্ত, বজ্জদত্ত আদিৰ কথা মহাভাৰত হৰিবংশ, ভাগৱত পুৰাণ আদিত পোৱা যায়। পঞ্চম শতিকাত ৰাজপুষ্ঠপোষকতাত (বলৱমা ৪০৫-২০) পশ্চিমৰ অন্য প্ৰান্তৰ পৰা (কনৌজৰ মিথিলা আদি) ব্ৰাহ্মণ সন্তানসকলক অনাৰ তথ্য পোৱা যায় (ভাস্কৰবৰ্মাৰ নিধনপুৰ দানপত্ৰ)। পণ্ডিতসকলে অনুমান কৰে যে কামৰূপ ৰাজ্যত পঞ্চম শতিকাৰ পিচতহে আৰ্য ব্ৰাহ্মণধৰ্মৰ প্ৰভাৱ পৰিলক্ষিত হয়। মোগল আক্ৰমণৰ (প্ৰধানতঃ মিৰজুমলাৰ আক্ৰমণ ১৬৬১ খ্ৰিঃত গডগাওঁ দখল) সময়ত আক্ৰমণকাৰীৰ লগত অহা সৈনিক, যোগালি আদি আৰু বঙ্গদেশৰ পিচপৰা হিন্দুসমাজৰ বহুসংখ্যক মানুহ উদ'ৰ ইচলাম ধৰ্মত দীক্ষিত হৈ অসমলৈ আহি ইয়াত নিগাজীকৈ বসবাস কৰিবলৈ ল'লে। পঞ্চদশ শতিকাত আবিভাৱ হোৱা মহাপুৰুষ শ্ৰীশ্ৰীশঙ্কৰদেৱৰ প্ৰভাৱ আৰু আদৰ্শই এগ্ৰ মানুহক অগ্ৰপাণিত কৰিছিল আৰু পঞ্চদশ শতাব্দীৰ পিচৰ পৰা বৈষ্ণৱ নাম ধৰ্মই হিন্দু সমাজৰ এক বুজন সংখ্যক লোকক প্ৰভাৱিত কৰিছিল। শিলালিপিসমূহত কুস্তকাৰ (কুমাৰ), তন্তুবায়া (বোৱনী), নৌকি (নাৱনীয়া) আৰু দণ্ডি (বঠা মনা লোক) আদি বৃত্তিৰ উল্লেখ আছে। প্ৰাচীন কামৰূপৰ অৱশ্যে জাতিভেদ প্ৰথা বঙ্গদেশ বা চিলেট জিলাৰ দৰে প্ৰৱল নাছিল আৰু বঙ্গদেশৰ প্ৰাচলিত কৌলিন্য প্ৰথাও নাছিল। (অঃ সাঃ পৃঃ, ৫৫, ৫৬, ৫৭, ৫৮ পৃঃ)।

শিল্প আৰু উদ্যোগৰ দিশত, কোঁটীলাৰ অৰ্থশাস্ত্ৰত (খ্ৰিঃ পূঃ তৃতীয় শতাব্দী) অসম পলুপোহা ৰাজ্য বুলি উল্লেখ আছে। গ্ৰীক পৰ্যটকেও অসমত বহুমূলীয়া মুগা কাপোৰ বোৱাৰ কথা লিপিবদ্ধ কৰিছে। শিল্প আৰু শিল্পজাত বস্তুৰ ভিতৰত (ক) বোৱাকটা শিল্প, ধাতুৰ শিল্প, (খ) কাঠৰ শিল্প, (গ) শিলৰ বস্তুৰ শিল্প, (ঘ) মাটিৰ শিল্পৰ কথা, অঃ সাঃ বুঃত আলোচিত হৈছে। কামৰূপৰ ৰজা ভাস্কৰবৰ্মাই হৰ্ষবৰ্দ্ধনলৈ পঠোৱা বস্ত্ৰবিলাকৰ মাজত বেচম কাপোৰৰ ছাতি, গামোছা, কপাহী পিন্ধা কাপোৰ আদিও আছিল। "গুৰুচৰিত কথা"ত, শঙ্কৰদেৱে তাঁতীৰ হতুৱাই নিজৰ তত্ত্বাৱধানত বৃন্দাবনী কাপোৰ বোৱাৰ বৰ্ণনাৰ উপৰিও তিৰোতাৰ পাঁজীকটা (সূতাকটা) কাপোৰ বোৱা ব্যবসায়ৰ সংগঠক হিচাপে কাম কৰা মৰল বৃত্তিৰ লোক, কাপোৰ বোৱা সাধাৰণ বৃত্তিধাৰী তাঁতী, যুগী সম্প্ৰদায়ৰ লোকে পলু পোহা আদিৰো উল্লেখ আছে। তাঁতীকুচী, বা তাঁতীকুচী, কমাৰকুচী, ওৱালকুচী, গণককুচী, আদি ঠাই বোৱা-কটা বা বয়ন শিল্পৰ কেন্দ্ৰ আছিল বুলিও উক্ত গ্ৰন্থৰ পৰা জানিব পাৰি। (অঃ সাঃ পৃঃ, ৫৬, ৮৩ পৃঃ)

মুদ্ৰা আৰু বিনিয়োগ ব্যৱস্থা, বাণিজ্যিক ব্যৱস্থা, আমদানি-ৰপ্তানি বস্তু, বাণিজ্যপথ, যাতায়াত, যোগাযোগ ব্যৱস্থাৰ বিস্তৃত বৰ্ণনা চতুৰ্দশ শতিকাৰ ৰচনা মাধৱ কন্দলিৰ ৰামায়ণ, গুৰুচৰিত কথা, তৱাকং-ই-নাচিৰি, পৰ্তুগীজ পৰিৱাজক টেভেৰ্নিয়াৰ, হিউৱেনচাঙ

পাৰ্ছী পৰিব্ৰাজক আলবেকনিৰ বৃত্তান্তৰ কথা অঃ সাঃ বুঃ ত আলোচিত হৈছে।

“প্ৰাচীন বৰ্ণভেদ প্ৰথামতে ব্ৰাহ্মণ, ক্ষত্ৰিয়, বৈশ্য, শূদ্ৰ নামেৰে যি চতুৰ্ণ আছিল, তাৰে সাল-সলনি হৈ প্ৰাচীন অসমত বিভিন্ন শ্ৰেণীৰ লোকৰ সৃষ্টি হৈছিল। ব্ৰাহ্মণৰ পিছতে কায়স্থ, কৰণ, লেখক, দৈবজ্ঞ, বৈদ্য ভিষজ, কুণ্ডকাৰ, কৈৱৰ্ত্ত আদি বিভিন্ন শ্ৰেণীৰ লোকৰ বিষয়ে লিপিবোৰৰ পৰা জানিব পাৰি। পোনতে এওঁলোক বৃত্তিয়াল আছিল, পিছলৈ কিন্তু একো একোটা জাতিৰূপে স্বীকৃত হ’ল। পিছলৈ ব্ৰাহ্মণ আৰু শূদ্ৰ-দুটা ভাগ হ’ল আৰু শূদ্ৰৰ ভিতৰত কোঁচ, কলিতা, কেওট আদি বিভিন্ন জাতিৰ সৃষ্টি হ’ল। (অঃ সাঃ বুঃ , ১২ পৃঃ) বৰ্ণাশ্ৰম, আৰ্যীকৰণ তথা ব্ৰাহ্মণ্যবাদ পিচত পঞ্চম শতিকাত অসমলৈ আহে। প্ৰাক-আৰ্যীকৰণ জাতিসমূহৰ লগত বা আৰ্যভিন্ন প্ৰাক বা পশ্চাৎ জাতি সমাজৰ লগত বৰ্ণাশ্ৰম তথা উপৰি উল্লিখিত আলোচনাৰ কোনো সম্পৰ্ক নাই।

“অসবৰ্ণ বিবাহো সংঘটিত হৈছিল। তাৰ ফলতে সূত, বঁৰীয়া আদি অন্য জাতিৰ সৃষ্টি হৈছিল। ব্ৰাহ্মণ মাতৃ আৰু ক্ষত্ৰিয় পিতৃৰ সন্তানক সূত বোলে। বিধবা ব্ৰাহ্মণ মাতৃ আৰু অন্য জাতিৰ পিতৃৰ পৰা হোৱা সন্তানক বঁৰীয়া বুলিছিল। এওঁলোকক নীচ জাতি বুলি গণ্য কৰা হৈছিল। আৰ্য আৰু আৰ্যবহিৰ্ভূত জাতিৰ সংমিশ্ৰণৰ ফলত ব্ৰাহ্মণ্য ৰীতিনীতিৰ মূলৰ গোডামি বহুখিনি কমিছিল। ব্ৰাহ্মণসকলে মঙ্গোলীয় লোকক হিন্দু ধৰ্মত দীক্ষিত কৰোৱাৰ ফলস্বৰূপে পিছলৈ কোঁচ, শৰণীয়া-কছাৰী আদি সম্প্ৰদায়ৰ সৃষ্টি হৈছিল।”

কালিকা পুৰাণমতে নৰকে প্ৰাগজ্যোতিষত ৰাজত্ব স্থাপন কৰাৰ আগতে শিৱই ইয়াত প্ৰধান দেৱতা আছিল। ডঃ কাকতিয়ে তেখেতৰ “মাদাৰ গডেচ কামাখ্যা” নামৰ ইংৰাজী ভাষাত লিখা পুথিত মত প্ৰকাশ কৰিছে যে অসমৰ প্ৰাচীন অধিবাসী কিৰাতসকল শিৱভক্ত আছিল। এওঁলোকে মদ-মাংসৰে শিৱৰ পূজা কৰিছিল।”, (অঃ সাঃ বুঃ, ১১৫, ১১৬ পৃঃ)। তদুপৰি “নীলাচলৰ কামাখ্যা মন্দিৰেই শক্তি আৰু শাক্ত তান্ত্ৰিক ধৰ্মৰ প্ৰাচীনতম আৰু প্ৰসিদ্ধ কেন্দ্ৰ আছিল... প্ৰাচীন পূজা পদ্ধতিত পঞ্চমকাৰৰ ব্যৱহাৰ, যোনিপূজা, বলি-বিধান আনকি নৰবলি আদিও হৈছিল... তাম্ৰেশ্বৰীৰ মন্দিৰ এটা অতি পুৰণি শাক্ত মন্দিৰ। ত্ৰিঃ পোন্ধৰ শতিকাত চুতীয়াসকলে এই মন্দিৰ পুনৰ নিৰ্মাণ কৰিছিল। ৭ম শতিকাৰ পিছৰ ফালৰ পৰাই বৌদ্ধধৰ্মত তন্ত্ৰ, মন্ত্ৰ আদিৰ প্ৰভাৱ পৰাৰ ফলত ইয়াৰ পৰা মন্ত্ৰযান, তন্ত্ৰযান, বজ্ৰযান, কালচক্ৰযান, সহজযান আদি পন্থাৰ সৃষ্টি হয়। প্ৰাচীন কামৰূপত থলুৱা লোকৰ মাজত আগৰে পৰা মন্ত্ৰ, ভেঙ্কিৰাজী আদি আছিল, শাক্ত তান্ত্ৰিকতাৰ প্ৰভাৱো আগৰে পৰা আছিল। এইবোৰে বৌদ্ধধৰ্মৰ ওপৰত প্ৰভাৱ বিস্তাৰ কৰে। ফলত তান্ত্ৰিক বৌদ্ধধৰ্মই ত্ৰিঃ ৭ম-৮ম শতিকাৰ কামৰূপ অসমত প্ৰভাৱ বিস্তাৰ কৰিবলৈ বিশেষ সুবিধা পায়। সেই সময়ত অসম শক্তি আৰু বৌদ্ধ তান্ত্ৰিক মতৰ এটা প্ৰধান কেন্দ্ৰ হৈ পৰিছিল। বৌদ্ধ সিদ্ধাচাৰ্যসকলৰ ভিতৰত মীননাথ, সৰহপাদ, লুইপাদ, নাগাৰ্জুন আদি প্ৰাচীন কামৰূপৰে লোক আছিল বুলি পণ্ডিতসকলে মত প্ৰকাশ কৰে। তন্ত্ৰ-মন্ত্ৰৰ ষোগেদি যেতিয়া হিন্দুধৰ্ম আৰু দেৱ-দেৱীৰ মাজতো সমন্বয় ঘটিল, ফলত বহুতো হিন্দু দেৱ-দেৱী বৌদ্ধসকলে আৰু বৌদ্ধ দেৱ-দেৱী হিন্দুসকলে নিজৰ বুলি গ্ৰহণ কৰিলে।

“কপিলী উপত্যকাৰ প্ৰাচীন বৰো বজাসকলে চৈধ্যজন দেৱতাৰ পূজা কৰিছিল, তাৰে প্ৰধানজন ‘বুঢ়া দেৱতা’ৰ শিং থকা বুলি তেওঁলোকে বিশ্বাস কৰিছিল।

“প্ৰাচীন অসমত তিৰোতাৰ মাজত পৰ্দা প্ৰথা নাছিল। মুচলমানসকলৰ আগমনৰ পিছৰ পৰাহে সমাজত পৰ্দা প্ৰথা সোমাল। আহোম যুগত উচ্চ বংশৰ তিৰোতাই বৰজাপি ব্যৱহাৰ কৰাটো পৰোক্ষভাৱে মোগল প্ৰভাৱ যেন লাগে।

“সতী-যোৱা প্ৰথা প্ৰাচীন অসমত একেবাৰে নথকা নহয়। বেদ আৰু মনু সংহিতাত সতীযোৱা প্ৰথাৰ উল্লেখ নাই। কৌটিল্যই সতী যোৱা প্ৰথা হয় আৰু দণ্ডনীয় বুলি উল্লেখ কৰিছে। গ্ৰীক পণ্ডিত এৰিষ্টটলেও প্ৰাচীন ভাৰতত সতী যোৱা প্ৰথা আছিল বুলি উল্লেখ কৰিছে। যোগিনী তন্ত্ৰতো সতী যোৱা প্ৰথাৰ বিষয়ে আছে। প্ৰাচীন অসমৰ এজন ৰজাৰ ৰক্ষিতা সতী যোৱা বুলি কাব্যমালা গ্ৰন্থৰ তৃতীয় খণ্ডৰ ৭৭ পৃষ্ঠাত আছে। দামোদৰ দেৱৰ কুটুনিমত গ্ৰন্থতো ইয়াৰ উল্লেখ আছে,” (অঃ সাঃ বৃঃ, ১১৭, ১১৯, ১২০, ১২১, ১২৬ পৃষ্ঠা)।

আৰ্য-অনাৰ্যৰ সংমিশ্ৰণৰ ফলত উদ্ভৱ হোৱা ধৰ্মৰ নাম /যোগিনী তন্ত্ৰৰ মতে কৈৰাতজ ধৰ্ম, প্ৰাচীন অসমত সূৰ্যৰ মন্দিৰ থকাৰ প্ৰমাণ অসমৰ প্ৰাচীন শিক্ষা পদ্ধতিত ব্ৰাহ্মণ, কায়স্থ আদি উচ্চ জাতিৰ একছন্ন অধিকাৰ, অসম যে প্ৰাচীন ভাৰতত জ্যোতিষ চাৰি কেন্দ্ৰ আছিল তাৰ প্ৰমাণ চিত্ৰাচল পৰ্বতৰ নৱগ্ৰহ মন্দিৰ, পণ্ডিতসকলৰ মতে অসমীয়া বিবাহ পদ্ধতি বহু পৰিমাণে জনজাতীয় প্ৰভাৱযুক্ত; কালিকা পুৰাণত পুতলা খেলৰ উল্লেখ, প্ৰাচীন অসমত সুকুমাৰ কলাৰ চৰ্চা, *ব্ৰহ্মবাহনৰ যুদ্ধ* কাব্যত উল্লিখিত বাদ্যযন্ত্ৰ সমূহ — ঢাক, ঢোল, ভেৰি, ভেমচি, ধুমচি, ডগৰ, বংশী, ডেমচি, ঝিকচি, মাদলি, বেমচি, টোকাৰি আদি; ভোৰতাল, টকা, গগনা, চিফুং, কীচক, বেণু আদি ঋদি বাদ্য যন্ত্ৰ তিব্বত বৰ্মা সকলৰ — এইবোৰ তথ্য অঃ সাঃ বৃঃত সবিস্তাৰে আলোচিত হৈছে। (অঃ সাঃ বৃঃ, ১২১, ১২২, ১২৪, ১২৬, ১২৭, ১৩৭, ১৩৮ পৃঃ) তদুপৰি, “৯ম শতিকাৰ বনমাল বৰ্মাৰ লিপিৰ পৰা জানিব পাৰি সম্ভ্ৰান্ত ঘৰৰ মহিলাসকলে স্তনত সুগন্ধি দ্ৰব্য সানিছিল। দাঁতবোৰত ৰং বোলাই লৈছিল বুলি কালিকা পুৰাণ আৰু যোগিনীতন্ত্ৰত উল্লেখ আছে। হিউৱেনচাঙে এই বিষয়ে উল্লেখ কৰি গৈছে”। (পৃঃ ১৩৫) সেই একে লিপিত কয়, “৮ম আৰু ৯ম শতিকাৰ অসমত মন্দিৰবোৰ গীত, নৃত্য, বাদ্যৰ ধ্বনিৰে সদায় মুৰবিত হৈ থাকিছিল। হাজো, ডুবি আদিৰ শিৱ মন্দিৰবোৰৰ সৈতে জড়িত দেৱদাসীসকল নৃত্য-পাটয়ঙ্গী হিচাপে বিশেষভাৱে উল্লেখযোগ্য। “ৰমনীয় দলুহাঙ্গনাভিৰিৱ সকলজন মনহাৰিকীৰ্তি :”। (পৃঃ ১৩৭)

অঃ সাঃ বৃঃ পৃঃ ১৪৯ ত উল্লেখ আছে, “জয়ধ্বজ সিংহই(১৬৪৮-৬৩ খ্ৰিঃত) আনুষ্ঠানকিভাৱে হিন্দুধৰ্ম গ্ৰহণ কৰে। সেই সময়লৈকে আহোমসকল দেৱাত বৌদ্ধধৰ্মী বুলি সাধাৰণভাৱে বুজা গ’লেও এই বিষয়ে চিন্তাৰ থল আছে।

“...পৰবৰ্তী ৰজা চ্যুছম্ মুং(দিহিঙীয়া) ৰজাই(খ্ৰিঃ ১৪৯৭-১৫৩৯) হিন্দু সংস্কৃতিত আকৃষ্ট হৈ প্ৰথমতে স্বৰ্গ নাৰায়ণ, এই সংস্কৃতীয়া হিন্দু উপাধি গ্ৰহণ কৰে। ইয়েই প্ৰমাণ কৰে — চ্যুডাংফাৰ দিনৰ পৰা চ্যুছম্ মুংলৈকে, এই এশবছৰীয়া কালডোৰত আহোম-

ৰাজসভা, ৰাজপৰিয়াল আৰু বিষয়াবৰ্গৰ মাজত ব্ৰাহ্মণ-সংস্কৃতি আৰু বৈদিক-ধৰ্মৰ প্ৰভাৱ বহু পৰিমাণে প্ৰসাৰিত হয়।” অঃ সাঃ বৃঃ ৰ ১৫০. ১৫ পৃঃ ত উল্লেখ আছে, “একাদশ শতিকাৰ পালবংশী ৰজা ইন্দ্ৰপাল আৰু ৰত্নপালৰ তাম্ৰশাসনৰ পৰা কামৰূপ ৰাজ্যত নৃত্যগীতৰ প্ৰচলন থকাৰ কথা বুজা যায়। কালিকা পুৰাণতো (৬১ অধ্যায়) নানাবিধ গীতবাদ্যৰ উল্লেখ আছে। তাত দেৱী-প্ৰতিমা বিসৰ্জন দিয়া শৰোৎসৱ প্ৰসঙ্গত কোৱা হৈছে যে ৰাগনিপুণ কুমাৰী, বেশ্যা, আৰু নৰ্ত্তকলসকলে শঙ্খ, মৃদঙ্গ, পটহ আদি বাদ্যৰ সৈতে গীত গাব পাৰে। এই গীতবোৰ দশম-একাদশৰ পৰা ত্ৰয়োদশ শতিকামানৰ ৰচিত। ইয়াৰ ৰচয়িতা কেইবাজনো সিদ্ধপুৰুষ কামৰূপৰ আছিল বুলি প্ৰসিদ্ধি আছে। এই গীতবোৰত নিৰ্দিষ্ট ৰাগ সংযোগ কৰা আছে। এই ৰাগবোৰৰ ভিতৰত পটমঞ্জৰী, গুঞ্জৰী, ভৈৰৱী, মল্লৰী, শৱৰী, মালশী, বৰাডী, ধনশ্ৰী আদি উল্লেখনীয়। উক্ত ৰাগবিশিষ্ট চৰ্যাগীতবোৰৰ পৰা জনা যায় যে প্ৰাচীন কামৰূপত মাৰ্গ সঙ্গীতৰ চৰ্চা সুন্দৰভাৱে চলিছিল”।

অসমীয়া ভাষাৰ বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস (আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ চনলৈ) শীৰ্ষক আলোচনাত অঃ সাঃ বৃঃ, ১৫৯ পৃঃত উল্লেখ, “গ্ৰিয়াৰচনকে আদি কৰি কিছুমান পণ্ডিতে মধ্য ভাৰতীয় আৰ্য ভাষাৰ শেষ স্তৰক অপভ্ৰংশ নাম দিছে। মধ্যভাৰতীয় আৰ্য ভাষাৰ যিটো সাৰ্বজনীন ৰূপ অশিষ্ট লোকসাহিত্যৰ বাহনৰূপে দেখা দিছিল সিয়ে অপভ্ৰংশ বা প্ৰাচীন অপভ্ৰংশ। এই প্ৰাচীন অপভ্ৰংশৰ অৰ্বাচীন ৰূপটো আধুনিক ভাৰতীয় আৰ্যভাষাৰ জনক বা পূৰ্বাৱস্থা সিয়ে অপভ্ৰষ্ট বা অৱহট্ট, অৰ্থাৎ অৰ্বাচীন অপভ্ৰংশ”। অপভ্ৰংশই আভীৰ উপভাষাৰূপে থকা নিম্ন স্তৰৰ পৰা ত্ৰিঃ তৃতীয়-ষষ্ঠ শতিকাত উচ্চ স্তৰৰ সাহিত্যিক ভাষাৰূপে ক্ৰমে উন্নতি লাভ কৰে। শতাব্দীৰ পাচত শতাব্দী অতিবাহিত হোৱাৰ লগতে অপভ্ৰংশৰ মৰ্যাদাও বাঢ়ি উঠে আৰু দশম শতিকাত সংস্কৃত আৰু প্ৰাকৃতৰ নিচিনা সমান মৰ্যাদাপ্ৰাপ্ত হয়।”

সন্দেহ নাই অসমীয়া ভাষাৰ সামগ্ৰিক গঠনত “আন বৈদিক আৰ্যসকলৰ মুখ্য আৰু প্ৰথম প্ৰাকৃত ভাষা, বৈদিক আৰ্যসকলৰ সংস্কৃত ভাষা, মধ্যযুগৰ ভাৰতীয় প্ৰাকৃত ভাষা, উত্তৰ ভাৰতৰ আধুনিক ভাষা, অসমৰ ওচৰে-পাজৰে থকা আন আৰ্য/আৰ্যভিন্ন ভাষাৰ উপাদান, স্থানীয় ভাষাৰ প্ৰভাৱ, অসমীয়া লোক-সাহিত্য, লোক-গীত, ডাকৰ বচন, কামৰূপী আদি প্ৰাকৃত ভাষা, অসমৰ থলুৱা জনজাতীয় ভাষা আদিৰ সংমিশ্ৰণত গঢ়ি উঠিছে, (পৃঃ ১৭১)। এই ক্ষেত্ৰত মহাযানী বৌদ্ধধৰ্মৰ চৰ্যা-পদবোৰৰ তাৎপৰ্যপূৰ্ণ অৱদান আছে। “চৰ্যা-পদেৰে সৈতে অসমীয়া ভাষাৰ সম্পৰ্ক অসমীয়া ভাষাৰ সকলো স্তৰতে ৰক্ষিত হৈছে। সেই কাৰণে আধুনিক অসমীয়াৰ মান্যভাষা আৰু উপভাষা, প্ৰাচীন অসমীয়াৰ বৈষ্ণৱ আৰু আন বৈষ্ণৱ সাহিত্যৰ ভাষা — এই আটাইবোৰক চৰ্যা-পদৰ ভাষাৰ ঘনিষ্ঠ সম্পৰ্ক দৃষ্টিগোচৰ হয়।..... চৰ্যা-পদবোৰ মহাযানী বৌদ্ধধৰ্মৰ অন্তৰ্গত সহজযান মতাবলম্বী তেইশজন সিদ্ধাচাৰ্যৰ দ্বাৰা ৰচনা কৰা পঞ্চাশটা গীতৰ সমষ্টি। চৰ্যাপদৰ ৰচকসকলৰ ভিতৰত সৰহপাদ, লুইপাদ, মীননাথ, ভুমুসুপাদ, গোৰক্ষপাদ শৱৰপাদ আদি কেইবাজনকো প্ৰাচীন কামৰূপৰ লোক বুলি সিদ্ধান্ত কৰা হৈছে”। (পৃঃ ১৭৩, অঃ সাঃ বৃঃ)।.....

অত্যন্ত আচৰিত আৰু আমোদজনক লাগিলেও “অসমীয়া ভাষাৰ বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস” শিতানৰ (১২২৮ৰ পৰা ১৪৭০ লৈ) (খ) ভাগৰ আলোচনাত সন্নিবিষ্ট এই মন্তব্য তাৎপৰ্যপূৰ্ণ বোধ হয় “প্ৰকৃত্যৰ্থত কমতাপূৰ্বেই অসমীয়া সাহিত্য চৰ্চাৰ মূল কেন্দ্ৰস্থল হৈ পৰিছিল। বিভিন্ন ৰজাৰ পৃষ্ঠপোষকতাত কবিসকলে কাব্যৰচনা কৰিছিল আৰু প্ৰকৃত্যৰ্থত কবিলৈ গ'লে নামনি অসমতে অসমীয়া ভাষাৰ বিশেষ চৰ্চা হৈছিল। (অঃ সাঃ বুঃ ১৮৯ পৃঃ)। আধুনিক অসমৰ সম্পূৰ্ণ বিপৰীত স্থিতিৰ পৰিপ্ৰেক্ষিতত প্ৰাচীন কামৰূপ অসমত সাহিত্য ক্ষেত্ৰত নামনি অসমৰ মূল কেন্দ্ৰ হিচাপে গণ্য হোৱাৰ কাৰণ হিচাপে ৰাজনৈতিক অস্থিৰতা আৰু তাৰ ফলত ৰাজ্যৰ সামগ্ৰিক ভৌগোলিক সীমাৰ সচৰাচৰ পাৰলক্ষ্যনধৰ্মিতাৰ কথাটো আঙুলিয়াব পাৰি। অঃ সাঃ বুঃ ১৮৭ পৃঃ ত এই কথাৰেই অনুৰণন লক্ষ্য কৰা যায়, “এইখিনি উল্লেখযোগ্য যে বৰ্তমান অসমৰ যি ভৌগোলিক সীমাৰেখা তাৰ তুলনাত প্ৰাচীন অসমৰ ভৌগোলিক সীমাৰেখা যথেষ্ট ব্যাপক আছিল। ৰাজনৈতিক কাৰণত অসমীয়া ভাষা সাহিত্যৰ কেন্দ্ৰস্থল পৰিৱৰ্তন হোৱাৰ বাবেই অসমীয়া ভাষাৰ যে সময়ে সময়ে কিছু পৰিৱৰ্তন হৈছিল সেই কথা সঁচা। ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ পৰা পঞ্চদশ শতিকাৰ ভিতৰত অসমীয়া ভাষাইও বিভিন্ন সময়ত আঞ্চলিক ভাষাৰ কিছু তথ্য আহৰণ কৰিছিল।” বাস্তৱিক ক্ষেত্ৰত দেখা যায় অৰ্থাৎ ভিন্ন তথ্য মঙ্গোলীয় গোষ্ঠীৰ ৰজাসকলৰ পৃষ্ঠপোষতাৰ ফলতেই প্ৰাচীন কামৰূপ অসমত অসমীয়া ভাষাই নিজৰ গৌৰৱময় অধ্যায়ৰ প্ৰতিষ্ঠা কৰিবলৈ সক্ষম হৈছিল। অঃ সাঃ বুঃ ১৯২ পৃষ্ঠাত উল্লিখিত মন্তব্যঃ “প্ৰকৃত পক্ষে কবিলৈ গ'লে ৰজা মহামাৰ্গিকা, দৰ্ভন্ত নাৰায়ণ, ইন্দু নাৰায়ণ আদি প্ৰাচীন ৰজাসকলে এই সময়ৰ অসমীয়া সাহিত্যৰ ভেটি তৈয়াৰ কৰোঁতে কবি, সাহিত্যিকসকলক বিদগ্ধ অনুপ্ৰাণিত কৰিছিল তাৰ ফলতেই তেওঁলোকে উৎকৃষ্ট সাহিত্যৰ জন্ম দিবলৈ সক্ষম হৈছিল। প্ৰকৃত্যৰ্থত প্ৰাচীন অসমৰ ৰাজনৈতিক প্ৰভাৱেহে অসমীয়া ভাষাৰ সৃষ্টিত ইন্ধন যোগালে। যাৰ প্ৰতিফলন হৈছে ত্ৰিঃ ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ পৰা পঞ্চদশ শতিকালৈ অসমীয়া সাহিত্যৰ বিশেষ পৰিচয় পোৱা কঠিন হ'লহেঁতেন।”

প্ৰাচীন কামৰূপ অসমত শৈৱধৰ্মৰ স্থান বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য। যোগীনীতন্ত্ৰ আৰু কালিকাপুৰাণত এই সম্বন্ধে বিস্তৃত আভাস পোৱা যায়। “প্ৰাক্ষস্কৰী সাহিত্যৰাজিত শৈৱধৰ্মৰ কথা ঠায়ে ঠায়ে উল্লেখ আছে। বিশেষভাবে কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ ঘ্ৰোণপৰ্ব (মহাভাৰতৰ) ভগিনীত সদাশিৱৰ কথা উল্লেখ কৰা হৈছে। ৰামানন্দ দ্বিজৰ গুৰুচৰিতত প্ৰাক্ষস্কৰী যুগত শৈৱধৰ্মৰ প্ৰভাৱৰ কথা পোৱা যায়। আনহাতে আকৌ বৈষ্ণৱধৰ্মৰ প্ৰবৰ্তক শঙ্কৰদেৱৰ শঙ্কৰ নামকৰণতে শিৱ পূজাৰ ফলতহে যে তেওঁক লাভ কৰে সেই কথাও বিভিন্ন মন্তব্যৰ পৰা জনা যায়। কথা গুৰুচৰিততো ঠায়ে ঠায়ে প্ৰাক্ষস্কৰী যুগত শৈৱধৰ্মৰ এটি সূঁতি বৈ আছিল বুলি বুজিব পাৰি। (অঃ সাঃ বুঃ ১৯৩ পৃঃ) পুনশ্চ “প্ৰাক্ষস্কৰী যুগৰ সৰ্বশ্ৰেষ্ঠ কবি মাধৱ কন্দলীৰ ৰচনাত “অষ্টমীৰ ছাগ” নামৰ এটি উপমা প্ৰয়োগ কৰা হৈছে। দৰং ৰাজবংশাৱলীতো কোঁচৰজা শাস্ত্ৰধৰ্মৰ প্ৰতি আগ্ৰহী বুলি জনা যায়। আনহাতে কথা-গুৰুচৰিতত উল্লেখ থকা মতে শঙ্কৰদেৱৰ প্ৰিয় শিষ্য মাধৱদেৱে যে ঘোৰ শাস্ত্ৰধৰ্মী আছিল সেই কথা জ্ঞানিব পৰা যায়।” (পৃঃ ১৯৪)।

প্ৰাচীন কামৰূপ অসমত ধৰ্ম সম্বন্ধে উপৰি উল্লিখিত সমূহ আলোচনা সামৰি এটি কথা কোৱাই পৰ্যাপ্ত যেন লাগে যে এই ৰাজ্যৰ ধৰ্ম তথা সংস্কৃতি “হৰাপ্পা” সংস্কৃতি অৰ্থাৎ “বাবা ভোলানাথ তথা শিৱৰ সংস্কৃতি (হৰ অৰ্থে শিৱ + আপ্পা অৰ্থে বাবা অৰ্থাৎ পিতৃ) = বাবা শিৱৰ সংস্কৃতি। অসমৰ ভূতপূৰ্ব ৰাজ্যপাল লালন প্ৰসাদ সিং অৱ গ্ৰন্থ “Tantra : Its Mystic and Scientific Basis” ৰ পৰা নিম্নলিখিত প্ৰাসঙ্গিক উদ্ধৃতি দিয়া যাব পাৰে :

“The founder of Tantra is Lord Siva. He is Known as Adi Guru (Devadideva -সাঃ সংঃ) Sir John Marshall says in the excavation report of Harappa and Mohenjo-daro that Siva is the male deity of the non- Aryan pantheon of pre-Vedic India.

Siva remaining eternally in the state of bliss and beauty, that is why he is called Sadā Siva (one who always remains in bliss)

The Harappa civilization is the gift of Saivism The only male God of the Harappan culture is Lord Siva

Saivism and Saktism are the two aspects of Tantra Saktism represents the beginning of Tantra Sadhana and the Saivism is the culminating point of the spiritual march.

Devotion is the secret of Tantra Sadhana. Without self-surrender, there is no possibility of success in Tantra Sadhana It has been said that the cult of devotion originated in the Diavidian land, i.e. eastern India.

The impact of the Tantra culture in eastern India is greater than in northern and western India.

Prof. Winternitz says : “The original home of the Tantras seems to have been in Bengal where they spread throughout Assam and Nepal, and even beyond India to Tibet and China through the Agency of Buddhism”.

(তন্ত্ৰৰ প্ৰতিষ্ঠাপক ভগৱান শিৱ। তেওঁ আদিগুৰু (দেবাদিদেৱ সাঃ সংঃ) নামে পৰিচিত। চাৰ জন মাৰ্ছালে হৰাপ্পা আৰু মহোঞ্জোদাৰোৰ খননকাৰ্যৰ প্ৰতিবেদনত কৈছে, শিৱ প্ৰাকবৈদিক ভাৰতবৰ্ষৰ আৰ্যভিন্ন ধৰ্মবিশ্বাসৰ পুৰুষ দেৱতা।

শিৱ সদানন্দ সমাধিস্থ অৱস্থাত থাকে, সেই কাৰণে তেওঁক সদাশিৱ আখ্যা দিয়া হৈছে (যিয়ে সদানন্দ অৱস্থাত থাকে)। হৰাপ্পা শব্দ ‘হৰ’ আৰু ‘আপ্পা’ৰ সহযোগত হৈছে যাৰ অৰ্থ ‘শিৱ’ আৰু ‘পিতৃ’। হৰাপ্পা সভ্যতা শৈৱধৰ্মৰ অৱদান। ভগৱান শিৱই হৰাপ্পা সংস্কৃতিৰ একমাত্ৰ পুৰুষ দেৱতা।

শৈৱধৰ্ম আৰু শক্তিধৰ্ম তন্ত্ৰৰ দুটি দিশ : শক্তিধৰ্মই তন্ত্ৰ সাধনাৰ প্ৰাৰম্ভৰ সূচনা কৰে আৰু শৈৱধৰ্মই তাৰ আধ্যাত্মিক পদযাত্ৰাৰ শেৰাস্ত বিন্দু।

আত্ম-উৎসৰ্গা তত্ত্বসাধনাত গোপন কথা। আত্মনিবেদন অবিহনে তত্ত্ব সাধনাত
সফলতাৰ সম্ভাবনা নাই। আত্ম-উৎসৰ্গাৰ বিধান ব্ৰাৱিড় ৰাজ্যত অৰ্থাৎ পূৰ্ব-ভাৰতত উৎপন্ন
হোৱা বুলি জনা যায়।

তত্ত্ব সংস্কৃতিৰ প্ৰভাৱ উত্তৰ আৰু পশ্চিম ভাৰতৰ তুলনাত পূৰ্ব ভাৰতত অধিক
প্ৰবল।

অধ্যাপক উইষ্টাৰনীটজে কয় “তত্ত্বৰ মূল উৎপত্তিস্থল বঙ্গদেশত যেন ধাৰণা হয়,
তাৰ পৰা সিহঁতে সমগ্ৰ অসম আৰু নেপালত বিয়পি পৰে। এনেকি বৌদ্ধধৰ্মৰ মাৰফত
ভাৰতবৰ্ষ অতিক্ৰম কৰি তিব্বত আৰু চীনদেশ পায়গৈ।

* * *

প্ৰাচীন অসম কামৰূপৰ অসমীয়া লিপিৰ চমু বুৰঞ্জী (আৰম্ভণিৰপৰাই ১২২৮
লৈ)ৰ আলোচনা প্ৰসঙ্গত কোৱা হৈছে, “ত্ৰিষ্টীয় পঞ্চম শতিকাৰ পৰা আৰম্ভ কৰি
পৰবৰ্তী কালৰ প্ৰাপ্ত বিভিন্ন শিলালেখ আৰু তামৰ ফলিৰ অধ্যয়নে এইটো স্পষ্টৰূপে
দেখুৱায় যে অসমীয়া লিপিটো অসমৰ শিলালেখ আৰু তামৰ ফলিবোৰত ব্যবহৃত
লিপিৰ বিকাশপ্ৰাপ্ত লিপিৰ এটা ৰূপ। এই লিপিৰ মূল ব্ৰাহ্মী আৰু তাৰ পৰবৰ্তী গুপ্ত
লিপি।” (পৃঃ ২১৪) ইফালে বহু শতিকা জুৰি অসমত অসংখ্য সাঁচিপতীয়া পুথি সংস্কৃত
আৰু অসমীয়া ভাষাত ৰচনা কৰা হয়। বন্দুক কামান, ইটা, মুদ্ৰা আদিতো অসমীয়া
লিপিয়ে স্থান অধিকাৰ কৰিছে। “কামৰূপী লিপিয়ে বিকাশ লাভ কৰি মধ্যযুগীয় অসমীয়া
লিপি আৰু অৱশেষত আধুনিক লিপিৰ ৰূপ পাইছে। অসমীয়া লিপিৰ সৈতে বঙলা,
উৰিয়া, মৈথিলী আদি লিপিৰ এটা সম্পৰ্ক আছে। এই সম্পৰ্কৰ পৰা পূৰ্বভাৰতীয়
লিপি কেইটাৰ (অসমীয়া, বঙলা, উড়িয়া, মৈথিলী) মূল গুপ্ত লিপিৰ পৰিৱৰ্তিত ৰূপ
কামৰূপী লিপি বুলি ক’ব পৰা যায়।” (পৃঃ ২১৮)

* * *

ভাৰতীয় আৰ্য ভাষাসমূহৰ আদিৰূপৰ পৰা দশক শতিকাত নবা প্ৰাদেশিক
ভাষাসমূহৰ আধুনিক ৰূপৰ উদ্ভৱ হয় বুলি অঃ সাঃ বৃঃ ত উল্লেখ কৰা হৈছে। সেই সূত্ৰে
নবা অসমীয়া আধুনিক আৰ্য ভাষাবোৰ জন্ম হয়। এই ভাষাৰ উৎস তথা নিদৰ্শনৰ ভিতৰত
হৰ্ষবৰ্দ্ধনৰ ৰাজকবি বাণভট্টই লিখা হৰ্ষচৰিতত কুমাৰ ভাস্কৰ বমাই হৰ্ষবৰ্দ্ধনলৈ পঠোৱা
উপহাৰসমূহৰ ভিতৰত বহুতো সাঁচিপাতৰ উল্লেখ অন্যতম। সাঁচিপাতসমূহ অসমত সংস্কৃত
ভাষাত ৰচিত বুলি ধাৰণা কৰা হয়।

যিহেতু শিলালেখ আৰু তামৰ ফলিবোৰৰ ভাষা, সাহিত্য ৰাজবংশ, বিষয়া,
ব্ৰাহ্মণ পণ্ডিত আৰু অভিজাতসকলৰ লগতে সম্পৰ্কিত সেইবোৰ সংস্কৃত ভাষাতে ৰচিত
আছিল। অকল ৰাজ অনুগ্ৰহ আৰু স্বীকৃতিৰ প্ৰতি উদাসীন বজ্জয়ানী সিদ্ধসকলেহে মাতৃভাষা
বা কথিত ভাষাত চৰ্যাগীতবোৰত সংস্কৃত, প্ৰাকৃত, অপভ্ৰংশ আৰু অসমীয়া ভাষাৰ
সংমিশ্ৰণত সাহিত্য ৰচনা কৰিলে। এইবোৰেই আধুনিক অসমীয়া ভাষাৰ আদি ৰূপ।
চৰ্যাগীতকোষৰ চাৰিটা গীতৰ লিখক, সৰহপাদৰ জন্ম, ডঃ বিনয়তোষ ভট্টাচাৰ্যৰ মতে

পূবৰ দেশ এখনৰ ৰাজী নামে ঠাইত (কামৰূপৰ ৰাণী) হৈছিল। ডঃ সুনীতি কুমাৰ চেটাৰ্জীয়ে “বঙলা ভাষাৰ উৎপত্তি” সম্পৰ্কে গৱেষণা গ্ৰন্থত দিয়া অভিমত — প্ৰাক্-মুচলমান কালৰ বঙলা আৰু অসমীয়া এটাই ভাষা আছিল।

এতিয়া উত্তৰ-মধ্য বঙ্গ (পুন্ড্ৰবৰ্দ্ধন) আৰু উত্তৰ বঙ্গ আৰু পশ্চিম অসম (কামৰূপ)ত ৭ম শতিকাত একেটা সাদৃশ্যপূৰ্ণ ভাষা চলিছিল বুলি আশা কৰা যায়, যিহেতু ১৫শ আৰু ১৬শ শতিকাত এইবোৰ অঞ্চল আৰু আনবোৰ স্থানত অন্ততঃ বাহ্যিক ৰূপত প্ৰায় একেটা কথিত ভাষাই চলিছিল যাৰ অস্তিত্ব বঙলা আৰু অসমীয়াৰ আজিলৈকে প্ৰচলিত নিদৰ্শনৰ পৰা চকুত পৰে। আৰু ডঃ চেটাৰ্জীৰ ওপৰত উল্লেখ কৰা ভাষাতে চৰ্যাগীত আৰু অন্যান্য সাহিত্য এই সময়ছোৱাত ৰচিত হৈছিল। (পৃঃ ২২৬-২২৭, ২২৯)

* * *

“লোক সংস্কৃতিৰ অন্যতম অঙ্গ লোক সাহিত্য বা বাচিক কলা পৰম্পৰাগত কলা। পুৰণানুক্ৰমে মুখে মুখে চলি আহি থাকে, ইয়াত লেখকৰ নাম-ধাম পোৱা নেযায়। সেইবাবে লোক সাহিত্য বা বাচিক কলা নৈৰ্ব্যক্তিক, সমাজসচেতন আৰু পৰিৱৰ্তনশীল। এইবিধ লোক-সংস্কৃতিৰ উদ্ভৱ সম্পৰ্কে সুনিৰ্দিষ্ট সময়সীমা নিৰ্দেশ কৰিব নোৱাৰি বাবে ইয়াক যুগনিৰপেক্ষ ৰচনা বোলা হয়। (অঃ সাঃ বৃঃ ২৩১ পৃঃ)

মৌখিক সাহিত্য বা লোক-সাহিত্যৰ নিম্ন উক্ত নিদৰ্শনৰ পৰা বোধ হোৱা সম্ভৱ। সেইবোৰ নিদৰ্শনে সাহিত্যৰ বিৰল ৰসৰ সন্ধান দিবলৈ সমানে সক্ষম।

১) একদিনা বৈকুণ্ঠত লক্ষ্মী সৰস্বতী।

বিবাদ কৰন্তু দোহে হুৱা ক্ৰুদ্ধমতি।।

কন্দলে নপাৰি পাচে সৰস্বতী আই।

বিমুগ্ধৰ চৰ্শণে পৰি কান্দন্তে কিনাই।।

হেন দেখি মহা কৃপাময় নাৰায়ণ।

সৰস্বতীক চাই হেন বুলিলা বচন।।

শুনা বাগেশ্বৰী তুমি জগতৰে মাতৃ।

বিদ্যা বিনোদিনী সৰে বেদ অধিষ্ঠাত্ৰী।।

লক্ষ্মীতো কৰিয়া জানিবাহা তুমি বৰ।

তুমি ৰাগ কৈলে হৈবো বৰ অধস্তৰ।।

নিৰ্ব্বাক হৈবন্ত জগতৰ যত প্ৰাণী।

শুনি আনন্দিত ভৈলা জগত গোসানী।।

বীণায়ন্তে পঞ্চসুৰ তুলি ৰাগ দিলা।

সৰস্বতী কণ্ঠত কল্যাণি ৰাগ ভৈলা।। (পৃঃ ২৩৭)।

(২) ভাৱাইয়া গীতৰ উদাহৰণ :

কিসেৰ মোৰ ৰাঙ্কন, কিসেৰ মোৰ বাঢ়ন

কিসেৰ মোৰ হুলদি বাটা,

মোৰ প্ৰাণধন অনোৰ বাড়ী যায়
 মোৰ অঙ্গিনাই দিয়া ঘাটা।
 ও সজনী কাৰবা আগে কব মোৰ দুখেৰ কথা।।
 মোৰ বন্ধু গান গায় মাথা তুলি নাচায়,
 মই নাৰী যাং জলেৰ ঘাটে।।
 চেতন হুৱা দেখং বন্ধু নাই বগলে
 গাবখান মোৰ চেংচেঙা কৰে।
 ও সজনী কাৰ আগে কব মোৰ দুখেৰ কথা।। (পৃঃ ২৫১)।

* * *

প্ৰাকশঙ্কৰী যুগৰ কবিসকল হেম সৰস্বতী, হৰিবৰ বিপ্ৰ, কবিশত্ৰু সৰস্বতী, ৰুদ্ৰ কন্দলী আৰু তেওঁলোকৰ ভিতৰত শ্ৰেষ্ঠজন মাধৱ কন্দলী। তেওঁলোকৰ বিষয়ে অঃ সাঃ বুঃত সংক্ষিপ্ত যদিও যথোচিত আলোচনা হোৱা বুলি বোধ হয়। সাধাৰণ সম্পাদকৰ মন্তব্য হিচাপে প্ৰাকশঙ্কৰী যুগৰ অসমীয়া সাহিত্যৰ ভিত্তিমূলৰ স্ৰষ্টা এইসকল মহান কবিৰ সম্পৰ্কে অঃ সাঃ বুঃত যিখিনি আলোচনা হৈছে তাৰে পৰা সংক্ষিপ্তসাৰ নিবেদন কৰিয়ে মোৰ এই মহান দায়িত্ব সামৰা হ'ব।

চাৰ এডোবাৰ্ড গেইটৰ ৰচিত History of Assam ৰ তথ্যৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি প্ৰাকশঙ্কৰী যুগৰ প্ৰথম কবি হেম সৰস্বতীৰ পৃষ্ঠপোষক ৰজা দুৰ্লভ নাৰায়ণক ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ শেষ ভাগৰ ৰজা বুলি কোৱা হৈছে। (পৃঃ ৩৭৪) কবিৰ ৰচিত সৰু পুথি প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ আৰু বৰ্তমানেও ছপা হৈ নোহোৱা হৰগৌৰী সংবাদ।

“পিতৃৰ বিয়োগ অসহনীয়, মৰ্মান্তিক। কাব্যখনিৰ সামৰণিৰ পিনে নাৰায়ণৰ মুখত দাৰ্শনিক তথা সম্বলিত বাক্যেৰে প্ৰহ্লাদক সন্তুনা দিয়াৰ চিত্ৰ এখনিও কবিয়ে দাঙি ধৰিবলৈ পাহৰা নাই। এই জগতত কোনো কাৰো সম্বন্ধীয় নহয়। এই প্ৰসঙ্গত কবিয়ে উপমা ‘অলঙ্কাৰ’ মাধ্যমেৰে নাৰায়ণৰ মুখেৰে ব্যক্ত কৰাইছে।

নাকান্দা নাকান্দা বাপু নকৰা সন্তাপ।

কৈৰ ভাৰ্যা পুত্ৰ দেখা কৈৰ মাৰ বাপ।।

যেহেন বৃক্ষত পক্ষী থাকে এক সঙ্গে।

নিশা গোট বন্ধে যেন মতে ৰঙে চঙ্গে।।

ৰজনী প্ৰসন্ন ভৈলে দশোদিশে যাই।

পিতৃৰ পুত্ৰৰ জানা তনয় পৰায়।।” (পৃঃ ৩৮০)

পুনশ্চ : “অসম বুৰঞ্জীৰ তথ্যানুযায়ী গৌড়েশ্বৰ জচেন চাহে ১৪৯৮ খ্ৰিষ্টাব্দত কমতাপুৰ নগৰ ধ্বংস কৰাৰ কিছু বছৰৰ আগতে হৰ-গৌৰী সম্বাদ পুথিখন নিশ্চয় ৰচিত হৈছিল বুলি খাটাংভাৱে ক'ব পাৰি। সুকুমাৰ মহন্তৰ ঘৰৰ পৰা পোৱা অসম বুৰঞ্জীত কমতেশ্বৰ, গৌড়েশ্বৰৰ বেটা সুশুদ্ধি ওৰফে গৰমা কুঁৱৰী আৰু পুত্ৰক ‘হৰ-গৌৰী’ সম্বাদ’ৰ তথ্য এটি লিপিবদ্ধ হৈ আছে। ৰজাৰ পুৰোহিত নীলান্বৰ ব্ৰাহ্মণৰ বেটা দীননাথ, চন্দ্ৰভাল,

চন্দ্ৰশেখৰৰ মুখে ‘হৰ-গৌৰী সম্বাদ’ পুস্তক শুনি থাকে, কমতেম্বৰে অভাস্তৰত দুই ভাৰ্যা সহিতে। ৰাজা আনন্দ হৈ বঁটা-বাহন দি চন্দ্ৰশেখৰক সন্তোষ কৰি পঠায়; দুই ভাৰ্য্যায়ো অনেক ৰূপে খুৱাই বঁটা-বাহন পিন্ধাই পঠায়। অসম বুৰঞ্জীত উল্লেখ কৰামতে গৌড়েশ্বৰৰ জীয়ৰী আৰু কমতেম্বৰ নীলাম্বৰৰ পত্নী সুশুদ্ধিৰ (পিচলৈ গড়মা কুঁৱৰী) নীলাম্বৰৰ পুৰোহিতৰ পুত্ৰ চন্দ্ৰশেখৰৰ লগত হোৱা গোপন প্ৰণয়ক কেন্দ্ৰ কৰি উদ্ভৱ হোৱা কেলেকাৰিত চন্দ্ৰশেখৰৰ হত্যা, গড়মা কুঁৱৰীৰ এঘৰীয়া আৰু কছাৰী ৰজালৈ পলায়ন, জোঁৱায়েক কমতেম্বৰৰ ওচৰত অপূৰ্ব ‘হৰ-গৌৰী সম্বাদ’ পুস্তক অৰ্হেয়ণ আৰু গৌড়েশ্বৰে কমতাপুৰ ধ্বংস কৰা আদি ঘটনা ঐতিহাসিক সত্যৰ ওপৰত প্ৰতিষ্ঠিত”।

প্ৰাক্-শঙ্কৰী যুগৰ দ্বিতীয় কবি হেম সৰস্বতীৰ এতিয়াও ছপা হৈ নোলোৱা কাব্য “হৰ-গৌৰী সম্বাদ”ৰ পৰা নিম্নলিখিত অংশ উদ্ধৃত কৰা হৈছে —

পূৰ্ব জনমত তুমি দক্ষৰ দুহিতা।
 সতী নামে আছিলো আমাৰ বিবাহিতা।।
 দক্ষ জঞ্জা কোপে তুমি এৰিলা প্ৰাণ।
 তোমাৰ মৰণে মোৰ হৰিল গিয়ান।।
 তোমাৰ সবক মই কান্ধত কৰিলো।
 প্ৰদক্ষিণে সসাগৰা পিথিবি ফুৰিলো।।
 উৰু শিৰ কন্দা জিহবা কৰতল।
 যোনি মুদ্ৰা স্তন জুগল চৰণ কমল।।
 খসি খসি অঙ্গ সবে হৈল বেকত।
 কালিকা কামাক্ষা আদি ৰূপ জত জত।।
 সৰি গলি গৈল দেহ আমাৰ গাৱত।
 শেষ হাৰ পায় পাছে পিন্ধিলো গলত।। (পৃঃ ৩৭৯)।

প্ৰাক্-শঙ্কৰী যুগৰ দ্বিতীয় কবি, ‘হৰিবৰ বিপ্ৰ’ কামপুৰ বা কমতাপুৰৰ ৰজা দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ সময়ৰ কবি আছিল। (তেওঁৰ দুৰসম্পৰ্কীয় ধৰ্মনাৰায়ণৰ দখলৰ পৰা) পাঁচ বছৰ যুদ্ধ কৰি দুৰ্লভ নাৰায়ণে ১৩৩০ ত সৰহ অংশ ৰাজ্য উদ্ধাৰ কৰি কোচবিহাৰ নগৰৰ পৰা ৯ ঘণ্টাৰ বাট (প্ৰায় ২৭ মাইল) পশ্চিমে থকা গৰিয়াত ৰাজধানী পাতি তাৰ পৰা বৰনদীলৈকে ৰাজ্যখণ্ড শাসন কৰে। হৰিবৰ বা হৰিবৰ তেওঁৰে ৰাজসভাৰ কবি আছিল। ১৩৫০ ত তেওঁৰ শাসনকাল অন্ত পৰে। (The History of Medieval Assam ডঃ নগেন্দ্ৰ নাথ আচাৰ্য্য) (অঃ সাঃ বৃঃ ৩৯৫ পৃঃ)। হৰিবৰ বিপ্ৰৰ তিনিখন কাব্য; বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ, লব-কুশৰ যুদ্ধ আৰু তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ।

কবি কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ দ্বন্দ্ব ৰূপেটাৰ ওচৰৰ ছোট শিলা গ্ৰামত। কায়স্থ চক্ৰপাণি শিকদাৰ আছিল কবিৰ পিতৃ আৰু তেওঁ ৰাজবিষয়া আছিল। কবিৰত্ন সৰস্বতীয়ে ইন্দ্ৰনাৰায়ণৰ পৃষ্ঠপোষকতা লাভ কৰি মহাভাৰতৰ দ্ৰোণপৰ্বৰ অন্তৰ্গত ‘জয়দ্রথ বধ’ অসমীয়ালৈ অনুবাদ কৰে।

নৃপ শিবোমগি দেৱ মহামানী
 দুৰ্লভ নাৰায়ণ ৰজা।
 নিতে পুত্ৰৱড়ে পালিলা সততে
 পৃথিৱীৰ যত প্ৰজা।।
 তাহান তনয় ভৈল ধৰ্মময়
 ইন্দ্ৰ নাৰায়ণ দেৱ।
 মহাবীৰ ধীৰ স্বভাৱে গভীৰ
 নিতে কৃত হৰি দেৱ।।
 নিজ বাহুবলে পাইলা অবিকলে
 অশ্বশু মহীমণ্ডলে।
 যত খাটে নমি সততে প্ৰণামি
 বিপক্ষ নৃপসকলে।।

“গৌড়েশ্বৰ ধৰ্মনাৰায়ণ (ডিম্বেশ্বৰ নেওগ, ডঃ মহেশ্বৰ নেওগৰ মতে ধৰ্মপাল) কমতেশ্বৰ দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ প্ৰতিদ্বন্দ্বী আৰু সমসাময়িক ৰজা আছিল বুলি জনা যায়। এই ধৰ্ম নাৰায়ণৰে পুত্ৰ শ্ৰীমন্ত তাম্ৰধ্বজ দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ পুত্ৰ ইন্দ্ৰ নাৰায়ণৰ সমবয়সী আৰু দুয়ো চতুৰ্দশ শতিকাৰ মাজ ভাগত নিজ নিজ অঞ্চলৰ ৰজা আছিল।

“তাম্ৰধ্বজ ৰজাৰ পষ্ঠপোষকতাত কবি ৰুদ্ৰ কন্দলীয়ে সংস্কৃত মহাভাৰতৰ দ্ৰোণ পৰ্বৰ অন্তৰ্গত ‘জয়দ্ৰথ বধ’ৰ ভিতৰত ‘সাত্যকি প্ৰৱেশ’ৰ অনুবাদ সম্পূৰ্ণ কৰে—

শ্ৰীমন্ত তাম্ৰধ্বজ অনুজ্ঞে সহিতে ;

বৃদ্ধৰ সমান ধৰ্ম শিশু বয়সতে।।

বুদ্ধিত গভীৰ ক্ষেমাৱন্ত শুভনয়।

যাহাৰ যশক সৰ্বজনে প্ৰশংসয়।। (পৃঃ ৪২১)।

“মূল ‘সাত্যকি প্ৰৱেশ’ৰ অনুবাদক কবি ৰুদ্ৰ কন্দলী নিশ্চয় যোগ্য ব্যক্তি। সংস্কৃত আৰু অসমীয়া ভাষাৰ ওপৰত সমানে দখল থকা ব্যক্তিক ৰজা তাম্ৰধ্বজে এই গুৰু দায়িত্ব ন্যস্ত কৰিছিল।” (পৃঃ ৪২৯)

* * *

মাধৱ কন্দলীয়ে বৰাহী ৰজা মহামাণিক্য বা মহামাণিকক শ্ৰৱণ কৰাবলৈ ৰচনা কৰা সাৰোদ্ধৃত সপ্তকাণ্ড ৰামায়ণখনি আৰ্যমূলীয় ভাৰতীয় আঞ্চলিক ভাষাসমূহৰ ভিতৰত সৰ্বপ্ৰাচীন ৰামায়ণ। সংস্কৃত ভাষাত আদি কবি বাস্মণীকি ৰচিত ৰামায়ণখন যেনেকৈ পিচৰ যুগৰ প্ৰথিতযশা লেখকসকলৰ কাব্যৰচনাৰ আদৰ্শ আৰু প্ৰেৰণাৰ উৎস আছিল, অসমীয়া ভাষাতো প্ৰাক-শঙ্কৰী কবি মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণখনি পিচৰ যুগৰ কবিসকলৰ কাৰণে তেনেকৈয়ে আদৰ্শ আৰু প্ৰেৰণাৰ উৎস। অসমীয়া সাহিত্যৰ ইতিহাসত যুগপ্ৰৱৰ্তক শঙ্কৰদেৱে মাধৱ কন্দলীৰ পান্ডিত্য আৰু কবিত্বক স্বীকৃতি দি থৈ গৈছে। শঙ্কৰদেৱে মাধৱ কন্দলীৰ পদ আদৰ্শক চাই কাব্য ৰচনা কৰাৰ অস্পষ্ট ইঙ্গিত এটাও দি গৈছে। প্ৰাক

শঙ্কৰী যুগৰ কবিসকলৰ ভিতৰত মাধৱ কন্দলীৰ ৰচনাতে বৈষ্ণৱ যুগৰ কাব্য ৰীতিয়ে এটা আদৰ্শনীয় নিৰ্দিষ্ট পথ গঢ় লোৱা পৰিলক্ষিত হয়। শঙ্কৰদেৱকে মুখ্য কৰি পিছৰ বৈষ্ণৱ কবিসকলৰ ৰচনাৰীতিৰ ওপৰত মাধৱ কন্দলীৰ প্ৰভাৱ বহুখুখী। শঙ্কৰ-মাধৱ দুজনা গুৰুৱে উত্তৰাকাণ্ড আৰু আদি কাণ্ড সংযোজিত কৰি পূৰ্ণাঙ্গ কৰা মাধৱ কন্দলী ৰচিত ৰামায়ণখনে পিচৰ যুগৰ ৰামকথা প্ৰণেতাৰসকলক গভীৰভাৱে প্ৰভাৱিত কৰিছে। (অঃ সাঃ বৃঃ, ৪৫০ পৃঃ)। অপহৃত্য সীতাৰ থমকি থমকি উঠা উচুপনি, প্ৰিয়তমাৰ সন্ত্ৰেদ পোৱা ৰামৰ হৃদয়ৰ খৌকি-বাখৌ অৱস্থাৰ সুন্দৰ ব্যঞ্জনাৰ নিদৰ্শন তলত দিয়া হৈছে —

আকাশৰ পথে যান্তি।

দশদিশে নিহলন্তি।।

ভয়ে আতি চমকন্তি।

ক্ৰন্দন কৰিয়া যান্তি।।

লক্ষ্মনক সুমৰন্তি।

ৰাম ৰাম উচ্চৰন্তি।। ইত্যাদি (পৃঃ ৪৩৯)।

সাধাৰণ সম্পাদকৰ দায়িত্ব পালন কৰিবলৈ গৈ আনন্দৰাম বৰুৱা ভাষা, কলা, সংস্কৃতি সংস্থা, অসমৰ দ্বাৰাই প্ৰণয়নৰ অন্তিম পৰ্বত পদাৰ্পণ কৰা অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ প্ৰথম খণ্ডৰ পাণ্ডুলিপিখন অধ্যয়ন কৰি সৰ্বপ্ৰথম ৰসাস্বাদনৰ বিৰল সৌভাগ্যৰ প্ৰাপক হোৱা কাৰণে সহৃদয় পাঠকসকলৰ ক্ষমা বিছাৰিছোঁ। মোৰ ব্যক্তিগত সীমিত দৃষ্টিত অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ (প্ৰথম খণ্ড) পাণ্ডুলিপিৰ পৰা বিভিন্ন বিষয় আৰু অধ্যায়ৰ সংক্ষিপ্তসাৰ অতি সহজনে বাচি উলিয়াই আলোচিত গ্ৰন্থৰ প্ৰতীতি জন্মোৱাৰ প্ৰযত্ন কৰা হৈছে। তাৰ বাবে আৰু স্থান বিশেষে মোৰ ব্যক্তিগত মন্তব্যৰ সম্ভাৱ্য ভুল-ত্ৰুটিৰ বাবে ক্ষমা বিছাৰিছোঁ।

যিসকল লেখক-গৱেষক, কবি, সাহিত্যিক, পণ্ডিত ব্যক্তিৰ নিৰলস অধ্যাপনাৰ গুণত অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ প্ৰথম খণ্ড আত্মপ্ৰকাশৰ দুৱাৰদলিত অৱতীৰ্ণ হৈছে বিশেষভাবে সম্পাদক শ্ৰীযুত বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকা প্ৰমুখ্যে তেখেতসকললৈ মোৰ সহৃদয় অভিনন্দন, শ্ৰদ্ধা আৰু ধন্যবাদ জ্ঞাপন কৰিছোঁ। লগতে 'আবিলেক'ৰ মাননীয় সভাপতি আৰু সদস্যসকললৈ মোৰ পৰম শ্ৰদ্ধা আৰু কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন কৰিছোঁ। সৰ্বশেষত, সঞ্চালক ডঃ প্ৰফুল্ল মহন্ত প্ৰমুখ্যে 'আবিলেক'ৰ সমূহ দায়িত্বপ্ৰাপ্ত কৰ্মচাৰীলৈ শ্ৰদ্ধা-প্ৰীতি আৰু সাদৰ সম্ভাষণ জনাইছোঁ।

গুৱাহাটী

২৯/১১/০৩

শোভা ব্ৰহ্ম

সাধাৰণ সম্পাদক

সম্পাদকৰ বক্তব্য

আনন্দৰাম বৰুৱা ভাষা-কলা-সংস্কৃতি সংস্থাই ইয়াৰ সাহিত্য আৰু অনুবাদ উপ-সমিতিৰ অনুমোদনক্ৰমে ছটা খণ্ডত অসমীয়া সাহিত্যৰ সামগ্ৰিক বুৰঞ্জী এখন সঙ্কলন কৰিবলৈ সিদ্ধান্ত গ্ৰহণ কৰে। এই উদ্দেশ্যে অধ্যাপক ৰঞ্জিৎ কুমাৰ দেৱ গোস্বামী, ডঃ গোবিন্দ প্ৰসাদ শৰ্মা আৰু ডঃ হীৰেন গোস্বামীয়ে প্ৰস্তুত কৰা এখন আঁচনিও গ্ৰহণ কৰে।

এই আঁচনি অনুযায়ী বুৰঞ্জীখনৰ প্ৰথম খণ্ডত আৰম্ভণিৰ পৰা ১৪৭০ খ্ৰিষ্টাব্দলৈ সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী সামৰা হ'ব। দ্বিতীয় খণ্ডত ১৪৭০ৰ পৰা ১৫৯৪লৈ সময়ছোৱাৰ সৃষ্টি সামৰা হ'ব। তৃতীয় খণ্ডত ১৫৯৪ৰ পৰা ১৮১৩লৈকে ৰচিত সাহিত্যৰ কথা আলোচনা কৰা হ'ব। চতুৰ্থ খণ্ডত আলোচনা কৰা হ'ব ১৮১৩ৰ পৰা ১৮৮৯লৈ ৰচিত সাহিত্যৰাজ্যিক। পঞ্চম খণ্ডত ১৮৮৯ৰ পৰা ১৯৩৯লৈ ৰচিত সাহিত্যসম্ভাৰ অন্তৰ্ভুক্ত কৰা হ'ব। ষষ্ঠ খণ্ডত আলোচিত হ'ব ১৯৩৯ৰ পৰা বৰ্তমান কাললৈকে সৃষ্ট সাহিত্যকৰ্মৰ বিষয়ে।

প্ৰথম খণ্ডৰ সম্পাদকৰ নাম প্ৰস্তাৱ কৰা হয় ডঃ উপেন্দ্ৰ নাথ গোস্বামীৰ, দ্বিতীয় খণ্ডৰ সম্পাদকৰ বাবে ডঃ শিবনাথ বৰ্মনৰ, তৃতীয় খণ্ডৰ সম্পাদকৰ বাবে ডঃ গোলোক চন্দ্ৰ গোস্বামীৰ, চতুৰ্থ খণ্ডৰ সম্পাদকৰ বাবে ডঃ যোগেন্দ্ৰ নাৰায়ণ ভূঞাৰ, পঞ্চম খণ্ডৰ সম্পাদকৰ বাবে অধ্যাপক ৰঞ্জিৎ কুমাৰ দেৱ গোস্বামীৰ আৰু ষষ্ঠ খণ্ডৰ সম্পাদকৰ বাবে শ্ৰীহোমেন বৰগোহাঞিৰ। প্ৰতিটো খণ্ডত কোন কোন লিখকৰ হতুৱাই অধ্যায়বোৰ লিখোৱাৰ লাগিব, সেই লিখকসকলৰ তালিকাও আঁচনিখনত অন্তৰ্ভুক্ত কৰা হয়।

অসমীয়া সাহিত্যৰ সামগ্ৰিক বুৰঞ্জী বচনাৰ বাবে যিসকল লোকক সম্পাদক আৰু অধ্যয়বোৰৰ লিখক হিচাপে প্ৰস্তাৱ কৰা হৈছে, তেওঁলোকক ১৯৯১ ৰ ১৩ ফেব্ৰুৱাৰীত গুৱাহাটীৰ তৰুণ নগৰত থকা সংস্থাৰ কাৰ্যালয়ত এখন সভাত সমবেত কৰোৱা হয়। ডঃ প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামীয়ে সভাপতিত্ব কৰা এই সভাত এই লিখক, ডঃ লীলাৱতী শইকীয়া বৰা, ডঃ সত্যেন্দ্ৰ নাৰায়ণ গোস্বামী, ডঃ শিবনাথ বৰ্মন, ডঃ বাৰেন্দ্ৰ নাথ দত্ত, ডঃ নৰেন কলিতা, শ্ৰীপ্ৰদীপ চলিহা, শ্ৰীভৱ প্ৰসাদ চলিহা, ডঃ গোলোক চন্দ্ৰ গোস্বামী, শ্ৰী শৰ্মা শৰ্মা, শ্ৰীযোগেন্দ্ৰ নাথ ভূঞা, ডঃ প্ৰফুল্ল মহন্ত, শ্ৰী প্ৰসেনজিৎ চৌপুৰী, শ্ৰীৰঞ্জিৎ কুমাৰ দেৱ গোস্বামী, ডঃ কবীন্দ্ৰ নাথ ফুকন, ডঃ গোবিন্দ প্ৰসাদ শৰ্মা, ডঃ চন্দ্ৰ কটকী, শ্ৰীহোমেন বৰগোহাঞি, শ্ৰী উপেন্দ্ৰ নাথ শৰ্মা, আৰু সংস্থাৰ সঞ্চালক আৰু সভাৰ আহ্বায়ক শ্ৰীটাবু টাইড উপস্থিত আছিল।

ডঃ উপেন্দ্ৰ নাথ গোস্বামীয়ে প্ৰথম খণ্ড অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ সম্পাদকত্ব গ্ৰহণ কৰিবলৈ অনিচ্ছুক বুলি সংস্থাৰ সঞ্চালকে সভাক জনোৱাত সভাত গৃহীত প্ৰথম প্ৰস্তাৱ যোগে শ্ৰীবিজ্ঞেশ্বৰ হাজৰিকাক প্ৰথম খণ্ড বুৰঞ্জীৰ সম্পাদনাৰ দায়িত্ব দিয়া হয়। দ্বিতীয় প্ৰস্তাৱ যোগে ডঃ প্ৰফুল্ল দত্ত গোস্বামীক সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ আটাইকেইটা খণ্ডৰ সাধাৰণ সম্পাদক নিৰ্বাচন কৰা হয়।

প্ৰথম খণ্ড সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ অধ্যয়বোৰৰ লিখক হিচাপে ডঃ উপেন্দ্ৰ নাথ গোস্বামী, ডঃ নবীন চন্দ্ৰ শৰ্মা, ডঃ ৰামচৰণ ঠাকুৰীয়া, ডঃ মলয় ৰয়, ডঃ লীলাৱতী শইকীয়া

বৰা, শ্ৰীবিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকা, আৰু ডঃ সত্যেন্দ্ৰ নাৰায়ণ গোস্বামীৰ নাম দিয়া হৈছিল।

১৯৯১ৰ ৩ এপ্ৰিলত সাধাৰণ সম্পাদকৰ সভাপতিত্বত বহা সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ সম্পাদকসকলৰ ১ম বৈঠকত প্ৰত্যেকজন সম্পাদককে ইয়াৰ পাচৰ বৈঠকত নিজা খণ্ড বুৰঞ্জীৰ অধ্যায়বোৰৰ আঁচনি দাখিল কৰিবলৈ কোৱা হয়। বুৰঞ্জী সঙ্কলন আৰু প্ৰকাশৰ বাবে পৰীক্ষামূলকভাৱে তলত দিয়া সময়সূচী গ্ৰহণ কৰা হয়।

(ক) প্ৰবন্ধ সংগ্ৰহৰ অন্তিম তাৰিখ : ১৯৯১ৰ ডিচেম্বৰ, (খ) সম্পাদনা সম্পূৰ্ণ : ১৯৯২ৰ জুন; (গ) ছপাৰ প্ৰতিলিপি তৈয়াৰ : ১৯৯২ৰ ডিচেম্বৰ; (ঘ) মুদ্ৰণ সম্পূৰ্ণ : ১৯৯৩ৰ জুন।

ইয়াৰ পাচৰ ২৪ এপ্ৰিলৰ সম্পাদকসকলৰ বৈঠকত সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ প্ৰথম খণ্ডৰ বাবে তলত দিয়া আঁচনিখন দাখিল কৰা হয় আৰু আলোচনাৰ পাচত গ্ৰহণ কৰা হয়।

প্ৰথম খণ্ডত ৭টা অধ্যায় থাকিব আৰু অধ্যায়বোৰৰ অন্তৰ্গত প্ৰবন্ধবোৰৰ নামৰ বিপৰীতে প্ৰস্তাৱিত লিখকসকলৰ নাম উল্লেখ কৰা হৈছে। অধ্যায়কেইটা হ'ল—

- ১। অসমৰ ৰাজনৈতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস- আৰম্ভণিৰ পৰা ১৪৭০ লৈ;
(ক) আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ লৈ : লিখক— ডঃ প্ৰতাপ চন্দ্ৰ চৌধুৰী, ডঃ সুজিৎ চৌধুৰী (কৰিমগঞ্জ) : আনুমানিক মুদ্ৰিত পৃষ্ঠা ২৫; (খ) ১২২৮ ৰ পৰা ১৪৭০ লৈ : লিখক— ডঃ নগেন্দ্ৰ নাথ আচাৰ্য : আঃ মুঃ পৃঃ ২৫;
- ২। অসমৰ অৰ্থনৈতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস- আৰম্ভণিৰ পৰা ১৪৭০লৈ;
(ক) আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮লৈ : লিখক— অধ্যাপক পৰমেশ্বৰ শৰ্মা, ডঃ প্ৰভাস চন্দ্ৰ গোস্বামী : আঃ মুঃ পৃঃ ২৫; (খ) ১২২৮ৰ পৰা ১৪৭০লৈ : লিখক— অধ্যাপক তাৰক চন্দ্ৰ গোস্বামী : আঃ মুঃ পৃঃ ২৫;
- ৩। অসমৰ সাংস্কৃতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস— আৰম্ভণিৰ পৰা ১৪৭০ লৈ;
(ক) আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ লৈ: লিখক- ডঃ ধৰ্মেশ্বৰ চুতীয়া: আঃ মুঃ পৃঃ ২৫; (খ) ১২২৮ ৰ পৰা ১৪৭০ লৈ : লিখক— ডঃ কেশৱানন্দ দেৱ গোস্বামী : আঃ মুঃ পৃঃ ২৫;
- ৪। অসমৰ ভাষাৰ বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস — আৰম্ভণিৰ পৰা ১৪৭০ লৈ;
(ক) আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ লৈ : লিখক— ডঃ উপেন্দ্ৰ নাথ গোস্বামী : আঃ মুঃ পৃঃ ২৫; (খ) ১২২৮ ৰ পৰা ১৪৭০লৈ : লিখক— ডঃ গোলোক চন্দ্ৰ গোস্বামী, ডঃ ৰমেশ চন্দ্ৰ পাঠক : আঃ মুঃ পৃঃ ২৫ .
- ৫। অসমীয়া লিপিৰ বুৰঞ্জীৰ আভাস— আৰম্ভণিৰ পৰা ১৪৭০লৈ;
(ক) আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮লৈ : লিখক— শ্ৰীবিভূতি পাঁচনী, ডঃ উপেন্দ্ৰ নাথ গোস্বামী : আঃ মুঃ পৃঃ ২৫, (খ) ১২২৮ৰ পৰা ১৪৭০লৈ লিখক- ডঃ উপেন্দ্ৰ নাথ গোস্বামী : আঃ মুঃ পৃঃ ২৫;
- ৬। আদি যুগৰ কবিসকল :-
(ক) চৰ্যাপদ / চৰ্যাগীত (৮ম-১২ শ শতিকা) : লিখক— ডঃ উপেন্দ্ৰ নাথ গোস্বামী : আঃ মুঃ পৃঃ ৯; (খ) গোপীচন্দ্ৰৰ গান : লিখক — নবীন চন্দ্ৰ শৰ্মা : আঃ মুঃ পৃঃ ৪; (গ) ৰামাই পণ্ডিতৰ শূনা পুৰাণ : লিখক- ডঃ ৰামচৰণ ঠাকুৰীয়া:

আঃ মুঃ পৃঃ ৬; (ঘ) চণ্ডীদাসৰ শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্তন : লিখক -- ডঃ লীলাবতী শইকীয়া
বৰা : আঃ মুঃ পৃঃ ৬ ,

৭। প্রাক-শঙ্কৰী যুগৰ কবিসকল :

- (ক) হেম সবস্বতীৰ প্ৰহ্লাদ চৰিত আৰু হৰগৌৰী সম্বাদ : লিখক — ডঃ সত্যেন্দ্ৰ নাৰায়ণ গোস্বামী : আঃ মুঃ পঃ ৮ ; (খ) হৰিহৰ বিপ্ৰৰ লব-কুশ যুদ্ধ, বট-বাহনৰ যুদ্ধ আৰু তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ , লিখক— অধ্যাপিকা ভুবনেশ্বৰী বৈশা, ডঃ ৰামচৰণ ঠাকুৰীয়া : আঃ মুঃ পৃঃ ১০, (গ) কবিত্ব সৰস্বতীৰ জয়দ্রথ বধ : লিখক -- ডঃ নৰেন কলিতা : আঃ মুঃ পৃঃ ৮ ; (ঘ) ৰুদ্ৰ কন্দলীৰ সাতাকি প্ৰবেশ : লিখক — ডঃ নৰেন কলিতা : আঃ মুঃ পৃঃ ৮ , (ঙ) মাধব কন্দলীৰ ৰামায়ণ আৰু দেৱজিৎ : লিখক— ডঃ ৰামচৰণ ঠাকুৰীয়া : আঃ মুঃ পৃঃ ১৬ :

এই খণ্ডটো ৩২৫পৃষ্ঠাৰ হ'ব বুলি আঁচনিত ধৰা হৈছিল।

বাইটিং পেড আৰু ঠিকনা ছপোৱা লেফাফা আদি পোৱাৰ পিচত লিখকসকলৰ ডাক ঠিকনা সংগ্ৰহ কৰি ২৯-৪-৯১ আৰু ২৯-৫-৯১ ৰ ভিতৰত অনুৰোধ কৰা প্ৰবন্ধটো লিখি ৩১-১২-৯১ ৰ ভিতৰত সম্পাদকৰ ঠিকনাত পঠাবলৈ জনোৱা হয়। প্ৰবন্ধটো লিখি পঠাবৰ বাবে লিখকসকলক অতি বেছি ৬মাহ সময় দিবলৈ কোৱা হৈছিল। এই অনুৰোধৰ প্ৰতিক্ৰিয়া তিনি ধৰণৰ হৈছিল। কেইজনমানে সন্মতি জনাই চিঠিৰ উত্তৰ দিছিল। (কাৰণ, লগত ঠিকনা লিখা আৰু ডাক-টিকট লগোৱা লেফাফা পঠোৱা হৈছিল), কেইজনমানে অসন্মতি জনাই উত্তৰ দিছিল আৰু কেইজনমানে নীৰৱতা অৱলম্বন কৰিছিল। অসন্মতি প্ৰকাশ কৰা কেইজনৰ বিৰুদ্ধৰ বাবে সম্পাদকসকলৰ বৈঠকত পৰামৰ্শ বিচৰা হয়। নতুনসকললৈ আকৌ ৬মাহৰ সময় দি প্ৰবন্ধ লিখিবলৈ অনুৰোধ কৰা হয়। নীৰৱে থকাসকলৰ পৰা লিখিব নে নিলিখিব স্পষ্ট উত্তৰ বিচাৰি সোৱৰণি-পত্ৰ দিয়া হয়।

সন্মতি জনোৱাসকলৰ সকলোৰে পৰা প্ৰবন্ধ পোৱা নগ'ল, কেইজনমানেহে দিলে। তেওঁলোকৰ পৰা প্ৰবন্ধ পাম বুলি অৱাক্ত সময়খিনি খৰচ কৰা হ'ল মাত্ৰ। সম্পাদকৰ এনে দুৰ্গতিৰ কথা এটা প্ৰবন্ধৰ উদাহৰণেৰে দিব খুজিছোঁ। অসমৰ ৰাজনৈতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস— আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ লৈ শিতানৰ প্ৰবন্ধটোৰ বাবে ডঃ প্ৰতাপ চন্দ্ৰ চৌধুৰীৰ কাৰ চপা হ'ল। তেওঁ লিখিবলৈ অনিচ্ছা প্ৰকাশ কৰিলে। অনাজন লিখকক চিঠিৰে জনোৱা হ'ল। তেওঁ ৫-৬-৯১ তাৰিখে চিঠিৰে জনালে যে যিহেতু তেওঁ অসমীয়া নাজানে, বঙলা বা ইংৰাজীত প্ৰবন্ধটো লিখি দিলে হ'ব নে নহয়। লগে লগে তেওঁক জনাই দিয়া হ'ল যে ইংৰাজীত দিলেই সুবিধাজনক হয়। ইতিমধ্যে শেষ সীমা ৩১-১২-৯১ পাৰ হৈ যোৱাতো মই প্ৰবন্ধ নাপালোঁ। গতিকে ১৮-১-৯২ত তেওঁক সোৱৰাই দিয়া হ'ল। ২৭-১২-৯১ত ৰেজিষ্টাৰ্ড কৰা তেওঁৰ চিঠি এখন ২১-১-৯২ তাৰিখে পালোঁ। তাত জনাইছে যে এৰিব নোৱৰা কাৰণত প্ৰবন্ধটো সম্পূৰ্ণ কৰিব পৰা নাই। ১৯৯২ৰ জানুৱাৰীৰ প্ৰথম সপ্তাহৰ ভিতৰত নিশ্চিতভাৱে সম্পূৰ্ণ হ'ব। তেওঁ জানুৱাৰী নহয়, ডিচেম্বৰ মাহতো নিদিলে। ২৫-১২-৯২ ত তেওঁক সম্পাদকসকলৰ বৈঠকৰ সিদ্ধান্ত মতে চৰম- পত্ৰ দিয়া হয় আৰু ১৮-২-৯৩ ত তেওঁলৈ প্ৰবন্ধ বিচাৰি কৰা অনুৰোধ ব্যতিল কৰা হয়।

১৮-২-৯৩ গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়ৰ বুৰঞ্জী বিভাগৰ অধ্যাপক এজনক প্ৰবন্ধটো লিখিবলৈ অনুৰোধ কৰা হয়। মৌখিকভাৱেও অনুৰোধ কৰা হয়। কিবাকিবি ব্যক্তিগত সমস্যাৰ বাবে প্ৰবন্ধটো দিবলৈ সময় বঢ়াই দিবলৈ কোৱাত সন্মতি দিওঁ। ৯-১২-৯৪ তাৰিখৰ সম্পাদকসকলৰ বৈঠকত মোৰ খণ্ড বুৰঞ্জীৰ প্ৰবন্ধ দিবলৈ বাকী থকাসকলক প্ৰবন্ধবোৰ সোনকালে দিবলৈ সংস্থাৰ পক্ষৰ পৰা সোৱঁৰাই দিবলৈ পৰামৰ্শ দিওঁ। এইবোৰৰ পৰা কাম নোহোৱাত ৯-১২-৯৪ত সোৱঁৰণি-পত্ৰ পঠোৱা হয়। ৬-১-৯৫ত ডিব্ৰুগড় বিশ্ববিদ্যালয়ৰ বুৰঞ্জী বিভাগৰ অধ্যাপক এজনক প্ৰবন্ধটো লিখিবলৈ দিয়া হয়। তেওঁ ১৯৯৬ৰ ভিতৰতে প্ৰবন্ধটো দিবলৈ সন্মতি জনাই চিঠি দিয়ে। ১১-৭-৯৭ৰ সম্পাদকসকলৰ বৈঠকত গুৱাহাটীৰ লিখকসকলক ব্যক্তিগতভাৱে সংস্থাৰ তৰফৰ পৰা লগ কৰাৰ ব্যৱস্থা কৰা হয়। ইয়াৰ পৰাও বিশেষ লাভ নহ'ল।

শেষত সম্পাদক মণ্ডলীৰ বৈঠকত সিদ্ধান্ত কৰা হয় যে নিৰ্দিষ্ট লিখকসকলে প্ৰবন্ধ নিদিলে বেলেগ বেলেগ লোকক ছমাহ ছমাহকৈ সময় দি অনুৰোধ কৰাৰ সময় নাই। বাকী থকা শিতানবোৰ সম্পাদকসকলে নিজে লিখিব আৰু সংস্থাৰ তৰফৰ পৰা ব্যৱহাৰৰ বাবে প্ৰয়োজন হোৱা প্ৰসঙ্গ-পুথিও দিয়া হব।

১৯৯১ৰ ১৩ফেব্ৰুৱাৰীৰ প্ৰথম প্ৰস্তাৱিত সম্পাদক আৰু লিখকসকলৰ সভাত শ্ৰী শশী শৰ্মাই অসমৰ লোক সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী বেলেগ এটা খণ্ডত সন্নিৱিষ্ট হ'ব লাগে বুলি যুক্তি দৰ্শাইছিল। শ্ৰীভৱপ্ৰসাদ চলিহাই উক্ত প্ৰস্তাৱত সন্মতি জনাইছিল। সভাৰ সভাপতি ডঃ প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামীয়ে লোক-সাহিত্য যুগ বিভাজনৰ ধাৰণাৰ সৈতে খাপ নাখায় বুলি মন্তব্য প্ৰকাশ কৰিছিল। চমু আলোচনাৰ পাচত সিদ্ধান্ত কৰা হৈছিল যে সংশ্লিষ্ট খণ্ডবোৰতে লোক-সাহিত্যৰ আলোচনা কৰা হ'ব কাৰণে ইয়াৰ বাবে বেলেগ খণ্ড এটাৰ প্ৰয়োজন নহ'ব।

ইতিমধ্যে প্ৰকাশ হোৱা খণ্ডকেইটাত লোক-সাহিত্যৰ সম্পৰ্কে আলোচনা কৰা নহ'ল। সেই কাৰণেই বাধা হৈ লোক-সাহিত্য সম্পৰ্কীয় অধ্যায় এটা প্ৰথম খণ্ডটোতে দিব লগীয়া হ'ল। আগতে আঁচনিত এই অধ্যায়টো ধৰা হোৱা নাছিল। হঠাতে এই অধ্যায়টো লিখাৰ বাবে লিখকৰ প্ৰয়োজন হোৱাত গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়ৰ লোক-সংস্কৃতি গৱেষণা বিভাগৰ মুখ্য অধ্যাপক ডঃ নবীন চন্দ্ৰ শৰ্মাৰ ওচৰ চাপিলোঁ। ডঃ শৰ্মাই কোনো আপত্তি নকৰাকৈ এই অধ্যায়টোৰ প্ৰবন্ধখিনি লিখি দিয়াত মই তেওঁৰ ওচৰত কৃতজ্ঞ। ইয়াৰ উপৰিও প্ৰতিজন প্ৰবন্ধ লিখকে এই খণ্ডটোত প্ৰবন্ধ-পাতিৰে সহযোগ কৰাৰ বাবে ধন্যবাদ জনাইছোঁ। সংস্থাৰ সঞ্চালক ডঃ প্ৰফুল্ল মহন্ত আৰু ছপাৰ দায়িত্বত থকা শ্ৰীসদা শৰ্মাকো ধন্যবাদ জ্ঞাপন কৰিলোঁ।

সদৌ শেষত খণ্ডটোত হ'ব পৰা ভুল আৰু ত্ৰুটিৰ বাবে ক্ষমা প্ৰাৰ্থনা কৰিলোঁ। সুধীসকলে দোষবোৰ আঙুলিয়াই দিলে দ্বিতীয় সংস্কৰণত শুধৰোৱাৰ আশা থাকিল।

সূচীপত্ৰ

প্ৰথম অধ্যায়

- ১। (ক) অসমৰ ৰাজনৈতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস— আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮
লৈ • ১ - ৩৭
(খ) ১২২৮ৰ পৰা ১৪৭০ লৈ। • ৩৮-৫৪

দ্বিতীয় অধ্যায়

- ২। (ক) অসমৰ অৰ্থনৈতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস— আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮
লৈ • ৫৫-৭৫
(খ) ১২২৮ৰ পৰা ১৪৭০লৈ। • ৭৬-১০৪

তৃতীয় অধ্যায়

- ৩। (ক) অসমৰ সাংস্কৃতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস— আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮
লৈ, • ১০৫-১৪৪
(খ) ১২২৮ৰ পৰা ১৪৭০ লৈ। • ১৪৫-১৫৬

চতুৰ্থ অধ্যায়

- ৪। (ক) অসমীয়া ভাষাৰ বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস— আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮
লৈ, • ১৫৭-১৮৫
(খ) ১২২৮ৰ পৰা ১৪৭০ লৈ। • ১৮৬-২০৯

পঞ্চম অধ্যায়

- ৫। (ক) অসমীয়া লিপিৰ বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস— আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮
লৈ, • ২১০-২১৫
(খ) ১২২৮ৰ পৰা ১৪৭০ লৈ। • ২১৬-২২৫

ষষ্ঠ অধ্যায়

৬। যুগ-নিৰপেক্ষ সাহিত্য

আৰম্ভণি • ২২৬-২৩০

(ক) মৌখিক সাহিত্য • ২৩১-২৫৬

(খ) সাধুকথা • ২৫৭-২৬৫

(গ) ফকৰা-যোজনা (প্ৰবচন) • ২৬৬-২৭৪

(ঘ) ডাকৰ বচন • ২৭৫-২৮১

(ঙ) মন্ত্ৰ • ২৮২-৩০০

সপ্তম অধ্যায়

৭। আদি যুগৰ কবিসকল

(ক) চৰ্যাগীত • ৩০১-৩৩২

(খ) গোপীচন্দ্ৰৰ গান • ৩৩৩ - ৩৪৭

(গ) ৰামাই পণ্ডিতৰ শূন্য-পুৰাণ • ৩৪৮-৩৫৭

(ঘ) চণ্ডীদাসৰ শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্তন • ৩৫৮-৩৬৫

অষ্টম অধ্যায়

৮। প্ৰাক্‌শঙ্কৰী যুগৰ কবিসকল

(ক) হেম সৰস্বতীৰ প্ৰহ্লাদ চৰিত আৰু হৰগৌৰী সন্বাদ • ৩৬৬-৩৮৬

(খ) হৰিহৰ বিপ্ৰৰ লৱ কুশৰ যুদ্ধ, বক্ৰবাহনৰ যুদ্ধ আৰু তাম্ৰধ্বজৰ
যুদ্ধ • ৩৮৭-৪০৩

(গ) কবিশঙ্কৰ সৰস্বতীৰ জয়দ্রথ বধ • ৪০৪-৪১২

(ঘ) ৰুদ্ৰ কন্দলীৰ সাত্যকি প্ৰৱেশ • ৪১৩-৪৩১

(ঙ) মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণ আৰু দেৱজিৎ • ৪৩২-৪৫৪

৯। লেখক-লেখিকাসকলৰ চমু পৰিচয়। • ৪৫৫-৪৬০

১০। অনুক্ৰমণী • ৪৬৬-৪৮৮

প্ৰথম অধ্যায়

অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী (আৰম্ভণিৰ পৰা ১৪৭০ লৈ)

প্ৰস্তাৱনা

যি কোনো সাহিত্য এজাতি মানুহে সৃষ্টি কৰে। সাহিত্য সৃষ্টিৰ কাৰণে মানুহগণিৰ এটা শান্তিপূৰ্ণ, নিৰাপদ আৰু চৌকিকৰ সুবিধা থকা পৰিৱেশৰ দৰকাৰ। জাতিটোৰ মাজত বা চুবুৰীয়া জাতিবোৰৰ সৈতে অনবৰত যুঁজ-বাগৰ চৰ্চা থাকিলে, প্ৰাণৰ ভয়ত পলাই ফুৰিব লগীয়া হ'লে, বা দিনে দিনে থকা ঠাই সলাই ফুৰিব লগীয়া হ'লে, কোনো মানুহে সাহি এ সৃষ্টি কৰিব নোৱাৰে। গতিকে সাহিত্য সৃষ্টিৰ পূৰ্বচৰ্ত হ'ল সাহিত্য সৃষ্টি কৰিব খোজা জাতিটোৱে কোনো এখন ঠাইত স্থায়ীভাৱে বসতি কৰিব লাগিব। তেওঁলোকে যাতে শান্তিপূৰ্ণভাৱে আৰু নিৰ্ভয়ে সাহিত্য সৃষ্টি কৰিব পাৰে, তাৰ বাবে ঠাইখনত সামাজিক নিৰাপত্তা থাকিব লাগিব। কেৱল স্বাস্থ্য-ব্যৱস্থাইহে সামাজিক নিৰাপত্তা দিব পাৰে। সেই কাৰণে এটা জাতিৰ সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী জানিবলৈ হ'লে, সেই জাতিটোৰ ৰাজনৈতিক বুৰঞ্জীৰ আভাস এটা জানিব লাগিব।

সাহিত্য সৃষ্টি কৰা মানুহ জাতিটো এটা অৰ্থ-ব্যৱস্থান তলতীয়া হৈ থাকে। কবি অৰ্থনীতিয়েই হওক, বা ধনুৰা অৰ্থনীতিয়েই (money economy) হওক, পুঞ্জিবাদী অৰ্থনীতিয়েই হওক বা সমাজবাদী অৰ্থনীতিয়েই হওক, এই মানুহ জাতিটোৰ কিবা এটা অৰ্থ-ব্যৱস্থা থাকিবই লাগিব। এনে অৰ্থ-ব্যৱস্থান প্ৰভাৱ সাহিত্যৰ ওপৰত পৰিবই। বসিকতা কৰি কবৰ দৰে, পুঞ্জিবাদী অৰ্থব্যৱস্থাত ৰচনা হোৱা কাল্পনিক সাহিত্যত ডেকাই এজনী গাভৰু দেখা পায় আৰু সমাজবাদী অৰ্থ-ব্যৱস্থাত ৰচনা হোৱা সাহিত্যত ডেকাই এখন ট্ৰেক্টৰ দেখা পায়। সেই কাৰণে সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ লগত অৰ্থ-ব্যৱস্থাৰ সম্পৰ্ক আছে বুলি নিঃসন্দেহে ক'ব পাৰি।

তদুপৰি, সাহিত্য সৃষ্টি কৰা মানুহ জাতিৰ জীৱন নিৰ্দ্ধাৰ কৰাৰ এটা নিৰ্দ্ধাৰিত প্ৰণালী থাকিব লাগিব। তেওঁলোকে নিৰ্দ্ধিষ্ট গঢ়ৰ ঘৰ-দুৱাৰ, আহিলা-পাতি, আ-অলস্কাৰ, সাজ-পাৰ, খাদ্য-দ্রব্য ব্যৱহাৰ কৰিব লাগিব। লগতে তেওঁলোকে কিছুমান ধাৰণা পৰিৱেশ আৰু পৰম্পৰাৰ পৰা জীৱনৰ অঙ্গ কৰি লয়। ডেকুলীয়ে টোৰ-টোৰালে বৰষুণ দিয়ে, সকলো জীৱেৰে পিতৃ এজন ঈশ্বৰ, মৃত্যুৰ পাচত মানুহৰ আত্মা গৈ কুকুৰ, মেকুৰী, গছ-গছনি আদি ৰূপে জন্ম লয়— এনোবোৰ ধাৰণা জাতিটোৰ মজ্জাগত হৈ পৰে। জাতিটোৰ এই সাংস্কৃতিক জীৱনটোৰ একো ধাৰণা নাথাকিলে সাহিত্যৰ উপলব্ধি সম্যক হ'ব নোৱাৰে।

সাহিত্য কোনো এটা ভাষাত সৃষ্টি হয়। ভাষা নোহোৱাকৈ কোনো সাহিত্য সৃষ্টি হ'ব নোৱাৰে। কেতিয়াৰ পৰা এই ভাষাটোৰ সৃষ্টি হ'ল? পৃথিৱীৰ কোন কোন ভাষাৰ সৈতে এই ভাষাটোৰ সাদৃশ্য আছে? বিভিন্ন ঐতিহাসিক কালত এই ভাষাটোৰ ৰূপ কেনেকুৱা আছিল? এইবোৰ প্ৰশ্নৰ সৈতে সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ সম্পৰ্ক নাই বুলি ক'ব নোৱাৰি। সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী আলোচনা কৰোঁতে ভাষাটোৰ বুৰঞ্জী জানিবৰ আৱশ্যক হৈ পৰে। ভাষাৰ যোগেদিহে সাহিত্যই আত্মপ্ৰকাশ কৰে।

ভাষাৰ লগত লিপিৰ ওতঃপ্ৰোত সম্বন্ধ আছে। যি কোনো সাহিত্য এটা লিপিত লিখা হয় আৰু ভাষাটোত সাহিত্য সৃষ্টি হোৱা দিন ধৰি লিখিত হৈ আহিছে। মৌখিক সাহিত্যবোৰৰ প্ৰথম অৱস্থাত কোনো এটা লিপিৰে লিখা নহ'লেও, সাহিত্য হিচাপে আলোচনা কৰোঁতে সিহঁতক লিখিত ৰূপ দি লোৱা হয়। অলিখিত অৱস্থাত প্ৰয়োজন নহ'লেও লিখিত ৰূপলৈ অনাৰ পিচত মৌখিক সাহিত্যৰ বাবেও লিপিৰ প্ৰয়োজন হয়। লিখিত সাহিত্যৰ ক্ষেত্ৰততো লিপি লাগিবই। আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় ধ্বনি লিপিয়েই হওক বা নতুনকৈ উদ্ভাৱিত লিপিয়েই হওক, নাইবা অন্য এটা সাহিত্যিক জাতিয়ে ব্যৱহাৰ কৰা লিপিয়েই হওক, লিখিত সাহিত্য লিপি নহলে নহয়। ভাষাটোৰ নিজা লিপি থাকিলেতো কথাই নাই। এতেকে সাহিত্য বুৰঞ্জী জানিবলৈ লিপিৰ বিষয়েও জনা উচিত।

সেই কাৰণেই অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ আলোচনা আৰম্ভ কৰাৰ আগতে (১) অসমৰ ৰাজনৈতিক বুৰঞ্জী, (২) অসমৰ অৰ্থনৈতিক বুৰঞ্জী, (৩) অসমৰ সাংস্কৃতিক বুৰঞ্জী, (৪) অসমীয়া ভাষাৰ বুৰঞ্জী আৰু (৫) অসমীয়া লিপিৰ বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস দিবলৈ যত্ন কৰা হৈছে।

অসমৰ ৰাজনৈতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস (আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ লৈ)

(ক)

অসমৰ পুৰণি নাম প্ৰাগ্‌জ্যোতিষ। এই নাম মহাভাৰত, ৰামায়ণ আদি প্ৰাচীন কাব্যবোৰত পোৱা যায়। মহাভাৰতৰ ভীষ্মপৰ্বত ভীমৰ পুতেক ঘাটোৎকচৰ সৈতে প্ৰাগ্‌জ্যোতিষৰ ৰজা ভগদত্তৰ যুদ্ধ বৰ্ণনা কৰোঁতে কোৱা হৈছে—

“তং আপতন্তুং সহসা দৃষ্ট্বা প্ৰাগ্‌জ্যোতিষো নৃপঃ।

চিচ্ছেদ তৎ মহৎ শূলং অৰ্ধচন্দ্ৰেণ বেগবান্ ॥ ১৫ ॥

— মহাভাঃ, ভীষ্মপৰ্ব

(সেই ডাঙৰ শূলডাল গাত পৰিব খোজা দেখি বেগবন্ত প্ৰাগ্‌জ্যোতিষৰ ৰজাই তৎক্ষণাৎ অৰ্ধচন্দ্ৰেৰে তাক কাটিলে।)

ৰামায়ণৰ কিষ্কিন্ধা কাণ্ডত নবক ৰজাৰ প্ৰাগ্‌জ্যোতিষতো সীতাক বিচাৰিবলৈ সূগ্ৰীৱই বানৰ সেনাক নিৰ্দেশ দিছে—

“তত্র প্ৰাগ্‌জ্যোতিষং নাম জতকপমসং পুৰম্।

তস্মিন্ ৱসতি দুষ্টাত্মা নবকঃ নাম দানৱঃ ॥ ১৯ ॥

— ৰামাঃ, ৪/৪১/১৯

(তাতে প্ৰাগ্‌জ্যোতিষ নামৰ সুবৰ্ণময় নগৰ এখনত নবক নামৰ দুষ্টাত্মা দানৱ এটাই বাস কৰে।)

খ্ৰিঃ পূঃ ৪ৰ্থ শতিকাৰ কৌটিল্য অৰ্থশাস্ত্ৰত এই ৰাজ্যক পাৰ-লৌহিত্য বুলি কোৱা হৈছে। ৰাজভট্টৰাজত খব লগীয়া মূল্যৱান বস্তুৰ বিষয়ে কওঁতে অৰ্থশাস্ত্ৰত কোৱা হৈছে—

“ভদ্রশ্ৰিয়ং পাৰলৌহিত্যকং জাতীৱৰ্ণম্। ৬৬”

-অৰ্থশাস্ত্ৰ ২/১১/৬৬,

(পাৰ-লৌহিত্যত হোৱা ৰঙা চন্দন জাতি ফুল বৰণীয়া।)

কালিকা পুৰাণত প্ৰাগ্‌জ্যোতিষ আৰু কামৰূপ দুয়োটা নামকে ব্যৱহাৰ কৰা

হৈছে। প্ৰাগ্‌জ্যোতিষ নামৰ ৰাজ্যখনৰ নাম কেতিয়াৰ পৰা কামৰূপ হ'ল, এই বিষয়ে কালিকাপুৰাণত কোৱা হৈছে—

“পশ্চাৎ ললিতকান্তায়াঃ দেশং কৃত্বা অবধিং পুনঃ।

কৰতোয়া নদীং যাবৎ কামাখ্যানিলয়ং তু তৎ॥ ১২৭

তস্মাৎ কিৰাতান্ উৎসাৰ্য বেদশাস্ত্ৰাতিগান্ বহুন্।

দ্বিজাতীন্ ৰাসযামাস তত্র ৰণান্ সনাতনান্ ॥ ১২৮

বেদাধ্যয়নদানানি সততং ৱৰ্ততে যথা।

তথা চকাৰ ভগৱান্ মুনিভিঃ ৰাসয়ন্ ৱিভূঃ॥ ১২৯

বেদবাদৰতাঃ সৰ্ৱে দানধৰ্মপৰায়ণাঃ।

ন চিৰাৎ অভৱৎ দেশঃ কামৰূপাহ্ৰয়ঃ তদা॥ ১৩০॥

—কাঃ পুঃ, ৩৮/১২৭-৩০

(ললিতকান্তক সীমা কৰি তাৰ পাচৰ পৰা কৰতোয়া আৰু কামাখ্যানিলয়লৈকে দেশখনৰ পৰা কিৰাতসকলক উচ্ছেদ কৰি বেদশাস্ত্ৰজ্ঞ বহুতো দ্বিজ তাত বসবাস কৰালে য'ত বেদ অধ্যয়ন, দান আদি সততে বৰ্তি আছিল। তাতে মুনিসকলৰ সৈতে ভগৱন্ত বিভূৰে বাস কৰিছিল। তেওঁলোক বেদবাদত ৰত আছিল আৰু দান-ধৰ্মপৰায়ণ আছিল। তেতিয়াৰ পৰা অচিৰতে দেশখন কামৰূপ নামৰ হ'ল।)

কালিকাপুৰাণৰ উক্তিৰ পৰা জনা যায় নৰকে ললিতকান্তাৰ পৰা কৰতোয়ালৈকে দেশখনৰ পৰা কিৰাতসকলক উচ্ছেদ কৰি বেদজ্ঞ ব্ৰাহ্মণসকলক বহুওৱা দিনৰ পৰা প্ৰাগ্‌জ্যোতিষৰ নাম কামৰূপ হ'ল। তদুপৰি জনা যায় কামৰূপৰ পূব সীমা ললিতকান্তা আৰু পশ্চিম সীমা কৰতোয়া নদী আছিল। কালিকাপুৰাণৰ ক'ৰবাত ক'ৰবাত কামৰূপৰ পূব সীমা দিক্‌ৰবাসিনী বুলিও কোৱা হৈছে—

“কৰতোয়া নদী পূৰ্বং যাবদ্ দিক্‌ৰবাসিনীম্।

ত্ৰিংশদ্ যোজনৱিক্তীৰ্ণং যোজনৈকশতায়তম্॥ ৭৬

ত্ৰিকোণং কৃষ্ণৱৰ্ণং চ প্ৰভূতাচল-পুৰিতম্।

নদীশতসমায়ুক্তং কামৰূপং প্ৰকীৰ্তিতম্॥ ৭৭”

—কাঃ পুঃ, ৫১/৭৬-৭৭

(কৰতোয়া নদীৰ পূবত দিক্‌ৰবাসিনীলৈকে ত্ৰিশ যোজন বহল, এশ যোজন দীঘল তিনিকুণীয়া, ক'লা বৰণীয়া, বহুতো পৰ্বতেৰে ভৰা, এশখন নদী থকা দেশখনক কামৰূপ বুলি কোৱা হয়।)

কালিকাপুৰাণত কামৰূপৰ পূব সীমা এবাৰ ললিতকান্তা বুলি কোৱা হৈছে আৰু আন এবাৰ দিক্ৰবাসিনী বুলি কোৱা হৈছে, এই দুখন এলৈগৈ ঠাই নে কি? আচলতে ললিতকান্তা আৰু দিক্ৰবাসিনী একে গৰাকী দেৱীৰ মন্দিৰ। উপপুৰাণখনৰ ৮০তম অধ্যায়ত কোৱা হৈছে—

“পীঠে দিক্ৰবাসিন্যা দ্বিকপা ৰমতে শিৱা।। ৩৬

তীক্ষ্ণকান্তাহবয়া ত্বেকা যোগ্ৰতাৰা প্ৰকাৰ্তিতা।

পৰা ললিতাকান্তাথা যা শ্ৰীমঙ্গলচণ্ডিকা।। ৩৭”

— কাঃ পৃঃ, ৮০/৩৬-৩৭

(দিক্ৰবাসিনী পীঠত শিৱপত্নী দুটা ৰূপত বিৰাজ কৰে। শিৱপত্নী উগ্ৰতাৰাৰ এটা ৰূপক তীক্ষ্ণকান্তা বোলা হয়। শিৱপত্নী শ্ৰীমঙ্গলচণ্ডিকাৰ আনটো ৰূপক ললিতকান্তা বোলা হয়।)

কামৰূপৰ পশ্চিম সীমা কৰতোয়া নদী কাষে বহুতে দিক্ৰবাসিনী বা ললিতকান্তাক নদীৰ নাম বুলি ভাবে। দিক্ৰবাসিনী বা ললিতকান্তা শিৱপত্নীৰ নাম। শিৱপত্নীৰ মন্দিৰটোৰ নামো দিক্ৰবাসিনী। মন্দিৰটোৰ অৱস্থানৰ বিষয়ে কালিকাপুৰাণৰ ৮০তম অধ্যায়ত এনেকৈ কোৱা হৈছে—

“নদ্যাঃ স্বৰ্ণশ্ৰিয়ং পূৰ্বং নদী কামাহবয়া শুভা।

কামায়াঃ পূৰ্বভাগে তু নদী সোমশনাহবয়া।। ২৯

সোমশনায়াঃ পূৰ্বস্যাং নদী নাম্না বৃষোদকা।

ততঃ পূৰ্বে কামৰূপং পীঠং তে জগতাং প্ৰসূঃ। ৩০

জগন্ময়ী মহামায়া দেৱী দিক্ৰবাসিনী।

*** *** ***

প্ৰান্তে দিক্ৰবাসিন্যাঃ সদা বহতি স্বৰ্ণদী।। ৩২

সিতগঙ্গাহবয়া লোকে সাক্ষাৎ গঙ্গাফলপ্ৰদা।”

— কাঃ পৃঃ, ৮০/২৯-৩৩

(সোৱণশৰী নদীৰ পূবত কামা নামৰ শুভ নদী। কামাৰ পূব ভাগত সোমশনা নামৰ নদী। ২৯। সোমশনাৰ পূবত বৃষোদকা নামৰ নদী। তাৰ পূবত জগন্ময়ী মহামায়া দিক্ৰবাসিনী দেৱী জগৎমাতাৰ কামৰূপ পীঠ ৩০। দিক্ৰবাসিনী মন্দিৰৰ কাষেৰে সঁচা সঁচিকৈ গঙ্গা জ্ঞানৰ ফল দিব পৰা সিতগঙ্গা নামৰ স্বৰ্ণায় নদী এখন সদায় বৈ আছে।)

দিক্ৰবাসিনী মন্দিৰ থকা অঞ্চলক কামৰূপ পীঠ বুলি কোৱা হয়। ওপৰত উল্লিখিত শ্লোকতেই কোৱা হৈছে, “ততঃ পূৰ্বে কামৰূপং পীঠং তে জগতাং প্ৰসূঃ”, অৰ্থাৎ তাৰ পূবত জগৎ মাতাৰ কামৰূপ পীঠ আছে। দিক্ৰবাসিনী মন্দিৰকে ললিতকান্তাৰ মন্দিৰ বুলিও কোৱা হয়। কি কাৰণে নো একে গৰাকীকে এবাৰ দিক্ৰবাসিনী আৰু আন এবাৰ ললিতকান্তা বুলি কোৱা হৈছে, এই বিষয়ে কালিকাপুৰাণৰ ৮০তম অধ্যায়ত আছে—

“দিক্ৰবঃ অৰুণঃ প্ৰোক্তঃ তথা শম্ভুশ্চ দিক্ৰবঃ।। ৬৪

তস্মিন্ অধ্যুষিতা দেৱী তস্মাদ্ দিক্ৰববাসিনী।”

— কাঃ পৃঃ, ৮০/৬৪-৬৫

(দিক্ৰব মানে অৰুণ বা সূৰ্য আৰু শম্ভু বা শিৱকো দিক্ৰব বোলা হয়।।
তাত বাস কৰে কাৰণে দেৱীৰ নাম দিক্ৰববাসিনী।)

ললিতকান্তা নামটোৰ বিষয়েও উক্ত অধ্যায়তে এনেকৈ কোৱা হৈছে—

“জগৎত্ৰয়ে অপি যস্য্যাঃ তু সদৃশী ক্ৰাপি সুন্দৰী।। ৬৫

ন অন্যাস্তি ললিতা তেন দেৱী ললিতকান্তিকা।”

(তিনিও জগতত যাৰ সমান সুন্দৰী আৰু ৰঙিয়াল অন্য দেৱী নাই, সেই কাৰণে তেওঁক ললিতকান্তিকা বা ললিতকান্তা বোলা হয়।)

১৯৫৮ত অৰুণাচলৰ লোহিত জিলাৰ পায়াত এই মন্দিৰৰ ধ্বংসাৱশেষ আৱিষ্কাৰ হৈছে। ড° দীনেশ চন্দ্ৰ সৰকাৰে তেওঁৰ *Some Epigraphic Records of the Medieval Period Eastern India (1979)* পুথিত এই মন্দিৰৰ ধ্বংসাৱশেষৰ মাজত পোৱা তামৰ ফলিৰ যোগেদি দিক্ৰববাসিনীৰ মন্দিৰ চিনাক্ত কৰিছে। এই ফলিখন ১৩৬৪ শক বা ইংৰাজী ১৪৪২ খ্ৰিষ্টাব্দত লিখোৱা হৈছে। লিখাইছে ‘বৃদ্ধৰাজৰ’ পুতেক মুক্তা ধৰ্মনাৰায়ণে। ড° সৰকাৰে উদ্ধাৰ কৰা ফলিখনৰ পাঠ এনেকুৱা—

“১। (শিৱ)-চৰণ-প্ৰসাদত (দাং) বৃদ্ধৰাজ-তন-

২। য-শ্ৰীশ্ৰীমত-মুক্তাধৰ্মনাৰায়ণেন

৩। শ্ৰীশ্ৰীমতী (মত্যা) দিগ (ক্ৰ) ৰবাসিন্যা-ইষ্টক-আ-

৪। দি-ৱিৰচিত-প্ৰাকাৰ-নিবদ্ধঃ কৃ-

৫। তঃ // আশ্ৰহায়নিকে শক ১৩৬৪।।”

(শিৱৰ চৰণৰ প্ৰসাদত বৃদ্ধৰাজৰ পুতেক/শ্ৰীশ্ৰীমৎ মুক্তাধৰ্মনাৰায়ণৰ দ্বাৰা/

শ্ৰীশ্ৰীমতী দিগবাসিনীৰ/দিক্ৰবাসিনীৰ ইটা আদিৰে ৰিৰচিত দেৱাল নিৰ্মাণ কৰা হ'ল/আঘোণ শক ১৩৬৪।)

ড° সৰকাৰে দিগবাসিনী শব্দটো দিক্ৰবাসিনীৰ প্ৰাকৃত ৰূপ বুলি বিবেচনা কৰিছে। আন হাতে তেওঁ মুক্তাধৰ্মনাৰায়ণক চুতীয়া ৰাজকোঁৱৰ বুলি অনুমান কৰিছে। ১৪৪২ খ্ৰিষ্টাব্দত ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ উত্তৰে সোৱণশিৰী নদীৰ পূবত আৰু দক্ষিণে দিখৌ নদীৰ পূবত অৰুণাচললৈকে বিস্তৃত অঞ্চলটো চুতীয়া ৰজাৰ ৰাজ্য আছিল। ১৫২৩ খ্ৰিঃত চুহুমুং (দিহিঙীয়া) ৰজাৰ (১৪৯৭-১৫৩৯) দিনতাহে আহোমসকলে চুতীয়া ৰাজ্য দখল কৰে। ১৪৪২ত আহোম ৰজাৰ সিংহাসনত চায়েনফা (১৪৩৯-৮৮) ৰজা আছিল। সূৰ্যকান্ত খনিকৰৰ চুতীয়া জাতিৰ ইতিহাস আৰু লোকসংস্কৃতি (১৯৯১) অনুসৰি ফলিত উল্লেখ কৰা বুদ্ধৰাজৰ নাম জয়ধ্বজধ্বাল (১৪২১-৫৪) আছিল।

কালিকাপুৰাণত কামৰূপৰ পূব আৰু পশ্চিম সীমাহে পোৱা যায়। যোগিনীতন্ত্ৰত কামৰূপৰ চাৰিও সীমা উল্লেখ কৰা হৈছে। উক্ত গ্ৰন্থৰ পূৰ্ব খণ্ডৰ ১১শ অধ্যায়ত চাৰিসীমা এইদৰে দিয়া হৈছে---

“নেপালস্য কাঞ্চনাদ্ৰিঃ ব্ৰহ্মপুত্ৰস্য সঙ্গমঃ” ১৬

কৰতোয়াং সমাশ্ৰিত্য যাবদ্ দিক্ৰবাসিনী।

তীৰ্থশ্ৰেষ্ঠাৎ ইক্ষু নদী পূৰ্বস্যাং গিৰিকন্যাকে।

দক্ষিণে ব্ৰহ্মপুত্ৰস্য লাক্ষায়াঃ সঙ্গমাবধি।

কামৰূপ ইতি খ্যাতিঃ সৰ্বশাস্ত্ৰেষু নিশ্চিতঃ” ১৮”

— যোঃ তঃ, পৃঃ ১১/১৩-১৮

এই শ্লোককেইটাৰ সঠিক আৰু শুদ্ধ অৰ্থৰ বাবে গদাধৰ্য কৰি লোৱা হৈছে—

‘নেপালস্য কাঞ্চনাদ্ৰিঃ (কাঞ্চনাদ্ৰেঃ) ব্ৰহ্মপুত্ৰস্য সঙ্গমঃ ১৬। (৫) কৰতোয়াং সমাশ্ৰিত্য যাবদ্ দিক্ৰবাসিনী। উত্তৰস্যাং কঞ্জগিৰিঃ (কাঞ্চনাদ্ৰিঃ) পশ্চিমে ১৭। তীৰ্থশ্ৰেষ্ঠাৎ কৰতোয়াং তু ইক্ষু নদী, পূৰ্বস্যাং গিৰিকন্যাকে (দিক্ৰবাসিনী-ললিতকান্তে), (৫) দক্ষিণে ব্ৰহ্মপুত্ৰস্য লাক্ষায়াঃ সঙ্গমাবধি, কামৰূপঃ ইতি খ্যাতিঃ সৰ্বশাস্ত্ৰেষু নিশ্চিতঃ ১৮।’

অৰ্থাৎ, নেপালৰ কাঞ্চন-পৰ্বতৰ পৰা (কাঞ্চনজঙ্ঘাৰ পৰা) ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ সঙ্গমলৈকে আৰু কৰতোয়াৰ পৰা দিক্ৰবাসিনীলৈকে ধৰি, উত্তৰে কঞ্জ-পৰ্বত (কাঞ্চন-পৰ্বত/কাঞ্চনজঙ্ঘা), পশ্চিমে তীৰ্থশ্ৰেষ্ঠ কৰতোয়াৰ পৰা ইক্ষু নদীলৈকে,

পূবে পৰ্বতৰ জীয়েক দুগৰাকীলৈকে (দিক্ৰবাসিনী আৰু ললিতকান্তা পাৰ্বতীৰে দুটা ৰূপ) আৰু দক্ষিণে লাক্ষা নদীৰে সৈতে ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ সঙ্গমলৈকে অঞ্চলটোক সকলো শাস্ত্ৰতে নিশ্চিতভাৱে কামৰূপ বুলি কয়।

কালিকাপুৰাণ খ্ৰিষ্টীয় দশম শতিকা আৰু যোগিনীতন্ত্ৰ খ্ৰিষ্টীয় ষোড়শ শতিকাত অসমত বা ইয়াৰ আশে-পাশে ৰচনা কৰা হৈছিল বুলি পণ্ডিতসকলে কয়। ইয়াৰ পৰা সিদ্ধান্ত কৰিব পাৰি খ্ৰিষ্টীয় দশম শতিকাত কৰতোয়াৰ পৰা পূবে অৰুণাচলৰ পায়াত থকা দিক্ৰবাসিনী মন্দিৰলৈকে অঞ্চলটো কামৰূপৰ অন্তৰ্গত হৈ আছিল। এই শতিকাত শালস্তম্ভ বংশৰ ৩য় বলৰমা (৮৮৫-৯১০), ৩জন অজ্ঞাত ৰজা (৯১০-৭০), ত্যাগসিংহ (৯৭০-৯০) আৰু পাল বংশৰ ব্ৰহ্মপাল (৯৯০-১০১০) কামৰূপৰ ৰজা আছিল।

বুৰঞ্জীমতে বলৰমাৰ ৰাজ্য তিস্তা নদীৰ পশ্চিমলৈকে আছিল। তেওঁ শ্ৰুতিধৰ নামৰ এজন ব্ৰাহ্মণক তিস্তা বা কৰতোয়াৰ পশ্চিমত থকা দিৰ্জিনা বিষয়ৰ হেঙুসিৱা নামৰ মাটি এডোখৰ (হেঙুসিৱাভিধানা ভূমিঃ) দান দিছিল। মাটিডোখৰ পুণ্ড্ৰৰ্ধন ৰাজ্যত আছিল, পিচত কামৰূপে অধিকাৰ কৰে।

ষোড়শ শতিকাত আহোম ৰজা আছিল দিহিঙীয়া ৰজা (১৪৯৭-১৫৩৯), গড়গঞা ৰজা (১৫৩৯-৫২), আৰু খোৰা ৰজা (১৫৫২-১৬০৩), পূবত চুতীয়া ৰজা ধীৰনাৰায়ণ (১৪৭৮-১৫২০), আৰু নীতিপাল (১৫২০-২৩)। পশ্চিমে কোঁচ ৰজা আছিল বিশ্বসিংহ (১৫১৫-৪০), নৰনাৰায়ণ (১৫৪০-৮৭) আৰু লক্ষ্মীনাৰায়ণ (১৫৮৭-১৬১৪)। উজনিৰ কোঁচ ৰাজ্যত (কোঁচ-হাজোত) আছিল ৰঘুদেৱ (১৫০১-১৬০৩)। ১৫৩১ লৈকে কছাৰী ৰজাসকলৰ নাম জনা নাযায়। কছাৰী ৰজা ডেটুগুৰ (১৫৩১-৩৬) বাহিৰে এই শতিকাৰ কোনো কছাৰী ৰজাৰ নাম পোৱা নাযায়।

এইবোৰ তথ্যৰ পৰা সিদ্ধান্তলৈ আহিব পাৰি— ষোড়শ শতিকাত কামৰূপ নামৰ ৰাজ্য এখন নাছিল। চুতীয়া, আহোম, কোঁচ আৰু কছাৰীৰ মাজত কামৰূপ ৰাজ্য বিভক্ত আছিল। চুতীয়া ৰাজ্যৰ পূব সীমা দিক্ৰবাসিনীলৈকে আছিল বুলি ক'ব পাৰি। সেইদৰে কোঁচ ৰাজ্যৰ পশ্চিম সীমা কৰতোয়ালৈকে থকা কথাষাৰ সত্য। কিন্তু কোনো কাৰণতে উত্তৰ আৰু দক্ষিণ সীমা যোগিনীতন্ত্ৰত কৰা বৰ্ণনাৰে সৈতে নিমিলে। এই কথাৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি— কালিকাপুৰাণ আৰু যোগিনীতন্ত্ৰত দিয়া কামৰূপৰ চাৰিসীমা সমসাময়িক কামৰূপৰ চাৰিসীমা নহয়। কোনোবা প্ৰাচীন গ্ৰন্থত থকা (সৰ্বশাস্ত্ৰেষু নিশ্চিতঃ) বৰ্ণনাৰ পৰা এই বৰ্ণনা দিয়া হৈছে।

প্ৰাগ্‌জ্যোতিষ তথা কামৰূপত কেতিয়া আৰ্যবসতি হৈছিল খাটাতকৈ কোৱা টান। ড° সুনীতি কুমাৰ চেটাৰ্জীয়ে *The Place of Assam in the History and Civilisation of India* (1901) গ্ৰন্থত খ্ৰিঃ পূঃ প্ৰথম সহস্ৰাব্দৰ দ্বিতীয় বা প্ৰথম অৰ্ধৰ ভিতৰত প্ৰাগ্‌জ্যোতিষ আৰ্যীকৃত হৈছিল বুলি কৈছে। তেওঁ কৈছে, “But the Hindu and Puranic traditions that developed or were established in Assam from the period of the first Aryanisation of Assam and the settlement of Brahmanas there, which may well go back to second half or even the first half of the first millennium B.C., linked up Assam with the Aryanisation of North India, even though not as belonging to the Aryan pale – but as a vassal or friendly land of Kirata or Mongoloid peoples/the upper classes of which had become or were becoming Aryanised” (P. 13).

খ্ৰিঃ পূঃ প্ৰথম সহস্ৰাব্দৰ প্ৰথম বা দ্বিতীয় অৰ্ধত প্ৰাগ্‌জ্যোতিষ আৰ্যীকৃত হ'লে এই কাৰ্য খ্ৰিঃ পূঃ ১০০০ বা ৫০০ত হ'ব লাগিব। কোনো ৰাজনৈতিক ঘটনা কেন্দ্ৰ কৰি সাধাৰণতে জনপ্ৰব্ৰজন হয়। অসমৰ বৰ্মনা বংশ (৩৫৫-৬৫০), শাল ষ্টুভ বংশ (৬৫০-৯৯০) আৰু পাল বংশৰ (৯৯০-১১৩৮) বতাসকলৰ ওচৰ ফলিলোৱাত নবকক কামৰূপৰ আদি বঙা বোলা হৈছে। কালিকাপুৰাণৰমতে জনকৰ তোলনীয়া পুত্ৰ নবকক বিষুৱৰে প্ৰাগ্‌জ্যোতিষৰ ৰজা পাতে।

কালিকাপুৰাণৰকাহিনীটোৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি – নবৰ বিদেহৰ ৰজা জনকৰ তোলনীয়া পুতেক বা সহকাৰী সেনাপতি আছিল। ড° বামেশ চন্দ্ৰ মজুমদাৰ, ড° হেম চন্দ্ৰ বায়টৌধুৰী আৰু ড° কালিকিঙ্কৰ দত্তৰ *An Advanced History of India* (1967) মতে বৌদ্ধ ধৰ্ম উত্থানৰ আগতে বৃজ্জসকলৰ হাতত বিদেহৰ ৰাজবংশৰ পতন ঘটে। তেওঁলোকে লিখিছে, “The Videhan monarchy fell shortly before the rise of Buddhism, and its overthrow was followed by the rise of the Vajjian confederacy”. (p.46)

বুদ্ধদেৱে (৫৬০-৪৮০ খ্ৰিঃ পূঃ) পৰম জ্ঞান লাভ কৰিছিল ৫৪৪ খ্ৰিঃ পূঃত। এতেকে ৫৪৪ খ্ৰিঃ পূঃৰ পাচৰ পৰা বৌদ্ধ ধৰ্মৰ উত্থান হয়। বিদেহৰ ৰাজবংশৰ পতনৰ সময়ো ইয়াৰ ওচৰা-উচৰি হ'ব লাগিব। ৰাজবংশ পতনৰ পাচত আশ্ৰিত পুত্ৰ বা সহকাৰী সেনাপতি নবকে আত্মৰক্ষাৰ বাবে কুশী নদী পাৰ হৈ প্ৰাগ্‌জ্যোতিষ ৰাজ্যলৈ পলাই অহাটো স্বাভাৱিক কথা। নবক আৰু তেওঁৰ

অনুগামীসকলৰ যোগেদিয়েই প্ৰাগ্‌জ্যোতিষত প্ৰথম আৰ্যবসতি হয় আৰু নৰকৰ ৰজা হোৱাৰ পাচত পৰিকল্পিতভাৱে আৰ্যবসতি খ্ৰিঃ পূঃ পঞ্চম শতিকাৰ পূৰ্বে হয় বুলি যুক্তিসম্মতভাৱে সিদ্ধান্ত কৰিব পাৰি।

ড° বিৰিঞ্চি কুমাৰ বৰুৱাৰ *A Cultural History of Assam* (1969) মতে হৰগৌৰী সংবাদত উল্লেখ কৰিছে যে নৰকৰ বংশধৰ ২৪ বা ২৫ জন ৰজাই প্ৰাগ্‌জ্যোতিষত শাসন কৰিছিল। এই ২৫ জন ৰজাই গড়ে ৩৪ বছৰকৈ শাসন কৰিছিল বুলি ধৰিলে এওঁলোকে এই ৰাজ্যত ৮৫০ বছৰ শাসন কৰা বুলি প্ৰমাণ হয়। খ্ৰিঃ পূঃ ৫০০ত শাসন আৰম্ভ হোৱা বুলি ধৰিলে খ্ৰিঃ ৩৫০ লৈকে এওঁলোকে শাসন কৰা বুলি মানি ল'ব লগীয়া হয়। খ্ৰিঃ ৩৫০ বা ৩৫৫ৰ পাচত বৰ্মন বংশীয় পুষ্যৱৰ্মা ৰজা হয়।

আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮লৈ প্ৰাগ্‌জ্যোতিষ কামৰূপত চাৰিটা বা পাঁচটা ৰাজবংশই শাসন কৰিছিল। ইয়াৰে নৰকৰ পোনপটীয়া বংশধৰসকলে খ্ৰিঃ পূঃ ৫০০ৰ পৰা খ্ৰিঃ ৩৫০ লৈ শাসন কৰিছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। কিন্তু এই শাসন কালৰ কোনো ঐতিহাসিক বা পুৰাতাত্ত্বিক তথ্য উদ্ধাৰ নোহোৱাত এই ৰাজবংশটো বুৰঞ্জীত উল্লেখ কৰা নাই। বাকী ৰাজবংশকেইটা হ'ল— (ক) বৰ্মন বংশ (৩৫৫-৬৫০), (খ) শালস্তম্ভ বংশ (৬৫০-৯৯০), (গ) পাল বংশ (৯৯০-১১৩৮), আৰু (ঘ) বৈদ্যদেৱ আৰু অন্যান্য ৰজাসকল (১১৩৮-১২২৮)।

(ক) বৰ্মন বংশ (৩৫৫-৬৫০)

১। পুষ্যৱৰ্মা (৩৫৫-৮০) পুষ্যৱৰ্মা পূব তথা উত্তৰ ভাৰতৰ ৰজাসকলৰ ভিতৰত এজন প্ৰভাৱশালী ৰজা আছিল। তেওঁৰ ৰাজ্যৰ ৰাজধানী আছিল প্ৰাগ্‌জ্যোতিষপুৰ। বৰ্তমান গুৱাহাটীকেই প্ৰাগ্‌জ্যোতিষপুৰ বুলি চিনাক্ত কৰা হৈছে। যিজন কামৰূপৰ ৰজাই সমুদ্ৰগুপ্তৰ (৩২০-৮০) বশ্যতা স্বীকাৰ কৰি কৰ-কাটল দিবলৈ মান্তি হৈছিল, সেই ৰজাজনেই আছিল পুষ্যৱৰ্মা। এওঁৰ ৰাজ্য পূবফালে নগাৱাঁলৈ বিস্তৃত হোৱা নাছিল। কাৰণ নগাৱাঁত ডবকা ৰাজ্য আছিল আৰু এই ৰাজ্যৰ ৰজায়ে সমুদ্ৰগুপ্তৰ বশ্যতা স্বীকাৰ কৰিছিল। নালন্দা পোৰা মাটিৰ মোহৰত তেওঁক 'মহাৰাজাধিৰাজ' বুলি কোৱা হৈছে। ডুবীৰ তামৰ ফলিত তেওঁক ইন্দ্ৰৰ নিচিনা প্ৰতাপী, শত্ৰু সৈন্য বধ কৰোঁতা, বিষ্ণুৰ নিচিনা ক্ষমতা আৰু চৰিত্ৰ থকা ৰজা বুলি কোৱা হৈছে। চঞ্চলা হ'লৈও সেই কাৰণে লক্ষ্মীয়ে তেওঁক এৰি নগৈ বিবাহিত

পত্নীৰ দৰে আছিল। তেওঁ বহুতো পুণ্য কৰিছিল আৰু এই পুণ্যৰ ফল তেওঁৰ পুত্ৰসকলে ভোগ কৰিছিল।

২। সমুদ্ৰবৰ্মা (৩৮০-৪০৫) সমুদ্ৰবৰ্মা পুণ্ডৰীকৰ পুত্ৰ আছিল। ডুবি তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে পুণ্যৰ ফলত পুণ্ডৰীকই সমুদ্ৰৰ দৰে বিশাল আৰু গভীৰ চৰিত্ৰৰ পুত্ৰ লাভ কৰে। বাপেকৰ দৰেই তেওঁ বাহুবলী আছিল। জ্ঞান আৰু গুণও তেওঁ সাগৰৰ দৰে আছিল। নিধনপুৰ তামৰ ফল মতে তেওঁৰ দিনত মাংসানায়, অথাৎ বলীয়ে নিৰ্বলীৰ ওপৰত, ধনীয়ে দুখীয়াৰ ওপৰত আৰু ক্ষমতাশালীয়ে ক্ষমতাহীনৰ ওপৰত কৰা অত্যাচাৰ নাছিল। দ্বৈৰথ যুদ্ধত তেওঁ তীব্ৰ বেগী আছিল। নালন্দা পোৰা মাটিৰ মোহৰত তেওঁক 'ৰাজাধিৰাজ' বোলাৰ পদা অনুমান কৰিব পাৰি যে তেওঁ এজন সাৰ্বভৌম ৰজা আছিল। ৩১০ত সমুদ্ৰপুৰ মৃত্যু হোৱাত তেওঁ গুপ্ত ৰজাসকলৰ অধীনতা অস্বীকাৰ কৰে। তেওঁৰ পত্নীৰ নাম আছিল দন্তবতী। আনুমানিক ৪০৫ খ্ৰিষ্টত তেওঁ যোগবলে দেহত্যাগ কৰে।

৩। বলবৰ্মা (৪০৫-২০) সমুদ্ৰবৰ্মা আৰু দন্তবতীৰ পুত্ৰক বলবৰ্মাক বাপেকে সিংহাসনত বহুৱাই মৃত্যু বৰণ কৰে। ডুবি তামৰ ফলিত মতে তেওঁ অতি বলবন্ত, সুন্দৰ, ধৰ্মপ্ৰাণ আৰু ৰাজোচিত গুণৰ অধিকাৰী আছিল। তামৰ ফলিবোৰত তেওঁক 'মহাৰাজাধিৰাজ' বোলা হৈছে। যুদ্ধ ক্ষেত্ৰত অগ্ৰৰ দৰে শৰ বৃক পাতি লৈ বিৰাট সৈন্য বাহিনী লৈ অহা শত্ৰুক পৰাস্ত কৰিছিল। তেওঁ কেইবাটাও যুদ্ধ কৰি ধন-ৰত্ন দান কৰিছিল।

নিধনপুৰ তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে— তেওঁৰ সৈন্যবল কেতিয়াও ভঙ্গ নহৈছিল আৰু তেওঁৰ গাৰ বৰ্মও ভঙ্গ নহৈছিল। তেওঁ অনায়াসে শত্ৰু সৈন্য বাহিনী ছেদেলি-ভেদেলি কৰিব পাৰিছিল। তেওঁ ৰত্নবতীক বিয়া কৰিছিল।

নালন্দা পোৰা মাটিৰ মোহৰত পূৰ্ববতী ৰজাসকলৰ দৰেই তেওঁও 'মহাৰাজাধিৰাজ' উপাধি গ্ৰহণ কৰিছিল। কল্হণৰ ৰাজতৰঙ্গীৰ মতে কামৰূপৰ ৰজাৰ জীয়েক অমৃতপ্ৰভাৰ স্বয়ম্বৰলৈ কাশ্মীৰৰ ৰজা মেঘবাহনো আহিছিল। অমৃতপ্ৰভাই মেঘবাহনৰ মূৰত বৰণৰ মালা দিয়ে আৰু ৰজাৰ বৰণ-ছত্ৰই তেওঁক ছাঁ দিয়ে। বলবৰ্মাই অমৃতপ্ৰভাক মেঘবাহনলৈ বিয়া দিয়ে।

বোৱাৰী হিচাপে কাশ্মীৰলৈ গৈ তেওঁ বাপেকৰ গুৰু লোহ (তিকাও?) দেশৰ স্তম্ভপাৰ বাবে এটা বিহাৰ নিৰ্মাণ কৰায়। বিহাৰটোৰ নাম আছিল লো-স্তম্ভপা। অউ কুণ্ডে বিহাৰটোৰ ঐতিহাসিকতা প্ৰমাণ কৰিছে। এম এ ষ্টেইনে লো-স্তম্ভপা

বিহাৰৰ কথাখিনি সঠিক ঐতিহ্যৰ পৰা উল্লেখ কৰা বুলি পতিয়ন গৈছে। স্তূপা তিব্বতৰ মহাযানী বৌদ্ধ গুৰু আছিল। ইয়াৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে বলৰমাৰ দিনতে অসমত মহাযানী বৌদ্ধ ধৰ্মৰ প্ৰৱেশ ঘটে। আনুমানিক ৪২০ত তেওঁ পুতেকক সিংহাসন দি যোগবলে দেহ ত্যাগ কৰে।

৪। কল্যাণৱৰ্মা (৪২০-৪০) কল্যাণৱৰ্মা বলৰমাৰ পুত্ৰ আছিল। ডুবি তামৰ ফলিৰ মতে বলত তেওঁ ইন্দ্ৰৰ সমকক্ষ আছিল। তেওঁ শত্ৰুহন্তা আছিল আৰু তেওঁৰ মুখখন চন্দ্ৰৰ দৰে আছিল। তেওঁৰ পত্নী আছিল গন্ধৰ্বৱতী। ডুবীৰ ফলিৰ মোহৰত তেওঁক ‘মহাৰাজাধিৰাজ’ বোলা হৈছে।

চীন দেশৰ বুৰঞ্জী মতে চীন ৰজা চুং-চুৰ (৪২০-৭৯) ওচৰলৈ ৪২৮ত এজন ৰাজদূত পঠাইছিল। ৰজাজনৰ নাম চীনা ভাষাত য়ু-চাই বোলা হৈছে। য়ু-চাই শব্দটোৰ অৰ্থ চন্দ্ৰৰ দৰে মুখ। অৰ্থৰ সাদৃশ্যৰ ফালৰ পৰা কল্যাণৱৰ্মাকে য়ু-চাই বুলি চিনাক্ত কৰা হৈছে। কপিলীপৰীয়া ডবাক (ডবকা) ৰাজ্য জয় কৰাৰ পাচত কল্যাণৱৰ্মাই চীনলৈ ৰাজদূত পঠাইছিল।

৫। গণপতিৱৰ্মা (৪৪০-৫০) কল্যাণৱৰ্মাৰ মৃত্যুৰ পিচত তেওঁ পুত্ৰ গণপতিৱৰ্মা ৪৪০ত কামৰূপৰ সিংহাসনত উঠে। ডুবি তামৰ ফলি মতে তেওঁ সূৰ্যৰ দৰে অন্ধকাৰৰূপী শত্ৰুৰ অন্তকাৰী আছিল। নিধনপুৰ ফলি মতে তেওঁ দানী আৰু কলিৰ দোষ অন্তকাৰী আছিল। তেওঁৰ পত্নী আছিল যজ্ঞৱতী। ৰাজ্য ভোগ কৰাৰ পিচত তেওঁ সমাজ পাতি সুযোগ্য পুত্ৰক ৰজা পাতি স্বৰ্গলৈ গতি কৰে।

৬। মহেন্দ্ৰৱৰ্মা (৪৫০-৮৫) গণপতিৱৰ্মাৰ পুতেক মহেন্দ্ৰৱৰ্মা কামৰূপৰ এজন গুৰুত্বপূৰ্ণ ৰজা আছিল। উমাচল গুহালিপি অনুসৰি এওঁ নিজে ‘মহাৰাজাধিৰাজ’ উপাধি গ্ৰহণ কৰিছে। ডুবি তামৰ ফলি মতে তেওঁ সাগৰে আৱৰা পৃথিৱী জয় কৰিছিল, তেওঁ ইন্দ্ৰৰ দৰে কেইবাটাও যজ্ঞ কৰিছিল, আৰু শচীৰ দৰে গুণৱতী সুব্ৰতাক তেওঁ অৰ্ধাসিনী কৰিছিল। নিধনপুৰ ফলি মতে তেওঁ যজ্ঞ পৰম্পৰাৰ ৰক্ষক আছিল। নালন্দা পোৰামাটিৰ মোহৰত মহেন্দ্ৰৱৰ্মাক ‘দ্বিস্তৰগমেধাহৰ্তা’, অৰ্থাৎ দুটা অশ্বমেধ যজ্ঞ কৰোঁতা বোলা হৈছে।

মহেন্দ্ৰৱৰ্মাই পুণ্ড্ৰৱৰ্ধন বা বৰেন্দ্ৰ জয় কৰে। তেৱেঁই কামৰূপৰ ৰজাসকলৰ ভিতৰত প্ৰথম অশ্বমেধ যজ্ঞ কৰোঁতা। ৪৬৭ খ্ৰিঃত পুণ্ড্ৰৱৰ্ধন জয় কৰি প্ৰথমটো যজ্ঞ কৰিছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। চেষ্টা কৰি আছিল যদিও তেওঁ উত্তৰ বঙ্গ

জয় কৰিব পৰা নাছিল। তেওঁ দক্ষিণ-পূব বঙ্গ দেশ (পূব বঙ্গ) জয় কৰি দ্বিতীয়টো অশ্বমেধ যজ্ঞ পাতে। ৪৭০-৮০ৰ ভিতৰত এই যজ্ঞ হৈছিল।

৭। নাৰায়ণবৰ্মা (৪৮৫-৫১০) মহেন্দ্ৰবৰ্মাৰ পুত্ৰ নাৰায়ণবৰ্মাই ২৫ বছৰ ৰাজত্ব কৰিছিল। ডুবি তামৰ ফলি মতে প্ৰজাসকলৰ কলিযুগীয়া দেশ খণ্ডনৰ বাবে (কলিজান্ নিহন্তঃ দোষান্ প্ৰজায়াঃ ইব) চক্ৰধাৰী নাৰায়ণেই নাৰায়ণবৰ্মা ৰূপে জন্ম গ্ৰহণ কৰিছিল। নিধনপুৰ তামৰ ফলি মতে জগতৰ স্থিতি মন্থন কৰিবৰ কাৰণে তেওঁৰ জন্ম হৈছিল। জনকৰ দৰে তেওঁ সাংখ্যতত্ত্ব জানিছিল। খ্ৰীষ্টাব্দে (৪২৭-৩৪৭ খ্ৰিঃ পূঃ) আশা কৰা দাৰ্শনিক ৰজা বোধহয় নাৰায়ণবৰ্মাই আছিল। তেওঁৰ ৰাজত্ব কালত শান্তি বিৰাজ কৰিছিল। তেওঁৰ পত্নীৰ নাম আছিল দেবমতী।

৮। ভূতিবৰ্মা (৫১০-৫৫৫) নাৰায়ণবৰ্মাৰ পুত্ৰক ভূতিবৰ্মা দেবৰাজৰ দৰে আছিল। সাহসৰ বাবে বিখ্যাত হোৱাৰ উপৰিও তেওঁ দুৰ্নীয়া আৰু পৃথিৱীক আছিল। পিতৃ-ৰাজ্যৰ অধিকাৰী হৈ তেওঁ শত্ৰু জয় কৰি অশ্বমেধ যজ্ঞ পাতিছিল।

যশোধৰ্মাই তামৰ ফলিত ঘোষণা কৰিছে যে তেওঁ লৌহিত্যৰ উপকণ্ঠৰ পৰা (লৌহিত্যোপকণ্ঠঃ) মহেন্দ্ৰ পৰ্বতলৈকে ভাৰত জয় কৰিছিল। অসমৰ বৰ্মন বংশীয় ৰজাসকলৰ কোনো এজন তামৰ ফলিতে যশোধৰ্মাৰ সৈতে যুদ্ধ হোৱাৰ কোনো উল্লেখ নাই। আন হাতে লৌহিত্যৰ উপকণ্ঠৰ পৰা বা দাঁতি-কাষৰৰ পৰা জয় কৰা মানে লৌহিত্য জয় কৰা নুবুজায়। লৌহিত্যৰ উপকণ্ঠৰ ৰজাই বশাতা স্বীকাৰ কৰিছিল বুলিলেও লৌহিত্যৰ ৰজাই বশাতা স্বীকাৰ কৰা নুবুজায়। যশোধৰ্মাই যদি কামৰূপ জয়েই কৰিছিল, কামৰূপ জয় কৰা বুলি নোকোৱাৰ কোনো কাৰণ নাছিল।

ডুবি তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে তেওঁ নিজ বাহু বলেৰে শত্ৰুদলক পৰাস্ত কৰি সকলো অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰ কাঢ়ি ল'লে (নিৰ্জিত্য অৰাতিচক্ৰং স্বভুজযুগলং আনুশস্ত্ৰঃ সমস্তং)। এই শত্ৰুদল যশোধৰ্মাৰ সৈন্যদলো হ'ব পাৰে। সেই কাৰণে, যশোধৰ্মাৰ দিগ্বিজয়ৰ পিচত ৫৪৫-৫০ খ্ৰীষ্টাব্দত তেওঁ পুণ্ড্ৰবৰ্ধন জয় কৰে। পুণ্ড্ৰবৰ্ধন জয় কৰি তেওঁ কুশী নদীৰ পশ্চিম পাৰত থকা চন্দ্ৰপুৰী বিষয়ব (জিলাৰ?) অস্ত্ৰগৰ্ভ ময়ূৰশাশ্বল অগ্ৰহাৰ ২০৫ জন ব্ৰাহ্মণক দান দিয়ে। দানপত্ৰখন জুয়ে পোৱাত ভাস্কৰবৰ্মাৰ (৫৯৪-৬৫০) দিনত নতুনকৈ লিখাই দিয়া হৈছিল। বাংলাদেশৰ চিলেট জিলাৰ পঞ্চখণ্ড পৰগনাৰ বিয়ানীবাজাৰ থানাৰ নিধনপুৰ গাৱঁত এই ফলিখন উদ্ধাৰ হোৱা ওণে ইয়াক নিধনপুৰ তামৰ ফলি বোলা হয়।

ভূতিৰমাই অশ্বমেধ যজ্ঞ কৰা কথা ভাস্কৰৰমাই লিখোৱা ডুবি তামৰ ফলিৰ উপৰিও তেওঁৰ বিষয়ামাতা অৱগুণে লিখোৱা বৰগঙ্গা তামৰ ফলিতো উল্লেখ কৰা হৈছে। তেওঁৰ পত্নীৰ নাম আছিল বিজ্ঞানৱতী।

৯। চন্দ্ৰমুখৰমী (৫৫৫-৬৫) ডুবি তামৰ ফলিৰ মতে ভূতিৰমীৰ পুত্ৰ চন্দ্ৰমুখৰমাই সাগৰৰ পাৰলৈকে ৰাজ্য জয় কৰিছিল। কেইবাটাও যজ্ঞ কৰি পুতেকক সিংহাসনত বহুৱাই তেওঁ স্বৰ্গগামী হৈছিল। নিধনপুৰ তামৰ ফলিৰ মতে তেওঁ দেখিবলৈ সুন্দৰ আছিল আৰু পত্নীৰ নাম আছিল ভোগৱতী। তেওঁ দক্ষিণ-পূব বঙ্গ স্থায়ীভাৱে অধিকাৰ কৰিছিল। পুতেকৰ শিক্ষা সাং হোৱাৰ পাচত সিংহাসনত বহুৱাই তেওঁ স্বৰ্গগামী হয়।

১০। স্থিতৰমী (৫৬৫-৮৫) বাপেকৰ জীৱন কালতে স্থিতৰমী কামৰূপৰ ৰজা হয়। ডুবি তামৰ ফলি মতে শাস্ত্ৰৰ নীতি অনুসৰি স্থিতৰমীৰ ৰাজ-অভিষেক পতা হৈছিল। কিছুদিন পুৰণি নগৰীতে থকাৰ পাচত স্থিতৰমীই ব্ৰহ্মপুত্ৰ নদীৰ পাৰত এখন নতুন নগৰ পাতে। তেওঁ বেদ-বিশাৰদ হোৱাৰ উপৰিও অন্য শাস্ত্ৰতো পাৰ্গত আছিল।

সেৱা জনোৱা তলতীয়া ৰজাবোৰৰ কিৰীটিৰ ৰত্নৰ ৰঙেৰে তেওঁৰ ভলি ৰঙা হৈ আছিল। তলতীয়া ৰজাসকল কোন কোন আছিল জনা নাযায়। তেওঁলোক চিলেট, কাছাৰ, ত্ৰিপুৰা, ডবাক আৰু দক্ষিণ-পূব বঙ্গৰ ৰজা যেন লাগে।

নালন্দা পোৰামাটিৰ মোহৰত তেওঁক ‘দ্বিৰশ্বমেধযাজী’, বা দুটা অশ্বমেধ যজ্ঞ কৰোঁতা বোলা হৈছে। সম্ভৱ শাসন কালৰ আদি ছোৱাত ৰাজ্যৰ পূব ভাগ, আৰু দক্ষিণ-পূব বঙ্গৰ তলতীয়া ৰজাসকলে বিদ্ৰোহ কৰিছিল। তেওঁলোকক দমন কৰি ৫৭০ত তেওঁ প্ৰথমটো অশ্বমেধ যজ্ঞ কৰে। খ্ৰিঃ ৫৭৫-৮০ সময়ছোৱাত উত্তৰ বঙ্গ আৰু মগধৰ ফালে সীমা বঢ়াবলৈ চেষ্টা চলাওঁতে মৌখাৰি আৰু শেহতীয়া গুপ্ত ৰজাসকলে তেওঁক বাতিব্যস্ত কৰি তুলিছিল। পুণ্ড্ৰবৰ্ধন অঞ্চল জয় কৰি ৫৮০ত তেওঁ দ্বিতীয়টো অশ্বমেধ যজ্ঞ পাতে। সেই কাৰণেই বোধ হয় পৰৱৰ্তী কালত সুস্থিতৰমীৰ (৫৮৫-৯৩) দিনত শেহতীয়া গুপ্তৰজা মহাসেনগুপ্তই কামৰূপ আক্ৰমণ কৰিছিল। মহেন্দ্ৰৰমী (৪৫০-৮৫) দুটা, ভূতিৰমী (৫১০-৫৫) এটা আৰু স্থিতৰমী (৫৬৫-৮৫) দুটা অশ্বমেধ যজ্ঞ পতাৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি— এই সময়ছোৱাত কামৰূপৰ ৰজাসকল যথেষ্ট সমৃদ্ধিশালী আছিল। তেওঁ নয়নদেৱীক বিবাহ কৰিছিল।

১১। সুস্থিতবৰ্মা (৫৮৫-৯৩) স্থিতবৰ্মাৰ পত্নীক সুস্থিতবৰ্মাক নালন্দা পোৰা মাটিৰ মোহৰত সুস্থিতবৰ্মা আৰু বাণৰ হৰ্ষচৰিতত মৃগাক বোলা হৈছে। মৌখাৰি আৰু শেহতীয়া গুপ্ত ৰজাসকলৰ মাজত প্ৰতিপত্তি বঢ়াবলৈ যুঁজ-বাগৰ চলি থাকোঁতে শেহতীয়া গুপ্ত ৰজা মহাসেনগুপ্তই মগধ আৰু গৌড় ৰাজ্য অধিকাৰ কৰে।

তেওঁ বিহাৰৰ ফালে ৰাজ্য বঢ়াবলৈ চেষ্টা কৰোঁতে মহাসেনগুপ্তৰ হাতত পৰাস্ত হৈ পিচুৰাই আহিবলৈ বাধ্য হয়। ৫৯০-৯৩ৰ ভিতৰত এই ঘটনা ঘটিছিল বুলি অনুমান কৰা হয়। এই সময়ছোৱাতে তেওঁ পুণ্ডৰখন ৰাজ্য হেৰুৱায়। যুদ্ধত তেওঁৰ মৃত্যু হয় আৰু পত্নী শ্যামাদেৱী বিধৱা হয়।

১২। সুপ্ৰতিষ্ঠিতবৰ্মা (৫৯০-৯৪) ডুৰি তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে যে পিতাক সুস্থিতবৰ্মা খৰ্গী হোৱাত তেওঁৰ দুই পুত্ৰ সুপ্ৰতিষ্ঠিতবৰ্মা আৰু ভাস্কৰবৰ্মাৰি আগুৱাই আহি থকা গৌড় সৈন্যৰ সৈতে যুদ্ধ কৰে। যুদ্ধত অচেতন হোৱাত দুয়োকে বন্দী কৰি নিজ ৰাজ্যলৈ লৈ যায়। তেওঁলোক সদগুণৰ অধিকাৰী হোৱা গুণে তেওঁলোকক আকোঁ বাপেকৰ ৰাজ্যত থৈ অহা হয় (দেশঃ স্বকঃ বিধিবশাৎ উপনীতযোঃ ৮ তৈঃ শত্ৰুভিঃ যয়োঃ গুণবন্তয়া এব)।

নিধনপুৰ তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে, "বিদ্যাদৰ প্ৰদানসকলৰ দ্বাৰা অধ্যুষিত হাতীৰ পালৰ দ্বাৰা পৰিপূৰ্ণ সুপ্ৰতিষ্ঠিত কুলাচলৰ উচ্চতা যিদৰে পৰৰ হিতৰ কাৰণে, সেইদৰে বিদ্বান সমাজৰ চূড়ামণিসকলৰ দ্বাৰা পাবল্যত হস্তীসাহিনীযুক্ত সুপ্ৰতিষ্ঠিত সৈন্যবাহিনীযুক্ত এই ৰজাৰ অভূদয় লোকৰ হিতৰ কাৰণে হৈছিল (২১)"। তামৰ ফলিৰ এই শ্লোকটোৰ তাৎপৰ্য বুৰঞ্জীবিদসকলৰ মতে— তেওঁ যুদ্ধত জয়লাভ কৰি পোৰা ৰাজ্য নিজে ভোগ কৰিবলৈ নাপালে, ভায়েক ভাস্কৰবৰ্মাইহে ভোগ কৰিলে। যুদ্ধত পোৰা আঘাতৰ ফলত তেওঁৰ অলপ দিনৰ পাচতে কুমাৰ অৱস্থাত মৃত্যু হোৱাত ভায়েক ভাস্কৰবৰ্মা সিংহাসনত উঠে।

১৩। ভাস্কৰবৰ্মা (৫৯৪-৬৫০) সুস্থিতবৰ্মাৰ দ্বিতীয় পুত্ৰ ভাস্কৰবৰ্মা ককায়েকৰ মৃত্যুৰ পাচত কামৰূপৰ ৰজা হয়। তেওঁৰ বিষয়ে ডুৰি তামৰ ফলি, নিধনপুৰ তামৰ ফলি, নালন্দা পোৰামাটিৰ মোহৰত, বাণৰ হৰ্ষচৰিত আৰু চীনা পৰিব্ৰাজক হিউৱেন-চাঙৰ জীৱনী আদিত পোৰা যায়। ৰজা হৈয়েই ভাস্কৰবৰ্মাই এটা অৰু বা চনৰ প্ৰচলন কৰে। অসমত ইয়াক নৃপশক আৰু কৰ্ণসুৱৰ্ণত ইয়াক বাংলা চন বোলা হয়। আচলতে ভাস্কৰবৰ্মাৰে এই দুটা নাম।

৫৯৪ত সিংহাসনত বহিয়েই ৫৯৩-৯৮ত মহাসেনগুপ্তৰ হেৰুওৱা কৰতোয়াৰ পশ্চিম অঞ্চল উদ্ধাৰৰ বাবে সাজু হয়। ৬০৬ৰ আগতে তেওঁ এই অঞ্চলটো উদ্ধাৰ কৰে। ডুবি তামৰ ফলিত তেওঁ নিজৰ বিষয়ে একো লিখা নাই। নিধনপুৰ তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে যে তেওঁ “ভাস্কৰৰ (সূৰ্যৰ) দৰে জ্যোতিৰ আবাস”, তেওঁক ছবি “নৃপতিসকলৰ ঘৰে ঘৰে” দেখিবলৈ পোৱা যায়, তেওঁক “বিশৃঙ্খল বৰ্ণাশ্রম-ধৰ্মৰ সমাক্ ব্যৱস্থাপনাৰ বাবে সৃষ্ট”, “আৰ্যধৰ্মৰ পোহৰ প্ৰকাশ কৰোঁতা”, ইত্যাদি। বাহুবলৰ দ্বাৰা সামন্তসমূহৰ বিক্ৰম লঘু কৰোঁতা ভাস্কৰৰ্মাক বিজিত নৃপতিসকলৰ স্তুতিবাক্যৰ কিৰীটিৰে শোভিত বোলা হৈছে। ডুবি আৰু নিধনপুৰ তামৰ ফলি শিৱৰ স্তুতিৰে আৰম্ভ কৰাৰ উপৰিও বাণৰ হৰ্ষচৰিতত শিৱৰ বাহিৰে কাৰো ওচৰত শৈশৱ কালৰ পৰা মূৰ দোঁওৱা নাই বোলাৰ পৰা জানিব পাৰি তেওঁ শৈৱ আছিল।

ভাস্কৰৰ্মা সিংহাসনত উঠাৰ পাচত গৌড়ৰ ৰজা শশাঙ্ক আৰু শেহতীয়া গুপ্ত ৰজা দ্বিতীয় দেৱগুপ্তৰ মিত্ৰতা হয়। তেওঁলোকৰ এই মিত্ৰতা আছিল দিনে দিনে প্ৰতিপত্তিশালী হৈ উঠা মৌখাৰি ৰাজকৈদৰ বিৰুদ্ধে। কিন্তু ৱৰ্ধন ৰজাসকলে কনৌজত থকা মৌখাৰি ৰজা গ্ৰহৰ্মনলৈ ভনীয়েক ৰাজ্যাত্ৰীক বিয়া দি ৱৰ্ধন আৰু মৌখাৰি বংশৰ মিত্ৰতা কটকটীয়া কৰিলে। এই মিত্ৰতা নাইকিয়া কৰিবলৈ শশাঙ্কৰ সৈতে ষড়যন্ত্ৰ কৰি ২য় দেৱগুপ্তই গ্ৰহৰ্মনক হত্যা কৰি ৰাজ্যাত্ৰীক পোতাশালত বন্দী কৰি থয়। ৱৰ্ধন বংশৰ ৰজা ৰাজ্যৰ্ধনে ২য় দেৱগুপ্তক হত্যা কৰি প্ৰতিশোধ লয়। কিন্তু গৌড়ৰ ৰজা শশাঙ্কই ৰাজ্যৰ্ধনক হত্যা কৰি ৰাজ্যাত্ৰীক পোতাশালৰ পৰা খেদি পঠায়। ইতিমধ্যে ৰাজ্যাত্ৰীয়ে অৰণ্যলৈ গৈ তপস্বিনী হয়।

ৰাজ্যৰ্ধনৰ আকস্মিক মৃত্যুত অনিচ্ছা সত্ত্বেও হৰ্ষৰ্ধনে ৬০৬ খ্ৰিঃত থানেশ্বৰৰ সিংহাসনত উঠে। সিংহাসনত উঠিয়েই তেওঁ দুটা কৰ্তব্যৰ সন্মুখীন হয়— এটা দক্ষিণাত্যৰ অৰণ্যৰ পৰা ৰাজ্যাত্ৰীক উদ্ধাৰ কৰা আৰু আনটো শশাঙ্কৰ ওপৰত ককায়েকৰ হত্যাৰ প্ৰতিশোধ লোৱা। শশাঙ্কৰ ওপৰত প্ৰতিশোধ আনৰ হতুৱাযো লোৱাব পাৰি, কিন্তু ভনীয়েক ৰাজ্যাত্ৰীক উদ্ধাৰ কাৰ্য তেওঁ নিজে কৰিব লাগিব। ইফালে গৌড়ৰ ৰজা শশাঙ্কৰ প্ৰতিপত্তি বৃদ্ধি ভাস্কৰৰ্মাৰ কাৰণে বিপদজনক। সেই কাৰণে ছেগ বুজি ভাস্কৰৰ্মাই হংসবেগ নামৰ কটকী পঠাই হৰ্ষৰ্ধনেৰে মিত্ৰতা কৰে। শশাঙ্কৰ ওপৰত প্ৰতিশোধ লোৱাৰ দায়িত্ব ভাস্কৰৰ্মাই লোৱাত হৰ্ষৰ্ধনে নিশ্চিন্তমনে ৰাজ্যাত্ৰী উদ্ধাৰৰ কামত লাগে। ভাস্কৰৰ্মাই শশাঙ্কক পৰাস্ত

কৰি গৌড়ৰ পৰা খেদি পঠায়। গৌড়ৰ পৰা খেদা খাই শশাঙ্কই উৰিষ্যাৰ গঞ্জামলৈ পলাই যায়। এই সুযোগতে তেওঁ কুশী নদীৰ পশ্চিম পাৰলৈকে কামৰূপৰ সীমা বঢ়ায়। ৰজা ভূতিৰ্মাই কুশী নদীৰ পশ্চিমৰ চন্দ্ৰপুৰী বিষয়ৰ (জিলাৰ ৭) অস্তগত ময়ূৰশাম্বল অগ্ৰহাৰ দান দিয়া তামৰ ফলিখন জুয়ে পোৰাত সেইখন নতুনকৈ লিখাই দিয়ে। এই তামৰ ফলিখন নিধনপুৰ তামৰ ফলি নামেৰে জনাজাত।

ভাস্কৰৰ্মাৰ ৰাজ্যৰ পশ্চিম সীমা আমি কুশী নদীৰ পশ্চিম পাৰলৈকে আছিল বুলি জানিলোঁ। কিন্তু কুশী নদীৰ পশ্চিম পাৰৰ কিমানলৈকে আছিল, এই বিষয়ে খাটাং সিদ্ধান্ত কৰা হোৱা নাই। শমন হুই লিৰ *The Life of Huen-Tsung* (1990) অনুসৰি ভাস্কৰৰ্মাই হৰ্ষবৰ্ধনৰ ওচৰত হিউৱেন-চাঙক প্ৰতাপণ কৰিবলৈ ২০ হাজাৰ হাতী আৰু ৩০ হাজাৰ জাহাজ লৈ কাজুৰগিৰ বা আধুনিক তাগলপুৰলৈকে গৈছিল (পৃঃ ১৭১)। ইয়াৰ পৰা কোনো কোনো বুৰঞ্জীবিদে অনুমান কৰে ভাস্কৰৰ্মাৰ ৰাজ্যৰ পশ্চিম সীমা তাগলপুৰলৈকে আছিল।

নালন্দাত ভাস্কৰৰ্মাৰ পোৰামাটিৰ মোহৰ উদ্ধাৰ হোৱাৰ পৰা কোনো কোনো পণ্ডিতে ভাস্কৰৰ্মাৰ ৰাজ্যৰ পশ্চিম সীমা নালন্দালৈকে আছিল বুলি ভাবে। এই প্ৰসঙ্গত শ্ৰমণ হুই লিয়ে লিখা *The Life of Huen-Tsung*ৰ এটা ঘটনালৈ মনত পেলাব পাৰি। কেইবাবাৰো অনুৰোধ কৰাৰ পাচতো হিউৱেন-চাঙক নালন্দা মঠৰ অধিকাৰী শীলভদ্ৰই কামৰূপলৈ পঠাবলৈ মান্তি নহ'ল।

তেতিয়া ভাস্কৰৰ্মাই শীলভদ্ৰলৈ লিখিছিল "Your disciple like a common man has followed the way of worldly pleasure, and has not as yet learnt the converting power residing in the law of Buddha. And now when I heard the name of the priest belonging to the outside country, my body and soul were overjoyed; expecting the opening of the germ of religion (within me). But you, sir, have again refused to let him come here, as if you desired to cause the world to be for ever plunged in the dark night (of ignorance). Is this the way in which your Eminence hands down and transmits the bequeathed law for the deliverance and salvation of all the world? Having an invincible longing to think kindly of and show respect to (the Master), I have again sent a messenger with a written request : if he does not come, your disciple will then let the evil portion of himself prevail. In recent times Śaśanka-raja

was equal still to the destruction of the law and uprooted the Bodhi tree. Do you, my master, suppose that your disciple has no such power as this ? If necessary then I will equip my army and elephants, and like the clouds sweep down on and trample to the very dust that monastery of Nalanda These words (are true) as the sun Master, it is better for you to examine and see. (what you will do).” pp. 170-71

এই ঘটনাই বুজায় যে নালন্দা অঞ্চল ৬৪৩ৰ আদিতে কামৰূপৰ অন্তৰ্গত নাছিল। ৬৪৭ত বাং-হিউৱেন-চিৰ নেতৃত্বত চীনৰ পৰা অহা শাস্তি সঁজাতি দলে মধ্য ভাৰতত ভৰি দি গম পায় যে কেইদিনমানৰ আগত হৰ্ষবৰ্ধনৰ মৃত্যু হৈছে। ত্ৰিহুতৰ শাসনকৰ্তা হৰ্ষবৰ্ধনৰ তলতীয়া কৰ্মচাৰী অৰ্জুনে এওঁলোকক আক্ৰমণ কৰি মাৰি পেলায়। বাং-হিউৱেন-চি আৰু লগৰীয়া চাং-চিহ-জেনে পলাই গৈ নেপালত আশ্ৰয় লয়। সামৰিক সাহায্য বিচৰাত নেপালে ৭ হেজাৰ অশ্বাৰোহী আৰু তিব্বত ১ হেজাৰ অস্ত্ৰধাৰী সৈন্য দিয়ে। ভাস্কৰবৰ্মায়ে কিছু সামৰিক সাহায্য দিয়ে। এই শাস্তি সঁজাতি দলে অৰ্জুনক পৰাস্ত কৰি চীনলৈ বন্দী কৰি লৈ যায়। সম্ভৱ এই সময়তে ভাস্কৰবৰ্মাই নালন্দা অঞ্চল অধিকাৰ কৰে। কোনো কোনো বুৰঞ্জীবিদে ভাস্কৰবৰ্মাক হৰ্ষবৰ্ধনৰ তলতীয়া ৰজা বুলি প্ৰমাণ কৰিবলৈ শমণ ছই লিৰ *The Life of Hiuen-Tsang*ৰ তলৰ ঘটনাটো উল্লেখ কৰে। উক্ত ঘটনা অনুযায়ী ৬৪৩ত কঙ্গোদ (উৰিষ্যা) আক্ৰমণৰ পাচত ঘূৰি আহি হিউৱেন-চাং কামৰূপতে আছে বুলি জানি তৎক্ষণাত্তেওঁক ঘূৰাই পঠাবলৈ চিঠি লিখিলে। উত্তৰত ভাস্কৰবৰ্মাই জনালে যে লাগিলে তেওঁ মূৰটোকে পঠাব, তথাপি চীনা পৰিব্ৰাজকক নপঠায়। ইয়াতে খং উঠি হৰ্ষবৰ্ধনে দূতৰ হাততে মূৰটো দি পঠাবলৈ লিখিলে। কথাৰ গতি বিসঙ্গতি দেখি ভাস্কৰবৰ্মাই ২০ হাজাৰটা হাতী, আৰু ৩০ হাজাৰখন জাহাজ (পালতৰা নাও?) লৈ গৈ ভাগলপুৰত হৰ্ষবৰ্ধনক লগ ধৰে। প্ৰাগ্জ্যোতিষৰ (গুৱাহাটীৰ) পৰা বিহাৰৰ ভাগলপুৰলৈকে ৰাজ্যখণ্ড আন ৰজাৰ তলত থকা হ'লে ২০ হাজাৰ হাতী আৰু ৩০ হাজাৰ জাহাজ লৈ তেওঁ ভাগলপুৰলৈ যাব নোৱাৰিলেহেঁতেন।

হিউৱেন-চাঙে মহাযান পন্থাৰ সমৰ্থনত এখন শাস্ত্ৰ লিখিছিল। ভাস্কৰবৰ্মা আৰু হৰ্ষবৰ্ধনে সেই শাস্ত্ৰৰ হিউৱেন-চাঙে কৰা ব্যাখ্যা শুনিবলৈ পাইছিল। মহাযান পন্থাৰ সমৰ্থনত *হৰ্ষবৰ্ধনে চি-য়ু-কিৰ* মতে ২০ খন আৰু হিউৱেন-চাঙৰ জীৱনী

মতে ১৮ খন তলতীয়া দেশক নিমন্ত্ৰণ কৰি ধৰ্মসভা পাতিছিল। সত্ৰামণ্ডপত ডাঙৰ ডাঙৰ আখৰেৰে মহাযান পত্ৰাই শুদ্ধ পত্ৰা বুজি ঘোষণা কৰি হিউৱেন-চাঙে লিখাইছিল যে এই পত্ৰা বিৰোধিতা কৰা সকলৰ সৈতে তেওঁ তক কৰিবলৈ প্ৰস্তুত। তৰ্কত পৰাস্ত কৰোঁতাক তেওঁ নিজৰ মূৰটো পুৰস্কাৰ দিব। ধৰ্মসভা চলি থকা ১৮ দিনৰ ভিতৰত কোনেও তৰ্ক কৰিবলৈ নহাত, হৰ্ষবৰ্ধনকে ধৰি ৰজাসকলে মানি ল'লে যে মহাযান পত্ৰা শুদ্ধ আৰু ইয়োনে পত্ৰা ভুল।

মহাযান পত্ৰাৰ জয় ঘোষণা কৰিবলৈ হৰ্ষবৰ্ধনে এটা শোভাযাত্ৰা উলিয়াইছিল। এই শোভাযাত্ৰাত ২০ খন দেশৰ শ্ৰমণ, ব্ৰাহ্মণ, বিচাৰপতি আৰু সৈন্যসকলে অংশগ্ৰহণ কৰিছিল। হিউৱেন-চাঙৰ জীৱনী লিখকৰ মতে হীনযান আৰু মহাযান পত্ৰাৰ ওহাজাৰ পুৰোহিত, ওহাজাৰ ব্ৰাহ্মণ আৰু নিগ্ৰহ (ডেন পুৰোহিত), কাক শালন্দা মঠৰ ওহাজাৰ পুৰোহিত ইয়াত ভাগ লৈছিল। ওফুট ওখ সোণৰ বুদ্ধ মূৰ্তি এটা প্ৰকাণ্ড হাতী এটাৰ ওপৰত তুলি সকলোৰে আগত নিছিল। এই মূৰ্তিৰ বাওঁহাতে হৰ্ষবৰ্ধনে ইন্দ্ৰৰ পোচাক পিন্ধি ছত্ৰ ধৰি গৈছিল আৰু সোঁ হাতে ভাস্কৰবৰ্মাই ব্ৰহ্মাৰ পোচাক পিন্ধি বুদ্ধ মূৰ্তিৰ চোবৰেৰে বিচি গৈছিল, (On the left went the king Siladitya, dressed as Śakra, holding a precious canopy whilst Kumāra-rāja dressed as Brahmā-rāja holding a white chamara went on right *Si-Yu-Ki*, p. 218)

যদি ভাস্কৰবৰ্মা হৰ্ষবৰ্ধনৰ তলতীয়া ৰজা আছিল, তেন্তে উক্ত শোভাযাত্ৰাত একেটা হাতীতে ভাস্কৰবৰ্মাক সমানে সমানে বহিবলৈ দিলেহেঁতেন কিয়? তদুপৰি নিজে ব্ৰহ্মাতকৈ সৰু দেৱতা ইন্দ্ৰৰ পোচাক পিন্ধি ভাস্কৰবৰ্মাক ব্ৰহ্মাৰ পোচাক পিন্ধিবলৈ দিলেহেঁতেন কিয়? এই ঘটনাৰ পৰা বুজিব পাৰি ভাস্কৰবৰ্মা হৰ্ষবৰ্ধনৰ সমকক্ষ ৰজা আছিল।

ভাস্কৰবৰ্মাৰ বুদ্ধপ্ৰতিমাত্মক ভূতিবৰ্মাই পুণ্ড্ৰবৰ্ধনৰ অন্তৰ্গত চন্দ্ৰপুৰী নিষয়ৰ ময়ূৰশাম্বল অঞ্চলক অগ্ৰহাৰ হিচাপে দান দিছিল। সেই দানপত্ৰ জুয়ে পোৰাত ভাস্কৰবৰ্মাই নতুনকৈ সেই দানপত্ৰ লিখাই দিয়ে। ইয়াৰ পৰা প্ৰমাণিত হয় যে তেওঁৰ ৰাজ্যৰ পশ্চিম সীমা কুশী নদীৰ সিপাৰলৈকে আছিল। ইফালে কৰ্ণসুৱৰ্ণ, পুণ্ড্ৰবৰ্ধন আৰু উত্তৰ ৰাড্ কামৰূপৰ অন্তৰ্গত আছিল। দক্ষিণ-পশ্চিম দিশত কামৰূপৰ সীমাৰ ভিতৰত চিলেট, হৈপুৰা আৰু সমতটৰ অংশনিশেষ অন্তৰ্ভুক্ত আছিল। দক্ষিণ সাগৰৰ বাটেৰে যদি হিউৱেন-চাং দেশলৈ যাব খোজে ভাস্কৰবৰ্মাই

নিজৰ কৰ্মচাৰী পঠাই যাতায়াতৰ ব্যৱস্থা কৰি দিবলৈ গাত লৈছিল। তেওঁ কৈছিল, “But I know not if you prefer to go, by what route you propose to return; if you select the Southern Sea route then I will send official attendants to accompany you.” (*The Life of Huen-Tsang*, p 188).

তেওঁৰ ৰাজ্যৰ পূব সীমাত দক্ষিণ-পশ্চিম চীনৰ বৰ্বৰসকল বাস কৰা পৰ্বতমালা আছিল। এই বিষয়ে হিউৱেন-চাঙে লিখিছে, “On the east this country is bounded by a line of hills, so that there is no great city to the kingdom. Their frontier, therefore, are contiguous to the barbarians of the south-west (of China).” (*Si-Yu-Ki, 2nd Vol.*, p. 198).

সপ্তম শতিকাৰ কামৰূপৰ বিষয়ে চীনা পৰিব্ৰাজকজনে লিখিছে, “কামৰূপ ৰাজ্যৰ আয়তন ১০,০০০ লি (১ লি = ১মাইলৰ প্ৰায় এক তৃতীয়াংশ। ৰাজধানী নগৰৰ আয়তন ৩০ লি। মাটি দ কিস্তি সাৰুৱা, কঁঠাল আৰু নাৰিকলৰ খেতি কৰে। এই বিধ গছৰ পৰিমাণ অসংখ্য হ’লেও ইবোৰত যথেষ্ট মূল্য আৰু শ্ৰদ্ধা আৰোপ কৰা হয়। নদীৰ পৰা বোৱাই নিয়া আৰু জমা কৰি থোৱা পানী নগৰখনৰ চাৰিওফালে বেঢ়ি বৈ আছে। জলবায়ু কোমল আৰু নাতিশীতোষ্ণ। জনসাধাৰণৰ আচৰণ সৰল আৰু সাধু প্ৰকৃতিৰ। মানুহবোৰৰ আকাৰ সৰু আৰু বৰণ ডাঠ-হালধীয়া। তেওঁলোকৰ ভাষা মধ্য-ভাৰতৰ ভাষাতকৈ অলপ বেলেগ। তেওঁলোকৰ স্বভাৱ উদ্যমী আৰু বন্য; তেওঁলোকৰ স্মৃতিশক্তি ধাৰণক্ষম আৰু অধ্যয়নত একাগ্ৰ। তেওঁলোকে দেৱতা পূজা কৰে আৰু বলি দিয়ে। বুদ্ধদেৱৰ প্ৰতি তেওঁলোকৰ ধৰ্ম-বিশ্বাস নাই। বৰ্তমান কাললৈকে সময়ে সময়ে বুদ্ধদেৱৰ অৱতাৰ হৈ আছে যদিও পুৰোহিতসকল গোটি খাবৰ বাবে এটাও সঙঘাৰাম ইয়াত সজা নাই। সন্ধৰ্মী (বৌদ্ধ ধৰ্মী) শিষ্যসকলে গোপনে প্ৰাৰ্থনা কৰে আৰু সেয়াই সকলো। ইয়াত ১০০ টা মান দেৱতাৰ মন্দিৰ আছে আৰু বেলেগ বেলেগ শাখাবোৰ ধৰিলে হিচাপত কেইবা বৃন্দও হয়। বৰ্তমান ৰজা প্ৰাচীন নাৰায়ণদেৱৰ বংশধৰ। তেওঁ জাতিত ব্ৰাহ্মণ। তেওঁৰ নাম ভাস্কৰৱৰ্মা আৰু উপাধি কুমাৰ। এই বংশই ইয়াত ৰাজ্য স্থাপন কৰা দিনৰ পৰা বৰ্তমান ৰজালৈকে এহাজাৰ পুৰুষ অতিক্ৰম কৰিছে। ৰজা বিদ্যাপ্ৰিয় আৰু প্ৰজাসকলো ৰজাৰ অনুসৰণত তেনেকুৱা। দূৰ দেশৰ পৰা প্ৰতিভাশালী লোকসকল চাকৰি বিচাৰি প্ৰব্ৰজনকাৰী হিচাপে আহে। যদিও তেওঁৰ বুদ্ধদেৱৰ ওপৰত ধৰ্মবিশ্বাস নাই, তথাপি তেওঁ বিদ্বান শ্ৰমণসকলক শ্ৰদ্ধা কৰে।

এই দেশৰ দক্ষিণ-পূবত জাক পাতি পাতি বনৰীয়া হাঠী চৰি ফুৰে; সেই কাৰণে এই জিলাখনত সিহঁতক ঘাইকৈ যুদ্ধত ব্যৱহাৰ কৰা হয়।” (চি-য়ু-কি, ২য় খণ্ড, পৃঃ ১৯৫-৯৯)।

পাচীন কামৰূপৰ শ্ৰেষ্ঠতম ৰজা ভাস্কৰবৰ্মাৰ বহুমুখী গুণ আৰু কৃতিত্বৰ বিষয়ে তামৰ ফলিবোৰত পোৱা যায়। নিধনপুৰ তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে যে তেওঁ ৰাজ্যখনৰ আক্ষাৰ দূৰ কৰিবলৈ, বৰ্ণাশ্ৰমৰ সুব্যৱস্থা কৰিবলৈ আৰু বিদ্যাৰ প্ৰয়োজন সাধিবলৈ জন্ম হৈছিল। তেওঁৰ পৃষ্ঠপোষকতাৰ বাবেই কামৰূপ বিদ্যা আৰ্জনৰ উল্লেখযোগ্য কেন্দ্ৰ হৈ পৰিছিল আৰু বিদেশৰ ছাত্ৰক আকৰ্ষণ কৰিছিল। উদাৰ দানৰ যোগেদি বিদ্যা আৰ্জনও উদগনি দিয়া হৈছিল। প্ৰজাসকলৰ বাবে তেওঁ আদৰ্শ স্বৰূপ আছিল। তেওঁৰ শাসনত কামৰূপ আৰ্য-সংস্কৃতিৰ কেন্দ্ৰ হৈ পৰিছিল।

ৰাজ্যৰ কেন্দ্ৰস্থলতেই নহয়, চম্ভুপুৰী বিষয়ৰ দৰে দূৰ ঠাইতো ব্ৰাহ্মণৰ দৰে উচ্চ জাতিৰ লোকক অগ্ৰহাৰ দান কৰিছিল। বিগত কেইবা বছৰৰ পৰা চিপেট, এিপুৰা, বঙ্গ, উৰিয়া, মিথিলা, মগধ আৰু কনৌজৰ সৈতে কামৰূপৰ সম্পৰ্ক চলি আছিল। বৰ্মন বংশৰ ৰজাসকলৰ অধীনলৈ পূব ভাৰতৰ ডাঙৰ অংশ এটা অহাত কামৰূপৰ ধাৰণাৰ দ্বাৰা প্ৰভাৱিত হৈছিল। কাছোডিয়া, আলান আদি প্ৰশাস্ত মহাসাম্ভাৰীয়া দেশবোৰত কামৰূপৰ প্ৰভাৱৰ স্বাক্ষৰ ধ্বংসাৱশেষবোৰত পোৱা যায়।

তেওঁৰ তামৰ ফলিবোৰ আৰু বাণভট্টৰ হৰ্ষচকিতৰ সাক্ষ্য মতে তেওঁ শৈৱ আছিল। জীৱনৰ শেষৰ ফালে মহাযান বৌদ্ধ ধৰ্মৰ প্ৰতি আকৃষ্ট হৈছিল। তিউৱেন-চাঙৰ প্ৰভাৱৰ পূৰ্বেও তাও ধৰ্মৰ তাও-তে-কিং গ্ৰন্থৰ সংস্কৃত অনুবাদ ভাস্কৰবৰ্মাই চীন দেশৰ পৰা অনাইছিল। তেওঁৰ যোগেদিয়েই কামৰূপত সহজয়ান পন্থাৰ প্ৰচলন হয় বুলি বিশ্বাস কৰা হয়। সহজয়ানৰ প্ৰবক্তা হিউৱেন-চাঙক এই কাৰণেই কামৰূপলৈ আমন্ত্ৰণ কৰা হৈছিল।

৬৫০ খ্ৰিঃ ত ভাস্কৰবৰ্মাৰ মৃত্যু হোৱাৰ লগে লগে বৰ্মন বংশৰ অন্ত পৰে বুলি বুৰঞ্জীবিদসকলে ভাবে। কিন্তু বৰ্মা উপাধিধাৰী তিনিজন ৰজাৰ নাম মূৰ্তিলেখ আৰু তামৰ ফলিত পোৱা হৈছে। ধনশিৰী জিলাৰ সৰুপথাৰ মৌজাৰ দেওপানীত উদ্ধাৰ হোৱা অসম ৰাজ্যিক সংগ্ৰহালয়ত সংৰক্ষিত হৰিহৰ শিলামূৰ্তি লিপিত মহাৰাজাধিৰাজ দিল্পেথবৰ্মা আৰু একে ঠাইৰ পৰা উদ্ধাৰ হোৱা শঙ্কৰনাৰায়ণ মূৰ্তিলিপিত মহাৰাজাধিৰাজ জীৱৰাৰ নাম পোৱা গৈছে। আখৰৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি এওঁলোকক অষ্টম শতিকাৰ ৰজা বুলি ভবা হয়।

আন হাতে একে জিলাৰে বৰপথাৰ মৌজাৰ দুবৰণি গাৱঁত উদ্ধাৰ হোৱা ব্ৰাহ্মী আখৰৰ তামৰ ফলিত বসুন্ধৰৱৰ্মন নামৰ ৰজাৰ নাম পোৱা হৈছে। এই খননকাৰ্য চলাওঁতা ড° হেমেন্দ্ৰ নাথ দত্তই অনুমান কৰে যে বসুন্ধৰৱৰ্মনে সেই অঞ্চলত ৪০০-৫০০ খ্ৰিঃ ভিতৰত শাসন কৰিছিল। এই অঞ্চলত এখন পুৰণি নগৰ আৰু এটা মন্দিৰৰ ধ্বংসাৱশেষ উদ্ধাৰৰ ভিত্তিত বৰপথাৰৰ দুবৰণি অঞ্চলত বৰ্মন উপাধিধাৰী ৰাজবংশ এটাই ৫ম শতিকাত ৰাজত্ব কৰিছিল বুলি ভবা হয়।

(খ) শালস্তম্ভ বংশ (৬৫০-৯৯০)

বৰ্মন বংশ অন্ত পৰাৰ পিচত শালস্তম্ভ বংশ আৰম্ভ হয়। এই বংশৰ আদি ৰজা শালস্তম্ভ। ৰত্নপালৰ (১০১০-৪০) বৰগাওঁ তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে—

“এৱং বংশক্ৰমেণ ক্ষিতিমথ নিখিলাং ভূঞ্জতাং নাৰকাণাং ৰাজ্ঞাং
শ্লেচ্ছাধিনাথো বিধিচলনাৱশাদেৱ জগ্ৰাহ ৰাজ্যম্। শালস্তম্ভঃ ক্ৰমেস্যপি হি নৰপত্যো
বিগ্ৰহস্তম্ভমুখ্যা বিখ্যাতাঃ সম্বভূবুৰ্দ্ধিগুণিত দশতা সংখ্যায়া সংৱিভিন্নাঃ।।৯।।”

অৰ্থাৎ বংশানুক্ৰমে এইদৰে সমস্ত পৃথিৱী পালনকাৰী নৰকবংশীয় ৰজাসকলৰ ৰাজ্য দৈৱগতিবশতঃ শ্লেচ্ছাধিপতি শালস্তম্ভই অধিকাৰ কৰিছিল। এওঁৰ বংশতো ক্ৰমে বিগ্ৰহস্তম্ভ প্ৰভৃতি বিখ্যাত ৰজাসকল হৈছিল আৰু এওঁলোকৰ সংখ্যা দহৰ দুগুণ হৈ সংৱিভিন্ন হৈছিল।

১। শালস্তম্ভ (৬৫০-৭৫)

৬৫০ খ্ৰিঃ ত শালস্তম্ভই কামৰূপ ৰাজ্যৰ সিংহাসন আৰোহণ কৰে। তেওঁ পশ্চিম ফালে কামৰূপ সীমা বঢ়াবলৈ প্ৰচেষ্টা কৰিছিল। ভাস্কৰৱৰ্মাৰ দিনত কামৰূপৰ দখললৈ অহা নালন্দা অঞ্চল উত্তৰাধিকাৰসূত্ৰে পাইছিল। মগধৰ পূব অংশ, সম্পূৰ্ণ উত্তৰ বঙ্গ, চিলেট আৰু দক্ষিণ পূব বঙ্গ তেওঁৰ অধীনত আছিল। ৬৭৫ খ্ৰিঃ ত এওঁৰ মৃত্যু হয়।

২। বিজয় বা বিগ্ৰহস্তম্ভ

৩। পালক

৪। কুমাৰ

(৬৭০-৭২৫)

৫। ৰাজদেৱ

বিজয় বা বিগ্ৰহস্তম্ভ ৬৭৫-ত কামৰূপৰ ৰজা হয়। হৰ্জৰৱৰ্মাৰ (৮১৫-৩৫) হাযুংথল তামৰ ফলিত ৪র্থ শ্লোকত কোৱা হৈছে, ‘স্বৰ্গতে নৃপশাৰ্দুলে তস্য

সুনুৰ্মহাবলঃ। বিজয়ো নিৰ্জিতাৰতিৰ্বভূৰোষীপতিৰ্মহন।।৪।। অৰ্থাৎ, নৃপবায়ু (শালস্তম্ভ) স্বৰ্গৰামী হোৱাত তেওঁৰ মহাবলী শত্ৰুৰাজ্যো পুত্ৰ বিজয় পৃথিৱীৰ মহান অধিপতি হ'ল। ৩য় বলৰমাৰ (৮৮৫-৯১০) তামৰ ফলিত তেওঁৰ নামেৰে উল্লেখ কৰা হৈছে। ৰত্নপালৰ (১০১০-৪০) নৰগাওঁ তামৰ ফলিৰ ৯ম শ্লোকত তেওঁক বিগ্ৰহস্তম্ভ বোলা হৈছে।

হৰ্জৰবৰ্মাৰ (৮১৫-৩৫) হাযুংখল তামৰ ফলি মতে বিজয়ৰ পাচত একাদিক্ৰমে পালক, কুমাৰ আৰু বজ্জদেব কামৰূপৰ ৰজা আছিল। এওঁলোকে ৬৭৫-৭২৫ খ্ৰিঃৰ ভিতৰত শাসন কৰিছিল। এওঁলোকৰ বিষয়ে বিতংভাৱে জনা নাযায়। গুৱাহাটীৰ নৰকাসুৰ গাৰত পোৱা পিতলৰ দ্যষ্টা লিপি অনুযায়ী ৪র্থ ৰজা কুমাৰ দেৱতা আৰু অসুৰৰ হাতীবোৰ বধোতা আছিল। তেওঁ ইন্দ্ৰৰ সমান বলী আৰু ইন্দ্ৰ পুত্ৰায় নামৰ্ক আছিল। এটা মন্দিৰ নিৰ্মাণ কৰি তেওঁ ইন্দ্ৰ পূজাৰ প্ৰচলন কৰিছিল।

কুমাৰৰ মৃত্যুৰ পাচত পুণ্ড্ৰবৰ্ণনলৈকে থকা কামৰূপৰ ৰাজ্য হেৰায়। শৈল বংশৰ ৰজা জয়বৰ্ণনৰ বধোনি তামৰ ফলিত পুণ্ড্ৰবৰ্ণনৰ ৰজাক তেওঁ পৰাজয় কৰে বুলি কোৱা হৈছে।

৬। হৰ্ষদেৱ বা শ্ৰীহৰ্ষ (৭২৫-৫০)

শৈল বংশৰ ৰজা জয়বৰ্ণনৰ হাতত বজ্জদেৱৰ পৰাজয়ৰ ফলত পুণ্ড্ৰবৰ্ণন তেওঁৰ হাতৰ পৰা যায়। হাযুংখল তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে, “তস্মিন্মৃত্যুত মগ্ৰবাহুতী পালকো পালকোস্তমঃ। কুমাৰো বজ্জদেৱশ্চ ব্ৰহ্মগণাভিহীতা নৃপাঃ।।৫।। যঃ ক্ৰতো হৰ্ষবৰ্মেতি গুণৱাক্ষাৰ্মিকো নৃপঃ। পুত্ৰদৃষ্ট্যা জনো যেন পালিতো ন চ পীড়িতঃ।।৬।।” অৰ্থাৎ, মহাবাহুবলীজনৰ (হৰ্জৰবৰ্মাৰ) মৃত্যুৰ পাচত উত্তম প্ৰজাপালক পালক, কুমাৰ আৰু বজ্জদেৱ এজন এজনকৈ অন্তৰ্হিত হ'ল। (তাৰ পাচত) হৰ্ষবৰ্মা নামেৰে খ্যাত গুণৱান আৰু ধাৰ্মিক ৰজাজনে প্ৰজাক পুত্ৰৰ দৰে পালন কৰিছিল, পীড়ন কৰা নাছিল।

হৰ্ষদেৱে ৭২৫ খ্ৰিঃ ত সিংহাসন আৰোহণ কৰে। কনমালাবৰ্মাদেৱৰ (৮৩৫-৬৫) তামৰ ফলিবোৰত এওঁক শ্ৰীহৰ্ষ বোলা হৈছে। নেপালৰ ৰজা ২য় জয়দেৱৰ পশুপতি মন্দিৰৰ ৭৪৮ খ্ৰিঃ ত লিখোৱা ফলিত তেওঁক “গৌড়-ওড্ৰুদি-কলিঙ্গ-কোশল-পতি”, অৰ্থাৎ গৌড়, ওড্ৰু, কলিঙ্গ আৰু কোশলৰ অধিপতি বোলা হৈছে। তেওঁৰ জীয়েক ৰাজ্যমতীক ২য় জয়দেৱে বিয়া কৰাইছিল।

সিংহাসনত উঠিয়েই তেওঁ পুত্ৰবৰ্ধন উদ্ধাৰ কৰে। লগতে ওদ্ৰ, কলিঙ্গ, আৰু কোশল জয় কৰে। তেওঁ ৰাজ্য পূবে শদিয়াৰ পৰা পশ্চিমে অযোধ্যালৈকে, উত্তৰে হিমালয় পৰ্বতৰ পৰা দক্ষিণে বঙ্গোপসাগৰ আৰু উৰিষ্যালৈকে বিস্তৃত আছিল। ৭৫০-ত তেওঁৰ মৃত্যু হয়।

৭। ২য় বলৰমা (৭৫০-৬৫)

হৰ্ষদেৱৰ মৃত্যুৰ পিচত শালস্তম্ভ বংশৰ অন্ত পৰিল বুলি ভবা হৈছিল। কিন্তু হৰ্জৰমাৰ হায়ুংথল তামৰ ফলিৰ ৭ম শ্লোকত পোৱা গ'ল, “নাকপৃষ্ঠে গতে ৰাজি তসৌৱ তনয়ো ভুৱি। বলৰমাং নৃপতিঃ সোপি মৃত্যুৱশঃ গতঃ।।৭।।” অৰ্থাৎ ৰজা (হৰ্ষদেৱ) স্বৰ্গী হোৱাৰ পিচত তেওঁৰ পুতেক বলৰমা ৰজা হৈ পিচত মৃত্যু হয়। আন তামৰ ফলিবোৰত এওঁৰ নাম বাদ পৰি গৈছে। এওঁৰ সময়তে গোপালে গৌড়ত পালবংশ প্ৰতিষ্ঠা কৰে।

এওঁৰ ৰাজত্ব কাল শান্তিপূৰ্ণ আছিল। ৰজাই আনৰ ৰাজ্য আক্ৰমণ কৰা নাছিল আৰু আনেও তেওঁৰ ৰাজ্য আক্ৰমণ কৰা নাছিল।

৮-৯। দুজন অস্ত্ৰাত ৰজা (৭৬৫-৯০)

২য় বলৰমাৰ পাচত কোন ৰজা হয় এই বিষয়ে বুৰঞ্জীবিদসকল একমত নহয়। এই বিষয়ে একমাত্র পথপ্ৰদৰ্শক হৰ্জৰমাৰ হায়ুংথল তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে, ‘তস্মিন্ কুলে কুমুদচন্দ্ৰপয়ঃপ্ৰকাশে চক্ৰাৰথী জগতি হোন্ধত ৰাজপুত্ৰৌ। ৰাজ্যং বিভাৰ তনয়ো হি কনীয়সন্তুতৌ তু তৌ গুৰুগিৰামবহানদক্ষৌ।।৮।।’ অৰ্থাৎ ভেঁটফুল, চন্দ্ৰ আৰু গাখীৰৰ দৰে বগা (খ্যাতিসম্পন্ন) এই বংশত চক্ৰ আৰু আৰথি নামে দুজন ৰাজকোঁৱৰ জন্মিল, যি দুজন উদ্ধত আৰু গুৰুৱাক্য নমনা লোক আছিল। সেই কাৰণে ভায়েকৰ (আৰথিৰ) পুতেকে ৰাজ্যভাৰ গ্ৰহণ কৰিব লগীয়া হ'ল।

আৰথিৰ পুতেকৰ নাম কি আছিল, জনা নাযায়। ড° মুকুন্দ মাধৱ শৰ্মাই *Inscriptions of Ancient Assam*-ত উল্লেখ কৰিছে যে ড° প্ৰতাপ চন্দ্ৰ চৌধুৰীয়ে শঙ্কৰ নাৰায়ণ শিলামূৰ্তি লিপিত উল্লিখিত মহাৰাজাধিৰাজ জীৱবাক ২য় বলৰমাৰ পাচত কামৰূপৰ ৰজা বুলি ভবা কথাষাৰ তেৱোঁ সমৰ্থন কৰে (p. 311)। আকৌ হৰিহৰ শিলামূৰ্তি লিপিত উল্লিখিত মহাৰাজাধিৰাজ দিল্লেশ্বৰমাৰ ড° শৰ্মাই জীৱবাক পাচৰ কামৰূপৰ ৰজা বুলি ভাবে (p. 312)। এই দুয়োজন ৰজাৰ ৰাজত্ব কাল ৭৬৫-৯০-ৰ ভিতৰত শেষ হয়।

১০। প্ৰালম্ব বা সালম্ব (৭৯০-৮১০)

বনমালবৰ্মাদেৱৰ (৮৩৫-৬৫) তেজগুণৰ তামৰ ফলিত পোৱা যায়, “ভগদত্তই প্ৰাগ্‌জ্যোতিষৰ বিখ্যাত ৰজা হৈ তালৈ গৈ (তদ্‌ এতা) বিনয় আৰু তপস্যাৰে ঈশ্বৰক (শিবক) আৰাধনা কৰিলে।।৫।। তেওঁৰ প্ৰতি তুষ্ট হৈ তেওঁ (শিবই) তেওঁক উপৰিপত্ননৰ আধিপত্য দিলে আৰু তেওঁৰ ভৱিষ্যত বংশধৰসকলক প্ৰাগ্‌জ্যোতিষ অধিকাৰ্য্য দিলে।।৬।। তেওঁৰ বংশত প্ৰালম্ব এই অদ্ভুত নামেৰে শত্ৰুবীৰসকলক বধ কৰোঁতা আৰু (তলতীয়া) ৰজাসকলৰ মূৰৰ (কিৰীটিৰ) মাণিকৰ পোহৰেৰে পাদ পীঠ (ভৰি থোৱা পীঠ) আলোকিত হোৱা এজন ৰজা হ’ল।।৭।। তেওঁ সালম্বশ্বেৰে আৰম্ভ হোৱা আৰু শ্ৰীহৰিষেৰে অন্ত হোৱা তেওঁৰ পূৰ্ববৰ্তী ৰজাসকলৰ দৰেই সজ গুণেৰে দিগন্ত আলোকিত কৰিছিল।।৮।।”

বনমালবৰ্মাদেৱৰ পৰ্বতীয়া তামৰ ফলিত প্ৰালম্বৰ ঠাইত সালম্ব আৰু শ্ৰীহৰিষৰ ঠাইত শ্ৰীহৰ্ষ পোৱা যায়। এওঁৰ সিংহাসন আৰোহণ কৰা সময় ৭১০ খ্ৰিঃ বুলি স্থিৰ কৰা হৈছে। গৌড়ৰ ৰজা ধৰ্মপালৰ (৭৭০-৮১০) এওঁ সমসাময়িক আছিল।

প্ৰালম্বক বনমালবৰ্মাদেৱৰ দুয়োখন তামৰ ফলিতে বাঁৰোচিত কাৰ্যৰ বাবে প্ৰশংসা কৰা হৈছে। তাৰনাথৰ ভাৰতৰ বৌদ্ধমতৰ বুৰঞ্জীত গৌড়ৰ ৰজা ধৰ্মপালে কামৰূপ জয় কৰিছিল বুলি আছে। উক্ত গ্ৰন্থৰ ইংৰাজী অনুবাদ অনুসৰি, ‘After this Dharmapala, the son of that king (Rasapala) ascended the throne. He ruled for sixty four years. He conquered Kimarupa, Tirahuti, Gauda and other places.’ (p. 274)

জয় কৰা ৰাজ্যখনৰ নাম তিব্বতী আখৰত ‘কীমৰূপ’ বুলিহে আছে। এতেকে শব্দটোৱে কামৰূপ ৰাজ্য বুজাইছে নে নাই বুজোৱা তাতো সন্দেহ আছে। তেওঁ গৌড়ৰ ৰজা। কিন্তু বুৰঞ্জীখনত কোৱা হৈছে তেওঁ গৌড় জয় কৰিছিল। ধৰ্মপালে কামৰূপ আক্ৰমণ কৰাৰ কথা তেওঁৰ খলিমপুৰ তামৰ ফলিত বা পাল বংশৰ অন্য কোনো ৰজাৰ তামৰ ফলিত পোৱা নাযায়। আন হাতে, প্ৰালম্বয়ে পশ্চিমৰ ফালে সীমা বঢ়োৱাৰ চেষ্টা কৰাৰ কথা জনা নাযায়। খুব সম্ভৱ, তেওঁ পূৰ্ববৰ্তী ৰজাসকলৰ দুৰ্বল শাসনৰ সুযোগ লৈ মূৰ দাঙি উঠা বিদ্ৰোহীসকলক কঠোৰ হাতেৰে দমন কৰিছিল। ৮১০-ত সালম্বৰ মৃত্যু হয়।

১১। আৰথি (৮১০-১৫)

প্ৰালম্বৰ মৃত্যুৰ পাচত আৰথি সিংহাসনত উঠে। তেওঁ পাঁচ বছৰ ৰাজা শাসন কৰি ৮১৫ত মৃত্যু বৰণ কৰে। তেওঁৰ পত্নীৰ নাম জীৱদেৱী।

১২। হৰ্জৰৱৰ্মা (৮১৫-৩৫)

আৰথি আৰু জীৱদেৱীৰ পুত্ৰ হৰ্জৰৱৰ্মা ৮১৫ত কামৰূপৰ সিংহাসনত উঠে। তেওঁৰ অভিষেকত জনসাধাৰণৰ ফালৰ পৰা বণিকসকলে অংশ গ্ৰহণ কৰিছিল। অভিষেকৰ পাচত তেওঁ ‘মহাৰাজাধিৰাজ পৰমেশ্বৰ পৰমভট্টাৰক’ উপাধি লৈছিল। ইয়াৰ দ্বাৰাই বুজিব পাৰি যে তেওঁ বাকীসকলতকৈ প্ৰতাপী ৰজা আছিল। তেওঁ হৰদেৱেশ্বৰ নামৰ এখন ধুনীয়া নগৰ নতুনকৈ নিৰ্মাণ কৰাইছিল।

১৩। বনমালৰৱৰ্মাদেৱ (৮৩৫-৬৫)

হৰ্জৰৱৰ্মাৰ পুত্ৰ বনমালৰৱৰ্মাদেৱ ৮৩৫-ত সিংহাসনত উঠাৰ লগে লগে দেশখনে উন্নতিৰ নতুন পৰ্যায় এটাৰ আৰম্ভ কৰে। তেওঁ উত্তৰ আৰু পূবৰ অঞ্চলবোৰলৈকে আৰু চিলেটকৈ ধৰি মৈমনচিং, ঢাকা আৰু দক্ষিণ-পূব বঙ্গলৈকে ৰাজ্য বিস্তাৰ কৰিছিল। সেই কাৰণে তেওঁ ‘পৰমেশ্বৰ পৰমভট্টাৰক মহাৰাজাধিৰাজ’ উপাধি লৈছিল।

তেওঁৰ তেজপুৰ তামৰ ফলি মতে চন্দ্ৰপুৰী বিষয়ৰ উত্তৰ-পূবত আৰু ত্ৰিশ্ৰোতাৰ পশ্চিমে অৱস্থিত অভিশূৰৱাটক গাৱঁত ইন্দোকক ভূমিদান কৰিছে। অভিশূৰৱাটক গাওঁখন ৬ষ্ঠ শতিকাত ভূতিৰৱৰ্মাই মাটি দান দিয়া ঠাইখনৰ ওচৰতে আছিল। এই ফলিয়ে প্ৰমাণ কৰে যে তেওঁ তিস্তা আৰু কৌশিক নদীৰ মধ্যৱৰ্তী অঞ্চল, অৰ্থাৎ পুণ্ড্ৰৱৰ্ধনৰ সৰহ অংশৰ অধিপতি আছিল। পুতেক জয়মালই শিক্ষা সাং কৰি ৰজা হ’বৰ যোগ্যতা আহৰণ কৰাৰ পাচত পুতেকৰ বাবে সিংহাসন ত্যাগ কৰি অনশন কৰি ৮৬৫ত প্ৰাণত্যাগ কৰে।

১৪। জয়মাল বা বীৰবাহু (৮৬৫-৮৫)

জয়মাল আৰু বীৰবাহু দুজন ৰজা নে একেজন ৰজাৰেই দুটা নাম, এই বিষয়ে বুৰঞ্জীবিদসকলৰ মাজত মতভেদ আছিল। ৩য় বলৰৱৰ্মাৰ উত্তৰ বৰবিল তামৰ ফলিত সন্দেহ ভঞ্জন কৰি লিখা হৈছে, “স শ্ৰীমান্ বনমালো’পি ৰাজা ৰাজীৱলোচনঃ। অৱেক্ষ্য বিনয়োপেতং তনুজং প্ৰাপ্তযৌৱনম্।।১৬।। হত্ৰং শশধৰধৱলং চামৰযুগলাদ্ধিতং প্ৰদায়াম্মৈ। অনশন-বিধিনা বীৰভেজ্জসি মাহেশ্বৰে লীনঃ।।১৭।। প্ৰাপ্তৰাজ্যেন তেনোঢ়া ৰাজ্ঞা শ্ৰীবীৰবাহুনা। কুলেন কাশ্চা ৱয়সা

অস্থানামাশ্বনস্‌সমা ॥১৮॥” অৰ্থাৎ, শ্ৰীযুক্ত পদ্মলোচন বনমালে বিনয়ী পুতেক বীৰবাহুকে ডেকা হোৱা দেখি ॥১৬॥ চন্দ্ৰৰ দৰে ৰূপ আৰু দুয়োফালে চামৰ থকা ৰাজহুৱা তেওঁক দান কৰি অনশনযোগে মহেশ্বৰৰ বীৰতেজত লীন হ’ল ॥১৭॥ ৰাজ্য পোৱাৰ পিচত বীৰবাহু ৰজাই বংশ, সৌন্দৰ্য আৰু বয়সত তেওঁৰ সমকক্ষ অশ্বাক বিয়া কৰিলে ॥১৮॥” তয় বলৱৰ্মাৰ (৮৮৫-৯১০) নগাওঁ তামৰ ফলিত এওঁক ৰণভূক্ত বুলিও কোৱা হৈছে। বম্বৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে তেওঁ যুদ্ধবিদ্যাত পাগত আছিল।

চন্দ্ৰপুৰী বিষয় লৈ হোৱা টনা-আঁহোৱাত অংশ গ্ৰহণ কৰি তাত তেওঁৰ দখল কটকটীয়া কৰে। জীৱনৰ শেষৰ ফালে তেওঁ ৰোগত আক্ৰান্ত হৈ পুতেকক ৰাজ্য ভাৰ গতায়।

১৫। ৩য় বলৱৰ্মা (৮৮৫-৯১০)

জয়মাল আৰু অশ্বাক পুতেক তয় বলৱৰ্মাক বাপেকে ৮৮৫ত সিংহাসনত বহুৱায়। নগাওঁ তামৰ ফলি মতে তেওঁ শ্ৰুতিধৰ ব্ৰাহ্মণক দিৰ্জ্জনা বিষয়ৰ হেংসিলা অঞ্চলত ভূমিদান কৰে। দিৰ্জ্জনা বিষয় তিথু বা কৰতোয়াৰ পশ্চিমৰ অৱস্থিত। তেওঁ দেখাত শুৱনি আছিল। তামৰ ফলিবোৰৰ পৰা জনা যায় যে তেওঁ শাসন-কাৰ্যতো সুনিপুণ আছিল। ৯১০ত তয় বলৱৰ্মাৰ মৃত্যু হয়।

১৬-২০। ৩ জন অজ্ঞাত ৰজা (৯১০-৭০)

তয় বলৱৰ্মাৰ পাচত কোন ৰজা হ’ল, জানিব পৰা নাযায়। বজ্জপালদেৱ (১০১০-৪০) বৰগাওঁ তামৰ ফলি মতে ত্যাগসিংহকে ধৰি শালভূক্ত বংশত ২১ জন ৰজা আছিল। আমি এতিয়ালৈকে এই বংশৰ ১। শালভূক্ত, ১। বিজয়, ৩। পালক, ৪। কুমাৰ, ৫। বজ্জদেৱ, ৬। হৰ্ষদেৱ, ৭। ২য় বলৱৰ্মা, ৮। ৯। দুজন অজ্ঞাত ৰজা, ১০। প্ৰালভ, ১১। আৰথি, ১২। হৰ্জৰৱৰ্মা, ১৩। বনমালবৰ্মাদেৱ, ১৪। জয়মাল, ১৫। তয় বলৱৰ্মা— এই ১৫ জন ৰজাৰ নাম পাইছোঁ। এই তালিকাত ৰজা নোহোৱা ৰাজকোঁৱৰ ১৬। চক্ৰ আৰু ১৭। আৰথিৰ নাম যোগ দিলে ১৭ জন ৰজা হয়। এতেকে এই বংশৰ আৰু ৩ জন ৰজাৰ নাম উদ্ধাৰ হোৱা নাই। পাল বংশৰ প্ৰতিষ্ঠাতা ব্ৰহ্মপাল ৯১০ত সিংহাসনত উঠে। এতেকে ৯৯০-৯১০=৮০ বছৰৰ ভিতৰত ২১ তম ৰজা ত্যাগসিংহই ২০ বছৰ শাসন কৰা বুলি ধৰিলে বাকী ৬০ বছৰ কালত কোন কোন ৰজা আছিল জানিবৰ উপায় এতিয়ালৈকে ওলোৱা নাই।

২১। ত্যাগসিংহ (৯৭০-৯০)

ৰত্নপালৰ বৰগাওঁ তামৰ ফলি মতে এওঁ শালস্তম্ভ বংশৰ ২১ তম ৰজা। ফলিত কোৱা হৈছে, ‘এৱং বংশক্ৰমেণ ক্ষিতিমথ নিখিলাং ভুঞ্জতাং নাৰকাণাং ৰাজ্ঞাং শ্লেচ্ছাধিনাতো ৱিধিচলনাৱশাদেৱ জগ্ৰাহ ৰাজ্যম্। শালস্তম্ভঃ ক্ৰমেস্যাপি হি নৰপতয়ো ৱিগ্ৰহস্তম্ভমুখ্যাঃ ৱিখ্যাতাঃ সম্ভভুৰ্ৱিগুণিত দশতাসংখ্যায়া সংবিভিন্না।।৯।। নিৰ্বংশং নৃপমেকৱিংশতিতমং শ্ৰীত্যাগসিংহাভিধন্তেবাস্বীক্ষ্য দিৱঙ্গতংপুনৰহো ভৌমো হি নো যুজ্যতে। স্বামীতি প্ৰৱিচিন্ত্য তৎপ্ৰকৃতয়ো ভূভাৰ ৰক্ষাক্ষমং সাগক্ষ্যাৎ পৰিচক্ৰিৰে নৰপতিং শ্ৰীব্ৰহ্মপালং হি যম্।।১০।।’ অৰ্থাৎ, সেইদৰে বংশক্ৰমে নৰকবংশীয় ৰজাসকলে ৰাজভোগ কৰি থাকোঁতে বিধিৰ ছলনাবশতঃ শ্লেচ্ছ অধিপতি শালস্তম্ভই ৰাজপাট অধিকাৰ কৰিলে। এই বংশত শালস্তম্ভৰ পৰা ক্ৰমে বিগ্ৰহস্তম্ভৰ দৰে বিখ্যাত দহৰ দুগুণ সংখ্যাকজন (বিশজন) ৰজা হৈছিল।।৯।। একৈশ সংখ্যক ৰজা শ্ৰীত্যাগসিংহক নিৰ্বংশ হৈ স্বৰ্গগামী হোৱা দেখি আকৌ ভৌম (নৰক) বংশীয় ৰজাহে আমাৰ উপযুক্ত— এইবুলি চিন্তা কৰি প্ৰকৃতিয়ে তেওঁৰ নৰক বংশৰ সৈতে সম্পৰ্ক থকা গুণে (সাগক্ষ্যাৎ) শ্ৰীব্ৰহ্মপালক ৰজা মনোনীত কৰিলে।।১০।।’ (প্ৰকৃতি শব্দ বহুবচন হ’লে ১। ৰজা, ২। মন্ত্ৰী, ৩। মিত্ৰ ৰজাসকল, ৪। ধনাধ্যক্ষ, ৫। সৈন্যবাহিনীৰ প্ৰধান, ৬। ভুখণ্ড, ৭। দুৰ্গ আৰু ৮। প্ৰজাৰ সমিতিবোৰ— এই ৮টা অঙ্গক বুজায়।)

ত্যাগসিংহ শালস্তম্ভ বংশৰ শেষ ৰজা। তেওঁ ৯৭০-৯০লৈকে শাসন কৰিছিল বুলি ধৰি লোৱা হৈছে। তেওঁৰ দিনত হোৱা ঘটনাৰ সম্বন্ধে জানিবৰ উপায় নাই। “নিৰ্বংশ হৈ স্বৰ্গগামী” হোৱা বাক্যাংশই তেওঁৰ স্বাভাৱিক মৃত্যুকে বুজাইছে যেন লাগে।

গ) পাল বংশ (৯৯০-১১৩৮)

ত্যাগসিংহৰ লগে লগে শালস্তম্ভ বংশৰ ওৰ পৰে। ইয়াৰ পাচত প্ৰকৃতিয়ে ভৌম বংশৰ সৈতে সম্পৰ্ক আৰু ৰাজ্য চলাবৰ যোগ্যতা থকা গুণে ব্ৰহ্মপালক ৰজা মনোনীত কৰে। ইয়াৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি ব্ৰহ্মপালৰ মনোনয়ন এক প্ৰকাৰৰ সীমিত মতদাতাৰ নিৰ্বাচন আছিল। প্ৰকৃতি শব্দৰে বুজোৱা ৰাজ্যৰ আঠোটা অঙ্গই ৰজাৰ যোগ্যতা কেনে ধৰণৰ হ’ব লাগে ভালকৈ জানিছিল আৰু ব্ৰহ্মপালৰ যে সেই যোগ্যতা আছিল, তাকো জানিছিল।

১। ব্ৰহ্মপাল (৯৯০-১০১০)

ব্ৰহ্মপালক ৯৯০ত কামৰূপৰ ৰজা নিৰ্বাচিত কৰা হয়। ব্ৰহ্মপালৰ (১০১০-৪০) বৰগাওঁ তামৰ ফলিত ব্ৰহ্মপালক যুদ্ধত অকলে শত্ৰুক পৰাজয় কৰা বীৰ বুলি কোৱা হৈছে। ভোজবৰ্মণৰ বেলাৰা তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে যে জাতবৰ্মণে কামৰূপৰ শ্ৰীক পৰাজয় কৰিছিল (পৰিভবন্ ত্ৰাং কামৰূপপ্ৰিয়ম)। ব্ৰহ্মপালৰ দিনত কোনেও কামৰূপ আক্ৰমণ কৰাৰ সন্ধ্যা নাই। গতিকে এই উল্লেখ প্ৰতীকদৰ্শী হ'ব পাৰে। তেওঁৰ পত্নীৰ নাম আছিল কুলদেৱী। তেওঁ ১০১০ খ্ৰীষ্টাব্দত পুতেক ব্ৰহ্মপালৰ বাবে সিংহাসন ত্যাগ কৰি স্বৰ্গগমন কৰে।

২। ব্ৰহ্মপাল (১০১০-৪০)

ব্ৰহ্মপালক শত্ৰু দমনকাৰী, ৰাম আৰু কৃষ্ণৰ বিখ্যাত বৰ্জবোৰৰ অনুসৰণকাৰী বুলি তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে। বৰগাওঁ তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে যে তেওঁ দুৰ্জয়া নামে এখন নতুন নগৰ প্ৰতিষ্ঠা কৰে।

গোপালৰ (১০৬৫-৯৫) গছতল তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে যে তেওঁ দুহাতেৰে গোড়দেশৰ ৰজা ৰাজ্যপালক পৰাজয় কৰিছিল। (গোড়ৰাজ্য ৰাজ্যপালং অবজিত্য ভুজদ্বয়েন)। তেওঁৰ দিনত উত্তৰ বঙ্গনেকে কামৰূপ ৰাজ্য সম্প্ৰসাৰিত হৈছিল।

তেওঁৰ বৰগাওঁ তামৰ ফলিত দুৰ্জয়া নগৰৰ বৰ্ণনা দিওঁতে সমসাময়িক ৰজাসকলৰ উল্লেখ কৰা হৈছে। “দুৰ্জয়া নগৰৰ দাঁতিভাগ দুৰ্গেৰে আবৃত আছিল, যি দুৰ্গ শক ৰজাকৰ্পী খেলুৱৈ চৰাইৰ বাবে মজবুত পিঞ্জৰা আছিল, গুৰ্জৰ ৰজাৰ জ্বৰৰ কাৰণ আছিল, গোড় ৰাজকৰ্পী অদমনীয় হাতীৰ কুটপাকল বেমাৰ ধৰুপ আছিল, কেৰালাৰ ৰজাকৰ্পী পৰ্বতৰ বাবে শিলাজতু আছিল, বাহিক আৰু তায়িক ৰজাৰ ভয়ৰ কাৰণ আছিল, আৰু দক্ষিণাত্যৰ ৰজাৰ কাৰণে যক্ষ্মাৰোগ স্বৰূপ আছিল।” (শ্লোক ৩৪-৩৬)।

এই বৰ্ণনাৰ সম্পৰ্কে মন্তব্য প্ৰকাশ কৰি হৰ্ণালিয়ে কৈছে যে তেওঁ এই ৰজাসকলৰ সৈতে সঁচাকৈয়ে যুদ্ধত প্ৰবৃত্ত হৈছিল। গুৰ্জৰ ৰজাক তেওঁ পশ্চিম চালুক্য ৰাজ্যৰ ৩য় জয়সিংহ বা ১ম সোমেশ্বৰ বুলি, কেৰালাৰ ৰজাক চোল বংশৰ ৰাজৰাজ বুলি, গোড় ৰজাক মহীপাল বা ন্যায়পাল বুলি, বাহিক আৰু তায়িক ৰজাক সিদ্ধু নদীৰ সিপাৰৰ বাল্মী আৰু তাজিকৰ ৰজা বুলি চিনাক্ত কৰিছে। ইমামবোৰ ৰাজ্যৰ ৰজাৰে সৈতে যে তেওঁ যুদ্ধ কৰিছিল, সেই কথা মানি লোৱা টান। কিন্তু

উত্তৰ বঙ্গ আৰু গৌড় যে তেওঁৰ তলতীয়া আছিল এই বিষয়ে সন্দেহ নাই। ১০৪০ত ৰত্নপালৰ মৃত্যু হয়।

৩। পুৰন্দৰপাল (এওঁ ৰজা হোৱা নাছিল) ধৰ্মপালৰ (১০৯৫-১১২০) খনামুখ তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে, “ৰত্নপালৰ পুৰন্দৰপাল নামে পুতেক এটা জন্মিছিল। তেওঁ জাকজমকতাপ্ৰিয় আৰু ধৰ্মপালনকাৰী আছিল। ভাগ্যৰ পৰিহাসত তেওঁ ৰাজকুমাৰ হৈ থাকোঁতেই ইন্দ্ৰপাল নামৰ পুতেকক এৰি পূৰ্বপুৰুষসকলৰ লগ লাগেগৈ।” (শ্লোক ৬)।

আন হাতে ইন্দ্ৰপালৰ (১০৪০-৬৫) গুৱাহাটী তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে, “তেওঁৰ (ৰত্নপালৰ) পুৰন্দৰপাল নামৰ এজন পুতেক আছিল। তেওঁ বিখ্যাত শাসক আছিল। তেওঁ উদাৰ মনৰ, আমোদপ্ৰিয়, পাৰ্মিক, সৰ্ব-কলাবিশাৰদ, বীৰ আৰু কবি আছিল। তেওঁ খুব চিকাৰ ভাল পাইছিল আৰু ইয়াৰ প্ৰমাণ তেওঁ দিছিল বাঘৰ দৰে বিৰোধী ৰজাবোৰক জন্ম কৰি।” (শ্লোক ১১ আৰু ১২)।

পুতেক ইন্দ্ৰপালে গুৱাকুছি তামৰ ফলিত লিখিছে যে ৰত্নপাল স্বৰ্গী হোৱাত তেওঁৰ নাতিয়েক ইন্দ্ৰপাল সিংহাসনত বহে। সেই একেজন পুতেকেই গুৱাহাটী তামৰ ফলিত লিখিছে যে পুৰন্দৰপাল বিখ্যাত প্ৰশাসক, আৰু বাঘৰ দৰে হিংস্ৰ ৰজাবোৰক জন্ম কৰোঁতা বুলি। ইয়াৰ ৰহস্য কি?

গোপালৰ (১০৬৫-৮৫) গছতল তামৰ ফলিৰ ১৯ সংখ্যক শ্লোকত কোৱা হৈছে, “ইন্দ্ৰৰ দৰে বিক্ৰমী ৰত্নপাল বৃদ্ধ হোৱাত, তেওঁৰ পুতেক (পুৰন্দৰপাল) স্বৰ্গগামী হোৱাত, তেওঁ ৰাজাভাৱ নাতিয়েকক (ইন্দ্ৰপালক) দি পৰমাত্মাক মন-প্ৰাণ সঁপি দিলে।”

ইয়াৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি বাপেকৰ (ৰত্নপালৰ) জীৱন-কালতেই তেওঁ (পুৰন্দৰপালে) শাসনকাৰ্যত বাপেকক সহায় কৰিছিল। ইন্দ্ৰপালৰ গুৱাহাটী তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে যে তেওঁ “জমদগ্নিৰ পুতেকৰ বিক্ৰমেৰে আৰ্জিত প্ৰাজ্য ৰাজ্যৰ ৰাজবংশৰ জীয়াৰী” দুৰ্লভাক বিয়া কৰিছিল। কালিকা পুৰাণৰ মতে মাতৃহত্যা পাপৰ পৰা মুক্ত হ’বলৈ জমদগ্নিৰ পুতেক পৰশুৰামে ব্ৰহ্মাকুণ্ডৰ পাৰ কাটি বোৱাই দিয়ে। তেতিয়াৰ পৰা ব্ৰহ্মাকুণ্ডৰ নাম পৰশুকুণ্ড হয়। পৰশুকুণ্ড অৰুণাচল প্ৰদেশৰ লোহিত জিলাত অৱস্থিত। ইয়াতে প্ৰাজ্য ৰাজ্যখন আছিল যেন লাগে। এই দুৰ্ণিৰ্বাটীয়া অঞ্চলটোৰ ৰাজবংশৰ জীয়াৰীৰে সৈতে বৈবাহিক সম্বন্ধ পতাৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি ৰত্নপালৰ জীৱন-কালতে পুৰন্দৰপাল উত্তৰ-পূব সীমান্ত অঞ্চলৰ প্ৰশাসনৰ দায়িত্বত আছিল।

৪। ইন্দ্ৰপাল (১০৪০-৬৫)

১০৪০ত ৰত্নপালে নাতিয়েক ইন্দ্ৰপালক কামৰূপৰ সিংহাসনত বহুৱায়। ৰজা হৈ তেওঁ পৰমেশ্বৰ পৰম ভট্টাপক মহাৰাজাধিৰাজ উপাধি গ্ৰহণ কৰে। গোপালৰ (১০৬৫-৮৫) গছতল তামৰ ফলিৰ ২১ সংখ্যক শ্লোকত কোৱা হৈছে যে তেওঁ বঙ্গদেশৰ ৰজা শ্ৰীচন্দ্ৰৰ পুতেক কল্যাণচন্দ্ৰক যুদ্ধত পৰাস্ত কৰে। তেওঁ ৰাষ্ট্ৰকূট বজাৰ কন্যা ৰাজ্যদেৱীক বিয়া কৰিছিল। ১০৬৫ত তেওঁৰ মৃত্যু হয়।

৫। গোপাল (১০৬৫-৮৫)

গছতল তামৰ ফলিৰ ২৩-২৪ সংখ্যক শ্লোকত বাপেকে বিয়া কৰোৱা ৰাষ্ট্ৰকূট বংশৰ জীয়ৰী ৰাজ্যদেৱীৰ গৰ্ভত তেওঁৰ জন্ম হৈছিল বুলি লিখি গৈছে। ধৰ্মপালৰ (১০৯৫-১১২০) খনামুখ আৰু শুভক্ষৰপাটক তামৰ ফলিৰ ৮ সংখ্যক শ্লোকমতে তেওঁ দীৰ্ঘবান, গুণবান, বদন্য, উদাৰ, আৰু পুণ্যবান বিদ্বানসকলৰ মাজত শ্ৰেষ্ঠ আছিল। তেওঁৰ পত্নীৰ নাম আছিল নয়না। ১০৮৫ত তেওঁৰ মৃত্যু হয়।

৬। হৰ্ষপাল (১০৬৫-১৫)

হৰ্ষপালৰ বান্ধিজ্ঞতে লক্ষ্মী আৰু সদায়তীৰ মিলন ঘটিছিল বুলি ধৰ্মপালৰ খনামুখ আৰু শুভক্ষৰপাটক তামৰ ফলিৰ ৯ সংখ্যক শ্লোকত পোৱা যায়। ইয়াৰ প্ৰমাণ পোৱা যায় সংস্কৃত ভাষাৰ প্ৰথম সুভাষিত সংগ্ৰহ কৰীন্দ্ৰ ৰচন সমুচ্চয়ত। অজ্ঞাত সংগ্ৰাহকে সংগ্ৰহ এই গ্ৰন্থখনত হৰ্ষপালে ৰচনা কৰা কেইবাটাও সুভাষিত শ্লোক সন্নিবিষ্ট হৈছে। এওঁৰ পত্নীৰ নাম আছিল বজ্জা।

পূব বঙ্গৰ ৰজা জাতবৰ্মনে হৰ্ষপালৰ ৰাণ্য আক্ৰমণ কৰে। এই যুদ্ধত খুব সম্ভৱ পুণ্ড্ৰবৰ্ধন অঞ্চল জাতবৰ্মনৰ হাতলৈ যায়। বিলুপ্তৰ মতে চালুক্য ৰজা যষ্ঠ বিক্ৰমাদিত্যই (১০৭৬-১১২৬) মগধ, অঙ্গ, গৌড় আৰু কামৰূপ জয় কৰিছিল। ভাৰত বুৰঞ্জীত কেইবাজনো বিক্ৰমাদিত্যৰ নাম পোৱা যায়। প্ৰত্যেকজন বিক্ৰমাদিত্যই কামৰূপ জয় কৰা বুলি কোৱা হয়। এওঁৰ দিনত কামৰূপৰ আকাৰ সৰু আছিল। উত্তৰ বঙ্গৰ ৰাজ্যবোৰ কামৰূপৰ পৰা আঁতৰি গৈছিল। উত্তৰ বঙ্গৰ ৰাজ্যকেইখনতে বিক্ৰমাদিত্যৰ সৈতে হৰ্ষপালৰ যুদ্ধ হ'ব পাৰে আৰু সেই যুদ্ধত হৰ্ষপালৰ পৰাজয়ো হ'ব পাৰে। উত্তৰ বঙ্গৰ ৰাজ্যকেইখন আনৰ হাতলৈ গ'লেও কামৰূপ ৰাজ্যৰ কোনো ক্ষতি হোৱা নাছিল। ১০৯৫ত তেওঁৰ মৃত্যু হয়।

৭। ধৰ্মপাল (১০৯৫-১১২০)

হৰ্ষপালৰ পুত্ৰ ধৰ্মপালৰ খনামুখ আৰু শুভক্ষপাটক তামৰ ফলিত কোৱা

হৈছে, “তেওঁ সাগৰেৰে বেৰা পৃথিৱীৰ অধিপতি হৈছিল”। ইয়াৰ অৰ্থ পূব বঙ্গৰ ৰজা জাতবৰ্মনে বাপেক হৰ্ষপালক পৰাজয় কৰি কাটি লোৱা পুণ্ড্ৰবৰ্ধন পুনৰ জয় কৰি লৈয়েই তেওঁ ক্ষান্ত হোৱা নাছিল, জাতবৰ্মনৰ নিজ ৰাজ্য পূব বঙ্গকো তেওঁৰ ৰাজ্যৰ অন্তৰ্ভুক্ত কৰিছিল।

তেওঁৰ শুভক্ষৰপাটক তামৰ ফলিত দিঞ্জিনা বিষয়ৰ অন্তৰ্গত কঞ্জিয়া অঞ্চলটো শাৱস্তিৰ ক্ৰোশঞ্জ ব্ৰাহ্মণক দান কৰে বুলি পোৱা যায়। শাৱস্তি আৰু কঞ্জিয়া দিঞ্জিনা বিষয়ৰ অন্তৰ্গত অঞ্চল। দিঞ্জিনা বিষয় বৰ্তমান বাংলাদেশৰ দিনাজপুৰ জিলা বুলি চিনাক্ত কৰা হৈছে। এই ঠাই তেতিয়া পুণ্ড্ৰবৰ্ধন ৰাজ্যৰ অন্তৰ্গত আছিল।

ধৰ্মপালৰ পুষ্পভদ্রা তামৰ ফলিৰ ২০ সংখ্যক শ্লোকত কোৱা হৈছে যে তেওঁ কামৰূপ নগৰত বাস কৰিছিল। ইয়াৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি তেওঁ এই নামৰ এখন নগৰ নিৰ্মাণ কৰিছিল। ড° প্ৰতাপ চন্দ্ৰ চৌধুৰীৰ মতে এই নগৰখন উত্তৰ গুৱাহাটীত নিৰ্মাণ কৰা হৈছিল।

পুষ্পভদ্রা তামৰ ফলিত ধৰ্মপালক পালবংশৰ পদুমবোৰৰ মাজত সূৰ্য আৰু কবি চক্ৰৱৰ্তীৰ চূড়ামণি বুলি কোৱা হৈছে। পুষ্পভদ্রা তামৰ ফলিৰ প্ৰথম আঠটা শ্লোক ধৰ্মপালে নিজে ৰচনা কৰিছিল। ১২০৫ত শ্ৰীধৰ দাসে সঙ্কলন কৰা *সদুক্তি কৰ্ণামৃত*ত ধৰ্মপালে ৰচনা কৰা ১০ টা সুভাষিত সন্নিৱিষ্ট হৈছে। ১১২০ত এওঁৰ মৃত্যু হয়।

৮। জয়পাল (১১২০-৩৮)

ধৰ্মপালৰ পাচত পালবংশীয় কোনো ৰজাৰ তামৰ ফলি উদ্ধাৰ নোহোৱাত তেওঁৰ উত্তৰাধিকাৰী কোন আছিল জনা নাযায়। নগেন্দ্ৰ নাথ বসুৱে *Social History of Kamarupa*-ত বঙ্গদেশৰ ৰংপুৰ অঞ্চলত প্ৰচলিত কিস্বদন্তি এটা মানি লিখিছে যে ধৰ্মপালৰ পাচত তেওঁৰ পুত্ৰ ভৱচন্দ্ৰ ৰজা হয় আৰু গবচন্দ্ৰ মন্ত্ৰী হয়। ধৰ্মপালৰ ভৱচন্দ্ৰ বুলি পুতেক এটা থকাৰ কোনো প্ৰমাণ পাবলৈ নাই।

বঙ্গদেশৰ বগুৰা জিলাৰ শিলিমপুৰৰ অমৰনাথ মন্দিৰৰ শিল এচটাত খোদিত প্ৰহাসৰ শিলালিপিত কামৰূপৰ ৰজা জয়পালে প্ৰহাসক ৯০০ সোণৰ মুদ্ৰাৰ তুলাপুৰুষ দান দিছিল বুলি লিখা আছে। আকৌ *হান্দোণ পৰিণিষ্ট প্ৰকাশ*ত পণ্ডিতসকলৰ মুখ্য উমাপতিক জয়পাল ৰজাই মহাশ্ৰাদ্ধ দান কৰিছিল বুলি উল্লেখ আছে। উমাপতি দ্বাদশ শতিকাৰ আদি ভাগত জীয়াই আছিল। শিলিমপুৰ শিলালিপিৰ

সম্পাদক আৰ. জি. বসাকে শিলালিপিৰ জয়পাল আৰু ছান্দোগ পৰিশিষ্ট প্ৰকাশৰ জয়পালক একেজন কামৰূপৰ ৰজা বুলি চিনাক্ত কৰে। পি. ভট্টাচাৰ্যই জয়পালক ধৰ্মপালৰ পুতেক বা নাতিয়েক বুলি সিদ্ধান্ত কৰে। নামটোৰ পাচত থকা “পাল” শব্দাংশৰ পৰা আৰু তেওঁ মহাশ্ৰাদ্ধ দান কৰা উমাপতিৰ সময়ৰ পৰা তেওঁ ১২শ শতিকাৰ আদি ভাগৰ কামৰূপৰ ৰজা বুলি নিশ্চিত হ’ব পাৰি। কিন্তু তেওঁক পাল বংশীয় ৰজাসকলৰ তালিকাৰ আগৰ অংশত সুমোবাবৰ ঠাই নাই। ব্ৰহ্মপালৰ পুতেক ৰত্নপাল, তেওঁৰ নাতিয়েক ইন্দ্ৰপাল, তেওঁৰ পুতেক গোপাল, তেওঁৰ পুতেক হৰ্ষপাল, আৰু তেওঁৰ পাচত পুতেক ধৰ্মপাল ৰজা হয়। সেই কাৰণে তেওঁক ধৰ্মপালৰ পাচত ধৰাৰ বাহিৰে অন্য উপায় নাই, আৰু বসাকেও তাকে কৰিছে।

বৈদ্যদেৱৰ কামৌলি তামৰ ফলি ১১৪২ খ্ৰিঃত লিখোৱা হৈছে। এই ফলিমতে তেওঁ প্ৰাগজ্যোতিষ ৰাজ্যত ভূমিদান কৰিছে। ইয়াৰ পৰা বুজা যায়— তেওঁ তেতিয়া কামৰূপৰ ৰজা। ফলিখন ৰজা হোৱা চতুৰ্থ বছৰত লিখাইছে। এতেকে তেওঁ ১১৩৮ত কামৰূপৰ সিংহাসনত বহিছে। সেই ফালৰ পৰা জয়পালৰ অন্ত্য সময় ১১৩৮ হ’ব লাগিব। ১১২০ত ধৰ্মপালৰ মৃত্যু হৈছে যেতিয়া তেওঁৰ পুতেক বুলি সিদ্ধান্ত কৰা জয়পাল ৰজা ১১২০ত কামৰূপৰ ৰজা হ’বই লাগিব।

জয়পালৰ দিনত যে কামৰূপ ৰাজ্য উত্তৰ বঙ্গলৈকে বিস্তৃত আছিল, বগুৰা জিলাৰ শিলিমপুৰত প্ৰহাস নামৰ ব্ৰাহ্মণক ৯০০ সোণৰ মুদ্ৰা দান কৰাটোৱেই প্ৰমাণ। তেওঁৰ ৰাজত্বৰ শেষৰ ফালে গৌড়ৰ ৰজা ৰামপালৰ সেনাপতি মায়নে কামৰূপ ৰাজ্য আক্ৰমণ কৰে। যুদ্ধত জয়পাল হাৰে আৰু তেওঁৰ হাতৰ পৰা পুণ্ড্ৰবৰ্ধন যায়। মায়নে তিঙ্গাদেৱক তলতীয়া ৰজা পাতে। তিঙ্গাদেৱে নিজকে স্বাধীন ৰজা বুলি ঘোষণা কৰাত ৰামপালৰ পুতেক কুমাৰপালে তেওঁক দমন কৰিবলৈ বৈদ্যদেৱক পঠায়। বৈদ্যদেৱে ভায়েক বুদ্ধদেৱৰ সৈতে যুদ্ধত তিঙ্গাদেৱক বধ কৰে আৰু কামৰূপ ৰাজ্য অধিকাৰ কৰে। ১১৩৮ত জয়পালৰ শাসনৰ অন্ত পৰে আৰু পালবংশৰ পতন হয়।

বিজয়সেনৰ দেওপাৰা তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে, “তেওঁ প্ৰচণ্ড ৰেগেৰে গৌড়ৰ ৰজা, কামৰূপৰ যুৱৰাজ, আৰু কলিঙ্গ জয় কৰিলে।” আকৌ লক্ষণসেনৰ মাধাই নগৰ তামৰ ফলিত কোৱা হৈছে, “তেওঁ কামৰূপ তলতীয়া কৰিলে।” ৰমেশ চন্দ্ৰ মজুমদাৰৰ মতে বিজয়সেনে ১১১৯-৫৯ লৈ ৰাজত্ব কৰিছিল। ১১৪২ৰ আগত তেওঁৰ আক্ৰমণ হোৱা বুলি ক’ব নোৱাৰি। কাৰণ, তেতিয়া বৈদ্যদেৱে কামৰূপ

দখল কৰি আছে। মজুমদাৰৰ মতে লক্ষ্মণসেনৰ ৰাজত্ব কাল ১১৭৫-১২০০। চমুকৈ ক'বলৈ গ'লে, বিজয়সেনে ১১৪২-৪৫ৰ ভিতৰত বৈদ্যদেৱৰ সময়ত কামৰূপ আক্ৰমণ কৰিছিল আৰু লক্ষ্মণসেনে ১২শ শতিকাৰ শেষৰ ফালে কামৰূপ আক্ৰমণ কৰিছিল। কিন্তু এই আক্ৰমণৰ স্থায়ী ফল কি হ'ল, একো জনা নাযায়।

(ঘ) বৈদ্যদেৱ আৰু অন্যান্য ৰজাসকল (১১৩৮-১২২৮)

পালবংশ পতনৰ লগে লগে কামৰূপৰ ৰাজনৈতিক অস্থিৰতা আৰম্ভ হয়। ৰামপালৰ সেনাপতি মায়নে জয়পালক হৰুৱাই তিঙ্গ্যদেৱক তলতীয়া ৰজা পাতে। তেওঁ বিদ্ৰোহী হোৱাত দমন কৰিবলৈ বৈদ্যদেৱ আহি কামৰূপৰ ৰজা হয়। বিজয়সেনৰ হাতত বৈদ্যদেৱৰ মৃত্যু হোৱাত ৰায়াৰিদেৱ কামৰূপৰ ৰজা হয়। এওঁৰ বংশৰ বৰ্দ্ধভদেৱ লক্ষ্মণসেনৰ তলতীয়া ৰজা হয়। বখ্তিয়াৰ খাল্জিৰ হাতত লক্ষ্মণসেন পৰাজিত হোৱাত বৰ্দ্ধভদেৱে স্বাধীনতা ঘোষণা কৰে। ইয়াৰ পাচত পৃথুপাল নামৰ এজন কামৰূপৰ ৰজা হয়। নাচিকদিদৰ হাতত পৃথুৰ মৃত্যু হয়।

১। বৈদ্যদেৱ (১১৩৮-)

তিঙ্গ্যদেৱক দমন কৰিবলৈ ৰামপালৰ পুতেক কুমাৰপালে পঠোৱা বৈদ্যদেৱে পুণ্ডুৱৰ্ধন জয় কৰাৰ পাচত ১১৩৮ত কামৰূপ অধিকাৰ কৰে। তেওঁ ৰায়াৰিদেৱক তেজপুৰ আৰু ইয়াৰ দাঁতি-কাষৰীয়া অঞ্চলৰ শাসনকৰ্তা নিযুক্ত কৰে। বিজয়সেনে ১১৪২-৪৫ৰ ভিতৰত কামৰূপ আক্ৰমণ কৰাৰ সময়ত বৈদ্যদেৱক সহায় কৰিছিল। বৰ্দ্ধভদেৱৰ তামৰ ফলিত এই কথাকে ৰায়াৰিদেৱে বঙ্গৰ ৰজাক পৰাজয় কৰিছিল বুলি লিখিছে। ১১৪৫ত বিজয়সেনৰ হাতত বৈদ্যদেৱৰ মৃত্যু হয়।

২-৩। ৰায়াৰিদেৱ আৰু উদয়কৰ্ণ (১১৪৫-৭৫)

বিজয়সেনৰ হাতত বৈদ্যদেৱৰ মৃত্যু হোৱাৰ পিচত ৰায়াৰিদেৱে ১১৪৫ত কামৰূপৰ ৰজা বুলি ঘোষণা কৰে। এওঁ বিজয়সেনক পৰাস্ত কৰে। ৰায়াৰিদেৱৰ পাচত উদয়কৰ্ণ ৰজা হয়। ১১৭৫ত উদয়কৰ্ণৰ মৃত্যু হোৱা বুলি ধৰা হয়।

৪। বৰ্দ্ধভদেৱ (১১৭৫-)

উদয়কৰ্ণৰ মৃত্যুৰ পিচত ১১৭৫ত বৰ্দ্ধভদেৱ কামৰূপৰ সিংহাসনত উঠে। এওঁৰ সময়তে লক্ষ্মণসেনে কামৰূপ আক্ৰমণ কৰে। এই আক্ৰমণত বৰ্দ্ধভদেৱ পৰাজিত হয় আৰু লক্ষ্মণসেনৰ তলতীয়া ৰজা হয় বুলি তেওঁৰ মাধাই নগৰ তামৰ

ফলিত পোৱা যায়। বখ্তিয়াৰ খাল্জিৰ পুতেক ইখ্তিয়াৰ-উদ্দিন মহম্মদে ১১৯৩ বা ১১৯৮ত লক্ষ্মণসেনক পৰাজয় কৰি তেওঁ নদীয়াৰ পৰা খেদাই পঠায়। খুব সম্ভৱ তেতিয়া বজ্জভদেৱে নিজকে স্বাধীন ৰজা বুলি ঘোষণা কৰে। বজ্জভদেৱৰ ৰাজত্ব কাল কেতিয়া অন্ত পৰে, এই বিষয়ে ওখাৰ অভাৱ।

৫। পৃথুপাল (১২২৮)

বজ্জভদেৱৰ পাচত কামৰূপৰ ৰজা কোন হয় এই বিষয়ে বিতং তথ্য পোৱা নাযায়। উত্তৰ গুৱাহাটীত থকা কানাই বৰশী শিলালিপিৰ পৰা জনা যায়— ১১২৭ শকাব্দৰ (১২০৬ খ্ৰিঃ) চ'ত মাহৰ ১৩ তাৰিখে তুৰ্কীসকল কামৰূপলৈ আহি ক্ষয় পালে। মিন্‌হাজৰ তবাকৎ-ই-নাচৰি অনুসৰি বখ্তিয়াৰ খাল্জিয়ে কামৰূপ আক্ৰমণ কৰিবলৈ আহি ইয়াৰ ৰজা বৰ্ত্ত বা ব্ৰিত্তৰ হাতত পৰাস্ত হয়। ইয়াৰ পৰা সিদ্ধান্ত কৰিব পাৰি — বিহাৰ, উৰিষ্যা আৰু বঙ্গ জয় কৰি অহা বখ্তিয়াৰ খাল্জিক পৰাজয় কৰিব পৰাকৈ বৰ্ত্ত বা ব্ৰিত্ত বা পৃথুৱে ১২০৬ খ্ৰিঃত যুদ্ধৰ প্ৰস্তুতি কৰিছিল। ১২০২ খ্ৰিঃত লক্ষ্মণাৱতী বা নদীয়া খাল্জিয়ে আক্ৰমণ কৰাৰ সময়তেই পৃথুৱে যা-যোগাৰ কৰিবলৈ লৈছিল যেন লাগে। ইলতুৎমিচৰ পুতেক নাচিকদ্দিনৰ হাতত ১২২৮ত পৃথুৱ মৃত্যু হয়। উত্তৰ বঙ্গত পৃথুৰ সোণৰ মুদ্ৰা এটা আৱিষ্কাৰ হৈছে।

বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকা

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- ১। Dr. N.N. Acharyya, *The History of Medieval Assam*, 1966
- ২। সূৰ্যকান্ত বনিকৰ, *চুতীয়া জাতিৰ ইতিহাস আৰু লোক-সংস্কৃতি*, ১৯৯১
- ৩। Edward Gait, *A History of Assam*, 1967
- ৪। বাচম্পতি গৈৰোলা, *সংস্কৃত সাহিত্য কা সংস্কৃতি ইতিহাস*, ১৯৬৭
- ৫। Dr. P.C. Choudhury, *The History of Civilisation of the People of Assam to the Twelfth Century AD*, 1966
- ৬। " " *Assam-Bengal Relations*, 1988

৩৬ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

- ৭। Dr. S K Chatterji, *The Place of Assam in the History and Civilisation of India*, 1991
- ৮। Debiprasad Chattopadhyaya (ed), *Taranath's History of Buddhism in India*, 1990
- ৯। ড° নিশিপদ চৌধুৰী, *হিউৱেন-চাং*, ১৯৭০
- ১০। Dr Hemendranath Dutta, 'A Report on Archaeological Excavation Conducted in the State of Assam During the Year 1997-98', *Journal of the Assam Research Society* Vol XXXIV, No 1&2, 1995
- ১১। ৰজনীকান্ত দেৱশৰ্মা (সম্পা), *কৌটিলীয় অৰ্থশাস্ত্ৰ*, ১৯৭৭
- ১২। ড° লক্ষ্মী দেৱী, *অসম বুৰঞ্জী*, ১৯৬০
- ১৩। মোহনদেৱ পন্ত (সম্পা), *বাণভট্টপ্ৰণীতং হৰ্ষচৰিতম্*, ১৯৮৪
- ১৪। K L Barua, *Early History of Kamarupa*, 1966
- ১৫। গুণাভিৰাম বৰুৱা, *অসম বুৰঞ্জী*, ১৯৭২
- ১৬। Dr. Birinchi Kumar Barua, *A Cultural History of Assam*, 1969
- ১৭। B. Barua, "Bhaskarvarman and Wang Huen-Tse Mission", *Assam Tribune*, 3 2. 1963
- ১৮। Samuel Beal [tr.], *The Life of Huen-Tsiang of Shaman Hwi Li*, 1990
- ১৯। " " *Si-Yu-Ki or Buddhist Records of the Western World by Huen-Tsiang written in 629 AD*, 1995
- ২০। কালীমোহন ভট্টাচাৰ্য (সম্পা), *যোগিনীতন্ত্ৰম্*, ১৩৩৩ বঙ্গাব্দ = ১৯২৬
- ২১। পদ্মনাথ ভট্টাচাৰ্য (সম্পা), *কামৰূপশাসনাবলী*, ১৩৩৮ বঙ্গাব্দ = ১৯৩১
- ২২। Dr Suryya Kumar Bhuyan, *Studies in the Literature of Assam*, 1956

- ২৩। Dr R C Majumdar, Dr H C Raychaudhuri, and Dr Kalikinkar Dutta, *An Advanced History of India*, 1967
- ২৪। কন্‌হৈয়ালাল মিশ্র (সম্পা), *যোগিনীতন্ত্ৰ*, ১৮৭৮ শক = ১৯৫৬
- ২৫। শিবৰাম শৰ্মা বাসিষ্ঠ (সম্পা), *শ্ৰীমদ্বাশ্বকিৰামায়ণম্*, ১৯৭৭
- ২৬। Dr Mukunda Madhava Sharma (ed), *Inscriptions of Ancient Assam*, 1978
- ২৭। Dr Dimbeswar Sarma (ed), *Kāmarupas' Sūsamāvat*, 1981
- ২৮। বিশ্বনাৰায়ণ শাস্ত্ৰী (সম্পা), *কালিকাপুৰাণম্*, ১৯৭২
- ২৯। জগদীশ্বৰানন্দ সৰস্বতী (সম্পা), *মহাভাৰতম্*, ১৯৯১
- ৩০। Dr Ichhimuddin Sarkar, *Aspects of Historical Geography of Prāgyotyāsa-Kāmarūpa*, 1992
- ৩১। Dr. D C Sircar (ed), *Some Epigraphic Records of the Medieval Period Eastern India*, 1979

অসমৰ ৰাজনৈতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস

(১২২৮ ৰ পৰা ১৪৭০ লৈ)

(খ)

১২২৮ ৰ পাচত কামৰূপ ৰাজ্য ভাগি ছখন সৰু সৰু ৰাজ্য সৃষ্টি হয়। সেই কেইখন ৰাজ্য হ'ল (১) কমতা ৰাজ্য (১২২৮-১৫১৫), (২) কোঁচ ৰাজ্য (১৫১৫-৮১), (৩) ভূঞাসকলৰ ৰাজ্য (১৪৯৮-১৫১৫), (৪) কছাৰী ৰাজ্য (১২২৮-১৮৩২), (৫) চুতীয়া ৰাজ্য (১১৮৯-১৫২৩) আৰু (৬) আহোম ৰাজ্য (১২২৮-১৮২৪)। ইয়াৰ ভিতৰত কোঁচ ৰাজ্য আৰু ভূঞাসকলৰ ৰাজ্য ১৪৭০ৰ পাচত স্থাপন হোৱা কাৰণে এই আলোচনাত ৰাজ্য দুখনক স্থান দিয়া নহল।

আমাৰ আলোচনাত (ক) কমতা ৰাজ্য (১২২৮-১৫১৫), (খ) কছাৰী ৰাজ্য (১২২৮-১৪৭০) (গ) চুতীয়া ৰাজ্য (১১৮৯-১৫২৩) আৰু (ঘ) আহোম ৰাজ্যৰ (১২২৮-১৪২৮) বিষয়েহে আলোচনা কৰা হ'ল। আলোচনাৰ আগেয়ে এই ৰাজ্য চাৰিখনৰ চাৰি সীমাৰ এটা আভাস দিয়াৰ প্ৰয়োজন বোধ কৰা হৈছে।

কমতা ৰাজ্যৰ পূব সীমা আছিল বৰনদী আৰু পশ্চিম সীমা আছিল বাংলাদেশৰ দিনাজপুৰ জিলাৰ কৰতোয়া নদী। ইয়াৰ ভিতৰত বৰ্তমান অসমৰ কামৰূপ, নলবাৰী, বৰপেটা, গোৱালপাৰা, কোকৰাঝাৰ, ধুবুৰী আৰু বাংলাদেশৰ ৰংপুৰ জিলা পৰিছিল। দিনাজপুৰ জিলাৰ সৰু অংশ এটাও ইয়াৰ ভিতৰত আছিল।

দিখৌ নদীৰ পশ্চিমত আৰু কলং নদীৰ পূবত কছাৰী ৰাজ্য আছিল। বৰ্তমান অসমৰ শিৱসাগৰ জিলাৰ দিখৌৰ পশ্চিমৰ পৰা যোৰহাট, গোলাঘাট, উত্তৰ কাছাৰ জিলাৰ কিছু অংশ আৰু নগাওঁ জিলাৰ কলং নদীৰ দক্ষিণৰ অঞ্চলটো এই ৰাজ্যৰ ভিতৰত পৰিছিল।

চুতীয়া ৰাজ্যৰ পূব ফালে বৰ্তমান অৰুণাচলৰ সোৱণশিৰী, চিয়াং আৰু লোহিত জিলাৰ কিছু অংশ, অসমৰ ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ দক্ষিণে বুঢ়ীদিহিং নৈৰ পূব অংশলৈকে আছিল। ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ উত্তৰ পাৰে বৰনদীলৈকে আছিল। কাৰণ চুতীয়া ৰজা ৰত্নধ্বজপালে (১২১৩-৬৮) কমতাৰ ৰজা সঙ্ঘাৰ (১১২৮-৬০) জীয়েকক পুতেক

বিজয়ধ্বজপাললৈ দিব নোখোজাত বৰনদীলৈকে আলবাট বজাই যুদ্ধ কৰিবলৈ গৈছিল। কমতাৰ ৰজাই জীয়েকক দি মিত্ৰতা কৰে। ১২২৯ত বঙ্গৰ শাসনকৰ্তা নাচিকদিনৰ মৃত্যুৰ পাচত ভূঞা যোদ্ধাৰ সহায়ত বঙ্গদেশৰ পৰা মুচলমানসকলক খেদি পঠিয়ায়। গৌড় ৰাজ্যৰ পূব অংশ জয় কৰি “গৌড়েস্বৰ” উপাধি লয়। পিচত ভূঞাসকল প্রতাপী হৈ উঠাৰ পিচত চুতীয়া ৰাজ্যৰ পশ্চিম সীমা সোৱণশিৰী হৈ পৰে। ৰত্নধ্বজ পালৰ দিনত চুতীয়া ৰাজ্যৰ ভিতৰত বুঢ়ীদিহিং নদীৰ পূব অংশ ডিব্ৰুগড়, তিনিচুকীয়া, লক্ষীমপুৰ, শোণিতপুৰ, দৰং আৰু ধেমাজি জিলা পৰিছিল। পিচলৈ ভূঞাসকল প্রতাপী হৈ উঠাত সোৱণশিৰী নদী চুতীয়া ৰাজ্যৰ পশ্চিম সীমা হৈ ৰয়গৈ।

সেই সময়ত আহোম ৰাজ্যৰ সীমা পূবে বুঢ়ীদিহিং আৰু পশ্চিমে দিখৌ নৈ আছিল। বৰ্তমান অসমৰ ডিব্ৰুগড় আৰু তিনিচুকীয়া জিলাৰ বুঢ়ীদিহিংৰ পশ্চিম অংশ, আৰু শিৱসাগৰ জিলাৰ দিখৌৰ পূব অংশ, আহোম ৰাজ্যৰ ভিতৰত আছিল। আহোম ৰজা চ্যুতেওফাই (১২৬৮-৮১) দিখৌ নৈৰ সূঁত নামদাঙলৈকে ৰাজ্য বঢ়াইছিল।

— সম্পাদক

(ক) কমতা ৰজাসকল (১২২৮ ৰ পৰা ১৫১৫ লৈ)

দ্বাদশ শতিকাৰ মাজ ভাগত পালবংশৰ পতন হোৱাৰ পাছৰে পৰা কামৰূপৰ ইতিহাস পাবলৈ হ'লে মুচলমান আৰু স্থানীয় পণ্ডিতসকলে লিখা পুথিত ছেগাচোৰোকাকৈ উল্লেখ থকা বিবৰণিৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰিব লাগে।

তবাকৎ-ই-নাচিকিৰ মতে ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ আগ ভাগত কামৰূপত পৃথু (আঃ ১১১৫-১২২৮খ্ৰিঃ) নামেৰে এজন ৰজাই ৰাজত্ব কৰিছিল। এই পৃথুৱেই ১২০৬ খ্ৰিঃত কামৰূপলৈ অহা বখতিয়াৰ খালজিৰ সৈন্যবাহিনীক ধবংস কৰিছিল। ১২২৬ খ্ৰিঃত এওঁৰ দিনতে বঙ্গৰ ৰজা গিয়াচুদ্দিনে কামৰূপ আক্ৰমণ কৰে। কিন্তু তেওঁ পৃথুৰ হাতত নিহত হয়। ইয়াৰ দুবছৰৰ পাছত ১২২৮ খ্ৰিঃত দিল্লীৰ চুলতান ইলতুতমিচৰ পুতেক নাচিকদিনৰ হাতত পৃথুৰ মৃত্যু হয়।

পৃথুৰ পাচৰ দুজন ৰজাৰ বিষয়ে বিশেষ জনা নাযায়। তাৰ পাচৰ ৰজাজনৰ নাম আছিল সজ্জা (আঃ ১২৫০-১২৭০ খ্ৰিঃ)। তেওঁৰ দিনত ১২৫৭

খ্ৰিঃত বঙ্গৰ শাসনকৰ্তা টুখিল খাঁ মালিক উজবেকে কামৰূপ আক্ৰমণ কৰে। টুখিল খাঁ সন্ধ্যাৰ হাতত পৰাস্ত হ'ব লগাত পৰে। এই আক্ৰমণৰ কিছু দিনৰ পাচতে, আনুমানিক ১২৬০ খ্ৰিঃত, সন্ধ্যাই ৰাজধানী কামৰূপ নগৰৰ পৰা পশ্চিম ফালে কমতাপুৰলৈ তুলি নিয়ে। তেতিয়াৰ পৰা কামৰূপ ৰাজ্যৰ নাম হয় “কমতা” বা “কামৰূপ-কমতা” আৰু কমতাৰ ৰজাই “কমতেশ্বৰ” উপাধি ধাৰণ কৰে। কনকলাল বৰুৱাৰ মতে কছাৰীৰ শক্তি বাঢ়ি অহাত কামৰূপৰ ৰজাসকলে গুৱাহাটীৰ পৰা তেওঁলোকৰ ৰাজধানী দূৰৱৰ্তী কমতাপুৰলৈ আঁতৰাই নিছিল। ৰামচৰণ ঠাকুৰৰ *গুৰুচৰিত্ৰ* পুথিৰ মতে সন্ধ্যাই গৌড়েশ্বৰ উপাধি লৈছিল।

সন্ধ্যাৰ পাচত আনুমানিক ১৩০৪ খ্ৰিঃ লৈকে যথাক্ৰমে পুতেক সিদ্ধুৰায় আৰু তেওঁৰ পুত্ৰ ৰূপ তাৰ পাচত সিংহধ্বজ কমতাৰ ৰজা হয়। প্ৰতাপধ্বজ নামৰ এজন কায়স্থ লোক সিংহধ্বজৰ মন্ত্ৰী আছিল। এওঁ ৰজাক হত্যা কৰি নিজে কমতাপুৰৰ সিংহাসনত বহে। এওঁৰ ৰাজত্ব কালত (আ : ১৩০৫-১৩২৫ খ্ৰিঃ) আহোম ৰজা চ্যু-খাম্-ফাৰ লগত এখন যুদ্ধ হয়। যুদ্ধ দীঘলীয়া হোৱাত আৰু বলে নোৱাৰি প্ৰতাপধ্বজে সন্ধি কৰি জীয়েক ৰাজনীক চ্যু-খাম্-ফালৈ বিয়া দি বশ্যতা স্বীকাৰ কৰে।

প্ৰতাপধ্বজৰ মৃত্যুৰ পাচত ধৰ্মনাৰায়ণ নামৰ জনৈক লোকে আনুমানিক ১৩২৫ খ্ৰিঃত বলেৰে কমতাপুৰৰ সিংহাসন দখল কৰে। ধৰ্মনাৰায়ণৰ প্ৰকৃত পৰিচয় সম্বন্ধে পণ্ডিতসকল এতিয়াও একমত হ'ব পৰা নাই। কোনোৰ মতে এওঁ প্ৰতাপধ্বজৰ ভতিজাক আৰু কোনোৰ মতে আকৌ এওঁ বৈদ্যদেৱৰ বংশধৰ। সিংহাসন দখল কৰিলেও কমতাপুৰত বেছি দিন শাস্তিৰে ৰাজত্ব কৰিব নোৱাৰি সিংহাসন নিৰাপদ কৰিবলৈ তেওঁ কমতাপুৰৰ পৰা ৰাজধানী তুলি নি ডিমলা (বৰ্তমান ৰংপুৰ জিলাত) নামে ঠাইত পাতে। এই সুযোগতে প্ৰতাপধ্বজৰ পুতেক দুৰ্লভ নাৰায়ণে (আ : ১৩৩০-১৩৫৩ খ্ৰিঃ) কমতা ৰাজ্যৰ উত্তৰ ভাগ ধৰ্মনাৰায়ণৰ পৰা কাঢ়ি নি এখন বেলেগ ৰাজ্য পাতে। ইয়াৰ ফলত ধৰ্মনাৰায়ণ আৰু দুৰ্লভ নাৰায়ণ এক দীঘলীয়া যুদ্ধত অৱতীৰ্ণ হয়। অবশেষত দুয়োজনৰ মাজত ৰাজ্যখন ভাগ হৈ যুদ্ধৰ অৱসান ঘটে। কমতাপুৰৰ সৈতে ৰাজ্যৰ উত্তৰ আৰু পূব অংশ দুৰ্লভনাৰায়ণ আৰু বৰ্তমানৰ ৰংপুৰ আৰু মৈমনচিং জিলাকে ধৰি পশ্চিম অংশ ধৰ্মনাৰায়ণৰ ভাগত পৰে। কমতাপুৰৰ ৰজাই “কমতেশ্বৰ” আৰু ধৰ্মনাৰায়ণে “গৌড়েশ্বৰ” উপাধি ধাৰণ কৰে। সেই সময়তে সম্ভৱতঃ দুৰ্লভ নাৰায়ণে গৌড়েশ্বৰৰ পৰা উপহাৰ স্বৰূপে

চণ্ডীবৰ প্ৰমুখ্যে ৭ঘৰ কায়স্থ আৰু ৭ঘৰ কনৌজীয়া ব্ৰাহ্মণ উপহাৰ স্বৰূপে লাভ কৰে। তেওঁলোকৰ ভিতৰত চণ্ডীবৰ পণ্ডিত আছিল বাবে দুৰ্লভনাৰায়ণে তেওঁক শিৰোমণি ভূঞা পাতিছিল। এওঁৰ বংশতে মহাপুৰুষ শঙ্কৰদেৱৰ জন্ম হৈছিল। সম্ভৱতঃ দুৰ্লভনাৰায়ণৰ দিনতে ৰাজনীৰ পুতেক ত্যাও-পুলায়ে আহোম ৰজাৰ বিৰুদ্ধে ষড়যন্ত্ৰত ব্যৰ্থ হৈ কমতা ৰাজ্যলৈ পলাই আহে। কমতেশ্বৰে এই সুযোগ গ্ৰহণ কৰি ত্যাও-পুলাইৰ সৈতে সৈন্য-সামন্ত লৈ চাৰিওলৈকে আগ বাঢ়ি আহে। অৱশেষত বলে নোৱাৰিব যেন দেখি যুদ্ধ নকৰাকৈয়ে দুৰ্লভনাৰায়ণ উভতি যায়।

দুৰ্লভনাৰায়ণ কমতাৰ এজন প্ৰসিদ্ধ ৰজা আছিল। তেওঁৰ ৰাজত্ব কালত হেম সৰস্বতী, হৰিহৰ বিপ্ৰ আদি কৰি কেইবাজনো বিখ্যাত পণ্ডিতে কেইবাখনো বহুমূলীয়া পুথি লিখে। এই পুথিবোৰত তেওঁলোকে দুৰ্লভনাৰায়ণৰ বৰ গুণানুকীৰ্তন কৰিছে।

দুৰ্লভনাৰায়ণৰ পাচত তেওঁৰ পুতেক ইন্দ্ৰনাৰায়ণ (আ : ১৩৫৩-১৩৬৫) ৰজা হয়। কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ মতে এওঁ সাত্বিক বৈষ্ণৱ আছিল। এওঁৰ ৰাজত্বৰ বিষয়ে একো জনা নাযায়। অনুমানিক ১৩৬৫ খ্ৰিঃত আৰিমন্ত নামৰ এজন লোকে তেওঁক সিংহাসনচ্যুত কৰি নিজে সিংহাসন দখল কৰে।

আৰিমন্ত (আ: ১৩৬৫-১৩৮৫ খ্ৰিঃ)

আৰিমন্ত (বা গজাঙ্ক) ধৰ্মনাৰায়ণৰ পুত্ৰ তাপস্বজৰ বংশধৰ বুলি কোনো কোনোৱে অনুমান কৰে। ৰাজসিংহাসন অধিকাৰ কৰিয়েই তেওঁ ৰাজ্যৰ পূব অঞ্চলৰ ভূঞাসকলক দমন কৰে। এই ভূঞাসকলে যাতে পুনৰ মুৰ দাঙিব নোৱাৰে তাৰ বাবেই খুব সম্ভৱ আৰিমন্তই কমতাপুৰৰ পৰা ৰাজধানী তুলি বেতনাৰ ওচৰৰ বৈদ্যগড়ত পাতে। ৰাজত্বৰ প্ৰথম ভাগতে ফেঙ্গুৱা নামৰ এজন কোঁৱৰে (কোনোৰ মতে এওঁ ইন্দ্ৰ নাৰায়ণৰ জ্ঞাতি) আৰিমন্তৰ ৰাজ্য আক্ৰমণ কৰে। ইয়াৰ বাবে ফেঙ্গুৱাই বৈদ্যগড়ৰ দহ মাইল পশ্চিমে এটা গড় সাজে। ই বৰ্তমান ফেঙ্গুৱা গড় নামে জনাজাত। কিন্তু যুদ্ধত আৰিমন্তৰ হাতত ফেঙ্গুৱা নিহত হয়। ইয়াৰ পাচত অৰিমন্তই ৰামচন্দ্ৰ নামৰ এজন ৰজাৰ ৰাজ্য (বৰ্তমানৰ দৰং জিলাত) আক্ৰমণ কৰি ৰজাক বধ কৰে। আৰিমন্তই বাপেকক হত্যা কৰিছিল বুলি এটা জনশ্ৰুতি আছে।

আৰিমন্তৰ পাচত ৰত্নসিংহ (বা শূকৰাঙ্ক), শূভৰাঙ্ক আৰু মৃগাঙ্ক নামেৰে তিনিজন ৰজাই অনুমানিক ১৩৮৫ খ্ৰিঃ ৰ পৰা ১৪৪০ খ্ৰিঃ লৈকে কমতাত ৰাজত্ব

কৰে। এওঁলোকৰ দিনত ৰাজ্যৰ ৰাজধানী আছিল কমতাপুৰ। সম্ভৱতঃ শূতৰাঙ্কৰ ৰাজত্বৰ কালছোৱাত আহোমৰ লগত পুনৰ সম্পৰ্ক হয়। চ্যু-ডাং-ফাৰ ৰাজত্বৰ প্ৰথম ভাগতে দুজন ৰাজবিদ্ৰোহী গৈ কমতা ৰাজ্যত আশ্ৰয় লয় আৰু আহোম ৰজাৰ বিৰুদ্ধে কমতেশ্বৰৰ সহায় বিচাৰে। কমতেশ্বৰে পূৰ্বৰ আনুগত্য অটুট ৰাখি এই বিদ্ৰোহীক আশ্ৰয় দিয়াৰ পৰা বিৰত থাকে আৰু আনুগত্যৰ প্ৰমাণ স্বৰূপে চ্যু-ডাং-ফালৈ জীয়েক ভাজনীক বিয়া দিয়ে। মৃগাঙ্ক নিঃসন্তান হৈ মৰাত সম্ভৱতঃ নীলধ্বজে আনুমানিক ১৪৪০ খ্ৰিঃত কমতাৰ সিংহাসন দখল কৰি এটা নতুন বংশৰ প্ৰতিষ্ঠা কৰে।

নীলধ্বজ (আঃ ১৪৪০-১৪৫০ খ্ৰিঃ)

নীলধ্বজে প্ৰতিষ্ঠা কৰা বংশটো খেন বংশ বুলি জনাজাত। এওঁ কমতেশ্বৰ উপাধি গ্ৰহণ কৰিছিল। এওঁৰ ৰাজত্ব কালৰ বিষয়ে বিশেষ জনা নাযায়। এওঁ মিথিলাৰ পৰা বহুতো ব্ৰাহ্মণ আনি নিজ ৰাজ্যত স্থাপন কৰিছিল। ৰাজধানী সুৰক্ষিত কৰিবৰ বাবে তেওঁ এটা দুৰ্ভেদ্য গড় সজায়।

চক্ৰধ্বজ সিংহ (আঃ ১৪৫০-১৪৮০ খ্ৰিঃ)

নীলধ্বজৰ মৃত্যুৰ পাচত পুতেক চক্ৰধ্বজ সিংহ সিংহাসনত বহে। এওঁৰ দিনতে বঙ্গদেশৰ চুলতান ৰুকনুদ্দিন বৰবাক চাহে কমতা ৰাজ্য আক্ৰমণ কৰে। এই যুদ্ধৰ ফলাফল বা ৰাজ্যৰ আন ঘটনাৰ সম্বন্ধে একো জনা নাযায়।

নীলাম্বৰ (আঃ ১৪৮০-১৪৯৮ খ্ৰিঃ)

চক্ৰধ্বজৰ পাচত তেওঁৰ পুত্ৰ নীলাম্বৰ কমতাপুৰৰ ৰজা হয়। এওঁ খেন বংশৰ আটাইতকৈ পৰাক্ৰমী ৰজা আছিল। তেওঁ নিজ ৰাজ্য সুৰক্ষাৰ্থে কেইবাটাও দুৰ্গ নিৰ্মাণ কৰাৰ উপৰিও কেইবাটাও আলিবাট নিৰ্মাণ কৰিছিল। সেইবোৰৰ চিন এতিয়াও দেখা যায়। এওঁ কৰতোয়া নদীৰ পশ্চিম পাৰৰ উত্তৰ বঙ্গৰ কিছু অংশ মুচলমানসকলৰ পৰা কাঢ়ি আনি নিজ ৰাজ্যৰ অন্তৰ্ভুক্ত কৰিছিল। কিন্তু ই বেছি দিন টিকি নাথাকিল। বঙ্গৰ নৱাব হোচেন চাহে ১৪৯৮ খ্ৰিঃত কমতা ৰাজ্য আক্ৰমণ কৰি ৰাজধানী কমতাপুৰ ধ্বংস কৰে। নীলাম্বৰৰ পতনৰ লগে লগে কমতা ৰাজ্যৰো অৱসান ঘটে।

(খ) কছাৰী ৰজাসকল : (১২২৮-১৮৩২)

অসমৰ অতি পুৰণি অধিবাসীৰ ভিতৰত কছাৰীসকল অন্যতম। গোটেই ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকা জুৰি বাস কৰা কছাৰীসকল আৰু এওঁলোকৰ লগত মিল থকা ভাষা কোৱা লোকসকলৰ অধিকৃত অঞ্চললৈ চাই কোনো কোনো পণ্ডিতে অসমৰ অধিকাংশ ঠাই আৰু উত্তৰ-পূব বঙ্গদেশ জুৰি এসময়ত এখন বৃহৎ বড়ো ৰাজ্যৰ অস্তিত্ব অনুমান কৰে। কছাৰীসকল অসমৰ বেলেগ বেলেগ ঠাইত বেলেগ বেলেগ নামেৰে পৰিচিত। উদাহৰণ স্বৰূপে ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকাত থকা কছাৰীসকলে নিজকে “বড়ো” অথবা “বড়ো ফিছা” (ডাঙৰ নদীৰ সন্তান) বুলি নিজকে পৰিচয় দিয়ে। সমূহীয়াভাৱে এওঁলোকক ‘কছাৰী’ নামেৰে জনা যায়। যদিও এই নামটো তেওঁলোকক অনা-কছাৰীসকলে দিয়া নামহে। ত্ৰয়োদশ শতিকাত অহা আহোমসকলে এওঁলোকক প্ৰথমে “টিমাছা” আৰু পাচলৈ “কছাৰী” বুলি কৈছিল। ধনশিৰি উপত্যকাত বসবাস কৰা সময়ত বোধহয় তেওঁলোকে এই নামেৰে পৰিচিত হৈছিল।

“কছাৰী” নামটোনো কেনেকৈ পালে তাৰ সম্বন্ধে পণ্ডিতসকলে এতিয়াও একমত হ’ব পৰা নাই। ৰিজলীৰ মতে নেপালীসকলে ব্ৰহ্মপুত্ৰ আৰু কুশী নদীকে সীমা কৰি পাহাৰৰ নামনি অঞ্চলটো “খাছাৰ দেশ” (বা অপভ্ৰংশ হৈ কাছাৰ) বুলিছিল। এই দেশৰ অধিবাসীসকল পাচলৈ কছাৰী, কোঁচ, মেচ, ধীমাল আদি বিভিন্ন নামেৰে জনাজাত হ’ল। গেইটে এই যুক্তি মানি ল’ব পৰা নাই। তেওঁৰ মতে “খাছাৰ” শব্দটো এটা সংস্কৃত শব্দ আৰু এই শব্দই সীমামূৰীয়া অঞ্চলক বুজায়। সুনীতি কুমাৰ চেটাৰ্জীৰ মতে সুৰমা (বৰাক) উপত্যকাত গঠন হোৱা কাছাৰ জিলাৰ পৰাহে তেওঁলোকে কছাৰী নামটো পালে। গেইটে এই যুক্তিও খণ্ডন কৰি গৈছে যে কাছাৰ জিলাৰ বহু আঁতৰত থকা লোককো এই নামেৰে জনা যায়। ড° এন্ডেলৰ মতে ৰাভা, মেচ, ধীমাল, কোঁচ, চোলানিমিয়া, গাৰো, হাজং, মৰাণ, চুতীয়া, নাহালিয়া, ফুলগুৰীয়া, শৰণীয়া, ডিমাছা, হোজাই, লালুং, এই সকলো বড়ো জাতিৰ একো একোটা ঠাল। কোঁচসকলৰ লগত কছাৰীসকলৰ যথেষ্ট মিল আছে। ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকাৰ উত্তৰ অঞ্চলৰ চুতীয়া, লালুং, মৰাণ আৰু দক্ষিণৰ গাৰো, ত্ৰিপুৰীসকলৰ লগত ভাষাগত সাদৃশ্য দেখা যায়।

অসমত বাস কৰা আন আন অধিবাসীৰ দৰে এওঁলোকৰো কোনো লিখিত বুৰঞ্জী পোৱা নাযায়। ত্ৰয়োদশ শতিকাত আহোমসকল অহাৰ পৰাহে আহোমসকলৰ লিখিত বুৰঞ্জীৰ পৰা কছাৰীসকলৰ ৰাজনৈতিক বুৰঞ্জীৰ বিষয়ে জানিব পাৰি।

কছাৰীসকলে নিজৰ ৰাজ্যক “হিড়িম্বা ৰাজ্য” আৰু বজাক “হিড়িম্বেশ্বৰ” বুলিছিল। এই বিষয়ে থকা জনশ্ৰুতি এই ধৰণৰ। এসময়ত পাণ্ডুৰ মাজু ল’ৰা ভীম দিগ্বিজয় কৰিবলৈ ওলাই আহি অসমত উপস্থিত হয়। ইয়াতে তেওঁ হিড়িম্বা নামৰ এগৰাকী কন্যা বিয়া কৰায়। (হিড়িম্বা আছিল অনাৰ্য জাতিৰ ছোৱালী, সেয়েহে জনশ্ৰুতিত হিড়িম্বাক ৰাক্ষসী বুলি অভিহিত কৰা হৈছে।) যথা সময়ত হিড়িম্বাৰ গৰ্ভত ভীমৰ ঔৰসজাত এটি পুত্ৰ জন্মিল। সন্তানৰ নাম থলে ঘটোৎকচ। পাচত কুৰুক্ষেত্ৰ যুদ্ধত ঘটোৎকচ সৈন্যে পাণ্ডৱসকলৰ পক্ষে কৌৰৱসকলৰ লগত যুদ্ধ দিছিল। এই জনশ্ৰুতিকে বিশ্বাস কৰি কছাৰীসকলে নিজকে ভীমৰ পুত্ৰ ঘটোৎকচৰ বংশধৰ বুলি পৰিচয় দিয়ে। ডিমাপুৰ এই হিড়িম্বাপুৰৰে অপভ্ৰংশ বুলিও কয়।

আহোমসকলৰ বুৰঞ্জীৰ পৰা জনা যায় যে চ্যু-কা-ফাই ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকাত প্ৰৱেশ কৰি ৰাজ্য স্থাপন কৰাৰ সময়ত দিখৌ নদীৰ পশ্চিম পাৰৰ পৰা এখন কছাৰী ৰাজ্য আছিল। দিখৌ নদীয়েই আছিল এই দুই ৰাজ্যৰ সীমা। চ্যু-কা-ফাই দিনত এওঁলোকৰ মাজত কোনো ধৰণৰ যুদ্ধ বা সম্বন্ধ হোৱাৰ সম্পৰ্কে বুৰঞ্জীত পোৱা নাযায়। তেওঁৰ পুতেক চ্যু-তেও-ফাই ৰাজত্ব কালত আহোমসকলে দিখৌ নদীৰ পৰা নামদাং নদীলৈকে থকা অঞ্চলটো ছলেৰে অধিকাৰ কৰে। তেতিয়াৰে পৰা পোন্ধৰ শতিকাৰ শেষ দশকলৈকে এই নামদাং নদীয়েই কছাৰী আৰু আহোম ৰাজ্যৰ সীমা হৈ থাকিল। এই কালছোৱাত কছাৰী আৰু আহোমৰ মাজত যুদ্ধ-বিগ্ৰহ বা আন কোনো ধৰণৰ সম্বন্ধ স্থাপন হোৱাৰ কথা জনা নাযায়।

চুতীয়া ৰজাসকল : (১১৮৯-১৫২৩)

দ্বাদশ শতিকাৰ মাজ ভাগত কামৰূপত পাল শক্তি (বংশ) লোপ পোৱাৰ পাচত ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকাত উত্তৰ হোৱা ক্ষুদ্ৰ ক্ষুদ্ৰ ৰাজশক্তিসমূহৰ ভিতৰত উত্তৰ-পূব কোণৰ চুতীয়াসকলৰ অৱস্থিতি আছিল অন্যতম। ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ আগ ভাগত চ্যু কা-ফাই উক্ত উপত্যকাৰ বুঢ়ীদিহিং নদীৰ পশ্চিম পাৰৰ পৰা দিখৌ নদীৰ পূব পাৰলৈকে ৰাজ্য স্থাপন কৰাৰ সময়ত চুতীয়াসকলৰ ৰাজ্য বুঢ়ীদিহিঙৰ পূব পাৰৰ পৰা সোৱণশিৰী নদীলৈকে বিস্তৃত আছিল।

চুতীয়াসকলৰ ইতিহাস বিশেষভাৱে জনা নাযায়। শৰীৰৰ গঠনলৈ চাই গেইট চাহাবে চুতীয়াসকলৰ গাত বহু পৰিমাণৰ টাই ৰক্ত প্ৰবাহমান বুলি অনুমান কৰে। বড়োসকলৰ লগত চুতীয়াৰ ভাৱাৰ বহু বৰ্ণনাই সাদৃশ্যলৈ চাই কোনো

কোনোৰে বড়োসকলৰ লগতহে এওঁলোকৰ সম্পৰ্ক থকা বুলি ভাবে। শক্তিৰ উপাসক চুতীয়াসকলৰ মাজত শদিয়াত থকা কেঁচাইখাতী গোঁসানীৰ পূজা প্ৰচলিত আছিল।

নিজৰ লিখিত ভাষা থকা সত্বেও চুতীয়াসকলৰ ৰাজত্ব কালৰ ঘটনাৱলী লিপিবদ্ধ কৰা হোৱা নাছিল। আহোমসকলে লিখা চুতীয়া লোকৰ বুৰঞ্জীৰ পৰাহে এওঁলোকৰ ৰাজনৈতিক ইতিহাস সম্বন্ধে জনা যায়। এই বুৰঞ্জীসমূহৰ পৰা জনা যায় যে আহোমসকলৰ মাজত চুতীয়া ৰাজ্য স্থাপনৰ সম্পৰ্কে কিছুমান প্ৰচলিত জনশ্ৰুতি আছে। এই সকলো জনশ্ৰুতিৰ মতে ভীষ্মক ৰজাৰ বংশধৰ জনৈক বীৰপাল নামৰ লোকে আনুমানিক ১১৮৯ খ্ৰিষ্টাব্দত চুতীয়া ৰাজ্য স্থাপন কৰে। এওঁ জোনাগিৰি পাহাৰৰ ওপৰৰ ঘাটি ঘৰ চুতীয়া মানুহৰ ওপৰত ন্যায়পাল নাম লৈ প্ৰভুত্ব চলাইছিল। এওঁৰ ভাৰ্যা ৰূপৱতীয়ে কুবেৰ দেৱতাক পুত্ৰাৰ্থে উপাসনা কৰিছিল। উপাসনাত সন্তুষ্ট হৈ এদিন ৰূপৱতী মাকৰ ঘৰৰ পৰা অহা পথত কুবেৰে বীৰপালৰ ৰূপ ধৰি ৰূপৱতীৰ আগত দেখা দিয়ে। তেওঁলোকৰ মিলন স্বৰূপে ৰূপৱতীৰ গৰ্ভৱতী হয়। আন হাতে সেই নিশাই কুবেৰে বীৰপালক স্বপ্নত দেখা দি কয় যে ৰূপৱতীৰ গৰ্ভত তেওঁৰ (কুবেৰৰ) ঔৰসজাত এটি পুত্ৰ সন্তানে জন্ম ল'ব। সিয়ে ৰাজ্যত ৰজা হ'ব। নতুনকৈ এটা ঘৰ কৰি তাত ৰূপৱতীক ভালদৰে ৰাখিবলৈ নিৰ্দেশো দিয়ে। তদুপৰি কয় “যি গছৰ তলত ফাগুনৰ কৃষ্ণ চতুৰ্দশীত দেও কৈ মোক উপাসা কৰ, কাইলৈ প্ৰাতঃকালে সেই গছৰ তললৈ যাবি। যি বস্তু পাৰ তাকে সেৱা কৰি থাকিবি। যি কালত অনাদৰ, পৰহস্ত, হয় সেইকালত তোৰ পুত্ৰৰ ছত্ৰভঙ্গ হ'ব, ৰাজ্যকো পৰে ল'ব। দেশান্তৰী হ'ব। গছৰ তলত পোৱা দ্ৰব্যৰে মোৰ পুত্ৰে অনেকক যুধ কৰি মাৰি ৰজা হ'ব।” পাচ দিনা সেই ঠাইলৈ গৈ এখন ঢাল, এখন তৰোৱাল আৰু এটা সোণৰ মেকুৰী পালে, এই কুবেৰ প্ৰদত্ত সম্পত্তিখিনি ঘৰলৈ আনি ভালদৰে পূজা-অৰ্চনা কৰি থাকিল। কিছু দিনৰ পাচত ৰূপৱতীৰ এটি পুত্ৰ জন্মিল। নাম থ'লে গোঁৰীনাৰায়ণ।

বীৰপালৰ মৃত্যুৰ পাচত ৰজা হৈ গোঁৰীনাৰায়ণে কুবেৰপ্ৰদত্ত সম্পত্তিৰ সহায়ত ৰাঙ্গলগুৰি, কালগিৰি, নীলগিৰি, ধৱলগিৰি, চন্দ্ৰগিৰি এই চুবুৰীয়া পাহাৰৰ ওপৰত থকা সকলো চুতীয়া লোককে বশ কৰি নিজৰ তলতীয়া কৰি লয়। ইয়াৰ পাচতে তেওঁ ছত্ৰ লৈ ৰত্নধ্বজপাল নাম লয়। ১২২৪ খ্ৰিঃ (১১৪৬ শক)ত তেওঁ শ্বেতগিৰি পাহাৰত থকা ভদ্ৰসেনক যুদ্ধত ঘটুৱাই অনেক সম্পত্তি আৰু বহুতো

লোকক বন্দী কৰি আনিলে। ভদ্ৰসেনৰ পুতেকক কৰতলীয়া কৰি ৰাখিলে। তেওঁ বড়পুৰ নাম দি এখন নতুন নগৰো স্থাপন কৰে। তাৰ পাচত ন্যায়পাল নামৰ ৰজাৰ দেশ আক্ৰমণ কৰিবলৈ আগ বাঢ়ি যোৱাত ন্যায়পালে কন্যা দি গৌৰীনাৰায়ণৰ লগত মিত্ৰতা কৰি নিজ ৰাজ্য ৰক্ষা কৰে। ইয়াৰ কিছুদিনৰ পাচত পুতেক বিজয়ধ্বজৰ লগত কমতাপুৰৰ ৰাজকুঁৱৰীক বিয়া কৰাই কমতাপুৰৰ ৰজাৰ লগত বৈবাহিক সম্বন্ধ স্থাপন কৰে। গৌড় ৰজাৰ লগত ৰত্নধ্বজে মিত্ৰতা কৰি স্নান কৰিবৰ নিমিত্তে গৌড়ৰজাই গঙ্গাজল আৰু নিজে পৰশুৰাম কুণ্ডৰ পানী গৌড় ৰজালৈ পঠাই দিয়ে। কিন্তু অলপ দিনৰ পাচত গৌড়ৰ ৰজাকোঁৱৰৰ মৃত্যু হয়। সেই সময়ত ৰত্নধ্বজ সিদ্ধক্ষেত্ৰত এটা মন্দিৰ সজা কামত ব্যস্ত আছিল। গৌড়ৰ ৰাজকোঁৱৰৰ শটো তালৈ লৈ গৈ দাহ কৰাত সেই ঠাইৰ নাম হ'ল শ-দিয়া বা বৰ্তমানৰ শদিয়া। এই শদিয়া নগৰতে ৰত্নধ্বজপালৰো মৃত্যু হয়।

ৰত্নধ্বজপালৰ পাচত এই বংশৰ ন জন ৰজাই ৰাজত্ব কৰিছিল। অষ্টম আৰু নৱম ৰজাজনৰ বাহিৰে বাকী কেইজনৰ ৰাজত্ব কালৰ বিষয়ে সৱিশেষ জনা নাযায়। অষ্টম ৰজা ধীৰনাৰায়ণে ১৬ শতিকাৰ প্ৰথম ভাগত ৰাজত্ব কৰিছিল। এওঁৰ লগতে আহোম ৰজা চ্যু-হুং-মুঙৰ সংঘৰ্ষ হয় আৰু আহোম ৰজাই ১৫২৩ খ্ৰিঃত চুতীয়া ৰাজ্য অধিকাৰ কৰি নিজ ৰাজ্যৰ ভিতৰুৱা কৰে।

— ড° আই. এচ. মমতাজা

টোকা : সূৰ্যকান্ত খনিকৰে “চুতীয়া জাতিৰ ইতিহাস আৰু লোকসংস্কৃতি”ত (১৯৯১) চুতীয়া ৰজাসকলৰ শাসন কালৰ সংশোধিত ৰূপ এনেকৈ দেখুৱাইছে—

১। বীৰপাল	(১১৮৯-১২১৩)
২। ৰত্নধ্বজ পাল	(১২১৩-১২৬৮)
৩। বিজয়ধ্বজ পাল	(১২৬৮-১৩১০)
৪। বিজয়ধ্বজপাল	(১৩১০-১৩৩৩)
৫। গৰুড়ধ্বজ পাল	(১৩৩৩-১৩৬৩)
৬। শঙ্কুধ্বজ পাল	(১৩৬৩-১৩৯৩)
৭। ময়ূৰধ্বজ পাল	(১৩৯৩-১৪২১)
৮। জয়ধ্বজ পাল	(১৪২১-১৪৫৪)

৯। কৰ্মধ্বজ পাল	(১৪৫৪-১৪৭৮)
১০। ধৰ্মধ্বজ পাল	(১৪৭৮-১৫২০)
১১। নীতিপাল	(১৫২০-১৫২৩)

— সম্পাদক

(গ) আহোম ৰজাসকল : (১২২৮-১৮২৪)

ত্ৰয়োদশ শতিকাত আৰম্ভ হৈ ছশ বছৰ কাল ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকাত প্ৰবল পৰাক্ৰমেৰে ৰাজত্ব কৰা শক্তিটোৱেই হৈছে আহোম ৰাজশক্তি। আহোমসকল সমগ্ৰ দক্ষিণ-পূব এচিয়াত বিস্তৃত হৈ থকা টাই জাতিৰ মাও গোষ্ঠীৰ এটা ঠাল। ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ আগ ভাগতে এওঁলোকে ৰাজকোঁৱৰ চ্যা-কা-ফাৰ অধীনত ম্যুং-মাও-লুং দেশৰ পৰা আহি পাটকাই পৰ্বতৰ পাং-চ্যা গিৰিপথেদি অসমত সোমাই, দিখৌ আৰু বুঢ়ীদিহিং এই দুই নদীকে সীমা কৰি মধ্যৱৰ্তী অঞ্চলত এখন ৰাজ্য স্থাপন কৰে। এই সৰু আহোম ৰাজ্যখন লাহে লাহে ডাঙৰ হৈ অৱশেষত ওঠৰ শতিকাত ই মানাহ নদীলৈকে প্ৰায় গোটেই ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকা আশ্ৰি লয়। আহোমসকল অসমলৈ অহাৰে পৰা অসমৰ ধাৰাবাহিক লিখিত বুৰঞ্জী পোৱা যায়। এই বুৰঞ্জীবোৰৰ পৰা অকল যে আহোমসকলৰ কথা জানিব পাৰি এনে নহয়, অসমত বসবাস কৰা আন আন জাতি-উপজাতিৰ বিষয়েও এই বুৰঞ্জীবোৰত পোৱা যায়।

টাই ৰজাসকলৰ উৎপত্তি আৰু আহোম ৰজাসকলৰ অসম আগমনৰ সম্পৰ্কে দুটা — আহোম আৰু হিন্দু — আখ্যান আছে। দুয়োটা আখ্যান মতে স্বৰ্গৰ ৰজা লেংদনে (হিন্দু মতে ইন্দ্ৰ) আন সকলো দেৱতাৰ সন্তানে পৃথিৱীলৈ আহি ৰাজত্ব কৰা দেখি নিজৰ সন্তানকো পৃথিৱীত ৰজা হ'বলৈ পঠাবৰ মন কৰিলে। সেয়েহে জা-চিং-ফা, থেং-খাম আদি আন আন দেৱতা আৰু লেংদনৰ বিশিষ্ট সভাসদৰ লগত আলোচনা কৰি তেওঁৰ নাতিয়েক দুজন খুন্-লুং, খুন্-লাইক পঠাবৰ বাবে ঠিক কৰিলে। খুন্-লুং খুন্-লাইক মাতি আনি তেওঁৰ মনৰ কথা কয় যে খুন্-লুং বয়সত ডাঙৰ হেতুকে তেওঁ পৃথিৱীত ৰজা হ'ব। খুন্-লাই সৰু বাবে যুৱৰাজ হ'ব। লেংদনে লগতে তেওঁলোক দুয়োকো কাঁজিয়া-পেঁচাল নকৰি, সজ পথত থাকি প্ৰজাৰ অন্তৰ জয় কৰি দোষীক উপযুক্ত শাস্তি দি ভালদৰে ৰাজ-কৰ্ম সম্পন্ন কৰিবলৈ বহুতো সজ উপদেশ দিয়ে। তেওঁ দুয়োৰে লগত বাকচত

সুমোৱাই চোমদেউ নামৰ দেৱতাৰ মূৰ্তি এটা, এটা দাঁতাল হাতী, এযোৰ কাই-চেং-মুং (পৰিত্ৰ দেশৰ কুকুৰা), এখন হেংদাং (এবিধ তৰোৱাল), এখন ৰাজছত্ৰ, এখন ফুলাম কাপোৰ (embroidered cloth) আৰু এযোৰা ঢাক দি এই সামগ্ৰীসমূহৰ ব্যৱহাৰ সম্পৰ্কেও ব্যাখ্যা কৰিলে। চোমদেওৰ পূজা বিধান ব্যাখ্যা কৰি কয় যে প্ৰতি বছৰে বিধিমতে চোমদেওক পূজা কৰি থাকিলে ৰাজ্যত অমঙ্গল নহয়। এই মূৰ্তিয়ে যাতে কেতিয়াও মাটি স্পৰ্শ নকৰে তাৰ বাবে সাৱধান হ'বলৈ তেওঁ সকিয়াই দিয়ে। কাই-চেং-মুং মাৰি তাৰ ঠোট, নাড়ী-ভুঁক আৰু ঠেঙেৰে মঙ্গল চাবলৈ আৰু সেই মঙ্গলৰ মতে চলিবলৈ, পাখি মঙ্গল কৰ্মত পিন্ধিবলৈ, মূৰ আৰু ডেউকা দুখন খাবলৈ উপদেশ দিয়ে। হেংদাংখন সদায় ৰজাসভাৰ সোঁ মাজত ৰজা বহা আসনৰ ওচৰতে থবলৈ কৈ কয় যে এইখনৰ সহায়ত পৃথিৱীৰ সকলো মানুহৰ আনুগত্য লাভ কৰিব পাৰিব, তেওঁ লগতে বছৰত হেংদাংখন এবাৰ ধুই চোকা কৰিবলৈও নিৰ্দেশ দিয়ে। দেশত কিবা বিপদ হ'লে বা কোনো শত্ৰুৱে আক্ৰমণ কৰিলে নাইবা প্ৰাকৃতিক দুৰ্যোগ হ'লে ঢাক বজাই লেংদনক জনাবলৈ আজ্ঞা কৰে যাতে এনে সময়ত স্বৰ্গৰ সহায় লাভ কৰিব পৰা যায়।

এই সকলো সামগ্ৰী আৰু বস্তুতো জ্ঞাতি-বন্ধুৰে পৰিৱেষ্টিত হৈ খুন-লুং আৰু খুন-লাইয়ে স্বৰ্গৰ পৰা সোণৰ মতান্তৰে লোহাৰ শিকলিৰে নামি আহি বেছি জনবসতি নোহোৱা মুং-ৰি মুং-ৰাম নামে ঠাইত উপস্থিত হয়। তাতে তেওঁলোকে ৰাজ্য স্থাপন কৰিবলৈ মনস্থ কৰি মঙ্গল চাবলৈ লৈ গম পালে যে তেওঁলোকে কাই-চেং-মুং, হেংদাং আৰু ঢাক স্বৰ্গতে এৰি আহিল। লগৰ কোনো মানুহ স্বৰ্গলৈ পুনৰ শিকলিৰে উঠি যাবলৈ ইচ্ছা নকৰাত লঙ্গো নামৰ এজন স্থানীয় লোক স্বৰ্গলৈ যাবলৈ ওলাল এটা স্বৰ্তত, যদিহে তেওঁক খেহু (চীন) ৰাজ্যত ৰাজত্ব কৰিবলৈ দিয়ে। খুন-লুং আৰু খুন-লাইয়ে ইয়াতে মান্তি হোৱাত লঙ্গোৱে গৈ বস্তুকেইটা লৈ আহি জনালে যে লেংদনে কাই-চেং-মুং মাৰি মঙ্গল চাই তেওঁলোকক মঙহ খাবলৈ, মূৰ আৰু ডেউকা লঙ্গোক খাবলৈ দিছে। হেংদাংখনো লঙ্গোকে লবলৈ কৈছে। আগৰ অঙ্গীকাৰ মতে লঙ্গোক খেহু ৰাজ্যখন আৰু লেংদনৰ ইচ্ছা অনুযায়ী হেংদাংখন দিয়ে।

কাই-চেং-মুংৰ ঠেঙেৰে মঙ্গল চাই খুন-লুঙে মুং-ৰি মুং-ৰামতে ৰাজধানী পাতি সেই ঠাইতে ৰাজ্য স্থাপন কৰিলে। কিছু দিন ৰাজভোগ কৰাৰ পাচত খুন-লোইয়ে ছল কৰি ককায়েকক খেদি নিজে ৰজা হ'ল। খুন-লুঙে চোমদেওক লগত

লৈ লেংদনক সকলো বিদিত কৰিলে। লেংদনে এনে আচৰণৰ বাবে খুন্-লাইক খঙত শাপ দিলে যে তেওঁৰ ৰাজপাট বেছি দিন নাথাকিব, তেওঁৰ বংশয়ো বেছি দিন সেই ৰাজ্যত ৰাজত্ব কৰিব নোৱাৰিব। খুন্-লুঙে লেংদনৰ উপদেশ মতে চোমদেওক লগত লৈ পুনৰ পৃথিৱীলৈ আহি ম্যুং-খু ম্যুং-জা দেশত ৰজা হ'লগৈ। অতি সুখ্যাতিৰে চল্লিশ বছৰ ৰাজত্ব কৰি তেওঁ সোঁ শৰীৰে স্বৰ্গলৈ উভতি গ'ল। স্বৰ্গলৈ যোৱাৰ আগেয়ে তেওঁ পুতেক কেইজনৰ মাজত ৰাজ্য ভগাই দি আটাইকে বেলেগ বেলেগ ঠাইত ৰজা পাতিলে। সৰু পুতেক খুঞ্জুক নিজৰ লগত ৰাখি ম্যুং-খু ম্যুং-জাৰ ৰজা পাতি লেংদনে তেওঁলোকক দিয়া পূৰ্বৰ উপদেশখিনি দোহাৰিলে। খুঞ্জুৰ পাচত এই বংশৰে আৰু দুজন ৰজা হয়। তাৰ পাচত ত্যাও-খুঞ্জু-ন ম্যুং-খু ম্যুং-জাত ৰজা হয়।

ইফালে খুন্-লাইয়ে ৭০ বছৰ ম্যুং-ৰি ম্যুং-ৰামত ৰাজত্ব কৰি স্বৰ্গী হয়। তেওঁৰ পুতেক আই-জোপ ত্যাও-ফা অপুত্ৰক হৈ মৃত্যু হোৱাত ত্যাও-খুঞ্জু-ন পুতেক খাম্-পাং-ফা আহি ম্যুং-ৰি-মুং-ৰামত ৰজা হয়। খাম্-পাং-ফাই ২৫ বছৰ ধৰি ৰাজপাট খোৱাৰ পাচত বৰপুতেকক সেই ঠাইতে ৰজা পাতি আৰু কনিষ্ঠ পুতেকক মাও-লুং দেশৰ ৰজা পাতি স্বৰ্গী হয়। এনেদৰে লাহে লাহে লেংদনৰ সতি-সন্তানসকল গোটেই দক্ষিণ-পূব এচিয়াত বিয়পি পৰিল।

আহোমসকল অসমলৈ অহাৰ সম্পৰ্কে আহোম বুৰঞ্জীত উল্লিখিত তথ্যৰ পৰা জনা যায় যে দ্বাদশ শতিকাৰ শেষৰ ফালে মাও-লুং দেশত এই বংশৰে পামেও-পুং নামে এজন ৰজাই ৰাজত্ব কৰিছিল। তেওঁৰ ভনীয়েকক ম্যুং-খু ম্যুং-জাৰ ৰজা চাও-চাং-ন্যেওলৈ বিয়া দি নিজৰ ৰাজ্যতে ৰাখিছিল। তাতে চাও-চাং-নেওৰ ঔৰসত পামেও-পুঙৰ ভনীয়েকৰ গৰ্ভত চ্যু-কা-ফাৰ জন্ম হয়। পামেও-পুঙৰ পুত্ৰ সন্তান নথকাত বুঢ়ীমাকে চ্যু-কা-ফাক সেই ৰাজ্যৰ ৰজা পতাৰ মানসেৰে নিজৰ লগত ৰাখিয়েই ডাঙৰ কৰিছিল।

চ্যু-কা-ফাক উনৈশ বছৰ বয়সত যুৱৰাজ পতা হয়। কিন্তু ইয়াৰ পাচতে পামেও-পুঙৰ চ্যু-খাম্-ফা নামৰ এটি পুত্ৰ সন্তানৰ জন্ম হয়। বাপেকৰ মৃত্যুৰ পাচত চ্যু-খাম্-ফা মাও-লুঙৰ ৰজা হয়। বুঢ়ীমাকৰ উপদেশ মতে চ্যু-কা-ফাই সেই বছৰতে মাও-লুং ত্যাগ কৰি ম্যুং-কং ৰাজ্যলৈ গৈ তাৰ পৰা চোমদেওক লৈ দই-কা-ৰঙ (পাটলৈ পাটকাই পৰ্বত) পাৰ হৈ খাম্-জাঙেদি অসমত সোমায় আৰু আহোম ৰাজ্যৰ ভেঁটি স্থাপন কৰে।

চেন-বী বুৰঞ্জীয়ে চ্যু-কা-ফা অসমলৈ অহাৰ কাৰণ বেলেগ ধৰণে দৰ্শাইছে। এই বুৰঞ্জী মতে বাৰ শতিকাৰ শেষৰ ফালে মাও- চানৰ (নৰা ৰাজ্য) ৰজা চ্যু-খাম্-ফাই অভিযান চলাই বৰ্তমান ম্যানমাৰৰ এক বিস্তৃত অঞ্চল নিজ ৰাজ্যত অন্তৰ্ভুক্ত কৰে। তেওঁ মৃত্যুৰ পাচত পুতেক খুন্-চাম্-লুঙে (চাম্-লুং-ফা) আৰু আগ বাঢ়ি আহি অসম অধিকাৰ কৰে। সেই সময়তেই নিজ ৰাজ্যৰ আভ্যন্তৰীণ কন্দলৰ সম্পৰ্কে অৱগত কৰোৱাত চাম্-লুং-ফা নিজ ৰাজ্যলৈ উভতি যায়। চাম্-লুং-ফা উভতি যোৱাৰ পাচত নতুনকৈ অধিকৃত অঞ্চলত কোনো শাসনকৰ্তা নোহোৱাৰ সুযোগ লৈ স্থানীয় কৰতলীয়া ৰজাসকলে কৰ দিয়া বন্ধ কৰাত মাও-চানৰ ৰজাই চ্যু-কা-ফাক অসমৰ শাসনকৰ্তা পাতে। সেয়েহে ১২২৮ খ্ৰিঃত চ্যু-কা-ফা অসমত উপস্থিত হয়।

১। চ্যু-কা-ফা :- (১২২৮-১২৬৮ খ্ৰিঃ)

চ্যু-কা-ফা আছিল অসমত টাই ৰাজ্য আৰু আহোম ৰজাবংশৰ প্ৰতিষ্ঠাতা। তেওঁ মাও-লুঙৰ পৰা আহোঁতে লগত নিজৰ পৰিয়ালৰ উপৰিও থাও-ম্যুং-লুং (পাচলৈ বৰগোহাঁই), চাও-ফাং-ম্যুং (পাচলৈ বুঢ়াগোহাঁই) পদবীৰ দুজন বিষয়া পাঁচজন ফ্যু-কিন-ম্যুঙ (পাচলৈ ৰাজখোৱা) আঠজন খুন, ৰু-চাও, ৰু-পাক, ৰু-ৰিং (পাচলৈ যথাক্ৰমে কোৱঁৰ, বৰা, শইকীয়া আৰু হাজৰিকা) আদি বিষয়াসমূহ, তেওঁলোকৰ পৰিয়াল, ন হেজাৰ মানুহ, দুটা হাতী, ৩০০ ঘোঁৰা লগত লৈ আহিছিল। এই দলটো লগত লৈ চ্যু-কা-ফা পশ্চিম ফালে আশুৱাই আহি কাও-ৰুং-মুং-বান, মুং-না, মুং- টি হাতী খকীয়া নগা গাওঁ, পাই নাম-কিও (ইৰাৱতী নদী) পাৰ হয়। তাৰ পৰা ওপৰচকুৱা নগা গাওঁ, চ্যাক-চাং-খাই, চ্যাং-কে আদি ঠাইসমূহ অতিক্ৰম কৰি আহি দই-খাম্ পৰ্বতৰ বৰদুৱাৰত উপস্থিত হয়। তাৰ পৰা আহি খাম্-জাঙত সোমায়। সেই ঠাইতে কেইবছৰ মান থাকি কাং-কু-ম্যুঙক খাম্-জাঙৰ শাসনকৰ্তা পাতি পাং-চু গিৰিপথেদি আহি নামৰুক পালেহি। তাৰ পৰা বুঢ়ীদিহিঙৰ পাৰে পাৰে আশুৱাই গৈ মুং-লা - খেন, টেন চা, তি-পাম, মুং-চে-খু, হা-বুং আদি ঠাইত দুই-চাৰি বছৰকৈ থাকি শাসনকৰ্তা পাতি আৰু আশুৱাই যায়। হাবুং পাৰ হৈ লুইত পাই লুইতেদি ভটিয়াই আহি দিখৌমুখ পালেহি। তাৰ পৰা দিখৌ আৰু দিচাং নদীৰ মধ্যৱৰ্তী খণ্ডত পৰ্যবেক্ষণমূলক জৰীপ চলাই শিমলুগুৰি পায়হি। ইয়াৰ পাচত চৰাইদেউত ৰাজধানী স্থাপন কৰে আৰু ৰাজ্যখনৰ নাম দিয়ে মুং-দুন-চুন-খাম। চ্যু-কা-ফাৰ ৰাজ্যই ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকাৰ দিখৌ আৰু

বুঢ়ীদিহিং নদীৰ মাজৰ প্ৰায়বোৰ অঞ্চলেই সামৰি লয়। সমগ্ৰ অঞ্চলটো পৰ্যবেক্ষণ কৰি ৰাজ্যক পূৰ্ণাঙ্গ ৰূপ দিয়ালৈকে চ্যু-কা-ফাৰ সময় লাগিছিল ২৫ বছৰ কাল (১২২৮-১২৫৩ খ্ৰিঃ)।

চ্যু-কা-ফাই ৰাজ্য পতা অঞ্চলত সেই কালত মৰাণ আৰু বৰাহী নামৰ দুই জনজাতিৰ বসবাস আছিল। কথিত মতে বৰাহী ৰজা থাকুম্খাৰ পৰামৰ্শ লৈ চ্যু-কা-ফাই চৰাইদেউত ৰাজধানী পাতিছিল। চ্যু-কা-ফাৰ দুই ৰজাই চ্যু-কা-ফাৰ বংশ হৈ পৰে। চ্যু-কা-ফাই মৰাণসকলক খৰিভাৰী, বাৰীচোৱা, বৰাহীসকলক চাংমাই, কাঠকটীয়া, বেজ, জৰাধৰা, ভঁড়ালী, কুকুৰাচোৱা আদি বাৰ দি আহোম শাসনযন্ত্ৰৰ অন্তৰ্ভুক্ত কৰে।

চৰাইদেউত ৰাজধানী পাতিয়েই চ্যু-কা-ফাই ম্যাং-মাও-লুং দেশৰ ৰজা চ্যু-খাম্-ফালৈ কটকীৰ হাতত পত্ৰ আৰু মাও-লুঙৰ ৰজায়ে চ্যু-কা-ফাৰ অগ্ৰগতিত সন্তোষ প্ৰকাশ কৰি পত্ৰ আৰু বাৰ্তা পঠায়।

১২৬৮ খ্ৰিঃত চ্যু-কা-ফা স্বৰ্গী হয়।

২। চ্যু-তেও-ফা :- (১২৬৮-১২৮১ খ্ৰিঃ)

স্বৰ্গদেৱ চ্যু-কা-ফাৰ পাচত তেওঁৰ পুত্ৰ চ্যু-তেও-ফা আহোম ৰাজপাটত উঠে। এওঁ ৰজা হৈয়ে মাও-লুং দেশলৈ উপহাৰ সহ কটকী পঠায় আৰু ইয়াৰ বিনিময়ত মাও-লুং ৰজায়ে চ্যু-তেও-ফালৈ উপহাৰ পঠায়। তেওঁ দিখৌ নদীৰ পৰা নামদাং নদীলৈ এই কছাৰী অধিকৃত অঞ্চলটো বিনা যুদ্ধে কৌশলেৰে নি ৰাজ্যভুক্ত কৰে। এওঁৰ ৰাজত্ব কাল ১৩ বছৰ।

৩। চ্যু বিন্-ফা (১২৮১-১২৯৩ খ্ৰিঃ) :

চ্যু-তেও-ফাৰ পাচত পুতেকে চ্যু-বিন্-ফা নাম লৈ ৰজা হয়। তেওঁৰ ৰাজত্ব কাল ১২ বছৰ যদিও ৰাজত্ব কালৰ বিষয়ে ভালদৰে জনা নাযায়।

৪। চ্যু-খাং-ফা :- (১২৯৩-১৩০২ খ্ৰিঃ)

চ্যু-বিন্-ফাৰ পাচত চ্যু-খাং-ফা আহোম ৰাজপাটত উঠে। তেওঁৰে সৈতে কমতা ৰজাৰ সংঘৰ্ষ হয়। সংঘৰ্ষৰ কাৰণ সম্বন্ধে বুৰঞ্জী নিমাত। হয়তো আহোম ৰাজ্যৰ প্ৰতিপত্তি লাহে লাহে বাঢ়ি অহাই সংঘৰ্ষৰ কাৰণ। সম্ভৱতঃ কমতা ৰজাৰ

নাম আছিল প্ৰতাপধ্বজ। বহুদিন ধৰি চলা এই যুদ্ধত প্ৰতাপধ্বজে বলে নোৱাৰাত উপায়হীন হৈ ভনীয়েক ৰাজনীক চ্যু-খাং-ফালৈ দি আহোমৰ বশ্যতা স্বীকাৰ কৰে। তেওঁৰ ৰাজ্যত্ব কাল আছিল ৩৮বছৰ।

৫। চ্যু-খাং-ফা :- (১৩৩২-১৩৬৪ খ্ৰিঃ)

চ্যু-খাং - ফাৰ মৃত্যুৰ পাচত চ্যু-খাং ফা আহোমৰ ৰজা হয়। তেওঁ ৰাজনীক পুতেক তাও-চুলাইক চাৰিং ৰজা পাতিলে। ৰজা হব লোৱাৰি ত্যাও-পুলাই খাও-মুং-লুং তান্ত্ৰিখিনৰ লগত মিলিত হৈ চ্যু- খাং-ফাৰ বিৰুদ্ধে ষড়যন্ত্ৰত লিপ্ত হয়। কিন্তু ধৰা পৰাত দুয়ো কমতা ৰাজ্যলৈ পলাই যায়। কমতা ৰজায়ে হেৰুৱা সন্মান ঘূৰাই আনিবৰ বাবে এওঁলোক দুজনৰ লগত যোগ দিয়ে আৰু সৈন্য-সামন্ত লৈ চাৰিঙৰ সীমালৈকে আগ বাঢ়ি আহিল, শেষত যুদ্ধ নহ'ল যদিও আহোম ৰজাই তান্ত্ৰিখিনক ধৰি আনি বধ কৰিলে, আৰু ত্যাও-পুলাই কমতা ৰাজ্যতে থাকিল। তেওঁৰ ৰাজত্ব কাল আছিল ৩২ বছৰ।

৬। চ্যু-তু-ফা :- (১২৬৮-১২৮১ খ্ৰিঃ)

চ্যু-খাং-ফাৰ পাচত ভায়েক চ্যু-তু-ফা আহোম ৰজাপাটত উঠে। এওঁ সমসাময়িক চুতীয়া ৰজাৰ লগত সন্ধি বান্ধিছিল। কিন্তু চুতীয়া ৰজাই এদিন বন্ধুত্বৰ ভাও ধৰি চ্যু-তু-ফাক চফ্ৰাই নদীত নাও খেলিবলৈ বুলি নি হত্যা কৰে। এওঁৰ ৰাজত্ব কাল ১২ বছৰ। চ্যু-তু-ফাৰ মৃত্যুৰ পাচত ৪ বছৰ কাল উপযুক্ত কোঁৱৰৰ অভাৱত আহোম ৰাজ-সিংহাসন শূন্য হৈ আছিল। সেই সময়ছোৱাত ডাঙৰীয়াসকলে ৰাজকাৰ্য চলাইছিল।

৭। ত্যাও-খাম্-থি (১৩৮০-১৩৮৯ খ্ৰিঃ)

পাচত চ্যু-তু-ফাৰ ভায়েক ত্যাও-খাম্-থিক ডাঙৰীয়াসকলে আহোম ৰজা পাতে। ৰজা হৈয়ে তেওঁ ভ্ৰাতৃহন্তা চুতীয়া ৰজাক এশিকনি দিবৰ মনে চুতীয়া ৰাজ্য আক্ৰমণ কৰে। এই আক্ৰমণৰ ফল জনা নাযায় যদিও অনুমান কৰিব পাৰি যে চুতীয়া ৰজাক তেওঁ যুদ্ধত হৰুৱায়। দহ বছৰ কাল ৰাজত্বৰ পাচত পাত্ৰমন্ত্ৰীসকলে তেওঁক হত্যা কৰে। কোনো কোনো বুৰঞ্জীৰ উল্লেখ অনুসৰি ত্যাও-খাম্-থিয়ে চুতীয়া ৰাজ্য আক্ৰমণৰ বাবে যাওঁতে ৰাজ্যৰ শাসনভাৰ বৰজনা কুঁৱৰীৰ হাতত সঁপি গৈছিল। সেই সময়ত সকলো জনা কুঁৱৰী গৰ্ভৱতী আছিল। সতি-সন্তান নথকা

বৰজনা কুঁৱৰী ঈৰ্ষান্বিত হৈ এই সময়তে মিছাকৈ কোনো ডাঙৰ অপৰাধত পেলাই সৰু কুঁৱৰীৰ প্ৰাণদণ্ডৰ আদেশ দিয়ে। বুঢ়াগোহাঁয়ে সগৰ্ভা কুঁৱৰীক নাকাটি ভূৰ বান্ধি দিহিঙত উটাই দিয়ে। ভূৰ উটি গৈ হাবুং গাওঁ পালেগৈ। তাতে এঘৰ বামুণে কুঁৱৰীক প্ৰতিপাল কৰে এওঁৰ ঘৰতে এটি পুত্ৰ সন্তান জন্ম দিয়ে। কিছু দিন পাচত কুঁৱৰীৰ মৃত্যু হোৱাত লৰাটিক বামুণীয়ে ডাঙৰ-দীঘল কৰে। ত্যাও-খাম্-খি যেতিয়া চুতীয়া ৰজাক যুদ্ধত ঘটুৱাই আহি সকলো কথা গম পালে যদিও সৰু কুঁৱৰীক অন্যায়ভাৱে প্ৰাণদণ্ড দিয়া কথা গম পাইও বৰকুঁৱৰীক একো নোকোৱাত পাত্ৰমন্ত্ৰীসকলে তেওঁক হত্যা কৰে।

ত্যাও-খাম্-খিৰ হত্যাৰ পাচত ন বছৰ ধৰি আহোম ৰাজপাট শূন্য হৈ থকিল। এই কালছোৱাত আগৰ বাৰৰ দৰেই পাত্ৰমন্ত্ৰীসকলে ৰাজকাৰ্য চলাইছিল।

৮। চ্যু-ডাং-ফা (১৩৯৭-১৪০৭ খ্ৰিঃ)

অৱশেষত থাও-চেও-থেনে গৰু কিনিবলৈ লুইতৰ সিপাৰে যাওঁতে- চ্যু-ডাং-ফাক দেখি আহোম ৰাজপৰিয়ালৰ সন্তান বুলি জানি ডাঙৰীয়াসকলক বিদিত কৰিলে। 'ডাঙৰীয়াসকলেও বিচাৰ কৰি উপযুক্ত পাই তেওঁকে আহোমৰ ৰজা পাতে। চ্যু-ডাং-ফা ৰাজধানীলৈ আহোঁতে তেওঁক পালন কৰা বামুণ মানুহঘৰো লগত আনিছিল। বামুণৰ ঘৰত পালিত হোৱা বাবে এওঁক “বামুণী কোঁৱৰ” বুলিও জনা যায়। তিপামত থকা আহোমসকলে চ্যু-ডাং-ফাক আহোমৰ ৰজা হিচাবে মানি ল'বলৈ টান পাই বিদ্ৰোহ কৰাত চ্যু-ডাং-ফাই তেওঁলোকৰ মুখিয়াল লোকক ভোজলৈ বুলি মাতি আনি হত্যা কৰে। তাৰে এজন বিদ্ৰোহী পলাই গৈ নৰা ৰজা চ্যু-ৰেন্-ফাৰ ওচৰত আশ্ৰয় লয়। তিপমীয়া গোহাঁয়ে যাতে ভৱিষ্যতে বিদ্ৰোহ কৰিব নোৱাৰে তাৰ বাবে তেওঁৰ ছোৱালী চ্যু-ডাং-ফাই বিয়া কৰায়। ইয়াৰ পাচত ত্যাও-চুলাই, তেমে-ৰাও আৰু টাই-তিপাম কোঁৱৰে বিদ্ৰোহ কৰি নৰা ৰজা চ্যু-ৰেন-ফাৰ ওচৰলৈ পলাই গ'ল। তেওঁলোকে নৰা ৰজাক জনালে যে আহোম ৰাজ্যত এতিয়া তেওঁৰ জ্ঞাতি-ভাইসকল ৰজা নহয়, বামুণীয়া কোঁৱৰ এজনেহে ৰাজপাট অধিকাৰ কৰি ল'লে। নৰা ৰজাই এই কথা শুনি তেওঁলোক তিনিজনৰ লগত তাচিন-প্ৰাওৰ অধীনত এদল সৈন্য পঠাই দিলে। সৈন্য দলটো আহি তিপামৰ কুঁহিয়াৰবাৰীত কোঁঠ দি ৰ'লহি। এই খবৰ পাই চ্যু-ডাং-ফায়ে থাও-মুং তাত্যানকিনৰ সৈতে সৈন্যে আক্ৰমণকাৰী দলক ভেঁটা দিবলৈ আওৱাই গ'ল। যুদ্ধত নোৱাৰি

নৰা সৈন্য হুঁহকি গ'ল। এনেতে নৰা ৰজাই আহোম ৰাজপাটত আহোম ৰাজবংশৰ ৰজা থকা গম পাই নঙ্গ-এগঙ্গ বিলৰ ওচৰত এক চুক্তিত নিবদ্ধ হ'ল। চুক্তি মতে দৈ-কাউ-ৰঙ্গ দুয়ো দেশৰ সীমা নিৰ্ধাৰিত হ'ল। ভৱিষ্যতেও সীমা উল্লংঘ্য নকৰিবলৈ অঙ্গীকাৰ কৰিলে। তেতিয়াৰে পৰা দৈ-কাউ-ৰঙ্গ পাটকাই চেংকান (কুকুৰা কাটি শপত খোৱা) বুলি জনাজাত হ'ল। পাচলৈ কেৱল পাটকাই নামটোহে থাকিল গৈ। নৰা ৰজাৰ লগ হৈ কোনো ফল নধৰাত ত্যাগ-চুলাই, টাই-তিপাম কোঁৱৰ তাৰ পৰা কমতা ৰাজ্যলৈ গৈ তাত আশ্ৰয় লয়। কমতেশ্বৰে এওঁলোকক লগ নিদি পূৰ্বৰ আনুগত্য অটুট থকাৰ প্ৰমাণ স্বৰূপে আহোম ৰজা চ্যু-ডাং-ফালৈ নিজৰ জীয়েক ভাজনীক বিয়া দিয়ে।

চ্যু-ডাং-ফাই চৰাইদেউৰ পৰা ৰাজধানী তুলি আনি দিহিং নদীৰ পাৰত চৰগুৱা নামে ঠাইত পাতে। কথিত আছে যে তেওঁৱেই পোন প্ৰথমবাৰৰ বাবে শিঙৰি ঘৰ সজাই শিঙৰি ঘৰত উঠি আহোম সিংহাসনত বহে। এওঁ ১০ বছৰ কাল ৰাজত্ব কৰিছিল।

৯। চ্যু-জাং-ফা (১৪০৯-১৪২২ খ্ৰিঃ)

চ্যু-ডাং-ফাৰ পাচত পুতেক চ্যু-জাং-ফা ৰজা হয়। এওঁৰ দিনত হোৱা কোনো উল্লেখযোগ্য ঘটনা পোৱা নাযায়। এওঁ ১৫ বছৰ ৰাজত্ব কৰিছিল।

১০। চ্যু-ফাক্-ফা (১৪২২-১৪৩৯ খ্ৰিঃ)

চ্যু-জাং-ফাৰ পাচত চ্যু-ফাক্-ফা আহোম ৰাজপাটত উঠে। এওঁৰ দিনতো কোনো উল্লেখযোগ্য ঘটনা হোৱা পোৱা নাযায়। তেওঁৰ ৰাজত্ব কাল আছিল ১৭বছৰ।

১১। চ্যু-চেন্-ফা (১৪৩৯-১৪৮৮ খ্ৰিঃ)

চ্যু-ফাক্-ফাৰ পাচত তেওঁৰ পুতেক চ্যু-চেন্-ফা ৰজা হয়। টংচু নগাই বিদ্ৰোহ কৰাত চ্যু-চেন্-ফাই এদল সৈন্য সিহঁতৰ বিৰুদ্ধে পঠালত ভয় খাই “বৰিলৌ” বুলি শপত খালে। পাচত আহোম সৈন্যৰ অসাৱধানতাৰ সুযোগ লৈ পুনৰ বিদ্ৰোহ কৰি বহু সৈন্য মাৰিলে। এওঁ ৩৯ বছৰ কাল ৰাজত্ব কৰিছিল।

— ড° আই. এচ. মমতাজা

দ্বিতীয় অধ্যায়

প্ৰাচীন অসমৰ অৰ্থনৈতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস (আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ খৃষ্টাব্দলৈ)

(ক)

(১) প্ৰাচীন অসমৰ সমাজ ব্যৱস্থা

প্ৰাচীন কালত অসম ৰাজ্যৰ নাম অসম নাছিল। আহোম ফৈদে চুকাফাৰ নেতৃত্বত ১২২৮ খৃষ্টাব্দত অসমত আহি ৰাজত্ব কৰাৰ পিচতহে এই ভূখণ্ডৰ নাম অসম হয়। আহোমসকল অসমলৈ অহাৰ আগতে এই ভূখণ্ডৰ নাম কামৰূপ বা প্ৰাগ্জ্যোতিষ আছিল। অঞ্চল বিশেষে বেলেগ বেলেগ ফৈদৰ ৰজাই ইয়াত ৰাজত্ব কৰিছিল। প্ৰাচীন অসম ৰাজ্যৰ চাৰিসীমা বেলেগ বেলেগ ৰজাৰ ৰাজত্ব কালত বেলেগ বেলেগ আছিল। অৱশ্যে কুমাৰ ভাস্কৰৱৰ্মাৰ দিনত কামৰূপ ৰাজ্যৰ সীমা পশ্চিমে সাগৰ পৰ্যন্ত আছিল। কিন্তু পূৰ্ব দিশে কিমান দূৰলৈ শাসন চলিছিল সঠিকভাৱে কব নোৱাৰি। সমগ্ৰ অসম কোনো কালতে এজন সম্ৰাটৰ শাসনৰ অধীন নাছিল। আহোম মহাৰাজ ৰুদ্ৰসিংহৰ দিনতহে (১৬৯৬-১৭১৪) বৰ্ত্তমানৰ অসম ৰাজ্য (আৰু দাঁতিকাষৰীয়া অঞ্চল) আহোম ৰজাৰ তললৈ আহিছিল।

আহোম ৰজাসকলৰ ৰাজত্ব কালতহে শৃঙ্খলাবদ্ধভাৱে বুৰঞ্জী লিখা হৈছিল। এইবোৰ প্ৰধানতঃ সেই সময়ত ৰাজত্ব কৰা ৰজাসকলৰ কাহিনী হ'লেও এইবোৰৰ পৰা সমকালীন সামাজিক, অৰ্থনৈতিক, জনসাধাৰণৰ ৰীতি-নীতি, দেশ শাসন, অৰ্থব্যৱস্থা আদিৰ বিষয়ে কিছু সমল পোৱা যায়। আহোম যুগৰ আগত এনে ধৰণৰ লিখিত বুৰঞ্জী নাছিল। কিন্তু কাব্য আৰু পুৰাণ আদিত কামৰূপ বা প্ৰাগ্জ্যোতিষ ৰাজ্যৰ উল্লেখ আছে। মুছলমান পৰিব্ৰাজকৰ ৰচনাতো কিছুমান সমল পোৱা যায়। কামৰূপ আৰু প্ৰাগ্জ্যোতিষ নগৰৰ উল্লেখ আছিল। তদুপৰি কামৰূপৰ পৌৰাণিক ৰজা নৰক, ভগদন্ত, বজ্জদন্ত আদিৰ কথা মহাভাৰত, হৰিবংশ, ভাগৱত পুৰাণ

আদিত পোৱা যায়। মহাভাৰতৰ বহু পিচত ৰচিত কালিকা পুৰাণতো (সম্ভৱতঃ ১০ শতিকাৰ) ৰজা নৰকৰ কথা উল্লেখ আছে। মহাকবি বাণভট্টৰ ৰচিত হৰ্ষচৰিতত কামৰূপৰ ৰজা ভাস্কৰৱৰ্মাৰ কথা লিখা আছে। হৰ্ষবৰ্ধনৰ (৬০৬-৬৪৬) ৰাজত্ব কালত চীন পৰিব্ৰাজক হিউৱেন চাং কামৰূপৰ ৰজা ভাস্কৰৱৰ্মাৰ (৫৯৪-৬৫০) আমন্ত্ৰণক্ৰমে কামৰূপ ৰাজ্যলৈ আহি অলপ দিন থাকি বিৱৰণি লিখি থৈ গৈছে। কেইবাজনো চীনদেশৰ পৰিব্ৰাজক পণ্ডিতে তেওঁলোকৰ ৰচিত পুথিত কামৰূপ ৰাজ্যৰ উল্লেখ কৰিছে। কোটিল্যৰ অৰ্থশাস্ত্ৰতো কামৰূপ বা প্ৰাগ্জ্যোতিষ ৰাজ্যৰ কথা আছে। ষোড়শ শতাব্দীত ৰচিত যোগিনীতন্ত্ৰত প্ৰাগ্জ্যোতিষ (বা কামৰূপ) ৰাজ্যৰ চাৰিসীমা এনেদৰে দিছিল— (১) উত্তৰে নেপালৰ কাঞ্চন পৰ্বতমালা; (২) দক্ষিণে ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ সঙ্গমস্থল (মেঘনাৰ লগত); (৩) পশ্চিমে কৰতোয়া নদী; আৰু (৪) পূৱ দিশত দিক্ৰবাসিনী মন্দিৰ। ৰজাসকলৰ দেৱ মন্দিৰ, ব্ৰাহ্মণ পণ্ডিতসকলক খাত দান দিয়া শিলালিপি, তাম্ৰফলিৰ পৰাও কিছু কিছু বিৱৰণ পোৱা যায়। সেই কালত স্থাপিত মন্দিৰ, ভাস্কৰ্য, ধ্বংসাৱশেষৰ পৰাও পুৰণি অসম ৰাজ্যৰ বিৱৰণ পণ্ডিতসকলে সংগ্ৰহ কৰিছে। তেতিয়াৰ প্ৰচলিত মুদ্ৰাৰ পৰাও ৰজাসকলৰ ৰাজত্ব কালৰ সময় জানিব পৰা হৈছিল।

লিখিত বিৱৰণ নাপালেও প্ৰাচীন কালৰ পৰা প্ৰচলিত ফকৰা-যোজনা, লোকগীত আদিৰ পৰাও কিছু কথা জনা গৈছিল। তেনে ধৰণে অসমত প্ৰচলিত ডাকৰ বচনতো কিছু বিৱৰণ পোৱা যায়। লোকগীত, বিহুগীত আদিত সময়ৰ লগে লগে সংযোজন হ'লেও প্ৰাচীন কালত প্ৰচলিত এনে গীতসমূহৰ পৰা মানুহৰ আচাৰ-নীতি, খেতি-বোৱা, খেতি-বাতিৰ সম্বন্ধে কিছু বিৱৰণ পোৱা যায়। কিন্তু আহোম ৰাজত্বৰ আগৰ কালৰ কথাবোৰ সময় অনুসাৰে— কোন ঘটনাৰ পিচত কি ঘটিল— কেতিয়া কি পৰিৱৰ্তন আহিল তাক সময় অনুক্ৰমে সজাব নোৱাৰি। গতিকে আমাৰ এই বিৱৰণ কাল অনুসৰি দিব পৰা নহ'ব— সামগ্ৰিকভাৱে পুৰণি অসমৰ প্ৰচলিত কথাৰহে আলোচনা কৰিব পৰা যাব।

প্ৰাচীন অসমৰ সাম্ৰাজ্যিক ব্যৱস্থা সম্বন্ধে ঐতিহাসিক তথ্য বৰ কম আৰু বহু সময়ত প্ৰাপ্ত তথ্যৰ ভিতৰত সঙ্গতিও নাই— বিশেষকৈ কোন সময়ত কোন ব্যৱস্থা আছিল বা সেইবোৰ ব্যৱস্থাৰ কেতিয়া কেনেদৰে পৰিৱৰ্তন হৈছিল। তথাপি এই সম্বন্ধে কিছু বিৱৰণ মহাভাৰত, কালিকা পুৰাণ, যোগিনী তন্ত্ৰ, শিলালিপি, তামৰ ফলি, পুৰণি স্মৃতিচিহ্ন যেনে :- দেৱালয়, বিগ্ৰহ

ইত্যাদি) আদিৰ পৰা সংগ্ৰহ কৰা হয়। তদুপৰি পৰিব্ৰাজকসকলৰ টোকাৰ পৰাও কিছু তথ্য পোৱা যায়।

প্ৰাচীন কালত কামৰূপ ৰাজ্যত অধিবাসীসকল কামাখ্যা মাতৃৰ উপাসক আছিল। নৰকাসুৰেহে প্ৰথমতে কামাখ্যা গোসাঁনীৰ পূজা সমাজত আনুষ্ঠানিকভাৱে প্ৰচলিত কৰে যদিও তাৰ আগতে জনজাতিসকলৰ মাজত এনে ধৰণৰ মাতৃপূজা কোনো পীঠ স্থানত (চেপেটা শিলত থকা অৱয়ব বা প্ৰতীক জলপ্ৰসৱন আদি) চলি থকা বুলি ভাবিবৰ থল আছে। পঞ্চম শতিকাত ৰাজ-পৃষ্ঠপোষকতাত (বলৰমা ৪০৫-২০) পশ্চিমৰ অন্য প্ৰান্তৰ পৰা (কনৌজ, মিথিলা আদি) ব্ৰাহ্মণ-সম্প্ৰদায়সকলক অনাৰ তথ্য পোৱা যায় (ভাস্কৰবৰ্মাৰ নিধনপুৰ দান-পত্ৰ)। পণ্ডিতসকলে অনুমান কৰে যে কামৰূপ ৰাজ্যত পঞ্চম শতিকাৰ পিচতহে আৰ্য ব্ৰাহ্মণ্য ধৰ্মৰ প্ৰভাৱ পৰিলক্ষিত হয়। কলিতাসকলেও আন ৰাজ্যৰ পৰা আহি কামৰূপ ৰাজ্যত আৰ্য সভ্যতা বিস্তাৰ কৰাত সহায় কৰিছিল। মুঠৰ ওপৰত দ্বাদশ শতিকাৰ আগলৈকে পশ্চিমৰ পৰা অহা জনশ্ৰোতে কামৰূপ ৰাজ্যত আৰ্য সংস্কৃতি, ধৰ্মৰ আচাৰ-ৰীতি, পূজা-পাতল আদিৰ বিস্তাৰ কৰা বুলি বিশ্বাস হয়। অৱশ্যে পিচৰ কালতো কোঁচ আৰু আহোম ৰজাসকলৰ দিনত পশ্চিমৰ পৰা ব্ৰাহ্মণ পণ্ডিত, দীক্ষা গুৰু, কায়স্থ, ক্ষত্ৰিয় আদি নানা শ্ৰেণীৰ লোক আহি ৰজাৰ পৃষ্ঠপোষকতাত (মাটিদান, নিযুক্তি আদি) নানা বৃত্তিত নিযুক্ত হৈছিল। মোগল আক্ৰমণৰ (প্ৰধানতঃ মীৰ জুমলাৰ আক্ৰমণ ১৬৬১ খৃঃত গড়গাওঁ দখল) সময়ত আক্ৰমণকাৰীৰ লগত অহা সৈনিক, যোগালি আদি আৰু বঙ্গদেশৰ পিচ পৰা হিন্দুসমাজৰ বহুসংখ্যক মানুহ উদাৰ ইচলাম ধৰ্মত দীক্ষিত হৈ অসমলৈ আহি ইয়াত নিগাজীকৈ বসবাস কৰিবলৈ ল'লে। পঞ্চদশ শতিকাত আৰ্ৱিভাৱ হোৱা মহাপুৰুষ শ্ৰীশ্ৰীশঙ্কৰদেৱৰ প্ৰভাৱ আৰু আদৰ্শই বহু মানুহক অনুপ্ৰাণিত কৰিছিল আৰু পঞ্চদশ শতাব্দীৰ পিচৰ পৰা বৈষ্ণৱ নাম-ধৰ্মই হিন্দু সমাজৰ এক বুজন সংখ্যাৰ লোকক প্ৰভাৱিত কৰিছিল। এই নাম-ধৰ্ম প্ৰচাৰৰ লগে লগে বহুতো ধৰ্ম-গ্ৰন্থ—বিশেষকৈ ভক্তিমূলক সুৰ ধৰি গাব পৰা কাব্য সাহিত্য গঢ়ি উঠিছিল।

পঞ্চদশ শতাব্দীৰ আগতে অসমত বৈষ্ণৱ ভাগৱতী ধৰ্মৰ প্ৰভাৱ বিশেষ নাছিল যদিও বিষ্ণু মূৰ্ত্তি কেইবাটাও পোৱা গৈছে। কামৰূপ ৰাজ্যত অতীজৰ পৰা প্ৰায় দ্বাদশ শতাব্দীলৈ শাক্ত ধৰ্ম, শক্তি (আৰু লগতে শিৱ) পূজা, বলি-বিধান, প্ৰাকৃতিক আশ্চৰ্যজনিত (যেনে : শিল, গছ-গছনি, সৰীসৃপ আদি বেমাৰ-আজাৰ প্ৰকোপত সেইসকলক দেৱতা ৰূপে) পূজা চলিছিল। অসমৰ নিগাজী অধিবাসী

আৰু বাহিৰৰ পৰা অহা ব্ৰাহ্মণ, কায়স্থ আদিৰ সংমিশ্ৰণে এক উদাৰ ধৰ্মমত আৰু আচাৰ-নীতি গঢ়ি তুলিছিল।

দেৱ-দেৱীৰ পূজা উপলক্ষে সেইসকলৰ আৰাধনাৰ বাবে আই নাম, ওজাপালি গীত আদি জনসাধাৰণৰ মাজত প্ৰচলিত আছিল। কিন্তু মহাপুৰুষ শঙ্কৰদেৱৰ প্ৰচাৰিত সামূহিকভাৱে সকলোৱে সহজে অংশ গ্ৰহণ কৰিব পৰা নাম-গুণৰ ধৰ্মৰ সত্ত্বে পোৱা নাযায়। শিলালিপিসমূহত কুন্তকাৰ (কুমাৰ), তন্তুৰায় (বোৱনী), নৌকি (নাৱৰীয়া) আৰু দণ্ডি (নাৱৰ বঠা মৰা লোক) আদি বৃত্তিৰ উল্লেখ আছে। প্ৰাচীন অসমত অৱশ্যে জাতিভেদ প্ৰথা বঙ্গদেশ বা চিলেট জিলাৰ দৰে প্ৰবল নাছিল আৰু বঙ্গদেশত প্ৰচলিত কৌলিন্য প্ৰথাও নাছিল।

পুৰণি কামৰূপত বিবাহ ব্যৱস্থা কেনেদৰে প্ৰচলিত আছিল তাৰ সবিশেষ বিৱৰণ পোৱা নাযায়। হিন্দু শাস্ত্ৰত উল্লেখিত আঠ বিধ বিবাহৰ (ব্ৰাহ্ম, প্ৰাজাপত্য, দৈৱ, আৰ্য, আসুৰ, গান্ধৰ্ব, ৰাক্ষস আৰু পৈশাচ) ভিতৰত আসুৰ বিবাহ (কন্যাৰ মূল্য দি বিবাহ) আৰ্যসকলৰ মাজত প্ৰচলিত আছিল। অৱশ্যে উচ্চ বৰ্ণৰ হিন্দু সমাজত ব্ৰাহ্ম আৰু প্ৰাজাপত্য বিবাহ প্ৰচলিত আছিল। ইয়াত পিতৃয়ে কন্যাদান কৰিছিল। পৰ্বতীয়া জনজাতি সম্প্ৰদায়ৰ লোকসকলকৰ মাজত তেওঁলোকৰ ফৈদৰ প্ৰচলিত নিয়ম অনুসৰি বিবাহ হৈছিল। বহুতৰ মাজত ছোৱালীক ফুচুলাই নি বা বলপূৰ্বকভাৱে নিও বিবাহ কৰা হৈছিল। সমাজত এনেদৰে ল'ৰা-ছোৱালীৰ মিল হ'লে তাক হৈ যোৱা ঘটনা (defacto) বুলি স্বীকৃতি দিছিল— দৰা-কন্যাক সমাজৰ আগত আঁঠু লৈ আৰু ভোজ-ভাত খুৱাই এনে স্বীকৃতি আদায় কৰিছিল। এনে বিবাহত দেৱ-দেৱীৰ পূজা-পাতল, যাগ-যজ্ঞ আদিতকৈ সমাজক সন্মান জনাই স্বীকৃতি আদায় কৰাতহে প্ৰাধান্য দিছিল।

খাচিয়া আৰু গাৰো জনজাতিৰ মাজত মাতৃপ্ৰধান ব্যৱস্থা প্ৰচলিত থকা বাবে তাত কন্যাৰ সলনি দৰাহে ছোৱালীৰ ঘৰত গৈ থাকিব লাগে। ছোৱালীৰ ঘৰত কাম-বন কৰি খাটনি ধৰি, ভাৰ-ভেটী খুৱাই ল'ৰাই ছোৱালীৰ মাকক সন্তুষ্ট কৰিলেহে বিয়া কৰাব পাৰে। মাতৃপ্ৰধান গাৰো, খাচি আদি জনজাতিৰ মাজত পৰিয়ালৰ সম্পত্তি ছোৱালীৰ ভাগতহে পৰে। হিন্দুৰ উচ্চ বৰ্ণৰ মাজত সপিণ্ড সম্পৰ্ক থকা দৰা-কইনাৰ মাজত বিবাহ নিষিদ্ধ। এইবোৰ প্ৰথা এতিয়াও চলি আছে। বহুতো মন্দিৰত আগতে ধকা দেৱদাসী প্ৰথা (বিপ্ৰহৰ আগত নচা) আজিকালি লুপ্ত হৈছে। অৱশ্যে দেৱদাসী প্ৰথা থকা বাবে প্ৰাচীন কামৰূপ ৰাজ্যত নৃত্য-গীতৰ যথেষ্ট চৰ্চা হৈছিল বুলি ধাৰণা কৰিব পাৰি।

(২) খাদ্য দ্ৰব্য আৰু উদ্ভাধিকাৰী স্বত্ব

প্ৰাচীন কামৰূপ ৰাজ্যৰ জনসাধাৰণৰ খাদ্য-দ্ৰব্য আদিৰ কিছুমান বিৱৰণ প্ৰাচীন সাহিত্য, কাব্যগ্ৰন্থ, ফকৰা-যোজনাৰ পৰা সংগ্ৰহ কৰিব পাৰি। *যোগিনী তন্ত্ৰ*ত হাঁহ, পাৰ, কাছ, হৰিণা, মতা ছাগলী আৰু বনৰীয়া গাহৰিৰ মাংস খোৱাটো সমৰ্থন কৰা হৈছিল। গাঁড়ৰ মাংস খোৱা পুণ্য কাম আছিল। অৱশ্যে বাকলি নথকা মাছ বা সৰ্প আকৃতিৰ মাছ বা বোকাতে পোত গৈ থকা মাছ (যেনে : কুঁচিয়া, বামী, তোৰা আদি) উচ্চ বৰ্ণৰ মানুহে নাখাইছিল। পৰিত্ৰাজক ট্ৰেভেৰ্নিয়াৰে (Travernier) কামৰূপ ৰাজ্যত কল গছৰ পৰা লোণ (কলাখাৰ) প্ৰস্তুত কৰা কথা লিপিবদ্ধ কৰি গৈছে (P. C. Choudhury, পৃষ্ঠা ৩২৭)। বনৰীয়া গাহৰিৰ মাংস পচলাৰ লগত ৰান্ধি সুস্বাদু খাদ্য কিছু লোকে প্ৰস্তুত কৰিছিল। কামৰূপ ৰাজ্যত কল, কঁঠাল, জামু, বেল, আমলখি, বগৰি, ডিমৰু, সুমথিৰা, কৰ্জা টেঙা, ঔ টেঙা, ডামোল-পাণ আদিৰ খেতি হৈছিল। প্ৰচুৰ পৰিমাণে থকা বাঁহ গছৰ গাজৰ পৰা খৰিচা তৈয়াৰ কৰিছিল আৰু আন-ব্যঞ্জনো প্ৰস্তুত কৰিছিল। সেই যুগত আলু, পটল, কবি আদিৰ খেতি নহৈছিল। ধানৰ খেতি সকলো ঠাইতে হৈছিল। কিন্তু ঘেঁহুৰ খেতি সম্বন্ধে তথ্য নাই। ইতিহাস পুথিত দাইলৰ (pulses) উল্লেখ থাকিলেও কি বিধৰ দাইলৰ খেতি কিমান পৰিমাণত কৰা হৈছিল তাৰ উল্লেখ নাই। কিন্তু অসমীয়া সমাজত পূৰ্বৰে পৰা আদৰ পাই অহা মাটি-মাহ প্ৰচুৰ পৰিমাণে উৎপন্ন হৈছিল যে তাত সন্দেহ নাই। খেচাৰি দাইল হয়তো শালি ধানৰ লগতে কৰিছিল; অৰহৰ আদি হয়তো পাহাৰৰ নামনি অঞ্চলত সামান্য পৰিমাণে হৈছিল। মচলা হিচাপে তেজপাত, আদা, হালধি, জালুক, জীৰা, পিপলি, কপূৰ, সৰিয়হ আদিৰ খেতি কৰিছিল। গৰু আৰু ম'হৰ গাখীৰৰ পৰা দৈ, পায়স, ঘিঁউ আদি প্ৰস্তুত কৰা হৈছিল। চাউলৰ গুৰি আৰু শুড়ৰ যোগে নানাবিধ পিঠা তৈয়াৰ কৰা হৈছিল।

উদ্ভাধিকাৰী স্বত্বৰ ক্ষেত্ৰত অনুমান কৰা হৈছে যে প্ৰাচীন কামৰূপ ৰাজ্যত উচ্চ বৰ্ণৰ হিন্দু বা ডা-ডাঙৰীয়াৰ মাজত মিতাক্ষৰা ৰীতিমতে সম্পত্তিৰ উদ্ভাধিকাৰী হৈছিল। ল'ৰা সন্তান জন্মৰ সময়তে সম্পত্তিৰ উদ্ভাধিকাৰী হৈছিল। দায়ভাগ প্ৰথাৰ প্ৰৱৰ্তক জীমূতবাহন ত্ৰয়োদশ শতাব্দীৰ লোক আছিল। এইমতে পিতৃৰ মৃত্যুৰ পিচতহে ল'ৰা সন্তানে সম্পত্তিৰ অধিকাৰ লাভ কৰিছিল। অসমত পঞ্চদশ শতাব্দীৰ পিচতহে হিন্দুৰ মাজত দায়ভাগ প্ৰথা প্ৰচলিত হয়। অৱশ্যে প্ৰাচীন কামৰূপত নিগাজী অধিবাসীসকলৰ (যেনে : কছাৰী আৰু আন জনজাতিসকলৰ)

প্ৰচলিত সুকীয়া ৰীতিমতে সম্পত্তিৰ অধিকাৰ পাইছিল। কছাৰীসকলৰ মাজত আন হিন্দুৰ দৰে পুত্ৰ সন্তানৰ জৰিয়তে সম্পত্তি হস্তান্তৰ হৈছিল। অৱশ্যে সকলো সম্প্ৰদায়ৰ মাজত পিতৃয়ে পুত্ৰক বঞ্চিত কৰা অধিকাৰো আছিল।

জনজাতিৰ মাজত মৃত ব্যক্তিক দাহন কৰা বা মাটিত প্ৰোথিত কৰা দুয়োটা নিয়মেই প্ৰচলিত আছিল। অৱশ্যে বেলেগ বেলেগ হিন্দুৰ সুকীয়া নিয়ম আছিল। হিন্দুসকলে আচাৰগতভাৱে মৃতদেহ দাহন কৰিছিল।

(৩) কৃষি ব্যৱস্থা

অতি প্ৰাচীন কালত মানৱ সমাজত নানা বিধৰ জন্তু (যেনে : গৰু, ঘোঁৰা, ছাগলী, কুকুৰ আদি) ঘৰচীয়া কৰাৰ আগতে নদী উপত্যকাত স্থায়ীভাৱে বসবাস কৰাৰো আগতে আদিম মানৱে জন্তু চিকাৰ কৰি আৰু হাবি-বননিৰ পৰা ফলমূল গোটাই বন-জঙঘলে ঘূৰি ফুৰি যাবাবৰ জীৱন যাপন কৰিছিল। এতিয়াও অৰুণাচল প্ৰদেশ, নাগাভূমি, মিজোৰাম আদি ৰাজ্যত পৰ্বতীয়া অঞ্চলৰ আদিবাসীৰ মাজত চিকাৰৰ পৰা মাংস সংগ্ৰহ কৰি, মাছ মাৰি, বনৰীয়া ফল (যেনে : টেঙা, জামু, বগৰি আদি), শাক-পাচলি (যেনে : টেকিয়া, কচু, ওল আদি) আদি সংগ্ৰহ কৰি প্ৰয়োজনীয় খাদ্য-দ্ৰব্য যুগুত কৰা ব্যৱস্থা চলি আছে। পৰ্বতীয়া অঞ্চলত খেতিৰ মাটিৰ ওপৰত খেতিয়কৰ মালিকী স্বত্ব নাই। কাৰণ এইবোৰ ঠাইত কোনো স্থায়ী বসতি আৰু স্থায়ী খেতি-বাতি নাছিল। কিন্তু পৰ্বতৰ নামনি এঢলীয়া অঞ্চলত খেতিৰ মাটি প্ৰয়োজন অনুসৰি পাইছিল। গাৱঁৰ মুৰব্বীজনে বা পঞ্চায়তে পৰিয়ালৰ মানুহৰ সংখ্যা অনুসৰি খেতি কৰিবলৈ মাটি দিছিল। সাধাৰণতে তেওঁলোকে জুমখেতি কৰিছিল। এই ব্যৱস্থাত পৰ্বতৰ নামনি অঞ্চলতে প্ৰথমতে গাৱঁৰ সকলোৱে মিলি হাবি-বননি কাটি চফা কৰিছিল আৰু পিচত শুকান গছপাত পুৰি পেলাইছিল। তাৰ পিচত প্ৰত্যেক পৰিয়ালৰ মানুহৰ সংখ্যা অনুসৰি মাটি ভাগ কৰি দিছিল। জোঙা বাঁহ, কাঠ, শিল, বা লোৰ শলাৰে সৰু সৰু গাঁত কৰি নানা তৰহৰ শস্যৰ বীজ ৰোপণ কৰিছিল। এনেদৰে একেডোখৰ মাটিৰ পৰাই কেইবা বিধৰ শস্য উৎপন্ন কৰিব পাৰিছিল। কিন্তু মাটিৰ উৰ্বৰা শক্তি হ্ৰাস পোৱাৰ লগে লগে (৩ বছৰমানৰ পিচত) সেই ঠাইত খেতি কৰা কৃষকে নতুন মাটিৰ সন্ধানত অন্য ঠাইলৈ উঠি গৈছিল। এনেভাৱে ৩/৪ বছৰ খেতি কৰাৰ পাচত (অৰ্থাৎ ১৫/২০ বছৰৰ মূৰত) পুনৰ আগৰ ঠাইলৈ ঘূৰি আহিব পাৰিছিল। কাৰণ এৰি যোৱা মাটিত ইতিমধ্যে গছ-বন গজি আৰব খৰে। সেই ঠাইলৈ ঘূৰি আহি পুনৰ গছ-বন কটা,

পোৰা আৰু বীজ ৰোপণ আৰম্ভ কৰা হয়। আগৰ কালত প্ৰচুৰ পৰিমাণে অনাবাদী কৃষি উপযোগী মাটি আছিল বাবে জুম চক্ৰ এটা প্ৰায় ২০/২২ বছৰ মূৰে মূৰে হৈছিল। কিন্তু আজিকালি জনসংখ্যাৰ তুলনাত মাটি কমি অহাত ৮/১০ বছৰতে আগৰ ঠাইলৈ ঘূৰি আহিব লাগে। এতিয়া চৰকাৰে যদিও জুমখেতি নিয়ন্ত্ৰণৰ বাবে (বানপানী, মাটি-খহনীয়া প্ৰতিৰোধ কৰাৰ অৰ্থে) বহুতো ব্যৱস্থা লৈছে তথাপিহে, স্থায়ী খেতি কৰাৰ অসুবিধাৰ বাবে, ঠায়ে ঠায়ে জুম খেতি এতিয়াও চলি আছে। মিশ্ৰ শস্য উৎপাদন কৰাৰ ফলত একেডৰা মাটিতে পৰিয়ালৰ প্ৰয়োজনীয় ধান, গোম ধান, আদা, জলকীয়া, নানা তৰহৰ মাহ, পাচলি পোৱা যায়।

প্ৰাচীন অসমৰ সমভূমি অঞ্চলত নদীৰ পাৰে পাৰে খৰালি কালত সৰিয়হ, তিল, মাটিমাহ, বাওধান আদিৰ খেতি কৰা হৈছিল। এনেবোৰ মাটিত চৰকাৰৰ পৰা কোনো অধিকাৰ দিয়া হোৱা নাছিল। বাৰিষা কালত, তাত খেতি কৰি থকা লোক নিজৰ ঘৰলৈ উভটি আহিছিল। এনে প্ৰথা এতিয়াও ঠায়ে ঠায়ে পাম পাতি (অস্থায়ী বাসগৃহ কৰি শস্যৰ বীজ ছটিয়াই দিয়াৰ পৰা তাক চপোৱালৈকে) খেতি কৰা বুলি জনাজাত।

সমভূমি অঞ্চলত কাঠৰ নাঙল ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। কিছুমানে তাত লোৰ ফাল লগাই লৈছিল। গঁড়ৰ দাঁত বা খড়গও নাঙলৰ ফাল হিচাপে ব্যৱহাৰ হৈছিল। সাধাৰণতে অসমত বলদ গৰুৱেহে নাঙল টানিছিল।

ষষ্ঠ শতাব্দীত অসমৰ সকলো ঠাইতে ধানৰ খেতি কৰাৰ উল্লেখ পোৱা যায়। সেই সময়ত ৰজাঘৰে দান দিয়া মাটিৰ পৰিমাণ ধানৰ মাত্ৰাত স্থিৰ কৰা হৈছিল। এদোন (প্ৰায় $8\frac{1}{2}$ কিলোগ্ৰাম) ধানৰ বীজ প্ৰায় এবিঘা মাটিত সিঁচিব পৰা গৈছিল। অসমত অতীজৰ পৰাই ধান, মাহ, সৰিয়হ আদি সিঁচি দিয়া পদ্ধতিত (broad cast) খেতি কৰা হৈছিল। অতীজতে ধানৰ কঠীয়া পাৰি খেতি কৰা পদ্ধতি বোধকৰোঁ নাছিল। ইয়াৰ কাৰণ, অপৰ্যাপ্ত পৰিমাণে সাৰুৱা, অনাবাদী খেতিৰ মাটি পোৱা গৈছিল। প্ৰথমতে বোকাত কঠীয়া সিঁচি পিচত গোট গোট কৰি আন খেতি মাটি বোকা কৰি এগোছ এগোছ কৰি খেতি কৰাৰ প্ৰয়োজন নাছিল। পিচলৈ চীন, গাৰ্মা, থাইলেণ্ড আদিত এনে ধৰণে খেতি কৰি বেছি উৎপাদনৰ কথা গম পাই অসমৰ খেতিয়কেও কিজানি এই পদ্ধতি গ্ৰহণ কৰিছিল। বহুতে অৱশ্যে অসম আৰু অৰুণাচলতেই প্ৰথমতে ধান আৱিষ্কাৰ হৈছিল বুলি কয়। কিন্তু কঠীয়া পাৰি খেতি কৰাটো পিচত অহা কলা- কৌশল।

কুঁহিয়াৰৰ খেতি আৰু কুঁহিয়াৰৰ পৰা গুড় প্ৰস্তুত কৰা হৈছিল। পৰিত্ৰাজক হিউয়েন-চাঙৰ ভ্ৰমণ বিৱৰণিত পোৱা যায় যে ভাস্কৰৰমাই হৰ্ষবৰ্ধনলৈ কুঁহিয়াৰৰ গুড় মাটিৰ ভাওত পঠিয়াইছিল। অসমত ৰঙা, বগা আৰু নানা বৰণৰ কুঁহিয়াৰৰ খেতি হৈছিল আৰু ইয়াৰ গুড় সুস্বাদু আছিল (Qazimৰ উক্তি— P. C. Choudhury, পৃ: ৩৩৫)।

শাক-পাচলিৰ ভিতৰত জাতিলাউ, ৰঙালাউ, কোমোৰা, বেঙ্গেনা, উৰহী, লাইশাক, কচু, ওল, কাঠ আলু আদি প্ৰধান আছিল। ফলমূল, মচলা আদিৰ কথা আগতে উল্লেখ কৰা হৈছে। কিছুমান ফলমূল ঘৰতে ৰোপণ কৰি উৎপাদন কৰা হৈছিল, কিন্তু আন কিছুমান (যেনে : আমলখি, ঔটেঙা, তেঁতেলি, তেজপাত আদি) হাবি-বননিৰ পৰা সংগ্ৰহ কৰা হৈছিল। হিউৱেন-চাঙৰ বৰ্ণনাত কামৰূপ ৰাজ্যত কঁঠাল আৰু নাৰিকল বৰ প্ৰিয় ফল আছিল বুলি উল্লেখ কৰা আছে। সাঁচিগছৰ পৰা সুগন্ধি আগৰ প্ৰস্তুত কৰা হৈছিল।

সেই সময়ত জনসাধাৰণে সাধাৰণতে বছৰত প্ৰধান খেতি এটাহে কৰিছিল। সেইটো ধান আছিল। বাকী সময়ত অলপ মাটিত শাক-পাচলি, কুঁহিয়াৰ, দাইল আদিৰ খেতি কৰিছিল। শালি ধানতে অধিক জোৰ দিয়া হৈছিল। একেডৰা মাটিতে বছৰৰ বেলেগ বেলেগ সময়ত বেলেগ বেলেগ খেতিৰে আগুৰি ৰখা প্ৰথা নাছিল। যিহেতু খেতিৰ উপযুক্ত মাটি আছিল অপৰ্য্যপ্ত গতিকে মাটিৰ উৰ্বৰা শক্তিও আছিল প্ৰচুৰ। ধানৰ এটা খেতি ভালকৈ কৰিলেই পৰিয়ালৰ খাবলৈ হৈছিল। শস্য বেচা-কিনা ব্যাপক নাছিল বাবে অধিক উৎপাদনৰ শস্য পোৱা ঠাইত শস্য বিক্ৰী কৰাত অসুবিধা আছিল।

খেতি পথাৰত প্ৰাচীন কালতো জলসিঞ্চনৰ ব্যৱস্থা আছিল। কামৰূপৰ ৰজাসকলে মাটি দান দিয়া দানপাত্ৰত উল্লেখিত “সজলস্থ”, “জল”, “গৰ্ত” আদি শব্দৰ প্ৰয়োগৰ পৰা খেতিৰ মাটিত পানী যোগান ধৰা হৈছিল বুলি বুজিব পাৰি। সপ্তম শতাব্দীত হিউৱেন-চাঙে বৰ্ণনা কৰা মতে নদী বা ওখ পাৰ থকা পুখুৰীৰ পৰা নগৰৰ চাৰিওপিনে পানী বোৱাই নিছিল। ইয়াৰ দ্বাৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে খেতিৰ মাটিত পানীৰ যোগান ধৰা হৈছিল। আজিও জনজাতি বসতিপূৰ্ণ পাহাৰৰ নামনি অঞ্চলৰ খেতিৰ মাটিত (বিশেষকৈ ভূটান পাহাৰৰ পাদদেশত) ডোং প্ৰথাৰে (সৰু নৈ বা জানত বান্ধ দি) ওচৰৰ খেতি পথাৰলৈ পানী নিয়া হয়। ইয়াৰ ফলত ডোং থকা ঠাই নামনি অঞ্চলৰ খেতিৰ মাটিত প্ৰয়োজনীয় পানীৰ অভাৱ হোৱাৰ

সস্তাৱনা থাকে। কিন্তু এইবোৰ কাম ৰাইজে মুখিয়াল লোকৰ সহায়ত মীমাংসা কৰি লৈছিল যাতে কোনো গাৱঁ স্থায়ীভাৱে ডোং দি পানী বন্ধ কৰিব নোৱাৰে।

ৰাজ কৰ্মচাৰী, ৰজাঘৰীয়া পৰিয়াল, পণ্ডিত, ব্ৰাহ্মণ, কায়স্থ, দেৱালয়ৰ দলৈয়ে (লগতে পুৰোহিত, পৰিচাৰক আদিয়ে) ৰজা ঘৰৰ পৰা মাটি বিনা খাজনাত পাইছিল। এনে মাটি তেওঁলোকে তলতীয়া পৰিচাৰকসকলক খেতি কৰিবলৈ দিছিল আৰু তাৰ পৰা উৎপাদিত শস্যৰ এটা অংশ পাইছিল। তেওঁলোকে তলতীয়া মানুহৰ পৰা বিনা পাৰিশ্ৰমিকত কাম আদায় কৰিব পাৰিছিল। খেতি নকৰা অনাবাদী মাটিত ৰাইজে স্বইচ্ছাই খেতি কৰিব পাৰিছিল। গাৱঁৰ পঞ্চায়ত বা মুখিয়াল মানুহে এনে অনাবাদী মাটি ইচ্ছুক খেতিয়কৰ মাজত খেতি কৰিবলৈ ভাগ কৰি দিছিল। কিন্তু উমৈহতীয়া চৰণীয়া পথাৰ, বিল, দেৱালয়ৰ চাৰিওকাষে থকা মাটি কাকো অধিকাৰ কৰিবলৈ দিয়া নাছিল। দানপত্ৰত উল্লেখিত মাটিৰ বাহিৰে আন ধৰণৰ মাটিৰ কোনো কালি নিৰূপণ কৰি দিয়া নাছিল। গতিকে উৎপাদনৰ অংশহে মাটিৰ গৰাকীয়ে পাইছিল। ৰজা ঘৰত কৰ দিব নালাগিছিল যদিও মুঠ উৎপাদিত শস্যৰ এটা অংশ কৰ হিচাপে নিৰ্ধাৰিত হৈছিল। ডা-ডাঙৰীয়া, মন্দিৰৰ দলৈ, আদিৰ লগতহে মাটি সম্বন্ধে চুক্তি হৈছিল। ৰজাঘৰীয়া অনাবাদী মাটিৰ বাবে খেতিয়কে ৰজাঘৰক দিব লগা খাজনা দিলে একো অসুবিধা ভোগ কৰিব নালাগিছিল।

(৪) চিকাৰ, পশুপালন, মাছধৰা আদি বৃত্তি

চিকাৰ কৰাটো এটা আনন্দদায়ক ৰং-তামচাৰ উপলক্ষ। ইয়াৰ দ্বাৰা বহু পৰিমাণৰ মাছ-মাংসৰ অভাৱ নিজস্ব চেষ্টাতে পূৰণ কৰিব পাৰিছিল। মাংসৰ বাবে বনৰ হৰিণা, বনৰীয়া গাহৰি, বনৰীয়া ম'হ, বনৰীয়া কুকুৰা আদি চিকাৰ কৰা হৈছিল। জাল পাতি হৰিণা, বনৰীয়া গাহৰি আৰু বাঘ ধৰা হৈছিল। বনৰীয়া জন্তুৰ উপদ্ৰৱ নিবাৰণ কৰিবলৈ গাৱঁৰ মানুহে সমূহীয়াভাৱে জুম পাতি বাঘ, হৰিণা, গাহৰি আদি খেদি নি মাৰিছিল বা ঘৰত পুহিব পৰা জন্তু ধৰি আনিছিল। এনে অভিযানত যাঠি, জোং, ধনু-কাঁড়, দা, আদি ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল।

বনৰীয়া হাতী ঘৰচীয়া হাতীৰ সহায়ত ফান্দ পেলাই ধৰা হৈছিল আৰু সিহঁতক প্ৰশিক্ষণ দি ৰজা-মহাৰজা বা আন চহকী লোকক বিক্ৰী কৰা হৈছিল। হাতী ধৰা আৰু প্ৰশিক্ষণ দিয়া মানুহক ফান্দী বোলা হৈছিল। আহোম স্বৰ্গদেউসকলে হাতী যুঁজ, ম'হ যুঁজ, বাঘ-ভালুকৰ যুঁজ, শেন চৰাইৰ যুঁজ, কুকুৰা যুঁজ আদি সমাজ

পাতি চাই ৰং কৰিছিল। ইয়াৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে এনেকুৱা যুঁজ আৰু খেলা আগৰ পৰাই অসমত প্ৰচলিত আছিল আৰু এনেকুৱা খেল-তামচা মানুহৰ মনোৰঞ্জক আছিল। এক শ্ৰেণী মানুহে ৰাইজক মনোৰঞ্জন দি এনেদৰে নিজৰ জীৱিকা উলিয়াইছিল। বনাঞ্চলত গঁড় পোৱা গৈছিল; কিন্তু গঁড় চিকাৰৰ বিৱৰণ পুৰণি সাহিত্যত উল্লেখ নাই। অৱশ্যে গঁড়ৰ খড়্গ ঔষধ আৰু দৈৱ অশাস্তিৰ প্ৰতিষেধক হিচাপে গুণ থকা বুলি বিশ্বাস থকা হেতুকে তাৰ চাহিদা আছিল। আঢ়ৱন্ত পুৰুষেহে এনে দ্ৰব্য লব পাৰিছিল।

সাধাৰণতে বাঁহৰ লাঠী বা টুকুৰাত লো গাঁথি লৈ ডাঙৰ মাছ খুঁচি ধৰা হৈছিল। তদুপৰি জাল বাই, চেপা পাতি, পল, জুলুকি, জাকৈ আদিৰ সহায়ত মাছ ধৰা হৈছিল। মাছ ধৰা বাঁহৰ এই সঁজুলিবোৰ তিব্বতীয় প্ৰভাৱৰ পৰা অসমলৈ অহা বুলি কোৱা হয়। দুই এঠাইত যথেষ্ট পৰিমাণৰ মাছৰ চাহিদা পূৰাবলৈ মাছ থকা নদী-নলাত বিষাক্ত উদ্ভিদ বা লতাৰ ৰস ঢালি দি মাছক লৰচৰ কৰিব নোৱৰাকৈ নিৰ্জীৱ কৰি ধৰি অনা হৈছিল।

গো-পালন ব্যৱস্থা প্ৰাচীন কামৰূপ ৰাজ্যৰ সকলো পৰিয়ালত আছিল। খেতিৰ বাবে বলদ, গাখীৰৰ বাবে গাই আৰু বিল থকা অঞ্চলত ম'হ পোহা হৈছিল। ছাগলীও কিছুমান লোকে ৰাখিছিল। সাধাৰণতে গৰু গাইক গাৱঁৰ ওচৰৰ চৰণীয়া পথাৰত ঘাঁহ খাবলৈ মেলি দিয়া হৈছিল। ঘৰত ধান খেৰ, দল ঘাঁহ, চাউলৰ মলি, দানা, উদ্ভিদ, শাক-পাচলি, সৰিয়হৰ খলিহে আদি খাবলৈ দিয়া হৈছিল।

সম্ভ্ৰান্ত মানুহে অহা-যোৱা কৰিবলৈ আৰু গধুৰ দ্ৰব্য পৰিবহণ কৰিবলৈ হাতী ব্যৱহাৰ কৰিছিল। বনাঞ্চলৰ পৰা কাঠ কঢ়িয়াবলৈ হাতী লগোৱা হৈছিল। ডা-ডাঙৰীয়াৰ ঘৰত হাতী পোহা এটা চখ আছিল। অসমৰ হাবি-বননিত যথেষ্ট কলগছ থকা বাবে আৰু প্ৰামাণ্যলত গছৰ পাত, লতা আদিৰ পৰা হাতীৰ আহাৰ যোগাৰ হৈছিল।

ঘোঁৰাৰ ব্যৱহাৰ বৰ বেছি নাছিল বুলি অনুমান হয়। কুৰুক্ষেত্ৰৰ যুদ্ধত প্ৰাগজ্যোতিষৰ ৰজা ভগদত্তই বহুতো হাতী লৈ যুদ্ধত যোগ দিছিল। সৈন্য-বাহিনীৰ কাৰ্যৰ বাহিৰে অন্য ক্ষেত্ৰত ঘোঁৰা ব্যৱহাৰ কৰাৰ বৰ বেছি প্ৰমাণ নাই। *হৰ্ষচৰিত*ত উল্লেখ আছে যে কামৰূপ ৰাজ্যত বনমানুহ (গৰিলা বা চিম্পাঞ্জী শ্ৰেণীৰ বান্দৰ) চুৰীৰ পছ, (চোঁৱৰৰ বাবে), ধুনীয়া ধুনীয়া ৰঙৰ চৰাই, ভাটো, টিয়া, ম'ৰা আদি আছিল। এইবোৰ প্ৰাকৃতিক সম্পদৰ অন্তৰ্গত।

(৫) শিল্প আৰু উদ্যোগ

কামৰূপ ৰাজ্যৰ পাহাৰীয়া অঞ্চলৰ হাবি-বননিত অপৰ্যাপ্ত পৰিমাণৰ কপাহ উৎপন্ন হৈছিল— বিশেষকৈ গাৰো, খাচি আৰু মিকিৰ পাহাৰত। ব্যক্তিগতভাৱেও মানুহে নিজৰ ঘৰত কেইজোপামান কপাহ গছ ৰুইছিল। বয়ন শিপিনীসকলে ঘৰে ঘৰে কপাহৰ পৰা কাপোৰ প্ৰস্তুত কৰিছিল। *কালিকা পুৰাণ* আৰু *হৰ্ষচৰিত*ত কামৰূপত কপাহৰ কাপোৰ ব্যৱহাৰৰ কথা উল্লেখ আছে। *কালিকা পুৰাণ*ত উলৰ কস্থল, গছৰ বাকলি বা আঁহৰ পৰা প্ৰস্তুত কৰা বস্ত্ৰ, ৰেচমৰ পৰা কোশজ আৰু শণৰ পৰা শণবস্ত্ৰ তৈয়াৰ কৰাৰ কথা আছে। ভাস্কৰৱৰ্মাই, হৰ্ষবৰ্ধনক উপহাৰ হিচাপে অতি মিহি কোমল সুস্ম বস্ত্ৰ দিছিল।

প্ৰাচীন অসমত বহু মানুহৰ ঘৰত এৰী, পাট আৰু মুগাৰ পলু পুহি তাৰ পৰা সূতা প্ৰস্তুত কৰি সেই সূতাৰে ঘৰত বা আনে ক্ৰয় কৰি কাপোৰ তৈয়াৰ কৰিছিল। কোটিল্যৰ *অৰ্থশাস্ত্ৰ*ত (খৃঃ পূঃ তৃতীয় শতাব্দী) কামৰূপ “কোশকৰণ ভূমি” বা পলু পোহা ৰাজ্য বুলি উল্লেখ আছে। গ্ৰীক পৰ্যটকেও অসমত বহু বৰণীয়া মুগা কাপোৰ পোৱাৰ কথা লিপিবদ্ধ কৰি গৈছে। বাণভট্টৰ *হৰ্ষচৰিত*ত ভাস্কৰৱৰ্মাই অসমত প্ৰস্তুত হোৱা জোনাকৰ দৰে বিমল, শুভ্ৰ ক্ষৌম বস্ত্ৰ (পাট কাপোৰ) হৰ্ষবৰ্ধনক উপহাৰ ৰূপে দিয়াৰ কথা উল্লেখ আছে। ভাস্কৰৱৰ্মাই অসমৰ ৰেচমৰ পৰা প্ৰস্তুত পটুসূত্ৰ, দুকূল বস্ত্ৰেৰে ঢকা ছত্ৰও উপহাৰ হিচাপে হৰ্ষবৰ্ধনক দিছিল।

প্ৰাচীন অসমত নানা ৰঙৰ কাপোৰ তৈয়াৰ হৈছিল। মুগা কাপোৰ অসমৰ নিজস্ব বৈশিষ্ট্য আছিল। পাটৰ কাপোৰ তৈয়াৰ কৰা কৌশল বা পাট পলু পোহাৰ নিয়ম অসমে চীন দেশৰ পৰা শিকা বুলি কোৱা হয়। কিন্তু মুগা আৰু এৰী কাপোৰৰ উৎপাদন অসমৰ বাহিৰে আন কোনো দেশত নাই। পলু পোহাৰ ব্যৱস্থা সাধাৰণতে বড়ো কছাৰী আদি জনজাতি সমাজত ঘাইকৈ প্ৰচলিত থাকিলেও অন্য সম্প্ৰদায়ৰ লোকেও এৰী পলু পুহিছিল। এনে কাৰ্য সমাজত নিষ্পন্নীয় নাছিল আৰু সকলো সম্প্ৰদায়ৰ লোকে কম-বেছি পৰিমাণে পলু পুহিছিল। মুগা পোহা অতি কষ্টসাধ্য কাম কাৰণ তাক চোম গছৰ ওপৰত পাত খাবলৈ মেলি দিয়া হয় আৰু চৰাইৰ আক্ৰমণৰ পৰা পলুবোৰ ৰক্ষা কৰিবলৈ ৰখীয়াৰো প্ৰয়োজন হয়। তথাপি পাহাৰৰ নামনি অঞ্চলত বতাহ কম থকা আৰু পাত খাবৰ বাবে চোম গছ থকা স্থানত মুগা পলু পোহা হৈছিল।

অসমত অতি উৎকৃষ্ট লা প্ৰস্তুত কৰা হৈছিল। লা কাঠৰ মূৰ্তি, সিংহাসন, পীৰা, বৰপেৰা আদিত চিত্ৰ আঁকিবলৈ লা লগোৱা হৈছিল। কাপোৰতো ৰং দিবৰ বাবে লা ব্যৱহাৰ হৈছিল। অসমৰ গছ লতাৰ শিপা, পাত আদিৰ পৰাও নানা বৰণৰ ৰং উৎপন্ন কৰা হৈছিল।

তেজপুৰ আৰু আমবাৰীৰ খননৰ ফলত বহুতো মৃণ্ময় পাত্ৰ পোৱা হৈছে। অসমত যে পুৰণি কালত নানা তৰহৰ মাটিৰ বাচন ব্যৱহাৰ হৈছিল তাৰ সন্ভেদ পোৱা গৈছে। ৰজা, ডা-ডাঙৰীয়া, দলৈ আৰু সমৃদ্ধিশালী মানুহে সাধাৰণতে ৰূপ, কাঁহ, পিতল, তাম আদিৰ বাচন-বৰ্তন ব্যৱহাৰ কৰিছিল। সাধাৰণ লোকে মাটিৰ বাচন, কলপাত, আৰু গছৰ পাত ব্যৱহাৰ কৰিছিল আৰু এবাৰ ব্যৱহাৰ কৰাৰ পিচত সেইবোৰ পেলাই দিব লাগিছিল।

কৌটিল্যৰ অৰ্থশাস্ত্ৰত কামৰূপৰ সূৰ্ণকুড্ডাত (সম্ভৱতঃ নলবাৰীৰ ওচৰৰ পাগলাদিয়া নদীৰ পাৰৰ সোণকুৰিহা গাৱঁত) সোণ পোৱাৰ কথা উল্লেখ আছে। মেগেষ্টেনিচৰ বিৱৰণত (প্ৰথম চন্দ্ৰগুপ্তৰ কালত) ভাৰতৰ পূৰ্ব প্ৰান্তত সোণ পোৱাৰ কথা উল্লেখ আছে। লৌহিত্য নদীয়ে কৈলাসৰ পৰা সোণ কঢ়িয়াই লৈ অনা কথা তেজপুৰৰ দান লিপিত উল্লেখ আছে। কালিকা পুৰাণতো সোৱণশিৰী নৈত সোণ পোৱাৰ কথা লিখা আছে। উত্তৰৰ পৰ্বতমালাৰ পৰা ওলোৱা নদীৰ পানীত সোণ উঠি আহিছিল আৰু ভৈয়ামৰ মানুহ নদীৰ বালি ধুই সোণ গোটাইছিল। এনেদৰে গোটোৱা সোণ বৰ বেছি নাছিল বুলি ধাৰণা হয় আৰু ইয়াৰ বেহা-বেপাৰৰ বিশেষ তথ্য নাই।

শদিয়াৰ ওচৰত থকা তাম্ৰ মন্দিৰৰ ভগ্নাৱশেষৰ পৰা অসমত তামৰ কাম-কাজ জনা কাৰিকৰ যে আছিল তাক বুজিব পাৰি। ৰূপৰ অলঙ্কাৰ, হাতীৰ দাঁতৰ কাৰুকাৰ্য থকা দ্ৰব্যও তৈয়াৰ হৈছিল। আমবাৰীত প্ৰাপ্ত ভগ্নাৱশেষ আৰু স্মৃতিচিহ্নসমূহৰ পৰা বুজা যায় যে খৃষ্টীয় সপ্তম শতিকাৰ আগতেই অসমত নিৰ্মিত মন্দিৰ, শিলৰ মূৰ্তি আদি অতি সুন্দৰ আছিল। হৰ্ষচৰিতৰ বৰ্ণনামতে ভাস্কৰৰ্মাই হৰ্ষবৰ্ধনক উপহাৰ দিয়া ছত্ৰটো নানা কাৰুকাৰ্য কৰা ৰত্ন-খচিত আছিল।

যুদ্ধত ব্যৱহাৰ কৰা অস্ত্ৰপাতি, লোৰ বৰ্ম আদি প্ৰাচীন অসমতে ইয়াৰ স্থানীয় কাৰিকৰে প্ৰস্তুত কৰিছিল। প্ৰয়োজনীয় লো অসমৰ খনিৰ পৰাই কিজানি পোৱা গৈছিল। নাগা পাহাৰ, ভুটান আৰু মিকিৰ পাহাৰৰ (কাৰ্বি আংলং) নামনি অঞ্চলত লোণৰ পুঙৰ পানী উতলাই চপৰা লোণ প্ৰস্তুত কৰা হৈছিল।

বৃহৎ আকাৰৰ কাঠৰ খণ্ডবোৰ ফোঁপোলা কৰি নাও তৈয়াৰ কৰা হৈছিল। ভাস্কৰৰ্মাই হৰ্ষবৰ্ধনক পেনেল লগোৱা পেৰা (বাকচ) উপহাৰ দিছিল। কাঠৰ সৰু খণ্ডবোৰ ফোঁপোলা কৰি তাৰ দুই মূৰত চামৰা লগাই তোল নিৰ্মাণ কৰা এটা বিশেষ উদ্যোগ আছিল। বাঢ়ৈ, কমাৰ, কুমাৰ আদিয়ে কাঠৰ, লো আৰু মাটিৰ বহুতো সামগ্ৰী নিৰ্মাণ কৰিছিল। বাঁহ-বেত আৰু গছ-পাতৰ পৰাও পেৰা, মুড়া, বিচনি, জাপি আদি তৈয়াৰ কৰা হৈছিল। অসমৰ হাবি-বননিত প্ৰচুৰ পৰিমাণে পোৱা কাঠ, বাঁহ, বেঁত আৰু খেৰৰ পৰা সৰ্বসাধাৰণে ঘৰ সাজি লৈছিল। সমৃদ্ধিশালী লোকে আহল-বহল কোঠালী আৰু দুৱাৰ খিৰিকী থকা ঘৰ সজাইছিল। ঘৰত ইটাৰ দেৱালো দিয়াইছিল। তেনে ধনীলোকৰ থকা ঘৰৰ বাহিৰেও, মানুহ বহিবৰ বাবে বেলেগ চ'ৰা ঘৰ, ভাত ৰান্ধিবৰ বাবে ৰান্ধনি ঘৰ, গোঁসাই বিগ্ৰহ ৰাখিবৰ বাবে গোঁসাই ঘৰ, বন্দী-বেটীৰ বাবে বাহিৰৰ ঘৰ, গৰু ৰখাৰ বাবে গোহালি ঘৰ আদি আছিল। একে ঘৰতে ২/৩ টা পৰিয়াল থাকিব পৰাকৈ বেলেগ বেলেগ কোঠাৰ ব্যৱস্থা আছিল। ঘৰ সাজিবৰ বাবে পাকৈত কাৰিকৰ আছিল। মঠ মন্দিৰ, ৰাজকাৰেং আৰু সমৃদ্ধিশালী নগৰবাসীৰ ঘৰ-দুৱাৰ শিল আৰু ইটাৰে নিৰ্মিত হৈছিল। ইটা বা শিলৰ গাঁথনি কৰিবলৈ এতিয়াৰ বিলাতী মাটিৰ দৰে বজুলেপ নামৰ আঠাৰ লেখীয়া দ্ৰব্য ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। সাধাৰণ মানুহৰ ঘৰ সৰু আছিল। কিন্তু সকলোতে বাট চ'ৰা, ৰান্ধনি ঘৰ আৰু গোহালি ঘৰ পৃথক আছিল। পাহাৰীয়া অঞ্চলত একোটা পৰিয়ালৰ সাধাৰণতে এটাহে ঘৰ আছিল।

পৰ্বতীয়া ঠাইত উৎপাদিত উলেৰে (ভেৰাৰ নোম) কম্বল তৈয়াৰ কৰা হৈছিল। কাঠৰ পৰা খৰম, জস্তৰ চামৰাৰে জোতা আৰু অন্যান্য সামগ্ৰী প্ৰস্তুত কৰা হৈছিল। বাঁহ, বেঁত, পাতিদৈৰ পৰা বেৰা, মুড়া, টাৰি, পাটী, খৰাহি, পাচি, কুলা, চালনী, জাকৈ, জুলুকি ইত্যাদি প্ৰস্তুত কৰা হৈছিল।

অসমৰ প্ৰধান শিল্প বা উদ্যোগ আছিল তাঁতত কাপোৰ বোৱা। প্ৰত্যেক অসমীয়া মানুহৰ ঘৰতে অন্ততঃ এখনকৈ তাঁতশাল আছিল। আগ ডোখৰত সত্তৰ কঁকালত বান্ধি লোৱা তাঁতত ঠেক পুতলৰ কাপোৰহে বৈছিল। মাকো (ফাটী শব্দ) ওলোৱাৰ পিচতহে কাপোৰৰ পুতল বাঢ়িল। ঘৰে ঘৰে কপাহৰ বস্ত্ৰৰ উপৰিও কোনো পৰিয়ালত এৰী, পাট আৰু মুগাৰ কাপোৰ বোৱা হৈছিল। বাণিজ্যিক ভিত্তিত বস্ত্ৰ উদ্যোগৰ বাবে বেছি ভাগেই সূতা আনৰ পৰা কিনি আনিছিল। নিজৰ ঘৰত প্ৰয়োজনীয় সূতা বা পশম গাৰঁৰ ভিতৰতে বা ওচৰতে পাইছিল। কিছুমান বস্ত্ৰৰ নক্সা বৰ উচ্চ মানৰ আছিল আৰু তাৰ চাহিদাও আছিল।

কৃষিজাত উদ্ভূত দ্ৰব্য বা কাঠ, বনৰ দ্ৰব্যৰ আদান-প্ৰদান সাধাৰণতে স্থানীয়ভাৱে হৈছিল। বাহিৰৰ ৰাজ্যৰ লগত এইবোৰৰ বেহা-বেপাৰ বেছি নাছিল। বাট-পথৰ অনিশ্চয়তা, বাটত ভয়, সংশয় আৰু উৎপাদিত দ্ৰব্য সংগ্ৰহত থকা অসুবিধাৰ বাবে সামৰ্থ্য অনুযায়ী উৎপাদন কৰিব পৰা নগৈছিল।

(৬) বাণিজ্য ব্যৱস্থা

কামৰূপ ৰাজ্যত প্ৰাকৃতিক আৰু কৃষিজাত সম্পদৰ পৰা বহুতো দ্ৰব্য উৎপাদনৰ থল আছিল। কিন্তু পৰ্যাপ্ত পৰিমাণৰ চাহিদা নথকাত আৰু সময়মতে যোগান ধৰাৰ অসুবিধা থকাত উদ্ভূত দ্ৰব্য বেছি পৰিমাণে উৎপাদন কৰা নহৈছিল। তথাপি এইবোৰ বেহা-বেপাৰ কৰিবলৈ বহুতো মুদৈ, বেপাৰী বা সদাগৰ আছিল। সদাগৰ আৰু ধনী লোকসকলে নগৰ অঞ্চলত বাস কৰিছিল আৰু সাধাৰণতে তেওঁলোক হাতী বা দোলাত উঠি ফুৰিছিল। দূৰণিবটীয়া পথ অতিক্ৰম কৰিবলৈ জল পথেদি নাও ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। খোজ কাঢ়ি যাব পৰা কেঁচা আলি সকলো ঠাইতে আছিল। কিন্তু ভিতৰুৱা দূৰণি অঞ্চলবোৰলৈ নাও বা হাতীহে ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। ৰাজ্যৰ ভিতৰতে বিক্ৰীযোগ্য দ্ৰব্য কঢ়িয়াবলৈ নাও, হাতী, ঘোঁৰা, বা গৰু-ম'হৰ গাড়ী ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। ওচৰৰ হাট-বজাৰলৈ মানুহে ভাৰেৰে বস্ত্ৰ কঢ়িয়াই নিছিল। অন্য দেশৰ লগত অহা-যোৱা কৰা বা বেহা-বেপাৰ কৰাত জল পথেদি নাও ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। অসমৰ ব্ৰহ্মপুত্ৰ নদীৰ উত্তৰ আৰু দক্ষিণ পাৰে অসংখ্য উপনদী থকা বাবে ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ লগতে নাৱেৰে সংযোগ কৰি ডাঙৰ নাৱত উঠি বঙ্গদেশলৈ যাব পাৰিছিল। তাত ঢাকাৰ ওচৰত মেঘনাৰ (গঙ্গা-ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ সঙ্গমস্থলত) পাৰত আন আন দেশৰ বণিকক লগ পাইছিল আৰু বস্ত্ৰৰ আদান-প্ৰদান কৰিব পাৰিছিল।

জলপথৰ বাহিৰেও বিভিন্ন গিৰিপথেদি বৰ্হিবাণিজ্য চলিছিল। উত্তৰ-পূৱৰ পাটকাই পৰ্বতমালাৰ গিৰিপথেদি ব্ৰহ্মদেশৰ ইৰাৱতী নদী পাৰ হৈ চীন দেশৰ য়ুন্নান প্ৰদেশৰ সৈতে স্থল পথেদি বেহা-বেপাৰ কৰা হৈছিল। তিব্বত আৰু চীন দেশৰ লগত ভুটান আৰু অৰুণাচলৰ গিৰিপথেদি বেহা-বেপাৰ চলিছিল। সুদূৰ আফগানিস্তানৰ বেপাৰীসকল তিব্বতৰ মাজেদি আহি ভুটান হৈ অসম সোমাইছিল। বহুতো লোকে ডকাইতৰ উৎপাতত ভয় কৰি সমভূমিৰ দিল্লী, গোৱৰ্খপুৰ, পাটনাৰে থকা স্থলপথ পৰিহাৰ কৰিছিল। আমবাৰীত আৱিষ্কৃত দ্ৰব্যসমূহৰ পৰা এইটো

প্ৰমাণিত হৈছে যে প্ৰাগজ্যোতিষপুৰ তেতিয়াৰ দিনত আন্তৰ্জাতিক বাণিজ্যৰ এটি কেন্দ্ৰ আছিল। চীনদেশৰ বেপাৰীসকলেও অসমৰ মাজেৰে আহি ইয়াত দ্ৰব্য আদান-প্ৰদান কৰিছিল।

আৰাকান পৰ্বতমালাৰ গিৰিপথেদি উপকূল অঞ্চললৈ আহি তাৰ পৰা ব্ৰহ্মদেশলৈ যাব পৰা হৈছিল; নাইবা উপকূলত বিদেশী বাণিজ্যত লিপ্ত থকা আন বণিকক লগ পাই সামগ্ৰী আদান-প্ৰদান কৰা হৈছিল। অৱশ্যে পুৰণি অসমত ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ ওপৰেদি নাৱেৰে সাগৰৰ ওচৰত নদীৰ সংযোগ স্থললৈ যোৱা পথেই প্ৰধান বাণিজ্য পথ আছিল।

এইবোৰ বাণিজ্যিক পথৰ তথ্যৰ পৰা জানিব পাৰি যে অসমৰ লগত চীন, ব্ৰহ্মদেশ, তিব্বত, মণিপুৰ, বঙ্গদেশ, উৎকল, পাটলিপুত্ৰ আদিৰ বাণিজ্য নাও বা গিৰিপথেদি নিয়মিতভাৱে বেহাবেপাৰ চলিছিল।

অসমৰ প্ৰধান ৰপ্তানি দ্ৰব্য আছিল ৰেচম আৰু ৰেচমী সামগ্ৰী। তেজপাত, লা, চামৰা, লো, যাঁড় গৰুৰ শিং, গড়ৰ খড়্গ, হাতীৰ দাঁত, কপাহৰ কাপোৰ আদিও অসমৰ পৰা ৰপ্তানি হৈছিল। অসমৰ বেপাৰীয়ে সাধাৰণতে ৰূপ, সৈন্ধৱ লৱণ, মণিমুক্তা, কড়ি, কাঁহৰ ঘণ্টা, লোৰে নিৰ্মিত সামগ্ৰী আদি আমদানি কৰিছিল।

(৭) মুদ্ৰা, জোখ-মাখ, লেনদেন আদি ব্যৱস্থা

প্ৰাচীন কামৰূপ ৰাজ্যৰ বেহা-বেপাৰত ওজন দোণৰ (প্ৰায় $8\frac{1}{2}$ কেজিৰ সমান) মাত্ৰাত কৰা হৈছিল। মণিমুক্তাৰ দৰ চাহিদাৰ পৰিমাণত নিৰ্ণয় হৈছিল; কিন্তু মণিমুক্তাৰ বজাৰ সৰ্বসাধাৰণৰ বাবে নাছিল।

বেহা-বেপাৰ সাধাৰণতে দ্ৰব্য সালসলনি কৰা প্ৰথাৰে (barter system) চলিছিল। গৰু, জন্তুৰ চামৰা, বস্ত্ৰ, ধান আদিৰ মাধ্যমত বিনিময় হাৰ স্থিৰ কৰা হৈছিল। অসমৰ দাঁতিকাষৰীয়া পাহাৰীয়া অঞ্চলত আজিও বনৰীয়া ম'হ (মেঠোন), তিব্বতীয় ঘণ্টা, লোৰ দা, যাঠি আদিৰ সলনি খাদ্য শস্য, উলৰ কাপোৰ, কপাহী বস্ত্ৰ আদি বিনিময় কৰা হয়।

কৌটিল্যৰ অৰ্থশাস্ত্ৰৰ মতে তেতিয়াৰ কামৰূপ ৰাজ্যত গৌলিকাম (Gaulikum) নামৰ এবিধ ৰূপৰ মুদ্ৰা ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। ভাস্কৰৱৰ্মাৰ দিনত লেনদেন কড়িৰ মাধ্যমত কৰা হৈছিল। হৰ্ষবৰ্ধনক ভাস্কৰৱৰ্মাই বহু পৰিমাণৰ ক'লা আৰু বগা কড়ি উপহাৰ দিছিল। পাল বংশীয় ৰজাৰ দিনত (নৱম-দশম শতাব্দী)

স্বৰ্ণ মুদ্রাও ব্যৱহৃত আছিল। অৱশ্যে সৰ্বসাধাৰণ ৰাইজে প্ৰধানতঃ বিনিময় মাধ্যমতহে দ্ৰব্যৰ আদান-প্ৰদান কৰিছিল।

প্ৰাচীন অসমত সাধাৰণতে আৱশ্যকীয় দ্ৰব্যৰ ৰজাৰ দৰ কেনে আছিল তাক আমি অনুমান কৰিব নোৱাৰিম। প্ৰচলিত মুদ্রাৰ মানত (যেনে— টকা-পইচা) তাক প্ৰকাশ কৰা অসম্ভৱ। কিন্তু সৰ্বসাধাৰণ ৰাইজে নিজৰ প্ৰয়োজনীয় খাদ্য-দ্ৰব্য আৰু বস্তু নিজৰ ঘৰত উৎপাদন কৰি বা নিজৰ উদ্বৃত্ত দ্ৰব্যৰ সলনি গাওঁ বা ওচৰতে সংগ্ৰহ কৰিব পাৰিছিল। ইয়াৰ বাবে মুদ্রাৰ ব্যৱহাৰ নহৈছিল। সৰ্বসাধাৰণ ৰাইজে আনৰ ঘৰত কাম- বন কৰি নিজৰ শ্ৰমৰ বিনিময়ত লাগতিয়াল দ্ৰব্য যোগাৰ কৰিব পাৰিছিল। দুৰ্ভিক্ষ আৰু অনাটনৰ সময়ত ৰাজ-ভঁৰালৰ পৰা খাদ্য-দ্ৰব্য দিয়া হৈছিল।

টকা ধাৰে দিয়া মহাজন সকলো অঞ্চলতে বিশেষকৈ নগৰাঞ্চলত বাস কৰিছিল। এওঁলোকৰ লেন-দেন সাধাৰণতে ৰাজকৰ্মচাৰী বা আন সমৃদ্ধিশালী লোকৰ লগতহে হৈছিল। তেওঁলোকে ধৰুৱাৰ পৰা সুদ লৈছিল। চৰকাৰৰ আয়ৰ প্ৰধান উৎস আছিল মাটিৰ খাজনা। সাধাৰণতে ভাৰতীয় ৰীতি অনুসৰি উৎপাদনৰ এক ষষ্ঠাংশ খাজনা হিচাপে দিব লাগিছিল। অৱশ্যে মাটিৰ খাজনা নিৰ্ধাৰণ কৰাৰ পিচত এই ধন শস্য হিচাপে দিয়া হৈছিল নে সমমূল্যৰ মুদ্রা দিয়া হৈছিল তাক জনা নাযায়। ৰাইজৰ পৰা মাটিৰ খাজনা সংগ্ৰহ কৰিবলৈ ৰজাঘৰীয়া কৰ বিষয়া আছিল আৰু তেওঁলোকৰ সহায়কাৰী অনুচৰসকলে কৰ সংগ্ৰহ কৰিছিল।

মাটিৰ খাজনাৰ উপৰিও কিছুমান বিশেষ দ্ৰব্যৰ উৎপাদনৰ ওপৰত শুস্ক (excise duty) লগোৱা হৈছিল। এনে শুস্ক মুঠ উৎপাদনৰ মূল্যৰ পঞ্চাশ ভাগৰ এভাগৰ পৰা দহ ভাগৰ এভাগৰ ভিতৰত আছিল। অৱশ্যে এই শুস্ক কেনেদৰে নিৰ্ধাৰণ কৰা হৈছিল সেই সম্বন্ধে তথ্য পোৱা টান। ব্ৰহ্মপুত্ৰ নদীত মাছ ধৰিলে উৎপাদিত মাছৰ পঁচিশ ভাগৰ এভাগৰ পৰা দহ ভাগৰ এভাগৰ ভিতৰত শুস্ক দিব লাগিছিল। নদীৰ ঘাটত নাৱেৰে পাৰাপাৰ হোৱাৰ ওপৰতো মাচুল লোৱা হৈছিল। এনে দস্তৰৰ কথা পুৰাণ, কাব্য গ্ৰন্থ আদিত উল্লেখ আছে। উপৰি-কৰ নামৰ আন এটা কৰ সাধাৰণ কৰৰ লগতে দিব লাগিছিল। তদুপৰি উৎখেটন নামৰ আন এটা কৰ জৰুৰী অৱস্থাত চৰকাৰী ৰাজহ বৃদ্ধিৰ বাবে লগোৱা হৈছিল। চৌবোন্ধৰণিকা নামৰ কৰ এটা চোৰৰ উপদ্ৰৱ বন্ধ কৰিবলৈ লগোৱা হৈছিল।

চৰকাৰৰ ৰাজস্ব কেনেদৰে ব্যয় কৰা হৈছিল বা ভাৰ বাবে আগতে বাজেট প্ৰস্তুত কৰা হৈছিল নে নাই তাক জনাৰ উপায় নাই। অনুমান কৰিব পাৰি যে

প্ৰয়োজন অনুসৰি খৰচ কৰা হৈছিল আৰু ৰাজ-ভঁৰাল উদং হলে নতুন কৰ লগোৱা হৈছিল। অৱশ্যে ৰাজ্যৰ বাজেটৰ এক বুজন অংশই ৰাজপৰিয়ালৰ ব্যয় নিৰ্বাহ, ব্ৰাহ্মণক দান-দক্ষিণা দিয়া, সৈন্য বাহিনী আৰু ৰাজকৰ্মচাৰীসকলৰ দৰমহা আদিত ব্যয় কৰা হৈছিল। মঠ-মন্দিৰ, পুখুৰী নিৰ্মাণ, আলি-পদূলি সজা আদিতো খৰচ কৰা হৈছিল। অৱশ্যে অনেক সময়ত স্থানীয় ৰাইজৰ কায়িক পৰিশ্ৰম আৰু সা-সঁজুলিৰে বহুতো জনহিতকৰ কাম কৰোৱা হৈছিল। তাৰ বাবে হয়তো বনুৱাবিলাকৰ খোৱা-বোৱাৰ ব্যৱস্থা কৰি দিয়া হৈছিল। গাৱঁৰ লোকে আলি নিৰ্মাণ, পঢ়াশালিৰ ঘৰ সজা আদি কাৰ্যত চৰকাৰৰ পৰা বিশেষ সাহায্য নাপাইছিল যেন লাগে। এইবোৰ কাম গাৱঁৰ মুখিয়ালসকলৰ তত্ত্বাৱধানত সম্পাদিত হৈছিল। অৱশ্যে প্ৰতিৰক্ষাৰ বাবদ পথ নিৰ্মাণ কৰিব লাগিছিল আৰু আন্তঃ-ৰাজ্যিক পথ নিৰ্মাণ কৰিব লাগিলে চৰকাৰে তাৰ ব্যৱস্থা কৰিছিল।

(৮) সৰ্বসাধাৰণৰ আৰ্থিক ব্যৱস্থা

প্ৰাচীন পুৰাতাত্ত্বিক স্মৃতিচিহ্ন আদিৰ পৰা সেই কালৰ শাসকসকলৰ ক্ষমতাৰ পৰিচয়, ৰাজ্য জয়, মঠ-মন্দিৰ নিৰ্মাণ, পুখুৰী খন্দোৱা আদিৰ বিষয়ে ধাৰণা কৰিব পৰা যায়, কিন্তু সৰ্বসাধাৰণৰ আৰ্থিক বা সামাজিক অৱস্থাৰ কথা অনুমান কৰিব নোৱাৰি। অৱশ্যে প্ৰাচীন অসমত, আহোম ৰজাসকলে প্ৰৱৰ্তন কৰা, পাইক প্ৰথা নাছিল যেন লাগে। কাৰণ অসমত আহোম ৰজাসকলে মাটিদানৰ লগতে বন্দী-বেটী বা পাইকৰ পৰিয়াল নানা তৰহৰ সেৱাৰ বাবে দিছিল। পদ মৰ্যাদা বা সন্মান অনুসৰি এনে পাইকৰ সংখ্যা কমবেছি আছিল; কিন্তু আহোম যুগৰ আগতে নিষ্কৰ মাটি দান কৰিলেও আন মাটিত খেতি কৰিলে বা ঘৰ-বাৰী কৰি থাকিলে উৎপাদনৰ এটা অংশ বা মানুহৰ সংখ্যা অনুসৰি খাজনা হিচাপে দিব লাগিছিল বা অৰ্থশাস্ত্ৰত বান্ধি দিয়া মতে কৰ দিব লাগিছিল। কিন্তু সৰ্বসাধাৰণৰ আৰ্থিক অৱস্থা বুজাবলৈ তেওঁলোকৰ বাসস্থান, খাদ্য, পিন্ধন-উৰণ, শিক্ষা-দীক্ষা বা চিকিৎসাৰ সুবিধা সম্বন্ধে তথ্য পোৱা কঠিন।

বাসস্থানৰ কথা আগতে উল্লেখ কৰা হৈছে কিন্তু সাধাৰণ মানুহৰ বাবে পঢ়া-শুনা কৰাৰ সুবিধা থকা দূৰৰে কথা, প্ৰয়োজনো নাছিল। কাৰণ সেইসময়ত উচ্চ বৰ্ণৰ বা ৰাজপৰিয়ালৰ ব্যক্তিসমূহেহে চৰকাৰৰ বিষয়া হ'ব পাৰিছিল। ৰজাঘৰৰ পৰা শিক্ষিত পণ্ডিতসকলক ভৰণ-পোষণ, মাটি-বাৰী দি ৰাখিছিল।

ৰজাই সজাই দিয়া মঠ-মন্দিৰৰ বাহিৰে সৰ্বসাধাৰণৰ ভগৱানক পূজা-পাতল কৰিবলৈ, অন্য ৰাজহুৱা অনুষ্ঠান নাছিল, কিন্তু গাওঁ বা হাবি-বননিত থকা ডাঙৰ আঁহত, বট বা বেল গছ, আপুৰুগীয়া বা অস্বাভাৱিক আকৃতিৰ শিলাখণ্ড আদিত থান পাতি ভক্তি জনাইছিল। অৱস্থাপন্ন উচ্চ বৰ্ণৰ লোক, ৰাজঘৰীয়া ব্যক্তি আৰু ব্ৰাহ্মণসকলে নিজা ঘৰত এটি বেলেগ ঘৰ বা কোঠালীত বিগ্ৰহ স্থাপন কৰিছিল। কালক্ৰমত এইবোৰ ৰাজহুৱা স্থানত স্থাপন কৰা হ'ল। কিন্তু অতীজতে সামাজিকভাৱে ঋষি-মুনিৰ আশ্ৰম আৰু ৰজাঘৰৰ বাহিৰে আন ঠাইত সামূহিকভাৱে যজ্ঞ কৰা নহৈছিল।

ফকৰা-যোজনা আদি অতীজৰে পৰা পুৰুষানুক্ৰমে মানুহৰ মুখে মুখে চলি আহিছে। চৰ্যাগীত (অষ্টম-নৱম শতাব্দীত), ডাকৰ বচন (ৰচনা কাল সঠিক জনা নাযায়, এইবোৰ মুখে মুখে চলি আহিছে), লোক-কথা, লোক-গীত আদিৰ পৰাও সাধাৰণ মানুহৰ মাজত প্ৰচলিত ৰীতি-নীতি সম্বন্ধে সামান্য আভাস পাব পাৰি। অৱশ্যে এইবিলাকত কালক্ৰমত নতুন নতুন কথা সোমাই পৰিল। তলত দুই এটা উদাহৰণ দিয়া হ'ল।

তামোলৰ ব্যৱহাৰ সম্বন্ধে ফকৰা—

“তামোলৰ ঢকুৱাৰ হাঁচতিখনি ফলীয়া বেতেৰে সিয়া।

বাঁহৰ চৈঁচুৰ কটাৰীখনি সিও শাগত দিয়া।।

আমগুটিৰ টেমাটি কাউৰী লাদৰ চুণ।

বাটে বাটে সুধি ফুৰোঁ তামোল খোৱা কোন।।”

অসমত যে তামোল খোৱা প্ৰচলিত আছিল আৰু তাৰ বাবে যে সা-সঁজুলি যোগাৰ কৰা হৈছিল তাক উক্ত ফকৰাৰ পৰা বুজা যায়।

মুগা পলু সম্বন্ধে—

“কথা নহয় ফকৰা।

এটা মুগাৰ তিনিশ তিনিকুৰি তেৰটা চোকোৰা।।”

অসমত যে মুগা পালন প্ৰচলিত আছিল আৰু তাৰ সম্বন্ধে মানুহে বিশদভাৱে জানিছিল তাক এই ফকৰাৰ পৰা বুজা যায়।

কৃষি সম্বন্ধে ডাকৰ বচন—

“গাৱঁৰ বলদ ওচৰৰ ছুঁই।

তাক নেৰিবা জানন্তা হুঁই।।” (ডাক)

এই কথাফাঁকিৰ দ্বাৰা এইটো বুজোৱা হৈছে যে খেতি কৰা মাটি ওচৰতে থাকিব লাগে। বলদ গৰু হেৰুৱাৰ ভয় মৰিমূৰ কৰিবলৈ গাৱঁতে বলদ সংগ্ৰহ কৰিব লাগে।

যিজন খেতিয়কে খেতি কৰ্মত নিজে লাগি-ভাগি থাকে তেৱেঁই আটাইতকৈ বেছি লাভৱান হয়—

“খাটে খটায় বান্ধে গাঁটি।

তাৰ অৰ্ধেক মুৰত জাপি।।

ঘৰত বহি সোধয় কথা।

সেই কৃষি সমুলি বৃথা।।” (ডাক)

যিজন কৃষক পথাৰলৈ নগৈ ঘৰতে বহি থাকি খেতিৰ ভূ-ভা লয় তেওঁৰ খেতি সফল নহয়। নিজে মুৰত জাপি লৈ অন্য কাম কৰা মানুহৰ কাম পৰ্যবেক্ষণ কৰিলে কৃষিত লাভ হয়, কিন্তু নিজে কামত নিযুক্তি হৈ অন্যকো কামত লগাই কাম কৰিলে সেই কৃষকৰহে উৎপাদন অধিক বৃদ্ধি হয় আৰু লাভ হয়। কৃষি সম্বন্ধে আৰু কিছু বচন পোৱা গৈছে। তেনে ধৰণৰ আৰু দুটা এটা ফকৰা উল্লেখ কৰা হ’ল—

“মাটি কিনিবা মাজ খাল।”

আকৌ আছে—

“যদি বৰষে মাঘৰ শেষ।

ধন্য ৰজা ধন্য দেশ।” ইত্যাদি।

জনসাধাৰণৰ খোৱা পানীৰ যোগান ধৰা আৰু বৃক্ষৰোপণ কাৰ্যক সামাজিক কৰ্তব্য বুলি গ্ৰহণ কৰা হৈছিল। যেনে :

“যেবে স্বধৰ্মক কৰিবা জানি।

পুখুৰী খান্দিয়া ৰাখিবা পানী।।” (ডাক)

“বৃক্ষ ৰোপণত অধিক ধৰ্ম।

মঠ-মণ্ডপত শোভন কৰ্ম।।” (ডাক)

এই বচনে, আগৰ কালৰ মানুহে যে সামাজিক বননিকৰণ আৰু পানী যোগানত গুৰুত্ব দিছিল, তাক বুজায়। ধোঁৱাখুলীয়া দুখীয়া স্বভাৱৰ বিৰুদ্ধেও প্ৰবাদ বাক্য আছে—

“অলপ অৰ্জন বিস্তৰ ভোজন।

সেই পুৰুষৰ দৰিদ্ৰ লক্ষণ।”

ইয়াত উপাৰ্জন অনুসৰি ব্যয় কৰিবলৈ দিহা দিয়া হৈছে।

অসমত লোণ যে এক আপুৰুগীয়া দ্ৰব্য আছিল তাক তলৰ ফকৰাৰ পৰা বুজিব পাৰি—

“লোণ দানে সোণ দানে সমান।”

মানুহৰ দৈনন্দিন জীৱন যাপন, সামাজিক কৰ্তব্য, কৃষি কাৰ্য, খোৱা-বোৱা, আচৰণ বিধি আৰু নানা কথাৰ ওপৰত প্ৰবচন, যোজনা, ফকৰা আদি আছে। এইবোৰ কেতিয়া ৰচিত হৈছিল আৰু কোনে প্ৰথম ৰচনা কৰিছিল তাৰ সঠিক তথ্য নাই। জনসাধাৰণৰ অভিজ্ঞতা আৰু উপলব্ধিৰ ফলত কোনোবা কালত কোনোবা স্বভাৱ-কবিয়ে এইবোৰ মুখে মুখে ৰচনা কৰি শুনাইছিল আৰু সাধাৰণ মানুহে তাক মনত ৰাখিছিল। এনে প্ৰবচনবোৰৰ পৰা পুৰণি আচাৰ-ৰীতি সম্বন্ধে যথেষ্ট সমল লোৱা যায়। এইবোৰত ৰাজ্যজয়, শাসকৰ গুণকীৰ্তন, ক্ষমতাৰ দস্ত আদিৰ বিৱৰণ হয়তো নাথাকে, কিন্তু এইবোৰত সৰ্বসাধাৰণৰ আচাৰ-ৰীতি, ভাৱ-ধাৰণাৰ কথা অন্তৰ্ভুক্ত আছে। সম্প্ৰতি লোককথা আৰু লোকগীত সম্বন্ধে যথেষ্ট গৱেষণা আৰম্ভ হৈছে। অজ্ঞাত যুগৰ সম্বন্ধে লিখিত বুৰঞ্জী নথকা কালৰ বিষয়ে জ্ঞান আহৰণ কৰাত ইয়াৰ যথেষ্ট গুৰুত্ব আছে।

(৯) সামৰণি

আগতে উল্লেখ কৰা হৈছে যে প্ৰাচীন অসমৰ অৰ্থনৈতিক অৱস্থাৰ কথা বৰ্ণনা কৰিবলৈ লিখিত তথ্যৰ নিতান্তই অভাৱ। ভাৰতৰ অন্য প্ৰান্তৰ গৱেষকসকলেও প্ৰাচীন অসম বা কামৰূপ ৰাজ্যৰ সম্বন্ধে বিশেষ বিৱৰণ দিয়া নাই। নৃতত্ত্ববিদ আৰু স্থাপত্যবিদ প্ৰত্নতাত্ত্বিকসকলে অসমৰ সম্বন্ধে কিছু বিৱৰণ দিছে। ৰামায়ণ, মহাভাৰত, পুৰাণ, কাব্যগ্ৰন্থ আদিত সিটৰতি হৈ থকা ২/৩ টা কাহিনীৰ পৰা সবিশেষ তথ্য পোৱা নাযায়। আমাৰ এই প্ৰবন্ধটোত অতীত-তত সিটৰতি হৈ থকা তথ্য বা বিৱৰণৰ পৰা প্ৰাচীন অসমৰ অৰ্থনৈতিক জীৱন ধাৰাৰ এক খল-মূল আভাস দিবৰ চেষ্টা কৰা হৈছে।

এই প্ৰবন্ধ যুগুত কৰোঁতে নিম্ন লিখিত পুথিকেইখনৰ পৰা যথেষ্ট সমল গোটেৱা হৈছে, কিন্তু সেই পুথিবোৰত উল্লেখিত মূল তথ্য (original data) চাবৰ সুযোগ নঘটিল, সেইবোৰ অসমত পোৱাও নাযায়। তলত উল্লেখিত চাৰিখন পুথিৰে পৰা প্ৰধানতঃ (গুৰুত্ব সহকাৰে পুথিৰ নাম দিয়া হৈছে) প্ৰবন্ধটো যুগুত কৰা হৈছে।

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- (১) P.C.Choudhury, *The History of Civilisation of the People of Assam*, 2nd edition, Guwahati, 1966
- (২) B.K Barua, *The Cultural History of Assam*, 2nd edition, Guwahati, 1969
- (৩) H K Barpujari (ed.) *The Comprehensive History of Assam*, Volume I, Guwahati, 1990
- (৪) Sir Edward Gait, *A History of Assam*, Calcutta, 1926

ইয়াৰ উপৰিও তলত দিয়া গ্ৰন্থ কেইখনৰ পৰাও কিছুমান তথ্য লোৱা হৈছে—

- (১) অসম সাহিত্য সভা, *অসমীয়া মানুহৰ ইতিবৃত্ত*, ১৯৭৪
- (২) সৰ্বেশ্বৰ ৰাজগুৰু, *অসমীয়া প্ৰবাদ*, ১৯৭২
- (৩) K.L Barua, *An Early History of Kamarupa*, মূল ইংৰাজীৰ পৰা শ্ৰীৰঘুনাথ চৌধুৰী দেৱৰ অনুবাদ— *প্ৰাচীন কামৰূপ ৰাজ্যৰ বুৰঞ্জী*, ১৯৯১
- (৪) Radhakamal Mukherjee, *Glimpses of Ancient India*, Bharatiya Vidya Bhavan, 1961
- (৫) -do- *Hindu Civilization*, Vol I & II, Bharatiya Vidya Bhavan, 1963

অসমৰ অৰ্থনৈতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস

(১২২৮ খ্ৰিঃ ব পৰা ১৪৭০ খ্ৰিঃ লৈ)

(খ)

(১) আগকথা

প্ৰাচীন কালত প্ৰাগজ্যোতিষ আৰু কামৰূপ নামেৰে আৰু এতিয়া অসম নামেৰে জনাজাত ভূখণ্ডৰ দ্বাদশ শতাব্দীৰ মাজ ভাগৰ পৰা পঞ্চদশ শতাব্দীৰ শেষ ভাগলৈ, কোনো কেন্দ্ৰীয় ৰাজ্য নথকাৰ সুযোগতে কেইবাখনো সৰু সৰু ৰাজ্য গঢ়ি উঠিছিল। এই ৰাজ্যবোৰৰ ভিতৰত ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকাৰ কমতা ৰাজ্য, ভূঞা ৰাজ্য, চুতীয়া ৰাজ্য, কছাৰী ৰাজ্য, বৰাহী ৰাজ্য, মৰাণ ৰাজ্য, আহোম ৰাজ্য আদিৰ নাম উল্লেখযোগ্য। উক্ত সময় ছোৱাৰ অসমৰ আৰ্থসামাজিক বুৰঞ্জীৰ প্ৰত্যক্ষ তথ্য-পাতি এতিয়ালৈ তাকৰীয়া হৈয়ে আছে। তথাপি উক্ত সময়ৰ যিখিনি প্ৰত্যক্ষ আৰু পৰোক্ষ তথ্য-পাতি পোৱা যায় তাৰ লগতে তাৰ আগৰ আৰু পিচৰ প্ৰাপ্ত তথ্য-পাতিৰ আধাৰত অৰ্থনৈতিক বুৰঞ্জীৰ এটি খচৰা প্ৰস্তুত কৰিবলৈ ইয়াত চেষ্টা কৰা হৈছে।

অসমীয়া সংস্কৃতিৰ উপৰি-সৌধৰ অন্তৰ্ভুক্ত ভাষা-সাহিত্যকে ধৰি বিভিন্ন উপাদানসমূহৰ বিকাশৰ মূলত থকা বৈষয়িক বা আৰ্থিক আধাৰেই অসমৰ অৰ্থনৈতিক বুৰঞ্জীৰ ঘাই বিষয়-বস্তু। সম-সাময়িক কালৰ সমাজখনৰ দৈনন্দিন জীৱনৰ প্ৰয়োজনীয় বস্তুসমূহৰ উৎপাদন, বিনিময়, বিতৰণ প্ৰণালী আদিয়ে যি কোনো সময়ৰ অৰ্থনৈতিক বুৰঞ্জীৰ প্ৰধান উপাদান। গতিকে কৃষি, শিল্প, বাণিজ্য, যাতায়াত-যোগাযোগ, মুদ্ৰা আৰু বিনিময় ব্যৱস্থা আদিৰ বৰ্ণনাৰ যোগেদি আলোচ্য সময়ছোৱাৰ অসমৰ অৰ্থনৈতিক বুৰঞ্জীৰ খচৰা প্ৰস্তুত কৰিবলৈ সীমিত পৰিসৰৰ সীমাবদ্ধতাৰ মাজতে প্ৰচেষ্টা হাতত লোৱা হৈছে।

(২) কৃষিজাত বস্তু

প্ৰাচীন কালত ব্ৰাহ্মণক মাটিদান কৰাৰ সম্পৰ্কত ৰজাসকলে প্ৰচলন কৰা ফলিবোৰত প্ৰায়ে ক্ষেত্ৰালি^১, বা পথাৰৰ আলি^২ৰ উল্লেখ লগতে বস্তি, খেতিপথাৰ,

আদিৰ উপৰিও জলৰ উল্লেখ আছে আৰু তেনে মাটিৰ জোখ উৎপাদিত ধানৰ পৰিমাণৰ সহায়ৰ বুজোৱা হৈছিল কাৰণে ইতিমধ্যে ৰোৱা ধান অৰ্থাৎ শালি ধানৰ খেতি পুৰণি কামৰূপৰ অন্তৰ্ভুক্ত আৰু পৰৱৰ্তীকালৰ কমতা ৰাজ্য, ভূঞা ৰাজ্য, চুতীয়া ৰাজ্য, মহামণিক্য ৰজাৰ বৰাহী ৰাজ্য আদিৰ স্থায়ী বসতি আৰু স্থায়ী কৃষি থকা অঞ্চলবোৰত প্ৰৱৰ্তিত হৈছিল বুলি নিশ্চিত হ'ব পাৰি। কামৰূপেশ্বৰ মাধব দেৱৰ নীলাচল তাম্ৰ-শাসনত শালি ভূমিৰ প্ৰত্যক্ষ উল্লেখ আছে। এই ফলিখন পঞ্চদশ শতিকাৰ বুলি ডঃ দীনেশচন্দ্ৰ সৰকাৰে গণ্য কৰিছে।^{১০} মাটি দানৰ ফলিবিলাকত মাটিৰ জোখ ধানৰ মানত প্ৰকাশ কৰাৰ বাবে আগৰ কালতো এতিয়াৰ দৰে সেইবোৰ অঞ্চলত ধানেই প্ৰধান খেতি আছিল বুলি বুজিব পাৰি। অসমৰ মানুহৰ প্ৰধান খাদ্য চাউল বা ভাত খোৱাৰ লগতে ইয়াৰ জলবায়ু ধান খেতিৰ বাবে বিশেষ উপযোগী হোৱাটোৱেই ইয়াৰ ঘাই কাৰণ।

বতৰ অনুসৰি শালি, আছ আৰু বাও ধানৰ খেতি আগেয়েও কৰা হৈছিল। শালিধানৰ বাবে পানীৰ প্ৰয়োজন হয় কাৰণে বাৰিষা কালত দ পথাৰত ইয়াক ৰোৱা হয় আৰু খৰালি কালত চপোৱা হয়। আছ আৰু বাও ধান ক্ৰমে বাম আৰু দ মাটিত খৰালি কালত শুকানে মাটি চহাই সিঁচা হয়। আছ ধান বাৰিষা কালত আৰু বাওধান খৰালি কালত চপোৱা হয়। তিনিও প্ৰকাৰৰ ধানৰে সুকীয়া সুকীয়া বিভিন্ন জাত বা বিধ আছে। ষোড়শ শতিকাত ৰচনা কৰা *যোগিনী* তন্ত্ৰত বহুতো কেইবিধ ধানৰ নাম দিয়া হৈছে আৰু সেইবিলাক শ্ৰদ্ধ আৰু ধৰ্মীয় কাৰ্যত ব্যৱহাৰ হয় বুলি উল্লেখ আছে।^{১১} এইবিলাক শালিধান বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। চতুৰ্দশ শতিকাৰে ৰচনা মাধৱ কন্দলিৰ *ৰামায়ণ*ত খৰিকা জহা ধানৰ উল্লেখ আছে।^{১২} জহাধান লাহী ধানৰে এটা উৎকৃষ্ট জাত আৰু ইয়াৰো বহুতো প্ৰকাৰ আছে। পায়স, পিঠা আদি খাদ্য সজাৰৰ উল্লেখ একাদশ-দ্বাদশ শতিকাৰ ৰচনা *কালিকা পুৰাণ* আৰু পৰৱৰ্তী কালৰ *যোগিনী* তন্ত্ৰত আছে কাৰণে তেনে খাদ্য প্ৰস্তুত কৰিবলৈ সাধাৰণতে ব্যৱহাৰ কৰা চাউলৰ বাবে জহা আৰু বৰা ধানৰ খেতি কৰা হৈছিল। বৰাও এক প্ৰকাৰৰ লাহী ধানেই আৰু ইয়াৰো বহুতো জাত আছে।

সৰ্বসাধাৰণ মানুহে খোৱা ভাতৰ কাৰণে বিভিন্ন জাতৰ সাধাৰণ শালি, আছ আৰু বাওধানৰ চাউল এতিয়াৰ দৰে তেতিয়াও ব্যৱহাৰ কৰিছিল বুলি ধাৰণা কৰিব পাৰি। শ্ৰমজীৱী মানুহে মিহি ধানৰ চাউলত কৈ মোটোহা ধানৰ চাউল অধিক পচন্দ কৰে কাৰণে সৰহ ভাগ খেতিয়কে তেনে ধানৰ খেতি কৰে বা আগয়েও

কৰিছিল। মিৰ্-জুম্লাৰ অসম আক্ৰমণৰ সময়ত (১৬৬৩ খ্ৰিঃ) অহা ভ্ৰমণকাৰী চাহাবুদ্দিনে বোধ হয় এই কাৰণেই অসমত লাহী ধানৰ খেতি বৰ কম হৈছিল বুলি লিখিছিল।^{১০}

স্থায়ী বসতি আৰু স্থায়ী কৃষিৰ অঞ্চলৰ ওচৰে-পাঁজৰে অস্থায়ী বসতি আৰু অস্থায়ী কৃষিৰ অঞ্চল কিছুমান আছিল আৰু সেইবোৰত ঘাইকৈ আছ ধানৰ খেতি কৰা হৈছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। আজিকালি জুম খেতি নামেৰে বুজোৱা কৃষি পদ্ধতিৰে তেতিয়াও সমভূমিৰ ওখ ঠাই, পাহাৰুৱা ঠাই আৰু নৈৰ পাৰৰ চৰ-চাপৰিবোৰত ব্যাপক ৰূপত খেতি কৰা হৈছিল। বৃটিচ যুগৰ তথ্য-পাতি ব্যৱহাৰ কৰিয়ে অমলেন্দু গুহই অনুমান কৰিছে যে ত্ৰয়োদশ শতিকাত বড়ো-কছাৰীসকলে খেতি কৰিবলৈ সাধাৰণতে খন্তা (hoe) ব্যৱহাৰ কৰিছিল আৰু নামনি অসমত আছ আৰু বাওধানৰ খেতি ব্যাপক আছিল।^{১১} এই অনুমান শুদ্ধ বুলিয়েই গণ্য কৰিব পাৰি। গুৰু চৰিত কথাতো কিছুমান বৰ্ণনা আছে যিবিলাকৰ পৰা জুম খেতিৰ প্ৰচলন আৰু আছ খেতিৰ ব্যাপকতাৰ ইঙ্গিত পোৱা যায়। “হাথিয়া কচাৰী মাঘতে গৈ জিনে পৰ্বতে আৰা কাটি ধান, কমৰা, কপাহ, আলু, মাহ, সৰিয়হ কৰি টঙ্গি দি থাকে”^{১২} এইয়া জুম খেতিৰ বৰ্ণনা আৰু ইয়াত উল্লেখ থকা ধানো আছ ধান বুলি ঠাৱৰ কৰিব পাৰি। “পাচে এদিন উজীৰৰ ধান নিৰাবলৈ নিলে মাতি। পাচে গুৰুজনে ধান কাটে বনকে ৰাখে”^{১৩} -এই বৰ্ণনাও আছ ধানৰ বুলিয়ে বুজিব পাৰি।

ধানৰ উপৰিও অন্যান্য বহুতো শস্যৰ খেতি কৰাৰ পৰম্পৰা প্ৰাচীন কালৰ পৰা অসমত আছে। কালিকা পুৰাণত “মাষান্, মুদগান্ মসুৰাংশ্চ তিলান্ ভঙ্গান্তথৈৱচ” (৭০/২৩) উল্লেখ থকাৰ পৰা বুজিব পাৰি মাটি মাহ, মণ্ড মাহ, মচুৰ মাহ, তিলৰ খেতি আগৰ কালতো কৰা হৈছিল। একেখন গ্ৰন্থত তিল তেল, সৰিয়হ তেল, লাই আৰু ভাঙৰ গুটিৰ ৰসৰ চাকিৰ উল্লেখ (কাঃ পৃঃ ৬১/১১০-১১) থকাৰ পৰা কব পাৰি যে তিলৰ উপৰিও সৰিয়হ আৰু লাইৰো খেতি মানুহে কৰিছিল। কালিকা পুৰাণত জলকীয়া, জালুক, জীৰা আদিৰ উল্লেখ আছে (কাঃ পৃঃ ৭০/৫৫) কাৰণে এনেবোৰ শস্যকো খেতি কৰা হৈছিল বুলি ধৰি লব পাৰি। পৰৱৰ্তী কালৰ ৰচনা গুৰু চৰিত কথাতো সৰিয়হ, মাহ, মণ্ড, মাটি-মাহ, মচুৰ, জালুক, হালধি, পিপলি আদিৰ উল্লেখ পোৱা যায়।^{১৪} সৰিয়হ, হালধি, জলকীয়া, পিপলিৰ উপৰিও আদাৰ উল্লেখ যোগিনী তন্ত্ৰত আছে।^{১৫} ভাস্কৰৱৰ্মাই হৰ্ষবৰ্ধনলৈ পঠোৱা বস্ত্ৰৰ ভিতৰত গুড়ৰ উল্লেখ^{১৬} থকাৰ পৰা তেতিয়াৰ পৰাই কুঁহিয়াৰ খেতি কৰি গুড় তৈয়াৰ কৰাৰ

পৰম্পৰা চলি আছে বুলি বুজিব পাৰি। পৰৱৰ্তী কালৰ ৰচনা গুৰু চৰিত কথাতো কুঁহিয়াৰৰ উল্লেখ আছে।^{১০}

তামোল-পাণৰ ব্যৱহাৰ প্ৰাক-ঐতিহাসিক কালৰ অস্তিক গোষ্ঠীৰ লোকসকলে প্ৰৱৰ্তন কৰিছিল বুলি পণ্ডিতসকলে অনুমান কৰে আৰু ভাস্কৰৰমাই হৰ্ষবৰ্ধনলৈ পঠোৱা বস্ত্ৰবোৰৰ মাজতে তামোলৰো উল্লেখ আছে।^{১১} পুৰণি কালৰ মাটিদানৰ ফলিত প্ৰাগজ্যোতিষ নগৰত তামোলৰ গছত পাণ গছে মেৰিয়াই থকাৰ বৰ্ণনা পোৱা যায়।^{১২} কালিকা পুৰাণতো তামোলৰ উল্লেখ পোৱা যায় (৭০/২৮)। সাধাৰণতে ঘৰৰ চৌহদৰ ভিতৰতে বিশেষকৈ গাওঁ অঞ্চলত মানুহে তামোল-পাণ ৰোৱে।

চীনা পৰিব্ৰাজক হিউৱেন-চাঙৰ বৰ্ণনাত কঁঠাল আৰু নাৰিকলৰ উল্লেখ থকাৰ^{১৩} পৰাই বুজিব পাৰি এই দুবিধ ফলৰ গছ অসমৰ মানুহে অতীতৰ পৰাই ৰোৱে। কঁঠাল, আম, জামু, শ্ৰীফল বা বেল, বগৰি, আমলখি, ঔ, তেঁতেলি আদি বিভিন্ন ফলৰ গছৰ উল্লেখ মাটি দানৰ ফলিবিলাকতো পোৱা যায়।^{১৪} বস্ত্ৰ আৰু খেতিৰ মাটিৰ চৌহদত বাঁহ, বেঁত, শিমলু আদি থকাৰ উল্লেখো মাটি দানৰ ফলিবিলাকত আছে।^{১৫}

কপাহৰ খেতি কৰা, পাট-মুগা-এড়ী-পলু-পোহাৰ ব্যৱস্থা খেতিৰ আনুষঙ্গিক কাৰ্য হিচাপে অসমৰ মানুহে অতীতৰ পৰাই কৰে। মধ্য যুগৰ ৰচনা গুৰু চৰিত কথাতো পাট পলু পোহাৰ উল্লেখ পোৱা যায়।^{১৬} আন হাতে পাট-মুগা কাপোৰ বোৱাৰ শিল্প অসমৰ এক সুপ্ৰাচীন শিল্প।

একেদৰে কৃষিৰ অন্য এক আনুষঙ্গিক কাৰ্য হিচাপে পশু-পক্ষী পালনৰ ব্যৱস্থা অতীত কালৰ পৰাই চলি আছে। মাটি দানৰ ফলিবিলাকত চৰণীয়া পথাৰৰ উপৰিও “হাতী, ঘোঁৰা, গৰু, ম'হ, ছাগলী, ভেৰা আদি চৰি ফুৰা সকলো উপদ্ৰৱ”ৰ উল্লেখৰ পৰা বুজিব পাৰি এইবোৰ জন্তু মানুহে তেতিয়া পুহিছিল।^{১৭} গুৰু চৰিত কথাতো ‘গো-মহিষ, ছাগ, ভেৰা ছাগ’ আৰু হাঁহ-পাৰ আদি পোহাৰ উল্লেখ আছে।^{১৮} বুৰঞ্জীতো আহোমসকলে অসমলৈ অহাৰ সময়ৰ কিছুমান বৰ্ণনা পোৱা যায় যিবিলাকৰ পৰা ম'হ, গৰু, গাহৰি, ঘোঁৰা, হাতী, হাঁহ, কুকুৰা আদি পোহাৰ ব্যৱস্থা থকাৰ কথা সহজে অনুমান কৰিব পাৰি।^{১৯}

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- (২) Ibid, pp. 263, 277 and 280.
- (৩) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পাদিত), *প্ৰাচ্য শাসনাবলী*, পৃঃ ১৯২
- (৪) S.N. Sarma, *A Socio-Economic and Culutral History of Assam*, p. 147
- (৫) মাধৱ কন্দলি *ৰামায়ণ* : লঙ্কাকাণ্ড
- (৬) S.N. Sarma, *op cit*, p 144
- (৭) A. Guha, *Medieval and Early Colonial Assam*, pp. 69 and 73
- (৮) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পাদিত), *গুৰু চৰিত কথ*, পৃঃ ৩৯
- (৯) ই পৃঃ ৪৮
- (১০) ই পৃঃ ১৭, ২৩, ৪৩, ১১২, ১৮২
- (১১) P.C. Choudhury, *The History and Civilisation of the People of Assam*, p. 336.
- (১২) Ibid, p. 335
- (১৩) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পাদিত), *পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ*, পৃঃ ২০৩
- (১৪) Suniti Kumar Chatterji, *Kirata-Jana-Krtu*, p. 96
- (১৫) Dr. D. Sarma (ed), *op. cit*, pp. 255 and 258
- (১৬) P. C. Choudhury, *op. cit*, pp. 335-36
- (১৭) Dr. D. Sarma (ed), *op. cit*, pp. 260, 264, 268 and 275
- (১৮) Ibid, pp. 263 and 277
- (১৯) মহেশ্বৰ নেওগ, *পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ*, : পৃঃ ৪৮-৪৯
- (২০) Dr. D. Sarma (ed.), *op. cit*, pp. 260 and 267
- (২১) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পাদিত), *পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ* পৃঃ ১০, ৪৫, ৪৭
- (২২) সূৰ্যকুমাৰ ভূঞা (সম্পাদিত), *সাতসৰী অসম বুৰঞ্জী* পৃঃ ৪,৫,৬,৮,১৯

(৩) প্ৰকৃতিৰ পৰা সংগ্ৰহ কৰা বস্তু

প্ৰকৃতিৰ পৰা সোণ, ৰূপ, লো, লোণ আদি খনিজ বস্তুৰ উপৰিও মাছ, চৰাই, হৰিণা, হাতী, গাহৰি আদি জীৱ-জন্তু আৰু বাঁহ, কাঠ, খৰি, বেঁত, ঔষধি, লা, মেঠ, অগৰু, সাঁচিপাত, ৰং তৈয়াৰ কৰা উপাদান, টেকীয়া, কচু, আলু, ফল-মূল, কুমাৰ মাটি আদি সংগ্ৰহ কৰাৰ পৰম্পৰা প্ৰাচীন কালৰ পৰা আছে। আহোমসকল অসমলৈ অহাৰ আগৰে পৰাই সোৱণশিৰী, ব্ৰহ্মপুত্ৰ আদি নৈত কছাৰী, কেওট, কোঁচ, চুতীয়া আদি জনগোষ্ঠীৰ লোকে সোণ কৰ্মাইছিল।^১ এইসকল লোকৰ লগতে আন লোককো আহোমৰ ৰাজত্ব কালত সোণ কৰ্মোৱা কামত নিয়োগ কৰা হৈছিল। ঠেঙ্গাল নামৰ সোণোৱাল কিছুমানে ধনশিৰি নৈত ৰূপ কৰ্মাইছিল।^২ প্ৰাক-আহোম যুগৰ পৰাই কছাৰী, চুতীয়া আদি লোকে যি ঠাইত আকৰৰ পৰা লো উলিয়াইছিল সেই ঠাইৰ নাম আহোমে টিৰু পাহাৰ দিয়ে।^৩ আহোম ৰজাৰ দিনত তিৰুৱাল কছাৰীসকলক লো আহৰণৰ কামত বিশেষভাৱে নিয়োগ কৰা হৈছিল।^৪

আগৰ কালত শদিয়া, বৰহাট, নামবৰ আদি কিছুমান ঠাইত পুঙৰ পৰা লোণ উলিওৱা হৈছিল।^৫ নগা পাহাৰৰ নামনিৰ মহঙত লোণৰ খনি আছিল আৰু তাৰ কাৰণেও সেই ঠাই অধিকাৰত ৰখাৰ বাবে নগাৰ লগত আহোমৰ যুদ্ধ হৈছিল।

স্থানীয় নৈ, বিল, খাল আদিত আৰু বাৰিষা কালত পথাৰত পোৱা বিভিন্ন মাছ ধৰি অতীতৰ পৰাই অসমৰ মানুহে খায়। মাছৰ আঞ্জাৰ বৰ্ণনা *যোগিনী তন্ত্ৰ*, *কুমাৰ হৰণ*, *পদ্মা পুৰাণ* আদি গ্ৰন্থতো আছে। মাছৰ ব্যৱসায় কৰা কৈৱৰ্তসকল এটা অতি প্ৰাচীন জনগোষ্ঠী আৰু পুৰণি কালৰে মাটিদানৰ ফলিতো এইসকল লোকৰ উল্লেখ আছে।^৬

হাবিত পোৱা বিভিন্ন জন্তু যেনে হাতী, ম'হ, বাঘ, গাহৰি, হৰিণা, বান্দৰ, ফেঁটা সাপ, অজগৰ, গুঁই আদিৰ উল্লেখ মাধৱ কন্দলিৰ *ৰামায়ণ*ত আছে। *ব্ৰহ্মবাহন* পৰ্বনামৰ গ্ৰন্থত অন্যান্য জন্তুৰ উপৰিও গঁড় আৰু কেঁটেলা পহুৰ (কঁটলা) উল্লেখ পোৱা যায়। একেখন গ্ৰন্থত ডাউক, শালিকা, টুনি, কণামুচৰি, মাছৰোকা, চিলনী, কাম, ভেৰী, কুৰুৱা, শগুন, পানী কাউৰী, আদিৰো নাম আছে। এইবোৰ কিছুমান মানুহে খায়। কিছুমান ঔষধ-পাতিতো ব্যৱহাৰ কৰে।

ঘৰ সজাৰ বাবে কাঠ, বাঁহ, বেঁত, খেৰ আদি হাবিৰ পৰা সংগ্ৰহ কৰাৰ ব্যৱস্থা অতীতৰ পৰা চলি আহিছে। খৰি, ঔষধি গছ, ধূনা, লা, আদিও হাবিৰ পৰাই পোৱা যায়। বাঁহ, বেঁত, কাঠ আদি শিল্পজাত বস্তু উৎপাদনতো ব্যৱহাৰ হয়। আগৰ

কালত বিস্তৃত বনাঞ্চল আছিল কাৰণে এইবোৰ বস্তুৰ অভাৱ নাছিল। পুৰণি কালত পুথি ৰচনাৰ বাবে ব্যৱহাৰ হোৱা সাঁচিপাতৰ উপৰিও ৰং আৰু চিয়াহী তৈয়াৰ কৰা বিভিন্ন গছ-গছনিৰ গুটি, ছাল, শিপা আৰু পাত, সুগন্ধি দ্ৰব্য অগৰু আদিৰ লগতে শাক-পাত, কচু, ফল-মূল, মৌ আদি খাদ্যৰ বাবেও সংগ্ৰহ কৰা হৈছিল। এতিয়াও মানুহে এইবোৰ কম পৰিমাণে হ'লেও সংগ্ৰহ কৰে।

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- (১) হিতেশ্বৰ বৰবৰুৱা, *আহোমৰ দিন*, পৃ: ৪৫৪
- (২) ঐ পৃ: ৪৫৪
- (৩) ড° লীলা গগৈ, *টাই সংস্কৃতিৰ ৰূপৰেখা*, পৃ: ৬২
- (৪) ক্ষেত্ৰধৰ বৰগোহাঁই, *প্ৰবন্ধ সংকলন*, পৃ: ৬৬
- (৫) হিতেশ্বৰ বৰ বৰুৱা, *পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ*, পৃ: ৪৭১
- (৬) Dr. Lakshmi Devi, *Ahom-Tribal Relations*, p. 31
- (৭) Dr D. Sarma (ed), *Kamarupa Sasanavali*, p. 280

(৪) শিল্প আৰু শিল্পজাত বস্তু

প্ৰাচীন আৰু মধ্যযুগৰ প্ৰায় সকলো শিল্পই কুটিৰ শিল্প আছিল বুলিব পাৰি। ৰাজকীয় তত্ত্বাৱধানত কোনো কোনো ক্ষেত্ৰত উৎপাদন কেন্দ্ৰ স্থাপন কৰা হৈছিল যদিও তেনে কেন্দ্ৰৰ সংখ্যা নগণ্য আছিল। প্ৰায় সকলো শিল্পজাত বস্তু শিল্পীসকলে নিজৰ ঘৰত পৰিয়ালৰ লোক আৰু প্ৰশিক্ষণৰ বাবে নিয়োজিত হোৱা কম সংখ্যক অন্য কৰ্মীৰ সহায়ত উৎপাদন কৰিছিল। প্ৰাচীন কালৰ পৰা অসমত কপাহী কাপোৰ আৰু পাট-মুগা-এৰী কাপোৰৰ বোৱা-কটা, মাটিৰ বাচন তৈয়াৰ কৰা, তাম-কাঁহ-পিতলৰ বাচন-বৰ্তন তৈয়াৰ কৰা, ঘৰুৱা ব্যৱহাৰৰ আৰু খেতিৰ সঁজুলিৰ লগতে যুদ্ধৰ অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰ আদি লোৰে তৈয়াৰ কৰা, সোণ-ৰূপৰ অলঙ্কাৰ আৰু অন্য বস্তু তৈয়াৰ কৰা, কাঠৰ বস্তু তৈয়াৰ কৰা, বাঁহ-বোঁতৰ বস্তু তৈয়াৰ কৰা, মূৰ্তি সজা, শিল্পৰ বস্তু আৰু হাতী দাঁতৰ বস্তু তৈয়াৰ কৰাৰ দৰে শিল্পবোৰৰ প্ৰচলন আছিল।

(ক) বোৱা-কটা শিল্প

কৌটিল্যৰ অৰ্থশাস্ত্ৰত কামৰূপৰ সুৱৰ্ণকুণ্ডাত উৎপাদিত পত্ৰোৰ্ণ, দুকুল বস্ত্ৰ আদিৰ উল্লেখ আছে।^১ কামৰূপৰ ৰজা ভাস্কৰৱৰ্মাই হৰ্ষৱৰ্ধনলৈ পঠোৱা বস্ত্ৰবিলাকৰ মাজত ৰেচম কাপোৰৰ ছাতি, গামোচা, কপাহী পিন্ধা কাপোৰ আদিও আছিল।^২ কালিকা পুৰাণতো কপাহী, উনী, গছৰ বাকলি আৰু পলু বাহৰ কাপোৰৰ (কা. পু. ৬৯/১) উল্লেখ পোৱা যায়। পৰৱৰ্তী কালৰ ৰচনা গুৰু চৰিত কথাত যঁতৰত সূতা কটা, শালত কাপোৰ বোৱা, শাল পতা আদি কামবোৰ সাধাৰণ গৃহস্থালিৰ কামৰ অংশ হিচাপে কৰাৰ বৰ্ণনা আছে। একেখন গ্ৰন্থতে শঙ্কৰদেৱে তাঁতীৰ হতুৱাই নিজ তত্ত্বাৱধানত বৃন্দাবনী কাপোৰ বোৱাৰ বৰ্ণনাৰ উপৰিও তিৰোতাই পাঁজি কটা (সূতা কটা), কাপোৰ বোৱা ব্যৱসায়ৰ সংগঠক হিচাপে কাম কৰা মৰল বৃদ্ধিৰ লোক, কাপোৰ বোৱা সাধাৰণ বৃদ্ধিধাৰী তাঁতী, যুগী সম্প্ৰদায়ৰ লোকে পলু পোহা আদিৰো উল্লেখ আছে।^৩ তান্তিকুচি বা তাঁতীকুচি, কমাৰকুচি, শোৱালকুচি, গণককুচি আদি ঠাই বোৱা-কটা বা বয়ন শিল্পৰ কেন্দ্ৰ আছিল বুলিও উক্ত গ্ৰন্থৰ পৰা জানিব পাৰি।^৪ আহোম ৰজাই চুতীয়া ৰাজ্য জয় কৰাৰ সময়ত তাত তাঁতী বৃদ্ধিধাৰী লোক পাইছিল।^৫ চ্যুৎমুং (দিহিঙীয়া) ৰজাৰ সময়ত কছাৰী ৰজাই বছৰি কৰ হিচাপে দিবলৈ সন্মত হোৱা বস্ত্ৰৰ ভিতৰত তাঁত কাপোৰ আৰু উকা কাপোৰো আছিল।

কপাহৰ পৰা যঁতৰত সূতা কাটি তাঁত শালত কাপোৰ বোৱাৰ উপৰিও মুগা আৰু এৰী পলু পুহি সেইবোৰৰ খোল বা বাঁহৰ পৰা সূতা কাটি মুগা আৰু এৰী কাপোৰ বোৱাৰ পৰম্পৰা আগৰ কালত অসমৰ প্ৰায় সকলো লোকৰ ঘৰত প্ৰচলিত আছিল। পাট পলু পোহা আৰু তাত বাঁহৰ পৰা সূতা কাটি পাট কাপোৰ বোৱাৰ কাম ঘাইকৈ যুগী বা কাটনি সম্প্ৰদায়ৰ লোকে কৰিছিল। এইসকল লোকো অসমৰ এক অতি পুৰণি জনগোষ্ঠীৰ বংশধৰ। টিমন (মুগা পোহা ঠাই), তাওকাক (মুগা চাঙলৈ যোৱা বাট) আদি নাম বুজোৱা শব্দবোৰ আহোমসকলে অসমলৈ আহি প্ৰথম অৱস্থাত নিজ ভাষাত ঠাইৰ বৈশিষ্ট্যৰ লগত সঙ্গতি ৰাখি প্ৰচলন কৰিছিল।^৬ ইয়াৰ পৰা ক'ব পাৰি যে মুগা কাপোৰৰ শিল্প আহোমসকল অহাৰ আগৰে পৰা অসমত আছিল।

কাপোৰত ৰঙীন ফুল ৰচা আৰু তাৰ বাবে সূতাত ৰং দিয়াৰ পৰম্পৰাও প্ৰাচীন কালৰে পৰা অসমত আছিল। বৰাহী, মৰাণ আদি জনগোষ্ঠীৰ লোকে

আহোমসকল অসমলৈ অহাৰ সময়তে দৈনন্দিন জীৱনত ৰঙা-ক'লা আদি ৰঙেৰে কাম কৰা কাপোৰ পিন্ধিছিল। “চুৰিয়াৰ আঁচু ৰঙ্গা, কলা বা কতো, কাম কৰা” এনে উল্লেখ বুৰঞ্জীত আছে।^{১০} ভূঞাসকলে আগৰে পৰা ব্যৱহাৰ কৰা বচোৱাল, টঙালি আৰু হাঁচতিৰ চানেকি লৈ কাপোৰ তৈয়াৰ কৰি বিষয়াসকলক চ্যুংমুং (দিহিঙীয়া) ৰজাই নিবন্ধ কৰি দিয়াৰ কথাও পোৱা যায়।^{১১} এইবোৰ কাপোৰৰ চানেকি অধিক আকৰ্ষণীয় বা ৰংচঙীয়া আৰু উন্নত আছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। শঙ্কৰদেৱে যি বৃন্দাবনী কাপোৰ বোৱাইছিল তাৰ বাবে “ৰঙ্গা বগা ক'লা হলিদ্ৰা সৌজ : কাচনীল গেঠৰ শ্যাম বোলাই” অৰ্থাৎ সুতা ৰং কৰি লোৱা হৈছিল। “বৃন্দাবন গকুল মথুৰা দ্বাৰকা গোবৰ্দ্ধন যমুনা ৰদঃ দশ অৱতাৰঃ গোপগুপ্তি ধেনু বৎস শিশু” সেই কাপোৰত বচা হৈছিল। ৰং কৰা আৰু ফুল বচা প্ৰথা বহু আগৰে পৰা নাথাকিলে এইটো সম্ভৱ নহ'লহেঁতেন। গুৰু চৰিত কথাত থকা অন্য এক বৰ্ণনা এনে ধৰণৰ : “আৰু আই বৰ কাজি ফুলতি : গুটি গাতি গছ-লতা বুটা ছপা কেঁচ হাতী ঘোঁৰা চব দিব তুলিব পাৰে” ইত্যাদি।^{১২} অসমৰ জন-জাতীয় অজনজাতীয় সকলো গোষ্ঠীৰ তিৰোতাসকলে কাপোৰ বোৱা, ফুল বচাত আগেয়ে পাৰ্গত আছিল আৰু এতিয়াৰ দৰে আগেয়েও ঘৰৰ আৰু বিয়া-সবাহ, বিহু-উৎসৱ আদিত নানা চানেকিৰ ৰংচঙীয়া ফুল বচা কাপোৰ পিন্ধিছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি।

(খ) ধাতুৰ শিল্প

(১) সোণ-ৰূপৰ শিল্প : প্ৰাচীন কালৰ পৰা যিবোৰ ধাতু শিল্প কামৰূপ বা অসমত আছিল তাৰ ভিতৰত সোণ-ৰূপৰ শিল্প এক প্ৰধান শিল্প। কালিকা পুৰাণত সোৱণশিৰী নৈৰ পানীত সোণ থকাৰ কথা (৮০/১৭) আৰু সোণ-ৰূপৰ পাত্ৰৰ উল্লেখ (৬৭/৪২) আছে। হৰ্জৰৱৰ্মাৰ তেজপুৰ ফলিত ৰূপৰ কলহৰ উল্লেখ আছে।^{১৩} কামৰূপৰ সোণৰ বৃহৎ মূৰ্ত্তি থকা মন্দিৰত মহম্মদ বিন্ বখ্টিয়াৰে আশ্ৰয় লৈছিল বুলি জনা যায়।^{১৪} চুতীয়া ৰজাৰ সোণৰ দণ্ড, সোণৰ মেকুৰী, সোণৰ খাট থকাৰ উপৰিও চুতীয়া ৰাজ্যত সোণাৰী লোক আছিল বুলি বুৰঞ্জীত আছে।^{১৫} সোণ-ৰূপৰ নানা অলঙ্কাৰ ধনী আৰু সম্ভ্ৰান্ত্ৰ বিশেষকৈ উচ্চ শ্ৰেণীৰ লোকে অতীতৰ পৰাই ব্যৱহাৰ কৰি আহিছে। ভাস্কৰৱৰ্মাই হৰ্ষবৰ্ধনলৈ পঠোৱা উপহাৰৰ মাজত মণি - মুক্তা খটোৱা অলঙ্কাৰো আছিল।^{১৬} চুতীয়া ৰজাই সন্ধি কৰিবলৈ আহোম ৰজালৈ পঠোৱা বস্তুৰ মাজত সোণৰ কেৰু, সোণৰ খাৰু, সোণৰ শৰাইও আছিল।^{১৭}

(২) তামৰ শিল্প : মাটিদানৰ তামৰ ফলি, তাল্পেশ্বৰী মন্দিৰৰ^{১৮} তামৰ চাল, গুৱাহাটীৰ ওচৰত পোৱা তামৰ ঘণ্টা, তামৰ কমণ্ডলু, তামৰ মূৰ্তি আদিয়ে তামৰ শিল্পৰ পৰম্পৰা আগৰ কালত থকাৰ প্ৰমাণ দিয়ে।^{১৯} মন্দিৰৰ পুৰোহিত আৰু ব্ৰাহ্মণসকলে সাধাৰণতে তামৰ পাত্ৰত পানী লৈ পূজা-অৰ্চনা কৰে। কালিকা পুৰাণতো অন্যান্য ধাতুৰ পাত্ৰৰ লগতে তামৰ পাত্ৰৰ উল্লেখ আছে (কাঃ পুঃ ৬৭/৪২)।

(৩) কাঁহ-পিতলৰ শিল্প : কাঁহ-পিতলৰ বাচন-বৰ্তনৰ ব্যৱহাৰৰ কথা কালিকা পুৰাণত (৬৭/৪২) পোৱা যায়। ইয়াৰ পৰা বুজিব পাৰি দশম-একাদশ শতিকা বা তাৰো আগৰ পৰা কামৰূপত কাঁহ-পিতলৰ শিল্প আছিল। পৰৱৰ্তী কালৰ বচনা গুৰুচৰিত কথাত লোটা, বাতি, টোঁ, চৰিয়া, কলহ, কাঁহী, বান আৰু বানকাঁহী, বেৰা কাঁহী আদি দৈনন্দিন জীৱনত মানুহে ব্যৱহাৰ কৰাৰ উল্লেখ আছে।^{২০} আগৰে পৰা কাঁহ-পিতলৰ বাচন-বৰ্তন ব্যৱহাৰ কৰাৰ পৰম্পৰা থকা কাৰণেই সৰ্থেবাৰীত কাঁহৰ শিল্প আৰু হাজোত পিতলৰ শিল্প পিচৰ কালত বৈশিষ্টপূৰ্ণভাৱে গঢ়ি উঠিছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি।

(৪) লোৰ শিল্প : মাটি চহাবলৈ ব্যৱহাৰ হোৱা খন্তি (hoe), কোৰ, নাঙলৰ ফাল আদি তৈয়াৰ কৰিবলৈ কৃষি কাৰ্য বিকাশ হোৱাৰ কিছু পিচত লোৰ শিল্পৰ আৰম্ভণি হৈছিল। দা, কুঠাৰ, যাঠী, বৰ্শা, তৰোৱাল, হেংদাং, ছুৰী-কটাৰী আদি সঁজুলি আৰু অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰৰ ব্যৱহাৰ প্ৰাচীন কালৰে পৰাই আছিল। পূজাত নিষিদ্ধ পাত্ৰ হিচাপে লোৰ পাত্ৰৰ উল্লেখ কালিকা পুৰাণত পোৱা যায়। (কা. পু. ৬৭/৪৩)। শঙ্কৰদেৱৰ পূৰ্বপুৰুষ বাৰভূঞাসকলক কোৰ, দা আদি দি কামেশ্বৰ দুৰ্লভ নাৰায়ণে লেঙ্গামাগুৰিত পাতিছিল। চণ্ডীবৰে দা, শেল লৈ ভোটক খেদি গৈছিল পুত্ৰ ৰাজধৰক উদ্ধাৰ কৰিবলৈ। “পুৱা-গধূলি গৰা-গিটা ছট ছট হাট হাট গুৰুজনে শুনি হৰিকথা চৰ্চাত কষ্ট পাই” গুৰু চৰিত কথাত এই বৰ্ণনাই কমাৰশালৰ শব্দৰে ইঙ্গিত দিয়ে।^{২১} আহোম ৰজাই চুতীয়া ৰাজ্য জয় কৰি মিঠা হোলেং বৰতোপ আৰু কমাৰ বৃত্তিধাৰী লোক পাইছিল।^{২২} চ্যুকাফাৰ নেতৃত্বত অসম সোমোৱা আহোমে প্ৰথমে লগ পোৱা মৰাণ-বৰাহীয়ে “দা পাৰি বহা”; চ্যুকিন-ফাই মৰাণ এঘৰত যাঠী-দা পোৱা আদি বুৰঞ্জীৰ বৰ্ণনাৰ পৰাও সৰ্বসাধাৰণ লোকৰ মাজত লোৰ বস্তুৰ ব্যৱহাৰৰ

ব্যাপকতা আৰু তাৰ বাবে লোৰ বস্তু তৈয়াৰ কৰা শিল্পৰে উপস্থিতিৰ সম্পৰ্কে অনুমান কৰিব পাৰি।^{১৩}

(গ) কাঠৰ শিল্প

পুৰণি কালৰ পৰাই ব্ৰহ্মপুত্ৰ আৰু অন্য নৈসমূহত কাঠৰ নাও চলোৱাৰ ব্যৱস্থা আছিল। নৈ পাৰ হোৱা, মাছ ধৰা, জল যুদ্ধ, আভ্যন্তৰীণ আৰু বৈদেশিক বাণিজ্যৰ লগতে নাওখেলৰ দৰে অন্যান্য উদ্দেশ্যতো নাও ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। তাঁতশাল আৰু ইয়াৰ বিভিন্ন সঁজুলি বা আহিলাপাতি, মন্দিৰৰ থাপনা, গছা, ঘৰুৱা সামগ্ৰী, যেনে : টেকী, উৰল মাৰি, পীৰা, চালপীৰা, পেটাৰি আদি কৃষিৰ সঁজুলি, যেনে : নাঙল, যুৰীলি, জবকা আদিৰ উপৰিও দোলা, পাঞ্চী, চাংঘৰ আৰু অন্য ঘৰ-দুৱাৰ সজাৰ কামত কাঠৰ ব্যৱহাৰ ব্যাপক আছিল। সেয়ে কাঠৰ শিল্পৰ পুৰণি কালতে বিকাশ হৈছিল। কাঠৰ কাম কৰা শিল্পীক বাঢ়ৈ বা বাঢ়ৈ-খনিকৰ বোলা হৈছিল। চুতীয়া ৰাজ্যৰ লগত হোৱা আহোম ৰাজ্যৰ সম্পৰ্ক আৰু সংঘৰ্ষৰ প্ৰসাৰত নাৱেৰে যুদ্ধ কৰাৰ উপৰিও নাৱত উঠি মাছ মৰা, মাছ কাঢ়ি নিয়া আদিৰ লগতে চুতীয়া ৰাজ্যত পোৱা কেঁকোৰা দোলাৰ উল্লেখ বুৰঞ্জীত আছে। চ্যাডাংফা ৰজাৰ দিনত শিল্পি কাঠেৰে শিল্পি ঘৰ বন্ধা, চ্যুত্‌মুং (দিহিঙীয়া) ৰজাক বৰাহী মানুহে দিয়া “কুঢ়িলাৰ সজা, দুই টুপ দিয়া, চাঙ্গখৰৰ ঠেনা” বা আৰ্হিত সাধাৰণ মানুহক তেনে ঘৰ সাজিবলৈ মানা কৰা আদিৰ উল্লেখো বুৰঞ্জীত পোৱা যায়।^{১৪} পিচৰ কালত সত্ৰত গুৰু আসন, ভাওনাৰ মুখা, নাম ঘৰ, মন্দিৰ আদি বেৰ আৰু মজিয়াত পুৰণি উপাখ্যানৰ দেৱ-দেৱী, দৈত্য-দানৱ আদিৰ মূৰ্তিও কাঠেৰে সাজিবলৈ লোৱা হৈছিল।

(ঘ) শিলৰ বস্তুৰ শিল্প

প্ৰাচীন কালত শিলেৰে সজা মন্দিৰ, ৰাজপ্ৰাসাদ, শিলৰ সাঁকো, শিলৰ ফলি আদিৰ যি অৱশিষ্ট এতিয়ালৈ আছে সেইবোৰে শিলৰ বস্তু তৈয়াৰ কৰা বা শিলাকুটি শিল্পৰ বিকাশ সুদূৰ অতীততে হোৱাৰ প্ৰমাণ দিয়ে। দেৱ-দেৱীৰ মূৰ্তি, শিলৰ কাঁহী-বাতি, পটা, পটা-গুটি, টেকীৰ গাঁৰিশলি, শিলৰ পাটনাদ আদি বস্তুবোৰো তেতিয়াৰ দিনত তৈয়াৰ কৰা হৈছিল। গুৱাহাটীৰ আমবাৰী উদ্ধাৰ হোৱা নটৰাজ শিৱ, বিষ্ণু, দুৰ্গা, সূৰ্য, গঙ্গা, যমুনা আদি মূৰ্তিবোৰৰ কিছুমান দ্বাদশ-ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ বুলি অনুমান কৰা হৈছে।^{১৫} শদিয়াত পোৱা সৰ্প স্তম্ভটো চুতীয়া ৰাজত্বৰ

কালৰ বুলি আৰু^{২৬} ডিমাপুৰৰ ধ্বংসাত্মক কছাৰী বজাসকলে চতুৰ্দশ-ষোড়শ শতিকাত কৰা নিৰ্মাণকাৰ্য অৱশেষ বুলি অনুমান কৰা হয়। আহোম ৰাজ্যৰ প্ৰথম ভাগত নিৰ্মিত মন্দিৰ, প্ৰাসাদ আদিৰ নিদৰ্শন বা ধ্বংসাত্মক পোৱাৰ কথা জনা নাযায়। কিন্তু পৰৱৰ্তী কালত আহোম ৰাজ্য আৰু কোঁচৰ ৰাজ্যত যেনে নিৰ্মাণ কাৰ্য হৈছিল আৰু সেইবোৰত কিছু পৰিমাণে শিলৰ ব্যৱহাৰ হৈছিল।

(ঙ) মাটিৰ শিল্প

কৃষি ব্যৱস্থাৰ বিকাশৰ লগে লগে বা অলপ পিচতে মাটিক বস্তু নিৰ্মাণৰ শিল্পৰ আৰম্ভণি হৈছিল বুলি অনুমান কৰা হয়। আগৰ কালত মানুহে মাটিৰ চক, হাঁড়ি, কলহ, টেকেলি, মলা, থাল, থালি, ঘট, চাকি, চিলিম আদি দৈনন্দিন জীৱনত ব্যৱহাৰ কৰিছিল। তাৰ উপৰি মাটিৰ দেৱ-দেৱীৰ মূৰ্তি, ইটা, পুতলা, নাদৰ পাট, বাদ্য-যন্ত্ৰ ঢোল-খোল আদিৰ অংশৰ দৰে বিভিন্ন বস্তুও তৈয়াৰ কৰা হৈছিল। কালিকা পুৰাণত মাটিৰ পাত্ৰৰ উল্লেখ আছে (৬৭/৪২)। শদিয়াৰ ওচৰৰ ধ্বংসাত্মক লগত পোৱা পোৰা-মাটিৰ মূৰ্তিবোৰ ত্ৰয়োদশ-চতুৰ্দশ শতিকাৰ বুলি অনুমান কৰা হৈছে। দেৱ-দেৱীৰ মূৰ্তিৰ উপৰিও চৰাই, জন্তু আদিৰ মূৰ্তি সেইবোৰৰ মাজত আছে।^{২৭} বড়পালদেৱৰ শুৱালকুচি তামৰ ফলিত ইটাৰ ভাটাৰ উল্লেখ,^{২৮} তেজপুৰৰ ওচৰৰ দ-আটি গাওঁ আৰু বৰচলা গাৱঁৰ ধ্বংসাত্মক উপৰিও ডিমাপুৰৰ ধ্বংসাত্মক^{২৯} ইটা থকাৰ পৰা এইবিধ মাটিৰ বস্তু উৎপাদনৰ শিল্পৰ বিকাশ হোৱাৰ প্ৰমাণ পোৱা যায়। কুমাৰ আৰু হীৰা এই দুটা সম্প্ৰদায়ৰ লোকে সাধাৰণতে মাটিৰ বস্তু এতিয়াও গঢ়ে। কুমাৰে চাকৰৰ সহায়ত আৰু হীৰাই চাকৰ ব্যৱহাৰ নকৰাকৈ মাটিৰ পাত্ৰ গঢ়ে। কুমাৰ সম্প্ৰদায়ৰ লোকেই কুমাৰ কলিতা বুলিও পৰিচয় দিয়ে। প্ৰাক্-আহোম যুগৰ পৰাই হীৰা আৰু কুমাৰ সম্প্ৰদায়ৰ লোক বাস কৰিছিল। প্ৰথম আহোম ৰজা চ্যুকাফাই ছঘৰ বৰাহী লোকৰ মাজত এঘৰ বৰকুমাৰ পাইছিল বুলি বুৰঞ্জীত উল্লেখ আছে।^{৩০} শঙ্কৰদেৱে কুমাৰৰ হতুৱাই খোল-গঢ়োৱাৰ কথা চৰিত পুথিত আছে। হীৰা আৰু কুমাৰ সম্প্ৰদায়ৰ থকা ঠাইৰ উল্লেখ ওকচৰিত কথাত আছে।^{৩১}

(চ) বাঁহ-বেতৰ শিল্প

অসমত বাঁহ-বেঁত প্ৰচুৰ পৰিমাণে পোৱা যায় আৰু ইয়াৰ মানুহে ঘৰ-

দুৱাৰ সজা, বাৰী-ঘৰৰ চৌহদত জেওৰা দিয়াৰ বাঁহ-বেঁত ব্যৱহাৰ কৰাৰ উপৰিও শস্য শুকোৱা আৰু সংৰক্ষণ কৰা, চলা-জৰা কৰা আদি কামত কুলা, ডলা, চালনী, পাচি-খৰাহি, ডুলি আদি, মাছ ধৰাৰ বাবে জাকৈ, জুলুকি, চেপা, চৰহা, খালৈ আদি, মানুহ বহা আৰু শোৱাৰ বাবে ঢাৰি, চাং আদি, কাপোৰ আৰু অন্য বস্তু থোৱাৰ বাবে জপা, পেটাৰি আদি বস্তু থবলৈ, গাখীৰ খীৰাবলৈ কঁৰিয়া, বাদ্য-যন্ত্ৰ হিচাপে বাঁহী, টকা আদি, তাঁতশালৰ সঁজুলি হিচাপে উঘা-চেৰেকী, গৰকা, ছিৰী, শৰকাঠী আদি, বিচিবলৈ বিচনী, ৰ'দ-বৰষুণত ল'বলৈ জাপি আদি বিভিন্ন আৰু বহু প্ৰকাৰৰ বাঁহ-বেঁতৰ বস্তু ব্যৱহাৰ কৰে। ভাস্কৰৱৰ্মাই হৰ্ষবৰ্ধনলৈ পঠোৱা উপহাৰৰ মাজত বাঁহ-বেঁতৰ তৈয়াৰী চৰাইৰ সজা, খৰাহি, চুঙা আদিও আছিল।^{১০০} আগৰ কালত যুদ্ধত বাঁহৰ ধনু-কাঁড় ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। চৰাই, জন্তু আদি চিকাৰ কৰিবলৈও আগেয়ে মানুহে বাঁহৰ ধনু-কাঁড় ব্যৱহাৰ কৰিছিল।

(ছ) হাতী দাঁতৰ শিল্প

ভাস্কৰৱৰ্মাই হৰ্ষবৰ্ধনলৈ অন্যান্য বস্তুৰ লগতে হাতী দাঁতৰ কুণ্ডল পঠোৱা উল্লেখ আছে।^{১০১} চুতীয়া ৰাজ্যৰ ৰজাই আহোম সেনাধ্যক্ষলৈ সোণ-ৰূপৰ অলঙ্কাৰৰ উপৰিও হাতী দাঁতৰ কঠ বা পাটী উপহাৰ হিচাপে পঠাইছিল বুলি জনা যায়।^{১০২} এনেবোৰ তথ্যৰ পৰা বুজিব পাৰি হাতী দাঁতৰ শিল্পৰ আৰম্ভণি প্ৰাচীন কালতে হৈছিল। আহোম ৰাজত্বৰ কালত এই শিল্পৰ অধিক বিকাশ ঘটিছিল যদিও বৃটিচ যুগত ইয়াৰ অৱনতি হৈছিল বুলি হাতী দাঁতৰ কাম সম্পৰ্কীয় জে. ডোনাৰ্ডৰ (J. Donald) পুস্তিকাত পোৱা যায়।^{১০৩} বৰপেটাৰ হাতী দাঁতৰ শিল্প পুৰণি পৰম্পৰাৰে পৰৱৰ্তী কালৰ সংযোজন বুলি অনুমান হয়। দেৱ-দেৱীৰ মূৰ্তি, ৰথ, সিংহাসন, ফণি, শাখা, কুণ্ডল আদি আগেয়ে হাতীদাঁতৰ পৰা তৈয়াৰ কৰা হৈছিল যদিও এতিয়া এই শিল্পৰ মৃতপ্ৰায় অৱস্থা।

(জ) অন্যান্য শিল্প

উণী কাপোৰ, চামৰাৰ বস্তু, সুগন্ধি দ্ৰব্য আদি উৎপাদন কৰা শিল্প প্ৰাচীন কালত আছিল যদিও পিচৰ কালত এইবোৰৰ সম্পৰ্কে তথ্য-পাতি পোৱা নাযায়। মাটিদানৰ ফলিবিলাকত ভেড়াৰ উল্লেখ আছে কাৰণে ভেড়াৰ নোমৰ পৰা উণী কাপোৰ প্ৰস্তুত কৰা হৈছিল বুলি অনুমান হয়। ভাস্কৰৱৰ্মাই হৰ্ষবৰ্ধনলৈ পঠোৱা বস্তুৰ সৈতে পছৰ ছালৰ গাৰুৰ উল্লেখ আছে। সুগন্ধি দ্ৰব্য হিচাপে চন্দন, অগৰু,

কস্তুৰী, কৰ্পূৰ আদিৰ ব্যৱহাৰ পুৰণি কালৰ পৰা চলি আহিছে। হৰ্ষবৰ্ধনলৈ ভাস্কৰৰমাই পঠোৱা বস্ত্ৰৰ মাজত এই আটাই কেইবিধ বস্ত্ৰ আছিল।^{১০} কৌটিল্যৰ অৰ্থশাস্ত্ৰতো কামৰূপৰ কিছুমান ঠাইত উপলব্ধ হোৱা চন্দন, অগৰু আৰু তৈলপৰ্ণিকা নামৰ সুগন্ধি দ্ৰব্য উৎকৃষ্ট বুলি উল্লেখ কৰা হৈছে।

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- (১) ৰজনীকান্ত দেৱ শৰ্মা (সম্পা, অনু), *কৌটিলীয় অৰ্থশাস্ত্ৰ*, পৃ: ৫৬
- (২) Suniti Kumar Chatterji, *Kirata-Jana-Krti*, p. 96
- (৩) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পা), *গুৰুচৰিত কথ*, পৃ: ৪৯, ১৭৪, ১৯৮
- (৪) ঐ পৃ: ৮৩, ১৭৪, ৩৬৩
- (৫) সূৰ্য্যকুমাৰ ভূঞা (সম্পা), *সাতসৰী অসম বুৰঞ্জী*, পৃ: ১৪
- (৬) হিতেশ্বৰ বৰবৰুৱা, *আহোমৰ দিন*, পৃ: ৫১
- (৭) Dr. D. Sarma (ed), *Kamarupa Sasanaivali*, p. 262
- (৮) মহেশ্বৰ নেওগ, *পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ*, পৃ: ১১৬
- (৯) ড° লীলা গগৈ, *টাই সংস্কৃতিৰ ৰূপৰেখা*, পৃ: ১১১
- (১০) সূৰ্য্যকুমাৰ ভূঞা (সম্পা), *পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ*, পৃ: ৭
- (১১) ড° লীলা গগৈ, *পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ*, পৃ: ৫২
- (১২) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পা), *পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ*, পৃ: ১৭৪, ১৭৮, ২০৮
- (১৩) Dr. D. Sarma (ed), *op. cit*, p. 248
- (১৪) K.L. Barua, *Early History of Kamarupa*
- (১৫) সূৰ্য্যকুমাৰ ভূঞা (সম্পা), *পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ*, পৃ: ১৪
- (১৬) Suniti Kumar Chatterji, *op. cit*, p. 96
- (১৭) সূৰ্য্যকুমাৰ ভূঞা (সম্পা), *পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ*, পৃ: ৫৮

৯০ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

- (১৮) সৰ্বানন্দ ৰাজকুমাৰ, চুতীয়া বুৰঞ্জী, পৃঃ ৭
- (১৯) Dr D Sarma (ed), op cit, p 33
- (২০) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পা), পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ৫৩, ৬৯, ১৬২, ১৮৭, ৪২০
- (২১) ঐ পৃঃ ৮, ১০, ৮৩
- (২২) হিতেশ্বৰ বৰুৱা, পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ২৬
- (২৩) সূৰ্যকুমাৰ ভূঞা (সম্পা), পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ৪৪, ৫৭, ৬১
- (২৪) ঐ পৃঃ ১৪
- (২৫) S.N. Sarma, *A Socio-Economic and Cultural History of Medieval Assam*, p. 282
- (২৬) Ibid, p. 282
- (২৭) Ibid, pp. 276-77
- (২৮) Ibid, p. 307
- (২৯) Dr D. Sarma, op. cit, p. 264
- (৩০) সৰ্বানন্দ ৰাজকুমাৰ, পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ৯, ১০
- (৩১) হিতেশ্বৰ বৰবৰুৱা, পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ২৬
- (৩২) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পা), পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ৩১, ৮০, ৮৩
- (৩৩) Suniti Kumar Chatterji, op. cit, p. 96
- (৩৪) Ibid, p. 96
- (৩৫) সৰ্বানন্দ ৰাজকুমাৰ, পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ২৯
- (৩৬) S.N. Sarma, op.cit, p. 314
- (৩৭) Suniti Kumar Chatterji, op. cit, p. 96
- (৩৮) ৰজনীকান্ত দেৱ শৰ্মা (সম্পা), পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ৫৪

(৫) মুদ্ৰা আৰু বিনিময় ব্যৱস্থা

প্ৰাচীন আৰু মধ্যযুগৰ মুদ্ৰাৰ ব্যৱহাৰৰ সম্পৰ্কে আন্দোলন কৰাৰ প্ৰসঙ্গত মুদ্ৰা বোলোঁতে সোণ, ৰূপ, তাম আদি ধাতু গলাই মৰোৱা মুদ্ৰাৰ উপৰিও কড়ি, সোণ-ৰূপৰ টুকুৰা, হাতী-ঘোঁৰা, গৰু, ছাগলী, গাহৰি আদি জন্তু আৰু জন্তুৰ ছাল, কাপোৰ, ধাতুৰ পাত্ৰ আদি অন্য প্ৰকাৰৰ মুদ্ৰাকো অন্তৰ্ভুক্ত কৰাৰ প্ৰয়োজন হয়। মুদ্ৰা ব্যৱস্থাৰ বিকাশৰ আৰম্ভণিতে প্ৰায় সকলো সমাজতে দৈনন্দিন জীৱনত ব্যৱহাৰ হোৱা আৰু বিনিময়যোগ্য বস্তু কিছুমানকে মুদ্ৰা অৰ্থাৎ বিনিময়ৰ মাধ্যম বা দেনা-পাওনা নিষ্পত্তিৰ মাধ্যম হিচাপে আৰু প্ৰয়োজন অনুসৰি মূল্যৰ জোখ প্ৰকাশৰ একক হিচাপে আৰু সঞ্চয়ৰ মাধ্যম হিচাপেও ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। অৰ্থনীতিবিদসকলে এনে মুদ্ৰাক পণ্য মুদ্ৰা বুলি অভিহিত কৰে। আদিম অৱস্থাত সকলো সমাজতে বস্তু বিনিময় বা সাল-সলনি ব্যৱস্থাৰ প্ৰচলন আছিল আৰু পিচলৈ বস্তু বিনিময়ৰ লগতে পণ্য মুদ্ৰাৰ প্ৰচলন হ'বলৈ ধৰে আৰু তাৰো পিচত এই দুয়ো বিধ বিনিময় ব্যৱস্থাৰ উপৰিও ধাতু গলাই মৰোৱা মুদ্ৰা ব্যৱহাৰৰ যোগেদি প্ৰৱৰ্তিত বিনিময় ব্যৱস্থাবোৰো প্ৰচলন হয়। ধাতু গলাই মৰোৱা মুদ্ৰাবোৰ, বিশেষকৈ সোণ-ৰূপ আদি মূল্যবান ধাতুৰ মুদ্ৰাবোৰ, বিশেষ দেশ বা ৰাজ্যত প্ৰৱৰ্তন হোৱাৰ পিচত বহু কাললৈ সেই দেশ বা ৰাজ্যত প্ৰচলন হোৱাৰ উপৰিও চুবুৰীয়া দেশ বা ৰাজ্যতো প্ৰচলন হ'ব পাৰে; কিন্তু বহুত ক্ষেত্ৰত সেইবোৰ গলাই ধাতু হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰাৰ ফলত সেইবোৰৰ কোনো অৱশিষ্ট পিচত বিচাৰি পোৱা সম্ভৱ নহ'বও পাৰে।

প্ৰাচীন কালৰ আৰু আমাৰ আলোচ্য সময়ছোৱাৰ শেষলৈ মধ্য যুগৰ অসমৰ আৱিষ্কৃত (ধাতু গলাই তৈয়াৰ কৰা) মুদ্ৰাৰ সংখ্যা অতি তাকৰ বা প্ৰায় নাই বুলিয়ে ক'ব পাৰি। গোৱালপাৰাৰ ওচৰৰ পাগলাটেক মন্দিৰ ওচৰত মাটি খান্দোতে কেইটামান সোণৰ মুদ্ৰা পোৱা হৈছিল আৰু সেইবোৰ ৫ম-৬ষ্ঠ শতিকাত পূব ভাৰতত প্ৰচলিত কোনো ৰজাৰ মুদ্ৰা আছিল বুলি অনুমান কৰা হৈছে।^১ দৰং জিলাৰ ধুলা পাদুং চাহ বাগিচা আৰু মঙ্গলদৈৰ পৰা কিছুমান তামৰ মুদ্ৰা সংগ্ৰহ কৰা হৈছিল আৰু সেইবোৰত কিছুমানৰ গাত 'ব' আৰু আন কিছুমানৰ গাত 'হ' আখৰ খোদিত আছে কাৰণে সেইবোৰ কনমালবৰ্মা (৮৩২-৫৩ খ্ৰিঃ), বলবৰ্মা (৮৬০-৮০ খ্ৰিঃ) আৰু হৰ্জৰবৰ্মাৰ (৮১৩-৩২ খ্ৰিঃ) বুলি অনুমান কৰা হৈছে।^২ আহোম ৰজা চ্যুডাংফা (বামুণী কোঁৱৰে) (১৩৯৭-১৪০৭ খ্ৰিঃ) শিঙিৰি ঘৰত উঠি

সিংহাসনত বহাৰ সময়ত মুদ্ৰা মৰোৱা বুলি আৰু চ্যুত্ৰমুং (দিহিঙীয়া) ৰজাই (১৪৯৭-১৫৩৯ খ্ৰিঃ) পুৰীত পুখুৰী খন্দাবলৈ চন-খাম্ সন্দিকৈক ২০০ সোণৰ মোহৰ দি পঠাইছিল বুলি বুৰঞ্জীত উল্লেখ আছে যদিও উক্ত ৰজা দুজনৰ কোনো মুদ্ৰা আৱিষ্কৃত হোৱা নাই। একেদৰে দ্বাদশ শতিকাত কামৰূপত ৰাজত্ব কৰা ৰজা জয়পালৰ (১১০৫-১১২৫ খ্ৰিঃ) শিলিমপুৰ ফলিত সেই ৰজাই প্ৰহাস নামৰ ব্ৰাহ্মণ এজনত ৯০০ সোণৰ মুদ্ৰা দিয়াৰ কথা উল্লেখ থাকিলেও তেওঁৰো কোনো মুদ্ৰা পোৱা হোৱা নাই। তথাপি এইবোৰ তথ্যৰ আধাৰত অনুমান কৰিব পাৰি যে প্ৰাচীন কালত আৰু মধ্য যুগৰ আগ ভাগত অসমত সীমিত পৰিমাণে হলেও ধাতু গলাই মৰোৱা মুদ্ৰাৰ প্ৰচলন আছিল।

এই প্ৰসঙ্গতে গুৱাহাটী, নগাওঁ আদিত মাটিৰ তলত আৱিষ্কৃত হোৱা চুবুৰীয়া বিদেশী ৰাজ্যৰ মুদ্ৰাবোৰৰ সম্পৰ্কেও আলোচনা কৰাৰ প্ৰয়োজন আছে। আৱিষ্কৃত হোৱা বিদেশী মুদ্ৰাবোৰৰ ভিতৰত গিয়াচউদ্দিন ইৰাজ (১২১৩-২৭ খ্ৰিঃ), মালিক যুজবেক তুঘ্লক খাঁ (১২৫২-৫৭ খ্ৰিঃ), গিয়াচউদ্দিন বাহাদুৰ চাহ (১৩১০-২৩ খ্ৰিঃ), চিকন্দৰ চাহ (১৩৫৯-৮৯ খ্ৰিঃ), আলাউদ্দিন হুচেইন চাহ (১৪৯৩-১৫১৯ খ্ৰিঃ) আদিৰ নামত মৰোৱা মুদ্ৰা আছে।* মধ্যযুগৰ আগ ভাগতো পিচৰ কালৰ দৰে পশ্চিম ফালৰ পৰা কেইবাবাৰো বিদেশী আক্ৰমণ হৈছিল। আক্ৰমণকাৰী বিদেশী সৈন্য বাহিনীৰ লোকে নিজ ৰাজ্যৰ প্ৰচলিত মুদ্ৰা লগত লৈ অহাৰ কাৰণেই তেনে মুদ্ৰা অসমত আৱিষ্কৃত হোৱা বুলি অনুমান কৰা হয় যদিও সেইবোৰ বস্তু কিনা-বেচাৰ মাধ্যম হিচাপে তেতিয়াৰ অসমত ব্যৱহাৰ কৰা সম্ভৱ হৈছিল কাৰণেহে যে সেইবোৰ বিদেশী সৈন্যবাহিনীৰ লোকে ইয়ালৈ লগত লৈ আহিছিল সেই কথাও অনুমান কৰিব পাৰি। ইয়াৰ পৰা ইয়াকো অনুমান কৰিব পাৰি যে বাণিজ্যিক আদান-প্ৰদানৰ যোগেদিও তেনে মুদ্ৰা চুবুৰীয়া বঙ্গ, বিহাৰ আদিৰ পৰা অসমলৈ অহাত বাধা নাছিল।

মুদ্ৰা হিচাপে ব্যৱহাৰ হোৱা বস্তুসমূহৰ ভিতৰত কড়িৰ উল্লেখ প্ৰাচীন কালৰ গ্ৰন্থ, শিলালিপি আদিত পোৱা যায়। ভাস্কৰৰমাই হৰ্ষবৰ্ধনলৈ পঠোৱা অন্য উপহাৰৰ লগতে বহু পৰিমাণৰ ক'লা আৰু বগা কড়িও আছিল বুলি বাণৰ হৰ্ষচৰিতত উল্লেখ আছে।† চীনা পৰিব্ৰাজক ফাহিয়ানে গুপ্ত সম্ৰাট দ্বিতীয় চন্দ্ৰ গুপ্তৰ সময়তো উত্তৰ ভাৰতত কড়িৰে বস্তু কিনা-বেচা হোৱাৰ কথা লিখি থৈ গৈছে কাৰণে ভাস্কৰৰমাইৰ সময়ত বা তাৰ আগৰ পৰাই কামৰূপতো এবিধ মুদ্ৰা হিচাপে কড়িৰ

ব্যৱহাৰ হৈছিল বুলি অনুমান হয়। নৱম শতিকাৰ প্ৰথমার্ধত কামৰূপত ৰাজত্ব কৰা ৰজা হৰ্জৰ্জবৰ্মাৰ তেজপুৰ শিলালিপিত “পঞ্চ বুট্ৰিকাং” উল্লেখ থকাৰ পৰা অনুমান কৰা হৈছে যে ইয়াৰ অৰ্থ পাঁচ বুড়ি (বা একুৰি) কড়ি।^{১৭} পৰৱৰ্তী কালৰ ৰচনা *গুৰুচৰিত কথাব* কিছুমান বৰ্ণনাৰ পৰা বুজিব পাৰি যে সাধাৰণ বস্ত্ৰৰ কিনা-বেচাৰ প্ৰসঙ্গত পিচলৈও কড়িৰ বহুল প্ৰচলন আছিল। নাৰায়ণ দাস আতাই শঙ্কৰদেৱক এক টকাৰ সলনি দহ কাওন কড়ি দিয়া, “দুই চাৰি কৰাৰ পাণ” বেচা, চাৰি পোণ কড়িৰে এখন কাপোৰ কিনা আদি বৰ্ণনা এই প্ৰসঙ্গত উল্লেখ কৰিব পাৰি।^{১৮}

কৌশাৰীয়ে তেওঁৰ বিখ্যাত গ্ৰন্থ ভাৰতৰ ইতিহাসত উল্লেখ কৰাৰ দৰে আগৰ কালৰ আত্মনিৰ্ভৰশীল গ্ৰাম্য অৰ্থব্যৱস্থাত গাঁৱৰ লোকসকলে লাগতিয়াল সকলো বস্তু উৎপন্ন কৰি নিজে ব্যৱহাৰ কৰিছিল আৰু ৰজাৰ খাজনা দিছিল। হৰ্ষবৰ্ধনৰ ৰাজত্ব কালৰ আত্মনিৰ্ভৰশীল গ্ৰাম্য অৰ্থব্যৱস্থাৰ দ্ৰুত প্ৰসাৰ হৈছিল আৰু মুদ্ৰাৰ ব্যৱহাৰ নোহোৱাকৈয়ে বস্তু বিনিময়ৰ যোগেদি বেপাৰো চলোৱা হৈছিল।^{১৯} উত্তৰ ভাৰতৰ লগত গঢ়ি উঠা সম্পৰ্কৰ বাবেই প্ৰাচীন কামৰূপৰো স্থায়ী বসতি থকা অঞ্চলত একে ধৰণৰ অৰ্থব্যৱস্থাৰ কিছু পৰিমাণে সম্প্ৰসাৰণ হোৱাটো অসম্ভৱ নাছিল। সেয়ে হ'লেও ৰাজকীয় আদান-প্ৰদান, দুৰণিবটীয়া বাণিজ্য আদিৰ প্ৰয়োজনত মুদ্ৰাৰ ব্যৱহাৰ সীমিত পৰিমাণে হ'লেও অপৰিহাৰ্য আছিল।

মধ্য যুগৰ আগভাগত সোণ-ৰূপৰ টুকুৰা আৰু অলঙ্কাৰ, কাপোৰ, ঘোঁৰা, হাতী আদি বস্তু বিনিময়ৰ মাধ্যম আৰু ৰাজকীয় চুক্তি ৰূপায়ণৰ মাধ্যম হিচাপে অসমত ব্যৱহাৰ হোৱাৰ তথ্য-পাতি পোৱা যায়। *সাতসৰী বুৰঞ্জী*ত পোৱা যায় যে চৰাইদেওত চ্যুকাফা “স্বৰ্গদেৱলৈ মান কৰিলে, সোণৰ আঠ টকা ৮...।”^{২০} ইয়াত “সোণৰ আঠ টকা”ৰ অৰ্থ কোনো নিৰ্দিষ্ট ওজনৰ আঠ টুকুৰা সোণ বুলি অনুমান হয়। পৰৱৰ্তী কালতো সোণ-ৰূপৰ টুকুৰাৰ অনুৰূপ ব্যৱহাৰ থকাৰ দৃষ্টান্ত পোৱা যায়। কোঁচ ৰজা নৰনাৰায়ণ শাসনত অধিষ্ঠিত হোৱাৰ পিচতে পিতৃ বিশ্বসিংহৰ দিনৰ পৰা থকা আহোম ৰাজ্যৰ অধীনতা গুচাবলৈ তেওঁৰ ভাতৃ তথা সেনাপতি চিলাৰামে শঙ্কৰদেৱৰ উপদেশক্ৰমে “বেপাৰ কৰিবৰ চলে বুকু কাখিক পঠাই তিনি লাখ ৰূপ, দহ হাজাৰ সোণা দি পাত্ৰ-মন্ত্ৰীক বৰাব দিলে” বুলি একেখন বুৰঞ্জীত আছে।^{২১} এই ক্ষেত্ৰতো সোণ-ৰূপৰ টুকুৰাহে দিয়া হৈছিল বুলি বুজিবলৈ টান নহয় যিহেতু তেতিয়াৰ অৰ্থব্যৱস্থাত মুদ্ৰাৰ সাধাৰণ প্ৰয়োজন বৰ কম আছিল কাৰণে

নৰনাৰায়ণে তিনি লাখ ৰূপৰ মুদ্ৰা বা দহ হাজাৰ সোণৰ মুদ্ৰা মৰোৱা বুলি ভাবিব নোৱাৰি আৰু সোণৰ মুদ্ৰা মৰোৱাৰ কোনো তথ্যও পোৱা নাযায়। তাৰ উপৰি বুৰঞ্জীতো “সোণ” আৰু “ৰূপ” বুলিহে উল্লেখ আছে, “সোণৰ মুদ্ৰা” আৰু “ৰূপৰ মুদ্ৰা” বা মোহৰ বুলিও উল্লেখ কৰা হোৱা নাই। আহোম ৰজাইও কোঁচ ৰজাৰ অধীনতা স্বীকাৰ কৰি বছৰি “এক লাখ ৰূপ” দিবলৈ প্ৰতিশ্ৰুতি আগ বঢ়াই সন্ধি কৰা, কছাৰী ৰজাই দিহিকীয়া ৰজাক “টোপোলা বন্ধা ৰূপ ২০০০, ঘোঁৰা ৪ টা” দি মিত্ৰতা কৰাৰ লগতে বছৰি এইদৰে কৰ দিবলৈ গাত লৈছিল বুলি একে বুৰঞ্জীত উল্লেখ আছে।^{১০}

ৰাজকীয় আদান-প্ৰদানৰ উপৰিও অন্য বিনিময়ৰ প্ৰসঙ্গতো অৱস্থা বিশেষে সোণ-ৰূপৰ টুকুৰা মাধ্যম হিচাপে ব্যৱহাৰ হৈছিল বুলি পৰৱৰ্তী কালৰ দৃষ্টান্তৰ পৰা বুজিব পাৰি। আহোম ৰজা, কোঁচ ৰাজ্য ক’তো সোণৰ মুদ্ৰা মৰোৱাৰ কথা জনা নাযায়, কিন্তু শঙ্কৰদেৱৰ মৃত্যুৰ পিচত মাধৱদেৱে শ্ৰীৰাম আতাৰ সৈতে সোণৰ টকাৰে পঢ়ি কিনিবলৈ যোৱাৰ কথা গুৰুচৰিত কথাত উল্লেখ আছে।^{১১} নিৰ্দিষ্ট ওজনৰ সোণৰ টুকুৰাক সোণৰ টকা বুলি উল্লেখ কৰা হৈছে বুলি আৰু অতীতৰ পৰা সোণ-ৰূপৰ টুকুৰা এনেদৰে বিনিময়ৰ মাধ্যম হিচাপে ব্যৱহাৰ হৈছিল বুলি এইবোৰ দৃষ্টান্তৰ পৰা অনুমান হয়।

ৰাজকীয় আদান-প্ৰদানত সোণ-ৰূপৰ টুকুৰাৰ উপৰিও অলঙ্কাৰ, কাপোৰ, হাতী-ঘোঁৰা, আদিও ব্যৱহাৰ হোৱা দৃষ্টান্ত বুৰঞ্জীত পোৱা যায়। চুতীয়া ৰজাই আহোম ৰজালৈ হাতী, সোণৰ অলঙ্কাৰ, কাপোৰ আদি দি মিত্ৰতা কৰিবলৈ বিচাৰিছিল আৰু কছাৰী ৰজাইও ৰূপৰ লগতে ঘোঁৰা, কাপোৰ আদি দিয়াৰ উল্লেখ আছে।^{১২} সেইবোৰ বস্তু তেতিয়াৰ দিনত মুদ্ৰাৰ অৰ্থতে ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। দেনা-পাওনা নিষ্পত্তি কৰাৰ উদ্দেশ্যেই সেইবোৰ বস্তু আদান-প্ৰদান কৰা হৈছিল।

আগৰ কালত বস্তু বিনিময় বা সাল-সলনি প্ৰথাৰ মাজতে ধান-চাউলৰ গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা আছিল আৰু দৈনন্দিন জীৱনৰ সৰহভাগ বস্তুকে ধান বা চাউলৰ সলনি বিনিময় কৰিব পৰা গৈছিল। ধানৰ সলনি কাপোৰ বিক্ৰী কৰা তাঁতীয়ে সেই ধানৰ সলনি বাচন-বৰ্তন বা অন্য বস্তু কিনিব পাৰিছিল। মাছ দি পোৱা চাউল বা ধানকে দি মাছমৰীয়াই আকৌ কুমাৰৰ পৰা মাটিৰ বাচন-বৰ্তন লব পাৰিছিল। এনে ক্ষেত্ৰত ধান-চাউলৰ ব্যৱহাৰ বিনিময়ৰ মাধ্যম বা মুদ্ৰা হিচাপে হোৱা বুলি গণ্য

কৰিব পাৰি। এনে ব্যৱস্থা আধুনিক যুগৰ আৰম্ভণিতো চলি আছিল কৰণে আগৰ কালতো আছিল বুলি নিঃসন্দেহ হ'ব পাৰি।

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- (১) মুৰাৰিচৰণ দাস 'প্ৰাচীন অসমৰ সভ্যতা-সংস্কৃতিৰ ইতিহাস', (অসম সাহিত্য সভাৰ দ্বাৰা প্ৰকাশিত বুৰঞ্জীৰ প্ৰকৃতি আৰু স্বৰূপ গ্ৰন্থৰ অন্তৰ্ভুক্ত) পৃঃ ১৯২
- (২) H.K. Barpujari (ed). *Comprehensive History of Assam*, p. 56
- (৩) মুৰাৰিচৰণ দাস, পূৰ্বোক্ত প্ৰবন্ধ, পৃঃ ১৯১
- (৪) ঐ পৃঃ ১৯১
- (৫) P.C. Choudhury, *The History and Civilisation of the People of Assam*, p. 361
- (৬) S.L. Barua, *A Comprehensive History of Assam*, p. 42
- (৭) P.C. Choudhury, *op. cit.*, p. 361
- (৮) Dr. D. Sarma, *Kamarupa Sasanavali*, p. 42
- (৯) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পাদনা), *গুৰুচৰিত কথো*, পৃঃ ৭০, ৭৪, ১৮৫
- (১০) ডি. ডি. কোশাৱতী, *ভাৰতৰ ইতিহাস (অনু.)*, পৃঃ ২৮৬, ৩৪১
- (১১) সূৰ্যকুমাৰ ভূঞা (সম্পাদনা), *সাতসৰী অসম বুৰঞ্জী*, পৃঃ ৪৮
- (১২) ঐ পৃঃ ৭২
- (১৩) ঐ পৃঃ ৬৮, ৭৩
- (১৪) মহেশ্বৰ নেওগ, পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ২৪৯
- (১৫) সূৰ্য কুমাৰ ভূঞা (সম্পাদনা), পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ৫৮, ৬৮

(৬) বাণিজ্যিক ব্যৱস্থা

প্ৰাচীন কালৰ পৰা অসম বা কামৰূপত ৰাজ্যৰ ভিতৰৰ বিভিন্ন অঞ্চলৰ মাজত আৰু ৰাজ্যৰ বাহিৰৰ ঠাইৰ সৈতে জলপথ আৰু স্থল পথেৰে বাণিজ্যৰ প্ৰচলন আছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। বিভিন্ন সময়ত প্ৰাচীন কামৰূপৰ ৰাজধানী হিচাপে জনাজাত হোৱা নগৰসমূহ, যেনে— প্ৰাগজ্যোতিষপুৰ, দুৰ্জয়া, হাৰুপেশ্বৰ, কামৰূপ নগৰ আদি ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ পাৰত অৱস্থিত হোৱাৰ পৰা বুজিব পাৰি যে জলপথেৰে যাতায়াতৰ আগতে বাণিজ্যৰ সুবিধাৰ প্ৰতি লক্ষ্য ৰাখিয়ে ৰজাসকলে তেনেবোৰ স্থানত ৰাজধানী পাতিছিল। প্ৰাচীন কালৰ মন্দিৰ, ৰাজপ্ৰসাদ আদিৰ যিবোৰ ধ্বংসাৱশেষ এই নগৰসমূহত আৰু অন্যান্য স্থানত আৱিষ্কৃত হৈছে সেইবোৰৰ উচ্চ মান আৰু কাৰুকাৰ্যৰ পৰা অনুমান হয় যে সেইবোৰৰ নিৰ্মাণত হোৱা খৰচ বহন কৰিবলৈ সক্ষম হোৱা ৰজাসকল যথেষ্ট ঐশ্বৰ্যশালী আছিল। পণ্য উৎপাদনৰ লগতে বাণিজ্যৰ যোগেদিহে ৰাজ্যৰ এই পৰ্যায়ৰ সমৃদ্ধি সম্ভৱ হৈছিল।

কমাৰ, কুমাৰ, সোণাৰী, তাঁতী, বাঢ়ৈ, কৈৱৰ্ত আদি কিছুমান বৃত্তি বংশানুক্ৰমে অনুসৰণ কৰা লোক প্ৰাচীন কালৰে পৰা কামৰূপত আছিল কাৰণে এইসকলৰ উৎপাদিত সামগ্ৰীৰ এটা অংশ দেশৰ ভিতৰত আৰু বাহিৰত বিক্ৰী কৰাৰ লগতে তেওঁলোকৰ যিসকলক বাহিৰৰ পৰা আমদানি কৰা বা দেশৰ ভিতৰত অন্য লোকে উৎপাদন কৰা কেঁচামালৰ প্ৰয়োজন হৈছিল সেইবোৰ যোগান ধৰাৰ বাবেও বাণিজ্যৰ বিকাশ হৈছিল। সোণ, ৰূপ, তাম, পিতল, লো আদি ধাতু, কপাহ, পাট-মুগা, এৰী সূতা, হাতী দাঁত আদি এনে ধৰণৰ কেঁচামাল আছিল।

ৰজা, তলতীয়া শাসনকৰ্তা, মন্ত্ৰী, বিষয়া, ৰাজপুৰোহিত আদি উচ্চ শ্ৰেণীৰ লোকসকলে ব্যৱহাৰ কৰা উচ্চ মানৰ আৰু বিলাসী সামগ্ৰীবোৰৰ কিছুমান দেশৰ ভিতৰত আৰু বাহিৰত উৎপাদনকাৰীৰ পৰা সংগ্ৰহ কৰি যোগান ধৰাৰ বাবেও বাণিজ্যৰ প্ৰচলন আৰু স্থায়িত্ব সম্ভৱ হৈছিল। সোণ-ৰূপৰ অলঙ্কাৰ আৰু পাত্ৰ, ধাতুৰ বাচন-বৰ্তন আৰু অন্য বস্তু, পাট-মুগা আৰু কপাহী কাপোৰ, হাতী, ঘোঁৰা, নাও, দোলা, ঋটি-পালেং-পেৰা আদি কাঠৰ বস্তু, মণি-মুক্তা, অগৰু, চন্দন, হাতী দাঁতৰ বস্তু আদি বস্তুবোৰ উচ্চ শ্ৰেণীৰ লোকসকলে ব্যৱহাৰ কৰিছিল যদিও সেইবোৰ অন্য লোকেহে উৎপাদন কৰিছিল আৰু সাধাৰণতে উৎপাদনকাৰীৰ পৰা বাণিজ্যৰ যোগেদিহে তেওঁলোকে পোৱা সম্ভৱ হৈছিল।

চতুৰ্দশ শতিকাৰ ৰচনা মাধৱ কন্দলিৰ *ৰামায়ণ*ত মূদৈ নামেৰে বুজোৱা বিশেষ বৃত্তিধাৰী লোকৰ উল্লেখ আছে। মূদৈসকলে বাণিজ্যকে বৃত্তি হিচাপে লৈছিল। পৰৱৰ্তী কালৰ ৰচনা *গুৰুচৰিত কথাত* শুৱা সজীহ মূদৈ, লাসটকীয়া ধনাই মূদৈ, হোকৰা কুচিয়া লোণ মূদৈ আদিৰ উল্লেখ আছে।^১ বাণিজ্যকে বিশেষ বৃত্তি হিচাপে অনুসৰণ কৰা লোক এক শ্ৰেণী অন্ততঃ মধ্য যুগৰ আগ ভাগৰে পৰাই আছিল কাৰণে বাণিজ্যৰ বিকাশ সমসাময়িক কালৰ উপযোগীকৈ হৈছিল বুলি বুজিব পাৰি। পৰৱৰ্তী কালৰ ৰচনা মনসা কাব্যসমূহতো চান্দ সদাগৰ আৰু লগৰীয়া অন্যান্য সদাগৰৰ বাণিজ্যৰ কাহিনীসমূহে বাণিজ্যৰ গুৰুত্বৰ সম্পৰ্কে ধাৰণা দিয়ে।

সৰ্ব সাধাৰণ লোকৰ মাজতো কৃষি, পশুপালন, কুটিৰ শিল্প আদিৰ যোগেদি উৎপাদিত বস্তুসমূহ কিছু পৰিমাণে কিনা-বেচা হৈছিল। চুকাফাৰ নেতৃত্বত আহোমসকলে অসম সোমাই কিছুকাল অ'ত - ত'ত অস্থায়ীভাৱে আছিল আৰু স্থানীয় গাওঁ-ভুঁই, মানুহ আদিৰ সম্পৰ্কে তথ্য-পাতি সংগ্ৰহ কৰিছিল। এই সম্পৰ্কত “মদ গাহৰি কিনিবৰ ছলে” চুকাফাই মানুহ পঠাইছিল।^২ মদ-গাহৰি আদি স্থানীয় উৎপাদিত বস্তু কিনা-বেচা হৈছিল কাৰণেহে এনে ধৰণে মানুহ পঠোৱা সম্ভৱ হৈছিল। চ্যাডাংফা ওৰফে বামুণীকোঁৱৰ হাবুঙৰ বামুণৰ ঘৰত থকাৰ সন্ভেদ “গৰু কিনিবলৈ যোৱা” লোকৰ পৰাহে পোৱা বুলি বুৰঞ্জীত উল্লেখ আছে।^৩

তবাকৎ-ই-নাচিৰিত উল্লেখ থকা মতে মহম্মদ-বিন্-বখ্টিয়াৰে কামৰূপৰ মাজেৰে তিব্বতলৈ বুলি অভিযান চলোৱাৰ সময়ত কামৰূপৰ উত্তৰ সীমাত খেতি-বাতিৰে ব্ৰাহ্মণ আদি হিন্দু মানুহ থকা জনবহুল সমৃদ্ধিশালী ঠাই এখন পাইছিল আৰু সেই ঠাইত ভূটীয়া ঘোঁৰা প্ৰতিদিনে বিক্ৰী হৈছিল।^৪ এনেদৰে সীমামুৰীয়া অন্যান্য ৰাজ্য আৰু দাঁতিকাষৰীয়া পাহাৰীয়া জনগোষ্ঠী থকা অঞ্চলৰ সৈতে অতীতৰ পৰা বাণিজ্যিক সম্পৰ্ক থকাৰ অন্যান্য পৰোক্ষ প্ৰমাণ পোৱা যায়। আহোমসকলে অসম সোমাই প্ৰথমতে নিজ ভাষা কিছু কাললৈ ব্যৱহাৰ কৰিছিল আৰু বিভিন্ন ঠাইৰ নাম নিজ ভাষাত দিছিল। ফাট শব্দটো বেপাৰ কৰা আৰু কৰ দিয়া ঠাইৰ অৰ্থত ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল বুলি লীলা গগৈয়ে লিখিছে।^৫ নগা ফাট, হ'লাৰ ফাট, খিটলুৰ ফাট^৬ আদি দাঁতি-কাষৰীয়া অঞ্চলৰ বস্তু কিনা-বেচা কৰা ঠাই বা হাটৰ উল্লেখ থকাৰ পৰা বুজিব পাৰি যে আহোমসকলে অসমলৈ অহাৰ সময়ত বা তাৰ আগৰ পৰা এনে ধৰণৰ ঠাইসমূহত বস্তু কিনা-বেচা কেন্দ্ৰ আছিল। গুৰু চৰিত কথাতো “চাৰিও দুৱাৰে বেহা কৰা অচম গাৰো ভোট বঙ্গাল” বাক্যাংশৰ

লগতে “সদাগৰে দান হাট ফাট মাৰি বেহা কৰে” আৰু “বেহা-বাণিজ কৰে চাৰিও দ্বাৰে” এই বৰ্ণনা ভৱানন্দ আৰু তেওঁৰ লগৰীয়াৰ সৈতে সাতজনৰ প্ৰসঙ্গত পোৱা যায়।^১ আগৰ কথাত ভৈয়ামৰ পৰা পৰ্বতলৈ অহা-যোৱা কৰা পথৰ মুখ বা পৰ্বত-ভৈয়ামৰ সীমাৱৰ্তী স্থানক দুৱাৰ বোলা হৈছিল। অসম-ভূটান সীমান্ত থকা দুৱাৰসমূহত ভূটানৰ উপৰিও তিব্বতৰ লগত বেহা-বেপাৰৰ ক্ষেত্ৰত বিশেষ গুৰুত্বপূৰ্ণ আছিল। উত্তৰ-পূৱৰ সীমাৱৰ্তী অঞ্চলৰ সৈতে যোগাযোগ আৰু বাণিজ্যিক সম্পৰ্ক ৰক্ষাৰ বাবেও একে ধৰণৰ দুৱাৰ আছিল।

হাট, ফাট, দুৱাৰ আদিৰ ওপৰত নিয়ন্ত্ৰণ চলাই ৰজাসকলে এহাতে বাণিজ্যৰ বিকাশ ঘটোৱাত সহায় কৰিছিল আৰু আনহাতে কিনা-বেচা হোৱা বস্তুবোৰৰ সম্পৰ্কত কৰ আদায় কৰিছিল। নাৱেৰে বেপাৰ কৰা লোকৰ পৰা নাও পৰীক্ষা কৰি কৰ আদায় কৰাৰ ব্যৱস্থা আছিল। ‘হাট-ফাট মাৰি’ অৰ্থাৎ কৰ নিৰ্দিয়াকৈ বেপাৰ কৰাৰ কাৰণে আগেয়ে উল্লেখ কৰা ভৱানন্দক ৰাজবিষয়াই ধৰাই নিছিল আৰু তেওঁৰ নাও তালচ কৰাৰ উল্লেখ কথা গুৰু চৰিতত আছে।^২

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- (১) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পা), *গুৰুচৰিত কথা*, পৃঃ ৫৫
- (২) সূৰ্য কুমাৰ ভূঞা (সম্পা), *সাতসৰী অসম বুৰঞ্জী*, পৃঃ ৫
- (৩) ঐ পৃঃ ১৯
- (৪) K.L. Barua, *Early History of Kamarupa*, p. 137
- (৫) ড° লীলা গগৈ, *টাই সংস্কৃতিৰ ৰূপৰেখা*, পৃঃ ১০২
- (৬) S.N Sarma, *A Socio-Economic and Cultural History Medieval Assam*, p. 126
- (৭) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পা), *পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ*, পৃঃ ৭২-৭৩
- (৮) Dr. Lakshmi Devi, *Ahom-Tribal Relations*, p. 196
- (৯) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পা), *পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ*, পৃঃ ৭২-৭৩

(৭) আমদানি-ৰপ্তানি বস্তু

উট, ঘোঁৰা, তাম, পিতল, কাঁহ, ৰূপ, কড়ি আদি কিছুমান বস্তু অসম বা পুৰণি কামৰূপলৈ বাহিৰৰ পৰা আমদানি কৰা হৈছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। তৰাকৎ-ই-নাচিৰিত কামৰূপৰ উত্তৰ সীমাত ভুটীয়া ঘোঁৰা কিনা-বেচা হোৱাৰ কথা আগেয়ে উল্লেখ কৰা হৈছে। মাটি-দানৰ ফলিবিলাকত ঘোঁৰাৰ উপৰিও উটৰ উল্লেখ আছে। স্থল পথেৰে বাণিজ্যৰ সম্পৰ্কত বস্তু কঢ়িয়াবলৈ উটৰ ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল বুলি অনুমান হয়। সেয়ে হলে উটবিলাক বাহিৰৰ পৰাই আমদানি কৰা হৈছিল বুলি ধৰিব পাৰি যিহেতু এই অঞ্চলৰ জলবায়ুত উটৰ বংশ বৃদ্ধি হোৱা বুলি অনুমান নহয়। মাটি দানৰ ফলি, মন্দিৰ আৰু ব্ৰাহ্মণ আদিৰ ব্যক্তিগত পূজা-সেৱাৰ প্ৰয়োজনত ব্যৱহাৰ হোৱা বাচন-বৰ্তনৰ বাবে তাম বাহিৰৰ পৰাই আমদানি কৰিব লাগিছিল। কাৰণ এই অঞ্চলত তামৰ খনি থকা বা খনিৰ পৰা তাম উদঘাটন হোৱাৰ কোনো তথ্য পোৱা নাযায়। একেদৰে পিতল আৰু কাঁহ এই দুবিধ মিশ্ৰ ধাতু বাচন-বৰ্তন তৈয়াৰ কৰিবলৈ এতিয়াৰ দৰে আগেয়েও বাহিৰৰ পৰাই আমদানি কৰিব লগীয়া হৈছিল বুলি কব পাৰি। নৈৰ বালিত সোণ কমোৱাৰ ব্যৱস্থা কিছু বিস্তৃত পৰিমাণে আছিল যদিও ৰূপ কমোৱাৰ ব্যৱস্থা সামান্য পৰিমাণেহে আছিল বুলি জনা যায়। এনে অৱস্থাত অলস্কাৰ আৰু বিনিময়ৰ মাধ্যম হিচাপে টুকুৰা ৰূপৰ প্ৰয়োজন পূৰণৰ বাবে ৰূপ বাহিৰৰ পৰা আমদানি কৰিব লগীয়া হৈছিল বুলি নিশ্চিত হ'ব পাৰি। একেদৰে কড়িৰ ব্যৱহাৰ ঘাইকৈ বিনিময় মাধ্যম হিচাপে হৈছিল কাৰণে বাহিৰৰ পৰা আমদানি কৰা হৈছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। ইয়াৰ বাহিৰেও মণি, মুক্তা মূল্যবান পাথৰ, প্ৰবাল, হীৰা আদি কম পৰিমাণে হ'লেও ব্যৱহাৰ হৈছিল আৰু সেইবোৰো আমদানি কৰি আনিব লাগিছিল যিহেতু তেনেবোৰ বস্তু এই অঞ্চলত উৎপাদন হোৱাৰ কোনো তথ্য পোৱা নাযায়।

চুবুৰীয়া পৰ্বতীয়া জাতিৰ লোকসকলৰ পৰাও সীমামূৰীয়া হাট, ফাট, দুৱাৰ আদিত কিছুমান বস্তু সংগ্ৰহ কৰা হৈছিল। কঁপাহ, লো, লোণ, কস্মল, দা-কটাৰী, চোৱঁৰ, জস্তৰ ছাল, হাতী দাঁত আদি ভৈয়ামৰ লোকে পৰ্বতীয়া লোকৰ পৰা কিনিছিল। আহোম ৰাজত্বৰ কালত তথ্য-পাতিৰ পৰা আগৰ কালতো এনেবোৰ বস্তু ভৈয়ামৰ লোকে পৰ্বতীয়া লোকৰ পৰা সংগ্ৰহ কৰিছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। নগালোকৰ পৰা কপাহ, লোণ, পাণ, আদা, কচু আদি, মিচিমি লোকৰ চোৱঁৰ,

হাতী দাঁত, মিচিমি তিতা, জস্তৰ ছাল আদি, ভুটীয়া লোকৰ পৰা ঘোঁৰা, কস্তুৰী, কশ্মল, চোঁৱৰ, ছুৰী-কটাৰী আদি আহোম ৰাজত্বৰ কালত অনা হৈছিল।^১ পলাশবাৰী অঞ্চলত গাৰো লোকৰ পৰা লো কিনাৰ কথাও জনা যায়।^২

ৰপ্তানি সামগ্ৰী হিচাপে যিবোৰ বস্তু বাহিৰলৈ পঠোৱা হৈছিল সেইবোৰৰ ভিতৰত পাট-মুগা কাপোৰ, চন্দন কাঠ, অগৰু, হাতী দাঁত, গড়ৰ খডগ, কস্তুৰী, সোণৰ অলঙ্কাৰ, কপাহী কাপোৰ, হাতী, জালুক, চোৱঁৰ, লা আদি বিশেষভাৱে উল্লেখ কৰিব পাৰি। এই সামগ্ৰীবোৰৰ কিছুমান, যেনে চন্দন কাঠ, কস্তুৰী, চোৱঁৰ আদি আন ঠাইৰ পৰা আমদানি কৰাৰ পিচত ৰপ্তানি কৰা হৈছিল বুলি অনুমান হয়। কপূৰ, মণি-মুক্তা, পোৱাল, হীৰা, মূল্যৱান পাথৰ আদিও আমদানি কৰাৰ পিচত ৰপ্তানি কৰা হৈছিল হয়তো। পাট-কাপোৰ, চন্দন, অগৰু আদিৰ উল্লেখ কোঁটিল্যৰ অৰ্থশাস্ত্ৰত আছে কাৰণে তেতিয়াৰ পৰাই এইবোৰ সামগ্ৰী অসমৰ বাহিৰলৈ ৰপ্তানি হৈছিল বুলি ঠাৱৰ কৰিব পাৰি। ভাস্কৰৱৰ্মাই হৰ্যবৰ্ধনলৈ উপহাৰ হিচাপে পঠোৱা বস্তুবিলাকৰ ভিতৰত পাট-কাপোৰ, কপাহী কাপোৰ, কস্তুৰী, চোৱঁৰ, সোণৰ অলঙ্কাৰ, হাতী দাঁতৰ বস্তু, চন্দন, আৰু কপূৰ আদি আছিল।^৩ এইবোৰৰ সকলো নহ'লেও কিছুমান ৰপ্তানি সামগ্ৰী হিচাপেও বাহিৰলৈ পঠোৱা বস্তু আছিল বুলি কব পাৰি। পৰৱৰ্তী কাললৈ এনেবোৰ বস্তু বাণিজ্যৰ সামগ্ৰী হৈ আছিল। কথা গুৰু চৰিতত আছে : “উজান দেশৰ সুব পাব; পাট কাপোৰ পাব; ডাব কটাৰি পাব : মৰিচ পাব : হস্তিদান্ত পাব : [দিলদহিয়া বৰ কাপৰ পাব :]”। একেখন গ্ৰন্থতে আছে : “উত্তম মহ জানিয়া দোকানি : হিৰা ৰত্ন ৰজত সুবৰ্ণ বাখৰ পোৱাল মাণিক বেচ পাই”।^৪ আহোম ৰাজত্বৰ কালত তিব্বতলৈ অসমৰ সদাগৰে বিক্ৰীৰ বাবে নিয়া বস্তুবোৰৰ ভিতৰত লো, লা, জস্তৰ ছাল, মহৰ শিং, মুক্তা, প্ৰৱাল, তচৰ পাট, চাউল আদি আছিল।

সহায়ক গ্ৰন্থ :

(১) Lakshmi Devi, *Ahom-Tribal Relations*, pp. 19, 187, 204

(২) হিতেশ্বৰ বৰবৰুৱা, *আহোমৰ দিন*, পৃ: ৪৬৬

(৩) ৰজনীকান্ত দেৱ শৰ্মা (অনু.), *কোঁটিলীয় অৰ্থশাস্ত্ৰ*, পৃ: ৫৪-৫৬

(৪) Suniti Kumar Chatterji, *Kirata-Jana-Krti*, p. 96

(৫) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পা), গুৰু চৰিত কথ, পৃ: ১১৭, ৩৯৭

(৬) Lakshmi Devi, op. cit, p. 195

(৮) বাণিজ্য পথ, যাতায়াত আৰু যোগাযোগ

প্ৰাচীন কালৰ পৰা স্থলপথ আৰু জলপথেৰে বিভিন্ন দেশৰ সৈতে অসমৰ যাতায়াত আৰু যোগাযোগৰ ব্যৱস্থা আছিল আৰু সেইবোৰে বাণিজ্য পথ হিচাপেও ব্যৱহৃত হৈছিল। উত্তৰৰ পৰ্বতসমূহৰ মাজেৰে ভূটান, তিব্বত আৰু চীনৰ সৈতে যোগাযোগৰ বাবে গিৰিপথ কিছুমান আছিল। এনে গিৰিপথৰ কথা জানিব পাৰিয়েই মহম্মদ-বিন-বখ্টিয়াৰে উত্তৰ গুৱাহাটীৰ শিলসাঁকো পাৰ হৈ ভূটানৰ সীমালৈ সৈন্য বাহিনী লৈ গৈছিল যদিও তাত পোৱা বাধা অতিক্ৰম কৰিব নোৱাৰি উভতি আহিব লগীয়া হৈছিল। কামৰূপৰ পৰা তিব্বতলৈ ৩৫ টা গিৰিপথ থকাৰ কথা তৰ্ককং-ই-নাচিৰিত উল্লেখ আছে।^১ ভূটানৰ পৰা আৰম্ভ কৰি আফগানিস্তানৰ কাবুললৈও পৰ্বতীয়া পথ আছিল বুলি টেভেৰ্নিয়াৰে উল্লেখ কৰিছে।^২ আকৌ পিচৰ কালত মেককোছে (Mc Cosh) জনোৱা মতে ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকা আৰু তিব্বত বা চীন সংযোগী শদিয়াৰ পৰা কমেও পাঁচটা পথ আছিল। সেইবিলাকৰ ভিতৰত পাটকাই পৰ্বতেৰে ব্ৰহ্মদেশ আৰু চীনলৈ যোৱা পথটোৰে আহোমসকল অসমলৈ আহিছিল।^৩ বৰিনচনৰ *ডেক্সিপিটিভ একাউণ্ট অৱ আসাম*ত উল্লেখ থকা অনুসৰি অসমৰ পূব সীমাৰ পৰা ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ পাৰে পাৰে তিব্বতলৈ এটা পথ আছিল। এইবোৰৰ কিছুমান অতি প্ৰাচীন কালৰ পৰা থকা বুলি জনা যায়।^৪ মণিপুৰৰ মাজেৰেও এটা পথ আছিল।^৫

আগৰ কালত পৰ্বত-ভৈয়াম সীমান্তৰ গিৰিপথ সংযোগী ঠাইবিলাকক দুৱাৰ বোলা হৈছিল আৰু অসমৰ লগত ভূটানৰ বেহা-বেপাৰ আৰু অন্য আদান-প্ৰদান কৰাৰ বাবে এনে দুৱাৰ সাতখন আছিল। এইবোৰ হৈছে বিজনী, চপাখামৰ, চাপাশুৰি, বাকচা, ঘেঠকোলা, বুঢ়ীশুমা আৰু কিলিং। তাৰ উপৰি কৰিয়াপাৰা দুৱাৰেৰে অসমৰ সৈতে তিব্বতৰ বেহা-বেপাৰ চলিছিল।^৬ আকৌ চাৰিদুৱাৰ আৰু ন-দুৱাৰেৰে অসমৰ উত্তৰ-পূব সীমান্তৱৰ্তী অঞ্চলৰ (বৰ্তমানৰ অৰুণাচল প্ৰদেশ) পৰ্বতীয়া জনগোষ্ঠীৰ সৈতে আদান-প্ৰদান হৈছিল।^৭

ভাৰতৰ মূল ভূ-ভাগৰ সৈতে অসমৰ স্থল পথেৰে আৰু জলপথেৰে নিয়মীয়া সংযোগ আছিল। ভাস্কৰৱৰ্মাৰ সময়ত আৰু আগেয়েও এইবোৰ পথেৰে সংযোগ ঘটিছিল। হিউৱেন চাঙে কামৰূপলৈ মগধ, মুঙ্গৈ, ভাগলপুৰ, ৰাজমহল

পাৰ্বত্য অঞ্চল, পুণ্ডুৰ্ধন আদি অতিক্ৰম কৰি কৰতোয়া নদী পাৰ হৈ আহিছিল বুলি জনা যায়।^{১*} আলবেৰ্গণিৰ বৃত্তান্ত মতেও তৰাই অঞ্চলৰ পৰা কামৰূপলৈ পথ এটা আছিল।^{২*} মহম্মদ-বিন-বখ্টিয়াৰে কামৰূপৰ মাজেৰে তিব্বতলৈ বুলি স্থল পথেৰেই অভিযান চলাইছিল।^{৩*}

অতীত কালৰ পৰাই ব্ৰহ্মপুত্ৰ আৰু গঙ্গাৰ জলপথেৰে অসমৰ লগত ভাৰতৰ বাকী অংশ বিশেষকৈ উত্তৰ ভাৰতৰ আৰু সাগৰীয় জলপথৰ সংযোগ আছিল। ভাস্কৰবৰ্মাৰ সময়তো এনে জলপথৰ ব্যৱহাৰ হৈছিল।^{৪*} *গুৰু চৰিত কথাত* থকা বৰ্ণনা অনুসৰি কামৰূপৰ ৰজা দুৰ্লভ নাৰায়ণে যুদ্ধ কৰিবলৈ গৌড়লৈ স্থল বাহিনী লৈ গৈছিল আৰু গৌড়েশ্বৰৰ সৈতে হোৱা সন্ধিৰ পিচত যি চৈধ্য ঘৰ কায়স্থ আৰু ব্ৰাহ্মণ, তাৰ পৰা আনি নিজ ৰাজ্যৰ লেঙ্গামাণ্ডৰিত পাতিছিল। সেইসকলৰ মূল মানুহ কেইজনে ঘৰৰ বাকী লোকসকলক আনিবলৈ জলপথেৰে গৈ “ব্ৰহ্মপুত্ৰ উজাই গঙ্গা ভটিয়াই” পাইছিলহি।^{৫*}

আভ্যন্তৰীণ যাতায়াত আৰু যোগাযোগৰ বাবেও অতীতৰ পৰাই স্থল আৰু জলপথৰ ব্যৱহাৰ হৈছিল। মাটিদানৰ ফলিত নগৰৰ ৰাজআলিৰ উপৰিও অন্য ৰাজবাট, বৃহৎ আলি, চতুষ্পথ বা চাৰিপথৰ সংযোগ স্থান আদিৰ উল্লেখ থকাৰ পৰা বুজিব পাৰি যে যাতায়াতৰ বাবে স্থলপথৰ ব্যৱস্থা আছিল।^{৬*} দুৰ্গবিটীয়া ঠাইলৈ সাধাৰণতে চলা-চল কৰিবলৈ নৈসমূহৰ জল পথ অধিক ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। *গুৰুচৰিত কথাত* বিভিন্ন বৰ্ণনাত প্ৰসঙ্গত জলপথেৰে অহা-যোৱা কৰাৰ বহুতো উল্লেখ আছে। শঙ্কৰদেৱৰ উপৰি পুৰুষ বাৰডুএগসকলে স্থান পৰিৱৰ্তন কৰা, শঙ্কৰদেৱেও জ্ঞাতি-মিত্ৰৰ সৈতে একেদৰে স্থান পৰিৱৰ্তন কৰা, মাধৱদেৱৰ পিতৃঘৰ ঘাঘৰ মাজিৰ ঘৰত চৈধ্য বছৰ কটাই বিদায় লৈ অহা আদিৰ প্ৰসঙ্গত এনে বৰ্ণনা আছে।^{৭*}

স্থল পথেৰে সাধাৰণতে মানুহে খোজ কাঢ়ি অহা-যোৱা কৰিছিল যদিও সম্ভ্ৰান্ত লোকে দোলা, পাৰ্শ্বী, হাতী, ঘোঁৰা আদিৰ ব্যৱহাৰ কৰিছিল। মাটি দানৰ ফলিত ৰজাসকলে হাতী, ঘোঁৰা আৰু দোলা ব্যৱহাৰ কৰাৰ কথা আছে; সৈন্য বাহিনীৰ সম্পৰ্কতো পদাতিক বাহিনীৰ উপৰিও গজাৰোহী বাহিনী আৰু অশ্বাৰোহী বাহিনীৰ উল্লেখ আছে,^{৮*} স্থল পথেৰে দুৰ্গবিটীয়া বাণিজ্যৰ প্ৰসঙ্গত বস্তু কঢ়িয়াবলৈও ঘোঁৰা, উট, হাতী আদিৰ ব্যৱহাৰ হৈছিল বুলি অনুমান হয়। মাটি দানৰ ফলিবিলাকত ঘোঁৰা, উট আৰু হাতীৰ উল্লেখ থকাৰ পৰা বুজিব পাৰি এইবোৰৰ ব্যৱহাৰ যথেষ্ট

বহুল আছিল। গুৰু চৰিত কথাতো হাতী, ঘোঁৰা, উট, গৰ্দভ (গাধ) বথ আদিৰে সেনা সাজু কৰি গৌড় ৰাজ্যলৈ যোৱাৰ কথা আছে। দোলাৰ ব্যৱহাৰৰ উল্লেখ একেখন গ্ৰন্থতে পোৱা যায়।^{১৫}

জলপথেৰে অহা-যোৱা কৰা, নৈ পাৰ হোৱা, বেপাৰ কৰা, যুদ্ধ কৰিবলৈ যোৱা, মাছ ধৰা আদিৰ প্ৰসঙ্গত নাৱৰ ব্যৱহাৰ ব্যাপক আছিল। মাটি দানৰ ফলিবিলাকত নাওৰখীয়া, নৌকাবন্ধক, নাৱৰ কৰ আদায় কৰা কৈৱৰ্ত, নৌকাৰ গুণাটনাসকলৰ অধিকৰ্তা আদিৰ উল্লেখৰ পৰা বুজিব পাৰি যে ৰজাসকলে নাৱৰ ব্যৱহাৰ নিয়ন্ত্ৰণ কৰা সম্পৰ্কে ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰিছিল। গুৰু চৰিত কথাত বিভিন্ন ঘটনাৰ বৰ্ণনাৰ প্ৰসঙ্গত নাৱৰ ব্যৱহাৰৰ উল্লেখ বিস্তৃতভাৱে পোৱা যায়। চুকাফাই প্ৰথম অৱস্থাত এঠাইৰ পৰা আন ঠাইলৈ অহা-যোৱা কৰাৰ সময়ত ভুৰ ব্যৱহাৰ কৰাৰ উল্লেখ আছে যদিও চুতীয়া ৰজাই আহোম ৰজা চুকাফাক নাৱত তুলি নিয়া, আহোম ৰজাৰ মানুহে নাৱত উঠি মাছ ধৰা, চুতীয়া ৰজাৰ মানুহে তাক নাও মেলি ধৰা আদি বুৰঞ্জীৰ বৰ্ণনাত নাৱৰ ব্যৱহাৰৰ কথা পোৱা যায়।^{১৬}

— তাৰক চন্দ্ৰ গোস্বামী

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- (১) B. K. Barua, *A Cultural History of Assam*, p. 112
- (২) Ibid, p. 113
- (৩) Ibid, pp. 111-12
- (৪) Ibid, pp. 109-11
- (৫) B.N. Mukherji, *External Trade of Early North-Eastern India*, p. 66
- (৬) Lakshmi. Devi, *Ahom-Tribal Relations*, pp. 194-95
- (৭) Ibid, p. 171
- (৮) B. N. Mukherji, op. cit, p. 67

(৯) Ibid, p. 67

(১০) B.K. Barua, op cit p. 112

(১১) Ibid, p. 108-9

(১২) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পাদিত), *গুৰুচৰিত কথো*, পৃঃ ৮

(১৩) Dr D. Sarma (ed), *Kamarupa Sasanavali*, pp 125 and 179

(১৪) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পাদিত), *পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ*, পৃঃ ১১, ৩৮, ৫১

(১৫) Dr. D. Sarma (ed), op. cit. p. 251

(১৬) মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পাদিত), *পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ*, পৃঃ ৮, ৮২

(১৭) Dr. D. Sarma (ed), op. cit, pp. 249 and 259

(১৮) সূৰ্য্যকুমাৰ ভূঞা (সম্পাদিত), *সাতসৰী অসম বুৰঞ্জী*, পৃঃ ৪৬-৪৭, ৫১, ৫৬-৫৭

তৃতীয় অধ্যায়

অসমৰ সাংস্কৃতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস (আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ খ্ৰীঃ লৈ)

(ক)

অসম এখন অতি প্ৰাচীন দেশ। *ৰামায়ণ*, *মহাভাৰত*, *পুৰাণ*, কাব্য আদি প্ৰাচীন সংস্কৃত গ্ৰন্থত এই দেশখনৰ কথা বিভিন্ন প্ৰসঙ্গত উল্লিখিত হৈছে। খ্ৰিঃ পূঃ ৫ম-৪র্থ শতিকাত ৰচিত *ৰামায়ণ*ৰ বিভিন্ন কাণ্ডত প্ৰাগজ্যোতিষ ৰাজ্য আৰু ইয়াৰ প্ৰাচীন ৰজা নৰক, ভগদত্তৰ উল্লেখ আছে। আদি কাণ্ডত আছে, “তথা মূৰ্খৰয়া ধীৰশচক্ৰে প্ৰাগজ্যোতিষং পুৰম্...”।” আকৌ কিছুক্ষণ কাণ্ডত আছে, “তত্র প্ৰাগজ্যোতিষং নাম জাতকপময়ং পুৰম্ তস্মিন্ বসতি দুষ্টাত্মা নৰকো নাম দানবঃ।।

প্ৰায় একে সময়তে ৰচিত *মহাভাৰত*তো প্ৰাগজ্যোতিষ ৰাজ্যৰ ৰজা ভগদত্ত আৰু তেওঁৰ কিৰাত-চীন সৈন্য-বাহিনীৰ উল্লেখ আছে। “ভগদত্তো মহীপালঃ সেনামক্ষৌহিণীং দদৌ। তস্য চীনেঃ কিৰাতৈশ্চ কাঞ্চনৈৰিৰ সংবৃতম্।।” দুয়োখন মহাকাব্যৰে অন্যান্য কাণ্ড আৰু পৰ্বতো বহু বাৰ এই প্ৰাচীন দেশ, ইয়াৰ ৰজা-প্ৰজাৰ উল্লেখ আছে। খ্ৰিঃ পূঃ ৪র্থ শতিকাৰ কৌটিল্যৰ *অৰ্থশাস্ত্ৰ*তো বিভিন্ন প্ৰসঙ্গত এইখন দেশৰ কথা আছে। খ্ৰিষ্টীয় ৪র্থ শতিকাৰ মহাকবি কালিদাসৰ *ৰঘুবংশ* কাব্যত কামৰূপেশ্বৰৰ উল্লেখ আছে, “ততো’বতীৰ্য্যাসু কৰেণু কায়ঃ স কামৰূপেশ্বৰ দত্তহস্তঃ...”।। খ্ৰিষ্টীয় ৭ম শতিকাৰ কবি বাণভট্টৰ *হৰ্ষচৰিত*ত প্ৰাগজ্যোতিষ ৰাজ্য আৰু ইয়াৰ ৰজা কুমাৰৰ বিষয়ে বিৱৰণ আছে, “প্ৰাগজ্যোতিষেশ্বৰেণ কুমাৰেণ প্ৰহিতো হংসবেগ নামা দূতো’স্তৰঙ্গ স্তোৰণ মধ্যান্তে।” কুমাৰ ভাস্কৰ ৰমাকে ইয়াত কুমাৰ বোলা হৈছে।

এনেদৰে প্ৰাচীন সংস্কৃত গ্ৰন্থসমূহৰ বিভিন্ন ঠাইত কামৰূপ, প্ৰাগজ্যোতিষ ৰাজ্য, ইয়াৰ ৰজা-মহাৰজা, ইয়াৰ প্ৰজা সাধাৰণ, ইয়াৰ ৰাজনৈতিক, অৰ্থনৈতিক, সামাজিক, ভৌগোলিক অবস্থা আদিৰ বিষয়ে পৌনঃপুনিক উল্লেখ দেশখনৰ প্ৰাচীনতা আৰু প্ৰসিদ্ধিৰ কথাকে সূচনা কৰে।

প্ৰাচীন কালৰ বিদেশী ভ্ৰমণকাৰীসকলেও তেওঁলোকৰ ভ্ৰমণ-টোকাতে এই ৰাজ্যৰ কথা উল্লেখ কৰিছে। খ্ৰিঃ পূঃ ৫ম শতিকা আৰু তাৰ পিচত ভাৰতলৈ অহা গ্ৰীচ আৰু ৰোমৰ ভ্ৰমণকাৰীসকলে প্ৰাচীন অসমৰ বিষয়ে উল্লেখ কৰি গৈছে। খ্ৰিঃ ১৫০ চনৰ আলেকজেন্দ্ৰিয়াৰ ভূগোলবিদ্ টোলেমিয়ে প্ৰাচীন অসমত উৎপন্ন হোৱা পাট, মুগা, লা আদিৰ কথা লিখি থৈ গৈছে।^{১০} কিন্তু সেই বিদেশী ভ্ৰমণকাৰীসকলে দেশখনৰ নাম প্ৰাগজ্যোতিষ বা কামৰূপ বুলি উল্লেখ কৰা নাই।

৭ম শতিকাৰ চৈনিক পৰিব্ৰাজক হিউৱেন-চাঙে প্ৰাচীন কামৰূপ ৰাজ্যৰ বিষয়ে বহুখিনি তথ্য লিপিবদ্ধ কৰি থৈ গৈছে। তেওঁ দেশখনৰ নাম 'কিয়া-মো-লু-পো' বুলি উল্লেখ কৰিছে। পৰৱৰ্তী যুগৰ বিদেশী পৰ্যটকসকলেও প্ৰাচীন অসমৰ বিষয়ে বহু কথাই লিখি থৈ গৈছে। কিন্তু সেই যুগতো আমাৰ আলোচ্য যুগটোৰ ভিতৰত নপৰে গতিকে সেইসকলৰ তালিকাৰ আৱশ্যকতা ইয়াত নাই।

ইয়াৰ বাহিৰে, প্ৰাচীন অসমৰ বিষয়ে বিশেষকৈ ৪ৰ্থ শতিকাৰ পৰা ১২শ শতিকালৈ ইয়াৰ মাজৰ কালছোৱাৰ বিষয়ে নিৰ্ভৰযোগ্যভাৱে কিছু কথা জানিব পাৰি সেই যুগৰ ৰজাসকলৰ আদেশত প্ৰস্তুত কৰা শিলালিপি, তাম্ৰলিপি আদিৰ পৰা। প্ৰাচীন অসমৰ সংস্কৃতিৰ কিছু আভাস পাব পাৰি প্ৰাচীন যুগৰ স্থাপত্য-ভাস্কৰ্যৰ ভগ্নাৱশেষসমূহৰ পৰা।

সেই সময়ৰ পূৰ্ব ভাৰতৰ লিখিত সাহিত্যৰ ভিতৰত ৮ম-১২শ শতিকাৰ ভিতৰৰ বৌদ্ধ সিদ্ধাচাৰ্যসকলৰ দ্বাৰা ৰচিত চৰ্যাসমূহ, ১০ম শতিকাত ৰচিত *কালিকা পুৰাণ*, ১৬শ শতিকাত ৰচিত *যোগিনী তন্ত্ৰ* আৰু ১৩শ-১৪শ শতিকাত ৰচিত প্ৰাচীন অসমীয়া ভাষাৰ আদি যুগৰ ৰচনা *বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ*, *গীতি-ৰামায়ণ* আদি দুই চাৰিখন পুথিৰ পৰা ইতিহাসে ঢুকি নোপোৱা যুগৰ প্ৰাচীন অসমৰ অধিবাসীসকলৰ বিষয়ে কিছু কথা জানিব পাৰি।

উল্লিখিত উৎসবোৰৰ পৰা যিখন অসমৰ বিষয়ে জনা যায় সেইখন আজিৰ ক্ষুদ্ৰ অসমৰ তুলনাত অতি বিশাল, মহান আৰু গৌৰৱময় আছিল। প্ৰাচীন অসমৰ ভৌগোলিক পৰিসীমা আসমুদ্ৰ হিমালয় বিস্তৃত আছিল বুলিব পাৰি। উত্তৰে নেপাল, ভূটান, তিব্বতৰ অংশ-বিশেষ, দক্ষিণে বঙ্গোপসাগৰ, পূবে শদিয়া, পশ্চিমে বিহাৰৰ কোশী নদীলৈকে এক বিস্তৃত ভূখণ্ড প্ৰাচীন প্ৰাগজ্যোতিষ বা কামৰূপ ৰাজ্যৰ অন্তৰ্গত আছিল। খ্ৰিঃ পূঃ ৫ম-৪ৰ্থ শতিকাৰ পণ্ডিত টোলেমি আদিয়ে প্ৰাচীন অসমৰ বিষয়ে যিখিনি লিখি থৈ গৈছে, তাৰ পৰা ৬^০ প্ৰতাপ চন্দ্ৰ চৌধুৰীদেৱে

অনুমান কৰে যে অন্ততঃ খ্ৰিষ্টীয় ১ম-২য় শতিকামানত এই প্ৰাচীন ৰাজ্যখন পূবে শদিয়াৰ পৰা পশ্চিমে বঙ্গদেশৰ দক্ষিণ-পূব অঞ্চললৈকে বিস্তৃত আছিল। উত্তৰ বঙ্গ আৰু বিহাৰৰ অংশ বিশেষ প্ৰাচীন কামৰূপ ৰাজ্যৰ অন্তৰ্ভুক্ত আছিল বুলি বি, চি, ল দেৱেও মত প্ৰকাশ কৰিছে।^৭

ৰামায়ণৰ আদি কাণ্ডত থকা উল্লেখৰ মতে ঋষি বিশ্বামিত্ৰৰ পিতামহ অমূৰ্তৰাজে প্ৰাগজ্যোতিষ ৰাজ্য স্থাপন কৰিছিল আৰু বিশ্বামিত্ৰই কৌশিক বা কোশী নদীৰ তীৰত তপস্যা কৰিছিল। গতিকে ৰামায়ণৰ ৰচনাকালত অৰ্থাৎ খ্ৰিঃ পূঃ ৫ম-৪র্থ শতিকাত বা তাৰ অলপ আগৰে পৰা পশ্চিমে বিহাৰৰ পূৰ্ণিয়া জিলাৰ কোশী নদীলৈকে প্ৰাগজ্যোতিষ ৰাজ্য বিস্তৃত আছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। আকৌ কালিকা পুৰাণৰ পৰা জানিব পাৰি যে বিদেহৰ (উত্তৰ বিহাৰ) পৰা ৰজা জনকৰ পালিত পুত্ৰ নৰকে আহি ঘটকাসুৰক পৰাস্ত কৰি প্ৰাগজ্যোতিষত তেওঁৰ ৰাজত্ব স্থাপন কৰে। মহাভাৰতৰ যুদ্ধত সৈন্য-সামন্তৰে যোগদান কৰা, প্ৰাগজ্যোতিষৰ ৰজা ভগদত্তৰ পিতৃয়েই নৰক বুলিও কালিকা পুৰাণৰ পৰাই জনা যায়। কালিকা পুৰাণ ৰচনাৰ সময়ত, অৰ্থাৎ ১০ম শতিকাত প্ৰাচীন কামৰূপ ৰাজ্যৰ পশ্চিম সীমা কৰতোয়া নদীলৈকে আছিল বুলি উক্ত পুৰাণত আছে—

“বহুবোকা নাম নদী কৰতোয়া প্ৰদক্ষিণে। উত্তৰস্ৱৰ্ণী চান্তে তৎ পূৰ্বং কামৰূপকম্।।”^৮ তদুপৰি উক্ত পুৰাণত প্ৰাচীন অসমৰ সীমা এনেদৰে বৰ্ণাইছে—

“কৰতোয়া নদী পূৰ্বং যাবদিকৰবাসিনীং।

ত্ৰিংশদ-যোজন ৱিক্তীৰ্ণ যোজনৈক-শতায়তং।।

ত্ৰিকোণং কৃষ্ণবৰ্ণঞ্চ প্ৰভূতাচল-পুৰিতং।

নদীশতসমায়ুক্তং কামৰূপং প্ৰকীৰ্তিতং।।”^৯

পাৰ্জিটাৰৰ মতে উত্তৰ আৰু পূব বঙ্গ প্ৰাচীন প্ৰাগজ্যোতিষ ৰাজ্যৰ ভিতৰুৱা আছিল।^{১০} ড° বিৰিঞ্চি কুমাৰ বৰুৱা দেৱেও ৰামায়ণ, মহাভাৰতকে আদি কৰি বিভিন্ন গ্ৰন্থ আৰু বিভিন্ন পণ্ডিতৰ মতামত বিশ্লেষণ কৰি মত প্ৰকাশ কৰিছে যে প্ৰাচীন কালত সাগৰৰ পাৰলৈকে পূব বঙ্গ, বিহাৰৰ অংশ বিশেষ আৰু ভূটানৰ কিছু অংশ প্ৰাচীন কামৰূপ ৰাজ্যৰ ভিতৰুৱা আছিল।^{১১}

মুঠতে প্ৰাচীন কালত অসম এখন বিশাল দেশ আছিল। এই বিশাল আৰু সমৃদ্ধিশালী দেশখন প্ৰাগজ্যোতিষ ৰাজ্য, আৰু কামৰূপ ৰাজ্য নামেৰেহে প্ৰসিদ্ধ আছিল। তাৰ তুলনাত অসম নামটো অতি অবাচীন। ১২২৮ খ্ৰিষ্টাব্দৰ পিচত অৰ্থাৎ

আহোমসকলে এই দেশত ৰাজত্ব স্থাপন কৰাৰ পিচতহে দেশখন অসম নামেৰে পৰিচিত হ'বলৈ ধৰে। আলোচনাৰ সুবিধাৰ্থে সেই গৌৰৱমণ্ডিত, সুপ্ৰাচীন দেশখন বুজাবলৈ এই প্ৰবন্ধত প্ৰাচীন অসম বুলিয়েই ব্যৱহাৰ কৰা হ'ব।

সুদূৰ অতীজত প্ৰাচীন অসমৰ আধিবাসীসকল কোন আছিল বা কেনে আছিল সেই বিষয়ে খুব কম তথ্যহে পোৱা যায়। খ্ৰিঃ পূঃ ৫ম শতিকা মানৱ গ্ৰীচদেশীয় ভ্ৰমণকাৰী মেগেস্থেনিচে পূৰ্ব ভাৰতৰ লোক হিচাপে ছিচিওতোচাগি বা ছিৰিওতোচাগি (Chisiotosagi বা Chiriotosaji) নামটো উল্লেখ কৰিছে। পণ্ডিতসকলৰ মতে এই শব্দটোৰে কিৰাতসকলকে বুজোৱা হৈছিল। প্লিনিয়ে পৰ্বতত বাসকৰাৰ মান্দাই (Mandai) - সকলৰ বিষয়ে লিখিছে। তেওঁ কলুবায়ে, (Colubae), অৰসুলায়ে (Orxulae), আবালি (Abali) আদিও উল্লেখ কৰিছে। এই কেইটা শব্দই ক্ৰমে মাদে (গাৰো ভাষাৰ মানুহ বুজোৱা শব্দ), কলিতা, অকা আৰু আবৰসকলক বুজাইছে বুলি পণ্ডিতসকলে ঠাৱৰ কৰিছে। ইয়াৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে খ্ৰিঃ পূঃ ৫ম নাইবা ৪ৰ্থ শতিকাত আৰ্যসকল অসমলৈ অহাৰ আগতে কিৰাত জনজাতিৰ লোকসকলে এইবোৰ ঠাইত বসবাস কৰিছিল। বিভিন্ন সময়ত ইয়ালৈ অহা বিভিন্ন জনস্ৰোতৰ সংমিশ্ৰণৰ ফলতে কালক্ৰমত প্ৰাচীন অসমৰ অধিবাসীসকল এটা জাতিত পৰিণত হৈ পিচলৈ অসমীয়া জাতি নামে পৰিচিত হ'ল। বৃহত্তৰ অসমীয়া জাতি গঠনত বিভিন্ন প্ৰজাতীয় উপাদান গোট খাইছিল।

অসমৰ প্ৰাচীন অধিবাসীসকলৰ বিষয়ে আলোচনা কৰি ইংৰাজ পণ্ডিত হেডনে মত প্ৰকাশ কৰিছে যে উত্তৰ-পূৰ্ব ভাৰত আৰু অসমৰ প্ৰাচীন অধিবাসীসকল প্ৰাক্-দ্ৰাভিড় প্ৰজাতিৰ আছিল।^{১০} অসমৰ প্ৰাচীনতম অধিবাসী হৈছে অষ্ট্ৰিক গোষ্ঠীৰ খাচীসকল। হেডনৰ মতে খাচী, কুকি, কছাৰী, কাৰ্বি আদি জনগোষ্ঠী এই প্ৰাক্-দ্ৰাভিড় প্ৰজাতিৰ। তেখেতৰ মতে নগাসকল ইণ্ডোনেচীয় প্ৰজাতিগত লক্ষণযুক্ত। পশ্চিম ফালৰ পৰা আৰ্যসকল অসমলৈ অহাৰ সময়তে পূৰ্ব ফালৰ পৰা মঙ্গোলীয়সকল অসমত সোমাইছিল। বড়ো, গাৰো আদি মঙ্গোলীয় গোষ্ঠীৰ তিব্বত-বৰ্মী ভাষা-ভাষী লোক। শান জাতিৰ প্ৰধান দলটো যদিও খ্ৰিষ্টীয় ১২২৮ চনত অসমলৈ আহিছিল, তথাপি ইয়াৰ এটা সৰু সূঁতি খ্ৰিঃ ৮ম শতিকাতে অসমলৈ আহিছিল বুলি নৃতাত্ত্বিকসকলে অনুমান কৰে।^{১১} “৫ম শতাব্দীৰ শেষৰ পিনে গুপ্ত সাম্ৰাজ্যৰ পতনৰ সময়ত অসমলৈ ব্ৰাহ্মণৰ প্ৰব্ৰজন হয় বুলি জনা যায়।^{১২} এইদৰে যুগে যুগে চামে চামে বিভিন্ন প্ৰজাতিৰ লোকে আহি প্ৰাচীন কালত অসমত বসতি

কৰি তেওঁলোকৰ ভাষা-সংস্কৃতিৰ সমন্বয়ত অসমীয়া জাতি আৰু সংস্কৃতি গঢ়ি তোলে। প্ৰাচীন কালত অসমৰ অধিবাসীসকলৰ অসমীয়া বোলা হোৱা নাছিল। তথাপি সেই যুগৰ খিলঞ্জীয়া অধিবাসীসকলৰ প্ৰজাতীয় সংমিশ্ৰণ আৰু ভাষা-সংস্কৃতিৰ সংমিশ্ৰণৰ ফলতে যি সংস্কৃতিৰ সৃষ্টি হৈছিল তাৰেই উত্তৰাধিকাৰী হৈছে আজিৰ অসমীয়াসকল।

অসমলৈ আৰ্যসকল অহাৰ আগতে ইয়াত ৰাজত্ব কৰা ৰজা হিচাপে মহীৰঙ্গ দানৱৰ নাম পোৱা যায়। এওঁৰ বংশকে দানৱ বা অসুৰ বংশ বোলা হয়। এই বংশই কেতিয়াৰ পৰা ৰাজত্ব কৰিছিল জনা নেযায়। মহীৰঙ্গ দানৱৰ বংশৰ পিচত হটকাসুৰ ৰজা হয়। ড° ডিম্বেশ্বৰ শৰ্মাদেৱৰ মতে ‘হাটক’ শব্দটো ‘লাডাক’ শব্দৰ সংস্কৃত ৰূপ। হাটকাসুৰ সম্ভৱতঃ লাডাখ অঞ্চলৰ অধিবাসী আছিল। তেওঁলোকৰ দেৱতা ‘হাটকশূলিন্’ (শিৱ)। তাৰ পৰাই ‘হাটকেশ্বৰ’ বা ‘হাৰুগ্লেস্বৰ’ শব্দৰ সৃষ্টি হৈছে বুলি ড° শৰ্মাই অনুমান কৰে।^{১০} প্ৰসঙ্গতঃ কৈ থব পাৰি যে এই অনুমান যদি সত্য হয়, তেনেহ’লে প্ৰাচীন অসমৰ সীমা উত্তৰে তিব্বতলৈকে আছিল বুলিব পাৰি। দানৱ বা অসুৰ বংশই কিমান দিনলৈ ৰাজত্ব কৰিছিল সেই বিষয়েও সঠিককৈ একো কব নোৱাৰি। ১০ম শতিকাৰ *কালিকা পুৰাণ* মতে এই বংশৰ শেষৰজন ৰজা ঘটকাসুৰক পৰাস্ত কৰি, বিদেহৰ পৰা অহা নৰকে প্ৰাগজ্যোতিষৰ সিংহাসন অধিকাৰ কৰে। সেই সময়ত বা তাৰো আগৰে পৰা অসমত বাস কৰা লোকসকলক ৰামায়ণ-মহাভাৰত আদিত কিৰাত, ম্লেচ্ছ বুলি অভিহিত কৰিছে। নৰকে এওঁলোকক সাগৰৰ ওচৰলৈ খেদি পঠিয়াই আৰ্যলোক আনি প্ৰাচীন অসমত স্থাপন কৰে। *কালিকা পুৰাণ* মতে নৰকৰ পিতৃক স্বয়ং ভগৱান বিষ্ণু আৰু মাক ভূমি বা বসুমতী। সেয়ে তেওঁৰ বংশক ভৌম বংশ বোলা হয়। ভূমিদান লিপিত নৰকৰ পুত্ৰ ভগদত্ত আদিক ‘বৈষ্ণৱ বংশ’ও বোলা হৈছে। নৰকক নৰকাসুৰ বুলিও জনা যায়। এওঁ নিজে আৰ্য হওক বা নহওক, তেৱেঁই যে প্ৰাচীন অসমলৈ আৰ্য সংস্কৃতিৰ আমদানি কৰিছিল সেইটো অনুমান কৰিব পাৰি। মহাভাৰতৰ যুদ্ধত ভগদত্তই কিৰাত, চীন সৈন্য লৈ যুদ্ধত অংশ গ্ৰহণ কৰাৰ পৰাও বুজিব পাৰি যে নৰক ভগদত্তৰ কালত অসমত আৰ্য-ভিন্ন জাতিৰ লোকে বসবাস কৰিছিল। ভাৰতৰ পশ্চিম অঞ্চল আৰু চীন দেশকে আদি কৰি পূবৰ দেশসমূহৰ মাজত বাণিজ্যিক আদান-প্ৰদান প্ৰাচীন অসমৰ মাজেৰেই চলিছিল। সেয়ে পশ্চিম ফালৰ পৰা আৰ্যসকল যেনেকৈ আহিছিল, তেনেকৈ পূৱ ফালৰ পৰা আৰ্য-ভিন্ন জাতিৰ লোকো অসমলৈ

আহিছিল। তেনে দৰেই এই দেশত এটা সংমিশ্ৰিত জাতি-সংস্কৃতি গঢ়ি উঠিছিল। প্ৰাচীন সংস্কৃতি গ্ৰহৃত কিৰাত বুলি উল্লেখ কৰা লোকসকলকে আধুনিক যুগৰ নৃতাত্ত্বিকসকলে অষ্ট্ৰিক, তিব্বত-বৰ্মী আদি মঙ্গোলীয় গোষ্ঠীত বিভক্ত কৰিছে। অষ্ট্ৰিকসকলেই অসমৰ প্ৰাচীনতম অধিবাসী বুলি পণ্ডিতসকলে ঠাৱৰ কৰিছে। তিব্বত-বৰ্মী গোষ্ঠীৰ বড়ো, গাৰো, ৰাভা, ডিমাচা, অকা, ডফলা, আবৰ, কাৰ্বি, মিছিং, নগা, কুকি, মিচিমি আদি প্ৰাচীন অসমৰ অধিবাসী।

উল্লেখ কৰি অহা হৈছে যে খ্ৰিঃ ৫ম শতিকা মানৰ পৰা অসমলৈ ব্ৰাহ্মণৰ প্ৰব্ৰজন হ'বলৈ ধৰে আৰু তেওঁলোকৰ সংস্কৃতিও অসমত সোমায়।^{১৪} খ্ৰিষ্টীয় ৫ম-৬ষ্ঠ শতিকাত অসমত যিসকলে ৰজা আছিল তেওঁলোকে ব্ৰাহ্মণক ভূমিদান কৰি যিবোৰ শিলৰ বা তামৰ লিপি খোদিত কৰাইছিল সেই ভূমিদান লিপিবোৰৰ পৰা জনা যায় যে বহুতো ব্ৰাহ্মণক ভূমিদান কৰা হৈছিল। তাৰে কিছুমান ভূমি খেতি-বাতিৰ কাৰণে আৰু আন কিছুমান বসতিৰ কাৰণে দান কৰা হৈছিল। ৬ষ্ঠ শতিকাৰ ৰজা ভূতিৰ্মাই ব্ৰাহ্মণক অগ্ৰহাৰ ভূমিদান কৰি তাম্ৰপট্ট কৰি দিছিল বুলি পৰৱৰ্তী শতিকাৰ ৰজা ভাস্কৰৰ্মাই নিধনপুৰ লিপিৰ পৰা জনা যায়। কোনো কাৰণত ভূতিৰ্মাৰ লিপিখন হেৰাই যোৱা কাৰণে ৰজা ভাস্কৰৰ্মাই ৭ম শতিকাৰ আকৌ এখন তাম্ৰপট্ট কৰাই সেই অগ্ৰহাৰ ভূমি আগৰ ব্ৰাহ্মণসকলৰ উত্তৰাধিকাৰীসকলক ভোগ দখলৰ অধিকাৰ দিয়ে। সেইখন তাম্ৰপট্টই নিধনপুৰ তাম্ৰলিপি নামে জনা যায়। ৯ম শতিকাৰ ৰজা বনমালৰ্মাই তেজপুৰ তাম্ৰলিপিৰ দ্বাৰা ইন্দোক নামৰ এজন ব্ৰাহ্মণক গ্ৰামদান কৰিছিল।^{১৫} সেই সময়ৰ অন্যান্য ৰজাসকলেও ভূমি দান কৰিছিল। সেইদৰে ভূমি পট্টনৰ যোগেদি ৰাজ অনুগ্ৰহ লাভ কৰা ব্ৰাহ্মণসকলে প্ৰাচীন অসমত ব্ৰাহ্মণ্য বা আৰ্য সংস্কৃতি বিস্তাৰত বিশেষ ভূমিকা লৈছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি।

এইদৰে মঙ্গোলীয় কিৰাত-শ্লেচ্ছ আৰু ককেচীয় আৰ্যসকলে অসমত বসতি কৰি কালক্ৰমত অসমৰ জাতি, সংস্কৃতি আৰু সমাজ গঢ়ি তোলে। সমাজৰ ক্ষুদ্ৰতম গোটটো পিতৃ-মাতৃ আৰু সন্তানক লৈয়ে গঢ়ি উঠিছিল। পিচলৈ সন্তানৰ পৰিয়ালবোৰো সংযোজিত হৈ একোটা ডাঙৰ যৌথ পৰিয়ালৰ সৃষ্টি হৈছিল। প্ৰাচীন অসমৰ আৰ্য আৰু আৰ্য-ভিন্ন লোকসকলৰ মাজতো সেইদৰে সমাজৰ প্ৰাথমিক গোটবোৰৰ সৃষ্টি হৈছিল। এনেধৰণে বহুতো পৰিয়াল গোট খাই গাওঁ পাতি বাস কৰিছিল। ভূমিদান লিপিবোৰত গাওঁ বা চুবুৰি বুজোৱা 'গ্ৰাম', 'পাটক',

‘বাটক’ আদি শব্দ পোৱা যায়। বনমালৰমাৰ তেজপুৰ লিপিত আছে—

“তস্মৈ দদৌ শ্ৰীবনমালদেৱে গ্ৰামং ...

.....অভিশূৰবাটকাখ্য”^{১৬}

ইয়াত ‘বাটক’ আৰু ‘গ্ৰাম’ সমার্থক হিচাপে ব্যৱহাৰ হৈছে। সেইদৰে ইন্দ্ৰপালৰ গুৱাহাটী লিপি, ধৰ্মপালৰ খনামুখ লিপি আদিৰ পৰা ‘কাসী পাটক’, ‘মেৰু পাটক’, ‘খন্টা পাটক’ আদি গাৱঁৰ নাম পোৱা যায়। ‘পাটক’ শব্দটোৱে পৰৱৰ্তী যুগত গাৱঁৰ এটা অংশ বা চুবুৰি বুজাবলৈ লয়।

এই লিপিবোৰৰ পৰা অনুমান হয় যে বিভিন্ন বৃত্তিৰ মানুহ একো একোটা অঞ্চলত থুপ খাই বাস কৰিছিল। কাৰণ উক্ত লিপিবোৰত সীমাৰ বৰ্ণনাত কৈৱৰ্ত সকলৰ গাওঁ, কৈৱৰ্ত্তসকলে ব্যৱহাৰ কৰা পুখুৰী— এনে ধৰণৰ কথা পোৱা যায়।^{১৭} ৰত্নপালৰ তাম্ৰলিপিত মাটিৰ যি সীমা দিয়া হৈছে তাৰ পূৱ, পশ্চিম, উত্তৰ, দক্ষিণ কেউদিশতে নৌকিসকলৰ মাটি। তেওঁলোকৰ নাম— চন্দে নৌকি, দক্ষপাটি নৌতি, সধৰ নৌকি। আকৌ একেখন লিপিতে দাঁৰি, কুলসোস্তসকলৰ চুবুৰিৰো উল্লেখ আছে।^{১৮} এইবোৰৰ পৰা অনুমান হয় যে একে বৃত্তিৰ মানুহ একোটা অঞ্চলত বাস কৰিছিল। বাসভূমিৰ ওচৰতে গোচাৰণ ভূমি, কৃষি ভূমি আদিও থকাৰ বিষয়ে বলৰমাৰ হাওৰাঘাট লিপিৰ পৰা জনা যায়। উক্ত লিপিত আছে—

“বাস্ত্বেদেদাৰস্থলজলগোপ্ৰচাৰকৰাদ্যুপেতা...”^{১৯}

ইন্দ্ৰপালৰ গুৱাহাটী লিপিতে বস্তি, খেতি পথাৰ, শুকান ঠাই, জলাতক ঠাই, চৰণীয়া পথাৰ, আবৰ্জনা পেলোৱা ঠাই আদিৰ উল্লেখ আছে।^{২০}

প্ৰাচীন অসমত নগৰো আছিল বুলি লিপিবোৰৰ পৰাই জনা যায়। প্ৰাগজ্যোতিষপুৰ, কামৰূপ নগৰ, দুৰ্জয়া নগৰ আদি নাম লিপিবোৰত আছে। বৰগাওঁ লিপিত দুৰ্জয়া নগৰৰ বিষয়ে লিখিছে যে সেই নগৰ দুৰ্গ আৰু প্ৰাকাৰ পৰিবেষ্টিত আছিল। যোগিনী তন্ত্ৰতো অপুনৰ্ভৱ নগৰীৰ কথা আছে। সেই নগৰী ৰঙা, নীলা, বগা প্ৰাসাদেৰে শোভিত আৰু তাৰ কেউফালে গড়খাই আছিল।^{২১}

একেবাৰে আদিম অৱস্থাত মানুহ গুহাবাসী আছিল। “অসমৰ পাহাৰ আৰু মালভূমি অঞ্চলৰ অসংখ্য স্বাভাৱিক গুহা আছে... ইয়াৰে কিছুমান আদিম অধিবাসীসকলৰ বাসস্থান আছিল বুলি জনা যায়”।^{২২} ৰজা-মহাৰজাসকলৰ প্ৰাসাদ বা অট্টালিকা আদিৰ কিছু আভাস প্ৰাচীন লিপিসমূহ আৰু স্থাপত্য-ভাস্কৰ্যৰ ভগ্নাৱশেষৰ পৰা পাব পাৰি। কিন্তু সাধাৰণ মানুহৰ ঘৰ-দুৱাৰ কেনেকুৱা আছিল তাৰ কোনো চিন আজি আৰু পাবলৈ নাই। তথাপি অনুমান কৰিব পাৰি যে সাধাৰণ মানুহৰ

ঘৰবোৰ কাঠ, বাঁহ, খেৰ, বেঁত আদিৰে সজা হৈছিল। কাৰণ, এইবোৰ সঁজুলি অসমত প্ৰাচীন কালৰ পৰাই অপৰ্যাপ্ত পৰিমাণে উৎপন্ন হৈ আহিছে। ৮ম-১২শ শতিকাৰ মাজত ৰচিত চৰ্যাপদবোৰত সাধাৰণ মানুহৰ প্ৰাত্যহিক জীৱনৰ পৰা উপমা আদি লৈ আধ্যাত্মিক তত্ত্বৰ বিষয়ে কোৱা হৈছিল। তাৰ পৰা প্ৰাচীন যুগৰ সাধাৰণ মানুহৰ বিষয়ে কিছু আভাস পাব পাৰি। এটা চৰ্যাত 'চঞ্চলী' শব্দটো প্ৰয়োগ কৰিছে (৫০নং চৰ্যা)। যদিও শব্দটো আধ্যাত্মিক অৰ্থত ব্যৱহাৰ হৈছে, তথাপি অনুমান কৰিব পাৰি যে সেই সময়ত বেৰা দিয়া, ঘৰ বন্ধা আদি কামত 'চঁচালি'ৰ ব্যৱহাৰ আছিল।

থকাঘৰৰ লগতে ৰাস্তানিঘৰ, ধানৰ ভঁৰাল, গোহালি, হাঁহ-কুকুৰৰ গঁৰাল আদিও সজোৱা হৈছিল। ৯ম শতিকাৰ ৰজা বনমালৰমাৰ তেজপুৰ লিপিৰ জনা যায় যে আহল-বহল ৰাজমাৰ্গ, চতুৰ্পদ বা চাৰি আলি, সৰু ৰাস্তা বা ৰথ্যা, বীথী আদি আছিল। উক্ত লিপিৰ পৰাই জনা যায় যে নগৰীবোৰ আৰাম, উপবন, পদুম পুখুৰী আদিৰে সুশোভিত আছিল।^{২০}

যদিও আৰ্য আৰু আৰ্য-বহিৰ্ভূত জাতিৰ সংমিশ্ৰণত অসমীয়া জাতি গঢ়ি উঠিছিল তথাপি আৰ্য বা ব্ৰাহ্মণ সংস্কৃতিৰ প্ৰভাৱ যে বেছি আছিল সেইটো অনুভৱ কৰিব পাৰি। প্ৰাচীন বৰ্ণভেদ প্ৰথামতে ব্ৰাহ্মণ, ক্ষত্ৰিয়, বৈশ্য, শূদ্ৰ নামেৰে যি চতুৰ্বৰ্ণ আছিল, তাৰে কিছু সাল-সলনি হৈ প্ৰাচীন অসমত বিভিন্ন শ্ৰেণীৰ লোকৰ সৃষ্টি হৈছিল। ব্ৰাহ্মণৰ পিচতে কায়স্থ, কৰণ, লেখক, দৈৱজ্ঞ, বৈদ্য, ভিষজ, কুস্তকাৰ, কৈৱৰ্ত আদি বিভিন্ন শ্ৰেণীৰ লোকৰ বিষয়ে লিপিবোৰৰ পৰা জানিব পাৰি। পোনতে এওঁলোক বৃত্তিয়াল আছিল, পিচলৈ কিন্তু একো একোটা জাতিৰূপে স্বীকৃত হ'ল। পিচলৈ ব্ৰাহ্মণ আৰু শূদ্ৰ— দুটা ভাগ হ'ল, আৰু শূদ্ৰৰ ভিতৰত কোঁচ, কলিতা, কেওট আদি বিভিন্ন জাতিৰ সৃষ্টি হ'ল।

সমাজত ব্ৰাহ্মণসকলৰ আসন সকলোতকৈ ওপৰত আছিল। তেওঁলোকে ৰাজ অনুগ্ৰহত মাটি-বাৰী লাভ কৰি আৰ্থিক চিন্তাৰ পৰা মুক্ত হৈ নিৰ্বিবাদে আৰু স্বচ্ছন্দে শাস্ত্ৰ-চৰ্চা আৰু ধৰ্ম-চৰ্চা কৰি জীৱন নিৰ্বাহ কৰিছিল। অধ্যয়ন, অধ্যাপনা, পূজা-অৰ্চনা, ৰাজকীয় যাগ-যজ্ঞ সম্পাদনা, পৌৰোহিত্য আদিয়েই তেওঁলোকৰ প্ৰধান কাম আছিল। ৰজাক শাস্ত্ৰীয় মন্ত্ৰণা-পৰামৰ্শ আদি দিয়াৰ উপৰি কূটনৈতিক আদান-প্ৰদানতো অংশ গ্ৰহণ কৰিব লগীয়া হৈছিল। তেওঁলোকে প্ৰাচীন বৈদিক ৰীতি-নীতি মানি চলিছিল। ধৰ্মীয় আচাৰ-নীতিত তেওঁলোক অতি নিষ্ঠাৱান আছিল।

বেদশাখা, গোত্ৰ, প্ৰৱৰ আদি বিচাৰত অতি সজাগ আছিল। ভূমিদান লিপিবোৰত ব্ৰাহ্মণসকলৰ গোত্ৰ, প্ৰৱৰ আদিৰ উল্লেখ প্ৰায় অপৰিহাৰ্য আছিল বুলিব পাৰি। ভাস্কৰৱৰ্মাৰ নিধনপুৰ লিপিত প্ৰাচেতস, কাত্যায়নকে আদি কৰি সাতত্ৰিশটা গোত্ৰ, আৰু বাজসনেয়ী, ছান্দোগ আদি ঋগ্বেদীয়, যজুৰ্বেদীয় পাঁচটা বেদ শাখাৰ উল্লেখ আছে। সেইদৰে বনমালদেৱৰ তেজপুৰ লিপি, বলৱৰ্মাৰ নগাওঁ লিপি, ৰত্নপাসৰ বৰগাওঁ লিপি, ধৰ্মপালৰ খনামুখ লিপি, শুভস্কৰপাটক লিপি আদিতো ভূমিদান গ্ৰহীতা ব্ৰাহ্মণসকলৰ গোত্ৰ আদিৰ উল্লেখ আছে।

ব্ৰাহ্মণসকলে বাল্য আৰু কৈশোৰ অৱস্থাত কঠোৰ ব্ৰহ্মচৰ্য পালন কৰি বেদাদি শাস্ত্ৰ অধ্যয়ন কৰি শিক্ষা সাং হ'লে গাৰ্হস্থ্য ধৰ্মত প্ৰৱেশ কৰিছিল। ৰজাই তেনে ব্ৰাহ্মণক গাৰ্হস্থ্য জীৱন-যাপন কৰাৰ উদ্দেশ্য আৱশ্যকীয় মাটি-বাৰী দি সংস্থাপিত কৰিছিল বুলি ভূমিদান লিপিবোৰৰ পৰা জনা যায়।^{২৪} তেওঁলোকে স্নান, জপ, পূজা, সম্ভা, আহিক আদি ত্ৰিসম্ভা যজন-যাজনৰ সকলোখিনি কৰণীয় নিষ্ঠাৰে পালন কৰিছিল। তেওঁলোকে ছাত্ৰশালা বা টোল পাতি ছাত্ৰক শিক্ষাদানো কৰিছিল। পণ্ডিত আৰু ৰাজকবি হিচাপে ৰাজসভাতো তেওঁলোকে সন্মানিত আসন অলঙ্কৃত কৰিছিল। ইয়াৰ উপৰি ন্যায়কৰণিক (বা কৰণ) হিচাপেও কাৰ্য সম্পাদন কৰিছিল যেন অনুমান হয়। সম্ভৱতঃ ৰাজ আদেশ কাৰ্যত পৰিণত কৰা বিষয়াক কৰণিক আৰু বিচাৰ আদিত ৰজাক সহায় কৰা বিষয়াক ন্যায়-কৰণিক বুলিছিল। নিধনপুৰ লিপিত ন্যায়-কৰণিক জনাৰ্দন স্বামীৰ নাম আছে। মাটিৰ সীমা বুজাই দিয়া নাইবা ভূমিদানৰ সাক্ষী হিচাপে সম্ভৱতঃ তেৱোঁ উপস্থিত আছিল। ড° আল্টেকাৰৰ মতে ন্যায়-কৰণিক পদে বিচাৰপতিক বুজাইছিল।^{২৫}

সমাজত ব্ৰাহ্মণসকলৰ পিচতে কায়স্থসকলৰ স্থান আছিল যেন অনুমান হয়। কাৰণ উক্ত নিধনপুৰ লিপিত ব্যৱহাৰি হৰদত্ত কায়স্থৰ নাম আছে। সংস্কৃত 'ব্যৱহাৰ' শব্দটোৰ এটা অৰ্থ হয় মোকদ্দমাৰ বিচাৰ (trial or investigation of a case), গতিকে বিচাৰ কাৰ্যত ৰজাক সহায় কৰা বিষয়ক ব্যৱহাৰি বোলাটো সম্ভৱ। ড° ডিম্বেশ্বৰ শৰ্মাদেৱৰ মতেও 'ব্যৱহাৰিয়ে আইনৰ খুঁতি-নাতিবোৰ জানিছিল আৰু ৰজাক সহায় কৰিছিল। এই কামৰ বাবে কায়স্থ লোক নিয়োজিত হৈছিল বুলি উক্ত লিপিৰ পৰা জনা যায়। কায়স্থসকলে হিচাপ-পত্ৰ ৰখা কামো কৰিছিল। ব্যৱহাৰি, কৰণ বা কৰণিক আদি কাৰ্যবাহী বিষয়া (Executive Officer) আছিল যেন অনুমান হয়।

ধৰ্মপালৰ শুভস্কৰপাটক লিপিত বৈদ্য শব্দটো আছে।^{১৬} শব্দটোৱে জাতি বুজাইছে নে বৃত্তি বুজাইছে সঠিককৈ ধৰিব নোৱাৰি। ড° প্ৰতাপ চন্দ্ৰ চৌধুৰীদেৱে অনুমান কৰে যে অসমত যদিও বৈদ্য বুলি এটা জাতি বা বৃত্তি নাছিল তথাপি এই বৈদ্য শব্দটোৰ পৰা ওলোৱা ওজা (বেজ) শব্দটোৱে পৰ্ব্বতী যুগত মন্ত্ৰ আদিৰে জৰা-ফুকা কৰা এক শ্ৰেণীৰ লোক বুজাবলৈ ধৰে। ড° ডিম্বেশ্বৰ শৰ্মাদেৱে কিন্তু উক্ত লিপিত থকা “গোৱৰ্গমানৱৈদ্যন” কথাষাৰ শুদ্ধ অৰ্থ ‘বাক্য, অৰ্থ আৰু পৰিমাণ সম্বন্ধে জ্ঞান থকা বিদ্বানজন’ বুলিহে লিখিছে। বৈদ্য বুলি কোনো জাতি বা বৃত্তি অসমত নাছিল বুলিয়েই কব পাৰি।

ব্ৰাহ্মণ আৰু কায়স্থৰ পিছতে সমাজত দৈৱজ্ঞসকলৰ স্থান আছিল যেন অনুমান হয়। ৰাজবিষয়া হিচাপে দৈৱজ্ঞসকলৰো বিশেষ স্থান আছিল।

কলিতাসকল অসমৰ এটা প্ৰাচীন জাতি বুলি পণ্ডিতসকলে অনুমান কৰে। কোলতা, কুলতা আদি বিভিন্ন নামেৰে ভাৰতৰ বিভিন্ন ঠাইত এওঁলোকৰ অস্তিত্ব আছিল। কেণ্টেইন নিউভিল চাহাবে শদিয়াৰ উত্তৰে ভূটীয়সকলৰ বাসস্থানৰ পূৰ্বে কলিতা নামৰ এটা পৰাক্ৰমী জাতি আছিল বুলি উল্লেখ কৰি গৈছে।^{১৭} ড° বাণীকান্ত কাকতিদেৱে এওঁলোকৰ বিষয়ে লিখিছে, অসমৰ কলিতাসকল “অতি প্ৰবল আৰু বিশিষ্ট আছিল”, “তেওঁলোকে পৌৰোহিত্য, ৰাজ্য পতা” আদি কাম “কৰিছিল”, তেখেতৰ মতে “কলিতাসকল বৌদ্ধ আছিল এইটো নিশ্চিত।” “কলিতা আৰু ক্ষত্ৰিয় সমাৰ্থক বুলি আগৰ দিনৰ পৰাই জনশ্ৰুতি চলি আহিছে।”^{১৮} ড° প্ৰতাপ চন্দ্ৰ চৌধুৰীদেৱে কলিতাসকলক প্ৰাচীন আলপাইন পুৰোহিতৰ বংশধৰ বুলি ভাবে।^{১৯} এওঁলোক প্ৰধানকৈ কৃষিজীৱী আছিল।

কৈৱৰ্ত নামৰ আন এটা জাতি বা বৃত্তিৰ বিষয়েও লিপিবোৰত পোৱা যায়।^{২০} তেওঁলোকে নাও বোৱা, মাছ মৰা, নদী-কৰ আদায় কৰা আদি কাম কৰিছিল। পিচলৈ সম্ভৱতঃ এওঁলোকৰ কিছুমানে কৃষিকৰ্ম কৰিবলৈ লয়, সেয়ে তেওঁলোক হালুৱৈ আৰু জালুৱৈ কেওট নামেৰে দুটা উপজাতিত বিভক্ত হয়।

নিধনপুৰ লিপিত থকা “শাসয়িতা, লেখয়িতা চ ৱসুৱৰ্গ (ঃ) ভাণ্ণাণাৰাধিকৃত মহাসামন্ত-দিৱাকৰপ্ৰভ (ঃ) উৎখেটয়িতা দন্তকাৰপূৰ্ণঃ সেক্যকাৰ (ঃ) কালিয়া।” কথাষাৰৰ পৰা আৰু কেইটামান বৃত্তিৰ বিষয়ে জানিব পাৰি। সেই কেইটা হৈছে— লেখক— যিয়ে লেখা কাম কৰিছিল, মহাসামন্ত— যিজন ভাণ্ণাৰৰ অধিকাৰী আছিল। ইয়াৰ উপৰিও উৎখেটয়িতা, দন্তকাৰ আৰু সেক্যকাৰ আছিল। এওঁলোকে

তাম্ৰপট্টখন খোদাই কৰা কামত সহযোগ কৰিছিল বুলি বুজা যায়। আকৌ বল্লৰমাৰ নগাওঁ লিপিত ৰাণক শব্দটো পোৱা যায়।^{১১} ৰাণক আৰু মহাসামন্ত শব্দ দুটাই কৰতলীয়া অথচ শক্তিশালী ৰজা নাইবা সেনাপতি বুজোৱা বুলি পণ্ডিতসকলে অনুমান কৰে। হৰ্জৰমাৰ হায়ুংথল লিপিত মহা-সৈন্যপতি, মহা-দ্বাৰাধিপতি, মহা-প্ৰতিহাৰ আৰু মহামাত্য বুলি উচ্চ ৰাজ বিষয়াকে বুজোৱা হৈছে কিন্তু ৰাজ বিষয়া হিচাপে তেওঁলোকৰ স্থান বা সন্মান কিমান সেই বিষয়া হিচাপে তেওঁলোকৰ স্থান বা সন্মান কিমান সেই বিষয়ে সঠিককৈ কব নোৱাৰি। ৰাজ-শাসনৰ লগত জড়িত এই বিষয়কেইটা প্ৰধানকৈ বৃত্তিহে, জাতি নহয়। উচ্চ-নীচৰ বিভাজন আৰু সন্মানৰ তাৰতম্য থকা বুলি অনুমান কৰিব পাৰি বৃত্তি হিচাপে কুন্তকাৰ, তাঁতী, ডিম্ৰজ আৰু নৌকিৰ উল্লেখ ক্ৰমে নিধনপুৰ লিপি, শুভঙ্কৰপাটক লিপি, নগাওঁ লিপি আৰু শোৱালকুছি লিপিত আছে।^{১২} আয়ুৰ্বেদ আৰু চিকিৎসা শাস্ত্ৰৰ চৰ্চ্চা, বা কৰৌতাক ডিম্ৰজ আৰু নাওঁ বোৱা বৃত্তিয়ালক নৌকি বোলা হৈছিল। সেইদৰে কুন্তকাৰ বা কুমাৰ আৰু তাঁতী বুলিও যে দুটা সম্প্ৰদায় আছিল সেইটো জানিব পাৰি। পিচলৈ কুমাৰ আৰু হীৰা দুটা ভাগত বিভক্ত হয়। ধৰ্মপালৰ পুষ্পভদ্ৰা লিপিত উল্লেখ থকা 'দিৰ্জ ৰতিহড়ী' কথাষাৰৰ পৰা কোনো কোনো পণ্ডিতে অনুমান কৰে যে সেই সময়ত অৰ্থাৎ ১২শ শতিকাত হাৰি নামৰ এটা জাতি আছিল।

প্ৰাচীন লিপিসমূহৰ পৰা জাতি আৰু বৃত্তিৰ বিষয়ে যিখিনি কথা পোৱা যায় সি প্ৰধানত : আৰ্য হিন্দু সমাজৰ কথাহে। তদুপৰি ভূমিদান লিপিবোৰ ৰচনা কৰাৰ পৰা খোদাই কৰালৈকে সকলোখিনি পণ্ডিতলোকৰ তত্ত্বাৱধানত হৈছিল গতিকে তাত ব্ৰাহ্মণ্য ধৰ্ম আৰু সংস্কৃতিয়েই প্ৰাধান্য পাইছিল। তাৰ অৰ্থ এইটো নহয় যে আৰ্যভিন্ন জাতিৰ কোনো অৰিহণা তাত নাই। আৰ্য হিন্দুৰ তুলনাত প্ৰাচীন অসমত আৰ্যভিন্ন, বিশেষকৈ মঙ্গোলীয় গোষ্ঠীৰ লোকৰ সংখ্যা বহুত বেছি আছিল। সমাজ গঠনত তেওঁলোকৰো গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা আছিল। যদিও উচ্চ হিন্দুসকলে নিজৰ ৰীতি-নীতি আদি অক্ষুণ্ণ ৰাখিবৰ চেষ্টা কৰিছিল তথাপি আৰ্য্যভিন্ন জাতিৰ লগত সামাজিক আদান-প্ৰদান হৈছিল। অসবৰ্ণ বিবাহো সংঘটিত হৈছিল। তাৰ ফলতে সূত, বঁৰীয়া আদি অন্য জাতিৰ সৃষ্টি হৈছিল। ব্ৰাহ্মণ মাতৃ আৰু ক্ষত্ৰিয় পিতৃৰ সন্তানক সূত বোলে। বিধবা ব্ৰাহ্মণ মাতৃ আৰু অন্য জাতিৰ পিতৃৰ পৰা হোৱা সন্তানক বঁৰীয়া বুলিছিল। এওঁলোকক নীচ জাতি বুলি গণ্য কৰা হৈছিল। আৰ্য আৰু আৰ্য বহিৰ্ভূত জাতিৰ সংমিশ্ৰণৰ ফলত ব্ৰাহ্মণ্য ৰীতি-নীতিত মূলৰ

গোড়ামি বহু খিনি কমিছিল। ব্ৰাহ্মণসকলে মঙ্গোলীয় লোকক হিন্দু ধৰ্মত দীক্ষিত কৰোৱাৰ ফলস্বৰূপে পিচলৈ কোঁচ, শৰণীয়া কছাৰী আদি সম্প্ৰদায়ৰ সৃষ্টি হৈছিল।

৮ম শতিকাৰ পৰা ১২শ শতিকামানৰ ভিতৰত ৰচিত চৰ্যাপদৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে প্ৰাচীন কালৰ সমাজত উচ্চ-নীচৰ ভেদ আছিল। ডোম্বী, চণ্ডাল, শৰৰ আদি নীচ জাতি বুলি গণ্য হৈছিল। ১০ নং চৰ্যাৰ পৰা জানিব পাৰি যে অস্পৃশ্য নীচ জাতিৰ লোকৰ আৱাস নগৰৰ বাহিৰত আছিল।

প্ৰাচীন অসমৰ ধৰ্মৰ বিষয়ে লিপিসমূহৰ পৰা, প্ৰাচীন স্থাপত্য-ভাস্কৰ্যৰ ভগ্নাৱশেষৰ পৰা; চৰ্যাপদ; কালিকা পুৰাণ, যোগিনী তন্ত্ৰ আদিৰ পৰা ভালেখিনি তথ্য পোৱা যায়। ইতিহাসে ঢুকি নোপোৱা কালত কি ধৰ্ম চলিছিল সঠিককৈ কব নোৱাৰিলেও উপৰোক্ত নিদৰ্শন আৰু পুথিসমূহৰ পৰা জানিব পাৰি যে খ্ৰিষ্টীয় ৪ৰ্থ শতিকা বা তাৰ কিছু আগৰ পৰা অসমত শৈৱ, শাক্ত, বৈষ্ণৱ ধৰ্ম আৰু কিছু অবচীন কালত বৌদ্ধ ধৰ্ম প্ৰচলিত আছিল। কালিকা পুৰাণ মতে নৰকে প্ৰাগজ্যোতিষত ৰাজত্ব স্থাপন কৰাৰ আগতে শিৱই ইয়াত প্ৰধান দেৱতা আছিল। ৩০ ড° কাকতিয়ে তেখেতৰ মাদাৰ গড়েছ কামাখ্যা নামৰ ইংৰাজী ভাষাত লিখা পুথিত মত প্ৰকাশ কৰিছে যে অসমৰ প্ৰাচীন অধিবাসী কিৰাতসকল শিৱভক্ত আছিল। এওঁলোকে, মদ-মাংসৰে শিৱক পূজা কৰিছিল। মহাভাৰতত আছে যে শিৱই কিৰাতৰ বংশত অৰ্জুনৰ লগত যুদ্ধ কৰিছিল। ৬০ কাকতিয়ে নৰকক খ্ৰিষ্টীয় ২য় শতিকামানৰ বুলি অনুমান কৰে। এই মত যদি মানি লোৱা হয় তেতিয়া হ'লে খ্ৰিষ্টীয় ২য় শতিকাৰ অসমত শৈৱ ধৰ্ম আছিল বুলিব পাৰি। খ্ৰিষ্টীয় ৪ৰ্থ শতিকামানৰ পৰা পুষ্যৱৰ্মাৰ বংশ, খ্ৰিষ্টীয় ৭ম শতিকামানৰ পৰা শালস্তম্ভ বংশ আৰু খ্ৰিষ্টীয় ১০ম শতিকাৰ পৰা ব্ৰহ্মপালৰ বংশই প্ৰাচীন অসমত ৰাজত্ব কৰিছিল। এই ৪ৰ্থ শতিকাৰ পৰা প্ৰায় ১২শ শতিকালৈ মুঠতে চল্লিশ জনমান ৰজাই ৰাজত্ব কৰিছিল। তাৰে বেছি ভাগ ৰজাই শৈৱ ধৰ্মৰ পৃষ্ঠপোষক আছিল। অৱশ্যে অন্যান্য দেৱ-দেৱীৰ কথাও লিপিবোৰত আছে। তাৰ পৰা অনুমান হয় যে সেই সময়ৰ ৰজাসকল ধৰ্মমতত উদাৰ আছিল। ভাস্কৰৱৰ্মাৰ নিধনপুৰ লিপিত শিৱৰ স্তুতি আছে। বলৱৰ্মা, ইন্দ্ৰপাল, বনমালৱৰ্মা, ৰত্নপাল আদি ৰজাৰ লিপিতো শিৱৰ স্তুতি বা শৈৱ পৃষ্ঠপোষকতাৰ আভাস আছে। বনমালৱৰ্মা দেৱৰ তেজপুৰ লিপিৰ পৰা জনা যায় যে তেওঁ হাটকশূলী শিৱৰ ভগ্না মন্দিৰ পুনৰ নিৰ্মাণ কৰাইছিল। বনমালৱৰ্মা ৯ম শতিকাৰ ৰজা আছিল, গতিকে তেওঁ পুনৰ্নিৰ্মাণ কৰোৱা মূল মন্দিৰটো ৭ম বা ৮ম শতিকাৰ

আছিল বুলি ধৰিব পাৰি। বত্ৰপালৰ গুৱাহাটী লিপিৰ পৰা জনা যায় যে তেওঁ দহতো শিৱ মন্দিৰ নিৰ্মাণ কৰাইছিল। হৰ্জৰৱৰ্মাৰ তেজপুৰ লিপিত তেওঁক পৰম মাহেশ্বৰ বুলি অভিহিত কৰা হৈছে।^{১০} ৰজা বজ্ৰদত্ত আৰু বাণ অতিমাত্ৰাই শিৱভক্ত আছিল বুলি জনা যায়। ড° চৌধুৰীয়ে উল্লেখ কৰিছে যে অন্ততঃ ৫ম শতিকাত শিৱমূৰ্তি পূজা কৰাৰ নিদৰ্শন আছে। ড° কাকতিয়েও দেখুৱাইছে যে ৭ম শতিকাৰ পৰা ১০ম শতিকাৰ ভিতৰত লিখিত “চখন ফলিত শিৱৰ বেলেগ বেলেগ মূৰ্তিৰ প্ৰতি প্ৰণাম বাক্য আছে।”

মূৰ্তি আৰু লিঙ্গ দুয়ো ৰূপতে খ্ৰাচীন অসমত শিৱৰ পূজা হৈছিল। কালিকা পুৰাণৰ ৮১-৮২ অধ্যায়ত পোন্ধৰখন শিৱ স্থানৰ উল্লেখ আছে।

শিৱসাগৰ, কামৰূপ, দৰং আজিৰ কেইবাঠাইতো শিৱ মন্দিৰৰ ভগ্নাৱশেষ পোৱা গৈছে। সেইবোৰ খ্ৰিষ্টীয় ৭ম শতিকাৰ পৰা ১৩শ শতিকাৰ ভিতৰৰ আছিল বুলি পণ্ডিতসকলে অনুমান কৰে। তেজপুৰৰ ওচৰৰ মহাভৈৰৱ মন্দিৰ, বজালিৰ ওচৰৰ পৰিহৰেশ্বৰ দেৱালয়ত অতি প্ৰাচীন কালৰ পৰা শিৱলিঙ্গৰ পূজা হৈ আহিছে। নগাওঁৰ ডবকাৰ ওচৰৰ গছতলত পোৱা শিৱ মন্দিৰৰ ধ্বংসাৱশেষ ১০ম-১১শ শতিকাৰ বুলি পণ্ডিতসকলে অনুমান কৰে।

শৈৱ ধৰ্মৰ পিছতে প্ৰাচীন অসমত শাক্ত ধৰ্মৰ স্থান আছিল। ৭ম-৮ম শতিকাত ৰচিত দেৱীপুৰাণমতে কামৰূপত শক্তি পূজা চলিছিল। কালিকা পুৰাণৰ মতে প্ৰাগজ্যোতিষৰ ৰজা নৰকেই কামাখ্যাৰ পূজাৰ যোগেদি শক্তি পূজাৰ প্ৰচলন কৰে। নীলাচলৰ কামাখ্যা মন্দিৰেই শক্তি আৰু শাক্ত তান্ত্ৰিক ধৰ্মৰ প্ৰাচীনতম আৰু প্ৰসিদ্ধ কেন্দ্ৰ আছিল। কালিকা পুৰাণৰ ৫১-৬৪ অধ্যায়ত কামৰূপ-কামাখ্যাক শক্তি-তান্ত্ৰিক ধৰ্মৰ মহাপীঠ বুলি উল্লেখ কৰিছে। শিৱৰ যেনেকৈ মূৰ্তি আৰু লিঙ্গৰূপত পূজা হৈছিল তেনেকৈ দেৱীৰো মূৰ্তি আৰু যোনি ৰূপত প্ৰাচীন কালৰ পৰা পূজা হৈ আহিছে। কামাখ্যা নামটোত আৰু ইয়াৰ পূজা পদ্ধতিত অগ্নিক প্ৰভাৱ থকা বুলি ড° কাকতি, ড° বৰুৱা, ড° চৌধুৰী আদি পণ্ডিতসকলে মত প্ৰকাশ কৰিছে। অগ্নিকৰ উপৰি অন্যান্য মল্লৌলীয়া জাতিৰ ধৰ্মীয় ৰীতি-নীতি, তন্ত্ৰ-মন্ত্ৰ আদিও দেৱীপূজাৰ লগত সংযোজিত হৈছিল। প্ৰাচীন পূজা পদ্ধতিত পঞ্চমকাৰৰ ব্যৱহাৰ, যোনি পূজা, বলি-বিধান আন কি নৰবলি আদিও হৈছিল। কোঁচ ৰজা বিশ্বসিংহই নীলাচল পীঠ পুনৰুদ্ধাৰ কৰাৰ আগতে তাত গাৰোসকলে গাহৰি, কুকুৰা আদি বলি দি পূজা কৰা বুলি জনা যায়। ড° মহেশ্বৰ নেওগ সম্পাদিত

পৰিত্ৰ অসম পুথিৰ পৰা জানিব পাৰি যে শদিয়াৰ ওচৰৰ ঢল নদীৰ পাৰত থকা তাম্ৰেশ্বৰীৰ মন্দিৰ এটা অতি পুৰণি শাক্ত মন্দিৰ। খ্ৰিষ্টীয় ১৫শ শতিকাত চুতীয়াসকলে এই মন্দিৰ পুনৰ নিৰ্মাণ কৰিছিল। “ঘাই মন্দিৰটি বহুত দিনৰ আগৰ হ'ব লাগিব, কাৰণ ইয়াৰ প্ৰত্নতাত্ত্বিক নিদৰ্শনবোৰত আদিমতাৰ সাঁচ দেখা পোৱা যায়। পুৰা কালত ইয়াত নৰবলি হৈছিল বুলি জনা যায়।”^{৭৬} তাম্ৰেশ্বৰী মন্দিৰৰ উপৰি তেজপুৰৰ ভৈৰৱী মন্দিৰ, জয়ন্তাপুৰৰ জয়ন্তেশ্বৰী মন্দিৰ আদিতো এসময়ত নৰবলি হৈছিল।^{৭৭} ইয়াৰ উপৰি গোলাঘাটৰ ওচৰ-পাঁজৰৰ ঠাইত পোৱা দুৰ্গা, উমা-মহেশ্বৰৰ মূৰ্তি আৰু থান আদিও বহু প্ৰাচীন যুগৰ। মিকিৰ পাহাৰৰ বৰগঙ্গাত থকা খ্ৰিষ্টীয় ৫ম-৬ষ্ঠ শতিকাৰ ৰজা ভূতিবৰ্মাৰ দিনৰ এটা মন্দিৰৰ ভগ্নাৱশেষ আৱিষ্কৃত হৈছিল, প্ৰত্নতাত্ত্বিক ৰাজমোহন নাথদেৱে সেইটো মহামায়াৰ মন্দিৰ বুলি অনুমান কৰিছিল।

দেৱী মূৰ্তিৰ ভিতৰত দেওপানীৰ চণ্ডী মূৰ্তিয়েই সৰ্বপ্ৰাচীন বুলি জনা যায়। মহিষমৰ্দ্দিনীৰ মূৰ্তিও অসমৰ বহু ঠাইতে পোৱা গৈছে।

অসমত বৈষ্ণৱ ধৰ্ম সঞ্চালনিকৈ প্ৰচাৰ কৰে মহাপুৰুষৰ শঙ্কৰদেৱে। কিন্তু তাৰ আগতেও প্ৰাচীন অসমত বিষ্ণু উপাসনা যে আছিল তাৰ কিছু নিদৰ্শন পোৱা যায়। “বাসুদেৱীয় সম্প্ৰদায়ৰ ভালেমান দেৱালয় আৰু কলীয়া শিলত কটা বিষ্ণুমূৰ্তি লক্ষীমপুৰ, শোণিতপুৰ, কামৰূপ আৰু নগাওঁ জিলাৰ বিভিন্ন ঠাইত আছে।... তাৰে ভিতৰত লক্ষীমপুৰৰ বাসুদেৱৰ থান অতি প্ৰাচীন আৰু প্ৰখ্যাত” বুলি ড° সৰ্বেশ্বৰ ৰাজগুৰুদেৱে মত প্ৰকাশ কৰিছে।^{৭৮} এই থানৰ বাসুদেৱীয় বিষ্ণু আৰু পূজা পদ্ধতিৰ বিষয়ে কালিকা পুৰাণত বিশদ বিৱৰণ আছে। কালিকা পুৰাণৰ পৰাই জনা যায় যে দিক্ৰবাসিনী অঞ্চলত বাসুদেৱ বিষ্ণুৰ পূজা পঞ্চৰাত্ৰ বিধিমেতে হৈছিল। ৫ম-৬ষ্ঠ শতিকাৰ ৰজা ভূতিবৰ্মাৰ লিপিত ৰজাৰ নামৰ আগত বিশেষণ হিচাপে এটা শব্দ আছে। সেইটো কোনো কোনো পণ্ডিতৰ মতে ‘পৰম ভাগৱত’ আৰু কোনো কোনো পণ্ডিতৰ মতে ‘পৰম দৈৱত’। ‘পৰম ভাগৱত’ বুলি যদি ধৰা হয় তেনেহ'লে ক'ব পাৰি যে ৰজা ভূতিবৰ্মা সম্ভৱতঃ বিষ্ণু উপাসক আছিল। সেয়ে হ'লে বিষ্ণু পূজাৰ সৰ্বপ্ৰাচীন উল্লেখ ৫ম-৬ষ্ঠ শতিকাৰ ভূতিবৰ্মাৰ ‘বৰগঙ্গা’ লিপি বুলি ক'ব পৰা যায়। ১২শ শতিকাৰ ৰজা ধৰ্মপালে বিষ্ণু উপাসনাক ৰাজকীয় পৃষ্ঠপোষকতা দিছিল বুলি জনা যায়। এওঁ নিজে বৰাহ-বিষ্ণুৰ প্ৰশস্তি ৰচনা কৰি নাৰায়ণক নমস্কাৰ জনাইছে।^{৭৯} গোলাঘাটৰ দেওপানী অঞ্চলত কেইবাটাও প্ৰাচীন বিষ্ণুমূৰ্তি পোৱা গৈছে। প্ৰত্নতাত্ত্বিক কাশী নাথ দীক্ষিতৰ মতে সেইটো ৯ম শতিকাৰ। প্ৰাচীন অসমত

লক্ষ্মীনাৰায়ণৰ পূজাও আছিল বুলি ড° বৰুৱাদেৱে অনুমান কৰে। *কালিকা পুৰাণ*ৰ ৮১/৭৫ অধ্যায়ৰ পৰা জনা যায় যে মণিকূট নামে ঠাইত হয়গ্ৰীৱ পীঠ আছে, ইয়াত বিষ্ণুৰ হয়গ্ৰীৱ ৰূপৰ পূজা হয়। বৌদ্ধ-তন্ত্ৰতো হয়গ্ৰীৱ দেৱতাৰ উল্লেখ আছে। বৌদ্ধ ভূটীয়াসকলে মহামুনি বুলি এই দেৱতাৰ পূজা কৰে। এয়েই হাজোৰ হয়গ্ৰীৱ মাধৱ মন্দিৰ।

শৈৱ, শাক্ত আদি ধৰ্মৰ তুলনাত প্ৰাচীন অসমত বৌদ্ধ ধৰ্মৰ প্ৰচাৰ বহু পিচতহে হয়। কাশ্মীৰৰ কবি কল্হণৰ ৰাজতৰঙ্গিণী নামৰ পুথিত আছে যে কাশ্মীৰৰ ৰাজপুত্ৰ মেঘবাহনে কামৰূপৰ ৰজাৰ কন্যা অমৃতপ্ৰভাক বিয়া কৰাইছিল। কন্যাৰ লগত ৰাজগুৰু তিব্বতীয় বৌদ্ধ পণ্ডিত লো স্কনপাক পঠোৱা হৈছিল। মেঘবাহনৰ সম্ভাৱ্য কাল খ্ৰিষ্টীয় ৬ষ্ঠ শতিকা। ইয়াৰ পৰা বুজা যায় যে ৬ষ্ঠ শতিকাৰ অসমত বৌদ্ধ ধৰ্মৰ অস্তিত্ব আছিল। অমৃতপ্ৰভাৰ পিতৃ ৰজাজন কোন আছিল সঠিকভাৱে নিৰ্ণীত হোৱা নাই যদিও তেওঁ যে বৌদ্ধ ধৰ্মৰ পৃষ্ঠপোষকতা কৰিছিল সেইটো অনুমান কৰিব পাৰি। ৭ম শতিকাৰ ভাস্কৰৱৰ্মাৰ লিপিত 'ধৰ্ম' আৰু ১০ম-১১ম শতিকাৰ ৰজা ইন্দ্ৰপালৰ লিপিত 'তথাগত' শব্দ দুটা আছে। কিন্তু তাৰ বাহিৰে সেই সময়ত বৌদ্ধধৰ্মৰ প্ৰভাৱৰ বিষয়ে লিপি কেইখনৰ পৰা একো জানিব নোৱাৰি। ভাস্কৰৱৰ্মাৰ ৰাজত্ব কালতে অসমলৈ অহা চীনদেশীয় বৌদ্ধ পণ্ডিত হিউৱেন চাঙেও লিখি থৈ গৈছে যে সেই সময়ত কামৰূপ দেশত বৌদ্ধ ধৰ্মৰ কোনো প্ৰভাৱ নাছিল। এই দেশত তেওঁ এটাও বৌদ্ধ সঙ্ঘাৰাম দেখা নাছিল। ড° কাকতি আদি পণ্ডিতসকলে অনুমান কৰে যে সেই সময়ত বৌদ্ধ ধৰ্মৰ বিশেষ প্ৰভাৱ নাথাকিলেও গোপনীয়ভাৱে হয়তো ইয়াত কিছু প্ৰচলন আছিল। পিচৰ যুগত বৌদ্ধ ধৰ্মই কিছু প্ৰসাৰ লাভ কৰিছিল বুলি লামা তাৰনাথৰ বৌদ্ধ ধৰ্মৰ ইতিহাসৰ পৰা জনা যায়। তেওঁৰ মতে, ধীতিকা নামৰ এজন বৌদ্ধ গুৰুৱে কামৰূপৰ সূৰ্য উপাসকসকলক বৌদ্ধ ধৰ্মত দীক্ষিত কৰাইছিল, আৰু অশ্বভৱ নামৰ এজন বৌদ্ধ ভিক্ষুৱে মহাযান মত প্ৰচাৰ কৰিছিল।

৭ম শতিকাৰ পিছৰ ফালৰ পৰাই বৌদ্ধধৰ্মত ধৰ্মত তন্ত্ৰ, মন্ত্ৰ আদিৰ প্ৰভাৱ পৰাৰ ফলত ইয়াৰ পৰা মন্ত্ৰযান, তন্ত্ৰযান, বজ্জয়ান, কালচক্ৰযান, সহজয়ান আদি পন্থাৰ সৃষ্টি হয়। প্ৰাচীন কামৰূপত থলুৱা লোকৰ মাজত আগৰে পৰা মন্ত্ৰ, ভেঙ্কিৰাজী আদি আছিল, শাক্ত তাত্ত্বিকতাৰ প্ৰভাৱো আগৰে পৰা আছিল। এইবোৰে বৌদ্ধ ধৰ্মৰ ওপৰত প্ৰভাৱ বিস্তাৰ কৰে। ফলত তাত্ত্বিক বৌদ্ধ ধৰ্মই

খ্ৰীষ্টীয় ৭ম-৮ম শতিকাৰ কামৰূপ অসমত প্ৰভাৱ বিস্তাৰ কৰিবলৈ বিশেষ সুবিধা পায়। সেই সময়ত অসম শক্তি আৰু বৌদ্ধ তান্ত্ৰিক মতৰ এটা প্ৰধান কেন্দ্ৰ হৈ পৰিছিল। বৌদ্ধ সিদ্ধাচাৰ্যসকলৰ ভিতৰত মীননাথ, সৰহপাদ, লুইপাদ, নাগাৰ্জুন আদি প্ৰাচীন কামৰূপৰে লোক আছিল বুলি পণ্ডিতসকলে মত প্ৰকাশ কৰে। তন্ত্ৰ-মন্ত্ৰৰ যোগেদি যেতিয়া হিন্দু ধৰ্ম আৰু হিন্দু দেৱ-দেৱীৰ মাজতো সমন্বয় ঘটিিল, ফলত বহুতো হিন্দু দেৱ-দেৱী বৌদ্ধসকলে আৰু বৌদ্ধ দেৱ-দেৱী হিন্দুসকলে নিজৰ বুলি গ্ৰহণ কৰিলে। হাজোৰ হয়গ্ৰীৱ মাধৱ, গুৱাহাটীৰ উগ্ৰতাৰা, জনাৰ্দন আদি দেৱ-দেৱী মূলতঃ বৌদ্ধসকলৰ আছিল বুলি পণ্ডিতসকলে কব খোজে। প্ৰাচীন ৰজাসকলৰ ভিতৰত ভাস্কৰৱৰ্মাই বৌদ্ধ পণ্ডিত হিউৱেন চাঙক নিজ দেশলৈ আনি যথেষ্ট আদৰ-সাদৰ কৰিছিল। ৰায় বাহাদুৰ কনকলাল বৰুৱাদেৱৰ মতে ১০ম-১১শ শতিকাৰ ৰজা ৰত্নপাল আৰু তেওঁৰ পিচৰ ৰজাসকল বৌদ্ধ ধৰ্মৰ প্ৰতি আকৃষ্ট হৈছিল। অৱশ্যে তেওঁলোকে শৈৱ ধৰ্মৰো পৃষ্ঠপোষকতা কৰিছিল।

প্ৰাচীন অসমত কেৱল ব্ৰাহ্মণ্য হিন্দু ধৰ্ম আৰু বৌদ্ধ ধৰ্মই চলিছিল বুলিলে আধৰুৱা হব। কাৰণ প্ৰাচীন অসমৰ খিলঞ্জীয়া আধিবাসী আৰ্যভিন্ন লোকসকলৰো নিজা নিজা ধৰ্মীয় ৰীতি-নীতি আদি আছিল। তাৰে কিছু হিন্দু ধৰ্মত সোমায় আৰু আৰ্য লোকসকলৰ ধৰ্মৰ কিছু ৰীতি-নীতি আৰ্যভিন্ন লোকসকলৰ ধৰ্মত সোমায়। ড° কাকতিদেৱেও *পুৰণি কামৰূপৰ ধৰ্মৰ ধাৰা* নামৰ পুথিত কৈছে, “এতিয়া যেনেকৈ পৰ্বতীয়া অহিন্দু জাতিবোৰৰ ভিতৰত নানান স্থানীয় কৌলিক ধৰ্ম চলি আছে, তেতিয়াও (অৰ্থাৎ হিন্দু ধৰ্মৰ প্ৰচলনৰ আগতে) সেইবোৰ ধৰ্মই অধিবাসীসকলৰ মাজত চলিছিল।” তেখেতে প্ৰাচীন অসমৰ কামৰূপ, প্ৰাগজ্যোতিষপুৰ, কামাখ্যা আদি নামৰ বিষয়ে আলোচনা কৰি দেখুৱাইছে যে মূলতঃ এই শব্দবোৰ অষ্ট্ৰিক ভাষাৰ কিছুমান শব্দৰ পৰা সৃষ্টি হৈছে। অষ্ট্ৰিক ভাষাৰ শব্দৰ লগত ধ্বনিসাম্যৰ ফলতে এই শব্দকেইটা সংস্কৃত শব্দৰূপে সৃষ্টি হৈছে। উদাহৰণ স্বৰূপে কামাখ্যা শব্দটো কামোইত, খ্মোচ আদি কেইটামান অষ্ট্ৰিক শব্দৰ সাদৃশ্যত সৃষ্টি হৈছে। সেই শব্দবোৰে ভূত-প্ৰেত, মৰা শ, শ্মশান আদি বুজায়। তেখেতে লিখিছে “*যোগিনীতন্ত্ৰতো* কামাখ্যা দেৱীৰ উদ্ভৱৰ যি বিৱৰণ আছে (১/১৫) *জ্ঞান পৰা* এই দেশৰ প্ৰেত পূজা, শ্মশান পূজা আদিৰ খ্যাতিয়েই ওলায়।”^{২০১}

আদিম অধিবাসীসকলে গছ, সাপ, ভূত, প্ৰেতাছা, পূৰ্বপুৰুষ, অপদেৱতা, চন্দ্ৰ, সূৰ্য, মেঘ, বিজুলী, শস্যৰ দেৱতা আদিৰ পূজা কৰিছিল। খাচী, জয়ন্তীয়াসকলে সৰ্পৰ ৰূপত থেলন দেৱতাৰ পূজা কৰিছিল। ইয়াৰ বাবে নৰৰক্তৰো আৱশ্যক বুলি তেওঁলোকে বিশ্বাস কৰিছিল। অন্যান্য জনজাতিৰ বেছি ভাগেই শিৱ বা শিৱৰ অনুৰূপ কোনো দেৱতাৰ পূজা কৰিছিল। বড়ো-কছাৰীসকলে বাথৌ-ব্ৰাইৰ (শিৱ-পাৰ্বতীৰ) পূজা কৰিছিল, সিজু গছেই শিৱ-পাৰ্বতীৰ প্ৰতীক আছিল। অৰ্থাৎ সিজু গছকে পূজা কৰিছিল। আগতেই উল্লেখ কৰা হৈছে যে ব্ৰাহ্মণ্য ধৰ্মই প্ৰাধান্য পোৱাৰ আগতে কামাখ্যাত গাৰোসকলে কুকুৰা, গাহৰি আদিৰে নিজা নিয়মত পূজা কৰিছিল। কপিলী উপত্যকাৰ প্ৰাচীন বড়ো ৰজাসকলে চৈধ্যজন দেৱতাৰ পূজা কৰিছিল, তাৰে প্ৰধানজন 'বুঢ়া দেৱতা'ৰ শিং থকা বুলি তেওঁলোকে বিশ্বাস কৰিছিল।^{১০} বঙ্গদেশ, চিলেট আৰু নামনি অসমৰ ঠাই বিশেষে চলি থকা মনসা বা মাইৰ পূজাই এইবোৰ ঠাইত প্ৰাচীন কালত সৰ্প পূজাৰ বহল প্ৰচলন থকাটোকে সূচায় বুলি কনকলাল বৰুৱাদেৱে মত প্ৰকাশ কৰে।^{১১}

এই প্ৰাচীন অধিবাসীসকলে তেওঁলোকৰ পূজাত হাঁহ, পাৰ, কুকুৰা, গাহৰি, আন কি কুকুৰ, ম'হ আদিও বলি দিছিল। তাৰ উপৰি মদো দিছিল। খাচী, নগা, দেউৰী, কাৰ্বি আদি জনজাতীয়সকলৰ পূজাত নৰবলিও দিয়া হৈছিল। প্ৰাচীন অসমৰ কামাখ্যা, তাম্ৰেশ্বৰী আদি মন্দিৰত যি নৰবলি হৈছিল সেয়া এই জনজাতিসকলৰ ধৰ্মীয় প্ৰভাৱৰ ফল বুলি পণ্ডিতসকলে ভাবে। পূজাৰ লগত নৃত্য, গীত, বাদ্য আদিৰো প্ৰচলন আছিল। নানা দেৱতা, ভূত-প্ৰেত আদিত বিশ্বাস কৰিলেও বেছি ভাগ প্ৰাচীন অধিবাসীয়েই এটা অদৃশ্য পৰম শক্তি থকা বুলি বিশ্বাস কৰিছিল। মুঠতে আৰ্য-অনাৰ্যৰ সংমিশ্ৰণৰ পৰা যি ধৰ্মৰ অভ্যুদয় হ'ল তাক যোগিনী তন্ত্ৰৰ গ্ৰন্থকাৰে কৈৰাতজ ধৰ্ম বুলিছে, "সিদ্ধেশি যোগিনী পীঠে ধৰ্মঃ কৈৰাতজঃ মতঃ।"^{১২}

ইয়াৰ উপৰি গণেশ, কাৰ্ত্তিকেয়, ইন্দ্ৰ, অগ্নি, কুৱেৰ আদিৰ মূৰ্তি প্ৰাচীন অসমৰ বিভিন্ন ঠাইত আছিল। কিন্তু সেইসকল দেৱতাৰ ভক্তৰ সংখ্যা সম্ভৱতঃ খুব বেছি নাছিল। প্ৰাচীন অসমত সূৰ্যৰ মন্দিৰ থকাৰ প্ৰমাণ পোৱা যায়। মাৰ্কণ্ডেয় পুৰাণমতে কামৰূপ সূৰ্য পূজাৰ কাৰণে প্ৰসিদ্ধ আছিল (১০৯/৫৫-৫৮)। তেজপুৰৰ দ পৰ্বতীয়া, মঙ্গলদৈ, পাণ্ডু, শদিয়া আদি ঠাইত পোৱা সূৰ্য মূৰ্তি আৰু গোৱালপাৰাৰ ত্ৰীসূৰ্য পাহাৰৰ ভগ্নাৱশেষবোৰেও প্ৰাচীন অসমত সূৰ্য পূজা, সূৰ্য উপাসক থকাটোকে সূচায়। প্ৰাচীন অসমত সম্ভৱতঃ বলভদ্ৰৰ পূজাও কোনো কোনোৱে কৰিছিল, কাৰণ ৰজা সুৰেন্দ্ৰ বৰ্মাৰ উমাচল লিপিত আছে—

“ভগৱতঃ বলভদ্ৰ স্বামিনায় ইদং গুহং”, অৰ্থাৎ সেই গুহা বা মন্দিৰটো ভগৱান বলভদ্ৰৰ মন্দিৰ।

প্ৰাচীন অসমৰ শিক্ষাৰ বিষয়ে আলোচনা কৰিবলৈ ল'লে প্ৰথমতে চকুত পৰে যে পুথিগত বিদ্যা শিক্ষা প্ৰধানতঃ ব্ৰাহ্মণ, কায়স্থ আদি উচ্চ বৰ্ণৰ লোকৰ মাজতে সীমাবদ্ধ আছিল। ৫ম শতিকাৰ বলৱৰ্মাৰ লিপিৰ পৰা জানিব পাৰি যে ব্ৰাহ্মণসকলে প্ৰাচীন ৰীতি অনুসৰি গুৰুগৃহত থাকি শিক্ষা লাভ কৰিছিল। শিক্ষা-গুৰুসকল ব্ৰাহ্মণ আছিল। ব্ৰাহ্মণ গুৰুৰ টোলত প্ৰধানকৈ ব্ৰাহ্মণ ছাত্ৰই শিক্ষা লাভ কৰিছিল যদিও কায়স্থ ছাত্ৰয়ো স্থান পাইছিল বুলি মহাপুৰুষ শঙ্কৰদেৱৰ জীৱন চৰিতৰ পৰা জনা যায়। তাৰ বাহিৰে অন্য জাতিৰ ছাত্ৰ থকাৰ বিষয়ে একো জনা নাযায়। প্ৰাচীন ভাৰতৰ গাৰ্গী, মৈত্ৰেয়ী আদি বিদুষী মহিলাৰ দৰে শিক্ষিতা মহিলা সেই কালৰ অসমত থকা বুলি জনা নেযায়। ছোৱালীক পুথিগত শিক্ষা দিয়াৰ কোনো নিয়ম নাছিল। কিন্তু ৰাণী বা অশ্বত্থপুৰৰ অন্যান্য, উচ্চ বংশৰ নাৰীসকলে ব্ৰাহ্মণ পাঠকৰ পৰা *ৰামায়ণ*, *মহাভাৰত*, *হৰগৌৰী সংবাদ* আদি পুথিৰ সোৱাদ লৈছিল। কথকতাৰ প্ৰচলন অতি প্ৰাচীন। অসমতো প্ৰাচীন কালত সাধাৰণ শ্ৰেণীৰ লোকে সমজুৱাভাৱে *ৰামায়ণ*, *মহাভাৰত* আদিৰ পাঠ শুনি বিভিন্ন ধৰণৰ জ্ঞান আহৰণ কৰিছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। ইয়াৰ ফলতে অনাখৰী কবিয়েও *গীতি-ৰামায়ণ*ৰ দৰে লৌকিক কাব্য ৰচনা কৰিব পাৰিছিল। অৱশ্যে ৰজা-মহাৰজাসকল অৱদ্বন্দ্বিতা হ'লেও বহু সময়ত শাস্ত্ৰাদিত পণ্ডিত আছিল। ১১শ শতিকাৰ আগ ভাগৰ ৰজা ইন্দ্ৰপালৰ লিপিৰ পৰা জনা যায় যে তেওঁ ব্যাকৰণ, মীমাংসা, ন্যায়, তন্ত্ৰ আদিত সুপণ্ডিত আছিল।

পাঠ্যক্ৰমৰ ভিতৰত বেদ, বেদাঙ্গ, পুৰাণ, ইতিহাস, দৰ্শন, অৰ্থশাস্ত্ৰ, কাব্য, অলঙ্কাৰ, ব্যাকৰণ আদিয়েই প্ৰধান। ১২শ শতিকাৰ ৰজা ধৰ্মপালৰ পুষ্পভদ্ৰা লিপিত উল্লিখিত ভাস্কৰ নামৰ ব্ৰাহ্মণজনে ঋতি, স্মৃতি, মীমাংসা দৰ্শন আদিত পাৰঙ্গত আছিল।^{১০} সেই সময়ত আয়ুৰ্বেদ, গন্ধৰ্ব বেদ আদিৰো চৰ্চা হৈছিল। অসম অতীজৰে পৰা জ্যোতিষ চৰ্চাৰ প্ৰখ্যাত কেন্দ্ৰ আছিল। কনকলাল বৰুৱা আদি পণ্ডিতেও মত প্ৰকাশ কৰিছে যে প্ৰাচীন কামৰূপ—অসম যে জ্যোতিষৰ চৰ্চাৰ কেন্দ্ৰ আছিল তাৰ প্ৰমাণ চিত্ৰাচল পৰ্বতত অৱস্থিত নৱগ্ৰহৰ মন্দিৰ। বৰুৱাদেৱৰ মতে প্ৰাচীন কালত জ্যোতিষ চৰ্চাৰ কাৰণে নৱগ্ৰহত মান-মন্দিৰ আছিল (observatory), প্ৰাগ্জ্যোতিষপুৰ নামৰ তাৎপৰ্যও তাতেই। *হস্তীবিদ্যাৰ্ণৱ*, *ঘোঁৰা*

নিদান আদি পশুৰ চিকিৎসা বিষয়ক পুথি আহোম যুগত ৰচিত হ'লেও সেইবোৰ পুথিয়েই প্ৰমাণ কৰে যে পশু-চিকিৎসাৰ চৰ্চাও অতি প্ৰাচীন কালৰ পৰাই এই দেশত আছিল।

সমাজত তিৰোতাৰ স্থান কেনে আছিল সেই বিষয়ে স্পষ্টভাৱে লিপিসমূহৰ পৰা একো জনা নেযায়। তথাপি আৰ্য হিন্দু সমাজত যে তিৰোতাৰ স্থান পুৰুষতকৈ তলত আছিল সেইটো অনুমান কৰিব পাৰি। লিপিসমূহত ৰাণী, ৰাজমাতা, ব্ৰাহ্মণৰ পত্নী আদিৰ উল্লেখ আছে, স্বামীৰ অনুগতা সহধৰ্মিণী হিচাপে, সন্তানৰ জন্মদাত্ৰী হিচাপেহে তেওঁলোকৰ পৰিচয়। তেওঁলোকৰ সুকীয়া অস্তিত্ব থকা যেন নেলাগে। ৰাজকাৰ্য পৰিচালনাত বা ৰজাক বুদ্ধি পৰামৰ্শ দিয়া বিষয়ত তেওঁলোকৰ কোনো উল্লেখযোগ্য ভূমিকা নাই। ৮ম-১২শ শতিকাৰ মাজত ৰচিত 'চৰ্যাপদ'ৰ এঠাইত (২ নং চৰ্যাত) আছে—

“সুসুৰা নিদ গেল বহুড়ী জাগঅ।” আৰু

“দিৱসই বহুড়ী কাড়ই ডৰে ভাঅ।” ইয়াত ‘সুসুৰা’!, ‘বহুড়ী’ এই শব্দ দুটা পাৰিভাষিক অৰ্থত ব্যৱহাৰ কৰিছে যদিও আৰু কথাখিনিৰ আধ্যাত্মিক অৰ্থ বেলেগ হ'লেও উক্ত সময়ৰ সামাজিক জীৱনৰ পৰা লোৱা এই উপমাৰ পৰা সমাজত তিৰোতাৰ স্থান কেনে আছিল সেইটো কিছু দূৰ বুজা যায়। বোৱাৰী বা তিৰোতা মানুহে ৰাতি দুপৰলৈ ঘৰুৱা কাম-বনত ব্যস্ত থাকিব লগীয়া হোৱা আৰু সমালোচনা, কটুবাক্য আদিৰ ভয়ত সদা সতৰ্ক হৈ থাকিব লগীয়া হৈছিল বুলি ভাবিব পাৰি। তিৰোতা মানুহে যে নৃত্য, গীত, বাদ্য আদিৰ চৰ্চা, কৰিছিল সেইটো প্ৰাচীন অসমৰ স্থাপত্য-ভাস্কৰ্যৰ অৱশেষবোৰৰ পৰা বুজিব পাৰি। মন্দিৰত নটী, দেৱদাসী আছিল। বনমালদেৱৰ তেজপুৰ তাম্ৰলিপিত আছে—

“বেশ্যাঙ্গনাভিৰিৰ নানাভৰণ-শোভিত...”

একেখন লিপিতে “দলুহাঙ্গনাভিৰিৰ সকলজন-মনোহাৰিণী” আৰু “নটীভিৰিৰ নৰ্ত্তক পুৰুষাক্ৰমণ সংৱৰ্দ্ধিতোৎকম্পা...” বুলিও আছে।^{১০} গতিকে অন্ততঃ ৯ম শতিকাৰ অসমত বেশ্যা, নটী, দলুহাঙ্গনা আছিল। দেৱদাসীকে দলুহাঙ্গনা বোলা হৈছে। প্ৰাচীন অসমত ‘নট’ নামৰ এটা সম্প্ৰদায় আছিল। ত্ৰয়োদশ-চতুৰ্দশ শতিকাৰ কবি হৰিবৰ বিপ্ৰৰ *বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ* নামৰ কাব্যৰ এঠাইত আছে—

“নটৰ ছৱালিৰ কিসৰ ৰাজ্যতাৰ।” আৰু

“যাৰ ঘৰে উৎসৱ তাহাৰ লগ লৈয়া।

নাচগীত যোগায়ে মাৰ্জলি গুটি বায়া।।”^{৪৫} গতিকে ইয়াৰ কিছু আগতেও নট সম্প্ৰদায় আছিল বুলি বুজিব পাৰি। এওঁলোকৰ ছোৱালীবোৰক শিৱ মন্দিৰৰ নটী বা দেৱদাসী কৰা হৈছিল।

আন হাতে কামাখ্যাৰ কুমাৰী পূজাও যথেষ্ট প্ৰাচীন বুলি *যোগিনী তন্ত্ৰ*ৰ পৰা জনা যায়।^{৪৬} মুঠতে তিৰোতাৰ স্বাধীন অস্তিত্ব থকাৰ কোনো নিৰ্ভৰযোগ্য প্ৰমাণ পোৱা নাযায়। বৈদ্যদেৱৰ কমৌলী লিপিৰ পৰা জানিব পাৰি যে লিপিক্তৰ প্ৰশস্তি ৰচনাত ব্ৰাহ্মণ মনোৰ্থৰ লগতে তেওঁৰ পত্নী পদ্মাৰ নামো উল্লিখিত হৈছে। তাৰ পৰা বুজিব পাৰি যে পদ্মা বিদুষী নাৰী আছিল। কিন্তু সেইটো নিয়ম নহৈ ব্যতিক্ৰমহে আছিল বুলিব পাৰি।

জনজাতীয়সকলৰ মাজত, বিশেষকৈ খাচী আৰু গাৰো সমাজত কিন্তু তিৰোতাৰ আসন পুৰুষৰ সমানেই বা পুৰুষৰ ওপৰতহে আছিল। তেওঁলোকৰ মাজত চলা মাতৃ-প্ৰধান সমাজ ব্যৱস্থাৰ কিছু প্ৰভাৱ আৰ্য হিন্দুসকলৰ ওপৰতো পৰিছিল। মাতৃ ৰূপত কামাখ্যা, ত্ৰিপুৰাসুন্দৰী আদি দেৱীৰ পূজা তাৰেই ফল বুলি পণ্ডিতসকলে কয়।

প্ৰাচীন অসমত তিৰোতাৰ মাজত পৰ্দা প্ৰথা নাছিল। মুচলমানসকলৰ আগমনৰ পিছৰ পৰাহে সমাজত পৰ্দা-প্ৰথা সোমায়। আহোম যুগত উচ্চ বংশৰ তিৰোতাই বৰজাপি ব্যৱহাৰ কৰাটোও পৰোক্ষভাৱে মোগল প্ৰভাৱ যেন লাগে।

সমাজ জীৱনত বিবাহ এক গুৰুত্বপূৰ্ণ অনুষ্ঠান। হিন্দু শাস্ত্ৰ মতে ব্ৰাহ্মণসকলে ব্ৰাহ্ম, দৈৱ, আৰ্য আৰু প্ৰাজাপত্য মতে, ক্ষত্ৰিয়সকলে ৰাক্ষস, পৈশাচ আৰু গান্ধৰ্ব প্ৰথাৰে আৰু বৈশ্যসকলে আসুৰ প্ৰথাৰে বিবাহ কৰোৱাটো ৰীতি আছিল। প্ৰাচীন অসমৰ ব্ৰাহ্মণসকলৰ মাজতো এই ৰীতিয়েই চলিছিল। তদুপৰি তেওঁলোকৰ মাজত এবাৰ বাল্য বিবাহ, তাৰ পিছত যৌৱনপ্ৰাপ্ত হোৱাত দ্বিতীয়বাৰ আৰু সন্তান জন্মৰ সময়ত পুংসৱন নামেৰে তৃতীয়বাৰ বিবাহ অনুষ্ঠিত হৈছিল। প্ৰাজাপত্য ৰীতিৰ প্ৰচলনেই বেছি আছিল। অৱ্ৰাহ্মণ আৰু আৰ্যভিন্ন জাতিৰ মাজত আসুৰ, ৰাক্ষস আৰু পৈশাচ ৰীতিৰ প্ৰচলন আছিল। বনমালাৰ্মাৰ তেজপুৰ লিপিত আছে, “.....পত্নী সন্ধ্যাকিৰাভিধা ব্ৰাহ্মণ্য বিধিনা সম্যক পৰিণীতা...”^{৪৭} ইয়াত ভিজ্জট নামৰ ব্ৰাহ্মণজনৰ সন্ধ্যাকিৰাৰ লগত ব্ৰাহ্মমতে বিবাহ সম্পাদিত হোৱা বুলি বৰ্ণনা কৰিছে। আকৌ পুষ্পভদ্ৰা লিপিত আছে, “তস্য্যঃ কৰেণ চ কৰং জগৃহে গৃহস্থধৰ্ম্যায় কৰ্ণধৰং ধৃতকৰ্ণেন।”^{৪৮} ইয়াত ভাস্কৰ আৰু জীৱাৰ বিয়া বৰে কন্যাৰ পাণি গ্ৰহণ কৰি কৰাৰ উল্লেখ আছে।

ব্ৰাহ্মণ, কায়স্থৰ মাজত কন্যা পুষ্পিতা হোৱাৰ আগতে বিবাহ (আগ বিয়া) সম্পন্ন কৰাৰ ৰীতি আছিল। অৰ্থাৎ বাল্য বিবাহ চলিছিল। ল'ৰাৰ উপযুক্ত বয়সতে বিয়া হৈছিল যেন বোধ হয়, কাৰণ বলৰমাৰ লিপিৰ পৰা জানিব পাৰি ব্ৰাহ্মণৰ ল'ৰাই গুৰু-গৃহত শিক্ষা সমাপ্ত কৰি সমাৱৰ্তনৰ পিচত বিয়া কৰাইছিল। স্নাতক ব্ৰাহ্মণৰ বিবাহত ৰজাই মাটি-বৃত্তি দান কৰি গৃহস্থী জীৱনৰ কাৰণে সংস্থাপিত কৰি দিছিল।^{১৯} ব্ৰাহ্মণ, কায়স্থৰ বাহিৰে অন্য জাতিৰ মাজত বিধবা বিবাহ, অসবৰ্ণ বিবাহ চলিছিল।

বিবাহত পণ প্ৰথা থকাৰ কোনো উল্লেখ প্ৰাচীন নিদৰ্শনবোৰত নাই। সাধাৰণভাৱে এখন গৃহস্থী পাতিবলৈ আৱশ্যক হোৱা বস্তু-বাহানি যৌতুক হিচাপে দিয়াৰ নিয়ম থকাটোৱেই সম্ভৱ। ৰাজতৰঙ্গিণী পুথিত উল্লেখ থকামতে ৰাজকুমাৰী অমৃতপ্ৰভাৰ লগত এজন বৌদ্ধ ভিক্ষুও পঠিওৱা হৈছিল। ইয়াৰ পৰা অনুমান হয় যে যৌতুকত বস্তু-বাহানিৰ লগতে লোকজনো দিয়া হৈছিল। আৰ্যভিন্ন জাতিৰ বিবাহত ম'হ, মেঠোন আদি দিয়াৰ নিয়ম আছিল। কোনোটো সম্প্ৰদায়ত হয়তো দৰা পক্ষৰ পৰা, কোনোটো সম্প্ৰদায়ত কন্যা পক্ষৰ পৰা দিয়া হৈছিল। কোনো কোনো জনজাতিৰ মাজত বিবাহৰ পূৰ্বে দৰাই কন্যাৰ পিতৃৰ ঘৰত গাৰে খাটি দিয়াৰ নিয়ম আছিল। ইয়াৰ পৰাই পিচলৈ অসমীয়া সমাজত চপনীয়া প্ৰথাৰ সৃষ্টি হয় বুলি ড° চৌধুৰীদেৱে কব খোজে। সেইদৰে ছোৱালীৰ গা-ধন দি বিয়া কৰোৱাৰ যি ৰীতি মধ্যযুগীয়া অসমীয়া সমাজত আছিল, সেইটোও জনজাতীয় প্ৰভাৱ। পণ্ডিতসকলৰ মতে অসমীয়া বিবাহ-পদ্ধতি বহু পৰিমাণে জনজাতীয় প্ৰভাৱযুক্ত। পিচৰ যুগৰ অসমীয়া বিয়াৰ জোৰোণ দিয়া, গাঠিয়ন খুন্দা, সুবাগ-তোলা, দৈয়ন-দিয়া, খোবা-খুবী আদিত বহু পৰিমাণে আৰ্যপূৰ্ব জাতিসমূহৰ ৰীতি-নীতিৰ প্ৰভাৱ আছে বুলি পণ্ডিতসকলে অনুমান কৰে। মধ্য যুগীয়া অসমীয়া বিয়াত বিয়ানাম গোৱাৰ ৰীতি সৌ সিদিনালৈকে চলি আছিল। এই ৰীতি কিমান পুৰণি সঠিককৈ কব নোৱাৰিলেও প্ৰাচীন সংস্কৃত সাহিত্যত আৰু পিচৰ প্ৰাকৃত সাহিত্যত ইয়াৰ উল্লেখ আছে।^{২০}

খ্ৰিঃ পূঃ ৪ৰ্থ শতিকাৰ ভাৰতত বহু-বিবাহ প্ৰথা আছিল। অসমৰ উপজাতিসমূহৰ কোনো কোনো সম্প্ৰদায়ৰ মাজত এই প্ৰথা আছিল বুলি পণ্ডিতসকলে কয়। প্ৰাচীন অসমৰ বৰ্ণ হিন্দু সমাজত ইয়াৰ প্ৰচলন আছিল নে নাই সঠিককৈ কব নোৱাৰি। আন কি প্ৰাচীন ভূমিদান লিপিবোৰতো ৰজাসকলৰ একো গৰাকী

মহিষীৰহে নাম আছে। বহু পত্নী থকাৰ উল্লেখ পোৱা নেযায়। অৱশ্যে ভাস্কৰৰমাৰ দৰে কোনো কোনো ৰজাৰ ৰক্ষিতা বা উপপত্নী হয়তো আছিল। পুৰণি অসমীয়া সাধুকথাত ‘এজন ৰজাৰ (বা সদাগৰৰ) দুজনী (বা তিনিজনী) ৰাণী (বা ঘৈণীয়েক) আছিল’— এনে ধৰণৰ কথা পোৱা যায়। মুঠতে কব পাৰি যে প্ৰাচীন অসমত পুৰুষৰ বহু-পত্নী-বিবাহ থাকিলেও তিৰোতাৰ বহু-পতি-বিবাহৰ কোনো নিদৰ্শন নাই।

সতী-যোৱা প্ৰথা প্ৰাচীন অসমত একেবাৰে নথকা নহয়। বেদ আৰু মনুসংহিতাত সতী যোৱা প্ৰথাৰ উল্লেখ নাই। কৌটিল্যই সতী-যোৱা প্ৰথা হেয় আৰু দণ্ডনীয় বুলি উল্লেখ কৰিছে। গ্ৰীক পণ্ডিত এৰিষ্টোটলেও প্ৰাচীন ভাৰতত সতী-যোৱা প্ৰথা আছিল বুলি উল্লেখ কৰিছে। *যোগিনীতন্ত্ৰ*তো সতী-যোৱা প্ৰথাৰ বিষয়ে আছে। প্ৰাচীন অসমৰ এজন ৰজাৰ ৰক্ষিতাই সতী-যোৱা বুলি *কাব্যমালা* গ্ৰন্থৰ তৃতীয় খণ্ডৰ ৭৭ পৃষ্ঠাত আছে। দামোদৰ গুপ্তৰ *কুটনীমতম* গ্ৰন্থতো ইয়াৰ উল্লেখ আছে।^{৭১} এই দুই গ্ৰন্থৰ উল্লেখ কৰি ড° বৰুৱাদেৱে উক্ত ৰজাজন ভাস্কৰৰমা বুলি মত প্ৰকাশ কৰিছে। ড° চৌধুৰীদেৱে কিন্তু ৰজাজনৰ নাম ভাস্কৰৰমা বুলি কোৱা নাই। সি যিয়েই নহওক, সতী-যোৱা প্ৰথা যে প্ৰাচীন অসমত একেবাৰে নোহোৱা নহয় সেইটো ইয়াৰ পৰাই অনুমান কৰিব পাৰি। অসতী বা বহু সন্তানৱতী তিৰোতাৰ সতী যোৱাৰ নিয়ম নাছিল।

বিবাহৰ দৰে জন্ম আৰু মৃত্যুও সামাজিক জীৱনৰ দুটা গুৰুত্বপূৰ্ণ ঘটনা। শিশুৰ জন্মৰ লগত কিছুমান আচাৰ-অনুষ্ঠান প্ৰাচীন কালতো আছিল বুলি ধৰিব পাৰি। অন্নপ্ৰাশন, চূড়াকৰণ আদি ব্ৰাহ্মণ সমাজত আছিল। সাধাৰণ লোকৰ মাজতো নানা লোকাচাৰ আছিল। শিশুক জন্মৰ পিচত প্ৰথম বাজলৈ অনাৰ দিনা শিশুক এটা শিলেৰে সামান্যভাৱে খুন্দিওৱা হয়। ড° বৰুৱাদেৱৰ মতে এইটো জনজাতীয় প্ৰভাৱ।

সেইদৰে মৃত্যুৰ লগত জড়িত আচাৰ-অনুষ্ঠানো বহুত আছিল। আৰ্য হিন্দুসকলৰ মাজত শাস্ত্ৰীয় বিধিমতে শ্ৰাদ্ধাদি অনুষ্ঠিত হৈছিল। খাচীসকলৰ মাজত শৱ দাহ কৰা আৰু মৃতকৰ অস্থি পৰিয়ালৰ নিজা সমাধিস্থলত পুতি থোৱাৰ নিয়ম আছিল। তাৰ ওপৰত একোটা শিলৰ স্তম্ভ পোতা হৈছিল। মৃতকজনে পুৰুষ হ’লে থিয় শিল আৰু তিৰোতা হ’লে পথালি শিল পোতাৰ নিয়ম আছিল। “তাৰে অনুকৰণত অসমীয়া হিন্দুৱে বাঁহ বা জেং এডালকে পোতে।” “হিন্দু ধৰ্মত মৃতকৰ

উদ্দেশ্যে পিণ্ড দানৰ যি বিধি-ব্যৱস্থা আছে সিও অষ্টিকৰ পৰা অহা বুলি কোনো কোনো পণ্ডিতে অনুমান কৰে।^{৭২}

উৎসৱ-অনুষ্ঠান বুলিবলৈ প্ৰাচীন অসমত শৈৱ আৰু শাক্ত ধৰ্মৰ আনুষঙ্গিক পূজা-পাৰ্বণ আদি অনুষ্ঠিত হৈছিল। শৈৱ ধৰ্ম অতি প্ৰাচীন, গতিকে তাৰ লগত শিৱ-চতুৰ্দশীৰ ব্ৰত আৰু পূজাও বহু প্ৰাচীন বুলি ধৰিব পাৰি। পুষ্যাভিষেক, ত্ৰিনাথৰ পূজা আদিও প্ৰাচীন কালত আছিল যেন অনুমান হয়। ৯ম শতিকাৰ বনমালদেৱৰ লিপিত দেৱী পূজাৰ উল্লেখ আছে। *যোগিনীতন্ত্ৰ*ত (পূৰ্বাৰ্ধ, ৫, ৬১-৭৩) শ্মশান-কালীৰ পূজা, *কালিকা পুৰাণ*ত (৬৩ তম অধ্যায়) ত্ৰিপুৰাবালাৰ পূজা, কুমাৰী পূজাৰ বিষয়ে আছে। প্ৰাচীন অসমত অগ্নিহোত্ৰ, বৈতানিক আদিও অনুষ্ঠিত হৈছিল। *কালিকা পুৰাণ* আৰু *যোগিনীতন্ত্ৰ*ত মদন পূজাৰ বিষয়েও পোৱা যায়। শৰৰোৎসৱ নামৰ এটা উৎসৱৰ কথাও *কালিকা পুৰাণ*ত আছে। দেৱী পূজাৰ দৰ্শমীৰ দিনা এই উৎসৱ হৈছিল। ১০ম শতিকাৰ বলৰমাৰ লিপিত শক্ৰেগুথান উৎসৱৰ উল্লেখ আছে।^{৭৩} *দেৱী পুৰাণ*ত ইয়াক ইন্দ্ৰধ্বজ উৎসৱ বুলিছে।

কৃষিজীৱী লোকসকলৰ মাজত আধুনিক যুগত যেনেকৈ কৃষি চপোৱা আদিক লৈ নানা উৎসৱ হয় তেনেকৈ প্ৰাচীন কালতো হৈছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। বৰ্তমান অসমীয়া সমাজৰ আদৰৰ উৎসৱ বিহুৰ সম পৰ্যায়ৰ কোনো উৎসৱ সেই দিনত আছিল নে নাই সঠিককৈ ক'ব নোৱাৰি যদিও উপৰোক্ত বলৰমাৰ লিপিত বিষ্ণুৱৎ তিথিৰ উল্লেখ আছে। আকৌ ১১শ শতিকাৰ ৰত্নপালৰ বৰগাওঁ লিপিত বিষ্ণুপদী সংক্ৰান্তিৰ উল্লেখ আছে।^{৭৪} প্ৰজাই আনন্দ-উৎসৱেৰে পালন কৰা দিনটোকে ৰজাই দান-ধৰ্মৰ কাৰণে বাছি লোৱা ঈশ্বৰ।

সেইদৰে প্ৰাচীন কালত নানা ধৰণৰ খেল-ধেমালি আদিও আছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। *কালিকা পুৰাণ*ত পুতলা খেলৰ উল্লেখ আছে, “পঞ্চালিকা বিহাৰাদ্যোঃ শিশুনাং কৌতুকৈস্তথা।”^{৭৫} দবা খেলৰ উল্লেখ ‘চৰ্যাপদ’ত আছে।^{৭৬} কড়ি, পাশা আদি খেলৰ উল্লেখ প্ৰাচীন সাহিত্যৰ বহু ঠাইতে আছে। ভট্টাণ্ডটি, চিলা উৰোৱা, মল্লযুদ্ধ আদিও আছিল যেন বোধ হয়। চিকাৰ কৰাটো ৰজা-মহাৰজাসকলৰ প্ৰিয় খেল আছিল। ভাস্কৰমাৰ ‘ডুবি’ লিপিত হৰিণ চিকাৰৰ উল্লেখ আছে—

“ধৰ্ম্ম : প্ৰস্বলিত : কলিং পুনৰপি প্ৰ(ধবং)

স্য সংৰোপিতঃ কীৰ্ত্তিৰ্দ্ৰজ্ঞনরাণ্ডৰোদৰগতা

মুক্ত্বা মৃগীৰোজ্জ্বিতা।” “যাৰ দ্বাৰা কলিযুগ ধ্বংস কৰি ধৰ্ম পুনঃ সংস্থাপিত কৰা হৈছিল, হৰিণক জালৰ পৰা মুকলি কৰি এৰি দিয়াৰ দৰে অসং মানুহৰ মুঠিৰ পৰা কীৰ্তিমুক্ত কৰি প্ৰসাৰিত হৈছিল...”।^{৭৭} ১১শ শতিকাৰ ৰজা ইন্দ্ৰপালৰ গুৱাহাটী লিপিৰ পৰা জনা যায় যে তেওঁৰ পিতৃ পুৰন্দৰপাল ‘মৃগয়াৰসিক’ আছিল।^{৭৮}

তন্ত্ৰ-মন্ত্ৰ, ইন্দ্ৰজাল, হৰণলুকী আদিৰ প্ৰাদুৰ্ভাৱ প্ৰাচীন অসমত বৰ বেছি আছিল। শঙ্কৰ-দিগ্বিজয় নামৰ পুথিত আছে যে ৯ম শতিকাত অদ্বৈতবাদৰ গুৰু শঙ্কৰাচাৰ্য কামৰূপ দেশলৈ আহোঁতে কামৰূপৰ শাক্ত পণ্ডিত অভিনৱ গুপ্তৰ লগত তৰ্ক-যুদ্ধ হয়। তৰ্কত অভিনৱ গুপ্তৰ পৰাজয় ঘটে। তেতিয়া, তেওঁ অভিচাৰ মন্ত্ৰেৰে অৰ্থাৎ কুমন্ত্ৰেৰে শঙ্কৰাচাৰ্যৰ দেহত ভগন্দৰ ৰোগ জন্মায়।^{৭৯} কাহিনীটোৰ সত্যাসত্যৰ প্ৰশ্নলৈ নগৈও কব পাৰি যে সেই সময়ৰ অসমত মন্ত্ৰৰ প্ৰভাৱ বৰ বেছি আছিল। তিব্বতীয় বৌদ্ধ পণ্ডিত তাৰনাথৰ বৌদ্ধ ধৰ্মৰ বুৰঞ্জীতো আছে যে প্ৰাচীন কামৰূপত অশ্বভৰ নামৰ বৌদ্ধ পণ্ডিত এজনে ধৰ্মালোচনা কৰি থকা অৱস্থাতে সাপে খুটি কেবাজনো ভক্তক মাৰে, কিন্তু তেওঁলোকৰ গাত মন্ত্ৰপুত পানী ছটিয়াই দিয়াত আকৌ জীয়াই উঠে।^{৮০} অগ্নি, সাপ আদিৰ পূজা কৰাৰ উপৰি দেও-ভূত দূৰ কৰা, অমঙ্গল আঁতৰোৱা; সতীত্ব আৰু সততাৰ পৰীক্ষা কৰা, শাওপাত দিয়া, ৰোগ নিৰাময় কৰা আদিত অগ্নিৰ ব্যৱহাৰ;^{৮১} সাপৰ বিষ জৰা, শত্ৰু ধ্বংস কৰা, প্ৰিয়জনক বশ কৰা, দেও-ভূত দূৰ কৰা আদিত মন্ত্ৰৰ বিশেষ ব্যৱহাৰ আছিল।

সংস্কাৰ, লোক-বিশ্বাস আদি সকলো যুগৰ সকলো মানুহৰে থাকে। প্ৰাচীন অসমৰ লোকসকলৰ মাজতো যে নানা সংস্কাৰ আৰু লোকবিশ্বাস আদি আছিল সেইটো সহজেই অনুমান কৰিব পাৰি। জন্মৰ পৰা মৃত্যুলৈকে প্ৰতিটো পদক্ষেপতে ই ক্ৰিয়া কৰে। প্ৰাগ্-বৈষ্ণৱ আৰু বৈষ্ণৱ যুগৰ অসমীয়া সাহিত্যৰ পৰা ১২শ শতিকাৰ পিচৰ মধ্যযুগীয় সমাজখনৰ সংস্কাৰ আদিৰ বিষয়ে বহু কথাই জানিব পাৰি, কিন্তু প্ৰাচীন যুগটোৰ বিষয়ে জনা নেযায়। সন্তানক অমঙ্গলৰ পৰা ৰক্ষা কৰিবলৈ দেৱ-দেৱীৰ নামেৰে নামকৰণ কৰা, বিবাহিতা তিৰোতাই মূৰত ওৰণি লোৱা, বোৱাৰীয়ে শঙ্কৰ, বৰজনাকৰ আগত মুখ নেদেখুওৱা, জ্যেষ্ঠজনৰ ছাঁ নগৰকা, কাউৰী-ফেঁচাৰ মাতৰ পৰা মঙ্গলামঙ্গল নিৰ্ধাৰণ কৰা, কুকুৰা কাটি মঙ্গল চোৱা, যাত্ৰাৰ ক্ষণত হাঁচি মাৰিলে যাত্ৰা নাস্তি হোৱা আদি অজস্ৰ সংস্কাৰ আৰু লোক-বিশ্বাস অসমীয়া সমাজত চলি আহিছে। প্ৰাচীন যুগতো অসমৰ অধিবাসীসকলে

এইবোৰ নাইবা এনে ধৰণৰ বিভিন্ন কথা বিশ্বাস কৰিছিল। অসমীয়া সংস্কৃতি কৃষিভিত্তিক। সাধাৰণ লোকৰ মাজত কৃষিজীৱীৰ সংখ্যাই সৰহ আছিল। বনকলাল বৰুৱাদেৱৰ মতে “অনুমান হয়, আগে নহ’লেও অন্ততঃ খ্ৰিঃ পূঃ ১০০০ত যেতিয়া তেওঁলোকে (বড়োসকলে) আৰ্যসকলক লগ পায় তেতিয়া তেওঁলোক নিগাজী খেতিয়ক। সিঁচা আৰু উঘালি নি ৰোৱা দুয়ো নিয়মেৰেই তেওঁলোকে ধান খেতি কৰে। ডোঙৰ ব্যৱহাৰ কৰি কৰা জলসিঞ্চন পদ্ধতিও তেওঁলোকে জানিছিল।”^{১২} তেখেতে কৈছে যে নব্য প্ৰস্তৰ যুগৰ নিদৰ্শন স্বৰূপ শিলৰ অস্ত্ৰ দা, কুঠাৰ, নাল লগাব পৰা কোৰ, জবকা আদি পোৱা গৈছে। সেইবোৰ প্ৰধানকৈ অষ্ট্ৰিকসকলে ব্যৱহাৰ কৰিছিল। সেইবোৰে প্ৰমাণ কৰে যে বহু প্ৰাচীন কালৰ পৰা অসমত খেতি-বাতি কৰাৰ নিয়ম আছিল। ড° চৌধুৰীদেৱেও অনুমান কৰে যে নব্য প্ৰস্তৰ যুগৰ মানুহেই খেতি কৰা, পশু-পালন কৰা আদি প্ৰৱৰ্তন কৰে।^{১৩}

ধানৰ উপৰি কপাহ আৰু অন্যান্য ফল-মূলৰ খেতিও হৈছিল। ‘চৰ্যাপদ’ৰ পৰা কপাহৰ ফুল ফুলা আৰু ‘কঙ্কুচিনা’ ফল ফুলাৰ কথা পোৱা যায়। (চৰ্য্য নং ৫০)। বলৰমাৰ লিপিত আছে “ধান্যচতুস্হোত্পত্তিমতী...” অৰ্থাৎ চাৰি হেজাৰ পৰিমাণৰ ধান উৎপাদন কৰিব পৰা মাটি। ইন্দ্ৰপালৰ গুৱাহাটী আৰু গুৱাকুছি লিপিতো ধান উৎপাদন কৰিব পৰা মাটিৰ কথা আছে। ধৰ্মপালৰ খনামুখ লিপিত হয় হেজাৰ দোণ ধান হোৱা মাটি বুলি উল্লেখ কৰিছে। গতিকে খ্ৰিঃ ৫ম শতিকাৰ আগৰ পৰা যে অসমত ধান আৰু অন্যান্য খেতি হৈছিল সেইটো বুজিব পাৰি। বনমালদেৱৰ লিপিত আছে, “দশ নাক্সল সহসীমা” ইয়াৰ পৰা বুজিব পাৰি যে খেতিৰ বাবে নাক্সলেই ব্যৱহাৰ হৈছিল।”

খেতিৰ বাবে বিস্তীৰ্ণ পথাৰ আছিল। আলি বা নলাৰে বেলেগ বেলেগ খেতিয়কৰ মাটি ভাগ কৰা হৈছিল। এই অৰ্থত ‘ক্ষেত্ৰালি’ শব্দটো লিপিবোৰত আছে। মেগেস্থেনিচে লিখি থৈ যোৱা মতে ৰজাই ভূমিৰ গৰাকী আছিল। খেতিয়কে তেওঁলোকৰ পৰিশ্ৰমৰ বাবদ উৎপন্নৰ ১/৪ অংশ পাইছিল।^{১৪} অসমতো সেই নিয়মেই চলিছিল যেন বোধ হয়, কাৰণ প্ৰাচীন অসমৰ ৰজাসকলে ব্ৰাহ্মণক যি ভূমিদান কৰিছিল সেইবোৰ কৃষিভূমি আছিল যদিও দান কাৰ্যত কৃষকৰ কোনো হাত নাছিল। তদুপৰি দান দিয়া মাটিবোৰ নিষ্কৰ ভূমি আছিল বুলি দানলিপিত থকা উল্লেখৰ পৰা বুজিব পাৰি যে বাকী খেতিৰ মাটিবোৰ কৰদ ভূমি আছিল।^{১৫} আন আন লিপিত থকা উল্লেখৰ পৰাও সেইটো জানিব পাৰি।

মাটিবোৰ ক্ষেত্ৰ, খিল, বাস্তু বা ভিটি ভূমি— এনেধৰণে শ্ৰেণী বিভক্ত কৰা হৈছিল। খ্ৰিঃ ৫ম শতিকাৰ বলৰমৰ্মাৰ হাওৰাঘাট লিপিত আছে—

“বাস্তুকেদাৰস্থলজলগোপ্ৰচাৰকৰাদ্যুপেতা...”^{৬৬}

অৰ্থাৎ ‘বস্তি, খেতি পথাৰ, বাকৰি, জলাতন, চৰণীয়া পথাৰ, আবৰ্জনা পেলোৱা ঠাই...’^{৬৭} মাটি সম্বন্ধীয় আৰু কৰ-কাটল, ৰাজহ আদি সম্বন্ধীয় নানা আইন-কানুন আছিল বুলি লিপিসমূহৰ পৰা জানিব পাৰি।

গাৰো, খাচী আদি কিছুমান আদিবাসীৰ মাজত প্ৰাচীন কালৰ পৰাই মাতৃ-সূত্ৰীয় সমাজ ব্যৱস্থা (Matrilineal) আছিল। সেইমতে পৰিয়ালৰ মূল মহিলা গৰাকীয়েই পৰিয়ালৰ মুৰব্বী, তেওঁৰ পিচত তেওঁৰ জীয়েকে সেই আসন লয়। পৰিয়ালৰ সম্পত্তিৰ উত্তৰাধিকাৰো মাইকী মানুহেহে পায়। আৰ্য হিন্দুসকলৰ মাজত প্ৰাচীন কালৰ পৰা পিতৃতন্ত্ৰ চলি আহিছে। সেইমতে পিতৃয়েই পৰিয়ালৰ মুৰব্বী। প্ৰাচীন কালত যৌথ পৰিয়াল ব্যৱস্থা চলিছিল। সপিণ্ডসকল এটা পৰিয়াল হিচাপে বাস কৰিছিল। ৬^০ চৌধুৰী আদি পণ্ডিতসকলে অনুমান কৰে যে মিতাক্ষৰা আৰু দায়ভাগ ৰীতিৰ ভিতৰত, সম্পত্তিৰ উত্তৰাধিকাৰৰ ক্ষেত্ৰত প্ৰধানকৈ দায়ভাগ ৰীতিয়েই চলিছিল। অৰ্থাৎ পিতৃৰ মৃত্যুৰ পিছত পুত্ৰসকলে সম্পত্তিৰ ভাগৰ অধিকাৰী হৈছিল। অৱশ্যে মৃতকৰ পত্নী জীৱিত থকালৈকে যৌথ পৰিয়ালৰ সম্পত্তিৰ ভাগ তেওঁহে দাবী কৰিব পাৰিছিল। কৃষিজীৱী লোকসকলে ভূ-সম্পত্তি যৌথভাৱেই ভোগ দখল কৰিছিল বুলি জনা যায়। শুভক্লৰপাটক লিপিত (১২শ শতিকা) দুজন ভাই-ককাইৰ মাজত মাটি দিয়াৰ কথা আছে। আকৌ বনমালদেৱৰ পৰ্বতীয়া লিপিত (৯ম শতিকা) চাৰিজন ভাই-ককাইৰ ভিতৰত জ্যেষ্ঠজনৰ নামত ভূমিদান কৰা হৈছিল যদিও চাৰিওজন ভাই-ককায়ে সেই মাটি ভোগ দখল কৰিব পাৰিব বুলি স্পষ্টভাৱে লিখা আছে। আগতেই উল্লেখ কৰি অহা হৈছে যে অগ্ৰহাৰ ভূমি বা ব্ৰাহ্মণক দান কৰা ভূমি কৰমুক্ত আছিল আৰু বাকী কৃষি ভূমি কৰযুক্ত আছিল। নিধনপুৰ লিপিত আছে—

“শ্ৰীভূতিৰ্মৰ্ণা কৃতং যৎ তস্তাত্মপট্টাভাৱাৎ কৰদমিতি”

অৰ্থাৎ ভূতিৰ্মৰ্মাই তাত্মপট্ট কৰি যি ভূমিদান কৰিছিল সেয়া কৰমুক্ত আছিল। কিন্তু পিছত সেই তাত্মপট্ট অৰ্থাৎ ভূমিদান লিপিতখনৰ অভাৱত সেই মাটি আকৌ কৰদ ভূমি হৈ পাৰিছিল। সেয়েহে ভাস্কৰৰ্মাই নিধনপুৰ লিপিৰ যোগে সেই মাটি পুনৰ কৰমুক্ত কৰি দিছিল। বলৰমৰ্মাৰ নগাওঁ লিপিত ঔপৰিকৰিক

‘উৎখেটিকচ্ছত্ৰাসাদ্যুপদ্রকাৰী’ৰ উল্লেখ আছে। ড° শৰ্মাই তেখেতৰ অনুবাদত ইয়াক “অতিৰিক্ত কৰ, খেতিৰ মাটিৰ কৰ আৰু ৰাজ ৰক্ষিত আৰাসবিলাকৰ কৰ আদায়কাৰী”^{১১৮} বুলিছে। এইখিনিতে অপ্ৰাসঙ্গিক হ’লেও উল্লেখ কৰিব পাৰি যে কৰ আদায়কাৰী বিষয়াসকল উপদ্রকাৰী বুলিও উক্ত লিপিত অভিহিত হৈছে।

অসমৰ কৃষিজাত উৎপন্ন বস্তুৰ ভিতৰত এতিয়াৰ দৰে তেতিয়াও ধানেই প্ৰধান আছিল। লিপিসমূহত ধান উৎপাদনকাৰী ক্ষেত্ৰৰ কথা উল্লেখ আছে। ইন্দুপাল, ধৰ্মপাল, বলৰমা আদিৰ লিপিত আম, জাম, কঁঠাল, বেল, কল আদি ফল-মূলৰ গছৰো উল্লেখ আছে।^{১১৯} মুচলমান ঐতিহাসিকসকলে কল, কমলা, নেমু, আনাৰস, আমলখি, পনিয়ল আদিও অসমৰ উৎপন্ন বস্তু হিচাপে উল্লেখ কৰিছে। এইবোৰ প্ৰাচীন কালৰ পৰাই অসমত আছিল বুলি বুজিব পাৰি। চৰ্যাপদৰ পৰা কপাহ, কঙ্কচিনাৰ বিষয়ে জানিব পাৰি। (চৰ্যা ৫০)।

মাটিৰ সীমা বুজাবৰ বাবে লিপিসমূহত নানা গছ-গছনিৰ নাম ব্যৱহাৰ কৰা হৈছে। তাৰ ভিতৰ বট, অশ্বথ, কাসিম্বল, সোণাৰু, হিজল, পাৰলি আদি গছৰ উল্লেখ আছে। তাৰ উপৰি অগৰু, শাল, সৰল, দেৱদাৰু, গমাৰি, তিতা চঁপা, চোম, তামোল, নাৰিকল আদি গছ-গছনিও অপৰ্যাপ্ত পৰিমাণে আছিল। বাঁহ আৰু বেঁতগছো অসমত প্ৰাচীন কালৰ পৰাই আছে। সাঁচি গছ, পাণ লতা, ইলাচী লতাৰ উল্লেখ বলৰমাৰ ফলিত আছে—

“তাম্বুলৰঙ্গীপৰিগন্ধপুগং কৃষ্ণগুৰুস্কন্ধনিৰেশিতৈলং...।”^{১২০}

কৌটিল্যৰ অৰ্থ শাস্ত্ৰৰ পৰা জনা যায় যে প্ৰাচীন অসমত যথেষ্ট পৰিমাণে চন্দন গছ আছিল। জাপ, জোঙ্গ, তৰুপ নামৰ ঠাইত উৎপন্ন হোৱা চন্দন শ্ৰেষ্ঠ বুলি কৌটিল্যৰ অৰ্থশাস্ত্ৰত আছে। এই ঠাইবোৰ প্ৰাচীন অসমৰ বুলি অধ্যাপক কাংলেদেৱে মত প্ৰকাশ কৰিছে। কালিদাসৰ ৰঘুবংশ কাব্যতো কবিয়ে লিখিছে যে ৰজা ৰঘুৱে লৌহিত্য পাৰ হৈ প্ৰাগজ্যোতিষ ৰাজ্যলৈ আহোঁতে সাঁচিগছ পাইছিল। তেজপাত, জালুক, পিপলি আদিও অসমত উৎপন্ন হৈছিল। অৰ্থশাস্ত্ৰৰ পৰা অসমৰ উৎপন্ন বস্তুৰ বিষয়ে ভালেখিনি তথ্য পোৱা যায়। তাত তৈলপৰ্ণিক বুলি যিবোৰ সুগন্ধি দ্ৰব্যৰ উল্লেখ কৰিছে তাৰ সৰহখিনি প্ৰাচীন অসমৰে। জোঙ্গক, গ্ৰামেৰুৰু, সুবৰ্ণকুডাক, কালেয়ক, উত্তৰ পৰ্বতক আদি অঞ্চল প্ৰাচীন অসমৰ বুলি শাস্ত্ৰশাস্ত্ৰী আদি পণ্ডিতে অনুমান কৰে। কৌটিল্যৰ মতে ভদ্ৰশ্ৰিয় (কৰ্পূৰ বা ৰঙা চন্দন) লৌহিত্য নদীৰ পাৰত হোৱা বিধ জাতিফলৰ ৰঙৰ, “ভদ্ৰশ্ৰিয়ং পাৰলৌহিত্যকং জাতীৰ্ণম্।”

অসমত উৎপন্ন হোৱা এৰি, মুগা, পাট কাপোৰৰ সুনাম প্ৰাচীন কালৰ পৰাই আছে। বহুতো বিদেশী পণ্ডিত আৰু পৰ্যটকে ইয়াৰ উচ্চ প্ৰশংসা কৰি গৈছে। অৰ্থশাস্ত্ৰত আছে— “...শ্বেত স্নিগ্ধ দুকূলম...সৌৱৰ্ণকুড্যকং সূৰ্যৱৰ্ণং মণিস্নিগ্ধাদকৱানং চতুৰশ্ৰৱানং ৰামিশ্ৰৱানং চ” — অৰ্থাৎ শ্বেত, স্নিগ্ধ দুকূল বস্ত্ৰ... সূৱৰ্ণকুড্যৰ দুকূল বস্ত্ৰ (পাটৰ কাপোৰ) সূৰ্যৰ দৰে উজ্জ্বল বৰণৰ, মণিৰ দৰে নিমজ আৰু পানীৰ দৰে স্বচ্ছকৈ বোৱা (নাইবা, সূতাবোৰ পানীত তিয়াই মণিৰে ঘাঁহি লৈ বোৱা)। সূৱৰ্ণকুডা ঠাইখন প্ৰাচীন অসমৰে বুলি পণ্ডিতসকলে ঠাৱৰ কৰিছে। আকৌ পত্ৰোৰ্ণা (অৰ্থাৎ গছৰ পাত খাই ডাঙৰ হোৱা এৰি, মুগা, পলুৰ পৰা হোৱা সূতা) মগধ, পুন্ড্ৰ আৰু সূৱৰ্ণকুডাত উৎপন্ন হয় আৰু সূৱৰ্ণকুডাৰ পত্ৰোৰ্ণা শ্ৰেষ্ঠ বুলিও অৰ্থশাস্ত্ৰত উল্লেখ কৰিছে, “মাগধিকা, পৌন্ড্ৰিকা, সৌৱৰ্ণকুডাকা চ পত্ৰোৰ্ণা... তাসাং সৌৱৰ্ণকুডাকা শ্ৰেষ্ঠা।” অসমৰ হাবিত থকা এক প্ৰকাৰ বিশেষ গছত লা উৎপন্ন হৈছিল। অসমৰ লা উৎকৃষ্ট বুলি স্বীকৃত হৈছিল।

প্ৰাচীন কালৰ পৰাই অসমত নানা ধৰণৰ সুগন্ধি দ্ৰব্যও উৎপন্ন হৈছিল। মহাভাৰতৰ সভা পৰ্বত আছে যে প্ৰাচীন কালত কামৰূপ ৰাজ্য জয় কৰাৰ পিচত ভীমে ইয়াৰ পৰা চন্দন, অগুৰু আদি সুগন্ধি দ্ৰব্য উপহাৰ পাইছিল। যুধিষ্ঠিৰৰ ৰাজসূয় যজ্ঞত কামৰূপৰ কিৰাতসকলে নানা ধৰণৰ মণি-মুকুতা, মূল্যৱান চামৰা, চন্দন, কুঙ্কুম, অগুৰু (“গন্ধানাম্ চ কাশয়ঃ” ৫২,১০) উপহাৰ দিছিল। কস্তুৰী প্ৰাচীন অসমৰ আন এবিধ উৎকৃষ্ট সুগন্ধি দ্ৰব্য। অতীজতে অসমৰ হাবি-বননিত যথেষ্ট পৰিমাণে কস্তুৰী মৃগ পোৱা গৈছিল। শাল গছত উৎপন্ন হোৱা ধূনাও সুগন্ধি দ্ৰব্য হিচাপে প্ৰাচীন কালৰ পৰাই ব্যৱহাৰ হৈ আহিছে।

অন্যান্য উৎপন্ন বস্ত্তৰ ভিতৰত সোৱণশিৰি, দিঁচৈ, জাগলো নদীত সোণ পোৱা গৈছিল বুলি জনা যায়।^{১১} নৈৰ পৰা সোণ কমেৱা এক শ্ৰেণীৰ লোক আছিল। আহোম যুগত এওঁলোক সোণোৱাল নামে জনাজাত আছিল। মুচলমান লিখকৰ দ্বাৰা ৰচিত *ফটিয়া-ই-ইব্ৰিয়া* নামৰ পুথিৰ পৰা জনা যায় যে সোণ কমেৱা লোকসকলে বছৰত প্ৰায় এতোলা সোণ কমাই ৰজাক দিব লাগিছিল।^{১২} মহাকবি কালিদাসৰ *ৰঘুবংশ* কাব্যত উল্লেখ আছে যে প্ৰাচীন কামৰূপত বহুতো ৰত্ন উৎপন্ন হৈছিল (IV, ৮৪)। বাণভট্টৰ *হৰ্ষচৰিত*ত, কাৰ্দৰঙ্গ আৰু চামৰুক নামৰ উৎকৃষ্ট চামৰাৰ উল্লেখ আছে। তাত লিখিছে যে প্ৰাগজ্যোতিষ ৰাজ্যৰ ৰজা ভাস্কৰৱৰ্মাই ৰজা হৰ্ষৱৰ্ধনলৈ যি উপহাৰ পঠিয়াইছিল তাৰ ভিতৰত এই চামৰাৰ বস্ত্তও আছিল।

প্ৰাচীন লিপিত বিপণি শব্দটো আছে, গতিকে প্ৰাচীন কালত দোকান-পোহাৰ আছিল বুলি ধৰিব পাৰি। কিন্তু বেচা-কিনা কিদৰে হৈছিল, বিনিময় মুদ্ৰা আছিল নে নাই সেইটো জনা নেযায়। প্ৰাচীন অসমৰ মুদ্ৰাৰ কোনো নিদৰ্শন পাবলৈ নাই। ৯ম শতিকাৰ হৰ্জৰৱৰ্মাৰ তেজপুৰ লিপিত আছে, “যঃ চাৰনং কৰোতি তস্য পঞ্চবুটিকা গৃহীতৱ্যমিতি।” অৰ্থাৎ যেয়ে আদেশ অমান্য কৰিব তেওঁৰ পৰা পাঁচ ‘বুটিক’ জৰিমনা লব।^{১০} একাদশ শতিকাৰ শিলিমপুৰ লিপিৰ মতে কামৰূপৰ ৰজা জয়পালে এজন ব্ৰাহ্মণক “হেমনাং শতানি নৱ” দান কৰিছিল। কোনো কোনো পণ্ডিতে ইয়াৰ অৰ্থ ৯০০ সোণৰ মুদ্ৰা বুলি মত প্ৰকাশ কৰিছে। ইয়াৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে প্ৰাচীন অসমত কড়ি বা বুড়ি আৰু স্বৰ্ণমুদ্ৰা হয়তো ব্যৱহাৰ হৈছিল। গোৱালপাৰাৰ পাগলাটেকত কিছু দিনৰ আগত গুপ্ত যুগৰ কামৰূপৰ ৰজাই মৰোৱা অনেক নিম্ন মানৰ সোণৰ মোহৰ পোৱা গৈছে। সেই সময়ত যে কামৰূপত সোণৰ মোহৰৰ প্ৰচলন আছিল এয়ে তাৰ প্ৰমাণ। (*History and Civilisation of the People of Assam*, 1987, P. C. Choudhury, p. 361) ‘চৰ্যাপদ’ৰ ঠাঠাইত আছে, “কৰড়ি ন লেই বোড়ি ন লেই সুচ্ছড়ে পাৰ কৰই।” অৰ্থাৎ (ডোম্বীয়ে) কড়ি বা বুড়ি নোলোৱালৈ সহজে নৈ পাৰ কৰি দিয়ে। ইয়াৰ পৰা পৰোক্ষভাৱে বুজিব পাৰি যে নাৱেৰে নৈ পাৰ কৰা আদি কামৰ পাৰিশ্ৰমিক কড়িৰ ব্যৱহাৰ আছিল। কিন্তু দৈনন্দিন ব্যৱহাৰৰ বস্তুৰ কিনা-বেচাত কড়ি বা অন্য মুদ্ৰা ব্যৱহাৰ হৈছিল নে নাই গম পোৱা নেযায়। সম্ভৱতঃ বস্তুৰ বিনিময়ৰ যোগেদিয়েই বেহা-বেপাৰ চলিছিল, অৰ্থাৎ এবিধ বস্তুৰ সলনি সমমূল্যৰ আন বস্তু দিয়া হৈছিল। কোনো কোনো ক্ষেত্ৰত, বিশেষকৈ জনজাতীয় লোকসকলৰ মাজত বস্তুৰ মূল্য হিচাপে ধান আদি শস্য বা মেঠোন আদি জন্তু দিয়াৰ নিয়ম আছিল। ঐতিহাসিক সৰ্বানন্দ ৰাজকোঁৱৰদেৱে মত প্ৰকাশ কৰে যে ১৬ শ শতিকাৰ মাজ ভাগৰ আহোম স্বৰ্গদেউ চুফ্ৰেনমুং গড়গঞা ৰজাৰ দিনৰ মুদ্ৰাই অসমৰ সৰ্বপ্ৰাচীন মুদ্ৰা।^{১১}

প্ৰাচীন অসমৰ সংস্কৃতিৰ আলোচনাত সাজ-পাৰ, আ-অলঙ্কাৰ, প্ৰসাধন সামগ্ৰী আদিৰ উল্লেখ অপৰিহাৰ্য। অসমৰ আদিবাসীসকলে চৰাইৰ পাখি, গছৰ কোমল আঁহ, গছৰ ছাল, বাঁহৰ পাত আদিৰে লজ্জা নিবাৰণ কৰিছিল।^{১২} জন্তুৰ নোম, ছাল, চুলি আদিও সাজ-সজ্জাৰ বাবে ব্যৱহাৰ হৈছিল। ‘চৰ্যাপদ’ত উল্লিখিত কপাহৰ খেতিৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে, অন্ততঃ ৮ম-১০শ শতিকাৰ অসমৰ সৰ্বসাধাৰণ লোকে কপাহৰ খেতি কৰিছিল, কপাহী কাপোৰ ব্যৱহাৰ কৰিছিল।

সংস্কৃত সাহিত্যৰ বহু ঠাইত ক্ষৌম বস্ত্ৰৰ উল্লেখ আছে। ইয়াৰ অৰ্থ হৈছে পাট কাপোৰ। ভাস্কৰৱৰ্মাই পঠোৱা উপহাৰৰ ভিতৰত থকা ‘দুকুল’ বস্ত্ৰৰ অৰ্থও পাট-কাপোৰ। উৎকৃষ্ট পাট-কাপোৰকে ‘দুকুল’ বুলিছিল। ১১শ শতিকাৰ বৰগাওঁ লিপিত থকামতে পতাকাৰ বাবে দুকুল ব্যৱহাৰ হৈছিল। ভাস্কৰৱৰ্মাৰ উপহাৰৰ লগত পঠোৱা ‘আভোগ ছত্ৰ’টো দুকুল বস্ত্ৰেৰে মেৰিয়াই দিয়া বুলি উল্লেখ আছে। ৪র্থ শতিকাৰ অৰ্থ শাস্ত্ৰ মতে সূৰ্ণকুড্যৰ দুকুল অতি উত্তম। অসমত বৰ্তমানৰ সোণ-কুৰিহা (বা ‘সন্ধুদিহা’) নামৰ ঠাইখনেই সূৰ্ণকুড্য বুলি পণ্ডিতসকলে ঠাৱৰ কৰিছে। সেইদৰে মুগা আৰু এৰি কাপোৰো প্ৰাচীন কালৰ পৰাই অসমৰ মানুহে ব্যৱহাৰ কৰি আহিছে, আৰু ৰপ্তানিও কৰি আহিছে। উত্তৰ-পূৱ ভাৰতলৈ বৈদিক আৰ্যসকল অহাৰ বহু আগৰ পৰাই বড়োসকলে মুগাৰ ব্যৱহাৰ জানিছিল। তেওঁলোকেই মুগা পোহাৰ প্ৰচলন কৰে বুলি কনকলাল বৰুৱাদেৱে অনুমান কৰে।^{১৩} উণী কাপোৰৰ ব্যৱহাৰ আছিল যদিও সম্ভৱতঃ তিব্বত-ভূটান আদিৰ পৰা সেইবোৰ আহিছিল। *কালিকা পুৰাণ*ত শণ বস্ত্ৰৰ উল্লেখ আছে। মৰাপাটৰ সূতাৰপৰা কৰা কাপোৰকে শণবস্ত্ৰ বোলা হৈছিল। চীন দেশীয় পৰিব্ৰাজক, বৌদ্ধ পণ্ডিত হিউৱেন চাঙে তেওঁৰ ভ্ৰমণ-টোকাত লিখি থৈ গৈছে যে ভিক্ষুসকলে শণবস্ত্ৰ পৰিধান কৰিছিল। মুগা আৰু ইয়াৰ প্ৰকাৰ ভেদ চম্পা মুগা, মেজাকুৰি বা আদাকুৰি মুগা অতীজৰে পৰা অসমৰ এক বিশেষ সম্পদ।

ড° বিৰিঞ্চি কুমাৰ বৰুৱা আৰু ড° প্ৰতাপচন্দ্ৰ চৌধুৰীদেৱে তেখেতসকলৰ তত্ত্ব গধুৰ গ্ৰন্থত^{১৪} প্ৰাচীন অসমৰ সংস্কৃতিৰ বিষয়ে যি বহুল আলোচনা কৰিছে তাৰ ভিত্তিতে প্ৰাচীন অসমৰ লোকৰ সাজপাৰ আদিৰ বিষয়ে কব পাৰি যে সেই সময়ত পুৰুষসকলে ধুতী জাতীয় পৰিধান পিন্ধিছিল, কঁকালত কাপোৰৰ নাইবা চামৰাৰ টঙালি জাতীয় বস্ত্ৰ পৰিৱেশ আৰু শৰীৰৰ উৰ্ধ্ব ভাগত চাদৰ জাতীয় উত্তৰীয় পিন্ধিছিল। পুৰণি মূৰ্তি আদিত শৰীৰবোৰ সাধাৰণতে উদং দেখা যায়। নাৰীসকলে মেখেলা জাতীয় পৰিধান, বুকুত কাঁচুলি আৰু শৰীৰৰ ওপৰ ভাগত উত্তৰীয় পিন্ধিছিল। প্ৰাচীন মূৰ্তিবোৰৰ শৰীৰৰ নিম্নাংশৰ কাপোৰ আঁঠুৰ ওপৰলৈ বা অলপ তললৈহে পিন্ধিছিল যেন অনুমান হয়। অসমীয়া নাৰীৰ মধ্যযুগীয় সাজ-পাৰ— মেখেলা, চাদৰ, বিহা আৰু পুৰুষৰ চুৰিয়া, চাপকন, চাদৰ— এইবোৰ আহোম যুগৰ বা তাৰ অলপ আগৰ যেন বোধ হয়। পাণ্ডুৰি, মুকুট বা তেনে শিৰস্ত্ৰাণৰ ব্যৱহাৰ অৱশ্যে আগৰে পৰা থকাটো সম্ভৱ। কনৌজৰ ধৰ্মীয় শোভাযাত্ৰাত প্ৰাগজ্যোতিষৰ

ৰজা ভাস্কৰবৰ্মাই মূৰত মুকুট পিন্ধি শোভাযাত্ৰাত যোগ দিছিল বুলি জনা যায়। জয়ন্তীয়া, কুকি আদি কিছুমান জনজাতীয় লোকে প্ৰাচীন কালৰ পৰাই পাণ্ডুৰি ব্যৱহাৰ কৰি আহিছে। অসমীয়া সমাজতো অলপ দিন আগলৈকে পাণ্ডুৰিৰ ব্যৱহাৰ আছিল। বৰগাওঁ লিপিৰ পৰা জনা যায় যে ৰজা বা সেনাপতিয়ে ‘বক্ষ-কপাট-পট’ পিন্ধিছিল।^{১৫} ই কৰচ বা বৰ্মৰ কাম কৰিছিল।

পুৰুষ-নাৰী সকলোৱে অলঙ্কাৰ পিন্ধিছিল। কপালত বালাটিকা, কাণত মকৰ-কুণ্ডল, ডিঙিত সাতসৰী হাৰ, বাহুত কেয়ুৰ, অঙ্গদ; হাতত কঙ্কণ, বালা; হাত-ভৰিৰ আঙুলিত আঙঠী, উজ্জ্বল; কঁকালত কৰধনি; ভৰিত নুপুৰ, কিক্কিণী আদি বিভিন্ন অলঙ্কাৰ পিন্ধিছিল।

বিবাহিতা তিৰোতাই মূৰত ওৰণি লোৱা, সেন্দূৰ পিন্ধা আদি কিমান প্ৰাচীন কৰ নোৱাৰি। কিন্তু সেন্দূৰ আৰু শুভ কামত হালধিৰ ব্যৱহাৰ অষ্ট্ৰিক প্ৰভাৱৰ ফল বুলি ড° বৰুৱাদেৱে মত প্ৰকাশ কৰিছে। চৰ্যাপদত শৱৰ বালিকা এজনীয়ে ম’ৰা পাখি, গুঞ্জামণিৰ মালা, কাণত কুণ্ডল পিন্ধাৰ বৰ্ণনা আছে। (চৰ্যা নং ২৮)

অলঙ্কাৰ সোণ, ৰূপৰ উপৰি তাম, পিতল আদি অন্য ধাতুৰো আছিল। তাৰ উপৰি নানা ধৰণৰ মণি, মুক্তা, হাতীদাঁতৰ অলঙ্কাৰ আদিও ব্যৱহাৰ হৈছিল।

তিৰোতা মানুহে প্ৰসাধনৰ কাৰণে কুঙ্কুম, চন্দন, অণ্ডক, কস্তূৰী, সুগন্ধি তেল আদি ব্যৱহাৰ কৰিছিল। ভাস্কৰবৰ্মাই হৰ্ষবৰ্ধনলৈ পঠোৱা উপহাৰ সামগ্ৰীৰ ভিতৰত গোশীৰ্ষ চন্দন, কৃষ্ণাণ্ডক তেলো আছিল। সৌন্দৰ্য বৃদ্ধিৰ কাৰণে নানা ধৰণৰ ভেষজ পদাৰ্থও ব্যৱহাৰ হৈছিল। ৯ম শতিকাৰ বনমালবৰ্মাৰ লিপিৰ পৰা জানিব পাৰি যে সন্ত্ৰাস্ত ঘৰৰ মহিলাসকলে স্তনত সুগন্ধি দ্ৰব্য সানিছিল। দাঁতবোৰত ৰং বোলাই লৈছিল বুলি কালিকা পুৰাণ আৰু যোগিনীতন্ত্ৰত উল্লেখ আছে। হিউৱেন চাঙে এই বিষয়ে উল্লেখ কৰি গৈছে। হাতীদাঁত, কাঠ বা বাঁহৰ কাঁকৈ, মণিময় দৰ্পণ, হৰিণাৰ ছালৰ উপানহ বা পট্টন, হাতীদাঁত বা বাঁহৰ নানা কাৰুকাৰ্য-খচিত বিচনী, জাপি আদিও ব্যৱহাৰ হৈছিল। ছাতিৰ ব্যৱহাৰ আছিল বুলি জানিব পাৰি ভাস্কৰবৰ্মাই হৰ্ষবৰ্ধনলৈ পঠোৱা ‘আভোগ ছত্ৰ’ৰ পৰা।

অতীজৰ অসমৰ মানুহৰ খাদ্য কি আছিল সেই বিষয়ে প্ৰাচীন লিপিসমূহ আৰু পুথি-পাঁজিৰ পৰা বিস্তৃতভাৱে জানিব পাৰি। লিপিসমূহত ধান উৎপাদনকাৰী মাটিৰ উল্লেখৰ পৰা ধানেই প্ৰধান খাদ্য আছিল বুলি জানিব পাৰি। মাছ, মাংস আদিও খোৱা হৈছিল। আন কি ব্ৰাহ্মণসকলেও এই দেশত অতীজৰে পৰা মাছ,

মাংস খাই আহিছে। এই মাছ খোৱা প্ৰথাটো বড়োসকলৰ পৰা, অহা বুলি পণ্ডিতসকলে অনুমান কৰে।^{১১} যোগিনীতন্ত্ৰত আছে—

“হংসপাৰৱতং ভক্ষ্যং কুৰ্মং বৰাহমেৱ চ।

কামৰূপে পৰিত্যাগাদু গতিস্তস্য সন্তৱ।।”^{১২}

হাঁহ, পাৰ, কাছ, বৰাহ— এইবোৰ নাথালেহে ইয়াত দুৰ্গতি হোৱা সন্তৱ। ছাগ, হৰিণ, গঁড়, গুঁই আদিও খোৱা হৈছিল। অন্যান্য সুস্বাদু বস্তুৰ ভিতৰত গাখীৰ, দৈ, মাখন, ঘিউ, খীৰ, পায়স, জীৰা, ধনিয়া, পিপলি, মৰিচ, হালধি, সৰিয়হ, কপূৰ, লাৰু, পিঠা, পৰমান্ন আদিৰ উল্লেখ কালিকা পুৰাণ আৰু যোগিনীতন্ত্ৰত আছে।^{১৩} প্ৰাচীন অসমীয়া সাহিত্যত এই বিষয়ে নানা বৰ্ণনা পোৱা যায়। গাজ টেঙা, খৰিচা আদিৰ ব্যৱহাৰ বড়োসকলৰ পৰা অহা বুলি ড° বৰুৱাই উল্লেখ কৰিছে।^{১৪} কলগছৰ পৰা খাৰ কৰা হৈছিল। সেই খাৰ ব্যঞ্জনত ব্যৱহাৰ কৰাৰ উপৰি পাট সূতা ধোৱাত ব্যৱহাৰ হৈছিল। গা মূৰ ধোৱাতো খাৰ ব্যৱহাৰ হৈছিল, কাপোৰ-কানি ধোৱা হৈছিল। সাগৰীয় লোণ অসমত নাছিল, তাৰ সলনি ঝাৰেই ব্যৱহাৰ হৈছিল। পৰ্বতীয়া জাতিৰ লোকসকলে সৈন্ধৱ লোণ-জাতীয় পৰ্বতীয়া লোণ ব্যৱহাৰ কৰিছিল। ভৈয়ামৰ লোকেও আন বস্তুৰ বিনিময়ত তেওঁলোকৰ পৰা এইবিধ লোণ লৈছিল। শঙ্কৰদেৱৰ সময়লৈকে অসমীয়া মানুহে চেনিৰ সোৱাদ নেজানিছিল, কাৰণ কথা-গুৰুচৰিতত আছে যে শঙ্কৰদেৱে তীৰ্থ ভ্ৰমণৰ পৰা আহোঁতে অনা চেনি খাই অসমীয়া মানুহে আশ্চৰ্য বোধ কৰিছিল।^{১৫}

পানীয়ৰ ভিতৰত নানা ধৰণৰ সুৰাৰ কথা পোৱা যায়। হৰ্ষ চৰিতত ভাস্কৰবৰ্মাই পঠোৱা উপহাৰ সামগ্ৰীৰ ভিতৰত ‘উল্লক’ নামৰ সুৰা আৰু সুস্বাদু আমৰ ৰসৰ কথা আছে। বৰগাওঁ লিপিত ‘মধুমদ’ৰ উল্লেখ আছে। যোগিনী তন্ত্ৰত আছে যে কামেশ্বৰী দেৱীক পূজা কৰিবলৈ “কধিৰৈমাংস-মদৈশ্চ পূজয়েৎ পৰমেশ্বৰীম্।”^{১৬} পিঠা-পনা তৈয়াৰ কৰা ৰীতি বহু পৰিমাণে জনজাতীয়, বিশেষকৈ চুঙা পিঠা তিব্বত-বৰ্মীয়।^{১৭}

তামোল-পাণৰ ব্যৱহাৰো বহু প্ৰাচীন কালৰ পৰাই আছে। ৯ম শতিকাৰ বলৰৰ্মাৰ লিপিত প্ৰাগ্জ্যোতিষৰ বৰ্ণনাত তামোল গছ আৰু পাণ-লতাৰ কথা আছে। ভাস্কৰবৰ্মাৰ উপহাৰ সামগ্ৰীৰ ভিতৰত তামোলো আছিল। ‘চৰ্যাপদ’তো কপূৰ-তাম্বুলৰ উল্লেখ আছে (চৰ্য্য নং ২৮)। তামোল-পাণৰ ব্যৱহাৰ অষ্ট্ৰিকসকলৰ পৰা অহা বুলি ড° বৰুৱাই মত প্ৰকাশ কৰিছে। তামোল-পাণৰ লগত চুণ আৰু

কৰ্পূৰো ব্যৱহাৰ হৈছিল।^{১২} যোগিনীতন্ত্ৰত আছে, “তাম্বুলেন কৃতং শ্ৰাদ্ধং বিনা চূৰ্ণেন শঙ্কৰি।”^{১৩} পূজা, শ্ৰাদ্ধ আদিত তামোলৰ লগত চূণ দিব নোহোৱা বোলাৰ পৰাই বুজিব পাৰি যে চূণৰ ব্যৱহাৰ আছিল। পৰৱৰ্তী কালত তামোল-পাণে অসমীয়া সমাজত এক গুৰুত্বপূৰ্ণ স্থান পায়। বিয়া-সবাহ, শ্ৰাদ্ধ-বিধি সকলোতে তামোল-পাণ অপৰিহাৰ্য। বিবাহ অনুষ্ঠানলৈ তামোল-পাণৰ শৰাইৰে নিমন্ত্ৰণ কৰাৰ নিয়ম আছিল। ঘৰলৈ অহা আলহীক তামোল-পাণৰ বটাহে আগ ধৰি আগ বঢ়োৱা হৈছিল। জোৰোণত কন্যা ঘৰলৈ অন্যান্য বস্তুৰ লগতে তামোলৰ থোক দিয়া হৈছিল। দেৱতালৈ তামোল-পাণ আগ বঢ়োৱা হয়। পা-পৰাচিত হ'বলৈ দণ্ড ভৰিবলৈ, ৰাইজৰ আগত আঁঠু লবলৈ তামোল-পাণৰ আৱশ্যক। এইখিনিতে অপ্ৰাসঙ্গিক যেন লাগিলেও কৈ থব পাৰি যে মধ্যযুগীয়া অসমীয়া সংস্কৃতিত শৰাই আৰু গামোচাৰো বিশেষ গুৰুত্ব আছিল। অৱশ্যে প্ৰাচীন অসমত এই দুবিধ বস্তুৰ ব্যৱহাৰ আছিল নে নাই বা গুৰুত্ব কিমান আছিল জনা নেযায়।

সুকুমাৰ কলাৰ চৰ্চা প্ৰাচীন অসমত হৈছিল বুলি ক'ব পাৰি। নৃত্য, গীত, বাদ্য আদিৰ চৰ্চা, স্থাপত্য, ভাস্কৰ্য আদিৰ চৰ্চাও আছিল। ভাস্কৰৱৰ্মাৰ নিধনপুৰ লিপিৰ পৰা জনা যায় যে ৰাজপ্ৰসাদৰ বেৰবোৰত অঁকা ছবি অঁকা আছিল। হৰিবৰ বিপ্ৰ ৰচিত বৰেন্দ্ৰাহনৰ যুদ্ধ কাব্যকে আদি কৰি প্ৰাচীন অসমীয়া সাহিত্যৰ পৰাও জানিব পাৰি যে প্ৰাসাদ আদিৰ বেৰত ছবি অঁকাৰ ৰীতি প্ৰচলিত আছিল। হিউৱেন চাঙৰ টোকাৰ পৰা জানিব পাৰি যে ভাস্কৰৱৰ্মাই এই সন্মানীয় অতিথিজনক নিতৌ সন্ধিয়া নৃত্য-গীতেৰে আপ্যায়িত কৰিছিল। এই পূৰ্ব ভাৰতৰ ৰাজকন্যা চিত্ৰাঙ্গদাই অৰ্জুনক নৃত্য-গীতেৰে মুগ্ধ কৰিছিল। প্ৰাগজ্যোতিষৰ ৰজা ভগদত্তই যুধিষ্ঠিৰৰ ৰাজসূয় যজ্ঞত গন্ধৰ্বৰ দ্বাৰা নৃত্য দেখুৱাইছিল। অসমৰে জীয়ৰী উবা-চিত্ৰলেখা নৃত্য-গীতত পাৰদৰ্শী আছিল।^{১৪} বনমালৱৰ্মাৰ লিপিৰ পৰা জানিব পাৰি যে ৮ম-৯ম শতিকাৰ অসমত মন্দিৰবোৰ গীত, নৃত্য, বাদ্যৰ ধ্বনিৰে সদায় মুখৰিত হৈ থাকিছিল। হাজো, ডুবি আদিৰ শিৱ মন্দিৰবোৰৰ সৈতে জড়িত দেৱদাসীসকল নৃত্য পটীয়সী হিচাপে বিশেষভাৱে উল্লেখযোগ্য। বনমালৱৰ্মাৰ তাম্ৰলিপিত আছে, “ৰমণীয় দলুহাঙ্গনাভিৰিৰ সকলজন মনহাৰিণীভিঃ....”। ‘দলুহাঙ্গনা’ শব্দটোৱে দেৱ মন্দিৰত দেৱতাৰ তুষ্টিৰ কাৰণে নৃত্য কৰা তিৰোতা বুজায়। প্ৰাচীন অসমত নট জাতিৰ মানুহৰ কামেই আছিল নৃত্য-গীত কৰি ফুৰা। প্ৰাচীন ভাস্কৰ্যত নৃত্যৰত পুৰুষ-নাৰীৰ মূৰ্তি অসংখ্য আছে। তেজপুৰৰ কোল পাৰ্কত থকা নৰ-নাৰীৰ

শিলামূৰ্তিবোৰৰ ভিতৰতো নৃত্যৰত মূৰ্তি বহুত আছে। কোনো কোনো মূৰ্তিত বাঁহী, ঢোল, শঙ্খ, বীণ আদি বজাই থকা দেখা যায়। পণ্ডিতসকলে এইবোৰ আনুমানিক ১২শ শতিকাৰ বুলি ঠাৱৰ কৰিছে। বাঁহ, কাঠ, তাঁৰ, জস্তৰ ছাল আদিৰে তৈয়াৰী বিভিন্ন বাদ্য-যন্ত্ৰৰ প্ৰচলন প্ৰাচীন কালতো আছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। 'চৰ্যাপদ'ত ডম্বৰু, নেপুৰ, ঘণ্টা, বীণা, পটহ, মাদল আদিৰ উল্লেখ আছে।

জনজাতীয় লোকসকলৰ মাজতো বিভিন্ন ধৰণৰ নৃত্য-গীত আৰু নানা বাদ্য-যন্ত্ৰ আছিল। শস্য বৃদ্ধিৰ উদ্দেশ্যে, শস্য চপাওঁতে, সন্তান জন্মৰ আনন্দত, যুদ্ধ জয়ৰ আনন্দত আৰু অন্যান্য উৎসৱাদিত নৃত্য-গীত কৰা, বাদ্য বজোৱা আদি প্ৰাচীন অসমৰ খিলঞ্জীয়া লোকসকলৰ মাজতো আছিল।^{১২} বড়ো-কছাৰীসকলে প্ৰাচীন কালৰ পৰাই বাথৌ পূজাত মাদল বজাই নৃত্য কৰিছিল। বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ কাব্যত উল্লিখিত বাদ্য-যন্ত্ৰসমূহ হৈছে— ঢাক, ঢোল, ভেৰি, ভেমছি, ধুমছি, ডগৰ, বাংশী, তেমছি, খিকিছি, মাদলি, ৰেমছি, টোকাৰি আদি। ভোৰতাল, টকা, গগণা, চিফুং, কীচক বেণু আদি বাদ্য যন্ত্ৰ তিব্বত-বৰ্মাসকলৰ আছিল।

ভূমিদান লিপিসমূহৰ পৰা আৰু প্ৰাচীন স্থাপত্য-ভাস্কৰ্যৰ ভগ্নাৱশেষবোৰৰ পৰা জনা যায় যে প্ৰাচীন কালত ৰাজপ্ৰাসাদ বা অট্টালিকা, মন্দিৰ আদি ইটা, শিল, চূণ, বালি আদিৰে নিৰ্মিত হৈছিল। তেজপুৰৰ ওচৰৰ দ পৰ্বতীয়াৰ মন্দিৰৰ ভগ্নাৱশেষ আনুমানিক ৬ষ্ঠ শতিকাৰ বুলি পণ্ডিতসকলে অনুমান কৰে। ই অসমৰ প্ৰাচীনতম ভগ্নাৱশেষৰ এটা। দুৰ্জয়া নগৰৰ ভগ্নাৱশেষ, আমবাৰীৰ খননৰ ফলত পোৱা প্ৰাগ্জ্যোতিষ নগৰৰ ভগ্নাৱশেষ আদিৰ পৰা প্ৰাচীন অসমত স্থাপত্যৰ বিষয়ে কিছু আভাস পোৱা যায়। সেই যুগৰ নানা কাৰুকাৰ্য-খচিত, ইটা আৰু শিলৰ ভগ্নাৱশেষবোৰে প্ৰাচীন অট্টালিকা, স্তম্ভ, সৌধ আদিৰ অস্তিত্ব আৰু সেইবোৰৰ কাৰুকাৰ্যবোৰে প্ৰাচীন অসমৰ মানুহৰ কলা আৰু শিল্প জ্ঞানৰ পৰিচয় দিয়ে।

কালিকা পুৰাণ আৰু যোগিনীতন্ত্ৰত উল্লিখিত পাণ্ডুৰ দেৱালয় অতি প্ৰাচীন। অলপতে ইয়াত হোৱা খনন কাৰ্যত প্ৰাচীন মন্দিৰৰ ভগ্নাৱশেষ আৰু ইন্দ্ৰ, সূৰ্য, গণেশ আদি দেৱ-দেৱীৰ মূৰ্তি পোৱা গৈছে। পণ্ডিতসকলে সেইবোৰ ১০ম শতিকাৰ বুলি অনুমান কৰে। দৰং জিলাৰ বামুণী পাহাৰৰ পৰা পোৱা, বৰ্তমান তেজপুৰ চহৰত থকা কীৰ্তিমুখযুক্ত, বোম্ব চুকীয়া স্তম্ভ আদি ৮ম-৯ম শতিকাৰ বুলি প্ৰত্নতাত্ত্বিকসকলে অনুমান কৰে।^{১৩} গুৱাহাটীৰ আশে-পাশে পোৱা শিলৰ বিষ্ণু মূৰ্তি, ব্ৰহ্মা, ইন্দ্ৰ আদিৰ মূৰ্তি ১০ম-১১শ শতিকাৰ। নুমলিগড়ৰ শিৱ মন্দিৰৰ

ভগ্নাৱশেষ প্ৰায় ১০ম-১১শ শতিকাৰ। প্ৰত্নতাত্ত্বিক কাশীনাথ দীক্ষিতৰ মতে দেওপানীৰ বিষুৱ মূৰ্তি ৯ম শতিকামানৰ। এইবোৰে প্ৰাচীন অসমৰ ভাস্কৰ্যৰ গৌৰৱ ঘোষণা কৰে। প্ৰাচীন শোণিতপুৰৰ সূৰ্য মন্দিৰ, শিৱ-মন্দিৰ, মহাভৈৰৱ মন্দিৰ, শিৱ, দুৰ্গা, সৰস্বতী আদিৰ মূৰ্তি, দ পৰ্বতীয়াৰ শিলৰ দুৱাৰ আদি ৫ম-৬ষ্ঠ শতিকাৰ বুলি নিৰ্ণীত হৈছে। কামাখ্যাৰ আশে-পাশে নীলাচল পাহাৰত পোৱা ভৈৰৱ মূৰ্তি, গণেশৰ মূৰ্তি, নানা নক্সা কটা শিলৰ দুৱাৰ, পদুম ফুল আদিৰ কিছুমান ৮ম শতিকাৰ বুলি ঠাৱৰ কৰা হৈছে। ইয়াৰ উপৰিও, অসমৰ বিভিন্ন ঠাইত প্ৰাচীন যুগৰ মন্দিৰ, মূৰ্তি, প্ৰাসাদ আদি সিঁচৰতি হৈ আছে। সেইবোৰে প্ৰাচীন যুগৰ লোকৰ শিল্প-নৈপুণ্য, সৌন্দৰ্যবোধ, সুকুমাৰ অনুভূতি আৰু কুশলতাৰ সাক্ষ্য দিয়ে।

৭ম শতিকাৰ প্ৰাগজ্যোতিষৰ ৰজা ভাস্কৰৱৰ্মাই কনৌজৰ ৰজা হৰ্ষৱৰ্ধনলৈ যিবোৰ উপহাৰ পঠিয়াইছিল সেইবোৰৰ বৰ্ণনা হৰ্ষচৰিতত পোৱা যায়। তাৰ পৰাই চাৰু আৰু কাৰু কলাত প্ৰাচীন অসমৰ মানুহৰ উচ্চ স্তৰৰ শিল্প-নৈপুণ্যৰ পৰিচয় পোৱা যায়। সেই বস্তুবোৰৰ ভিতৰত আছিল আভোগ ছত্ৰ, যাৰ ছায়াই চন্দ্ৰৰ দৰে উজ্জ্বল অথচ স্নিগ্ধ শীতলতা বৰ্ষণ কৰিছিল। ছত্ৰটোৰ চাৰিওফালে ঘূৰণীয়াকৈ সৰু সৰু কড়িৰে সজ্জিত, আগ-ভাগত পাখি মেলি থকা ৰাজহাঁহ অঁকা আছিল। সেই ছত্ৰটো পাটৰ কাপোৰৰ আৱৰণ এটাত ভৰাই থোৱা আছিল। ছত্ৰৰ উপৰি উৎকৃষ্ট ৰত্ন-শোভিত অলঙ্কাৰ; চুড়ামণি; নানা ৰঙৰ ধুনীয়াকৈ তৈয়াৰী বেঁতৰ চন্দ্ৰক বা পেড়াত গোলকৈ মেৰিয়াই থোৱা, চকু চমকোৱা পাটৰ কাপোৰ; সুনিপুণ শিল্পীৰ দ্বাৰা নানা কাৰু কাৰ্য খোদিত সুক্তি, শঙ্খ আৰু স্ফটিকৰ পান পাত্ৰসমূহ; সুস্পন্দ কাৰু কাৰ্য থকা কাৰ্দৰঙ্গ চামৰাৰ বস্ত্ৰ; ভূৰ্জপত্ৰৰ দৰে কোমল জাতীপটিকা (জঘন বস্ত্ৰ); চিত্ৰাঙ্কিত কোমল বস্ত্ৰ; হৰিণাৰ চালৰ গাৰু; প্ৰিয়ঙ্গু ফুলৰ দৰে পীত বৰ্ণৰ বেঁতৰ আসন; অগুৰু গছৰ ছালেৰে নিৰ্মিত সাঁচিপাতৰ সুভাষিতপূৰ্ণ পুথি; পকি ৰঙা হালধীয়া হোৱা ৰসাল তামোল; সুগন্ধি আমৰ ৰস; ৰঙা 'কপোটিকা' পাতেৰে ঢকা সুন্দৰ বাঁহৰ চুঙাত অগুৰু তেল; মৰাপাট বা শগৰ বস্তাত ভৰোৱা অঞ্জনৰ দৰে গুড়ি কৰা কৃষ্ণগুৰু; গোশীৰ্ষ চন্দন; মদিৰা ৰসৰ অতি মধুৰ সৌৰভেৰে সুগন্ধি 'উল্লক'ৰ মদিৰা কলহ; বগা আৰু ক'লা চামৰ; ৰং-তুলিকা আৰু চিত্ৰযুক্ত চিত্ৰপটৰ পেড়া; কস্তুৰী মৃগ; চামৰ গাই; সোণৰ পাতেৰে চিত্ৰিত, বেঁতৰ পিঞ্জৰাত থকা মইনা, ভাটো, 'জীৱঞ্জীৱক' আদি চৰাই; প্ৰৱালৰ পিঞ্জৰাত থকা চকোৰ পক্ষী; জলহস্তীৰ কুণ্ডস্থলৰ পৰা ওলোৱা মুক্তা-পংক্তি-খচিত হাতীদাঁতৰ কুণ্ডল। প্ৰতিটো বস্তু উৎকৃষ্ট

আছিল আৰু সেইবোৰ ধাৰণ কৰা পাত্ৰ, পিঞ্জৰা আদি প্ৰতিটো বস্তু কুশলী কলাকাৰৰ দ্বাৰা নিৰ্মিত আছিল বুলি বুজিব পাৰি, কাৰণ প্ৰতিটো বস্তু দেখি ৰজা হৰ্ষৱৰ্ধন আৰু পৰিষদসকল মুগ্ধ হৈ পৰিছিল। এই সকলো বস্তু প্ৰাচীন অসমৰ শিল্পী, কলাকাৰ আদিৰ দ্বাৰাই নিৰ্মিত আছিল। এইবোৰৰ পৰা সেই সময়ৰ অসমৰ মানুহ কিমান আগ বঢ়া আছিল বুজিব পাৰি।

সূতা কটা, কাপোৰ বোৱা, ফুল তোলা, কাপোৰত আৰু সূতা বোলোৱা আদি প্ৰাচীন অধিবাসীসকলৰ মাজত প্ৰচলিত আছিল। তাতশালত সপোনৰ ফুল বাছিব পৰা অসমীয়া শিপিনীৰ কৰ্মকুশলতা একেদিনাই হোৱা নাছিল। তাতশালৰ ব্যৱহাৰ মূলতঃ অস্থিকৰ বুলি ড° বৰুৱাই কয়। কাপোৰত ফুল তোলাটো তিব্বত-বৰ্মাৰ প্ৰভাৱ বুলি তেখেতে ভাবে।^{১২}

ইতিহাসে ঢুকি নোপোৱা কালৰে পৰা অসমত বসতি কৰি অহা আৰু বিভিন্ন ঠাইৰ পৰা সময়ে সময়ে, চামে চামে আহি ইয়াত বসবাস কৰিবলৈ লোৱা আৰ্য আৰু আৰ্য-ভিন্ন লোকৰ সংমিশ্ৰণত অসমৰ সমাজ আৰু সংস্কৃতিয়ে ধীৰে ধীৰে গঢ় লৈ উঠে। এই গঠন-প্ৰক্ৰিয়া বহু যুগৰ, আজিও এই প্ৰক্ৰিয়াৰ শেষ হোৱা নাই। অসমত আহোম ৰাজত্ব স্থাপন হোৱাৰ পিচত আৰু দুজনা গুৰু শ্ৰীমন্ত শঙ্কৰ-মাধৱে নৱ-বৈষ্ণৱ ধৰ্ম প্ৰচাৰ কৰিবলৈ লোৱাৰ পৰা অসমৰ ৰাজনীতি, ধৰ্ম, সমাজ আদিত বহু পৰিৱৰ্তন হয়। খ্ৰিষ্টীয় ১০ম শতিকামানৰ পৰাহে অসমীয়া জাতি আৰু সংস্কৃতিয়ে এটা নিৰ্দিষ্ট আৰু সুকীয়া গঢ় ল'বলৈ আৰম্ভ কৰে।

প্ৰাচীন অসমৰ সভ্যতা, সংস্কৃতিৰ ভেঁটিতে ই গঢ় লৈ উঠিছিল।

— ভুবনেশ্বৰী বৈশ্য

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- ১। ৰামায়ণ আদি কাণ্ড XXXVI সৰ্গ
- ২। ৰামায়ণ কিঙ্কিকা কাণ্ড VIII সৰ্গ
- ৩। মহাভাৰত উদ্যোগ পৰ্ব XIX অধ্যায়
- ৪। Ptolemy's Geography, J. A.S.B., 1847, I, p. 43
- ৫। B. C. Law, *Geographical Essays*, Vol. I, p. 152
- ৬। কালিকা পুৰাণ, ৭৮/৭

- ৭। কালিকা পুৰাণ, ৫১ / ৭৬-৭৭
- ৮। Pargiter, *Ancient Indian Historical Tradition*, 1922, p. 292
- ৯। B. K. Barua, *A Cultural History of Assam, Early Period*
- ১০। A.C. Haddon, *Races of Man*, 1924
- ১১। ড° হেমন্ত কুমাৰ শৰ্মা (সম্পা), *অসম গৌৰৱ*, পৃঃ ২৪
- ১২। *অসম গৌৰৱ*, পৃঃ ৩৪
- ১৩। ড° ডিব্বেশ্বৰ শৰ্মা (সম্পা), *কামৰূপ শাসনাৱলী*, পৃঃ ৫৪
- ১৪। B.K. Barua, *A Cultural History of Assam, Early Period*, 1985. p.8
- ১৫। ড° ডিব্বেশ্বৰ শৰ্মা (সম্পা), *কামৰূপ শাসনাৱলী II*, পৃঃ ৪৯
- ১৬। ড° ডিব্বেশ্বৰ শৰ্মা (সম্পা), *কামৰূপ শাসনাৱলী II*, পৃঃ ৪৯
- ১৭। ড° শৰ্মা (সম্পা), *কামৰূপ শাসনাৱলী II*, পৃঃ ৯৮, ১৩৮
- ১৮। ড° শৰ্মা (সম্পা), *কামৰূপ শাসনাৱলী II*, পৃঃ ৯০
- ১৯। ড° শৰ্মা (সম্পা), *কামৰূপ শাসনাৱলী II*, পৃঃ ৬৯
- ২০। ড° শৰ্মা (সম্পা), *কামৰূপ শাসনাৱলী II*, পৃঃ ৯৭, VI, পৃঃ ২৬৬
- ২১। *যোগিনী তন্ত্ৰ II*, ৯, ২২-২৫
- ২২। হৰি প্ৰসাদ নেওগ আৰু লীলা গগৈ (সম্পা), *অসমীয়া সংস্কৃতি*, ১৯৬৬, পৃঃ ২১
- ৩২। *কামৰূপ শাসনাৱলী II*, পৃঃ ৪৮
- ২৪। *কামৰূপ শাসনাৱলী II*, পৃঃ ৭৭
- ২৫। Dr. A.S. Altekar, *State and Government in Ancient India*, p.203
- ২৬। *কামৰূপ শাসনাৱলী II*, পৃঃ ১২৮
- ২৭। *Asiatic Researches*, Vol. XVI, 1828, pp. 344-45
- ২৮। ড° মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পা), *বাণীকান্ত ৰচনাৱলী*, ১৯৯১, পৃঃ ১৩৪-৩৬
- ২৯। হৰি প্ৰসাদ নেওগ আৰু লীলা গগৈ (সম্পা), *অসমীয়া সংস্কৃতি*, পৃঃ ৫৯
- ৩০। *কামৰূপ শাসনাৱলী II*, পৃঃ ৯৮, ১৩৮
- ৩১। *কামৰূপ শাসনাৱলী II*, পৃঃ ৭৬
- ৩২। *কামৰূপ শাসনাৱলী II*, পৃঃ ৩২, ১৩১, ৭৫, ৯০

১৪২ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

- ৩৩। কালিকা পুৰাণ, ১৮/৯৬
৩৪। কামৰূপ শাসনাবলী II, পৃঃ ৪২
৩৫। অসমীয়া সংস্কৃতি, পৃঃ ৯৪
৩৬। ড° মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পা), পবিত্ৰ অসম, ১৯৯১, পৃঃ ২১
৩৭। ভূৱনেশ্বৰী বৈশ্য (সম্পা), অসমৰ বৈষ্ণৱ সাহিত্য আৰু সংস্কৃতি, পৃঃ ১২৮
৩৮। কামৰূপ শাসনাবলী, II, পৃঃ ১৭০
৩৯। বাণীকান্ত ৰচনাবলী, ১৯৯১, পৃঃ ১৫২
৪০। অসমীয়া সংস্কৃতি, পৃঃ ৩২
৪১। অসমীয়া সংস্কৃতি, পৃঃ ৩০
৪২। বাণীকান্ত ৰচনাবলী, পৃঃ ১৫৩
৪৩। কামৰূপ শাসনাবলী, II, পৃঃ ১৩৬
৪৪। কামৰূপ শাসনাবলী, পৃঃ ৪৯
৪৫। ড° বিৰিঞ্চিকুমাৰ বৰুৱা আৰু ড° মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পা), বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ, ১৯৬০, পৃঃ ১৪-১৫
৪৬। যোগিনী তন্ত্ৰ, ১/১৭, পৃঃ ৩৩
৪৭। কামৰূপ শাসনাবলী II, পৃঃ ৪৯
৪৮। কামৰূপ শাসনাবলী II, পৃঃ ১৩৬
৫৯। কামৰূপ শাসনাবলী II, পৃঃ ৭৭
৫০। ঋঃ ১ম শতিকাৰ পৰা ৭ম শতিকাৰ ভিতৰৰ কবি হাল (সম্পা), গাহা সত্তসৰ্গ
৫১। *Kuttanimatam*, (ed), by T.M. Tripathy, VV 560-61, pp. 167f
৫২। ড° বিৰিঞ্চিকুমাৰ বৰুৱা, অসমীয়া ভাষা আৰু সংস্কৃতি, পৃঃ ১০৫
৫৩। কামৰূপ শাসনাবলী II, পৃঃ ৭০
৫৪। কামৰূপ শাসনাবলী II, পৃঃ ৮৬
৫৫। কালিকা পুৰাণ, ৮৬/১৩৪
৫৬। মণীন্দ্র মোহন বসু (সম্পা), চৰ্যাপদ, পৃঃ ৫৯
৫৭। কামৰূপ শাসনাবলী II, পৃঃ ১৭ আৰু IV, পৃঃ ২৩৭

- ৫৮। কামৰূপ শাসনাৱলী II, পৃঃ ৯৪
- ৫৯। বাণীকান্ত ৰচনাৱলী, পৃঃ ২০৪
- ৬০। অসমীয়া ভাষা আৰু সংস্কৃতি, পৃঃ ২৪৬
- ৬১। অসমীয়া সংস্কৃতি, পৃঃ ১১
- ৬২। অসমীয়া সংস্কৃতি, পৃঃ ৩২
- ৬৩। *Journal of Assam Research Society*: 1944, pp. 41-47
- ৬৪। Mc Crindle, *Ancient India as Described in Classical Literature*, p. 47
- ৬৫। কামৰূপ শাসনাৱলী, II, পৃঃ ২৪
- ৬৬। কামৰূপ শাসনাৱলী, II, পৃঃ ৬৯
- ৬৭। কামৰূপ শাসনাৱলী, IV, পৃঃ ২৫৯
- ৬৮। কামৰূপ শাসনাৱলী IV পৃঃ ২৫৭
- ৬৯। *Buddhist Records of the Western World*, vol II. p 195
- ৭০। কামৰূপ শাসনাৱলী, II, পৃঃ ৭২
- ৭১। *Journal of Asiatic Society of Bengal*, VII, pp 621-25, XVIII pp. 515-21
- ৭২। *Journal of Asiatic Society of Bengal*, XXX Part I, p 49 ff
- ৭৩। কামৰূপ শাসনাৱলী, II, পৃঃ ৪২
- ৭৪। অসমীয়া সংস্কৃতি, পৃঃ ১৮৬
- ৭৫। অসমীয়া সংস্কৃতি, পৃঃ ১০১-৪
- ৭৬। অসমীয়া সংস্কৃতি, পৃঃ ১৮৬
- ৭৭। B.K. Barua, *A Cultural History of Assam*, Early period আৰু Dr. P.C. Choudhury, *The History of Civilisation of the People of Assam*
- ৭৮। কামৰূপ শাসনাৱলী, II, পৃঃ ৮৪
- ৭৯। ড° বিৰিঞ্চিকুমাৰ বৰুৱা, অসমীয়া ভাষা আৰু সংস্কৃতি, পৃঃ ১০৯
- ৮০। যোগিনী তন্ত্ৰ, ২/৯/১৬
- ৮১। কালিকা পুৰাণ, ৪৯/৯, ৫৪/১৮, ৬০/৪৫-৪৬, ৭০/১৪

- ৮২। অসমীয়া ভাষা আৰু সংস্কৃতি, পৃঃ ১১০
- ৮৩। উপেন্দ্ৰ চন্দ্ৰ লেখাৰু (সম্পাদিত), কথাকুঁহি চৰিত, ১৯৫২, পৃঃ ৩৩
- ৮৪। যোগিনী তন্ত্ৰ, II/, ৭, ১৯
- ৮৫। ড° বিৰিঞ্চিকুমাৰ বৰুৱা, অসমীয়া ভাষা আৰু সংস্কৃতি, পৃঃ ১১০
- ৮৬। কামৰূপ শাসনাবলী II, , পৃঃ ৬৭
- ৮৭। যোগিনী তন্ত্ৰ II/৫
- ৮৮। অসমীয়া সংস্কৃতি, পৃঃ ১৩২
- ৮৯। Verrier Elwin, *The Art of the North-East India*.
- ৯০। ড° বিৰিঞ্চিকুমাৰ বৰুৱা আৰু ড° মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পাদিত), বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ, ১৯৬০, পৃঃ ১০
- ৯১। ড° মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পাদিত), পৱিত্ৰ অসম, পৃঃ ১৫৫
- ৯২। অসমীয়া ভাষা আৰু সংস্কৃতি, পৃঃ ১০১, ১১৪

অসমৰ সাংস্কৃতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস

১২২৮ খ্ৰিঃ ১৪৭০খ্ৰিঃ লৈ

(খ)

ধৰ্ম, সঙ্গীত, স্থাপত্য ভাস্কৰ্য আৰু চিত্ৰশিল্প

ত্ৰয়োদশ-শতিকাৰ তৃতীয় দশকৰ শেষৰ ফালে টাই জাতিৰ চ্যুকাফাই কেইজনমান বিষয়া আৰু কিছুমান বণুৱা লগত লৈ পূব চুকেদি সোমাই কামৰূপ ৰাজ্যত প্ৰৱেশ কৰেহি। স্থানীয় বৰাহী, মটক, মৰাণ আদি জাতিৰ লোকসকলক হেলাৰঙে পৰাস্ত কৰি চ্যুকাফাই ১২২৮ খ্ৰিঃ ত সৌমাৰত (বৰ্তমানৰ শিৱসাগৰ আৰু লক্ষ্মীমপুৰ জিলা) ৰাজত্বৰ পাতনি মেলে। প্ৰৱল-প্ৰতাপী চ্যুকাফাই অপ্ৰতিহত হৈ সৰু সৰু জনজাতীয় ৰজাবোৰক পৰাভূত কৰি এফালৰ পৰা নিজৰ শাসনাধীন ভূখণ্ডৰ প্ৰসাৰণ কৰে। স্থানীয়-স্বলাকৰ বিশ্বাস অনুসৰি চ্যুকাফা আছিল “অসম”-যাৰ সমান আৰু কোনো নাই। সেয়েহে, যিমান দুৰলৈ তেওঁ আৰু তেওঁৰ বংশধৰে ৰাজ্য বঢ়াইছিল, সিমান দুৰলৈ ৰাজ্যখনক বোলা হৈছিল অসম। “আহম” বা “আহোম” নামটোও জাতিবাচক ৰূপে ইয়াৰ পৰাই ওলায়।^১ — ইও অন্যতম মত। এইদৰে যি আহোম ৰাজ্যৰ সূত্ৰপাত হ’ল, সি়েই ক্ৰমবিস্তৃতিৰ গতিত আগ বাঢ়ি খ্ৰিষ্টীয় ১৭ শ শতিকাত পশ্চিম ফালে মানাহ নদীত গৈ ইয়াৰ শেষ সীমা স্থিৰীকৃত হয়। বহুতো সৰু সৰু ৰাজ্যত বিভক্ত হৈ থকা বিশাল কামৰূপ ৰাজ্যৰ বুকুত ত্ৰয়োদশ-শতিকাৰ আদি ভাগতে চ্যুকাফাৰ বীৰত্বত প্ৰতিষ্ঠিত আহোম ৰাজ্য ক্ৰমশঃ প্ৰসাৰিত হৈ চাৰি শতাব্দী মানৰ ভিতৰত নিৰ্দিষ্ট-সীমাৰে পৰিসীমিত এখন বিশাল ৰাজ্যত পৰিণত হয়, নাম অসম।

ধৰ্ম

নৰক-ভগদত্তৰ দিনৰ পৰা খ্ৰিষ্টীয় নৱম-দশম শতিকালৈকে এই সুদীৰ্ঘ কাল ধৰি শাক্ত আৰু শৈৱ ধৰ্মৰ প্ৰবাহ— সময় বিশেষে কোনোটো সবল আৰু কোনোটো দুৰ্বলভাৱে, কামৰূপ-ৰাজ্যত চলি আহিছিল। একাদশ শতিকাত পালবংশী

ৰজাসকলৰ দিনত শৈৱ ধৰ্মৰ প্ৰবাহ একেবাৰে দুৰ্বল নহলেও শক্তি ধৰ্মৰ প্ৰাৱন ফেনে-ফুটুকাৰে উফন্দি উঠিছিল। এই শতিকাবেই কোনো সময়ত, সম্ভৱত পালবংশী ৰজাৰ পৃষ্ঠপোষকতাত সৰ্বতোপ্ৰকাৰ শক্তি-মাহাত্ম্য প্ৰকাশক *কালিকা-পুৰাণ* ৰচিত হয়। আদ্যা শক্তি মহামায়াৰ বিভিন্ন অভিব্যক্তিৰ বিস্তৃত বৰ্ণনা, পৰমা শক্তি ৰূপে কামাখ্যাৰ মহিমাৰ প্ৰকাশ, সেইবোৰৰ পূজা-উপাসনাৰ পদ্ধতি, শক্তি-সাধনাৰ বিভিন্ন ব্যৱস্থা, মুক্তিৰ পথত সাধকৰ ক্ৰমোন্নতি আদি শক্তিসাধন সম্বন্ধীয় কথাবোৰ এই পুৰাণত সূক্ষ্মভাৱে বৰ্ণনা কৰাৰ পৰা বুজা যায়— শক্তিবাদ আৰু শক্তিসাধন সম্বন্ধীয় এই সকলো কথা *কালিকা পুৰাণ* ৰচনা কৰা সময়ত বা তাৰ আগৰে পৰা কামৰূপত প্ৰচলিত আছিল।^২ এই প্ৰসঙ্গত কনকলাল বৰুৱাই পালবংশী ৰজাসকলৰ শক্তি-ধৰ্মৰ প্ৰতি অধিক আসক্তি আৰু কামাখ্যাৰ মহিমা বৃদ্ধি সম্বন্ধে যি উক্তি^৩ দাঙি ধৰিছে তাকো মন কৰিব লগীয়া। আকৌ, খ্ৰিষ্টীয় চতুৰ্দশ শতিকাৰ ভিতৰতে কামৰূপত *যোগিনী তন্ত্ৰ* ৰচিত হৈছে।^৪ নিশ্চিতভাৱে জনা যায় — দেশত শাক্ত-ধৰ্মৰ জয়-জকাৰৰ দিনতেই এই তন্ত্ৰ ৰচিত। তাতে আকৌ, *কালিকা পুৰাণ* ৰচনাৰ সময়তকৈ *যোগিনী তন্ত্ৰ*ৰ প্ৰণয়ন কালত তান্ত্ৰিক সাধন অধিক প্ৰসাৰিত হৈছিল বুলি বুজা যায়; কিয়নো *কালিকা-পুৰাণ* তনথকা কিছুমান তান্ত্ৰিক সাধন-পদ্ধতি কালক্ৰমত উদ্ভৱ আৰু প্ৰচলিত হৈ গৈ *যোগিনী তন্ত্ৰ*ৰ মাজত প্ৰতিষ্ঠিত হৈছে। শাক্ত-ধৰ্মৰ এই উদ্বেলিত হেন্দোলনি পৰৱৰ্তী যুগতো কম দিনৰ ভিতৰতে স্বাভাৱিকতে মাৰ যাব নোৱাৰে বা যোৱাও নাই, অন্ততঃ আৰু এক শতাব্দী কাললৈ ই চলিছিল। বিশেষ কথা এই যে, উক্ত কালডোখৰত শাক্ত-ধৰ্মৰ জয়-জয়কাৰৰ মাজতো সেই বুলি বৈষ্ণৱ-ধৰ্মৰ সুঁতি নিঃশেষ হোৱা বুলিব নোৱাৰি। কিয়নো *কালিকা-পুৰাণ*ৰ সূক্ষ্ম-অধ্যয়নৰ পৰা বুজা যায়— আভ্যন্তৰিণ দিশৰ পৰা ই এখন বৈষ্ণৱ-শাস্ত্ৰ, যদিও বাহ্যিক দিশৰ আৱৰণে ইয়াক শাক্ত শাস্ত্ৰ ৰূপে থিয় কৰায়। এই তত্ত্ব প্ৰতীয়মান হয় অতি সূক্ষ্মভাৱে থকা দুটা গুৰুত্বপূৰ্ণ কথাত। প্ৰথমতে, *কালিকা পুৰাণে* যেতিয়াই দেৱীক জগজ্জননীৰূপে স্তুতি কৰিছে, তেতিয়াই তেওঁক তাৎপৰ্যৰ সৈতে বিষ্ণুমায়া বুলিছে— ‘তত্ৰ তত্ৰ জগদ্ধাত্ৰীং বিষ্ণুমায়া জগন্ময়ীম্ (৫/১৪) ততঃ প্ৰত্যক্ষতো দৃষ্ট্ৱা বিষ্ণুমায়াং জগন্ময়ীম্ (৮/৮)’। দ্বিতীয়তে, *কালিকা-পুৰাণ* বৰ্ণিত সৃষ্টিতত্ত্বৰ মূল-পৰমতত্ত্ব “ব্ৰহ্মা” পুৰুষহে (Male Being), *যোগিনী তন্ত্ৰ*ৰ সৃষ্টিতত্ত্ব নিচিনা দেৱী (Female Being) নহয়। এই প্ৰসঙ্গত পৰমতত্ত্ব “ব্ৰহ্মা”ৰ অন্যতম ৰূপহে (Mode) শক্তি (প্ৰকৃতি), তেওঁৰ বাকী দুটা ৰূপ (Mode) পুৰুষ আৰু কাল।^৫ আকৌ, পূৰ্ণ-ৰূপত শক্তি শাস্ত্ৰ *যোগিনী তন্ত্ৰ*ৰ মাজতো, উপাসনা প্ৰচলনৰ কথা পোৱা যায়। যেনে, তীৰ্থ ক্ষেত্ৰাদিৰ বৰ্ণনা প্ৰসঙ্গত দীঘলীয়া নমস্কাৰ

মন্ত্ৰৰ সৈতে পাণ্ডুনাথ বিষ্ণুৰ অৰ্চন-পদ্ধতিৰ কথা (২/৬/৩৫-৪৫) ; শঙ্কৰাচাৰ্য্য দ্বিভূজ বিষ্ণুৰ ধ্যানৰ সৈতে কেনেকৈ তেওঁক পূজা কৰিব লাগে তাৰ উল্লেখ (২/৬/৩০) ; দেৱী-গৃহত প্ৰৱেশ কৰাৰ আগতে কৃষ্ণকৃতি বিষ্ণু ৰূপক নমস্কাৰ, স্তুতি আৰু প্ৰদক্ষিণ যে কৰিব লাগে, তাৰ ব্যৱস্থা (২/৬/১২১-১২৩) ; বিষ্ণুৰ বিভিন্ন মূৰ্তি কামৰূপৰ বিভিন্ন স্থানত কেনেকৈ অৱস্থিত হৈ আছে তাৰ বৰ্ণনা (২/৩/৬, ২/৩/৩০) ; বিষ্ণু লোকৰ শ্ৰেষ্ঠত্বৰ ঘোষণা (২/৩/২১, ২/৩/২২, ২/৫/২৩) ইত্যাদি।

এইবিলাকেও প্ৰমাণ কৰে যে, খ্ৰিষ্টীয় দশম-একাদশ শতিকা আৰু পঞ্চদশ শতিকাৰ ভিতৰত উফন্দি উঠা শাক্ত-ধৰ্মৰ প্ৰৱল প্লাৱনৰ মাজতো বিষ্ণু-উপাসনাৰ স্থিতি বিলুপ্ত হৈ যোৱা নাই।

অলিখিত বা লিখিত অসমীয়া-সাহিত্যৰ প্ৰমাণৰ পৰাও জনা যায় আহোম-যুগ আৰম্ভ হোৱাৰ (১২২৮ খ্ৰিঃ) বহু আগৰে পৰা কামৰূপত শক্তি আৰু শৈৱ ধৰ্মৰ প্ৰচলন বেছি আছিল। বিষ্ণু-উপাসনাৰ উল্লেখো অৱশ্যে সেইবোৰৰ মাজত পোৱা যায়। মন্ত্ৰ-সাহিত্য আৰু ডাকৰ বচন — এই দুই প্ৰসিদ্ধ শাখা মৌখিক-সাহিত্যৰেই অন্তৰ্গত। ইয়াৰ প্ৰথম শাখাৰ অন্তৰ্গত কোনো কোনো কথাৰ মাজেদি তান্ত্ৰিক প্ৰভাৱ অৰ্থাৎ শক্তিৰ মাহাত্ম্য আৰু লগতে বিষ্ণুৰ প্ৰভাৱো পৰিস্ফুট হোৱা দেখা যায়। দ্বিতীয় শাখাৰ মাজত, অৰ্থাৎ ডাকৰ ভণিতাৰ মাজত ইয়াৰ সুস্পষ্ট নিদৰ্শন নাথাকিলেও হিন্দু-ধৰ্মৰ বৰ্ণাশ্ৰম-ব্যৱস্থা, আৰু মঠ-মন্দিৰ নিৰ্মাণ আৰু বৃক্ষৰোপণাদি ভাৰতীয়-ধৰ্মীয় কৰ্ম কিছুমান প্ৰচলিত হোৱাৰ আভাস পোৱা যায়। এই পৰ্যন্ত প্ৰকাশিত লিখিত সাহিত্যৰ ভিতৰত প্ৰাক্‌বৈষ্ণৱ যুগৰ হেম সৰস্বতী-বিৰচিত *প্ৰহ্লাদ-চৰিত*ই প্ৰথম। ই বিষ্ণুভক্তি-প্ৰকাশক কাব্য। এই কাব্যই চতুৰ্দশ-শতিকাবোৰে কিছু আগৰে পৰা বিষ্ণুভক্তি-প্ৰচাৰৰ স্পষ্ট প্ৰমাণ দিয়ে। হেম সৰস্বতীৰ *হৰ-গৌৰী-সম্বাদ* নামৰ আন এখন কাব্যও (অপ্ৰকাশিত) আছে। ইয়াৰ ভণিতাত কবিয়ে “হৰ-গৌৰী-পদত” প্ৰণতি জনাইছে, ইয়েই আকৌ শাক্ত-শৈৱ ধাৰাৰ প্ৰচলনৰো সূচনা কৰে। হেম সৰস্বতীৰ অন্যতম সমসাময়িক কবি ৰুদ্ৰ কন্দলীয়ে তেওঁৰ পৃষ্টপোষক ৰজা তাম্ৰধ্বজক (চতুৰ্দশ-শতিকাৰ মধ্য ভাগৰ) “বিষ্ণুৰ ভকত আৰু মহামায়াৰ সেৱক” বুলিছে। এই উক্তিৰেও শক্তি আৰু বিষ্ণু উপাসনাৰ প্ৰচলনৰ কথা সূচনা কৰে। বৰদ্বাৰাহনৰ যুদ্ধৰ ভণিতাৰ পৰা জনা যায় — কবি হৰিবৰ বিপ্ৰ আছিল গৌৰীৰ চৰণৰ সেৱক। তেওঁৰ সেই কাব্যখনৰ মাজেদি কিন্তু কৃষ্ণ-

মহাত্ম্য প্ৰকাশ হৈছে। তাৰ উপৰিও কাব্যৰ ভিতৰত কবিয়ে ক'তো ক'তো বিষুং-মহাত্ম্যসূচক পদো সংযোগ কৰিছে। “বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ”ৰ পাঠান্তৰত গৌৰীৰ ৰচনাৰ পৰিৱৰ্তে কবিক হৰিৰ চৰণৰ সেৱক বুলিও জনা যায়। এনেবোৰ কথাই ভাবিবলৈ অৱকাশ দিয়ে— হৰিবৰ বিপ্ৰ নিজে শাক্তধৰ্মী যদি আছিলো, তেওঁ বৈষ্ণৱ-ধৰ্মৰো পৃষ্ঠপোষকতা কৰিছিল আৰু ৰাজ্যত সেই ধৰ্মৰ স্থিতিও চকুত পৰা বিধৰেই আছিল। চতুৰ্দশ শতিকাৰ বিখ্যাত কবি মাধৱ কন্দলীৰ *ৰামায়ণ*ৰ মাজতো সমসাময়িক ধৰ্মৰ ছিটিকনি আছে। বৃহদাকাৰৰ এই ৰামায়ণখনৰ ঠায়ে ঠায়ে প্ৰমাণিত হয় যে, ৰাজ্যত হিন্দু বৰ্ণাশ্ৰম-ধৰ্ম ব্যাপকভাৱে চলিছিল। শাক্ত, শৈৱ আৰু বৈষ্ণৱ— আৰ্য-ধৰ্মৰ এই তিনিটা সম্প্ৰদায়ৰ সুন্দৰ প্ৰচলন থকাৰ কথা এই গ্ৰন্থৰ নানা প্ৰাসঙ্গিক বৰ্ণনাৰ মাজেদি প্ৰমাণিত হয়। মাধৱ কন্দলীৰ নামত *দেৱজিৎ* নামৰ এখন কাব্যও প্ৰচলিত আছে। এই কাব্যৰখনৰ ৰচক যদি প্ৰকৃত অৰ্থত তেওঁৰ হয়, তেনেহলে ই ১৪শ শতিকাত বিষুং-উপাসনাৰ সুঁতি অধিক প্ৰবল কৰি তোলে।

খ্ৰীষ্টীয় ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ পৰা পঞ্চদশ শতিকালৈকে, এই তিনি শ বছৰীয়া কালভেদৰত অসমৰ ধৰ্মৰ দিশত কিছুমান ঐতিহাসিক কথাও আলোকপাত কৰিব লগীয়া। ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ তৃতীয়-দশকত টাই জাতীয় চ্যুকাফা কিছুমান স্বজাতীয় লগৰীয়াৰ সৈতে সৌমাৰ-পীঠত আহি ভৰি দিয়ে। তেওঁলোক আহি বৰাহী, কছাৰী, চুতীয়া, মৰাণ আদি যিসকল জনজাতীয় লোকৰ লগত ভেটাভেটি হৈছিল, তেওঁলোক প্ৰধানভাৱে আৰ্য-অনাৰ্য মিশ্ৰিত শাক্ত-শৈৱ-ভাৱাপন্ন আছিল বুলি বুজা যায়। কিন্তু বিশেষ কথা এই যে, প্ৰজাৰূপে পৰিগণিত হোৱা উক্ত জনজাতীয় লোকসকলৰ সংস্পৰ্শত বিজেতা চ্যুকাফা আৰু তেওঁৰ টাই জাতীয় সঙ্গীসকলৰ ধৰ্ম ভাৱত অলপ-অচৰপকৈ ভাঁজ লাগিবলৈ আৰম্ভ হয়। বৌদ্ধ ধৰ্মৰ বতাহ ৰাজ্যখনত মুঠেই সোমোৱা নাছিল বুলি অৱশ্যে কব নোৱাৰি। দুই এটা ডাকৰ ভণিতা আৰু হিউয়েন্ চাঙৰ টোকাৰ ওপৰত ভৰ দি কোনো কোনো পণ্ডিতে অৱশ্যে মত পোষণ কৰে যে ইয়াৰ বহু কাল আগৰে পৰা কামৰূপত বৌদ্ধ ধৰ্মৰ ক্ষীণ সুঁতি বৈ আছিল। আকৌ মৎস্যেন্দ্ৰ নাথক কামৰূপৰ লোক বুলি ধৰিলে পুৰণি কামৰূপত বৌদ্ধ তান্ত্ৰিক সম্প্ৰদায়ৰ প্ৰচলনৰ কথাও স্বীকাৰ কৰিব লগীয়া হয়। ইয়াৰ উপৰিও ভাস্কৰৱৰ্মা আৰু ইন্দ্ৰপালৰ তাম্ৰশাসনৰ পাঠৰ অৰ্থ বিশ্লেষণ কৰিও কোনো কোনো পণ্ডিতে প্ৰাচীন কামৰূপত বৌদ্ধ ধৰ্মৰ স্থিতি-সূত্ৰৰ আঁত উলিয়াব বিচাৰে। শঙ্কৰদেৱে কীৰ্ত্তন-ঘোষাত লিখিছে:

বুদ্ধ অৱতাৰে বেদ-পথ কৰি ছন।
বামানয় শাস্ত্ৰে মুহি আছা অজ্ঞজন।।
নিচিন্তে চৰণ নাম নলৱে তোমাৰ।
সদায়ে প্ৰমত্ত লোক পাষণ্ড আচাৰ।।

এই উক্তিৱে ভাবিবলৈ অৱকাশ দিয়ে যে, পঞ্চদশ শতিকাৰ পাচতো ৰাজ্যত বৌদ্ধধৰ্মী লোকে বৈদিক ধৰ্মৰ বিপৰীত আচৰণ কৰিছিল।

জয়ধ্বজসিংহইহে (১৬৪৮—৬৩ খৃ) প্ৰথমতে আনুষ্ঠানিকভাৱে হিন্দু ধৰ্ম গ্ৰহণ কৰে। গতিকে, তেওঁৰ ৰাজত্বৰ সময়লৈকে আহোমসকল দেখাত বৌদ্ধধৰ্মী আছিল বুলি সাধাৰণভাৱে বুজা গলেও এই প্ৰসঙ্গত চিন্তাৰ থল আছে। চ্যুডাংফা (বামুণীকোঁৱৰ)ৰ দিনত (১৩৯৭—১৪০৭খ্ৰিঃ) ব্ৰাহ্মণৰ প্ৰতিপত্তি আৰম্ভ হোৱাৰ লগে লগে বৈদিক-ধৰ্মৰ কিছুমান দিশ আহোমসকলৰ মাজত মুকলি হ'বলৈ আৰম্ভ নকৰাকৈ থকা নাই। পৰৱৰ্তী ৰজা চ্যুত্‌মুং (দিহিঙ্গীয়া) ৰজাই (খ্ৰিঃ১৪৯৭—১৫৩৯) হিন্দু-সংস্কৃতিত আকৃষ্ট হৈ প্ৰথমতে স্বৰ্গনাৰায়ণ, এই সংস্কৃতিয়া হিন্দু উপাধি গ্ৰহণ কৰে। ইয়েই প্ৰমাণ কৰে—চ্যুডাংফাৰ দিনৰ পৰা চ্যুত্‌মুঙলৈকে, এই এশ বছৰীয়া কালভেৰ্ষত আহোম-ৰাজসভা, ৰাজপৰিয়াল আৰু বিষয়াবৰ্গৰ মাজত ব্ৰাহ্মণ্য-সংস্কৃতি আৰু বৈদিক-ধৰ্মৰ প্ৰভাৱ বহু পৰিমাণে প্ৰসাৰিত হয়।

খ্ৰীষ্টীয় ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ প্ৰথম-দশকতে কামৰূপ-ৰাজ্যত মুচলমানৰ বসতি আৰম্ভ হয় বুলি ঐতিহাসিক তথ্যৰ পৰা জনা যায়। ১২০৬ খ্ৰিঃত বখ্তিয়াৰ খাল্জিয়ে কামৰূপ আক্ৰমণ কৰি পৰাস্ত হৈ পলাই যায়। শিলালিপিৱেও এই তথ্যৰ সাক্ষ্য দিয়ে।^১ তেতিয়া মুচলমান সৈন্য কিছুমান অসমত বন্দী হৈ বয়। অসমত ইচলাম-ধৰ্মী লোকৰ বসতিৰ ইয়েই সূত্ৰপাত।^২ আন এজন ঐতিহাসিকৰ ভাষাত “ বখ্তিয়াৰ যুদ্ধত হাৰি পলায় হয়, কিন্তু তেওঁৰ সৈন্য-সামন্ত গোটেই সাৰিব নোৱাৰিলে। কামৰূপৰ ৰজাই কিছুমানক বন্দী কৰি আনে। পাচে বিপদত পৰি শৰণ মগাত ৰজাই প্ৰাণদণ্ড নকৰি, সিহঁতক গাওঁ-ভূঁই দি, আমাৰ দেশত বসতি কৰিবলৈ দিলে। ৰজাই এই মানুহবিলাকক গৌড় দেশৰ পৰা অহা বাবেই হওক বা মহম্মদ চাহাবুদ্দিন গোৰীৰ পক্ষীয় লোক বুলিয়েই হওক গৰীয়া বুলি মাতিছিল। তাৰ পৰাহে আমাৰ মানুহে মুচলমানক গৰীয়া বোলে।” (আহোমৰ দিন, হিতেশ্বৰ বৰবৰুৱা)। ইয়াৰ পাচত এই শতিকাৰ ভিতৰতে কেইবাবাৰো মুচলমানৰ অসম-আক্ৰমণ হয়। ইয়াৰ ফলস্বৰূপে মুচলমান মানুহৰ সংখ্যাও ক্ৰমশঃ বাঢ়িবলৈ আৰম্ভ হয়।

ওপৰৰ আলোচনাৰ পৰা কব পৰা যায়— ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ প্ৰথমৰ্দ্ধৰ পৰা পঞ্চদশ-শতিকাৰ শেষাংশলৈকে (খ্ৰিঃ ১২২৮— খ্ৰিঃ ১৪৭০), প্ৰায় তিনি শ বছৰীয়া কাল ডোখৰৰ ভিতৰত অসম-ভূমিত শাক্ত আৰু শৈৱ ধৰ্মৰ প্ৰাধান্য থাকিলেও বৈষ্ণৱ ধৰ্মৰ প্ৰবাহো একেবাৰে দুৰ্বল নাছিল। লগে লগে বৌদ্ধ আৰু ইচলাম ধৰ্ময়ো স্থিতি লাভ নকৰাকৈ থকা নাছিল বুলি কব পৰা যায়।

সঙ্গীত

প্ৰাচীন-কালৰে পৰা অসমত সঙ্গীত-কলাই বিশেষ স্থান অধিকাৰ কৰি আহিছে। লোক-সঙ্গীত আৰু শাস্ত্ৰীয়-সঙ্গীত এই দুয়ো শ্ৰেণীৰ সঙ্গীত-চৰ্চাৰ পৰম্পৰা এই ৰাজ্যত সুস্পষ্ট। বিহুগীত, নিচুকনি গীত, ধাই নাম, আই নাম, অপেচৰা-সবাহৰ গীত, বনগীত, দেহবিচাৰৰ গীত আদি কিছুমান লোকগীত উপযুক্ত বিভিন্ন সুৰৰ মাজেদি জনসাধাৰণৰ মুখে মুখে চলি আহিছে। ভাব আৰু ভাষাৰ পৰা বুজা যায়— এই গীতবোৰৰ কিছুমানৰ উদ্ভৱ-কাল অতি প্ৰাচীন, কিছুমান অৱশ্যে আপেক্ষিকভাৱে অৰ্বাচীন। খ্ৰিষ্টীয় চতুৰ্দশ শতিকাও পাৰ হৈ আহি পঞ্চদশ শতিকাতে এই শ্ৰেণীৰ কিছুমান গীত উদ্ভৱ হোৱা বুলি কোনো কোনোৱে ভাবে।

শাস্ত্ৰীয় সঙ্গীতক মাৰ্গ-সঙ্গীতো বোলা হয়। ইয়াৰ শাস্ত্ৰসন্মত বহুত ৰাগ আছে; শাস্ত্ৰব্যৱস্থিত বিভিন্ন তাল-মানৰ দ্বাৰা ই নিয়ন্ত্ৰিত। অসমত এই সঙ্গীত-চৰ্চাৰ পৰম্পৰা-সূত্ৰৰ আগত খ্ৰিষ্টীয় পঞ্চম-ষষ্ঠ শতিকাৰ পৰা পোৱা যায়। ত্ৰয়োদশ—পঞ্চদশ শতিকাৰ সঙ্গীত চৰ্চাৰ আলোচনা প্ৰসঙ্গত ইমান দীঘলীয়া সূত্ৰৰ আঁহ ফলাৰ অৱশ্যে আৱশ্যকতা নাই। তথাপি এই কথাৰ উল্লেখ সমীচীন যে, একাদশ-শতিকাৰ পালবংশী ৰজা ইন্দ্ৰপাল আৰু ৰত্নপালৰ তাম্ৰশাসনৰ পৰা কামৰূপ ৰাজ্যত নৃত্য-গীতৰ প্ৰচলন থকাৰ কথা বুজা যায়। *কালিকা পুৰাণ*তো (৬১ অধ্যায়) নানাবিধ গীত-বাদ্যৰ উল্লেখ আছে। তাত দেৱী-প্ৰতিমা বিসৰ্জন দিয়া শৱৰোৎসৱ প্ৰসঙ্গত কোৱা হৈছে যে ৰাগনিপুণ কুমাৰী, বেশ্যা আৰু নৰ্তকসকলে শঙ্খ, মৃদঙ্গ, পটহ আদি বাদ্যৰ সৈতে গীত গাব লাগে। আন এটা কথা এই যে, চিলাৰায়ে তেওঁৰ *গীত-গোবিন্দ*ৰ টীকা *সাৰৱতী*ত প্ৰসিদ্ধ *সঙ্গীত-দামোদৰ* সহায় লৈছে। ইয়াৰ পৰাও সহজতে বুজা যায় ষোড়শ-শতিকাৰ আগৰে পৰা *সঙ্গীত-দামোদৰ*ৰ প্ৰভাৱ অসমত প্ৰচলিত আছিল। বৌদ্ধ চৰ্যাপদৰ কথাও এই প্ৰসঙ্গত উল্লেখ নকৰিলে নহয়। এই গীতবোৰ দশম-একাদশৰ পৰা ত্ৰয়োদশ শতিকা মানৰ ভিতৰত ৰচিত।

ইয়াৰ ৰচয়িতা কেইবাজনো সিদ্ধপুৰুষ কামৰূপৰ আছিল বুলি প্ৰসিদ্ধি আছে। এই গীতবোৰত নিৰ্দিষ্ট ৰাগ-সংযোগ কৰা আছে। এই ৰাগবোৰৰ ভিতৰত, পটমঞ্জৰী, ওজ্জৰী, ভৈৰৱী, মল্লৰী, শবৰী, মালশী, বৰাডী, ধনসী আদি উল্লেখনীয়। উক্ত ৰাগবিশিষ্ট চৰ্যা-গীতবোৰৰ পৰা জনা যায় যে প্ৰাচীন কামৰূপত মার্গ সঙ্গীতৰ চৰ্চা সুন্দৰভাৱে চলিছিল। ইয়াৰ পৰা পৰৱৰ্তী যুগৰ নিৰ্দিষ্ট বৰগীতৰ উদ্ভৱলৈকে এটা ক্ৰমগতিৰ ধাৰা থকা বুলিবও পাৰি। অসমৰ প্ৰাচীন মন্দিৰ কিছুমানৰ ধ্বংসস্তুপত লক্ষিত হোৱা নৃত্যগীতৰত নৰ-নাৰীৰ মূৰ্তিবিলাকেও এই দিশত আলোকপাত কৰে। তেজপুৰ মহকুমাত ৮ম শতিকাৰ পৰা ১২শ শতিকাৰ ভিতৰত নিৰ্মিত মন্দিৰৰ ধ্বংসাৱশেষত এই ধৰণৰ মূৰ্তি দেখাৰ কথা সৰ্বানন্দ ৰাজকুমাৰে ^১ উল্লেখ কৰিছে। সঙ্গীত-চৰ্চাৰ এনে ধৰণৰ পৰম্পৰাগত প্ৰমাণে ইয়াৰ অৱ্যৱহিত পৰৱৰ্তী কালত, অৰ্থাৎ ত্ৰয়োদশ-চতুৰ্দশ শতিকাত যে শাস্ত্ৰীয়-সঙ্গীতৰ সৃষ্টি আৰু অনুশীলন পূৰ্ণ ৰূপত হৈছিল, সেই কথা বুজায়।

সাহিত্যৰ অন্তৰ্গত কিছু মান কথাষাে ওপৰৰ সিদ্ধান্ত বলবৎ কৰাত সহায়তা কৰে। পীতাম্বৰ দ্বিজ, মনকৰ আৰু দুৰ্গাবৰ— এই তিনিওজন কবি শঙ্কৰদেৱৰ প্ৰায় সমসাময়িক আছিল। পীতাম্বৰৰ *উষা-পৰিণয়* কাব্য, মনকৰৰ *মনসা-কাব্য* আৰু দুৰ্গাবৰৰ *মনসা-কাব্য* আৰু *গীতি-ৰামায়ণ*ৰ কথা আমাৰ এই প্ৰসঙ্গত বিচাৰ্য। শঙ্কৰদেৱৰ বহুকাল আগৰে পৰা যি ওজাপালি নৃত্য-গীতৰ প্ৰচলন আছিল, সেই কলাৰেই অন্যতম সাৰ্থক-সাধকৰূপে পৰৱৰ্তী যুগত দুৰ্গাবৰ খ্যাত আছিল বুলি জনা যায়। তেওঁৰ উক্ত দুয়োখন কাব্যই ৰচনা কৰা হৈছিল বিভিন্ন সুৰত ওজাপালিয়ে গাব পৰাকৈ। দুয়োখন কাব্যৰেই গীতবোৰ গোৱাৰ কাৰণে বিভিন্ন ৰাগ ধৰি দিয়া আছে। *গীতি ৰামায়ণ*ত ৫৭ টা বিভিন্ন ৰাগৰ উল্লেখ আছে। ^{২০} পীতাম্বৰৰ *উষা-পৰিণয়*ৰ অন্তৰ্গত গীতবোৰৰো নিৰ্দিষ্ট ৰাগ বন্ধা আছে। আকৌ, ভিন্ ভিন্ ৰাগ আৰু তাল-মানৰ দ্বাৰা নিয়ন্ত্ৰিত শঙ্কৰদেৱৰ বৰগীতবোৰ উচ্চাঙ্গ শাস্ত্ৰীয় সঙ্গীতৰ অনুপম নিদৰ্শন। পূৰ্বৱৰ্তী আৰু পৰৱৰ্তী পৰম্পৰাগত সঙ্গীত চৰ্চাৰ দুটা যুগৰ মাজত এডোখৰ কাল (অৰ্থাৎ ১৩শ -১৫ শ শতিকা) উকা হৈ থাকিব নোৱাৰে, এই কালডোখৰতো সঙ্গীত চৰ্চাৰ প্ৰবাহ চলিছিল নিশ্চয়।

স্থাপত্য আৰু ভাস্কৰ্য

স্থাপত্য আৰু ভাস্কৰ্য— এই দুয়ো বিধেই নিৰ্মাণ-শিল্প। দুয়ো বিধতেই থাকে অনুভূতিক ৰূপ দিয়াৰ চেষ্টা আৰু শৈল্পিক প্ৰতিভাৰ বিকাশ। মানৱ-সভ্যতাৰ যৈছেজালিৰ

সময়তে দুয়ো বিধ নিৰ্মিতিৰেই উদ্ভৱ হৈছিল বুলিব পাৰি। কিন্তু কোন বিধ আগৰ সৃষ্টি আৰু কোন বিধ পাচৰ সৃষ্টি, এই কথা নিশ্চিতকৈ কোৱা টান। দুয়ো বিধ শিল্পকৰ্মৰ সৃষ্টিতেই আছিল খোদন আৰু সংযোজন। গতিকে আদিম অৱস্থাত এই দুবিধ সৃষ্টিৰ কোন বিধ স্থাপত্য, আৰু কোন বিধ ভাস্কৰ্য এই কথাও থিৰাংকৈ কোৱা নিৰাপদ নহয় যেন লাগে। নৰকে বান্ধি দিয়া কামাখ্যা-মন্দিৰৰ শিলৰ খটখটি প্ৰকৃততাত কোন শ্ৰেণীৰ শৈল্পিক সৃষ্টি, ইয়াৰ নিশ্চিত সিদ্ধান্ত পোৱা টান। সেইদৰে, প্ৰস্তৰ খোদিত বা গুহাৰ মাজত ৰূপ লোৱা অতি প্ৰাচীন ধ্বংস শৈলখণ্ডবোৰ স্থাপত্য নে ভাস্কৰ্য তাক নিৰ্ণয় কৰিবলৈ পুৰাতত্ত্ববিদ বিমোৰত নপৰাকৈ নাথাকে। ভাস্কৰ্য সৃষ্টিত ধৰ্মীয় অনুভূতিৰ প্ৰাধান্য আৰু স্থাপত্যৰ নিৰ্মিত লৌকিক অনুভূতিৰ প্ৰৱণতা থকাটো স্বাভাৱিক যেন লাগে। সেই কাৰণে ভাস্কৰ্যৰ নিদৰ্শনত প্ৰধানভাৱে লক্ষিত হয় বিভিন্ন দেৱ-দেৱীৰ মূৰ্তি বা সেই লেখীয়া খোদনকৃতিত। স্থাপত্যই প্ৰধানভাৱে বুজায় গৃহাদিৰ নিৰ্মিতি। স্থাপত্যক বাস্তৱবিদ্যাও বোলে।

প্ৰাচীন কালত অসম-ভূমি ভাস্কৰ্য আৰু স্থাপত্য বিদ্যাত সমৃদ্ধ আছিল বুলি কব পৰা যায়। এতিয়ালৈকে বিশেষ বিজ্ঞানসন্মত অনুসন্ধান আৰু খননকাৰ্য হ'বলৈ বাকী থকা কাৰণে উক্ত দুয়ো ধৰণৰেই প্ৰাচীন সম্পদবোৰ সম্পূৰ্ণৰূপে উদ্ধাৰ হোৱা নাই। এই দুই শ্ৰেণীৰ যিবোৰ সম্পদ গুৱাহাটীৰ ৰাজ্যিক সংগ্ৰহালয়ত সংৰক্ষিত হৈছে তাৰ বেছিভাগেই পূৰ্ব-আহোমযুগৰ। সম্প্ৰতি আমবাৰীৰ খননকাৰ্য্যো তেনে ধৰণৰ প্ৰাচীন সমৃদ্ধিবৰ্ধক সম্পদৰাজি উদ্ধাৰ কৰিছে আৰু বহুতো যে উদ্ধাৰ হ'ব লগীয়া আছে, তাৰো সূচনা কৰিছে।

যুগল চন্দ্ৰ দাসে এঠাইত লিখিছে “স্থাপত্য আৰু ভাস্কৰ্য শিল্পৰ ক্ষেত্ৰত অসমৰ বুৰঞ্জী তেৰ শতিকাৰ প্ৰথম ভাগৰ পৰা পোন্ধৰ শতিকাৰ মাজ ভাগলৈ কিছু অঙ্ককাৰ যেন লাগে”।^{১১} স্থাপত্যৰ ক্ষেত্ৰত নহলেও বিশেষকৈ ভাস্কৰ্যৰ ক্ষেত্ৰত আমিও এই কথাত একমত। ভাস্কৰ্যৰ নিৰ্মিত ধৰ্মীয় অনুভূতিৰ প্ৰৱণতাৰ কথা আমি ওপৰতে কৈছোঁ। আহোম ৰজাসকলে প্ৰথমাৱস্থাত হিন্দু ধৰ্ম গ্ৰহণ নকৰালৈকে যুদ্ধ-বিগ্ৰহত ব্যতিব্যস্ত হৈ থাকিব লগা হোৱা কাৰণে তেওঁলোকৰ ৰাজত্বৰ প্ৰথম ভাগত সৃষ্ট উল্লেখযোগ্য ভাস্কৰ্যৰ নিদৰ্শন পোৱা নাযায়। হিন্দুধৰ্ম গ্ৰহণ কৰাৰ পাচতহে তেওঁলোকে ৰাজ্যৰ বিভিন্ন ঠাইত মঠ-মন্দিৰ নিৰ্মাণ কৰিবলৈ ধৰে। আহোম-ৰাজত্বৰ আদি ভাগত, অৰ্থাৎ ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ পৰা পঞ্চদশ শতিকাৰ শেষাংশলৈকে কালডোখৰত কিছুমান স্থপতিকৰ্ম হোৱা বুলি ঐতিহাসিক তথ্যৰ

পৰা বুজা যায়। চ্যুকাফাই কেইবা ঠাইতো অস্থায়ী ৰাজধানী পাঠে শেষত ১২৫৩ খ্ৰিঃ ত চৰাইদেউত নগৰ স্থাপন কৰে।^{১২} চ্যুডাংফাই (১৩৯৭-১৪০৭ খ্ৰিঃ) চৰাইদেউৰ পৰা ৰাজধানী তুলি নি তাক চৰগুৱাত স্থাপন কৰে, আৰু তেওঁৰ বৰগোহাঞি ডাঙৰীয়াই আহোম ৰাজ্যৰ সীমাত নিজৰ মূৰ্তি নিৰ্মাণ কৰায়।^{১৩} চ্যুচেংফা স্বৰ্গদেৱে আকৌ ১৪৮০ খ্ৰিঃত নাগশঙ্কৰ দৌল নিৰ্মাণ কৰায়।^{১৪} বখ্তিয়াৰ খাল্জিয়ে অসম আক্ৰমণ কৰোঁতে কৰতোয়াৰ ওপৰত থকা (কৰতোয়া কামৰূপ-ৰাজ্যৰ পশ্চিম সীমা) এখন ডাঙৰ দলং পাৰ হৈ এই কামৰূপ ৰাজ্য সোমাইছিল (He crossed the river by a bridge of twenty nine arches of hewn stone)^{১৫} এই তথ্য হিতেশ্বৰ বৰবৰুৱাৰ ভাষাত “ওও (বখ্তিয়াৰ খাল্জি) ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ পশ্চিম পাৰে দহ দিন উজাই আহি এটা শিলৰ সাঁকো পায়হি। সেই শিলৰ সাঁকোৰ দক্ষিণ পাৰে আহি এটা পৰ্বতৰ মাজত পৰেহি।”^{১৬} আকৌ পূৰ্বৰ পৰা চলি অহা তাম্ৰেশ্বৰী মন্দিৰৰ ভগ্নস্তুপৰ ওপৰত চুতীয়া-ৰজাসকলৰ ৰাজত্ব কালত, অৰ্থাৎ আনুমানিক ১৫শ শতিকা মানত তাম্ৰপুত্ৰৰ দ্বাৰা তাম্ৰেশ্বৰী মন্দিৰ নিৰ্মাণ কৰা হয়। এই সকলো ১৩শ আৰু ১৫শ শতিকাৰ ভিতৰত সৃষ্টি হোৱা স্থপতিকৰ্মৰ উল্লেখযোগ্য নিদৰ্শন।

চতুৰ্দশ-পঞ্চদশ শতিকাৰ স্থপতি-কলাৰ কিছু আভাস আমাৰ সাহিত্যৰ যোগেদিও পোৱা যায়। মাধৱ কন্দলীয়ে দিয়া ৰামৰ প্ৰাসাদৰ বৰ্ণনা, হৰিবৰ বিপ্ৰৰ কাব্যৰ অন্তৰ্গত ৰাজকাৰেঙৰ বৰ্ণনা আদিয়ে এই দিশত কিছু নহয় কিছু আলোকপাত নকৰাকৈ নাথাকে।

চিত্ৰশিল্প

চিত্ৰশিল্পৰ চৰ্চাৰ আৰু ইয়াৰ সৃষ্টি অসমত প্ৰাচীন-কালৰে পৰা আছিল বুলি জনা যায়। বেছি আগলৈ নাযাবেই, কামৰূপৰ সপ্তম-শতিকাৰ ৰজা ভাস্কৰবৰ্মাই কনৌজৰ ৰজা হৰ্ষৱৰ্ধন শিলাদিত্যলৈ পঠোৱা উপটোকনসমূহৰ মাজতেই ইয়াৰ উৎকৃষ্ট নিদৰ্শন পোৱা যায়। সেই উপটোকনসমূহৰ মাজত আছিল “সাঁচি গছৰ বাকলিৰ পৰা প্ৰস্তুত কৰা পকা তিয়ঁহৰ বৰণৰ এজাপ সুন্দৰ পুথিৰ পাত, ছবি অঁকা তুলিকা আৰু ৰংথোৱা শুকান লাউৰ পাত্ৰৰ সৈতে ছবি থবৰ বাবে পাতল কাঠৰ পাত লগোৱা ফুলকটা বাকচ”।^{১৭} সপ্তম শতিকাতে উৎকৃষ্ট চিত্ৰশিল্পৰ চৰ্চা আৰু প্ৰচলনৰ ই বিশেষ প্ৰমাণ। এনেকুৱা পৰম্পৰা ভৱিষ্যতলৈ চলি নথকা বুলি কব

নোৱাৰি। অৱশ্যে এই কথা ঠিক ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ পৰা পঞ্চম শতিকাৰ ভিতৰত চিত্ৰশিল্প সৃষ্টিৰ প্ৰাচুৰ্য লক্ষ্য কৰা নাযায়। ইয়াৰ প্ৰাচুৰ্য্য লক্ষ্য কৰা যায় খ্ৰিষ্টীয় ১৭শ শতিকাৰ পাচৰ পৰাহে। সেই দিনত নানা বিধ অৰ্থপূৰ্ণ চিত্ৰ অঁকা হৈছিল সাঁচিপাতত, বিশেষকৈ সাঁচিপতীয়া আৰু তুলাপতীয়া পুথি বোৰত।

সাঁচি গছৰ পৰা এটা বিশেষ পদ্ধতিৰ মাজেদি সাঁচিপাত তৈয়াৰ কৰা হৈছিল। সাঁচিপাত তৈয়াৰ কৰা পদ্ধতিৰ বিবৰণ গেইট চাহাবে তেওঁৰ অসম-বুৰঞ্জীত^{১৬} দি গৈছে। তুলাপাত তৈয়াৰ কৰা হৈছিল বিশেষ প্ৰক্ৰিয়া অৱলম্বন কৰি কপাহৰ পৰা। তুলাপাততকৈ সাঁচিপাত অধিক কাল স্থায়ী হৈছিল। বোধহয় সেই কাৰণেই বেছি মূল্যৱান পুথিবোৰ লিখা হৈছিল আৰু চিত্ৰবোৰৰ অঁকা হৈছিল সাঁচিপাতত। আপেক্ষিকভাৱে নিম্ন খাপৰ পুথি, চিঠি-পত্ৰ আৰু ৰজাঘৰীয়া কথাবোৰ তুলাপাতত লিখা হৈছিল।^{১৭} সাঁচিপাতবোৰ পুথি লিখাৰ কাৰণে আকৃতি ডাঙৰ সৰু কৰা হৈছিল। ১' ৯" দীঘল আৰু ৬" পুতলৰ পৰা মাত্ৰ ৩" দীঘল আৰু ১" তকৈ অলপ বেছি পুতলৰ সাঁচি পাত দেখা গৈছে। সাধাৰণতে মহাভাৰত, ৰামায়ণ, ভাগৱত বা আন আন ধৰ্মশাস্ত্ৰবোৰ লিখা হৈছিল ডাঙৰ পাতত। মূল্যৱান গ্ৰন্থ লিখা ডাঙৰ পাতবোৰৰ মধ্য ভাগত এটা ফুটা থাকে, আৰু তাৰ মাজেদি এডাল জৰী সুমাই গোটেইবোৰ পাত আঁত হেৰাব নোৱৰাকৈ বান্ধি ৰখা হয়। গুৰুত্বপূৰ্ণ বিষয়ৰ ডাঙৰ পাতৰ পুথিবোৰৰ পাতবিলাকৰ চাৰিওফালে, কিছুমানৰ আকৌ মধ্য ভাগতো, নানা ৰঙৰ অতীৰ সুন্দৰ কলাত্মক কাৰুকাৰ্য কৰা হয়। কিছুমান পুথিৰ চিত্ৰশিল্পৰ মাজত পুথিৰ বিষয়বস্তু সূচিত চিত্ৰ আৰু নানা বিধ ফুল উজলি উঠাৰ লগতে পুথিৰ বিষয়বস্তুৰ লগত সম্বন্ধ থকা দেৱ-দেৱীৰ ছবি অঙ্কিত হয়। দুটা উকা সাঁচিপাত তলে-ওপৰে দি তাৰ জৰীৰে মেৰিয়াই বিশেষকৈ ডাঙৰ পুথিবোৰ খাপক্খাপে থোৱা একোটা কাঠৰ বাকচত সুমাই থোৱা হয়। সেই বাকচবোৰৰ সুৰঙ্গত একোখন ঢাকনিও থাকে। এই বাকচবোৰৰ চাৰিও বেৰত আৰু ঢাকনিৰো ওপৰ ফালত নানা বিধ কাৰুকাৰ্য কৰা থাকে। কিছুমান বাকচৰ এনেধৰণৰ কাৰুকাৰ্য উপযুক্ত ৰঙেৰে জাতিষ্কাৰ কৰাও হয়। পুথিৰ পাতৰ ওপৰত চিত্ৰাঙ্কন কৰা আৰু বাকচৰ ওপৰত ফুলকটা দস্তৰ অৱশ্যে আহোম-ৰাজত্বৰ শেষৰ ফালে ব্যাপক হৈ উঠিছিল বুলি বুজা যায়। সপ্তদশ আৰু অষ্টাদশ শতিকাত আহোম-ৰজাসকলে পুথি ৰচনা আৰু চিত্ৰকলা চৰ্চাৰ পৃষ্ঠপোষকতা কৰাটো ইয়াৰ অন্যতম কাৰণ বুলি ধৰিব পাৰি। ৰজাঘৰীয়া পৃষ্ঠপোষকতা লাভ কৰি বহুত পণ্ডিত লোকে নানা বিধ ব্যৱহাৰিক গ্ৰন্থ

আৰু কাব্যাদি লৌকিক শাস্ত্ৰৰো সৃষ্টি কৰিবলৈ ধৰে। আন হাতেদি সৰুসুহুত পুৰাণাদি বহুত ধৰ্মশাস্ত্ৰ অসমীয়াত ৰচনা কৰাৰ প্ৰৱণতা বাঢ়ে। আগত লিখা বহুত পুথিৰ একাধিক প্ৰতিলিপিও এই যুগত কৰা হয়। পুথিবোৰৰ বিষয়বস্তু প্ৰকাশক নানান চিত্ৰ পুথিৰ পাতে পাতে অঁকা হৈছিল। এইদৰে আমাৰ উত্তৰ-বৈষ্ণৱ-যুগত সাহিত্যৰ প্ৰসাৰণ ঘটাব লগতে চিত্ৰ শিল্পৰো সম্প্ৰসাৰণ হয়।

ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ পৰা পঞ্চদশ শতিকাৰ ভিতৰত সেইবুলি চিত্ৰশিল্পৰ সাধনা নাছিল, বা সেই শিল্পৰ সৃষ্টি হোৱা নাছিল, এই কথা নহয়। চৰিত-পুথিৰ^{১০} পৰা আমি জানিব পাৰোঁ— শঙ্কৰদেৱে ১৯ বছৰ বয়সত অৰ্থাৎ ১৪৬৮ খ্ৰিঃত সাত বৈকুণ্ঠৰ চিত্ৰ আঁকি “চিহ্ন-যাত্ৰা”ৰ সৃষ্টি কৰে— “বৈকুণ্ঠ নগৰ, পটত লেখিয়া, অঙ্ক কৰিলিস্ত তাৰ”। এই কৃতি পঞ্চদশ শতিকাৰ সপ্তম-দশকৰ চিত্ৰশিল্পৰ অনুপম নিদৰ্শন। জীৱনৰ শেষৰ ফালে শঙ্কৰদেৱে তুলাপাতত হেঙুল-হাইতালেৰে অঁকা এটা হাতীৰ ছবি মহাৰাজ নৰনাৰায়ণক উপহাৰ দিয়ে। শ্ৰীকৃষ্ণৰ বৃন্দাবনী লীলাৰ ছবি থকা দুকুৰিহতীয়া এখন কাপোৰ তেওঁ বৈ উলিয়াইছিল বুলি জনা যায়। মহাপুৰুষৰ জীৱন কালৰ এইবোৰ অনুপম চিত্ৰশিল্প।

হৰিবৰ বিপ্ৰই বৰুৱাহনৰ যুদ্ধত মণিপুৰ নগৰৰ বিবৰণ দিওঁতে তাৰ ঘৰ-দুৱাৰৰ বৰ্ণনা দিছে। সেই প্ৰসঙ্গত কবিয়ে ঘৰৰ বেৰবোৰত থকা চিত্ৰকৰ্মৰ যি বৰ্ণনা দিছে সিও কবিৰ সমসাময়িক সমাজত প্ৰচলিত চিত্ৰবিদ্যাৰ নিদৰ্শন। কবি পীতাম্বৰ উষা-পৰিণয় কাব্যত চিত্ৰলেখাৰ চিত্ৰাঙ্কনৰ কথা কোৱা হৈছে। এই আভাস খিল-হৰিবংশৰ পৰা লোৱা হলেও কবিৰ স্বকীয় সৃষ্টিক্ষমতাই তাক সজীৱ কৰি তুলিব নোৱাৰিলেহেঁতেন যদিহে সমসাময়িক সমাজত চিত্ৰ বিদ্যাৰ চৰ্চা নাথাকিল হেতেন। কবি দুৰ্গাবৰে তেওঁৰ গীতি-ৰামায়ণত অনুপম সুন্দৰ দেহৰ বৰ্ণনা দিবলৈ গৈ একাধিক স্থানত সীতাক চিত্ৰৰ পুতলী বুলি কৈছে। ইয়াৰ দ্বাৰা বুজা যায় সমাজত থকা সুন্দৰ নাৰী মূৰ্তিৰ চিত্ৰৰ দ্বাৰা কবি প্ৰভাৱিত হৈছে।

— ড° হৰিনাথ শৰ্মা দলৈ

সহায়ক গ্ৰন্থ :

১। (ক) পদ্মনাথ গোহাঞিবৰুৱা, অসমৰ বুৰঞ্জী

(খ) ড° সূৰ্য্যকুমাৰ ভূঞা (সম্পা), দেওখাই অসম বুৰঞ্জীৰ অন্তৰ্গত বাঁহগৰীয়া বুঢ়াগোহাঞিৰ বুৰঞ্জী

- ২। ড° শৰ্মাদলৈ, অসমত শক্তি-সাধনা আৰু শক্তি-সাহিত্য অধ্যায়
- ৩। The Kamarupa kings probably after Dharmapala adopted Tantrikism as their tenet, and as a result of this royal patronage, Kamarupa soon became a renowned center of Tantric scarifices, mysticism and sorcery. – *Early History of Kamarupa*, Ch. VII
- ৪। ড° শৰ্মাদলৈ, অসমত শক্তি-সাধনা আৰু শক্তি-সাহিত্য।
- ৫। বহলাই জানিবৰ কাৰণে ড° শৰ্মাদলৈ, অসমত শক্তি-সাধনা আৰু শক্তি-সাহিত্য (৯ম অধ্যায়) দ্ৰষ্টব্য।
- ৬। দ্ৰষ্টব্য : ড° শৰ্মাদলৈ 'যোগিনী-তন্ত্ৰত বিষ্ণু-উপাসনা' (অসম সাহিত্য-সভা পত্ৰিকা, ১ম সংখ্যা ১৯৭৯)
- ৭। কানাই বৰশীবোৱা শিলৰ ফলি (১১২৭ শক)
- ৮। (ক) পদ্মনাথ গোহাঞি বৰুৱা, অসমৰ বুৰঞ্জী, অধ্যায় ৬
(খ) E. Gait. *A History of Assam*
- ৯। ইতিহাসে সোঁৱৰা ছশ-বছৰ, ৩ অধ্যায়
- ১০। ড° মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পা), গীতি - ৰামায়ণৰ ভূমিকা
- ১১। (ক) স্থাপত্য আৰু ভাস্কৰ্য্য (অসম গৌৰৱ)
- ১২। পদ্মনাথ গোহাঞি বৰুৱা (ক) অসমৰ বুৰঞ্জী
(খ) হিতেশ্বৰ বৰবৰুৱা আহোমৰ দিন
- ১৩। সৰ্বানন্দ ৰাজকুমাৰ, ইতিহাসে সোঁৱৰা ছশ বছৰ
- ১৪। সৰ্বানন্দ ৰাজকুমাৰ, ইতিহাসে সোঁৱৰা ছশ বছৰ
- ১৫। E Gait. *A History of Assam*.
- ১৬। হিতেশ্বৰ বৰবৰুৱা, আহোমৰ দিন
- ১৭। ড° মহেশ্বৰ নেওগ, পুৰণি অসমৰ চিত্ৰকলা
- ১৮। *A History of Assam*, Appendix D.
- ১৯। 'Assamese Manuscripts', *Studies in Literature of Assam* by Dr. S. K. Bhuyan.
- ২০। ৰামচৰণ ঠাকুৰৰ শঙ্কৰ-চৰিত

চতুৰ্থ অধ্যায়

অসমীয়া ভাষাৰ বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস (আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ চনলৈ)

(ক)

১। ভাৰতৰ একেবাৰে পূব-প্ৰান্তত কথিত নব্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাটোৱেই অসমীয়া ভাষা। অসমৰ বিস্তৃত ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকাত এই ভাষাটো প্ৰধানকৈ কোৱা হয়। অসমৰ ওচৰ-পাঁজৰত থকা মেঘালয়, নাগালেণ্ড, আৰু অৰুণাচল প্ৰদেশতো অসমীয়া ভাষাৰ প্ৰচলন আছে। অৰুণাচলৰ বিভিন্ন ভাষা-ভাষীৰ মাজত পাৰস্পৰিক ভাৱ-বিনিময়ৰ একমাত্ৰ ভাষা হৈছে অসমীয়া। নাগালেণ্ডত অসমীয়াৰ এটা মিশ্ৰিত ৰূপ (নাগামিজ) সাৰ্বজনীন-ভাষাৰূপে ব্যৱহৃত হৈছে। ভাষাক সাধাৰণতে নৈৰ লগত তুলনা কৰা হয়। অসমীয়া ভাষাৰ প্ৰথম প্ৰকাশিত অভিধান-ৰচক মাইলচ ব্ৰনচনে পুথিখনৰ পাতনিত এইদৰে লিখিছিলঃ “অচমিয়া ভাষা ব্ৰহ্মপুত্ৰ নদীৰ সোঁতৰ নিচিনাকৈ ৰাজ্যৰ মাজত একেদৰে চলি আছে আৰু আগলৈকো চলিব।” এখন নৈৰ এটা মূল-প্ৰবাহ থাকে। তাত ঠায়ে ঠায়ে বহুতো উপনৈ আহি লগ লাগি মূল-প্ৰবাহক পৰিপুষ্ট কৰে। কেতিয়াবা নৈৰ গতিও আন ফালে বয়। তেনেদৰে এটা ভাষাৰ মূল-প্ৰবাহৰ লগত আন আন ভাষাৰ প্ৰবাহ মিহলি হোৱাৰ ফলত ভাষাটোৱে সুকীয়া ৰূপ লোৱা একো নতুন কথা নহয়। অসমীয়া ভাষাৰ আঁতি-গুৰি বিচাৰি গ’লে ইয়াৰ সুন্দৰ প্ৰমাণ পোৱা যায়।

২। নব্য-ভাৰতীয় আৰ্যভাষা হিচাপে অসমীয়া ভাষাটো যথেষ্ট প্ৰাচীন ভাষা। ইয়াৰ প্ৰাচীনত্বৰ বুজ ল’বলৈ হ’লে ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ বুৰঞ্জী চাব লাগিব। ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ বুৰঞ্জীক সাধাৰণতে তিনিটা ভাগত ভগোৱা হয় : (ক) প্ৰাচীন ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষা। (খ) মধ্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষা, আৰু (গ) নব্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষা। প্ৰাচীন-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ সময় খ্ৰিষ্টপূৰ্ব দ্বাদশ শতিকাৰ পৰা খ্ৰিষ্টপূৰ্ব ষষ্ঠ শতিকালৈ। মধ্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ সময় খ্ৰিষ্টপূৰ্ব ষষ্ঠ শতিকাৰ

পৰা দশম শতিকা পৰ্যন্ত। নব্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ সময় খ্ৰিষ্টীয় দশম শতিকাৰ পৰা। মধ্য ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাক আৰু তিনিটা স্তৰত বিভক্ত কৰা হয়। প্ৰথম স্তৰৰ সময় খ্ৰিষ্টপূৰ্ব ষষ্ঠ শতিকাৰ পৰা খ্ৰিষ্টীয় প্ৰথম শতিকালৈ। দ্বিতীয় স্তৰৰ সময় খ্ৰিষ্টীয় প্ৰথম শতিকাৰ পৰা ষষ্ঠ শতিকালৈ আৰু তৃতীয় স্তৰৰ সময় খ্ৰিষ্টীয় ষষ্ঠ শতিকাৰ পৰা দশম শতিকালৈ। প্ৰথম স্তৰৰ প্ৰধান নিদৰ্শন পোৱা হৈছে অশোকৰ শিলালিপিত, খ্ৰিষ্টপূৰ্ব শতিকাৰ আন শিলালিপিত, আৰু বৌদ্ধসকলৰ পালি গ্ৰন্থত। দ্বিতীয় স্তৰৰ নিদৰ্শন পোৱা যায় খ্ৰিষ্টীয় প্ৰথম তিনি শতিকাৰ শিলালিপিত, সাহিত্যিক প্ৰাকৃতত (মাহাৰাষ্ট্ৰী, শৌৰসেনী, মাগধী, অৰ্ধমাগধী, পৈশাচী) আৰু বৌদ্ধ সংস্কৃতত। তৃতীয় স্তৰৰ নিদৰ্শন আছে অপভ্ৰংশ আৰু অপভ্ৰষ্টত।

৩। অপভ্ৰংশ শব্দটো বিভিন্ন পৰিস্থিতিত বিভিন্ন অৰ্থত ব্যৱহৃত হৈছে। ইয়াৰ প্ৰয়োগ পোন প্ৰথমে পতঞ্জলিৰ (খ্ৰিষ্টপূৰ্ব প্ৰথম শতিকা) মহাভাষ্যত পোৱা হয়। মাৰ্কণ্ডেয়ই নাগৰ, ব্ৰাচড়, আৰু উপনাগৰ এই তিনিবিধ অপভ্ৰংশৰ কথা কৈছে। পতঞ্জলিৰ মতে সংস্কৃত ‘শাস্ত্ৰ-জনাংসকলৰ শুদ্ধ ভাষা’ আৰু অপভ্ৰংশ ‘শাস্ত্ৰ-নজনাবোৰৰ অশুদ্ধ ভাষা’। প্ৰাকৃত বৈয়াকৰণসকলৰ অপভ্ৰংশয়ো পতঞ্জলিৰ সংজ্ঞা অনুসৰণ কৰে। গ্ৰিয়ার্চনকে আদি কৰি কিছুমান পণ্ডিতে মধ্য ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ শেষ স্তৰক অপভ্ৰংশ নাম দিছে। “মধ্য ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ যিটো সাৰ্বজনীন ৰূপ অশিষ্ট লোক-সাহিত্যৰ বাহনৰূপে দেখা দিছিল সিয়ে অপভ্ৰংশ বা প্ৰাচীন অপভ্ৰংশ। এই প্ৰাচীন অপভ্ৰংশৰ যি অৰ্বাচীন ৰূপটো আধুনিক ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ জনক বা পূৰ্বাৱস্থা সিয়ে অপভ্ৰংশ বা প্ৰাচীন অপভ্ৰংশ। এই প্ৰাচীন অপভ্ৰংশৰ যি অৰ্বাচীন ৰূপটো আধুনিক ভাৰতীয় আৰ্য ভাষাৰ জনক বা পূৰ্বাৱস্থা সিয়ে অপভ্ৰষ্ট বা অৱহট্ট, অৰ্থাৎ অৰ্বাচীন অপভ্ৰংশ’। অপভ্ৰংশই আভীৰ উপভাষাৰূপে থকা নিম্ন স্তৰৰ পৰা খ্ৰিষ্টীয় তৃতীয়-ষষ্ঠ শতিকাত উচ্চ স্তৰৰ সাহিত্যিক ভাষাৰূপে ক্ৰমে উন্নতি লাভ কৰে। শতাব্দীৰ পাচত শতাব্দী অতিবাহিত হোৱাৰ লগতে অপভ্ৰংশৰ মৰ্যাদাও বাঢ়ি উঠে আৰু দশম শতিকাত সংস্কৃত আৰু প্ৰাকৃতৰ নিচিনা সমান মৰ্যাদাপ্ৰাপ্ত হয়।” ২

৪। নব্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাবোৰক কিছুমান প্ৰাকৃত বা সেইবোৰৰ পৰৱৰ্তী অপভ্ৰংশ পৰা উদ্ভৱ হোৱা ভাৱেও দেখুৱা হয়, যেনে- মাহাৰাষ্ট্ৰীৰ পৰা মাৰাঠী, শৌৰসেনীৰ পৰা পশ্চিমী হিন্দী, ৰাজস্থানী, গুজৰাটী; মাগধীৰ পৰা ভোজপুৰী, মৈথিলী, মগহী, বঙলা, উড়িয়া, অসমীয়া; অৰ্ধমাগধীৰ পৰা পূৰ্ব হিন্দী; শৌৰসেনীৰ দ্বাৰা প্ৰভাৱিত পাহাৰী, পাঞ্জাবী আদি। গ্ৰিয়ার্চনে “প্ৰত্যেক প্ৰাদেশিক প্ৰাকৃত আৰু আধুনিক কথা ভাষাৰ মধ্যৱৰ্তী একোটা ‘অপভ্ৰংশ’ৰ কল্পনা কৰি ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ ইতিহাস ৰচনা কৰিছিল।” কিন্তু আটাইবোৰ প্ৰাকৃত বা সেইবোৰৰ পৰৱৰ্তী

“অপভ্ৰংশ”ৰ নিদৰ্শন একে পৰ্যায়ত পোৱা হোৱা নাই। বিশেষকৈ মাগধী প্ৰাকৃত বা অপভ্ৰংশৰ বিস্তৃত নিদৰ্শনৰ অভাৱ পৰিলক্ষিত হয়। প্ৰত্যেকটো নব্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ পূৰ্বৱৰ্তী একোটা অপভ্ৰংশ-স্তৰ থকা কথাটোও সকলো পণ্ডিতে স্বীকাৰ কৰিব নোখোজে। ইপিনে নব্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাবোৰৰ কোনো এটাকৈ বিশেষ এবিধ প্ৰাকৃত বা অপভ্ৰংশৰ পৰিণতি বুলি কোৱাও টান। “নব্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাবোৰক মধ্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ পৰা উদ্ভৱ হোৱা বুলি ধৰা হৈছে। এনে ধৰণৰ বহল দৃষ্টিৰ পিনৰ পৰাহে সত্য। আমাৰ হাতত থকা তথ্য-পাতিৰ সহায়ত যি কোনো এটা জনা মধ্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰে সৈতে কোনো এটা বা অধিক নব্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাক পোনপটীয়াভাৱে সম্বন্ধিত বুলি সিদ্ধান্তলৈ আহিব নোৱাৰি।” এই সন্দৰ্ভত তলৰ উক্তি দুটাও মন কৰিব লগীয়াঃ (ক) “অপভ্ৰংশ সাহিত্যক তিনিটা আঞ্চলিক ৰূপত ভাগ কৰা হৈছে : পূব, পশ্চিম, আৰু দক্ষিণৰ অপভ্ৰংশ। বৰ্তমান সময়ত পশ্চিম অঞ্চলৰ অপভ্ৰংশৰ পৰা হিন্দী আৰু গুজৰাটী ভাষাৰ সৃষ্টি হৈছে। বঙলা আৰু আন মাগধী ভাষাবোৰ পূৰ্ব-অপভ্ৰংশৰ অঞ্চলত কোৱা হয়। মাৰাঠী দক্ষিণ অপভ্ৰংশৰ অঞ্চলৰ পৰে। প্ৰাচীন কালত ভাষাবোৰ মাজত পাৰস্পৰিক ধাৰ এনে ধৰণে চলিছিল যে প্ৰাচীন আঞ্চলিক পাৰ্থক্যসূচক বৈশিষ্ট্যবোৰৰ সহায়ত অপভ্ৰংশ-সাহিত্যক বিচাৰ কৰি বৰ্তমানৰ আঞ্চলিক পাৰ্থক্যবোৰ উলিয়াব নোৱাৰি।”^৪ আকৌ “নব্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ উদ্ভৱ-পশ্চিমৰ উপভাষাত ‘ৰ’ ধ্বনিৰ প্ৰাধান্য আছিল। মাগধী ভাষা প্ৰধানকৈ ‘ল’ ধ্বনি সামৰি লয়। সময়ত অৰ্থাৎ প্ৰথম মধ্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ যুগত এই উপভাষাই ‘ল’ ধ্বনি সামৰি লয়। তেনেকৈ কিছুমান প্ৰভাৱৰ ফলত মগধীয় ভাষায়ো ‘ৰ’ ধ্বনি অন্তৰ্ভুক্ত কৰে”^৫।

৫। অসমীয়া ভাষাটোক সচৰাচৰ মাগধী অপভ্ৰংশৰ পৰা উদ্ভৱ হোৱা বুলি কৈ অহা হৈছে। ডঃ বাণীকান্ত কাকতিয়ে লেখিছে : অসমীয়া ভাষাটো বঙলা ভাষাৰ পৰা ওলোৱা নাই নাইবা ই বঙলা ভাষাৰ এটা মৃত্যুমুখী উপভাষাও নহয়। অসমীয়া ভাষাটো বঙলাৰ সৈতে সম্পৰ্ক থকা এটা সুকীয়া ভাষা। বঙলা আৰু অসমীয়া দুয়োটা ভাষাই এক মান্য মাগধী অপভ্ৰংশৰ উপভাষা।^৬ এনে উক্তিৰ দ্বাৰা অসমীয়া ভাষাটোৰ জন্ম-কাল দশম শতিকাৰ পাচৰ বুলি ধাৰণা হোৱাটো স্বাভাৱিক। অসমীয়া ভাষাৰ ইতিহাসে কিন্তু কথাটো সমৰ্থন নজনায়। অসমীয়া ভাষাটো মূলতঃ মগধীয় ভাষা। মগধ-বিদেহ-অঞ্চলৰ পৰা আহি উদ্ভৱ-বঙ্গৰ মাজেদি আৰ্য-

ভাষাই প্ৰাচীন কামৰূপত প্ৰৱেশ কৰে আৰু সপ্তম শতিকামানৰে পৰা অসমৰ সুকীয়া ভাষাকৈ গঢ় লয়। হিউৱেন চাঙৰ বিৱৰণিয়ে ইয়াৰ প্ৰমাণ : “তেওঁলোকৰ (কামৰূপৰ মানুহৰ) ভাষা মধ্য-ভাৰতৰ ভাষাতকৈ অলপ বেলেগ।” হিউৱেন চাঙৰ এই উক্তিৰে অসমীয়া ভাষা সম্পৰ্কীয় প্ৰথম উক্তি। এই উক্তিৰে অসমীয়া ভাষাৰ মগধীয় ভাষাৰে সৈতে সম্পৰ্ক স্পষ্টভাৱে দেখুৱায়। গ্ৰিয়ার্চনৰ ভাষাত “মগধৰ পৰা মগধী প্ৰাকৃতে তিনি দিশলৈ গতি কৰিছে। দক্ষিণৰ পিনে ই উড়িয়া ভাষাত পৰিণত হৈছে। দক্ষিণ-পূবৰ পিনে ই প্ৰথমতে পশ্চিম আৰু পিচত পূব বঙলা আৰু পূবৰ পিনে প্ৰথমতে উত্তৰ-বঙলা আৰু পিছত অসমীয়াৰ ৰূপ লৈছে”।

৬। হিউৱেন চাঙৰ উক্তিৰে মগধীয় ভাষাটোৱে অসমত সুকীয়া গঢ় লোৱা কথাৰ ইঙ্গিত দিয়ে। পিচত প্ৰাচীন কামৰূপৰ হিন্দু ৰজাসকলৰ (ষষ্ঠ-সপ্তম শতিকাৰ পৰা দ্বাদশ শতিকালৈ) তামৰ ফলিৰ ভাষাই সেই ভাষাটোৰ ৰূপটো আৰু স্পষ্ট কৰি তোলে। এই তামৰ ফলিবোৰত অসমৰ কিছুমান ঠাইৰ নাম, কিছুমান অসমীয়া গছ-গছনিৰ নাম, মানুহৰ নাম, অসমীয়া আন শব্দ আৰু অসমীয়া ভাষাৰ বৈশিষ্ট্যসূচক ধ্বনিতাত্ত্বিক আৰু ৰূপতাত্ত্বিক নিদৰ্শন কিছুমান সংৰক্ষিত হৈ অসমত সুকীয়া প্ৰাকৃত এটাই গঢ় লোৱাৰ প্ৰমাণ দাঙি ধৰিছে। পণ্ডিতসকলে ইয়াক ‘কামৰূপী প্ৰাকৃত’ নামেৰে অভিহিত কৰিছে। ইয়াৰ নিদৰ্শন কিছুমান তলত উল্লেখ কৰা হ’ল।

(১) মানুহৰ নাম-বুজোৱা শব্দ : অনি, ঢনি, সনি, কালিয়া, পুণ্ডো, অৱধি, কেৱৰ্ত্ত।

(২) ঠাইৰ নাম-বুজোৱা শব্দ : দক্ষিণপাট, মাক্খিয়ান, পণ্ডৰী, হাটপ্লেস্বৰ।

(৩) পুখুৰী আৰু নৈৰ নাম-বুজোৱা শব্দ : সোকাড়ি (পুখুৰী), চম্বালা (জান), জৌগল্ল (নদী), সিঙ্গড়ি (নদী)।

(৪) গছ-গছনিৰ নাম বুজোৱা শব্দ : ওড়িঅম্ম (উৰিআম), কণ্টাফল (কাঁঠাল), কণ্টাৱকড় (বকড় ‘বগৰী’), কাশিল্ল (কাশিশ্বলা (‘কুঁহিমালা’), ঝৰি, জাটি (জৰী), পাকটী (পাকৰী), জাটলী, জিঙ্গনী (জিঙ্গিনী), বহুআল (ও-টেঙা, বহু > ও), সুৱৰ্ণদাৰু (সোণাৰু), বৰুণ, হিজল, পাৰলি (ফুল), লহুচ, লোচন, ডুম্বৰী (ডিমৰু)।

(৫) অন্যান্য শব্দ : অম্ম, আম্ম (আম), কণ্টা (কাম, কটা, কাঁটা ; মা অস. কাঁইট), কুঁৱা (কুঁৱা) খোড়া ‘মূৰ নথকা’ (কাম. খাড়া-মূৰা), জাণ

(জান), জোল (জান), ডোব্‌ডি (ডুবি) ডোল, নাক (নাক), ডিঠি (মেলটি), মুণ্ডা (মুঢ়া), বেৰ (বেঁকা), সোন্ত (কাম সতা, মা অস. সোঁত), হড়ি (হাড়ী)^২। আকৌ ডটাৰক (প. অস. ভাতাৰ, ভতাৰ, > হস্থি (কাম. হাথী মা অস. হাতী)।

(৬) ধ্বনিমূলক নিদৰ্শন : (ক) স্বৰ-ধ্বনিৰ হ্রস্ব-দীৰ্ঘ ৰূপৰ পাৰ্থক্যাহীনতাঃ ময়ূৰ > ময়ুৰ, ঈশ্বৰ > ইশ্বৰ, স্বামী > স্বামি, (আটাইবোৰ ভাস্কৰৰমাৰ তামৰ ফলিত) ; স্থলী > স্থলি (ৰত্নপাল, দুকূল > দুকুল (ৰত্নপাল, সুকৰি > সুকৰী, ইন্দ্রপাল) ; কামৰূপ (ধৰ্মপাল)।

(খ) স্বৰ-সমীভৱন : পুষ্কৰিণী > পুষ্কিৰিণী। (ভাস্কৰৰমা, ইন্দ্রপাল, ধৰ্মপাল)।

(গ) ব্যঞ্জন-সমীভৱন : প্ৰদ্যুম্ন > প্ৰদ্যুম্ন, কৰ্ণসূৰণ > কৰ্ণসূৰণ, ক্ষেত্ৰ > ক্ষেত্ৰ (ভাস্কৰৰমা) ; সৰ্বা > সৰ্বা (ইন্দ্রপাল) ; সৰ্বান > সৰ্বান্ (ধৰ্মপাল)।

(ঘ) ‘ৱ’ আৰু ‘ব’, ‘য’ আৰু ‘জ’, ‘ড’ আৰু ‘ৰ’, ‘শ, ষ, স’ ৰ এটাৰ ঠাইত আনটোৰ প্ৰয়োগ : বীৰ্য > বীৰজ (ইন্দ্রপাল), যোগেশ্বৰ > জোগেশ্বৰ (ভাস্কৰৰমা; যজুৰ্বেদী > যযুৰ্বেদী (ইন্দ্রপাল) ; ক্ৰীড়ৎ > ক্ৰীৰৎ (বনমাল ; শনি > সনি, সকল > শকল (ইন্দ্রপাল), আসক্তি > আশক্তি, নিষেৰিত > নিসেৰিত (ৰত্নপাল), মখেৰু > মখেসু (ধৰ্মপাল)।

(ঙ) ‘ক্ষ’ৰ ‘খ’ ৰূপত ব্যৱহাৰ : ক্ষিতিমথ > খিতিমথ (ৰত্নপাল)।

(চ) ‘ঔ’ ধ্বনিৰ ঠাইত ‘ও’ ধ্বনিৰ ব্যৱহাৰ : ধৌতেশ্বৰ > ধোতেশ্বৰ, কৌশিকো > কোশিকো (ভাস্কৰৰমা)। তু. সং. ঔষধ > কাম. ওষুধ > ওষুদ।

(ছ) ‘ম’ৰ ঠাইত ‘ন’ আৰু ‘ল’ৰ ঠাইত ‘ন’ : যৌৱনম্ > যৌৱনন্ (বলৰমা); মণ্ডলং > মণ্ডনং (হৰ্জৰমা)।

(জ) ‘হ’ৰ ঠাইত ‘ঘ’ : সিংহাসন > সিংঘাসন (বলৰমা)।

(ঝ) যুক্ত ব্যঞ্জনৰ লোপ : কুট্টিম > কুটিম, তন্ত্ৰ > তন্ত (ইন্দ্রপাল) ; ইথ > ইল্‌থ (ৰত্নপাল)।

(ঞ) স্বৰভক্তিৰ সহায়ত যুক্ত ব্যঞ্জনৰ বিভাজন : শ্ৰী > সিৰি (ইন্দ্রপাল)।

(ট) অল্পপ্ৰাণ-ধ্বনিৰ ঠাইত মহাপ্ৰাণ-ধ্বনি : প্ৰান্ত > প্ৰন্ঠ (ৰত্নপাল); হস্তি > হস্থি (ধৰ্মপাল)।

(ঠ) মূৰ্ধন্য ধ্বনিৰ ঠাইত দন্ত্য ধ্বনি : বিষ্ণু > বিষ্ণু (ৰত্নপাল)।

(৭) ৰূপতাত্ত্বিক নিদৰ্শন : কামৰূপী প্ৰাকৃতত ৰূপতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্য তেনেধৰণে পোৱা নাযায়; অৱশ্যে সপ্তম শতিকাৰ ভাস্কৰৱৰ্মাৰ তামৰ ফলিৰ ‘কালিয়া’ শব্দই অসমীয়া শব্দ-গঠনত তদ্বিত ‘আ’ আৰু বনমালৰ (নৱম শতিকা) তামৰ ফলিত পোৱা কুৰা (নৌকুৰা) শব্দই স্বাৰ্থিক ‘আ’ প্ৰত্যয়ৰ ব্যৱহাৰৰ সাক্ষ্য বহন কৰিছে। ভাস্কৰৱৰ্মাৰ তামৰ ফলিৰ ‘কালিয়া’ শব্দটোতে অসমীয়া ভাষাৰ ৰূপতাত্ত্বিক প্ৰথম নিদৰ্শন ৰক্ষিত হৈছে। এইবোৰৰ উপৰি অসমীয়া বহুতো শব্দৰ বিকাশৰ দ্বাৰা দেখুওৱাত তামৰ ফলিৰ ভাষাই যথেষ্টৰূপে সহায় কৰে। উদাহৰণঃ সং. ৱক্ৰ > ৱেক্ৰ (তা ফলি ১২ শ) > বেকা > বেঁকা ; সং. আশ্ব > আশ্ব (তা ফলি ৯-১০ শ) > আম ; সং. কণ্টকফল > কণ্টাফল (তা ফলি ১১ শ) > কণ্টাল > কণ্ঠাল > কঁঠাল ; সং. নক্ৰ > নাক্ক (তা. ফলি ৯ শ) > নাক; সং. উদুম্বৰ > ডুম্বৰী (তা ফলি ৭ শ) > ডুমৰ > ডিমৰু।

৭। কুমাৰ ভাস্কৰৱৰ্মাৰ নিধনপুৰৰ তামৰ ফলিখন (সপ্তম শতিকাৰ আগ ভাগৰ) দৰাচলতে তেওঁৰ আজো ককাক ভূতিৱৰ্মাৰ (পঞ্চম শতিকাৰ শেষ ভাগ) ফলিৰ নতুনকৈ কৰা প্ৰতিলিপি। গতিকে নিধনপুৰৰ তামৰ ফলিত পোৱা সংস্কৃতৰ পৰা ভিন্ন ৰূপবোৰক পঞ্চম শতিকাৰ বুলি ধৰিব পাৰি।^{১৭} ডিম্বেশ্বৰ নেওগে নিধনপুৰৰ তামৰ ফলিত পোৱা শব্দবোৰত মূল সংস্কৃত ৰূপৰ পৰা ফালৰি কাটি অহা ধ্বনিমূলক বৈশিষ্ট্য কেতবোৰৰ উল্লেখ কৰিছে। তলত সেইবোৰৰ কিছুমানৰ উল্লেখ কৰা হ’লঃ

- (১) আ > অ : সাৱিত্ৰ > সৱিত্ৰ
- (২) ই > অ : বিহিত > বহিত
- (৩) ঈ > ই : ঈশ্বৰ > ইশ্বৰ
- (৪) উ > উ : সুনু > সুনু
- (৫) ঐ > অ : দ্বৈৰথ > দ্বৰথ
- (৬) ও > অ : যশোভূতি > যশভূতি
- (৭) ঔ > ও : ধৌতেশ্বৰ > ধৌতেশ্বৰ
- (৮) ং > ঙ : অংশ > অঙ্শ
- (৯) ত > দ : অনন্ত > অনন্দ
- (১০) ঞ্ম > ঞ্ম : সম্মুখীনেষু > সম্মুখীনেষু

৮। ইপিনে পঞ্চম শতিকাৰ অসমৰ প্ৰাচীন শিলালিপি (উমাচলৰ)

সংস্কৃতৰ লগত নিমিলা ৰূপ এটা পোৱা গৈছে। সেইটো হৈছে 'স্বামিনায়' শব্দৰ প্ৰয়োগ। ইয়াৰ শুদ্ধ ৰূপ স্বামিনঃ বা সামিন হ'ব লাগিছিল।^{১০} বেণীমাধৱ বৰুৱাই তামৰ ফলিবোৰত প্ৰাকৃত-উপাদানস্বৰূপে বহুতো নিদৰ্শন দাঙি ধৰিছে। সেইবোৰৰ বেছি ভাগ নিধনপুৰৰ তামৰ ফলিতে পোৱা যায়। বৰুৱাই উল্লেখ কৰা প্ৰাকৃত উপাদানবোৰ এনে ধৰণৰ :

- (১) দীৰ্ঘ স্বৰৰ হ্ৰস্ব ৰূপ : বাজসনেয়ী > বজসনেয়ী (নিধ)
- (২) সংযুক্ত ব্যঞ্জনৰ আগত থকা দীৰ্ঘ স্বৰৰ হ্ৰস্ব ৰূপ : ভাৰ্গৱঃ > ভগ্গৱো (নিধ)
- (৩) স্বৰ-ধ্বনিৰ সাল-সলনি : বিহিত > বহিত (নিধ)
- (৪) সন্ধিৰ অনুপস্থিতি : হৰি-অদ্ভূত (নিধ)
- (৫) ব্যঞ্জনৰ লগত যুক্ত 'য'ৰ অনুপস্থিতি : কাশ্যপ > কাশপো (নিধ)
- (৬) শব্দৰ মাজত ব্যঞ্জনৰ আগমঃ দিৱাকৰ-ম্-ইৰ (হৰ্জৰৱৰ্মা)
- (৭) শব্দৰ শেষৰ অনুস্বাৰৰ 'ন'লৈ পৰিৱৰ্তন : যৌৱনম্ > যৌৱনন (বলৱৰ্মা)
- (৮) বিসৰ্গ > ও : ছান্দোগ : > ছান্দোগো (নিধ)
- (৯) ৰ্য > জ্জ : বীৰ্য > বীজ্জ (ইন্দ্ৰপাল)
- (১০) 'শ, ষ, স'ৰ এটাৰ ঠাইত আন এটাৰ ব্যৱহাৰ : দৰ্শিত > দৰ্ষিত (নিধ)
- (১১) সন্ধিৰ ক্ষেত্ৰত বিসৰ্গৰ লোপ : যশোভূতি > যশভূতি (নিধ)
- (১২) ৰেফৰ বৰ্জন : সুৱৰ্ণ > সুৱগ্ন (নিধ)

৯। সূক্ষ্মভাৱে নিৰীক্ষণ কৰিলে তামৰ ফলিবোৰৰ ভাষাত মধ্য-ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ প্ৰথম স্তৰৰ পালি ভাষা, অশোকৰ অনুশাসনৰ ভাষা, আৰু আন প্ৰাকৃত ভাষাৰ বৈশিষ্ট্য ভালেখিনি সংৰক্ষিত হোৱা দেখা যায়। অশোকৰ অনুশাসনৰ ভাষাক প্ৰধানকৈ চাৰিটা ভাগত ভগোৱা হয় : (১) উত্তৰ-পশ্চিমা (শাহবাজগড়ী আৰু মানসেহৰা অনুশাসন), (২) দক্ষিণ-পশ্চিমা (গিৰীৰ-অনুশাসন), (৩) প্ৰাচ্য-মধ্য (কালসী আৰু আন অনুশাসন) আৰু (৪) প্ৰাচ্য (ধৌলী আৰু জৌগড় অনুশাসন)। তামৰ ফলিৰ ভাষাৰ আদি প্ৰাকৃত বা পালি ভাষাৰে সৈতে থকা সাদৃশ্য কিছুমান এনে ধৰণৰ।

(ক) ঋ > ৰ : পালি : ৰুক্খ (বৃক্ষ) ; তামৰ ফলি. ৰুধি (ঋষি)

(খ) ঔ > ও : পালি : ওপম্মং (ঔপম্যং) ; তা ফলি. কোশিকো
(কৌশিকো)

(গ) বিসৰ্গ > ও : পালি : ধৰ্ম্মো (ধৰ্মঃ); তা ফলি. ভগ্গৰো (ভাৰ্গৱঃ)

(ঘ) সংযুক্ত বৰ্ণৰ পূৰ্বৱৰ্তী দীৰ্ঘ স্বৰ > হ্ৰস্ব : পালি : তদ্ধিকো (তাক্ষিকঃ)
তামৰ ফলি. ভগ্গৰো (ভাৰ্গৱঃ)

(ঙ) স্বৰভক্তিৰ ব্যৱহাৰ : পালি : সিৰী (শ্ৰী) তামৰ ফলি. সিৰি

(চ) সং আশ্রঃ > পালিঃ অশ্বো ; তামৰ ফলি. অশ্ব

(ছ) ক্ষ > খ : পালি : খয়ো (ক্ষয়ঃ), তামৰ ফলি. খিমথ (খিতিমথ)

(জ) ক্ষ > ক্খ : পালি : দক্খিণো (দক্ষিণঃ); তামৰ ফলি. মাক্খিয়ান।

(ঝ) আ > অ : পালি : লসিকা (লাসিকা) : তামৰ ফলি. সৱিত্ৰ >

সৱিত্ৰ।

(ঞ) ল > ন : পালি : নঙ্গলং (লাঙ্গলং) ; তামৰ ফলি. মণ্ডনং (মণ্ডলং)

১০। তামৰ ফলিৰ ভাষাত পোৱা অশোকৰ অনুশাসনৰ প্ৰাচ্য-মধ্য আৰু
প্ৰাচ্য অনুশাসনৰ বৈশিষ্ট্য কেতবোৰ তলত দিয়া ধৰণৰ :

(১) শ্য > শ : সং কাশ্যপঃ > কাশপো (তামৰ ফলি.)

(২) শ > ষ : সং দৰ্শিত > দৰ্ষিত (তামৰ ফলি.)

(৩) ক্ষ > ক্খ : সং মক্ষিকা ; মাক্খিয়ান (তামৰ ফলি.)

(৪) শ, ষ > স : সং শনি > সনি (তা ফলি. সং নিষেৱিত > নিসেৱিত
(তামৰ ফলি.)

১১। প্ৰাকৃত ভাষাৰ আন বৈশিষ্ট্য কেতবোৰেৰে সৈতেও তামৰ ফলিৰ
ভাষাৰ স্যদৃশ্য ধৰা পৰে। উদাহৰণ :

(১) প > ৰ : প্ৰাকৃত : ৰি (অপি) ; তা ফলি. ৰ > প : বাসপা (বাসৱা)

(২) ভ > হ : প্ৰাকৃত : হোই (ভৱতি) ; তা ফলি. সুহংকৰ (শুভঙ্কৰ)

(৩) ত > দ : প্ৰাকৃত : জানদি (জানাতি) ; তা ফলি. অনন্দ (অনন্ত)

(৪) য > জ : প্ৰাকৃত : জোগী (যোগী); তা ফলি. বীজ্জ (বীৰ্য)

(৫) ক্ষ > খ : প্ৰাকৃত : খিত্ত (ক্ষিপ্ত) ; তা ফলি. খিমথ (খিতিমথ)

১২। ওপৰত উল্লেখ কৰা তামৰ ফলিৰ ভাষাৰ বৈশিষ্ট্যবোৰে পঞ্চম

শতিকাৰ শেষ বা ষষ্ঠ শতিকাৰ আগ-ভাগতে প্ৰাচীন কামৰূপত গঢ় লোৱা সুকীয়া প্ৰাকৃত এটাৰ অৱস্থিতিটো উজ্জ্বল কৰি তোলাৰ উপৰি খ্ৰিষ্টপূৰ্ব কালৰে পৰা ভাৰতীয় আৰ্য ভাষাটোৱে প্ৰাগজ্যোতিষ-কামৰূপ অঞ্চলত বিস্তৃতি লাভ কৰাৰ কথাটোও স্পষ্ট কৰে। এইখিনিতে বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকাৰ এই মন্তব্যটো উল্লেখনীয় : “প্ৰাচীন প্ৰাগজ্যোতিষলৈ খ্ৰিঃ পূঃ পঞ্চম শতিকাত অহা আৰ্যসকলে প্ৰাক-অশোকীয় প্ৰাকৃত ভাষাৰ প্ৰাচীনতৰ মধ্যকালীন ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ এটা কৈছিল। এই মধ্যকালীন আৰ্যভাষাটোৰ পৰা খ্ৰিষ্ট জন্মৰ আগতে প্ৰাগজ্যোতিষ প্ৰাকৃতৰ উদ্ভৱ হয়”।^{১০(১)} “খ্ৰিষ্টীয় ষষ্ঠ শতিকাৰ আৰম্ভণিমানত কোশী-নদী প্ৰাগজ্যোতিষ ৰাজ্যৰ পশ্চিমৰ সীমা আছিল। গতিকে প্ৰাগজ্যোতিষ ৰাজ্যই পশ্চিমে বিদেহক (মিথিলাক) ছুইছিল গৈ।”^{১১} আকৌ “কামৰূপী ভাষাটো মূলতঃ পূৰ্ব-মৈথিলীৰ এটা ৰূপ। এই ভাষাটো নিশ্চয় গোটেই ৰাজ্য জুৰি কথিত আৰ্য-ভাষা আছিল। তেতিয়া গোটেই অসম-উপত্যকা আৰু উত্তৰ-বঙ্গৰ উপৰি বিহাৰৰ পুৰ্ণিয়া জিলাও এই ৰাজ্যৰ অন্তৰ্ভুক্ত আছিল।”^{১২} তামৰ ফলিবোৰৰ ভাষাত পোৱা সংস্কৃত ভাষাৰ শুদ্ধ ৰূপৰ পৰা ফালৰি কটা প্ৰয়োগবোৰক ‘অশুদ্ধ’, ‘ভুল’ নাইবা লেখকৰ দোষোৰ-মোৰ, যিহকে কোৱা নহওক লাগে, প্ৰকৃতপক্ষে সেইবোৰক সেই সময়ৰ মানুহৰ কথিত ভাষাৰ প্ৰভাৱ বুলি নিঃসন্দেহে ক’ব লাগিব। তামৰ ফলিবোৰত প্ৰাচীন কামৰূপত গঢ় লোৱা প্ৰাকৃত ভাষা এটাৰ নিদৰ্শন ৰক্ষিত হৈছে আৰু সিয়ে অসমীয়া ভাষাৰ ইতিহাসৰ প্ৰাচীনতাৰ প্ৰমাণ দাঙি ধৰিছে। এইটোৱেই কামৰূপী প্ৰাকৃত। এই প্ৰাকৃত সম্বন্ধে বেণীমাধৱ বৰুৱাৰ এই উক্তিটো বিশেষভাৱে উল্লেখ কৰিব লগীয়া : “প্ৰাক-আহোম যুগৰ কামৰূপৰ তামৰ ফলি আৰু শিলা-লেখবোৰত প্ৰাকৃতৰ আন কিছুমান নিদৰ্শন আছে। সেইবোৰে খ্ৰিষ্টীয় ৬ষ্ঠ- ১২শ শতিকাত প্ৰচলিত উপভাষাৰ স্বৰূপ আৰু প্ৰাকৃতৰ আভাস দাঙি ধৰে বুলি ধৰিব পাৰি। ৰাজকীয় ভূমিদান সম্পৰ্কীয় ফলিবোৰক বিশুদ্ধ সংস্কৃত ভাষাত লেখিবলৈ যত্নৰ ক্ৰটি নকৰা সত্ত্বেও কিছুমান অপ্ৰচলিত ৰূপ সোমাই পৰিছিল। ই হয়তো স্থানীয় লেখকসকলৰ নাইবা তক্ষকাসকলৰ নাইবা দুয়োৰে অসাৱধানতাৰ ফল।” (I.H.Q.Sept. 1947)।

১৩। এইখিনিতে প্ৰাচীন অসমীয়া সাহিত্য, বুৰঞ্জী-সাহিত্য, ‘অৰুণোদই,’ আৰু আন সাহিত্য আদিত পোৱা আৰু কামৰূপী উপভাষাৰ বৈশিষ্ট্যৰূপে থকা সংস্কৃতৰ উষ্ম ধ্বনি (শ, ষ, স)ৰ ‘খ’লৈ হোৱা সুকীয়া পৰিৱৰ্তনৰ কথাটোও চাব

লগীয়া। এই পৰিৱৰ্তনটো আন প্ৰাকৃতত পোৱা নাযায়। শব্দৰ আৰম্ভণিত নথকা সংস্কৃতৰ উষ্ম ধ্বনিবোৰ কামৰূপী উপভাষাত সাধাৰণতে ‘খ’লৈ ৰূপান্তৰিত হয়। যেনে আশা > আখা, দশা > দখা, নাশ > নাখ, গণেশ > গণেখ [তু. আদেখ (হে স), বুৰঞ্জী. দেখ (দেশ), অৰুণোদই মানিখা (মাজ নিশা)] ; ঋষি > ৰিখি, ভাষা > ভাখা [তু বিসেখোত (হে স), অৰুণো, বৰখুন)] ; সংসাৰ > সম্ভাৰ [(তু সংসাৰ (হে স)], অসুৰ > ওখুৰ ইত্যাদি। সংস্কৃতৰ উষ্ম ধ্বনিবোৰৰ বিকাশৰ এই ধাৰাটোৱেও কামৰূপী প্ৰাকৃতৰ অৱস্থিতিৰ আন এটা দিশ উদ্ভাসিত কৰে। ইয়াতে মৈথিলী ভাষাত ‘ষ’, ‘খ’ হোৱা লক্ষণটোও মন কৰিবলগীয়া ; তু বিষ > বিখ, দোষ > দোখ।

১৪। কামৰূপী প্ৰাকৃতৰ ওচৰত গুৰুত্ব দি ডিম্বেশ্বৰ নেওগে এনেদৰে লিখিছে : “খ্ৰিষ্টীয় পঞ্চম বা ষষ্ঠ শতিকাৰ পৰা দ্বাদশ শতিকালৈ ৰাজত্ব কৰা কামৰূপৰ ৰজাসকলৰ তামৰ ফলিবোৰৰ অধ্যয়ন কৰিবলৈ লোৱাৰ মুকুৰ্ত্ততে অসমীয়া আৰু তেনেকৈ বঙলা আৰু সম্ভৱতঃ উড়িয়া ভাষাৰ মূল মাগধী প্ৰাকৃতৰ ভ্ৰান্ত ধাৰণা নাইকিয়া হৈ যায়।”^{১৭} দেৱানন্দ ভঁৰালিৰ ভাষাত “সাধাৰণতে মাগধী প্ৰাকৃতৰ পৰাই অসমীয়া ভাষা ওলাইছে বুলি যি ধাৰণা আছে সেইটো ভুল। তেনেহ’লে অসমত চলা প্ৰাকৃতৰ নাম কি? সেইটো মাগধী প্ৰাকৃততকৈ যে এটা বেলেগ বস্তু সেইটোহে আৱশ্যকীয়। মাগধী প্ৰাকৃতৰ উপৰিত দুটা প্ৰাকৃত ভাষাৰ স্তৰ আগেয়ে থকাৰ প্ৰমাণ পাওঁহঁক। এটাক বুলিব পাৰি ‘সৌমাৰ প্ৰাকৃত’। ই আগেয়ে আসাম আৰু বঙ্গদেশত চলিছিল। এতিয়া তাৰ বিশেষত্বখিনি উজনি আসামত পোৱা যায়। আনটো হৈছে ‘কামৰূপীয়া প্ৰাকৃত’। ইও গোটেই কামৰূপত আৰু পশ্চিমে মাগধী ভাষাৰ সীমা বিহাৰলৈকে (গোটেই বঙ্গ দেশতে চলিছিল)।”^{১৮}

১৫। অসমীয়া ভাষাটোক মূলতঃ মগধীয় ভাষা বুলি উল্লেখ কৰাৰ লগে লগে অসমীয়া ভাষাৰ মগধীয় আন আন ভাষা বা মগধ-অঞ্চলত প্ৰচলিত আন প্ৰাকৃত আদিৰে সৈতে সম্বন্ধ থকা কথাটোও অন্তৰ্ভুক্ত হয়। অসমীয়া ভাষা আৰু ইয়াৰ উপ-ভাষাবোৰত মাগধী প্ৰাকৃতৰ বহুতো নিদৰ্শন সংৰক্ষিত হৈছে। মাগধী প্ৰাকৃতৰ লক্ষণবোৰৰ ভিতৰত এইবোৰ বিশেষভাৱে উল্লেখযোগ্য : (ক) সংস্কৃতৰ ‘শ, ষ, স’ ধ্বনিৰ ‘শ’লৈ, (খ) ‘ৰ’ ধ্বনিৰ ‘ল’লৈ, (গ) ‘জ’ ধ্বনি ‘য’লৈ (ঘ) বিসৰ্গযুক্ত পদান্ত অ > এ, (ঙ) ‘ন্য’ ধ্বনিৰ ‘ঞ’লৈ পৰিৱৰ্তন, (চ) অপিনিহিত্যৰ অৱস্থিতি, (ছ) স্বাৰ্থিক ‘আ’ প্ৰত্যয়ৰ বহুল ব্যৱহাৰ, (জ) শব্দ-বিভক্তিৰ বিলুপ্তি, (ঝ) চতুৰ্থীৰ ঠাইত দ্বিতীয়া বা সপ্তমীৰ প্ৰয়োগ আদি।^{১৯} উদাহৰণ :

(ক) অসমীয়া মান্য ভাষাত শব্দৰ আৰম্ভণিত সংস্কৃতৰ ‘শ, স, ঈ’ এই উষ্ম ধ্বনি কেইটা অসংযুক্ত হ’লে ‘স’ ৰূপে উচ্চাৰিত হয়। শব্দৰ আৰম্ভণিত ঠাইত সিহঁতৰ সাধাৰণতে ‘স’ৰ দৰেই উচ্চাৰণ হয়। কিছুমান শব্দত ‘হ’ আৰু ‘খ’ ৰূপেও শুনা যায়। গোৱালপৰীয়া ‘দেশী-ভাষা’ত হ’লে এই ধ্বনিকেইটাৰ তালব্য ‘শ’ ৰূপে উচ্চাৰণ হোৱা উদাহৰণ আছে। যেনে— দশ, মানুশ, শাপ (সৰ্প) মৈশ (মহিষ) শেণা (শশ)।

(খ) শৰীল (কাম.), (তু বুৰঞ্জী শৰীল) লাই (ৰাজিকা), চকল (চক্ৰ > চকৰ > চকল)।

(গ) যজুৰ্বেদী > যযুৰ্বেদী (ইন্দ্রপালৰ তামৰ ফলি)।

(ঘ) প্ৰথমতঃ > প্ৰথমতে (অশোকৰ অনুশাসনৰ প্ৰাচ্য-মধ্য উপভাষাতো এই বৈশিষ্ট্য আছে।

(ঙ) পূণ্য > পুণ্ড্ৰ (আমবাৰীৰ শিলা-লিপিঃ দান পুইণ্ড্ৰ সজ)।

(চ) সত্য > সোইত্তো, সইত্ত ; সং. সাধুক > সাউদ, ৰাজ্য > ৰাইজ।

(ছ) চকা, চাকা, (কাম), কণা, সনা (কাম) ৰূপা (কাম)।

(জ) বিশেষভাৱে নুবুজালে অসমীয়াত দ্বিতীয় বিভক্তি ‘ক’ যোগ নহয়; যেনে মাহনু, মানুহ মাৰে। অকৰ্মক ক্ৰিয়াৰ কৰ্তাৰ পাচতো সচৰাচৰ প্ৰথমা ‘এ’ বিভক্তি যোগ নহয়। যেনে— ৰাম যায়।

(ঝ) ক’ক যাহ, ক’ত যাহ (কাম), (তু. বুৰঞ্জী চক্ৰান্ধাৰ ঠাইক মানুহ পঠালে। পাছে কিংলুঙ্গ এই কথা ৰজাদেৱত ক’লে)। চতুৰ্থী আৰু দ্বিতীয়া বিভক্তি একে লগ হোৱাৰ এটা সুন্দৰ নিদৰ্শন হৈছে অসমীয়া ভাষাৰ সম্প্ৰদান কাৰকৰ অনুপস্থিতি। কাৰোবাক কোনো এটা বস্তু দিয়াটোৱেই সম্প্ৰদান। সম্প্ৰদান-কাৰকত সংস্কৃতত চতুৰ্থী বিভক্তি হয়। যেনেঃ দৰিদ্ৰায় ধনং দদাতি। অসমীয়াত কিন্তু সম্প্ৰদান কাৰক নাই। কাৰোবাক কোনো এটা বস্তু দিয়া অৰ্থত কৰ্ম কাৰকহে হয়; যেনে— ভিখাৰীক চাউল দিছে। অসমীয়াত অৱশ্যে প্ৰতি, অভিমুখ, নিমিস্ত আদি অৰ্থত ক্ৰিয়াৰ লগত কিছুমান শব্দৰ সম্পৰ্ক ঘটে। এইটোক নিমিস্ত কাৰক বোলা হৈছে। নিমিস্ত-কাৰকত চতুৰ্থী বিভক্তি হয়; যেনে— ডাঙৰলৈ ভক্তিভাৱ ৰাখিবা (প্ৰতি), তেওঁ শিৱসাগৰলৈ গ’ল (অভিমুখ), এইটো তোমালৈ আনিছোঁ। (নিমিস্ত)

১৬। অসমীয়া ভাষাত শৌৰসেনী, অৰ্ধমাগধী, আৰু পৈশাচী উপদানো নথকা নহয়। অসমীয়া ভাষাটো ‘শৌৰসেনী আৰু মাগধী অপভ্ৰংশৰ মিশ্ৰণ’ বুলি

কালিৰাম মেধিয়ে লিখিছে। সংস্কৃতৰ ‘ক্ষ’ শৌৰসেনীত ‘খ’ আৰু ‘ক্খ’ হৈছে। অশোকৰ অনুশাসনৰ প্ৰাচ্য-মধ্যাৰ উপভাষাতো ক্ষ > ক্খ। অসমীয়া ভাষাত সংস্কৃতৰ ‘ক্ষ’ৰ ‘খ’ আৰু ‘ক্খ’লৈ পৰিৱৰ্তন হোৱা উদাহৰণ আছে। যেনে, খিতিমথ > থিমথ (ৰত্নপালৰ তামৰ ফলি); মাক্খিথান (ইন্দ্ৰপালৰ তামৰ ফলি); সং. ক্ষীণ > অস. খীণ, সং. মক্ষিকা > অস. মাখি, সং. দক্ষিণ > দোকিখন. দোখিন (কাম.) মা. অস. দকিখন, সং. লক্ষ্মী > লোকিখ (কাম, লকিখ (লখিমী) (মা. অস.)). সং. কাৰ্যম্ > শৌ কজেজা, কাম. কাইজেজা। শব্দৰ মধ্যৱৰ্তী -স্ত- কেতিয়াবা শৌৰসেনীত - ন্দ - হয় (সং হস্ত > হন্দ)। তামৰ ফলিৰ ভাষাত ইয়াৰ নিদৰ্শন আছে; যেনে, অনস্ত > অনন্দ (নিধনপুৰৰ তামৰ ফলি)। কেতিয়াবা শৌৰসেনী আৰু মাহাৰাষ্ট্ৰীত - দ - > - ল -; যেনে, বিজ্জুলিআ < বিদ্যুতিকা, তু অস. বিজুলী। সংস্কৃতৰ শব্দৰ শেষত কথা বিসৰ্গৰ ‘ও’ৰূপে হোৱা পৰিৱৰ্তনক অৰ্ধমাগধী উপাদানৰূপে ধৰা হয়। তামৰ ফলিৰ ভাষা আৰু কামৰূপী উপভাষাত ইয়াৰ নিদৰ্শন আছে: সং ভাৰ্গৱঃ > ভগ্গৱো (নিধনপুৰৰ তামৰ ফলি), সং ধৰ্মঃ > ধৰ্মো (কাম.), তু. পালি ধম্মো। মাহাৰাষ্ট্ৰী আৰু অৰ্ধমাগধীত সং ষ > ছ; তু. গোৱা. ছই। অৰ্ধমাগধীত সংস্কৃতৰ চ- > ত-; যেনে— চিকিৎসা > তেইচ্ছা; তু কাম. তিকিচ্ছা। মাহাৰাষ্ট্ৰী প্ৰাকৃতত ‘ভ-’ আৰু শব্দৰ মাজত থকা উষ্ম ধ্বনিৰ ‘হ’লৈ পৰিৱৰ্তন হয়। তামৰ ফলিৰ ভাষা, কামৰূপী উপভাষা, আৰু অস. মান্য ভাষাত এই লক্ষণ বিদ্যমান: উদাহৰণ: সং ভৱতি > হোই মাহা, হোই, (কাম), হই (হয়) মা অস. (তু শুভঙ্কৰ > সুহংকৰ তামৰ ফলি)। সং আকাশ > আকাহ। (কাম) ৰস > ৰহ (কাম), তু মা অস ৰহঘৰা; বিঘ > বিহ, ভিক্ষু > ভিক্খ, আশ্বসিদ্ধি > আশ্বদি। তেনেকৈ সং কাংস্য > কাঁহ, সং. হংস > হাঁহ, তু. গোৱা. হাশ। সং. আশ্বন > মাহা. অপ্পা, তু অস. আপোন। অসমীয়া ভাষাত সংস্কৃতৰ উষ্ম ধ্বনিৰ ‘চ’ ৰূপে হোৱা পৰিৱৰ্তনৰ উদাহৰণো আছে; যেনে— সৰ্ব > সৰ্ব > চোব, চোপ, চপা (কাম), (তু. চপাৰাতি)। সং. স্নেহ > সনেহ (চনেহ) > চেনহ, চেনাহ (কাম.) চেনেই (মা. অস.); সং জ্ঞানং > পালি সিনানং। (চিনানং)। > চিলান (কাম)। সং ‘ঘ’ৰ ‘খ’লৈ হোৱা পৰিৱৰ্তনক পৈশাচী প্ৰাকৃতৰ এটা বৈশিষ্ট্যৰূপে ধৰা হয়; যেনে, সং ঘৰ্ম > পৈ. খন্ম, তু সং ঘৃষ্টিকা > অস খুটি (গৰু বা ম’হৰ)।

১৭। কোনো কোনো পণ্ডিতে অসমীয়া ভাষাৰ প্ৰাচীনতাৰ ওপৰত গুৰুত্ব আৰোপ কৰি অসমীয়া ভাষাৰ লগত প্ৰাক্-বৈদিক আৰু বৈদিক ভাষাৰ যোগ-সূত্ৰ

স্থাপন কৰে। এই ক্ষেত্ৰত কালিৰাম মেধিয়ে অসমীয়া ভাষাত প্ৰাক্-বৈদিক উপাদানৰ বিষয়ে আলোচনা প্ৰসঙ্গত অসমীয়া শব্দ, অসমীয়া ধ্বনি, ধ্বনি-তত্ত্ব আৰু ৰূপ-তত্ত্বৰ কিছুমান বৈশিষ্ট্যলৈ আঙুলিয়াইছে। শব্দ-মালাৰ ক্ষেত্ৰত আতা ‘ককাদেউতা’, আবু ‘আইতা’, ওৰ, গেৰি, দেও, দেউতা. ‘মেঘ’, বন. ‘কাম’ আদি শব্দৰ যথাক্ৰমে গ্ৰীক অন্ত, গোথিক অন্তন, লেটিন অৱ-উছ, লেটিন ওৰ, গ্ৰীক গেৰ্যছ, জেন্দ. দএৰ্ গ্ৰীক দেও ; গ্ৰীক পোনোছা বৈ, বন শব্দৰ লগত সম্বন্ধ দেখুওৱা হৈছে। ধ্বনিৰ ক্ষেত্ৰত অসমীয়াত (কামৰূপী আৰু মান্য অসমীয়াত) মুৰ্ধন্য ধ্বনিৰ অনুপস্থিতি আৰু সংস্কৃতৰ উষ্ম ধ্বনি (শ, ষ, স)ৰ এটা ধ্বনিত পৰিণতি (তু. গ্ৰীক ‘x’) ; ধ্বনি-তত্ত্বৰ ক্ষেত্ৰত সংস্কৃতৰ ‘স’ ধ্বনিৰ ‘হ’ লৈ হোৱা পৰিৱৰ্তন (বৈ. সং. অসুৰ > অশ্বৰ (ইৰানী)); সং. সম > গ্ৰীক হোমোচ) আৰু সংস্কৃতৰ ‘ক্ষ’ ধ্বনিৰ ইৰানীত ‘খ্’ ধ্বনি আৰু অসমীয়াত হোৱা ‘খ’ ধ্বনি : ৰূপ-তত্ত্বৰ ক্ষেত্ৰত বহুবচনৰ প্ৰত্যয় ‘ইত’ (ইৰানী হেস্তি) আৰু অপাদান-কাৰকৰ বাবে ব্যৱহাৰ হোৱা পৰ-সৰ্গ ‘পৰা’ৰ (ইৰানী পৰা) উল্লেখ কৰা হৈছে। বৈদিক উপাদানৰ ভিতৰত শব্দ-মালাৰ ক্ষেত্ৰত আপি ‘ছোৱালী’, ওত্. উত ‘এলাহ’. এনা ; এনে কুলী (চৰাই), দাদুৰী, ভেম, মেনা (ম’হ) শব্দৰ যথাক্ৰমে বৈদিক আপি, উতি, এনা, কুলীক, তাদুৰী, ভেম, মেনা শব্দৰে সৈতে সম্বন্ধ দেখুওৱা হৈছে। আকৌ কিছুমান অসমীয়া শব্দৰ সংস্কৃততকৈ বৈদিক শব্দৰ ৰূপেৰে সৈতেহে ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধটো বুজোৱা হৈছে। এই ক্ষেত্ৰত অসমীয়া বাকল। বাকলি, সহ, শকত, চেতন, মখা, বিত আদি শব্দক ক্ৰমে বকল, সস, শকত, চেতনম, মখস, বীত আদি শব্দৰ লগত সাঙোৰা হৈছে। অসমীয়া সৰ্বনাম শব্দ ‘আমি’ আৰু ‘তুমি’ ক্ৰমে প্ৰাক্-বৈদিক ‘অস্মে’ আৰু ‘তুস্মে’, কাই (কোন) ৰ বৈদিক ‘কায়’ ; অসমাপিকাসূচক প্ৰত্যয় ‘ই’ (বৈ. স্থি) আদিৰ উল্লেখো মন কৰিব লগীয়া।

১৮। ইফালে দেৱানন্দ ভঁৰালিয়ে লেখিছে : “আমাৰ মতে অন্ততঃ দ্বিতীয় প্ৰাকৃত যুগৰ আগতে অসমত এক ফৈদ আৰ্যে বসতি কৰিছিল আৰু সেই আৰ্যবিলাকৰ যিটো ভাষা আছিল সেইটো এবিধ আৰ্য-ভাষান্তৰ্গত আদি প্ৰাকৃত ; সেই ভাষা দ্বিতীয় প্ৰাকৃত যুগত কিছু দূৰ পৰিৱৰ্তিত হৈ বৈষ্ণৱ যুগত বাহিৰৰ পৰা আৰু কিছুমান শব্দ-সম্পদ লৈ বৰ্তমানৰ অসমীয়া ভাষাৰূপে দেখা দিছে। উচ্চাৰণৰ পৰা বুজিব পাৰি যে অসমত বসতি কৰা প্ৰথম আৰ্যসকল মাগধী আদি ভাৰতীয় প্ৰাকৃত ভাষা কণ্ঠতা আৰ্যসকলতকৈ পৃথক। দদী আৰু আৱেষ্ঠিক ভাষা কণ্ঠতা খেল

লগত অসমীয়া আৰ্য-খেলৰ ওচৰাউচৰি সম্বন্ধ আছিল। ”” মুঠৰ ওপৰত অনা-বৈদিক ভাষা, বৈদিক ভাষা, আদি প্ৰাকৃত ভাষা, মাগধী, অৰ্ধমাগধী, শৌৰসেনী, মহাৰাষ্ট্ৰ, পৈশাচী, কামৰূপী আদি প্ৰাকৃত ভাষা, আৰু অসমৰ থলুৱা (জনজাতীয়) ভাষাৰ বিবিধ উপাদানৰ সংমিশ্ৰণত অসমীয়া ভাষাটো গঢ়ি উঠিছে আৰু সময়ত সাহিত্যিক ভাষাকৈ সি সুপ্ৰতিষ্ঠিত হৈছে। এই ক্ষেত্ৰত দেৱানন্দ ভঁৰালিৰ এই মন্তব্যটোও মন কৰিব লগীয়া। ভঁৰালিৰ মতে অসমীয়া ভাষাটো আন-বৈদিক আৰ্যসকলৰ মুখ্য বা প্ৰথম প্ৰাকৃত ভাষা, বৈদিক আৰ্যসকলৰ সংস্কৃত ভাষা, মধ্য-যুগৰ ভাৰতীয় প্ৰাকৃত ভাষা, উত্তৰ ভাৰতৰ আধুনিক ভাষা আৰু অসমৰ ওচৰে-পাঁজৰে থকা আন-আৰ্য ভাষাৰ উপাদানেৰে গঠিত।””

১৯। অসমীয়া ভাষাসম্পৰ্কীয় হিউৱেন চাঙৰ উক্তিৰে দুটা কথা স্পষ্টকৈ দেখুৱাইছে। প্ৰথম কথা : অসমীয়া ভাষাটোৰ মধ্য-ভাৰতৰ মগধ-বিদেহ অঞ্চলৰ ভাষাৰে সৈতে সাদৃশ্য আছে। দ্বিতীয় কথা : অসমীয়া ভাষাটোৱে ইয়াৰ স্থানীয় অন্য ভাষাৰ প্ৰভাৱত কিছু সুকীয়া ৰূপ লৈছে। অন্ততঃ হিউৱেন চাঙৰ সময়ত প্ৰাচীন কামৰূপ বা অসমত যে এটা সুকীয়া ভাষাৰ প্ৰচলন আছিল তাৰ প্ৰমাণ তামৰ ফলিবোৰে দাঙি ধৰিছে। তামৰ ফলিবোৰৰ ভাষাৰ পাচত অসমীয়া ভাষাৰ নিদৰ্শন ক’ত পোৱা যায়? এইটো এটা জটিল প্ৰশ্ন। এইটো জনা কথা যে সকলো সাহিত্যৰ আৰম্ভণি লোক-সাহিত্য বা মৌখিক সাহিত্য। অসমীয়া লোক-সাহিত্য যথেষ্টকৈ চহকী। এই লোক-সাহিত্যৰ অন্তৰ্গত লোক-গীতবোৰৰ বিষয়-বস্তু সামাজিক চিত্ৰ, আৰু ভাষা আদি সকলো দৃষ্টিৰে চাই কিছুমানক প্ৰাচীন স্তৰৰ ৰচনা বুলি কোৱাত দ্বিধা অনুভৱ কৰিব নালাগে। (লোক-সাহিত্য ‘যুগনিৰপেক্ষ নহয়, যুগসাপেক্ষহে’)। এনে দৃষ্টিৰে অসমীয়া ‘দেহবিচাৰৰ গীত’ আৰু ‘টোকাৰী গীত’ কিছুমানক প্ৰাচীন বুলি ক’ব লাগিব। এই গীতবোৰত বৌদ্ধ সহজীয়া, নাথ (দশম শতিকাৰ আশে-পাশে), আৰু ধৰ্ম বা নিৰঞ্জন সম্প্ৰদায়ৰ প্ৰভাৱ সুস্পষ্ট। নাথ-সম্প্ৰদায়ত গুৰুক উচ্চ স্থান দিয়া হৈছে। ধৰ্ম বা নিৰঞ্জন সম্প্ৰদায়ীসকলৰ উদ্দেশ্য হৈছে ‘ইড়া আৰু পিঙ্গলাৰ মধ্যস্থিত সুমুগ্নাক জাগ্ৰত কৰি আনাত নাদ শুনা, নিৰঞ্জনৰ দৰ্শন লাভ কৰা।’ মানসিক পৱিত্ৰতা আৰু আত্ম-শুদ্ধিৰ ওপৰত দুয়ো সম্প্ৰদায়ে বিশেষ জোৰ দিয়ে। আমাৰ ‘টোকাৰী গীত’ত আছে : ইঙ্গলা পিঙ্গলা চিত্ৰা সুমুগ্না এইনো চাৰিগছি গুণা।’ আকৌ “দেহাতে বিচাৰি লোৱা মোৰ বান্ধৱ, দেহৰ ভিতৰে আছে নিজ গুৰু, মায়াত নপৰা আৰু।”

২০। অসমত প্ৰাচীন কালৰে পৰা নানা ধৰণৰ মন্ত্ৰৰ প্ৰচলন আছিল। কিছুমান মন্ত্ৰ নাথ আৰু নিৰঞ্জন-সম্প্ৰদায়ৰ সাধনা-পদ্ধতিৰ স্পষ্ট উল্লেখ আছে : “সিদ্ধ বন্দো শ্ৰীগুৰুৰ পায়। ৰোগীৰ ৰক্ষা কৰা কামৰূপৰ কামাখ্যা মায়।। আদি অনাদি ঈশ্বৰ দেৱ। ধৰ্মৰ চৰণে কৰোঁ সেৱ। ইঙ্গলা পিঙ্গল সুযুমাди নাড়িত যত বিষ ব্যাধি আছে। ঘোৰ পাণ্ডপাত মন্ত্ৰ হানো পাছে” (সৰ্বটাক মন্ত্ৰ)। মন্ত্ৰবোৰৰ ভাষাত এতিয়াও প্ৰাচীনতাৰ চিন বিদ্যমান : “ইহাত আমাৰ কোন মিত্ৰৱতী নাই। কৰে লটি-ঘটি যেন শত্ৰুজন পাই। ... যৈসানি ত্ৰিদশ দেৱতাৰ বৰ পাইলি। অনেক লোকক তঞি মাৰি মাৰি খাইলি।.... এই বুলি মাংস খাইতী এৰি গুচি গৈলা। আমুকাৰ গাৱৰ বিষ পানী যেন ভৈলা। ... বিষালী বোলে মই বিষমুখী। তেজত হস্তে ভৈলোঁ উৎপতি” (বিষালী মন্ত্ৰ)। অসমীয়া লোক-সাহিত্যত ডাকৰ বচনবোৰৰ গুৰুত্বও যথেষ্ট আছে। কিংবদন্তী অনুযায়ী ডাকৰ জন্ম কালৰ লগত ভাৰতৰ বিখ্যাত জ্যোতিৰ্বেত্তা বৰাহিমিহিৰৰ সম্পৰ্ক স্থাপন কৰা হৈছে। এহি কাহিনীটো সঁচা বুলি ল'লে ডাক-পুৰুষৰ সময় ষষ্ঠ শতিকালৈ আগ বাঢ়ি যায়। কিংবদন্তীৰ উপৰি ভাস্কৰৰমাই হৰ্ষবৰ্ধনলৈ পঠোৱা উপহাৰ-গ্ৰন্থবোৰৰ ভিতৰত এখন প্ৰবাদ-বচনৰ উল্লেখ ষষ্ঠ-সপ্তম শতিকাত ডাকৰ বচনৰ কথাটো বেছি উজ্জ্বল কৰি তোলে। “আমাৰ ডাকৰ বচন পুথিখন হিউৱেন চাঙৰ আগমনৰ পূৰ্বেই ষষ্ঠ শতিকাত ৰচিত হৈছিল।”^{১১} বৈষ্ণৱযুগৰ “প্ৰধান ধৰ্ম হৈছে ঈশ্বৰৰ নাম-কীৰ্তন। কিন্তু ডাকৰ মতে : যেরেসে ধৰ্মক কৰিব জানি। পুখুৰী খানিয়া ৰাখিবা পানী।। বৃক্ষ ৰোপণত অধিক ধৰ্ম। মঠ-মণ্ডপত গুৰুতৰ কৰ্ম।।... ইয়াৰ পৰা বুজা যায় যে এই বচনবিলাক প্ৰাক-বৈষ্ণৱ-যুগৰ। বৈষ্ণৱ-যুগৰ পাৰত্ৰিক চিন্তাই বা ঐহিক সুখ-শান্তিলৈ আওহেলা এই বচনবোৰক পৰশা নাই। এইবিলাক প্ৰাক-বৈষ্ণৱীৰ লক্ষণ।”^{১২}

২১। ‘দেহবিচাৰৰ গীত’, ‘টোকাৰী-গীত’, বিবিধ মন্ত্ৰ, ডাকৰ বচন, আৰু আন লোক-গীত আদিয়ে অসমীয়া ভাষাৰ উদ্ভৱ আৰু বিকাশৰ ক্ষেত্ৰত কিছু পোহৰ পেলায় যদিও সেইবোৰৰ বেছি ভাগেই মুখ বাগৰি অহা কাৰণে অসমীয়া ভাষাৰ বিস্তৃত প্ৰভু-ৰূপ সেইবোৰত পোৱা নেযায়। এই ক্ষেত্ৰত চৰ্চা-পদৰ ভাষাইহে প্ৰভুতৰূপে সহায় কৰে। “প্ৰাকৃত-যুগৰ পাচত অৰ্থাৎ ৬০০-১০০০ খ্ৰিঃৰ মাজত ভাৰতীয় ভাষাবিলাক এটা ‘অপভ্ৰংশ’ অৱস্থাৰ মাজেদি সৰকি আহিছে। কিন্তু শৌৰসেনী প্ৰাকৃতৰ বাহিৰে বাকী প্ৰাকৃতবিলাকৰ অপভ্ৰংশৰ নমুনা পাবলৈ নাই। এতেকে অসমীয়া বা বঙলা ভাষাৰ ঠিক ‘অপভ্ৰংশ-অৱস্থা’ৰো আৰ্হি পাবলৈ নাই।

তথাপি মহামহোপাধ্যায় হৰপ্ৰসাদ শাস্ত্ৰীয়ে নেপালত পোৱা চৰ্যা-পদবিলাকেই সেই ভাষাৰ প্ৰতিনিধি বুলি আমি ধৰিব পাৰোঁ।”^{২১} চৰ্যাপদবোৰ মহাযানী বৌদ্ধ-ধৰ্মৰ অন্তৰ্গত সহজযান মতাৱলম্বী তেইশজন সিদ্ধাচাৰ্যৰ দ্বাৰা ৰচনা কৰা পঞ্চাশটা গীতৰ সমষ্টি। চৰ্যাপদৰ ৰচকসকলৰ ভিতৰত সৰহপাদ, লুইপাদ, মীননাথ, ভুসুকুপাদ, গোৰক্ষপাদ, শৰৰপাদ আদি কেইবাজনকো প্ৰাচীন কামৰূপৰ লোক বুলি সিদ্ধান্ত কৰা হৈছে। সুকুমাৰ সেনে চৰ্যা-পদৰ ভাষাক ‘প্ৰত্ন-বাস্কালা’ বুলি অভিহিত কৰিছে। ইয়াত ‘অপভ্ৰষ্টৰ ছাঁ’ও ‘বেছ ঘনকৈ পৰিছে’; যেনে, জসু, অইসন, জিম, তিম, কইসে, জইসৌ, কিস, কঁই, কিম্পি ; মা, ন (নিষেধাৰ্থত) ; -উ-ইউ লগ লগাই অতীত-কালৰ ক্ৰিয়া-ৰূপৰ গঠন (তাড়িউ, গউ); - ‘মি’ বিভক্তিয়ুক্ত প্ৰথম পুৰুষৰ ক্ৰিয়া (পীৰমি, পুছমি) ; যুক্ত ব্যঞ্জনৰ অৱস্থিতি (অচ্ছন্তে) আদি।”^{২২} চৰ্যা-পদেৰে সৈতে অসমীয়া ভাষাৰ সম্পৰ্ক অসমীয়া ভাষাৰ সকলো স্তৰতে ৰক্ষিত হৈছে। সেই কাৰণে আধুনিক অসমীয়াৰ মান্য ভাষা আৰু উপভাষা, প্ৰাচীন অসমীয়াৰ বৈষ্ণৱ আৰু অনাৱৈষ্ণৱ সাহিত্যৰ ভাষা— এই আটাইবোৰতে চৰ্যা-পদৰ ভাষাৰ ঘনিষ্ঠ সম্পৰ্ক দৃষ্টিগোচৰ হয়। মান্য অসমীয়াৰ ধ্বনিগত সাদৃশ্য কিছুমানো চৰ্যা-পদত পোৱা যায় :

(ক) কোনো শব্দত ওচৰাউচৰিকৈ দুটা অক্ষৰত থকা ‘আ’ ধ্বনিৰ পূৰ্বৱৰ্তী অক্ষৰৰ আ ধ্বনি ‘অ’ ধ্বনিত পৰিণত হয় ; যেনে, চকা (চৰ্যা), চকা (মা. অস.); বপা, বাপা (চৰ্যা), বপা (পু. অস.), বোপা (মা. অস)।

(খ) প্ৰাচীন ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাৰ অযুগ্ম উষ্ম ধ্বনি তিনিটা অসমীয়াত কণ্ঠ্য-উষ্ম ধ্বনিলৈ ৰূপান্তৰিত হৈছে। চৰ্যা-পদতো এই ধ্বনি তিনিটাৰ সুকীয়া ৰূপবোৰ নাইকিয়া হোৱা দেখা গৈছে ; যেনে, শৰৰ, সবৰ, যবৰালী (চৰ্যা ৫০)।

(গ) প্ৰাচীন ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাত থকা দন্ত্য-মূৰ্ণ্য ধ্বনিৰ মাজত পাৰ্থক্য লোপৰ আভাস চৰ্যা-পদত আছে ; যেনে— মণ, মন (চৰ্যা ২০ আৰু ৩০)।

(ঘ) আধুনিক অসমীয়াত আন কি প্ৰাচীন অসমীয়াতো স্বৰভক্তিৰ সহায়ত তৎসম শব্দবোৰৰ অৰ্ধতৎসম ৰূপ লোৱাৰ নিদৰ্শন অনেক আছে ; যেনে, পৰাণ (প্ৰাণ), যত্ন (যত্ৰ), পদুম (পদ্ম) ইত্যাদি। চৰ্যা-পদৰ পোৱা যায় : জুগতি (যুক্তি), পৰাণ, গৰাহক (গ্ৰাহক) ইত্যাদি।

(২২) অসমীয়া ভাষাৰ ধ্বনিগত বৈশিষ্ট্যৰ এটা স্পষ্টৰূপ কামৰূপী প্ৰাকৃততো আমি পাই আহিছোঁ। কামৰূপী প্ৰাকৃততে ৰূপতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্য হিচাপে

ভাস্কৰৰমাৰ তামৰ ফলিৰ ‘কালিয়া’ আৰু বনমালৰ তামৰ ফলিত ‘পোন্ধা কুৱা (নৌকুৱা)’ শব্দই তদ্বিত আৰু স্বার্থিক ‘আ’ প্রত্যয়ৰ ব্যৱহাৰৰ সাক্ষ্য বহন কৰাৰ উপৰিও অসমীয়া শব্দ কিছুমানৰ বিকাশৰ স্তৰ সংৰক্ষণ কৰিছে। বড়ো ভাষাতো প্রত্ন-অসমীয়াৰ ৰূপতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্য কেতবোৰৰ ইংগিত দিছে। ইপিনে বিশেষ্য-শব্দ কিছুমান তামৰ ফলিবোৰৰ ভাষাত পোৱা কথাটোও মন কৰিব লগীয়া। কিন্তু চৰ্যা-পদৰ ভাষাইহে প্রত্ন-অসমীয়াৰ ৰূপতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্য বিভিন্ন ৰূপ সংৰক্ষণ কৰিছে। চৰ্যা-পদৰ ভাষাত অসমীয়া ভাষাৰ ৰূপ আৰু অসমীয়া ভাষাৰ প্রত্ন ৰূপ এই দুয়োটাই সংৰক্ষিত হৈছে। কোনো এটা ভাষাৰ ৰূপ-তত্ত্ব বুলি ক’লে সেই ভাষাটোৰ শব্দ, শব্দৰ গঠন পদ্ধতি, শব্দৰ শ্ৰেণী-বিভাগ, বিভিন্ন প্রত্যয়, শব্দ-বিভক্তি, ক্ৰিয়া-বিভক্তি আদি বহুতো কথাই সোমাই পৰে। চৰ্যা-পদৰ ভাষাত প্রথমতে শব্দৰ শ্ৰেণীবিভাগ অনুসৰি বিশেষ্য-শব্দবোৰকে যদি চোৱা যায় তেনেহ’লে কিছুমান বিশেষ্য-শব্দ এনেধৰণে পোৱা যায় :

চৰ্যাৰ ৰূপ	অসমীয়া ৰূপ
অমিঅ	অমিয়া
উহ	উহ ‘উৎস’
কুঠাৰ	কুঠাব
কুড়ম্বা	কুৰ্মা (কাম)
খাট	খাট
খাল	খাল
খুৰ	খুৰা
খুন্টি	খুঁটি
খেলা	খেলা (কাম), মা. অস খেল
গল	‘ডিঙি’ (কাম); তু মা অস. গলধন, গলপতা
গাতী	গাতা (কাম) মা অস. গাঁত
গুহাড়া	গোহাৰি
গোহালী	গোহালি
ঘৰ	ঘৰ

ঘৰিণী	ঘৰণী (মা ক.)
ঘাট	ঘাট
ঘিণ	ঘিণ
চকা	চকা
চোৰ	চোৰ
জৌবন	যৌবন
ঠাকুৰ	ঠাকুৰ
ডাল	ডাল
তেন্তুলি	তেঁতেলী
দাঙী	দাঙী
দাপণ	দাপোণ
দুআৰ	দুৰাৰ
ণই	নৈ
নগন্দ	ননন্দ
পৰাণ	পৰাণ
পাগল	পাগল
পাত	পাত
পাথৰ	পাথৰ
পানী	পানী
পোখী	পুখি
বড়িআ	বোৰি (কাম)
বলদ	বলদ
বাকলঅ	বাক্‌লা, বাকাল (কাম) / বাকলি (মা. অস)
বাট	বাট
বান্ধ	বান্ধ
বাপুড়া	বপুৰা
বাপড়ী	বপুৰী
বাম	বাম

বাহ	বাহ, বাঁহা (কাম)
বেঙ্গ	বেং (কাম.)
ভতাৰি	ভতাৰ, ভাতাৰ (গোৱা. কাম.)
ভাত	ভাত
ভেলা	ভেল (কাম.)
মাঝ	মাজ
মাদলা	মাদলি (কাম.), মাদলী (মা. অস.)
মোলাণ	মোলাণ
ৰাতি	ৰাতি
ৰূপা	ৰূপা (কাম.), ৰূপ (মা. অস.)
লাউ	লাউ (কাম), লাও (মা. অস.)
শিআলী	শিয়ালী
যিআলা	শিয়াল
সগুণ	শগুন
সাল	শাল
সাসু	শাছ
সাঁঝে	সাজ'সন্ধ্যা' (কাম)
সৃজ্জ	সুজ্জু (কাম), সুৰুয (মা. অস.)
সূতা	সূতা
হৰিণা	হৰিণা
হৰিণী	হৰিণী
হাক	হাক
হাড়ী	হাড়ী

২৩। চৰ্যা-পদৰ বহুতো শব্দই অসমীয়া বিশেষ্য, বিশেষণ, সৰ্বনাম, আৰু ক্ৰিয়া শব্দ কিছুমানৰ পূৰ্ব-ৰূপ সংৰক্ষণ কৰিছে। সেইবোৰে অসমীয়া শব্দবোৰৰ বিকাশৰ বিশ্লেষণত সহায় কৰিছে। তেনে শব্দ কিছুমান এনে ধৰণৰ :

আঙ্গুলি > আঙুলি

আম্‌হে > আম্‌হি > আমি। তু. বৈ. অস্মে

উপাডী > উভাডী > উভাৰী > উভালি, উঘালি
 কবড়ী > কঅডী > কড়ী
 কৰই > কৰে
 কান্দই > কান্দে
 কাল > কাল্—আ > কালা (কাম.) > কলা (মা.অস.)
 কাহু > কানু (পু. অস.)
 খুন্টি > খুঁটি
 খেলই > খেলে
 গই > গৈ
 গাজই > গাজে, 'গৰ্জন কৰে'
 ঘাণি > ঘাটি
 ঘুণ > ঘূৰ্
 ঘুমাই > ঘুমোই (কাম.)
 জো, জেঁ, জে > যি। তু. সং, যঃ
 টুটই > টুটে
 ণই > নৈ
 তুম্হে > তুম্হি > তুমি
 তেন্তলি > তেঁতেলী
 দাপণ > দাপোণ। তু. সং. দৰ্পণ > প্ৰা. দপ্পণ
 দুহিএ > দু (কাম)
 পঞ্চ, পাঞ্চ > পাঁচ
 পাস > পাহ 'দাঁতি'
 বটুই > বন্তে (কাম)
 বন্ধ > বেঁক— আ > বেঁকা। তু. সং. বন্ধ
 বহই > বয় 'বৈ যায়'
 বহুড়ী > বউৰী > বোৰী (কাম). মা. অস. বোৱাৰী
 বাকল > বাকাল (কাম.), মা. অস. বাকলি।
 বাজই > বাজে
 বাঁখে > বাজা (কাম.) মা. অস. বঁজা। তু. সং বজ্জা।

- বাঢ়ই > বাঢ়ে
 বাপা, বপা > বাপা (কাম.) মা. অস. বোপা। সং বপ
 বুঝই > বুজে
 বুলই > বুলে
 বোব > বোব্ - আ > বোবা
 ভইল > ভৈল, ভল (পু. অস.)
 ভইলা > ভৈলা (পু. অস.)
 ভথঅ > * ভাথ - ৰি > ভাথৰি 'ভঁৰাল' (কাম)
 ভণই > ভণে (পু. অস.)
 মাণই > মানে
 মুকল > মুকাল (কাম.), মা. অস. মুকলি
 লই > লৈ
 লইআ, লইয়া > লৈ
 লাংগ, লাঙ্গ্ > লাঙা-ট > লাঙাট (কাম) > নাঙাট > নাঙট, নাঙঠ।
 শাসু > শাছ
 ষামাঅ > সোমায়
 সৰুই > সৰু
 সহি > সহি, সৈ (পু. অস.)। তু. সং. সখী
 সাচ > সাচ্ - আ > * সাচা সচা (কাম) > সঁচা (মা. অস.) তু. সং.
 সত্য > প্ৰা সচ্চ
 সাসু > সাস (কাম. চাচ)। তু. সং. শ্বাস
 সিকল > সিকল্- ই > সিকলি (শিকলি)
 সিঝাই > সিজে
 সীস > সিস > সিচ্ 'শিচ্'. তু. সং. শিষ্য
 সো, সে > সি। তু. সং. সঃ
 সোন্ত > সোঁত। তু. সং. স্ৰোত
 হিঅ, হি > হি-আ > হিয়া

২৪। ওপৰৰ আলোচনাত ক্ৰিয়া-ৰূপ কিছুমান দেখুবাওঁতে ক্ৰিয়া -
 ৰূপবোৰৰ লগতে ধাতু কিছুমানৰ ৰূপবোৰ পোৱা গৈছে। সেইবোৰৰ উপৰিও চৰ্যা-

পদত সংৰক্ষিত আন ধাতু কিছুমান তলত দিয়া ধৰণৰ। এইবোৰৰ লগত সংযুক্ত ধাতু কিছুমানৰ অৱস্থিতিও মন কৰিবলগীয়া :

অবশ কৰ্ (চৰ্যা. অবশ কৰিআ)

উজা (চৰ্যা. উজাঅ)

উঠ্ (চৰ্যা.. উঠি)

এৰ (চৰ্যা.. এড়ি)

কেলি কৰ্ (চৰ্যা. কেলি কৰই)

খা (চৰ্যা. খাঅ)

গিল্ (চৰ্যা.. গিলেসি)

(যা) গ', (কাম. গোৱা.) গেল (চৰ্যা. গেল, গেলা)

ছাড়্ (চৰ্যা. ছাড়াই)

যা (চৰ্যা. জাঅ)

জাগ্ (চৰ্যা. জাগঅ)

থিৰ কৰ্ (চৰ্যা. থিৰ কৰি)

দঢ় কৰ্ (চৰ্যা. দিঢ় কৰিঅ)

দেখ্ (চৰ্যা. দেখি)

ধৰ্ (চৰ্যা. ধৰহ)

ধুন্ (চৰ্যা. ধুনি)

নি (চৰ্যা. নিল)

পতিয়া (চৰ্যা. পতিআই)

পাৰ্ (চৰ্যা. পাড়িলা)

পাৰ কৰ্ (চৰ্যা. পাৰ কৰেই)

পুৱা (চৰ্যা. পোহাঅ)

পোছ্ (চৰ্যা. পুচ্ছ)

ফাল্ (চৰ্যা. ফাল)

বখান্ (চৰ্যা. বখানী)

ব (চৰ্যা. বহিআ)

বান্ধ্ (চৰ্যা. বান্ধঅ)

বিহ্ (চৰ্যা. বিহহ)

বুৰ্ (চৰ্যা. বুড়ন্তে)
 মিল্ (চৰ্যা. মিলিল)
 মেল্ (চৰ্যা. মেলি)
 ল (চৰ্যা. লোউ)
 লাগ্ (চৰ্যা. লাগেলি)
 সৰি পৰ্ (চৰ্যা. সড়ি পড়িআঁ)
 হ (চৰ্যা. হোই, হোইব, হোহ্)

২৫। চৰ্যা-পদত সংযুক্ত-শব্দ কিছুমানো পোৱা যায়, যেনে, কমল-ৰস, গঅণ-টাকলি, গন্ধ-পৰস-ৰস, গিৰিবৰ-সিহৰ-সন্ধি, দেহ-নঅৰী, নলিনী-বন, বৰগুৰু-বঅন-কুঠাৰ, বাণ-চিহ্ন-ৰূব, মেৰু-শিখৰ, মোহ-তৰু।

২৬। চৰ্যা-পদত পোৱা সংখ্যাবাচক বিশেষ্য আৰু বিশেষণ শব্দৰ ক্ষেত্ৰত উল্লেখ কৰিব লগীয়া শব্দ এইবোৰ : এক, একু (কাম), চউশটি, চৌষঠী, দুই, দো, তিনি পঞ্চ, পাঞ্চ, দহ, বতিস। বতিশ, বেণি (দুই); দশমি, দ্বাদশ, পহিল ইত্যাদি।

২৭। চৰ্যা-পদত পোৱা বিশেষণ শব্দ-কিছুমান হ'ল এনেকুৱা : আন উপায়ে, উজু, খৰ সোন্তে, খাণ্ট, গন্তীৰ, গহণ, জইসো, জইসৌ, দিঢ় 'দঢ়', বহল ভৰ (নিদ), ভাল, মাতেল 'মাতাল', সৰুই, সহজ, সাচ 'সঁচা', মিচছা 'মিছাঁ' ইত্যাদি।

২৮। ক্ৰিয়াবিশেষণ হিচাপে চৰ্যা-পদৰ এই শব্দবোৰলৈ আঙুলিয়াব পাৰিঃ অইসন, আজি, একাকাৰে, এবে একেলে, একেলী, কইসন, কইসেঁ, কহিঁ, জইসনে, জমি, তিম, তইসন, তসু, পহিলেঁ, 'প্ৰথমতে' মিছেঁ 'মিছাই', সদভাবে ইত্যাদি।

২৯। চৰ্যা-পদত সৰ্বনাম শব্দৰ অনেক ৰূপ পোৱা যায়। সেইবোৰৰ কিছুমান আধুনিক অসমীয়াত সোমাই পৰিছে আৰু বহুসংখ্যক সৰ্বনাম শব্দ পুৰণি অসমীয়াত ৰক্ষিত হৈছে। চৰ্যা-পদত পোৱা সৰ্বনাম-শব্দ কিছুমান এনেকুৱা :

অপনা (চৰ্যা. ৬ : অপনা মাংসে হৰিণা বৈৰী)
 অপনে (চৰ্যা. ৩২ : অপনে অপা বুৱাত নিঅণ)
 আম্‌হে (চৰ্যা. ১ : আম্‌হে ৰাণে দিঠা)

এহ (চৰ্যা. ২৬ : এহ জুগতি)

কাহেৰি (চৰ্যা. ৩৭ : কাহেৰি শঙ্কা)

কাহেৰি (চৰ্যা. ২৯ : কাহেৰে মই দিবি পিৰিচ্ছা)

কেহো (চৰ্যা. ১৮ : কেহো কেহো বোলই)

কো (চৰ্যা. ২৯ : কো পতিআই)

জা (চৰ্যা. ২০ : জা এথু চাহাম)

জাসু (চৰ্যা. ৪৩ : জাসু নাই অপ্পা)

জাহেৰ (চৰ্যা. ২৯ : জাহেৰ বাণ-চিহ্ন-কব গ জানী)

জোঁ, জে (চৰ্যা. ৭ : জে জে আইলা, চৰ্যা. ৩ : জোঁ আজৰামৰ হোই)

জো (চৰ্যা. ৭ : জো মনগোঅৰ)

তই, তঁই (চৰ্যা. ৩৯ : তই ঘুঙু কইসে, চৰ্যা. ৪ : তই বিনু খনই
ন জীৱমি)

তা (চৰ্যা. ৭ : তা দেখি)

তাসু (চৰ্যা. ৪৩ : তাসু পৰেলা কাহি)

তাহেৰ (চৰ্যা. ২৯ : তাহেৰ উহ গ দিস)

তু (চৰ্যা. ১০ : তু ডোম্বী)

তুমহে (চৰ্যা. ২৩ : জই তুমহে জাইবে)

তে (চৰ্যা. ২২ : তে ন হোস্তি)

তো (চৰ্যা. ৪ : তো মুহ চুস্বী)

তোএ (চৰ্যা. ১০ : তোএ সম কৰিব ম সান্দ)

তোৰা (চৰ্যা. ৪১ : তুটই বাষণা তোৰা)

তোহোৰ (চৰ্যা. ১০ : তোহোৰ অন্তৰে মোএ ঘেণিলি)

তোহোৰি (চৰ্যা. ১০ : তোহোৰি কুড়িআ)

মই (চৰ্যা. ১৮ : মই বাহিঅ)

মো (চৰ্যা. ৩৫ : বাজুলে দিল মো)

মোৰ (চৰ্যা. ২০ : জৌবন মোৰ ভইলেসি পুৰা)

মোহোৰ (চৰ্যা. ২০ : মোহোৰ বিগোআ)

সৰ (চৰ্যা. ৪৪ : সৰ বিচুৰিল)

সে (চৰ্যা. ৩ : এক সে ঘড়লী)

সো (চৰ্যা. ৭ : সো উআস)

হাঁউ (চৰ্যা. ১৮ : হাঁউ সুতেলি মহাসুহ লীলে)

৩০। চৰ্যা-পদত অব্যয় শব্দ দুই-চাৰিটা পোৱা যায়। উদাহৰণ : আলো (চৰ্যা. আলো ডোম্বী), ন (চৰ্যা. ন জাই), ভো (চৰ্যা সুন ভো বিআতী), মা (চৰ্যা. মা জাছৰে), ৰে (চৰ্যা. উজু ৰে উজু চ্ছাড়ি), সম (চৰ্যা. তোএ সম), অন্তৰে (চৰ্যা. তোহোৰ অন্তৰে 'তোৰ কাৰণে')।

৩১। চৰ্যা-পদত পুনৰুক্ত শব্দ কেইটামান এনেকুৱা : কেহো কেহো, জিম জিম, তিম তিম, জে জে।

৩২। চৰ্যা-পদত দুটাৰ মাজত তুলনাৰ এনে ব্যৱস্থা আছে : ডোম্বীত আগলি নাই চিলালী (চৰ্যা. ১৮)

৩৩। চৰ্যা-পদৰ ভাষাত বিৰিধ প্ৰত্যয়, শব্দ-বিভক্তি, ক্ৰিয়া-বিভক্তি আদিৰ ৰূপ আৰু প্ৰয়োগ মন কৰিব লগীয়া। সেইবোৰৰ কিছুমান আধুনিক অসমীয়াত আৰু কিছুমান পুৰণি অসমীয়াত সংৰক্ষিত হৈছে। তলত সেইবোৰৰ আলোচনা দাঙি ধৰা হ'ল। :-

(৩৩.১) বচন : প্ৰত্যয়ৰ যোগত হোৱা বহু-বচনৰ উদাহৰণ স্বৰূপে চৰ্যা-পদত পোৱা যায়ঃ সঅল (সকল) সমাহিঅ কাহি কৰিঅই (চৰ্যা. ১)। কেতিয়াবা একেটা শব্দক দুবাৰ ব্যৱহাৰ কৰিও বহু-বচনৰ ভাৱ প্ৰকাশ কৰা হয়; যেনে, উটা উটা পাবত (চৰ্যা. ২৮) তু. অস. বৰ বৰ মানুহ।

(৩৩.২) লিঙ্গ : স্ত্ৰীবাচক - 'ঈ' আৰু - 'নী' প্ৰত্যয়ৰ সহায়ত লিঙ্গ-ভেদৰ ব্যৱস্থা চৰ্যা-পদত আছে ; যেনে— জোই, জোইণী ; শবৰ, শবৰী ; মিআলা, শিআলী। তু. অস. বাঘিনী, শিয়ালী। ভিন্ন শব্দৰ প্ৰয়োগৰ দ্বাৰা লিঙ্গ ভেদৰ ব্যৱস্থাও চৰ্যাপদত দেখা যায় ; যেনে বলদ, গবিআ।

(৩৩.৩) নিৰ্দিষ্টতাৱচক প্ৰত্যয় : জনা : পাঞ্চজনা। তু. অস. পাঁচজন, পাঁচজনা।

(৩৩.৪) কাৰক আৰু শব্দ-বিভক্তি : চৰ্যা-পদত বিভিন্ন কাৰক আৰু সম্বন্ধপদ বুজাবলৈ কিছুমান শব্দ-বিভক্তি ব্যৱহাৰ কৰা হয়। এই শব্দ বিভক্তিবোৰো কিছুমান আধুনিক অসমীয়াত আৰু কিছুমান পুৰণি অসমীয়াত ৰক্ষিত হৈছে। চৰ্যা-পদতো সম্বোধনৰ অৰ্থত কোনো শব্দ-বিভক্তি যোগ নহয়। যেনে, কাহু, কহি গই

কৰিব নিবাস (চৰ্যা ৭) তু. অস. ভগৱান, তুমি ক'ত আছা? অসমীয়াৰ নিচিনা চৰ্যা.-পদতো কেতিয়াবা কৰ্তা-কাৰকত আৰু কেতিয়াবা কৰ্ম-কাৰকত কোনো শব্দ-বিভক্তি লগ নালাগে; যেনে, কাআ তৰুবৰ পঞ্চ বি ডাল (চৰ্যা.. ১) কাহু বিমন ভইলা (চৰ্যা. ৭), বান্ধণ তোড়িউ (চৰ্যা. ৯)। কৰ্তা-কাৰকত সাধাৰণতে 'এ' বিভক্তি লগ লাগে; যেনে, কুস্তীৰে খাঅ (চৰ্যা. ২), চোৰে নিল (চৰ্যা. ২) তু. অস. বাঘে খায়, চোৰে নিলে। কৰ্ম-কাৰকত - 'ক' বিভক্তি যোগ হয়; ঠাকুৰক পৰিনিবিতা (চৰ্যা. ১২),। তু. অস. ৰামচন্দ্ৰক বনলৈ পঠালে। কৰ্তা-কাৰকৰ 'এ' বিভক্তিৰ জৰিয়তে কেতিয়াবা কৰণ-কাৰক, কেতিয়াবা অপাদান-কাৰক আৰু কেতিয়াবা অধিকৰণ-কাৰকৰ ভাৱ প্ৰকাশ কৰা হয়; যেনে, বৰগুৰু বঅণ-কুঠাৰে চিজঅ (চৰ্যা. ৪৫); জামে কাম কি কামে জাম (চৰ্যা. ২২); নেউৰ চৰণে (চৰ্যা. ১১)। তু. অস. হাতে কটা, তাৰ মুখে শুনিলৌ ঘৰে ঘৰে অসুখ। নিমিত্ত-কাৰকৰ বাবে 'লাগি', 'লই' আদি শব্দবিভক্তিকপে ব্যৱহাৰ কৰা হয়; যেনে, গঅণ-টাকলি লাগি (চৰ্যা. ১৬), মেৰু-শিখৰ লই (চৰ্যা. ৪৭), তু. কাম ঘৰোক লেগি, ঘৰ লাগি যাঞ (লৱ-কুশৰ যুদ্ধ), মোক লাগি (ল. কু. যু.)। অপাদান-কাৰক বুজাবলৈ চৰ্যা.-পদত 'ছ' এই শব্দ-বিভক্তিটো প্ৰয়োগ দেখা গৈছে; যেনে, নিঅ ৰুখছ তিহুন ছাঅ বিছাই (চৰ্যা. ২৪)। সম্বন্ধ-পদৰ কাৰণে চৰ্যা.-পদত 'ৰ', 'এৰ' আদি শব্দ-বিভক্তিৰ ব্যৱহাৰ পোৱা হৈছে; যেনে, হৰিণীৰ নিলঅ (চৰ্যা. ৬), ৰুখেৰ তেস্তলি (চৰ্যা. ২)। তু. অস. গৰুৰ গাখীৰ মাসেৰ জোইন্নে (গোৱা)। অধিকৰণ-কাৰকত চৰ্যা.-পদত '-ত' লগ লাগে, যেনে, হাঁড়ীত ভাত নাহি (চৰ্যা. ৩৩)। তু. অস. ঘৰত মানুহ নাই।

(৩৩.৫) ক্ৰিয়া-বিভক্তি : অসমীয়া ভাষাৰ নিচিনা চৰ্যা.-পদতো বিশেষ্য বা সৰ্বনাম শব্দৰ এক-বচন বা বহুবচন বা বহু-বচন অনুসৰি ক্ৰিয়া-ৰূপৰ পৰিৱৰ্তন নঘটে। উদাহৰণ : জে জে উজু বাটে গেলা (চৰ্যা. ১৫), সৰহ ভণই বাপা উজু বাট ভইলা (চৰ্যা. ৩২), চেঅণ ন বেঅন ভৰ নিদ গেলা (চৰ্যা. ৩৬)। ক্ৰিয়া-বিভক্তিৰ ক্ষেত্ৰতো চৰ্যা.-পদত পোৱা বহুতো ক্ৰিয়া-বিভক্তি আধুনিক অসমীয়া আৰু পুৰণি অসমীয়াত সংৰক্ষিত হৈছে। তলৰ আলোচনাই কথাবোৰৰ প্ৰমাণ দিবঃ

(ক) বৰ্তমানকালৰ তৃতীয় পুৰুষৰ-এ -ই : উহ লাগে না (চৰ্যা. ২৯), অইস সংবোহেঁ কো পতিআই (চৰ্যা. ২৯)। তু. অস. লাগে, পতিয়ায়।

(খ) বৰ্তমান-কালৰ তৃতীয় পুৰুষৰ-অন্তি : জে সচৰাচৰ তিঅস ভমন্তি (চৰ্যা. ২২), তে অজৰাম্মৰ কিমপি ন হোন্তি (চৰ্যা. ২২)। তু. ভয়ে অতি চমকন্তি,

ৰাম ৰাম উচ্চৰন্তি (মা. ক.)।

(গ) ভূত-কালৰ তৃতীয় পুৰুষৰ ল,- লা : বাজুলে দিল (চৰ্যা. ৩৫), সুসুৰা নিদ গেল (চৰ্যা. ২), উজুৰাটে গেলা (চৰ্যা. ১৫), তু কন্যাসৰে পাৰিল বাটত নেত পাট (মা.ক.)। বিশ্বকৰ্মে জানিল গোসাই চিন্তে কি কাৰণ (মনকৰ)। তু. গোৱা. গেল, কাম. গেল ; কল, কাল, কলাক ; মা. অস. গ'ল, ক'লে। ভূত-কালৰ প্ৰথম পুৰুষৰ - ইলৌ; অছিলৌ স্বমোহে (চৰ্যা. ৩৫)। তু. অস. আছিলৌ।

(ঘ) ভৱিষ্যত কালৰ তৃতীয় পুৰুষৰ -ইব : কহি গই কৰিব নিবাস (চৰ্যা ৭) তু. অস. কৰিব।

(ঙ) ক্ৰিয়াৰ অসমাপিকা ৰূপ : - ই - ইলে : কহি গই কৰিব নিবাস (চৰ্যা.৭) এড়ি এউ ছন্দক বান্ধ (চৰ্যা. ১)। ৰাতি ভইলে কামৰু জাঅ (চৰ্যা. ২)। তু অস. কৈ গৈ, শুনি, কৰিলে, হ'লে।

(৩৩.৬) চৰ্যা.-পদত পোৱা কৃদন্ত-ৰূপ আৰু ক্ৰিয়াৰ নাস্ত্যৰ্থক ৰূপৰ চানেকি এনে ধৰণৰ :

(ক) বৰ্তমানকালিক কৃদন্ত-ৰূপ : অস্তে : উজু বাট জাঅস্তে (চৰ্যা. ১৫)। তু-ফুৰন্তে ৰজনী গৈল ক্ষয় (শঙ্কৰদেৱ)। তু অস. যাওঁতে, ফুৰোঁতে।

(খ) ভূতকালিক কৃদন্ত-ৰূপ : আঃ পূৰা : জাগ জৌৱণ মোৰ ভইলেসি পূৰা (চৰ্যা. ২০)। তু. অস. খোৱা (বস্তু), কৰা (কাম.)।

(গ) নাস্ত্যৰ্থক ৰূপাংশৰ ক্ৰিয়াৰ আগত প্ৰয়োগ : আন উপায়ে পাৰ ন জাই (চৰ্যা. ৩৮) ; মা জাহৰে লাক্ষ (চৰ্যা. ৩২)। তু. অস. নাযায়, নেথায়, নহয়।

(৩৩.৭) চৰ্যা.-পদত শব্দ-গঠনৰ বাবে প্ৰত্যয়ৰ তেনে ব্যৱহাৰ দেখা নাযায়। তথাপি দুটা এটা উদাহৰণ আছে। উদাহৰণ :

(ক) আলি (আলী) : যবৰালী (চৰ্যা. ৫০)। তু. অস. পুৰষালি, ল'ৰালি।

(খ) জোৰ. বুজোৱা প্ৰত্যয়-বিঃ পঞ্চ বি ডাল (চৰ্যা. ১)। ; এতবি সাৰা (চৰ্যা. ৩০)। তু. অস. ই > বি > অবি > অপি তু. অস. ইমানেই, পাঁচোটাই।

৩৪। বাক্য-বিন্যাসৰ পিনৰ পৰা অসমীয়া ভাষা আৰু চৰ্যাপদৰ মিল দেখুওঁৱা সহজ নহয়, কাৰণ চৰ্যাপদবোৰ পদ্যত ৰচনা কৰা। তথাপি দুই এটা শব্দ-ক্ৰমৰ সাদৃশ্য দুয়ো ভাষাত পৰিলক্ষিত হয়। তাৰ ভিতৰত এটা হৈছে নাস্ত্যৰ্থক ৰূপাংশৰ ক্ৰিয়াৰ আগত স্থান, আনটো হৈছে প্ৰস্ফাৰ্থক অব্যয় নে, না (কাম), ন চৰ্যা. ; যেনে, সাচ ন মিচছা (চৰ্যা.২৯), সঁচা নে মিছা (মা. অস.)

(৩৫) চৰ্যা-পদৰ ভাষাৰে সৈতে অসমীয়া ভাষাৰ ৰূপ আৰু প্ৰত্ন-ৰূপ দুয়োটাই কেনেদৰে জড়িত ওপৰৰ আলোচনাৰ পৰা কিছু স্পষ্ট হৈছে। চৰ্যা-পদৰ ৰূপৰ এক বৃহৎ অংশ সামৰি থৈছে অসমীয়া ব্ৰজবুলি ভাষাই - চৰ্যা-পদৰ ভাষাই হৈছে প্ৰত্ন-অসমীয়া স্তৰৰ পৰা বৰ্তমানৰ স্তৰলৈকে থকা অসমীয়া ভাষাৰ যোগসূত্ৰ।

— উপেন্দ্ৰ নাথ গোস্বামী

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- ১। সুকুমাৰ সেন, *ভাষাৰ ইতিবৃত্ত*, ১৯৭৯, পৃ : ১৩১
- ২। G. V. Tagare, *Historical Grammar of Apbhramsa*, Introduction, 1948, p. 9
- ৩। S K. Sen, *Proto New Indo-Aryan*, 1973. p. 11
- ৪। G.V. Tagare, *Historical Grammar of Apabhramsa*, Introduction, 1948, p. 25
- ৫। D. Srivastava, *Nepali Language. Its History and Development* 1962, p. 65
- ৬। B. Kakati, *Assamese, Its Formation and Development*, 1941, pp. 9-10
- ৭। Grierson, *The Modern Indo-Aryan Vernaculars*, p. 34
- ৮। কালিৰাম মেধি, *অসমীয়া ব্যাকৰণ আৰু ভাষাতত্ত্ব*, ১৯৩৬, পাতনি
- ৯। D. Neog, *The Origin and Growth of the Asamiya Language*, 1964, p. 45
- ১০। M. M. Sharma, *Inscriptions of Ancient Assam*, 1978, p.2
- ১০।(ক) বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকা, *অসমীয়া ভাষাৰ উৎপত্তি আৰু ক্ৰমবিকাশ*
- ১১। K.L Barua, *Early History of Kamarupa*, 1933, p.3

- ১২। K.L. Barua, *Early History of Kamarupa*. 1933, p. 318
- ১৩। D. Neog, *The Origin and Growth of the Asamiya Language*, 1964, p. 50
- ১৪। দেৱানন্দ ভঁৰালি, *অসমীয়া ভাষাৰ মৌলিক বিচাৰ আৰু সাহিত্যৰ চানেকি*, ১৯৩২, দ্বিতীয় সংস্কৰণ, পৃঃ ৫২
- ১৫। U. Goswami, *A Study on Kamrupi a Dialect of Assamese*, p.251
- ১৬। দেৱানন্দ ভঁৰালি, *অসমীয়া ব্যাকৰণ আৰু ভাষা-তত্ত্বৰ সমালোচনাঃ কালিৰাম মেধি স্মৃতি-মাল্য*, ১৯৭৮, পৃঃ ১০৩
- ১৭। দেৱানন্দ ভঁৰালি, *অসমীয়া ভাষাৰ মৌলিক বিচাৰ আৰু সাহিত্যৰ চানেকি*, ১৯৩২, পাতনি
- ১৮। S. K. Bhuyan, *Studies in the Literature of Assam*, 1956, p. 3
- ১৯। আনন্দচন্দ্ৰ আগৰৱালা, *গোৱালপাৰাৰ পুৰণি বিৱৰণ*
- ২০। দেৱানন্দ ভঁৰালি, *অসমীয়া ভাষাৰ মৌলিক বিচাৰ আৰু সাহিত্যৰ চানেকি*, ১৯৩২, পৃঃ ৯০-৯২
- ২১। দেৱানন্দ ভঁৰালি, *অসমীয়া ভাষাৰ মৌলিক বিচাৰ আৰু সাহিত্যৰ চানেকি*, ১৯৩২, পৃঃ ৬১-৬২
- ২২। সূকুমাৰ সেন, *ভাষাৰ ইতিবৃত্ত*, ১৯৭৯, পৃঃ ১৭৩

অসমীয়া ভাষাৰ বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস (১২২৮ৰ পৰা ১৪৭০লৈ)

(খ)

১২২৮ খ্ৰিষ্টাব্দৰ পৰা ১৪৭০ খ্ৰিষ্টাব্দলৈ অসমীয়া ভাষাৰ বুৰঞ্জী অনুধাৱন কৰিবলৈ হ'লে কেইটিমান বিশেষ বিষয়ৰ প্ৰতি দৃষ্টি নিক্ষেপ কৰিব লাগিব। উল্লেখযোগ্য যে 'চৰ্যাপদ' বা 'চৰ্যাগীত'ৰ ভাষাৰ পিচতেই অসমীয়া ভাষাৰ নিদৰ্শন পুৰণি অসমীয়া সাহিত্যৰাজিয়ে দাঙি ধৰে। মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণখনিত অসমীয়া ভাষাৰ এক পূৰ্ণতাৰ ৰূপ প্ৰতিফলিত হোৱা দেখা যায়। যি কি নহওক, অসমীয়া ভাষাৰ বুৰঞ্জী নিৰ্ধাৰণ কৰাৰ ক্ষেত্ৰত প্ৰাচীন যুগৰ সাহিত্যৰ পৰা সমল আহৰণ কৰোঁতে কেইটিমান বিশেষ বিষয়ৰ প্ৰতি চকু দিব লাগিব। ইয়াৰ ভিতৰত পৰে— (১) উপভাষীয় বিভাজন (২) ৰাজনৈতিক বিভাজন (৩) ধৰ্মীয় প্ৰভাৱ (৪) সংস্কৃতিক সংমিশ্ৰণ (৫) সাহিত্যিক ৰূপ।

১। উপভাষীয় বিভাজন : অসমীয়া ভাষাটো আৰ্যসভূত ভাষা। প্ৰাচীন ভাৰতীয় আৰ্যভাষাৰ ক্ৰমবিকাশৰ ফলস্বৰূপেই মধ্যভাৰতীয় আৰ্যৰ স্তৰত উপনীত হৈ আধুনিক ভাৰতীয় আৰ্য ভাষাবোৰ জন্ম দিলে। খ্ৰিঃ পূঃ ষষ্ঠ শতিকাৰ পৰা খ্ৰিষ্টাব্দ দশম শতিকা পৰ্যন্ত পালি, প্ৰাকৃত, অপভ্ৰংশ অৰ্থাৎ মধ্য ভাৰতীয় আৰ্যৰ স্তৰটো নিৰ্দেশ কৰা হৈছে। খ্ৰিঃ পূঃ ষষ্ঠৰ পৰা খ্ৰিষ্টীয় প্ৰথম শতিকালৈ আদি প্ৰাকৃতৰ পালি আৰু খ্ৰিষ্টীয় প্ৰথমৰ পৰা ষষ্ঠলৈ প্ৰাকৃতৰ স্তৰ আৰু খ্ৰিষ্টীয় ষষ্ঠৰ পৰা দশমলৈ অপভ্ৰংশৰ স্তৰ বুলি নিৰ্ধাৰিত হৈছে। প্ৰাকৃতৰ স্তৰত বিভিন্ন সাহিত্যিক প্ৰাকৃতবিলাকৰ পৰা একোটা অপভ্ৰংশ স্তৰৰ জন্ম হৈছে। মাগধী প্ৰাকৃতৰ পৰা উদ্ভৱ হোৱা মাগধী অপভ্ৰংশৰ পূৰ্ব শাখাটোৰ পৰা অসমীয়া, বঙলা, উড়িয়া ভাষাৰ জন্ম হোৱা বুলি অনেক ভাষাবিদে প্ৰমাণ কৰিছে। আন কোনো কোনো পণ্ডিতে অসমীয়া ভাষাৰ জন্মৰ ক্ষেত্ৰত কামৰূপী প্ৰাকৃত নামৰ এবিধ প্ৰাকৃতৰ কথা উল্লেখ কৰিছে

যাৰ পৰৱৰ্তী স্তৰ কামৰূপী অপভ্ৰংশৰ পৰা অসমীয়া ভাষাৰ জন্ম হোৱা বুলি এইসকলে মন্তব্য প্ৰকাশ কৰিছে। কামৰূপী অপভ্ৰংশৰ পৰা উদ্ভৱ হোৱা ভাষাবোৰ তিনিটা ভাগত বিভক্ত কৰা হৈছে।^১ (১) দক্ষিণ পশ্চিম কামৰূপী (২) পশ্চিম কামৰূপী (৩) পূৱ কামৰূপী। দক্ষিণ পশ্চিম কামৰূপীৰ ভিতৰত মৈমনসিং নোৱাখালিৰ পৰা আৰম্ভ কৰি ঢাকা, চট্টগ্ৰাম আদি ভাষাক ইয়াৰ অন্তৰ্ভুক্ত কৰিছে। পশ্চিম কামৰূপীৰ ভিতৰত— ৰংপুৰ, জলপাইগুৰি, দাৰ্জিলিং আদি উপভাষা পৰে। পূৱ কামৰূপী ভাষাৰ ভিতৰত শ্ৰীহট্ট, কাছাৰ, গোৱালপাৰা, বৰপেটা, বজালী, শিৱসাগৰ আদিৰ উপভাষা পৰে। গতিকে দেখা গ'ল মাগধী প্ৰাকৃতৰ পৰা সৃষ্টি হোৱা মাগধী অপভ্ৰংশৰ পূৱ উপশাখাটোৰ পৰা যিদৰে অসমীয়া বঙলা আদিৰ ভাষাৰ জন্ম হোৱা বুলি ভাষাবিদসকলে মন্তব্য প্ৰকাশ কৰিছে, তেনেদৰে কামৰূপী প্ৰাকৃতৰ কথা উল্লেখ কৰা ভাষাবিদসকলে পূৱ কামৰূপীৰ পৰা বৰ্তমান অসমৰ প্ৰায়বোৰ ঠাইৰ উপভাষাৰ কথা উল্লেখ কৰিছে। মাগধী প্ৰাকৃতৰ পৰা অসমীয়া ভাষাৰ জন্ম হোৱা বুলি মত পোষণ কৰা ভাষাবিদসকল হ'ল— প্ৰিয়াৰচন, সুনীতিকুমাৰ চেটাৰ্জী, বাণীকান্ত কাকতি আদি। কামৰূপী প্ৰাকৃতৰ পৰা অসমীয়া ভাষাৰ জন্ম হৈছে বুলি কোৱাসকলৰ ভিতৰত— বেণীমাধৱ বৰুৱা, ডিম্বেশ্বৰ নেওগ, বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকা আদিৰ নাম উল্লেখ কৰিব পাৰি। আন এজন ভাষাবিদ কালিৰাম মেধিয়ে প্ৰাচ্য-পশ্চিমা প্ৰাকৃতৰ মিশ্ৰিত ৰূপতহে অসমীয়া ভাষাৰ জন্ম হৈছে বুলি ক'ব খোজে। এইসকল ভাষাবিদৰ পৰৱৰ্তী সময়ত বিভিন্ন ভাষাবিদে মন্তব্য কৰাসকলৰ ভিতৰত মাগধী প্ৰাকৃতৰ পৰা সৃষ্টি হোৱা বুলি কোৱা ভাষাবিদৰ সংখ্যাই অধিক।^২

সপ্তম শতিকালৈ উদ্ভৱবজ্জ আৰু অসমীয়া ভাষাৰ মাজত বিশেষ পাৰ্থক্য নাছিল বাবে দুয়োৰে মাজত যথেষ্ট সাদৃশ্য দেখা যায়। পঞ্চম শতিকাৰ পৰা দ্বাদশ শতিকালৈ হিন্দুৰ ৰজাসকলে যি তামৰ ফলি লিখি থৈ গৈছিল তাত প্ৰয়োগ কৰা কেতবোৰ শব্দই পুৰণি অসমীয়া ভাষাৰ নিদৰ্শন দাঙি ধৰে। এইখিনিতে উল্লেখযোগ্য যে বৰ্তমান অসমৰ যি ভৌগোলিক সীমাৰেখা তাৰ তুলনাত প্ৰাচীন অসমৰ ভৌগোলিক সীমাৰেখা যথেষ্ট ব্যাপক আছিল। ৰাজনৈতিক কাৰণত অসমীয়া ভাষা সাহিত্যৰ কেন্দ্ৰস্থল পৰিৱৰ্তিত হোৱাৰ বাবেই অসমীয়া ভাষাৰ যে সময়ে সময়ে কিছু পৰিৱৰ্তন হৈছিল সেই কথা সঁচা। ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ পৰা পঞ্চদশৰ ভিতৰত অসমীয়া ভাষাইও বিভিন্ন সময়ত আঞ্চলিক ভাষাৰ কিছু তথ্য আহৰণ কৰিছিল। আঞ্চলিক তথাকথিত ভাষাৰ উপাদানসমূহ লগ লগাই লৈ অসমীয়া ভাষাই এক সুন্দৰ সাহিত্যিক ৰূপৰ জন্ম দিলে।

প্ৰাচীন অসমত সেই সময়ত কেৱল এখন ৰাজ্যই নাছিল, সৰু সৰু ক্ষুদ্ৰ ক্ষুদ্ৰ ভালেকেইখন ৰাজ্যত ই বিভক্ত আছিল। অসমৰ পশ্চিম অঞ্চলৰ কামৰূপ আৰু পিচত কমতাৰ ৰাজ্যই কামৰূপৰ কিছু অংশ সামৰি লৈছিল। গোৱালপাৰা আৰু উত্তৰ বঙ্গৰ কিছু অঞ্চল তাৰ অন্তৰ্ভুক্ত হৈছিল যদিও সময়ে সময়ে তাৰ সন্ধোচনো ঘটিছিল। প্ৰকৃত অৰ্থত কমতাপুৰেই অসমীয়া সাহিত্য চৰ্চাৰ মূল কেন্দ্ৰস্থল হৈ পৰিছিল। বিভিন্ন ৰজাৰ পৃষ্ঠপোষকতাত কবিসকলে কাব্য ৰচনা কৰিছিল আৰু প্ৰকৃত অৰ্থত ক'বলৈ গ'লে নামনি অসমতে অসমীয়া ভাষাৰ বিশেষ চৰ্চা হৈছিল। ঔপভাষীয় বিভাজন কৰিবলৈ এই সময়ছোৱাৰ বিশেষ প্ৰামাণ্য তথ্য নোপোৱাৰ হেতু কিছু জটিল, তথাপি অসমৰ পশ্চিম অঞ্চল অৰ্থাৎ নামনি অসমত এক উপভাষিক ক্ষেত্ৰ যে গঢ়ি উঠিছিল সেইকথা অনুমান কৰিব পাৰি। মধ্য অসমৰ ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ দক্ষিণ পাৰে এক বৃহৎ অঞ্চল শাসন কৰিছিল কছাৰী ৰজাসকলে। তেওঁলোকৰ ভৌগোলিক পৰিসীমা উজনি অসমৰ দিখৌৰ পৰা কলং-কপিলীলৈকে আছিল বুলিব পাৰি। মধ্য অসমৰ উত্তৰ পাৰে আকৌ দৰঙৰ পৰা নাৰায়ণপুৰলৈকে ভূঞাসকলে ৰাজত্ব কৰিছিল। প্ৰাচীন অসমৰ পূব অঞ্চলত, অৰ্থাৎ লক্ষীমপুৰৰ পৰা শদিয়ালৈকে ৰাজত্ব কৰিছিল চুতীয়া ৰজাসকলে। আন হাতে আকৌ ত্ৰয়োদশ শতিকাত, অৰ্থাৎ ১২২৮ খ্ৰিষ্টাব্দত অসমৰ উত্তৰ-পূব কোণেদি পাটকাই পৰ্বত পাৰ হৈ টাইবংশীয় আহোমসকল আহি প্ৰথমে অসমৰ পূব অংশত পদাৰ্পণ কৰি শেষত ৰাজ্য বিস্তাৰ কৰিবলৈ ধৰে। কছাৰীসকলক দক্ষিণ-পশ্চিম প্ৰান্তলৈ বিতাড়িত কৰি পঞ্চদশ শতিকাৰ শেষাৰ্ধত তেওঁলোকে কলিয়াবৰলৈকে ৰাজ্য বিস্তাৰ কৰে। গতিকে দেখা গ'ল প্ৰাচীন অসমত বৰাহী, কছাৰী, ভূঞা, চুতীয়া আৰু আহোম ৰজাসকলে ৰাজত্ব কৰে। গতিকে অসমীয়া ভাষাৰ উপভাষীয় বিভাজনৰ ক্ষেত্ৰত বিশেষভাৱে পশ্চিম, অৰ্থাৎ নামনি অসমৰ ঔপভাষীয় ৰূপ বিশেষভাৱে স্পষ্ট। মধ্য অসমৰ ভাষাৰ লগত পশ্চিম অসমৰ ভাষাৰ ঔপভাষিক পাৰ্থক্য কিছু পৰিমাণে হ'লেও বৰ্দ্ধিত আছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। আন হাতে আকৌ চুতীয়া ৰজাসকলে ৰাজত্ব কৰা উজনি অসমৰ ভাষাৰ লগতো পশ্চিম অসমৰ ভাষাৰ পাৰ্থক্য বিদ্যমান। মধ্য অসমৰ ভাষাৰ লগতো উজনি অসমৰ ভাষাৰ কিছু পাৰ্থক্য আছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। টাইবংশীয় আহোমসকল যেতিয়া অসমলৈ আহিল তেতিয়া উজনি অসমৰ অসমীয়া ভাষাৰ ঔপভাষিক ক্ষেত্ৰখন কিছু বিস্তাৰিত হোৱা বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। আহোমসকলে স্থানীয় ভাষা আৰু ধৰ্মকে গ্ৰহণ কৰে যদিও তেওঁলোকে

লৈ অহা নিজস্ব ভাষাৰ সামান্য প্ৰভাৱ হ'লেও অসমীয়া ভাষাত নপৰাকৈ বাখালিল। আহোম ৰজাসকলে ছশ বছৰীয়া ৰাজত্বৰ কীৰ্ত্তিস্তম্ভেৰে অসমীয়া জাতিক এক ৰাজনৈতিক ছত্ৰছায়াৰে আবদ্ধ কৰাৰ ফলত শিৱসাগৰৰ পৰা আৰম্ভ কৰি অসমৰ পূৰ্ব সীমান্তলৈকে উপভাষাৰ বৃহৎ প্ৰতিচ্ছবি অনুভৱ কৰিব পাৰি। অৱশ্যে সেই অঞ্চল বিশেষৰো ক্ষুদ্ৰ ক্ষুদ্ৰ কেতবোৰ আঞ্চলিক উপভাষা নোহোৱা নহয়। প্ৰথম অৱস্থাত অসমৰ পশ্চিম অঞ্চলত থকা ভাষা সাহিত্যৰ কেন্দ্ৰস্থল ক্ৰমান্বয়ে উজনি অসমলৈ ওচি যায়। প্ৰাক্‌শঙ্কৰী যুগৰ কবিসকলে যি সাহিত্যিক ভাষা তেওঁলোকৰ ৰচনাত প্ৰয়োগ কৰিছিল তাৰ পৰা এটি কথা অনুভৱ কৰিব পাৰি যে আঞ্চলিক উপভাষাবোৰৰ প্ৰয়োগ থকা সত্ত্বেও অসমীয়া ভাষাৰ সৰ্বজনস্বীকৃত কথাৰ প্ৰতি লক্ষ্য ৰাখি এনে এক ভাষাত কাব্য আদি ৰচনা কৰিছিল যি সকলো লোকৰ বাবেই আদৰ্শীয় হৈছিল। কিন্তু তথাপিও এই কবিসকলৰ ৰচনাৰ ভাষাত আঞ্চলিক ৰূপ কেতবোৰ প্ৰকাশ নোপোৱাকৈ থকা নাছিল। উদাহৰণ স্বৰূপে মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণখনিতে স্থানীয় কেতবোৰ বস্তুৰ নাম উল্লেখ কৰোঁতে স্থানীয় ভাষাৰ ৰূপ কিছুমান পোৱা যায়। আহোম ৰজাসকলৰ ৰাজত্বৰ পৰা অসমীয়া সাহিত্যৰ কেন্দ্ৰস্থল উজনি অসম হোৱা হেতু উজনি অসমৰ উপভাষাই স্বাভাৱিকতেই কিছু প্ৰাধান্য লাভ কৰিবলৈ সক্ষম হয়। গতিকে দেখা যায় অসমীয়া ভাষাৰ প্ৰাচীন উপভাষীয় ৰূপটো বিভাজন কৰিবলৈ যাওঁতে উজনি-নামনি অসমৰ উপভাষাৰ বিভাজনটো স্পষ্ট হৈ উঠে আৰু মধ্য অসমৰ উপভাষাৰো এক ক্ষেত্ৰ অনুভৱ কৰিব পাৰি। কিন্তু কবিসকলে যি ভাষাত সাহিত্য ৰচনা কৰিছিল সি এক উপভাষীয় ক্ষেত্ৰৰ মাজতে আবদ্ধ নাথাকি সমগ্ৰ অসমৰে উমৈহতীয়া সাহিত্য সম্বলৰূপে সৰ্বজনগ্ৰাহ্য হ'ল। অৱশ্যে তেওঁলোকে কাব্য ৰচনা কৰিছিল ৰজাঘৰীয়া পৃষ্ঠপোষকতাতহে— ফলস্বৰূপে ৰাজনৈতিক বন্ধনত থকা হেতু স্বাভাৱিকতে সকলো জনগোষ্ঠীয়েই ইয়াক গ্ৰহণ কৰাত অসুবিধাৰ সৃষ্টি হোৱা নাছিল। ১২২৮ খ্ৰিষ্টাব্দৰ পৰা ১৪৭০ খ্ৰিষ্টাব্দলৈ উপভাষীয় বিভাজন কৰা কিছু জটিল যদিও ৰাজনৈতিক প্ৰশাসনে যে বিভিন্ন উপভাষাৰ সমান্তৰালৰূপে এক ভাষিক স্বৰূপ প্ৰদৰ্শনত সমৰ্থ হৈছিল সেই কথা স্পষ্ট। যি কি নহওক, উপভাষীয় বিভাজনত সেই সময়ৰ অসমৰ ৰাজনৈতিক পৃষ্ঠভূমি বিশেষভাৱে উল্লেখযোগ্য।

২। ৰাজনৈতিক প্ৰভাৱ : উপভাষীয় বিভাজনৰ কথা আলোচনা কৰোঁতে প্ৰাচীন অসমৰ ৰাজনৈতিক প্ৰশাসনৰ কথা কোৱা হৈছে। গতিকে প্ৰাচীন অসমৰ

উপভাষাৰ বিভাজনত ৰাজনৈতিক প্ৰভাৱেও যে ক্ৰিয়া কৰিছে সেই কথা স্পষ্ট। 'চৰ্যা পদ' বা 'চৰ্যা গীত'ৰ ৰচনা কাল দশম-দ্বাদশ শতাব্দী বুলি অনুমান কৰা হৈছে। তাৰ পিচত কিছু কাল জুৰি কোনো স্থায়ী সাহিত্যিক নিদৰ্শন তেনেদৰে পোৱা নাযায়। কেৱল চতুৰ্দশ শতিকাৰ, অৰ্থাৎ প্ৰাক্ষৰ্ষৰী যুগৰ পাঁচোজন কবিৰ কাব্য সাহিত্য পোৱা যায়। ফল স্বৰূপে এই কবিসকলৰ হাততেই অসমীয়া ভাষাই পোন প্ৰথম বাৰৰ বাবে স্বকীয় বৈশিষ্ট্যৰ উপৰিও এক উচ্চ শ্ৰেণীৰ সাহিত্য ৰচনাৰ পৰম্পৰা পৰিলক্ষিত হয়। অসমীয়া ভাষাৰ সাধুকপ বা সাহিত্যিক ৰূপটোৰে পৰৱৰ্তী কালৰ সাহিত্যিকসকলকো প্ৰভাৱান্বিত কৰে। এই কালৰ কবিসকলে প্ৰধানভাৱে ৰজাঘৰীয়া পৃষ্ঠপোষকতা লাভ কৰি সাহিত্য ৰচনা কৰে। কমতাপুৰৰ ৰজা দুৰ্লভনাৰায়ণ, তেওঁৰ পুত্ৰ ইন্দ্ৰনাৰায়ণ, শ্ৰীমন্ত তাম্ৰধ্বজ আৰু বৰাহী ৰজা শ্ৰীমহামাণিক্য এইকেইজন ৰজাৰ বিশেষ উদ্যোগত এই সময়ৰ কবিসকলে সাহিত্য ৰচনাত মনোনিৱেশ কৰে। উল্লেখযোগ্য যে এই সময়ছোৱাত প্ৰাচীন অসম, অৰ্থাৎ কামৰূপ কেইবাবাৰো মুচলমান দ্বাৰা বিধ্বস্ত হ'ব লগীয়া হৈছিল যাৰ প্ৰভাৱ অসমৰ ৰাজনৈতিক আৰু সাংস্কৃতিক দুয়ো দিশতে পৰে। পশ্চিম অসমৰ কমতাপুৰত ৰাজত্ব কৰা বিভিন্ন ৰজাসকলৰ ভিতৰত প্ৰতাপধ্বজ, দুৰ্লভনাৰায়ণ, ধৰ্মনাৰায়ণ, তাম্ৰধ্বজ, আৰিমন্ত, নীলধ্বজ, চক্ৰধ্বজ, নীলাম্বৰ আদি বিভিন্ন ৰজাৰ কথা পোৱা যায়। অৱশ্যে এই সময়ৰ অসমৰ ইতিহাসৰ এক স্পষ্ট প্ৰতিচ্ছবি পোৱা জটিল যদিও বুৰঞ্জী, চাৰু-সাহিত্য আৰু মুচলমান ঐতিহাসিকসকলৰ ৰচনাৰ পৰা কিছু আভাস পাব পাৰি। ওপৰত উল্লেখ কৰা ৰজাসকলৰ ৰাজত্বৰ দ্ৰুত পৰিৱৰ্তনৰ ফলত সাহিত্য ৰচনাত ব্যাঘাত জন্মিছিল যদিও দুই চাৰিজন অসমীয়া ভাষা-সাহিত্যৰ ভেঁটি প্ৰতিষ্ঠা কৰিবলৈ সক্ষম হৈছিল। ৰজাসকলৰ ৰাজত্বৰ দ্ৰুত পৰিৱৰ্তনৰ ফলত ক্ষুদ্ৰ ক্ষুদ্ৰ অঞ্চলৰ কেতবোৰ সৰু সৰু ৰাজপ্ৰশাসনেও সময়ে সময়ে গা কৰি উঠিছিল, কিন্তু সময়ছোৱাৰ কবিসকলে পশ্চিম অসমৰ ৰজাসকলৰ পৃষ্ঠপোষকতাতে সাহিত্য ৰচনাৰ অনুপ্ৰেৰণা লাভ কৰিছিল বাবে অসমীয়া সাহিত্যিকৰ ৰচনাত ৰাজনৈতিক প্ৰভাৱৰ কথা স্পষ্টভাৱে ক'ব পাৰি। অসমৰ মধ্য আৰু পূব অংশত চুতীয়া, কছাৰী আদি ৰজাই ৰাজত্ব কৰিছিল যদিও টাইবংশীয় আহোম ৰজাসকলৰ আমোলতহে পৰৱৰ্তী কালত অসমীয়া ভাষা-সাহিত্যই গা কৰি উঠিছিল। কিন্তু যথার্থতে ক'বলৈ গ'লে ষোড়শ শতিকাৰ বৈষ্ণৱ আন্দোলনৰ পূৰ্ব ভাগত মাধৱ কন্দলী, হেম সৰস্বতী আদিয়ে দেশ, কালৰ উপযোগী কৰি যি সাহিত্য ৰচনা কৰিছিল তাত পশ্চিম অসমত ৰাজত্ব কৰা ৰজাসকলে অৱদান বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য।

খ্ৰিষ্টাব্দ চতুৰ্দশ শতিকাত প্ৰাচীন কামৰূপ-কমতা ৰাজ্যক কেন্দ্ৰ কৰি ৰাণায়ণ, মহাভাৰত, পুৰাণ আদিৰ কথাৰে অসমীয়া ভাষাত যেতিয়া কাব্য ৰচিত হয় তেতিয়া সেই সময়ৰ কামৰূপ-কমতাৰ ৰাজনৈতিক বুৰঞ্জী সেই কবিসকলৰ কাব্যত উল্লেখ থকা আত্মপৰিচয়ৰ দ্বাৰা আঁত ধৰিবলৈ চেষ্টা কৰিব লগীয়া হয়।* ৰজা দুৰ্লভনাৰায়ণৰ কথা চৰিত পুথিত পোৱা যায়। কোনো কোনোৱে এই নামৰে দুজন ৰজাৰ কথা উল্লেখ কৰিছে। দুৰ্লভনাৰায়ণক তাম্ৰধ্বজ, বৰাহী ৰজা মহামাণিক্যৰ কিছু আগৰ বুলি ঠাৱৰ কৰা হৈছে। মাধৱ কন্দলীৰ পৃষ্ঠপোষক বৰাহী কছাৰী ৰজা শ্ৰীমহামাণিক্য চতুৰ্দশ শতিকাৰে বুলি কোৱা হৈছে। এইজন ৰজা পাট-হেড়ম্বত ৰাজধানী পতা মহামাণিক্য একেজনেই বুলি অনুমান কৰা হৈছে। দিখৌ নৈৰ পূৱ পাৰলৈকে আহোম ৰজাসকলৰ ৰাজত্ব বিস্তাৰৰ হেতু তাৰ পৰা কছাৰীসকল আঁতৰি আহে। প্ৰকৃতপক্ষে ক'বলৈ গ'লে ৰজা মহামাণিক্য, দুৰ্লভনাৰায়ণ, ইন্দ্ৰনাৰায়ণ আদি প্ৰাচীন ৰজাসকলে এইসময়ৰ অসমীয়া সাহিত্যৰ ভেঁটি তৈয়াৰ কৰোঁতে কবি-সাহিত্যিকসকলক যিদৰে অনুপ্ৰাণিত কৰিছিল তাৰ ফলতেই তেওঁলোকে উৎকৃষ্ট সাহিত্যৰ জন্ম দিবলৈ সক্ষম হৈছিল। প্ৰকৃতৰ্থত প্ৰাচীন অসমৰ ৰাজনৈতিক প্ৰভাৱেহে অসমীয়া ভাষাৰ সৃষ্টিত ইন্ধন যোগালে। যাৰ অবিহনে হয়তো খ্ৰিষ্টীয় ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ পৰা পঞ্চদশ শতিকালৈ অসমীয়া সাহিত্যৰ বিশেষ পৰিচয় পোৱা কঠিন হ'লহেঁতেন।

৩। ধৰ্মীয় প্ৰভাৱ : অসমীয়া ভাষা-সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী নিকপণ কৰোঁতে বহু সময়ত দেখা যায় যে ধৰ্মইও ইয়াৰ বিকাশত বিশেষভাৱে ইন্ধন যোগায়। প্ৰাচীন অসমত হিন্দু ধৰ্মৰ প্ৰভাৱ যথেষ্ট পৰিমাণে আছিল আৰু কোনো কোনো ৰজাই হিন্দুধৰ্ম গ্ৰহণ কৰিছিল আৰু কোনো কোনোৱে গ্ৰহণ কৰা নাছিল।

প্ৰাচীন অসমত অসমীয়া ভাষা-সাহিত্যৰ চৰ্চাৰ ক্ষেত্ৰত বিভিন্ন ধৰ্মৰ প্ৰভাৱ অনুভূত হয়। শঙ্কৰদেৱৰ পূৰ্বৱৰ্তী কালছোৱাত অসমত শৈৱ আৰু শাক্ত ধৰ্মৰ বিশেষ প্ৰচলন আছিল বুলি জনা যায়। *কালিকাপুৰাণ*, *যোগিনীতন্ত্ৰ* আদি প্ৰাচীন গ্ৰন্থত প্ৰাচীন অসমৰ ধৰ্মৰ ধাৰাৰ আভাস পোৱা যায়। তদুপৰি গুণাভিৰাম বৰুৱাৰ *আসাম বুৰঞ্জী*, দৰং ৰাজবংশাৱলী, মণিৰাম দেৱানৰ *বুৰঞ্জী বিবেক ৰত্ন*, আদি গ্ৰন্থত অসমত প্ৰচলিত ধৰ্ম সম্পৰ্কে কিছু তথ্য পোৱা যায়। চতুৰ্থ শতিকাৰ পৰা দ্বাদশ শতিকা পৰ্যন্ত পুণ্যৱৰ্মা, শালস্তম্ভ আৰু ব্ৰহ্মপাল বংশৰ হিন্দুৰাজ্যৰ ৰাজত্বৰ সময়ত শৈৱ ধৰ্মই বিশেষ প্ৰতিষ্ঠা লাভ কৰে বুলি অনুমান কৰা হয়।* তামৰ শাসনৰ যুগৰ হিন্দুধৰ্মৰ ৰজাসকল শিৱৰ বিশেষ ভক্ত আছিল বুলি কেতবোৰ তথ্যই প্ৰমাণ দিয়ে। *দৰং ৰাজবংশাৱলী*ৰ মতে

কোচবিহাৰ কামৰূপৰ কোঁচৰাজবংশ শিৱৰ বংশধৰৰূপে দেখুওৱা হৈছে। কছাৰীসকলৰ মাজত শিৱপূজা প্ৰচলিত থকাৰ উমান পোৱা যায়। প্ৰাক্ষৰী সাহিত্যৰাজিত শৈৱ ধৰ্মৰ কথা ঠায়ে ঠায়ে উল্লেখ আছে। বিশেষভাৱে কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ *দ্রোণপব* (মহাভাৰতৰ)ৰ ভণিতাত সদাশিৱৰ কথা উল্লেখ কৰা হৈছে। ৰামানন্দ দ্বিজৰ গুৰুচৰিতত প্ৰাক্ষৰী যুগত শৈৱ ধৰ্মৰ প্ৰভাৱৰ কথা পোৱা যায়। আন হাতে আকৌ বৈষ্ণৱ ধৰ্মৰ প্ৰৱৰ্তক শঙ্কৰদেৱৰ শঙ্কৰ নামকৰণতে শিৱপূজাৰ ফলতহে যে তেওঁক লাভ কৰে সেই কথাও বিভিন্ন মন্তব্যৰ পৰা জনা যায়। কথা-গুৰুচৰিততো ঠায়ে ঠায়ে প্ৰাক্ষৰী যুগত শৈৱ ধৰ্মৰ এটি সঁতি বৈ আছিল বুলি বুজিব পাৰি। এই সময়ছোৱাৰ ভাষা-সাহিত্যৰ ৰচনাত শৈৱ ধৰ্মৰ বিশেষ প্ৰভাৱ আছে বুলি অনুভৱ নকৰিলেও এই যুগৰ আগৰ কালছোৱাৰ পৰা শৈৱ ধৰ্মৰ সঁতি এটি যে প্ৰৱাহিত হৈ আছিল সেই কথাৰ উমান কিছু পোৱা যায়।

শৈৱ ধৰ্মৰ লগে লগে প্ৰাচীন অসমত শাক্ত ধৰ্মইও যে প্ৰভাৱ বিস্তাৰ কৰিছিল সেইকথা *কালিকা পুৰাণ*, *যোগিনীতন্ত্ৰ* আৰু অন্যান্য উৎসৰ পৰা জানিব পাৰি। প্ৰাচীন অসমৰ কামাখ্যা, তাম্ৰেশ্বৰী মন্দিৰ আদি তীৰ্থস্থানসমূহে শাক্ত ধৰ্মৰ প্ৰভাৱৰ কথা ঘোষণা কৰে। শাক্ত ধৰ্মৰ উপাসকসকলে বিভিন্ন বলিবিধান দিয়াৰ কথা বিভিন্ন তথ্যই দাঙি ধৰে। কামৰূপত কোঁচ ৰাজবংশ প্ৰতিষ্ঠিত হোৱাৰ আগে আগে শাক্ত ধৰ্মৰ প্ৰভাৱ কিছু লুপ্ত হোৱা যেন অনুভৱ হয়। বৈষ্ণৱ ধৰ্মৰ প্ৰৱৰ্তক শঙ্কৰদেৱৰ উপৰিপুৰুষ চণ্ডীবৰৰ নামকৰণতে শাক্ত ধৰ্মৰ প্ৰভাৱৰ কথা অনুভৱ কৰিব পাৰি। প্ৰথম অৱস্থাত বাৰভূঞাসকল ঘোৰ শাক্ত আছিল বুলি জনা যায়। দুৰ্গভনাৰায়ণ ৰজাই দেৱীৰ প্ৰতি থকা অনুৰক্তিৰ বাবেই শঙ্কৰৰ উপৰিপুৰুষৰ নাম দেৱীদাস ৰাখে।^৭ প্ৰাক্ষৰী যুগৰ সৰ্বশ্ৰেষ্ঠ কবি মাধৱ কন্দলীৰ ৰচনাত ‘অষ্টমীৰ ছাগ’ নামৰ এটি উপমা প্ৰয়োগ কৰা হৈছে। *দৰং ৰাজবংশাৱলী*তো কোঁচৰজা শাক্ত ধৰ্মৰ প্ৰতি আগ্ৰহী বুলি জনা যায়। আন হাতে *কথা-গুৰুচৰিত*ত উল্লেখ থকামতে শঙ্কৰদেৱৰ প্ৰিয়শিষ্য মাধৱদেৱে যে ঘোৰ শাক্ত ধৰ্মী আছিল সেই কথা জানিব পৰা যায়। এইবিলাক সমলৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি প্ৰাচীন কালৰ পৰা কামৰূপত শাক্ত ধৰ্মৰ যি সঁতি বৈ আহিছিল তাৰ প্ৰভাৱ শঙ্কৰী যুগলৈকে প্ৰত্যক্ষ বা পৰোক্ষভাবে হ’লেও পৰিছিল। এই কালছোৱাৰ ভাষা-সাহিত্যৰ ভিতৰত শাক্ত ধৰ্মৰ উল্লেখ বৰ বিশেষ পোৱা নগ’লেও দুই এটি উপমা তথা বিশেষ ধৰণৰ উল্লেখ শাক্ত ধৰ্মৰ প্ৰভাৱৰ কথা কিছু সূচায়। *গুৰুচৰিত* কথাত শঙ্কৰদেৱৰ গুৰু মহেন্দ্ৰ কন্দলীয়ে

শঙ্কৰদেৱক 'দুৰ্গাৰ ৰিচ্ আফিক' শিকাবলৈ কোৱা কথাষাৰত শাস্ত্ৰ ধৰ্মৰ এটি বিশেষ সূতি পোৱা গৈছিল। তাৰ পৰা এই কথা প্ৰতিপন্ন হয় যে ইয়াৰ আগৰ কালছোৱাতো ইয়াৰে প্ৰভাৱ আছিল।

এই সময়ছোৱাৰ ভিতৰত ৰচিত অসমীয়া সাহিত্যৰ ভাষাৰ ক্ষেত্ৰত শৈৱ আৰু শাস্ত্ৰ ধৰ্মৰ লগতেই বৈষ্ণৱ ধৰ্মৰ কথাও বিশেষভাৱে উল্লেখ কৰিব লাগিব। মহাপুৰুষ শঙ্কৰদেৱে অসমত বৈষ্ণৱ ধৰ্ম প্ৰৱৰ্ত্তন কৰিলে যদিও তাৰ আগৰ কালছোৱাৰ পৰাই ইয়াৰ এক সূতি প্ৰৱাহিত হৈ আহিছিল বুলি কব পাৰি। প্ৰাচীন অসমৰ তামৰ ফলি আৰু অন্যান্য কেতবোৰ সমলৰ পৰা বৈষ্ণৱ ধৰ্মৰ অস্তিত্ব অনুভৱ কৰিব পাৰি। অসমত বিষ্ণু উপাসনা কৰাৰ কথা বিভিন্ন মঠ-মন্দিৰ আদিৰ পৰা জনা যায়। অসমৰ ঠায়ে ঠায়ে বাসুদেৱ পূজাৰ কথাও পোৱা যায়। কালিকাপুৰাণ, যোগিনীতন্ত্ৰ আদি প্ৰাচীন প্ৰসিদ্ধ গ্ৰন্থতো প্ৰাচীন অসমৰ বিষ্ণু পূজাৰ বিষয়ে উল্লেখ আছে। প্ৰাক্‌শঙ্কৰী যুগৰ সাহিত্যৰাজিৰ বিষয়বস্তু অনুধাৱন কৰিলে দেখা যায় যে বৈষ্ণৱ ধৰ্মক উপলক্ষ্য কৰি ৰচনা কৰা সাহিত্যৰাজিৰ লগত এই সময়ৰ সাহিত্যৰ লগত কিছু সাদৃশ্য আছে। *প্ৰহ্লাদ চৰিত*, *ৰামায়ণ*, *সাত্যকি প্ৰৱেশ*, *বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ*, *জয়দ্রথ বধ*, আদি কাব্যসমূহে বিষ্ণুৰ মাহাত্ম্য বৰ্ণনাৰ ক্ষেত্ৰত বিশেষ ভূমিকা গ্ৰহণ কৰিছে। অৱশ্যে এই যুগৰ সাহিত্যৰাজি শঙ্কৰদেৱ আৰু তেওঁৰ অনুগামীসকলৰ সাহিত্যৰ দৰে বৈষ্ণৱ ধৰ্ম প্ৰচাৰৰ হেতু ৰচনা কৰা হোৱা নাছিল। কিন্তু তথাপিও এই গ্ৰন্থসমূহত উল্লেখ কৰা কেতবোৰ বিৱৰণে বিষ্ণুৰ প্ৰতি অনুৰক্তি তথা বৈষ্ণৱ ধৰ্মৰ প্ৰভাৱৰ কথাৰে ইঙ্গিত বহন কৰে। অৱশ্যে হিন্দুধৰ্ম বা আৰ্যধৰ্ম-সংস্কৃতিয়ে যে প্ৰাচীন অসম তথা কামৰূপত বিপুলভাৱে প্ৰভাৱ লাভ কৰিছিল সেই কথা অনুমান কৰিব পাৰি। মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণত থকা উল্লেখে শিক্ষাৰ ক্ষেত্ৰত শ্ৰেণী বৈষম্যৰ ইঙ্গিত বহন কৰে। ব্ৰাহ্মণ, কায়স্থ আদি লোকসকলে ধৰ্মীয় আৰু অন্যান্য যাৱতীয় বিষয়ত শিক্ষা অৰ্জন কৰিবলৈ সক্ষম হৈছিল। প্ৰাচীন অসমৰ ৰাজশাসকসকলো শিক্ষাৰ প্ৰতি অনুৰাগী হোৱাৰ হেতু ই অসমত প্ৰচাৰ লাভ কৰিছিল যদিও সকলো লোকৰে মাজত তাৰ সমান প্ৰভাৱ পৰিছিল বুলি ক'ব নোৱাৰি।

শৈৱ, শাস্ত্ৰ আৰু বৈষ্ণৱ ধৰ্মৰ উপৰিও নামধৰ্ম আদিৰো কিছু প্ৰভাৱ প্ৰাক্‌শঙ্কৰী কালছোৱাত অসমত আছিল বুলি কোনো কোনো ঠাইত উল্লেখ আছে। মনসা পূজা, শীতলা পূজা আৰু অন্যান্য পূজা উপাসনাইও প্ৰাচীন অসমত ঠাই পাইছিল বুলি সেই সময়ৰ বিভিন্ন তথ্যই দাঙি ধৰে।

৪। সাংস্কৃতিক সংমিশ্ৰণ : সাহিত্যই প্ৰত্যেক জাতিৰ জাতীয় জীৱনৰ প্ৰতিচ্ছবি দাঙি ধৰে। একো একোটা জাতিৰ জাতীয় সাহিত্য গঢ় লৈ উঠাৰ পটভূমিত থাকে সেই জাতিৰ সমাজ-জীৱন। সাহিত্যৰ মাজেদিয়েই জাতীয় সমাজ, সভ্যতা, সংস্কৃতিৰ এক পৰিপূৰ্ণ ছবি প্ৰতিফলিত হয়। একোখন সমাজত বসবাস কৰা লোকসকলৰ ভাষা, ধৰ্ম, খাৱন-বোৱন, পিন্ধন-উৰণ আদি সকলো দিশৰ এটি সম্যক জ্ঞান আহৰণ কৰাত সাহিত্যই সময়ে সময়ে সহায় কৰি আহিছে। প্ৰকৃতপক্ষে ক'বলৈ গ'লে সাহিত্যৰ মাজেদি সাংস্কৃতিক বিনিময় তথা সংমিশ্ৰণৰ দিশটিও সাঙুৰ খাই থাকে। এই সময়ছোৱাত অসমীয়া ভাষাত যি সাহিত্য ৰচিত হৈছিল তাৰ বিষয়বস্তু বিচাৰি চালে দেখা যায় যে এক ধৰ্মীয় আদৰ্শ তথা পৰম্পৰা এই সাহিত্যত পৰিস্ফুট হৈছে। প্ৰাক্ষৰী যুগৰ সৰ্বশ্ৰেষ্ঠ কবি মাধৱ কন্দলীৰ *ৰামায়ণখনি*ত প্ৰধানভাৱে ৰামৰ জীৱন বৰ্ণনা কৰা হৈছে আৰু *প্ৰহ্লাদ চৰিত*, *সাত্যকি প্ৰৱেশ*, *ব্ৰহ্মবাহনৰ যুদ্ধ* আদি কাব্যৰ জৰিয়তেও হৰিৰ মহিমাৰ কথা বৰ্ণনা কৰা হৈছে। সামগ্ৰিকভাৱে ভাৰতীয় সমাজ তথা জীৱন দৰ্শনৰ ভেঁটি এই ৰচনাসমূহৰ মাজেদি প্ৰকাশিত হৈছে। অৱশ্যে এই কাব্যসমূহৰ মাজেদি অসমৰ সমসাময়িক সাংস্কৃতিক পৰিৱেশ এটিৰ চিত্ৰও সুন্দৰভাৱে প্ৰতিফলিত হৈছে। এই কাব্যসমূহৰ মাজেৰে সেই সময়ৰ অসমীয়া প্ৰচলিত লোকবিশ্বাসসমূহৰ কথাও বৰ্ণিত কৰা হৈছে। মানুহৰ অন্ধবিশ্বাস, আশা-আকাঙক্ষা, চৰিত্ৰৰ সৰলতা আৰু মহত্ব, সততা আৰু পশুত্ব এই সকলো বিষয়ৰ প্ৰতি এই যুগৰ কবিসকলে সততে লক্ষ্য ৰাখিছে।

এই সময়ছোৱাৰ অসমীয়া সংস্কৃতিৰ সংমিশ্ৰণৰ দিশটি ইয়াৰ সাহিত্যৰ মাজতেই প্ৰতিফলিত হোৱা দেখা যায়। সেই সময়ত প্ৰাচীন অসমত বিভিন্ন ক্ষুদ্ৰ ক্ষুদ্ৰ ৰজাই ৰাজত্ব কৰিলেও ইয়াৰ ভৌগোলিক পৰিসীমা যথেষ্ট ব্যাপক আছিল। কোঁচ, কছাৰী, চুতীয়া, আহোম আদি বিভিন্ন ৰজাই ৰাজত্ব কৰোঁতে ইয়াত থকা সকলো লোকৰে মাজত এক সাংস্কৃতিক বিনিময়ো ঘটিছিল। প্ৰকৃততে ক'বলৈ গ'লে ইয়াৰ সংস্কৃতি আৰ্য, অনা-আৰ্য দুয়োৰে সংমিশ্ৰণত গঢ় লৈ উঠিছিল। অসমীয়া সংস্কৃতিৰ বিশাল সমন্বয়লৈ লক্ষ্য ৰাখি ইয়াক এক যৌগিক সংস্কৃতি বুলিহে অভিহিত কৰিব পাৰি। জাতিভেদ প্ৰথা, সম্প্ৰদায় আদিৰ উল্লেখ থাকিলেও সকলো মানুহৰে মাজত সাংস্কৃতিক বিনিময় নঘটাকৈ থকা নাছিল। কৃষিকৰ্ম, কুটিৰশিল্প আদিৰ প্ৰচলনত শ্বিলঙীয়া লোকসকলৰ অৱদান যথেষ্ট পৰিমাণে আছিল। কোনো কোনো ৰজাই হিন্দুধৰ্ম গ্ৰহণ কৰিছিল। আৰু কোনো কোনোৱে কৰা

নাছিল। হিন্দুধৰ্মৰ বিভিন্ন পূজা-উপাসনা যে সেই সময়ত প্ৰচলিত আছিল তাত কোনো দ্বিমত নাই। অসমীয়া ভাষাটো আৰ্যমূলীয় হ'লেও প্ৰাচীন অসমত ৰাজত্ব কৰা সৰহ সংখ্যক অনা-আৰ্যমূলীয় ৰাজশক্তিয়ে অসমত শৈৱ, শাক্ত আৰু কেতিয়াবা বৈষ্ণৱ ধৰ্মৰ প্ৰতি অনুৰক্ত হোৱা দেখা যায়। অনা-আৰ্যসকলে যে শক্তি আৰু তান্ত্ৰিক ধৰ্মৰ প্ৰতিষ্ঠা কৰে সেই কথাও ইয়াতে উল্লেখ কৰা পাৰি। বৰ্ণাশ্ৰমৰ ক্ষেত্ৰত যি বিভাজন আৰ্যসকলে কৰিছিল তাৰ প্ৰভাৱ এই সময়ৰ অসমীয়া সমাজতো কিছু পৰিমাণে নপৰা নহয়, অৱশ্যে আৰ্য, অনা-আৰ্যবোৰৰ মাজত লাহে লাহে সংমিশ্ৰণৰ সোঁত প্ৰবাহিত হয়। অনা-আৰ্যমূলীয় ৰজাসকলেই অসমীয়া ভাষা-সাহিত্যৰ ৰচনাত কবি সাহিত্যিকসকলক অনুপ্ৰেৰণা যোগোৱাৰ কথাই অসমীয়া সংস্কৃতিত তেওঁলোকৰ বিশেষ অৱদানৰ কথা প্ৰতিপন্ন কৰে। প্ৰকৃতপক্ষে ক'বলৈ গ'লে এই সময়ছোৱাত সাংস্কৃতিক সমন্বয়ৰ ভেঁটি তৈয়াৰ হ'লেও পৰ্যাপ্ত পৰিমাণে প্ৰামাণ্য সমলৰ কিছু অভাৱ। কিন্তু এই কথা স্পষ্টভাৱে ক'ব পাৰি যে প্ৰাচীন অসমৰ জাতি-উপজাতিসমূহৰ মাজত ঘটা সমন্বয়ে পৰৱৰ্তী কাললৈ কিছু উপাদান আগ বঢ়াইছে। এই সময়ৰ সাহিত্যত প্ৰৱেশ পোৱা বিষয়বস্তু আৰু ঘটনাৰ বিৱৰণে আৰ্য আৰু অনা-আৰ্য সংমিশ্ৰণে ঠায়ে ঠায়ে দোহাৰে। প্ৰকৃততে ক'বলৈ গ'লে হিন্দু সমাজ ব্যৱস্থাৰ মূল জুমুঠিটোৰ সকলো অঙ্গলৈকে যে পৰোক্ষ বা প্ৰত্যক্ষভাৱে অনা-আৰ্যসকলে প্ৰভুত অৱদান আগ বঢ়াইছিল সেইকথা অনুমান কৰিব পাৰি।^১ প্ৰাচীন অসমৰ সমাজ ব্যৱস্থা, খাদ্য, সাজ-পাৰ, কুটিৰ শিল্প, আ-অলঙ্কাৰ, স্থাপত্য-ভাস্কৰ্য, জীৱন-যাপনৰ পদ্ধতি, ধৰ্ম, ভাষা আদি সকলোতে সেই সময়ৰ অসমীয়া সমাজৰ সৰল জীৱন-যাপন, মাজিত ৰুচিবোধ আৰু উদাৰ মনোভাৱৰ পৰিচয় পোৱা যায়। উল্লেখযোগ্য যে প্ৰাচীন অসমৰ ঠাই, নদী, পৰ্বত-পাহাৰ, মঠ-মন্দিৰ আদিৰ নামকৰণৰ ক্ষেত্ৰতো অনা-আৰ্য উপাদান পৰিস্ফুট হয়। মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণত অসমীয়া সমাজ জীৱনৰ বিশেষ প্ৰতিচ্ছবি প্ৰতিফলিত হয়। অন্যান্য কবিসকলৰ কাব্যতো তেনে ধৰণৰ বৰ্ণনা কেতবোৰ পোৱা যায়। এই সময়ৰ সাহিত্য এক বিশেষ মানদণ্ডেৰে বিভূষিত। এই সাহিত্যৰ মূল আকৰ্ষণীয় গুণ হ'ল লোকজীৱনমুখিতা। বিষয়বস্তুৰ বাছনিত ধৰ্মীয় পৰম্পৰা নিহিত থাকিলেও চৰিত্ৰ-চিত্ৰণ, পৰিবেশ বৰ্ণনা, ছন্দসজ্জা, ৰূপসৃষ্টি, অলঙ্কাৰ প্ৰয়োগ আৰু ভাষা প্ৰয়োগত লোক জীৱনৰ লগত বিশেষ স্পৰ্শক ৰক্ষা কৰিহে প্ৰয়োগ কৰা হৈছিল। গতিকে এই সাহিত্যই মানুহৰ মন আকৰ্ষণ কৰাত কৃতকাৰ্য হোৱাটোৱেই স্বাভাৱিক। ধৰ্মৰ

ক্ষেত্ৰত শৈৱ, শাক্ত, বৈষ্ণৱ, সকলো ধৰ্মৰে এটি সমান্তৰাল গতি দেখা যায়। ফল স্বৰূপে ধৰ্মৰ ক্ষেত্ৰতো এক বিনিময় বা পাৰস্পৰিক সমন্বয় নঘটাকৈ থকা নাছিল। অৱশ্যে শঙ্কৰদেৱৰ পূৰ্বৱৰ্তী কালছোৱাৰ প্ৰায়বোৰ ৰচনাতে বিষ্ণু ৰূপৰ প্ৰতি অধিক আগ্ৰহ পৰিলক্ষিত হোৱা দেখা যায়। আহোম ৰজাসকলে ৰাজত্ব আৰম্ভ কৰাৰ লগে লগে অসমৰ ৰাজনৈতিক জীৱনলৈ বিশেষ পৰিৱৰ্তন আহি পৰিল। টাই বংশীয় আহোমসকলে ভাষা, ধৰ্ম আৰু সংস্কৃতিৰ প্ৰায়বোৰ বিষয়তে থলুৱা আদৰ্শ গ্ৰহণ কৰাৰ ফল স্বৰূপে সংমিশ্ৰণৰ দিশটি আৰু অধিক ক্ষিপ্ৰতৰ হ'ল। স্বৰূপাৰ্থত ক'বলৈ গ'লে কোঁচ, কছাৰী, চুতীয়া, আহোম আদি ৰজাসকলৰ পৃষ্ঠপোষকতাই এই সময়ৰ অসমীয়া সংস্কৃতিৰ বুনিয়াদ তৈয়াৰ কৰিছিল। অসমীয়া সংস্কৃতিৰ প্ৰসাৰত আৰ্য-সংস্কৃতিৰ সৈতে অনা-আৰ্য সংস্কৃতিৰ যি অভূতপূৰ্ব সংমিশ্ৰণ ঘটিব সি ভাৰতবৰ্ষৰ সংস্কৃতিৰ ভিতৰৰে অন্যতম আদৰ্শস্বৰূপ হৈ ৰ'ল। ৰজাসকলে যি আদৰ্শ গ্ৰহণ কৰে প্ৰজাসকলো তাৰেই প্ৰায় অনুগামী হয়। গতিকে প্ৰাক্-শঙ্কৰী যুগৰ অসমৰ সাংস্কৃতিক জীৱন ধাৰাত সংমিশ্ৰণে গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা গ্ৰহণ কৰিছিল। এইখিনিতেই এটি কথা উল্লেখনীয় যে ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ প্ৰথমার্ধত মুচলমানে কেইবাবাৰো কামৰূপ আক্ৰমণ কৰে। মুচলমানৰ আক্ৰমণৰ ফলত প্ৰাচীন অসমৰ সৈতে ইচলামৰ এক যোগসূত্ৰ প্ৰতিষ্ঠিত হয় আৰু অসমৰ সংস্কৃতিৰ সংমিশ্ৰণত ইয়াৰ প্ৰভাৱ সুদূৰপ্ৰসাৰী হয়।

৫। সাহিত্যিক ৰূপ : ১২২৮ খ্ৰিষ্টাব্দৰ পৰা ১৪৭০ খ্ৰিষ্টাব্দৰ ভিতৰত অসমীয়া সাহিত্যৰ প্ৰথম চানেকি পোৱা যায়। খ্ৰিষ্টাব্দ দশম শতিকাৰ পৰা অসমীয়া আৰু অন্যান্য ভাৰতীয় আৰ্যভাষাবোৰৰ জন্ম হ'বলৈ আৰম্ভ কৰে বুলি ভাষাবিদসকলে মন্তব্য কৰিছে যদিও সাহিত্যিক নিদৰ্শন কিন্তু ইয়াৰ কিছু কাল পিচতহে পোৱা যায়। অসমীয়া সাহিত্যৰ সাহিত্যিক ৰূপ লাভ কৰাৰ সময় ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ পিচৰ পৰাহে পোৱা গৈছে। ইয়াৰ আগৰ কালছোৱাৰ অসমীয়া ভাষাৰ নিদৰ্শনৰূপে শিলালিপি, তাম্ৰৰ শাসন আদিৰ উপৰিও বৌদ্ধ সহজযান সিদ্ধাচাৰ্যসকলে ৰচনা কৰা চৰ্যাগীত বা দোহাৰ ভাষাৰ মাজত পোৱা যায়। প্ৰাক্-শঙ্কৰী যুগৰ পাঁচজন প্ৰসিদ্ধ কবিৰ কাব্যৰাজিৰ পৰা অসমীয়া সাহিত্যই সাহিত্যিক ৰূপ লাভ কৰিবলৈ সমৰ্থ হয়। এই কালছোৱাৰ এই সময়ৰ পাঁচজন বিশিষ্ট কবিৰ চমু পৰিচয় আৰম্ভণিতে দাঙি ধৰা হৈছে। সেই সময়ছোৱাৰে অসমীয়া ভাষাৰ বিভিন্ন আঞ্চলিক ৰূপৰ কথা স্পষ্টভাৱে উল্লেখ নাথাকিলেও সাহিত্যিক প্ৰয়োগ হোৱা কেতবোৰ বৈশিষ্ট্যই ইয়াৰ

আঞ্চলিক ৰূপৰ সাক্ষ্য বহন কৰে। আগতেই কৈ অহা হৈছে যে অসমীয়া ভাষা সাহিত্যৰ বিশেষ কেন্দ্ৰস্থল প্ৰথম অৱস্থাত নামনি অসমত আছিল যদিও আহোম ৰজাসকলৰ ৰাজত্ব আৰম্ভ হোৱাৰ পিচতেই ই ইয়াৰ কেন্দ্ৰস্থল উজনি অসমলৈ পৰিৱৰ্তিত হয়। গতিকে অসমীয়া সাহিত্যৰ সাহিত্যত থলুৱা ভাষাৰ উপাদান বিভিন্ন সময়ত বিভিন্ন ধৰণে পৰিবলৈ ধৰে। তদুপৰি অসমীয়া ভাষালৈ টাই আহোম ভাষাৰ কিছু উপাদানো আমদানি হ'বলৈ ধৰে। আন হাতে আকৌ এই শতাব্দীৰ প্ৰথমার্ধত মুচলমানসকলে বহু বাৰ যেতিয়া অসম আক্ৰমণ কৰে তাৰ ফল স্বৰূপে ইচলামীয় সংস্কৃতিৰ পৰশ কিছু অনুভূত হোৱাৰ লগতে ইচলামীয় ভাষাৰ প্ৰভাৱেও অসমীয়া সাহিত্যত কিছু পৰিমাণে হ'লেও ইন্ধন যোগালে। যথার্থতে ক'বলৈ গ'লে এই যুগৰ কবিসকলৰ ভিতৰত সৰ্বশ্ৰেষ্ঠ মাধৱ কন্দলীৰ *ৰামায়ণখনি*য়ে সামগ্ৰিকভাৱে সকলোখিনি সাহিত্যৰে প্ৰতিনিধিত্ব কৰিছে বুলিব পাৰি। অসমীয়া সাহিত্যৰ প্ৰথম স্তৰৰ নিদৰ্শন হ'লেও এই কালছোৱাৰ সাহিত্যৰাজিত মৌলিক প্ৰতিভাৰ স্ফুৰণ ঘটাৰ লগে লগে সাহিত্যিক সৌন্দৰ্য্যৰো পয়োভৰ ঘটিলে। এই যুগৰ সাহিত্যৰাজিয়ে, বিশেষভাৱে কন্দলীৰ *ৰামায়ণে*, পৰৱৰ্তী কালৰ সাহিত্য ৰচনাতে বিশেষভাৱে প্ৰভাৱ বিস্তাৰ কৰিছে। ভাষাবীতি, ছন্দসজ্জা, শব্দপ্ৰয়োগ, অলঙ্কাৰ প্ৰয়োগ, পৰিৱেশ বৰ্ণনা, চৰিত্ৰ-চিত্ৰণ আদি সকলোতে এই সময়ৰ সাহিত্যই এক অভিলেখৰ সৃষ্টি কৰাৰ লগতে পৰৱৰ্তী কবি সাহিত্যিক শব্দৰদেৱ আৰু তেওঁৰ অনুগামীসকলেও এক অৱদান আগ বঢ়াই গ'ল। এই যুগৰ সাহিত্যৰাজিলৈ প্ৰাচীন ভাৰতীয় সাহিত্যই মূল ইন্ধন যোগোৱাৰ লগতে প্ৰভাৱান্বিতও কৰিছে। মাধৱ কন্দলীৰ *ৰামায়ণ*ৰ মূল আধাৰ হ'ল— আদি কবি বাৰ্মীকিৰ *ৰামায়ণ* মহাকাব্য। উল্লেখযোগ্য যে কন্দলীৰ *ৰামায়ণখনি*য়ে সমগ্ৰ আধুনিক ভাৰতীয় আৰ্যভাষাবোৰৰ ভিতৰতে প্ৰথম প্ৰাদেশিক *ৰামায়ণ*। এওঁ সপ্তকাণ্ড *ৰামায়ণ* ৰচনা কৰা বুলি উল্লেখ থাকিলেও পাঁচোটো কাণ্ডহে পোৱা গৈছে য'ত আদি আৰু উত্তৰাকাণ্ড ক্ৰমে পৰৱৰ্তী কালত যথাক্ৰমে মাধৱদেৱ আৰু শব্দৰদেৱে সংযোজন কৰে। হেম সৰস্বতীৰ *প্ৰহ্লাদ চৰিত* ৰচনাৰ মূলতে আছিল *বামন পুৰাণ*। হৰিবৰ বিপ্ৰই ৰচনা কৰা *লব-কুশ*ৰ যুদ্ধ আৰু *বত্ৰবাহন*ৰ যুদ্ধ কাব্যখনিজৈমিনীয়া অশ্বমেধ পৰ্বৰ পৰা অনা হৈছে বুলি উল্লেখ আছে। কবিৰত্ন সৰস্বতীয়ে ৰচনা কৰা *জয়দ্রথ বধ*ৰ মূল হ'ল মহাভাৰতৰ দ্ৰোণপৰ্বৰ এটি কাহিনী। ৰুদ্ৰ কন্দলীৰ *সাত্যকি প্ৰৱেশ* মহাভাৰতৰ দ্ৰোণপৰ্বৰ জয়দ্রথ বধৰ অন্তৰ্গত এটি বিশেষ অধ্যায়ৰ। এই সময়ৰ সাহিত্যৰাজিত বীৰ, কৰুণ, হাস্য, ৰুদ্ৰ, শৃঙ্গাৰ আদি নৱবসৰ সমাবেশ ঘটিলে। বৈষ্ণৱ ধৰ্মৰ দ্বাৰা অনুপ্ৰেৰিত ৰচনাৰাজিৰ নৱ বসৰ

মূলতে আছে ভক্তি ৰসৰ প্ৰাধান্য। কিন্তু প্ৰাক্ষৰী যুগৰ কাব্যৰাজি উদ্দেশ্যধৰ্মী নোহোৱা হেতু বিশেষ পাৰ্থক্যৰ সূচনা কৰিছে। শঙ্কৰদেৱৰ পূৰ্ব কালৰ সাহিত্যৰাজিয়ে অসমীয়া ভাষা-সাহিত্যৰ আদি স্তৰতে ঐশ্বৰ্য্যশালী কৰি তুলি পৰৱৰ্তী কালৰ বাবে এক সেন্দূৰীয়া বাট বান্ধি গ'ল।

ভাষাতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্য : এই সময়ছোৱাৰ অসমীয়া ভাষাৰ বৈশিষ্ট্যৰাজি বহন কৰা সাহিত্যৰ ভিতৰত মাধৱ কন্দলী ৰামায়ণৰ এক বিশেষ স্থান আছে। কিন্তু তথাপিও সামগ্ৰিকভাৱে এই সময়ৰ ভাষাৰ কিছুমান উমৈহতীয়া বৈশিষ্ট্য বিচাৰি উলিয়াব পাৰি। এই সময়ৰ সাহিত্যৰ মাজেৰে পৰিলক্ষিত হোৱা ভাষাতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্যৰাজি তলত আলোচনা কৰা হ'ল—

অসমীয়া ভাষাৰ গঠনৰ সময় অনুধাৱন কৰিলে দেখা যায় যে 'চৰ্যাগীত'ৰ ভাষাৰ পিচতেই মাধৱ কন্দলী, হেম সৰস্বতী আদি কবিসকলৰ কাব্যৰ ভাষাই অসমীয়া ভাষাৰ বিশেষ নিদৰ্শনৰূপে দেখা দিছিল। প্ৰকৃতাৰ্থত ক'বলৈ গ'লে ষষ্ঠ-সপ্তম শতিকাৰ পৰা গঠন হ'বলৈ আৰম্ভ কৰা অসমীয়া ভাষাটোৱে চৰ্যাগীতৰ মাজেৰে আহি ত্ৰয়োদশ-চতুৰ্দশ শতিকাত এক সম্পূৰ্ণ ৰূপত আত্মপ্ৰকাশ কৰিলে।^১ কন্দলীৰ 'ৰামায়ণ' আৰু অন্যান্য কবিসকলৰ ৰচনাই সামন্তশ্ৰেণী আৰু ৰাজগৃহৰ ভাষাৰ লগতে জনজীৱনৰ ভাষাৰো কথিত ৰূপটি দাঙি ধৰিলে। প্ৰকৃততে সেই সাহিত্যিক ভাষাৰ অন্তৰালত সেই সময়ৰ কথিত এক সংযোগী ভাষাই গা কৰি উঠিছিল। যি কি নহওক, এই সময়ৰ সাহিত্যৰাজিৰ ধ্বনিতাত্ত্বিক, ৰূপতাত্ত্বিক আদি বৈশিষ্ট্যসমূহ চমুকৈ আলোচনা কৰাৰ প্ৰয়াস কৰা হ'ল—

ধ্বনিতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্য : এই সময়ৰ সাহিত্যত প্ৰয়োগ হোৱা ধ্বনিতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্যৰাজিৰ ভিতৰত স্বৰধ্বনি আৰু ব্যঞ্জনধ্বনিৰ কেতবোৰ বৈশিষ্ট্য লক্ষ্য কৰা যায়—

(ক) হৃস্ব-দীৰ্ঘ দুয়ো বিধ স্বৰধ্বনিৰ প্ৰয়োগ আছে যদিও উচ্চাৰণৰ ক্ষেত্ৰত ইয়াৰ পাৰ্থক্য নাছিল। 'উ'ৰ ব্যৱহাৰ অতি কম দেখা যায়। কেতিয়াবা আকৌ 'ই'ৰ ঠাইত 'ঈ' আৰু 'ঐ'ৰ ঠাইত 'ই'ৰ প্ৰয়োগ মন কৰিব লগীয়া। 'ঐ' আৰু 'ঔ' এই দ্বিস্বৰৰ ব্যৱহাৰৰ উপৰিও আন কেতবোৰ প্ৰয়োগ আছে। তলত কেইটিমান উদাহৰণ দাঙি ধৰা হ'ল—

ইউ : জিউ

আউ : আউৰ

ওউ : তোউ

কেতিয়াবা কেতিয়াবা ত্ৰিস্বৰৰ প্ৰয়োগো দেখা যায়। স্বৰ সমীভৱন, স্বৰসঙ্গতি, স্বৰভক্তি, সংযুক্ত ব্যঞ্জনৰ বিশেষ ব্যৱহাৰ, অল্পপ্ৰাণীকৰণ, মহাপ্ৰাণীকৰণ

আদি কেতবোৰ ধ্বনিগত বৈশিষ্ট্যও এই সময়ৰ সাহিত্যৰাজিত পোৱা যায়। তলত দুটামান উদাহৰণ দেখুওৱা হ'ল—

স্বৰসঙ্গতিৰ উদাহৰণ :

নেউল (অ > এ)

ত্ৰেলক (ও > অ)

আনুপাম (অ > আ) আদি।

স্বৰভক্তিৰ উদাহৰণ :

অগনি < অগ্নি

সোপন < স্বপ্ন আদি।

মহাপ্ৰাণীকৰণৰ উদাহৰণ :

থেথেলায় (থেতেলায়)

ফোফাৱন্ত (ফোপাওঁতে) আদি।

সমীভৱনৰ উদাহৰণ :

বিজুলী (বিদ্যুৎ)

সংযুক্ত ব্যঞ্জনৰ বিশেষ ব্যৱহাৰ :

লজ্জিলেক, স্নানিবাক, গ্ৰাহিতে, ফুস্কাৰেসে, তাক, মাৰ ৰাস্ত, ক্ৰোধিলেক, সঞ্জয়নী, ফাল্গুনি, বসুন্ধৰী, বৰুৱাহা, অৱভূথ, কোকিলী আদি।

কেতিয়াবা কেতিয়াবা বিশেষ ধৰণৰ কেতবোৰ সংযুক্ত ব্যঞ্জনৰ প্ৰয়োগ দেখা যায়। উদাহৰণ স্বৰূপে—

কৰ্ম্ম, মন্মু আদি।

উল্লেখযোগ্য যে এনে ধৰণৰ ধ্বনিতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্য শব্দৰদেৱৰ পৰৱৰ্তী সাহিত্যতো কেতিয়াবা কেতিয়াবা পোৱা যায়। চ, ছ, জ, য, ক, শ, ষ, স, ৰ, ড় আদি ধ্বনিৰ প্ৰয়োগৰ কোনো বিশেষ নিয়ম মানি চলা দেখা নাযায়। প্ৰায়ে একোটি শব্দকে প্ৰয়োগ কৰোঁতে এই ধ্বনিসমূহৰ কেৱল উচ্চাৰণৰ প্ৰতিহে লক্ষ্য ৰখা হয়, বানানৰ প্ৰতি নহয়। উদাহৰণ স্বৰূপে— আকাষ, আকাশ; পৰিল, পড়িল; বচন, বহন; জিঅ, ৰিঅ আদি

বিভিন্ন ধৰণৰ ধ্বনি পৰিৱৰ্তন এই যুগৰ ভাষাৰ বিশেষ বৈশিষ্ট্য। উদাহৰণ স্বৰূপে— ৰ)ল পুলি (পুৰি); শ ষ স) থ : হ : ক্ৰেশ)শ্ৰেথ : নুদুহিবা (নুদুখিবা)

আদি; ৰ)অ, য, ইঃ গোদাঅৰি (গোদাৱৰী), দিয়ষ (দিৱস); ক্ষ)খ, খ্যঃ থিবোদ (ক্ষীৰোদ)
থেমা (ক্ষমা); ম)ৰঃ নাৱ (নাম); জ)ঝঃ শুঝো (সুজু); সিঝে (সিজে) আদি।

ওপৰত কেৱল এই সময়ৰ সাহিত্যত প্ৰয়োগ হোৱা ভাষাৰ ধ্বনিতত্ত্বৰ
চমু আভাসহে দাঙি ধৰা হ'ল।

ৰূপতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্য : এই সময়ছোৱাৰ ভাষাৰ ৰূপতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্যৰাজিৰ
বিশেষভাৱে মনোযোগ দিব লগীয়া। ৰূপতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্যৰাজিৰ এক বিশ্লেষণ তলত
দাঙি ধৰা হ'ল—

বিশেষ্যৰ প্ৰয়োগ : ইয়াৰ ভাষাত হোৱা বিশেষ্য শব্দৰাজি বিভিন্ন ধৰণৰ।
তাৰ ভিতৰত মানুহৰ নাম বুজোৱা, পশু-পক্ষী, চৰাই-চিৰিকতিৰ নাম বুজোৱা,
ফলমূল, গছ-গছনিৰ নাম বুজোৱা, শৰীৰৰ বিভিন্ন নাম বুজোৱা, বাদ্যযন্ত্ৰ, আ-
অলঙ্কাৰ আদিক বুজোৱা, বিভিন্ন জাতি, সম্প্ৰদায়ক বুজোৱা আদি বিশেষ্যৰ প্ৰয়োগ
মন কৰিব লগীয়া। বিস্তৃতভাৱে আলোচনা নকৰি তলত কেতবোৰ বিশেষ্য শব্দৰ
উদাহৰণ দাঙি ধৰা হ'ল—

ৰাম, পুত্ৰ, গৌতম, সীতা, সূৰ্য্য, অশ্বস্থ, জাম্ব, জাম্বুল, কঠাল, অশোক,
পলাশ, চম্পক, কদম্ব, মালতী, কুকিল, কাক, ৰাজহংস, চক্ৰবাক, বাঘ, বৰাহ, গজ,
হস্তী, শৃগাল, ব্ৰাহ্মণ, শূদ্ৰ, কায়স্থ, তান্ত্ৰি, কুন্তকাৰ, যথিনী, বাঘিনী, চণ্ডাল, নেপুৰ,
কঙ্কন চীনা, ভেৰী, শঙ্খ, দগৰ, ধনু-শৰ, গদা, জমাই, নাতি, অপেশ্বৰা, চন্দ্ৰন, নাৰী,
জীউ, পিম্পৰা, ৰেণুকা, উলুপী, পাণ্ডু, মণিপুৰ আদি।

বিশেষ্যণৰ প্ৰয়োগ : এই সময়ৰ ভাষাত প্ৰয়োগ হোৱা বিশেষ্য শব্দৰাজিৰ
ভিতৰত গুৰু, জেষ্ঠ, সুন্দৰ, শোভন, মনোৰম, যশৱন্ত, ৰূপৱন্ত আদি।

এই সময়ৰ ভাষাৰ ক্ষেত্ৰত ক্ৰিয়াবিশেষণৰ প্ৰয়োগত বিশেষত্ব লক্ষ্য কৰা
যায়। কাল নিৰ্দেশক, স্থান নিৰ্দেশক আৰু লক্ষণবাচক ক্ৰিয়াবিশেষণ বিভিন্ন ধৰণৰ
পোৱা যায়। তলত কেতবোৰ উদাহৰণ দেখুওৱা হ'ল— এহিমতে, নম্ৰভাৱে,
এহিবুলি, চপকৰে, জৈসানি, তৈসানি, কৈসানি, জেমান, জেনমতে, কৈত, তৈত,
তাহাতে, কেনে, কেমনে, কেনেকৰি, অবিলম্বে, অদ্যপি, তেখনে, তেতিখনে,
পুনৰপি, সত্বে, ইহাতে, আথেবেথে, সচকিতে, কিমতে, জিমতে, সত্যে আদি।

সৰ্বনামৰ ব্যৱহাৰ : প্ৰাক্ষৰী সাহিত্যৰ ভাষাৰীতিত বিভিন্ন ধৰণৰ
সৰ্বনাম শব্দৰ প্ৰয়োগ আছে— ব্যক্তিবাচক, সম্বন্ধবাচক, প্ৰশ্নবাচক, নিশ্চয়বাচক,
নিৰ্দেশক আদি বিভিন্ন সৰ্বনামৰ প্ৰয়োগে এই সময়ৰ ভাষাক বিশেষ ৰূপ প্ৰদান
কৰিছে। উদাহৰণ স্বৰূপে—

সৰ্বনামৰ উদাহৰণ : আমি, আমিসব, মঞিঁ, ময়ি, আমা, মোক, মোৰ, মোহো, আমৰা, তই, তঞিঁ, তঞি, তব, তুমি, আপুনি, তোহো, তোমাক, তোহা, তোৰা, তোৰাসব, সি, তাই, তেহো, তাস্তে, তাহাৰা, ইহা, এই, ইসৰ, সেই, সেহি, জেহি, কমন, কেঅ, কেএ, ইহাক, কোন, যাহাৰ আদি।

সৰ্বনাম প্ৰয়োগ হোৱা বাক্য কেতবোৰ তলত উল্লেখ কৰা হ'ল—

- (ক) তোমাৰ প্ৰসাদে ভৈল বালীৰ মুকুতি (ৰামায়ণ)
- (খ) যদি মোৰ পিতৃ তোৰ নোহে গুণবন্ত (ৰামায়ণ)
- (গ) শুনিয়ে বচন আমিসবৰ বচন (ৰামায়ণ)
- (ঘ) তাহাৰ ৰাজ্যত হেম সৰস্বতী (প্ৰহ্লাদ চৰিত)
- (ঙ) মোহোৰ ৰাজ্যত ঘোড়া পশিল তাহান (বৰব্ৰাহ্মণৰ যুদ্ধ)
- (চ) দেখা কেনমতে মাৰে আমাৰ সেনাক (তাশ্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ)
- (ছ) তাসম্বাক সম্বোধিয়া (ৰামায়ণ)
- (জ) এসম্বাক দেখি (ৰামায়ণ)
- (ঝ) ৰাঘৱৰ ভৃত্য শয়ি (ৰামায়ণ)
- (ঞ) তঞিঁ জাইবি যমঘৰে (ৰামায়ণ)
- (ত) তোৰা দুইক মাৰি (ৰামায়ণ)
- (ট) শোকাবুলে কাহাৰো মুখৰ নাই মাত (বৰব্ৰাহ্মণৰ যুদ্ধ)
- (ঠ) পদবন্ধে তেহো প্ৰচাৰ কৰিলা (প্ৰহ্লাদ চৰিত)

ক্ৰিয়াৰ প্ৰয়োগ : ভাষাৰ ৰূপতাত্ত্বিক বিশ্লেষণত ক্ৰিয়াৰ ভূমিকা মন কৰিব লগীয়া। পুৰণি অসমীয়া ক্ৰিয়াপদৰ গঠনৰীতি অতি বৈচিত্ৰপূৰ্ণ। এই সময়ৰ ক্ৰিয়াপদৰ প্ৰয়োগ হওঁতে বিভিন্ন ধৰণৰ ক্ৰিয়াৰ মূল বা ধাতুৰ প্ৰয়োগ হৈছে। মুখ্য আৰু গৌণ দুয়ো বিধ ধাতুৱেই এই সময়ৰ সাহিত্যত প্ৰয়োগ হৈছে। তলত সেইবোৰ ধাতুৰ উল্লেখ কৰা হ'ল—

গৰ্জ, ছেদ, পূজ, ভণ, কম্প, সুমৰ, নাশ, পাসৰ, পখাল, চড়, উভাৰ, চিহড়, বিদাৰ, আন্ধোৱাল, খঙ্গ, খস, ঠেকা, গদিয়া, টহক, থেথেল, মলচ, ধৰ্পোস, আজোড়, ফুঙ্ক, থৰথৰ, ধাকুৰ, ক্ৰোধ, নম, ভেট, হান, চাল আদি।

ক্ৰিয়াৰ প্ৰকাৰ : প্ৰাক্‌শব্দৰী সাহিত্যত বিভিন্ন প্ৰকাৰৰ ক্ৰিয়াৰ প্ৰয়োগ দেখা যায়। তাৰ ভিতৰত সকৰ্মক, অকৰ্মক, সমাপিকা, অসমাপিকা, নাস্ত্যৰ্থক, অনিয়মিত, সহায়কাৰী, ধন্যাত্মক, পাঁচনি, নামক্ৰিয়া, যৌগিক ক্ৰিয়া, কৃদন্ত আদি উল্লেখযোগ্য।

সকৰ্মক ক্ৰিয়া : (ক) বায়ুসূতে আমাৰ ইষ্টক সাধিলন্ত (ৰামায়ণ)

(খ) ধৰিয়া লক্ষ্মণে কাটিলেক নাক-কাণ (ৰামায়ণ)

সকৰ্মক ক্ৰিয়াৰ কেতিয়াবা কেতিয়াবা কতাই স্থান পৰিৱৰ্তন কৰে। কেতিয়াবা আকৌ কৰ্তাকাৰকৰ বিভক্তি উহা হৈ থাকে। কেতিয়াবা আকৌ কৰ্তাটো উহা হোৱা দেখা যায়।

অকৰ্মক ক্ৰিয়া : (ক) লক্ষ্মণৰ যত কথা সীতাক কহিল (ৰামায়ণ)

(খ) ভৰত বনে যাইব (ৰামায়ণ)

কেতিয়াবা অকৰ্মক ক্ৰিয়াৰূপৰ পৰা সকৰ্মক ক্ৰিয়া প্ৰস্তুত কৰা হয়।

সমাপিকা আৰু অসমাপিকা : প্ৰাক্‌শঙ্কৰী যুগৰ ক্ৰিয়াবোৰ গঠন হওঁতে সমাপিকা আৰু অসমাপিকা এই দুই ধৰণে গঠিত হয়।

সমাপিকা : যি ক্ৰিয়াই বাক্যৰ ভাৱ সম্পূৰ্ণ হোৱা বুজায় সেয়ে সমাপিকা ক্ৰিয়া।

উদাহৰণ : (ক) গগনে উধাই গৈল (ৰামায়ণ)

(খ) হেন ৰামপদে কৰো কোটি নমস্কাৰ (ৰামায়ণ)

অসমাপিকা : বাক্যত যেতিয়া ক্ৰিয়াৰ কাৰ্যটি অসম্পূৰ্ণ হয় তেতিয়া অসমাপিকা ক্ৰিয়া হয়। এটি বাক্যত সমাপিকা ক্ৰিয়া এটিহে থাকে, অসমাপিকা ক্ৰিয়া কেইবাটিও থাকিব পাৰে।

উদাহৰণ : (ক) কৌশল্যাৰে ৰামৰ গলে ধৰি (ৰামায়ণ)

(খ) যমক জিনিয়া আৰু জিনিলো বৰুণ (ৰামায়ণ)

এই ক্ৰিয়া প্ৰয়োগ হওঁতে - ই, - ইয়, - ইয়া আদি প্ৰত্যয়ৰ প্ৰয়োগ হয়।

নাস্ত্যৰ্থক ক্ৰিয়া : ক্ৰিয়াই যেতিয়া কোনো কাৰ্য সম্পাদন হোৱা নুবুজায়, তেনে ক্ষেত্ৰত নাস্ত্যৰ্থক ক্ৰিয়া হয়। এই ক্ৰিয়া গঠন হওঁতে সাধাৰণতে মূল ক্ৰিয়াৰূপৰ আগত 'ন'-অংশটি লগ লাগে। এই 'ন' কেতিয়াবা সমীভূত হৈ যায়, কেতিয়াবা সমীভূত নহয়। উদাহৰণ স্বৰূপে— নকহিয়া, নচাহিলা, নেদিবি, নাভাঙ্গিল, নোৱাৰি, নলৱস, নিনিদ্দিবা, নেদন্ত আদি।

কেতিয়াবা আকৌ— নাই, নাইহি, নাইকে, নতু, নাইকয়, নুহি, নুয়ি, নুহিকে আদি ৰূপৰ দ্বাৰাও ক্ৰিয়াৰ নোহোৱা অৰ্থ বুজোৱা হয়। বাক্যত এনেবোৰ প্ৰয়োগ—

(ক) দেৱাসুৰ নুহে (ৰামায়ণ)

(খ) নুহিকে মোক শকত (ৰামায়ণ)

(গ) হেন ৰূপ নতু দেখো (ৰামায়ণ)

(ঘ) সুবেচাৰ সম নাইকয় (বক্ৰবাহনৰ যুদ্ধ)

(ঙ) তোৰ নাই বিপৰীত (ৰামায়ণ)

অনিয়মিত ক্ৰিয়া : নাই, থাক্, আছ, এইকেইটা ক্ৰিয়াৰ অনিয়মিত ৰূপ
মন কৰিব লগীয়া। উদাহৰণ—

- নাই (ক) মোৰ শৰীৰত নাই (বত্ৰবাহনৰ যুদ্ধ)
(খ) বলৰ নাহিকে অন্ত (ৰামায়ণ)
থাক্ (ক) থাক থাক বুলি (ৰামায়ণ)
(খ) থাকিবোহো কাক চাই (ৰামায়ণ)
আছ (ক) শুনি আছে (বত্ৰবাহনৰ যুদ্ধ)
(খ) প্ৰৱেশি আছিলো (ৰামায়ণ)

এই কালৰ ভৱিষ্যত ৰূপ নহয়। থাক্ ধাতুৱে ইয়াৰ অৰ্থ প্ৰকাশ কৰে।

সহায়কাৰী ক্ৰিয়া : এই ক্ৰিয়াৰ উদাহৰণ যথেষ্ট পৰিমাণে পোৱা যায়—
বসিয়া আছন্ত, চলি গৈল, হানি মৰো, চলি যান্ত, খুজি পাওঁ আদি।

ধন্যাত্মক ক্ৰিয়া : ধন্যাত্মক ক্ৰিয়া সৰ্বধৰণতে দুই ধৰণৰ—

- (ক) সৰল ধন্যাত্মক ক্ৰিয়া
(খ) দ্বিৰুক্তিবাচক ধন্যাত্মক ক্ৰিয়া
(ক) সৰল ধন্যাত্মক ক্ৰিয়া : কেঁকাইবাক, ধাকুৰিয়া,
ফোকাৰস আদি।

(খ) দ্বিৰুক্তিবাচক ধন্যাত্মক ক্ৰিয়া : ধৰ ধৰা, শুন শুন,
কোলাহলি, হুৰাহুৰি আদি।

পাঁচনী ক্ৰিয়া : ('আ' প্ৰত্যয়ৰ সংযোগত) :

- (ক) ৰাঘৱে বোলন্ত শূনা (ৰামায়ণ)
(খ) কৰিবাহা বংশক উদ্ধাৰ (ৰামায়ণ)

উৰা'/'ওৰা' প্ৰত্যয়ৰ সংযোগত :

- (ক) ঋষিসৰ ডৰুৱাইলা (ৰামায়ণ)
(খ) হৃদয়ৰ গুলগুলি পলুৱাওঁ (ৰামায়ণ)

অকৰ্মক ক্ৰিয়াৰ পৰা সৰ্বকৰ্মক ক্ৰিয়াৰূপ তৈয়াৰ হোৱাৰ দৰে সাধাৰণ
ক্ৰিয়াৰ পৰা পাঁচনী ক্ৰিয়াৰূপ কেতিয়াবা হয়।

নামক্ৰিয়াৰ উদাহৰণ :

(ক) 'আ' প্ৰত্যয়ৰ সংযোগত- প্ৰহাৰিলা, আদেশিলা, ঠেকাইলা, প্ৰণামিলা
ইত্যাদি।

(খ) 'আ' বিহীন নামক্ৰিয়াৰ প্ৰয়োগ— আন্ধোৱালি, চিনিলান্ত আদি।

(গ) 'ইয়া' প্ৰত্যয়ৰ সংযোগ— আছাৰিয়া, খসিয়া, বিদাৰিয়া আদি।

(ঘ) ‘উৱা’/‘ওৱা’ৰ সংযোগত— আঙুৱান, ডৰুৱাৰে আদি।

যৌগিক ক্ৰিয়া : যৌগিক ক্ৰিয়াবোৰ গঠিত হয়— মুখ্য ক্ৰিয়াটোৰ লগত আন প্ৰত্যয়, বিভক্তি আদি যোগ হৈ। উদাহৰণ স্বৰূপে— খেদি গৈল, আছাৰিয়া পেলাইলেক, মাৰিবাক যাইবে বুলিবে লৈলন্ত আদি। হানি -এৰে, কৰি -এৰ, কহি- আৰ, আদি যৌগিক ক্ৰিয়াৰে প্ৰয়োগ মন কৰিব লগীয়া।

কৃদন্ত : ক্ৰিয়াৰ কৃদন্ত ৰূপ বৰ্তমান, অতীত আৰু ভৱিষ্যত এই তিনিও কালতে হয়। বৰ্তমান কৃদন্তৰ ক্ষেত্ৰত— অস্ত, অস্তে, এস্ত, ইতে, এন্তে আদি প্ৰত্যয়ৰ সংযোগত হয়। উদাহৰণ—

(ক) ৰত্নগৃহে ঘূৰন্তে (ৰামায়ণ)

(খ) পঢ়িলে নাহি জ্ঞান (প্ৰহ্লাদ চৰিত)

(গ) গীত গান্তে (বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ)

অতীত কৃদন্ত : এই ক্ৰিয়াকৰূপ গঠন হওঁতে— ইবাৰ, ইল আদি প্ৰত্যয় যোগ হয়। উদাহৰণ স্বৰূপে—

(ক) হৰাইবাৰ ৰাজ্য পাইলো (ৰামায়ণ)

(খ) যমে দিবা শৰ (ৰামায়ণ)

ভৱিষ্যৎ কৃদন্ত : ভৱিষ্যৎ কৃদন্তৰ ক্ষেত্ৰত - ইবাৰ প্ৰত্যয়ৰ প্ৰয়োগ হোৱা দেখা যায়—

(ক) পাখি গজিবাৰ দেখি (ৰামায়ণ)

তুমুনন্ত ক্ৰিয়া : -ইতে, -ইত, -ইত লাগি, -ইবা, -ইবাক, -ইবাক লাগি আদি প্ৰত্যয় লগ লাগি তুমুনন্ত ক্ৰিয়া গঠন হয়। উদাহৰণ স্বৰূপে—

(ক) বিধি মাৰিবে নেদিল (ৰামায়ণ)

(খ) বধিতে বুলিলে বাক্যবিষ (ৰামায়ণ)

(গ) তাহাক নিবেক প্ৰতি (ৰামায়ণ) আদি।

ক্ৰিয়াবাচক বিশেষ্য : ক্ৰিয়াবাচক বিশেষ্য গঠন হওঁতে— -অন, -ই, -ইলৈ আদি প্ৰত্যয় যোগ হয়। উদাহৰণ স্বৰূপে— পঢ়ন, পিঙ্গন, পৰশিলে, এৰিলেত, এৰিলাত আদি।

ক্ৰিয়াৰ কাল : এই সময়ৰ ক্ৰিয়াৰ ৰূপত প্ৰধানকৈ তিনি বিধ কালৰ প্ৰয়োগ আছে— বৰ্তমান, অতীত, ভৱিষ্যৎ।

বৰ্তমান কালৰ দুটি ৰূপ— নিত্য বৰ্তমান, স্বৰূপ বৰ্তমান।

অতীত কালৰ ক্ষেত্ৰত— সামান্য অতীত, পূৰ্ণ অতীত, সম্ভাব্য অতীতৰ প্ৰয়োগ হয়। ভৱিষ্যৎ কালৰ ৰূপ কেৱল এটাহে হয়।

নিত্য বৰ্তমান : কৰো, কৰোহো, চাম, যান্তি, আছন্তি, যোৰয় আদি।

স্বৰূপ বৰ্তমান : কহিছো, আসিছ আদি।

অতীত কাল (সামান্য অতীত) : কৰিলো, কৰিলোহো, ভৈলা, হৰিলাহা, ঘেলাইলন্ত, খুজিলোহো আদি।

পূৰ্ণ অতীত : ইয়াৰ প্ৰয়োগ আন কালৰ তুলনাত কম। উদাহৰণ স্বৰূপে—
আসিছিল।

সম্ভাৱ্য অতীত কাল : আছিল হন্তে।

ভৱিষ্যৎ কাল : এৰিবোহো, পালিবি, হৈবাহা, কৰিবো, পাইব, বুলিবিহি, মাৰিবন্ত, এৰিবন্তি আদি।

ক্ৰিয়াৰ ভাৱ : ক্ৰিয়াৰ ভাৱৰ ক্ষেত্ৰত—নিৰ্দেশক আৰু অনুজ্ঞা এই দুটি
ৰূপ পোৱা যায়। উদাহৰণ স্বৰূপে—

নিৰ্দেশক : (ক) ক্ৰন্দন কৰিয়া যান্তি (ৰামায়ণ)

(খ) সিংহাসনে বসিয়া আছন্ত দশৰথ (ৰামায়ণ)

অনুজ্ঞা : (ক) চকু মেলি চাহা (ৰামায়ণ)

(খ) বচন মোৰ শুনহ (ৰামায়ণ)

এই সময়ৰ ভাষাৰ ৰূপতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্যৰ ক্ষেত্ৰত তুলনা বুজোৱা, জোৰ
বুজোৱা, চৰ্তসাপেক্ষতা আদি কেতবোৰ বৈশিষ্ট্যও লক্ষ্য কৰা যায়।

তুলনা বুজোৱা ৰূপ : (ক) মোত কৰি অধিক বালী বীৰ
(ৰামায়ণ)

(খ) মোত পৰে তোৰ আৰ নাই গুৰুতৰ
(ৰামায়ণ)

জোৰ বুজোৱা ৰূপ : তোমাৰেসে আঞ্জা

ক্ৰিয়াবাচক পৰসৰ্গ : প্ৰণামোহো, হৈবাহা, কৰাহা, শুনিলাহা, নোবোলোহো আদি।

লিঙ্গ : এই সময়ৰ ৰচনাত লিঙ্গ নিৰ্ণয়ৰ কেতবোৰ নিয়ম আছে। প্ৰাণীবাচক
বিশেষ্যৰ পদবিলাকৰ নিৰ্ণয় কৰোঁতে (ক) পুৰুষ আৰু স্ত্ৰীক বুজোৱা বেলেগ শব্দক
প্ৰয়োগ, (খ) পুৰুষবাচক ৰূপৰ পাচত স্ত্ৰীবাচক প্ৰত্যয় প্ৰয়োগ কৰি, (গ) কেতিয়াবা
প্ৰাণী- আৰু অপ্ৰাণীবাচক বিভিন্ন ভাৱ প্ৰকাশক বিশেষ্যৰ পিচত-ই,-নি,-নী,-ইনী
প্ৰত্যয় যোগ কৰি স্ত্ৰীলিঙ্গ বুজোৱা হয়। অৱশ্যে — আ প্ৰত্যয়ৰ যোগতো স্ত্ৰীলিঙ্গ
বুজোৱা হয়। উদাহৰণ—

(ক)	পুংলিঙ্গ	স্ত্ৰীলিঙ্গ
	পো	জী
	ভাই	বহিনী
	বাপ	মাও আদি।
(খ)	থোৰা	খুৰী
	অঙ্কলা	আঙ্কলী আদি
(গ)	বাঘিনী, মিতিনী, দুখুনী আদি।	
(ঘ)	অনুপমা, বিবাহিতা আদি।	

-ই আৰু -ঈ প্রত্যয় যোগ কৰিও কেতবোৰ স্ত্ৰীলিঙ্গ প্রত্যয় নিৰ্ণয় কৰা হয়। উদাহৰণ স্বৰূপে— সুন্দৰি, দাসী, বিতোপনি। সতি, ডাইনি আদি কেতবোৰ স্ত্ৰীলিঙ্গবাচক প্রত্যয় এই সময়ৰ সাহিত্যত পোৱা যায়।

বচন : একবচনৰ পৰা বহুবচনৰ ৰূপ কৰোঁতে এই সময়ৰ সাহিত্যত বহুবচনাৱ্যক প্রত্যয় যোগ কৰা হয়। উদাহৰণ স্বৰূপে— - গণ, - চয়, - যে, - বৰ্গ, -সব, - জাক, আদি। উদাহৰণ— তাৰাগণ, পাপীচয়, কন্যাসব, সাধুজাক, তোৰা আদি।

দ্বিবচন বুজাওঁতে— যুগ, যুগল আদি শব্দ প্ৰয়োগ হয়। উদাহৰণ— নয়নযুগল, ধ্ৰুবযুগ আদি।

নিৰ্দিষ্টতাৰাচক প্রত্যয় : নিৰ্দিষ্টতাৰাচক প্রত্যয়ৰ ক্ষেত্ৰত— খান, খানি, কুণ্ড, খণ্ড, গাছ, গোট, গোটা, গুটি, জন, জনা, পাজি, জুৰি আদি প্রত্যয় যোগ বহুবচনৰ ৰূপ কৰা হয় ; যেনে : ৰথখান, দুইগোট, চৈধ্যগুটি, শূলপাত, পাদুকা জুৰি, নখপান্তি, মৃগগোট, অগ্নিকুণ্ড, পৰ্বতখণ্ড আদি।

পুৰুষবাচক নিৰ্দিষ্টতাৰাচক প্রত্যয় : সাধাৰণতে-এৰ্ আৰু - এক প্রত্যয় লগ লগাই এনে ৰূপ কৰা হয়। উদাহৰণ— ভায়েকৰ, তোহোৰ, বাপেৰ।

অনিৰ্দিষ্টতাৰাচক প্রত্যয়বোৰ হ'ল : মান, মানে, এক আদি।

উদাহৰণ— হতেক, তিনি চাৰি, মানে, আছি।

কাৰক আৰু শব্দবিভক্তি :

(১) কৰ্তাৰাচক : এই কাৰকত শূন্যবিভক্তি আৰু - এ বিভক্তি পোৱা যায়।

উদাহৰণ—

(ক) দশৰথে বোলন্ত (ৰামায়ণ)

(খ) হেম সৰস্বতী ভণে (প্ৰহ্লাদ চৰিত)

(২) কৰ্মকাৰক : ইয়াতো কেতিয়াবা শূন্য বিভক্তি আৰু - ক প্ৰয়োগ হয়।

যেনে :

(ক) ভায়েকক দিলে (ৰামায়ণ)

(খ) সাদৰিলা তাক ৰামে (ৰামায়ণ)

কেতিয়াবা প্ৰথমা আৰু সপ্তমী বিভক্তিৰ দ্বাৰাও এই কাৰক বুজোৱা হয়।

(৩) কৰণ কাৰক : শূন্য বিভক্তি আৰু - এৰে, - এহি আদি বিভক্তি যোগ হয়।

উদাহৰণ—

(ক) ৰজতেহি চাইলা (ৰামায়ণ) (খ) ক্ৰোধ দৃষ্টি

চাহিলন্ত (ৰামায়ণ) (গ) সুৰণে ৰচিত (ৰামায়ণ)

(৪) নিমিত্ত কাৰক : শূন্য বিভক্তি আৰু আন কেতবোৰ কাৰকৰ বিভক্তিয়ে নিমিত্ত কাৰকৰ ৰূপ কৰা হয়। যেনে : (ক) বনক আইলো (খ) বন যাইতে।

অপাদান কাৰকৰ উদাহৰণ : আকাশৰ হস্তে, চক্ষুৰ পৰা আদি।

অধিকৰণ কাৰক : (ক) চৰণত ধৰো (খ) ৰাজাৰ মন্দিৰি (গ) গুৰুতলে বসি

এইসময়ৰ কাৰক আৰু শব্দবিভক্তিৰ বিশেষ বৈশিষ্ট্য হ'ল— (১) বিভিন্ন শব্দবিভক্তিৰ প্ৰয়োগ (২) শূন্য বিভক্তিৰ প্ৰয়োগ (৩) আপোন বিভক্তিৰ ঠাইত আন বিভক্তিৰ প্ৰয়োগ।

শব্দতত্ত্ব : এইসময়ৰ ভাষাত তৎসম, অৰ্ধতৎসম, তদ্ভৱ, দেশী, বিদেশী বিভিন্ন শব্দৰূপৰ প্ৰয়োগ ঘটিছে। উদাহৰণ স্বৰূপে— গীত, নৃত্য, জল, অগ্নি, মুণ্ডখ, শুকল, আন্ধাৰ, সুৰাগ, বদল, চূত, দোকান, উন্নত, মনোহৰ, আকৃষ্ণিত, নতি, তাৰা, ওকণি, বেঙ্গ, হাথুৰি, ৰজনী, ৰাতি, জিউ আদি।

শব্দগঠনৰ ক্ষেত্ৰত ধাতুৰ পিচত প্ৰত্যয় যোগ কৰি আৰু কেতবোৰ শব্দৰ পিচত প্ৰত্যয় যোগ কৰি শব্দ গঠন কৰা হয়। প্ৰথম বিধ প্ৰত্যয়ক মুখ্য বা কৃৎপ্ৰত্যয় আৰু দ্বিতীয় বিধ প্ৰত্যয়ক তদ্ধিৎ বা গৌণ প্ৰত্যয় বোলা হয়। শব্দ গঠন হওঁতে সংস্কৃত প্ৰত্যয়ৰ প্ৰয়োগ মন কৰিব লগীয়া। ইয়াৰ উপৰিও উপসৰ্গ অৰ্থাৎ পূৰ্বপ্ৰত্যয় যোগ কৰি কেতবোৰ শব্দ গঠন কৰা হয়।

বাক্য গঠনৰ ক্ষেত্ৰত এই যুগত সাহিত্যত বিভিন্ন ধৰণৰ বাক্য-ৰীতি পোৱা যায়। তদুপৰি জতুৱাঠাচ, খণ্ডবাক্য, যোজনা-পটন্তৰ আদিৰো বিশেষ সমাবেশ দেখা যায়।

মাধৱ কন্দলী আৰু অন্যান্য কবিসকলৰ ৰচনাত জতুৱা ঠাচ আৰু খণ্ডবাক্য অলেখ পোৱা যায়। এনেবোৰৰ প্ৰয়োগত সংস্কৃতীয়া প্ৰভাৱ আৰু আঞ্চলিক কথিত ভাষাৰ প্ৰভাৱ দুয়োৰে দেখা যায়। তলত কেইটিমান উদাহৰণ দেখুওৱা হ'ল—

(ক) সিদ্ধী খুজি ফুৰন্তে পাইলে পথ (ৰামায়ণ)

(খ) কাঁচক চাহিয়া আহি হৰাইলৌ মাণিক (ৰামায়ণ)

(গ) ত্ৰৈলোক্যৰ নাথ এৰি তপসিক আস (ৰামায়ণ)

- (ঘ) আমি ভৈলো কৈকেয়িৰ অষ্টমিৰ ছাগ (ৰামায়ণ)
 (ঙ) ঢোল হেন ডিমা পাৰে চুঙ্গাৰ বাদুলি (ৰামায়ণ)
 পিপিয়া চটকে পবৰ্বতক লৱে তুলি (ৰামায়ণ)
 (চ) ভালৰেসে ভাল মন্দৰ মন্দ বাণী (বৰুবাহনৰ যুদ্ধ)
 (ছ) বুঢ়াৰ হাতৰ ছেঙ্গেলি হেছালি নয়াস (বৰুবাহনৰ যুদ্ধ)
 (জ) হস্তীৰো পিছলে পাৰ, সুজানে বুৰাএ নাৰ (বৰুবাহনৰ যুদ্ধ)
 (ঝ) চাগ কি কৰিব পাৰে বাঘৰ আগত (বৰুবাহনৰ যুদ্ধ)
 (ঞ) হৰিণক পাইলে শশাক কোনে সোধে (বৰুবাহনৰ যুদ্ধ)

অসমীয়া ভাষাৰ বুৰঞ্জী অধ্যয়ন কৰিলে দেখা যায় যে এই সময়ৰ অসমীয়া সাহিত্য আৰম্ভণিৰ সাহিত্য হ'লৈও ই সকলো সাহিত্যিক সৌন্দৰ্যেৰে পৰিপূৰ্ণ। বিশেষভাৱে এই সময়ৰ সাহিত্যিক ৰূপ দিওঁতা প্ৰাক্শঙ্কৰী যুগৰ পাঁচোজন কবিৰ নামেই উল্লেখযোগ্য। এই কবিসকলে বিভিন্ন ৰজাৰ পৃষ্ঠপোষকতা লাভ কৰি সাহিত্য ৰচনা কৰোঁতে স্বাভাৱিকতেই ৰাজকীয় পৰিৱেশৰ দ্বাৰা প্ৰভাৱিত হৈছে। এই ৰজাসকল প্ৰায়ে আৰ্য-ভিন্ন গোষ্ঠীৰ, কিন্তু তথাপি তেওঁলোকে আৰ্যমূলীয় অসমীয়া ভাষাটোৰ বিকাশৰ বাবে যি অনুপ্ৰেৰণা কৰি সাহিত্যিকসকলক প্ৰদান কৰিলে সিয়ে তেওঁলোকক অসমীয়া ভাষা সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীত যুগমীয়া কৰি ৰাখিলে। মাধৱ কন্দলীকে আদি কৰি এই সময়ৰ কবিসকলে অসমীয়া ভাষাক যি প্ৰথম সাহিত্যিক ৰূপ প্ৰদান কৰে, সিয়েই অসমীয়া ভাষাৰ বুৰঞ্জীত তেওঁলোকৰ নাম জিলিকাই ৰাখিলে। অসমীয়া ভাষাৰ আদি ছোৱাৰ এই বুৰঞ্জীৰ ক্ষেত্ৰত ৰাজনৈতিক আৰু ধৰ্মীয় প্ৰভাৱে যথেষ্ট ইন্ধন যোগাইছে। এই ৰচনাৰাজিৰ মাজেৰে আঞ্চলিক ভাষাৰ বিশেষ বিশেষ ৰূপ পৰিস্ফুট হোৱা দেখা গৈছে। ৰচনাৰাজিৰ কলা-কুশলতাই ইয়াৰ পৰৱৰ্তী কালৰ ৰচনালৈ বিশেষ সমলৰ যোগান ধৰি গৈছে। এই সময়ছোৱাৰ অসমীয়া ভাষাৰ বুৰঞ্জীৰ এক সংক্ষিপ্ত আভাসহে দাঙি ধৰা হৈছে। এই সময়ৰ অসমীয়া ভাষাৰ বৈশিষ্ট্যৰাজিৰ কিছু গৱেষণা নোহোৱাকৈ থকা নাই যদিও আৰু বিভিন্ন দিশৰ অধ্যয়ন তথা গৱেষণাৰ বাট এতিয়াও মুকলি হৈ আছে।

— দীপ্তি ফুকন পাটগিৰি

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- (ক) উপেন গোস্বামী, অসমীয়া ভাষাৰ উদ্ভৱ, সমৃদ্ধি আৰু বিকাশ, বৰুৱা এজেণ্চি,
 ১৯৯১
 (খ) গোলোক গোস্বামী, অসমীয়া ব্যাকৰণৰ মৌলিক বিচাৰ, বীণা লাইব্ৰেৰী, গুৱাহাটী,
 ১৯৯০

- (গ) দীপ্তি ফুকন পাটগিৰি, *মধ্যযুগৰ অসমীয়া ভাষা সাহিত্যৰ বেঙনি, বনলতা, ডিব্ৰুগড়*, ১৯৯৭
- (ঘ) নাৰায়ণ দাস, *ব্ৰজবুলি ভাষা আৰু সাহিত্য*, বীণা লাইব্ৰেৰী, ১৯৯০
- (ঙ) পৰীক্ষিত হাজৰিকা, *চৰ্যাপদ*, ডালিমী প্ৰকাশন, ফটাশিল আমবাৰী, ১৯৯২
- (চ) বাণীকান্ত কাকতি, *পুৰণি কামৰূপৰ ধৰ্মৰ ধাৰা*
- (ছ) বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকা, *অসমীয়া ভাষাৰ উৎপত্তি আৰু ক্ৰমবিকাশ*, জাতীয় সাহিত্য প্ৰকাশ, গুৱাহাটী, ১৯৮৮
- (জ) মহেশ্বৰ নেওগ, *অসমীয়া সাহিত্যৰ ৰূপৰেখা*, চন্দ্ৰপ্ৰকাশ, ১৯৮৭
- (ঝ) মহেশ্বৰ নেওগ, *পুৰণি অসমীয়া সমাজ আৰু সংস্কৃতি*, নিউ বুক ষ্টল, গুৱাহাটী, ১৯৭১ (৩য় সংস্কৰণ)
- (ঞ) মাধৱ কন্দলি, *ৰামায়ণ*, দত্তবৰুৱা এণ্ড কোম্পানী, গুৱাহাটী, ১৯৯৫ (৭ম সংস্কৰণ)
- (ট) ৰমেশ পাঠক, *অসমীয়া ভাষাৰ ইতিহাস*, জাৰ্নাল এম্পৰিয়াম, নলবাৰী, ১৯৯০
- (ঠ) লীলা গগৈ আৰু হৰিপ্ৰসাদ নেওগ (সঙ্কলন আৰু সম্পাদক), *অসমীয়া সংস্কৃতি*, অসম সাহিত্য সভা, ১৯৭৫ (দ্বিতীয় প্ৰকাশ)
- (ড) লীলাৱতী শইকীয়া বৰা, *মাধৱ কন্দলিৰ ৰামায়ণৰ ভাষা*, অসম সাহিত্য সভা, ১৯৯৩
- (ঢ) সত্যেন্দ্ৰ নাথ শৰ্মা, *অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত*, সৌমাৰ প্ৰকাশ, ১৯৮৬
- (ণ) হৰিহৰ বিপ্ৰ, *বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ আৰু তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ*, সম্পাদক বিৰিঞ্চি কুমাৰ বৰুৱা আৰু মহেশ্বৰ নেওগ, গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়, ১৯৮৭
- (ত) হেম সৰস্বতী, *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*, দত্ত বৰুৱা এণ্ড কোম্পানী, নলবাৰী, অসম, (একাদশ সংস্কৰণ) ১৯৯১

B. Kakati, *Assamese Its Formation and Development*, (3rd Edition) L. B. S. Publication, Guwahati, 1972.

M. Neog, *Sankardeva and His Times*, Gauhati University, 1966

G. C. Goswami, *Structure of Assamese*, Gauhati University, 1982.

১। বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকা, *অসমীয়া ভাষাৰ উৎপত্তি আৰু ক্ৰমবিকাশ*, পৃ: ৫৬

২। ৰমেশ পাঠক, *অসমীয়া ভাষাৰ ইতিহাস*, পৃ: ৩

৩। মহেশ্বৰ নেওগ, *অসমীয়া সাহিত্যৰ ৰূপৰেখা*, পৃ: ৪৭, ৪৮

৪। মহেশ্বৰ নেওগ, *পুৰণি অসমীয়া সমাজ আৰু সংস্কৃতি*, পৃ: ৭

৫। পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থ, পৃ: ২১

৬। 'প্ৰাক্‌আহোম যুগৰ অসমীয়া সমাজ', প্ৰতাপ চন্দ্ৰ চৌধুৰী, *অসমীয়া সংস্কৃতি* প্ৰকাশিত, সংকলন-সম্পাদনা হৰিপ্ৰসাদ নেওগ আৰু লীলা গগৈ, পৃ: ৬৯

৭। লীলাৱতী শইকীয়া বৰা, *মাধৱ কন্দলিৰ ৰামায়ণৰ ভাষা*, পৃ: ৯

পঞ্চম অধ্যায়

অসমীয়া লিপিৰ বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস

(আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ লৈ)

(ক)

প্ৰাচীন ভাৰতৰ এটা উল্লেখযোগ্য লিপি হৈছে ব্ৰাহ্মী-লিপি। ইয়াৰ প্ৰাচীনতম নিদৰ্শন নেপালৰ পিপৰাৰা জুপ আৰু আজমিৰ জিলাৰ বড়লী গাৱঁৰ শিলালেখত পোৱা গৈছে। ইয়াৰ সময় খ্ৰিঃ পূঃ পঞ্চম শতিকা বুলি ধৰা হৈছে। সেই সময়ৰ পৰা তিনি শ পঞ্চাশ খ্ৰিষ্টাব্দলৈকে এই লিপিৰ ব্যৱহাৰ পোৱা যায়। তাৰ পাচত ব্ৰাহ্মী স্পষ্টৰূপে দুটা ভাগত বিভক্ত হয়— উত্তৰ-ব্ৰাহ্মী আৰু দক্ষিণ-ব্ৰাহ্মী। উত্তৰ-ব্ৰাহ্মীৰ প্ৰসাৰ মুখ্যতঃ উত্তৰ-ভাৰতত আৰু দক্ষিণ-ব্ৰাহ্মীৰ প্ৰসাৰ দক্ষিণ-ভাৰতত হয়। উত্তৰ ভাৰতৰ লিপিত দুটা প্ৰধান লিপিৰ এটা হ'ল গুপ্ত-লিপি আৰু আনটো কুটিল-লিপি। চতুৰ্থ আৰু পঞ্চম শতিকাৰ গুপ্ত-ৰজাসকলৰ সময়ত প্ৰসাৰ লাভ কৰা লিপি গুপ্ত-লিপি নামেৰে জনাজাত হয়। গুপ্ত-লিপিৰ পৰা কুটিল-লিপিৰ বিকাশ ঘটে। স্বৰৰ মাত্ৰাবোৰৰ আকাৰ কুটিল বা বেকা হোৱা কাৰণে ইয়াক কুটিল বুলি কোৱা হৈছে। কুটিল-লিপিৰ পৰা প্ৰাচীন নাগৰী আৰু শাৰদা-লিপিৰ উদ্ভৱ হৈছে বুলি পণ্ডিতসকলে মত প্ৰকাশ কৰিছে। উত্তৰ-ভাৰতত নৱম শতিকাৰ শেষৰ পৰা প্ৰাচীন নাগৰী লিপিৰ প্ৰচলন হয়। মৈথিলী, উড়িয়া, বঙলা, অসমীয়া পূব-ভাৰতৰ কেইটামান উল্লেখযোগ্য লিপি। এই আটাইবোৰ লিপিয়ে উত্তৰ-ব্ৰাহ্মীৰ লগত সম্পৰ্ক থকা। দক্ষিণ-ব্ৰাহ্মীৰ পৰা তামিল, তেলেগু, কন্নড়, মালায়ালম, তুলু আদি লিপি ওলায়। আহোম-লিপিৰ উদ্ভৱ ব্ৰাহ্মীৰ দক্ষিণী শৈলীৰ পৰা। আহোম-লিপিৰ এটা ৰূপ হৈছে খাম্‌তি-লিপি।

অসমীয়া লিপিটো পূৰ্ব-ভাৰতৰ এটা লেখত ল'ব লগীয়া লিপি। বহু শতিকা জুৰি চলা চিত্তা-চৰ্চাৰ এক দীঘলীয়া ইতিহাসক সামৰি অসমীয়া লিপিটোৱে আধুনিক ৰূপ পাইছে। অসমীয়া লিপিৰ উদ্ভৱ আৰু বিকাশ সম্পৰ্কে হোৱা

আলোচনাৰ বেছি ভাগতে অসমীয়া লিপিটোক ভাৰতৰ প্ৰাচীন লিপি ব্ৰাহ্মীৰ পৰিৱৰ্তিত ৰূপ কুটিল-লিপিৰ পৰা জন্মা বুলি ক'বলৈ বিচৰা হৈছে। সৰ্বশ্ৰেষ্ঠ কটকীয়ে অসমীয়া প্ৰাচীন লিপি নামৰ পুথিখনত এইদৰে লিখিছে : “ব্ৰাহ্মী লিপি প্ৰথম, কুশান লিপি দ্বিতীয়, গুপ্ত-লিপি তৃতীয়, আৰু গুপ্ত-লিপিৰ পূৰ্ণ ভাৰতীয় কুটিল-লিপি চতুৰ্থ আৰু এই কুটিল-লিপিৰ পৰিৱৰ্তন আৰু সংমিশ্ৰণ ঘটি ঘটা কামৰূপ-লিপি বা পুৰণি অসমীয়া লিপিয়ে পূৰ্ণভাৰতীয় ভাষাৰ বংশ-লতিকাত পঞ্চম স্থান অধিকাৰ কৰিছে বুলি স্থিৰ কৰিব পাৰি; আৰু এয়ে অসমীয়া লিপিৰ উৎপত্তি”। অসমীয়া লিপিৰ আঁতি-গুৰি বিচাৰি আমি পঞ্চম শতিকাৰ সুৰেন্দ্ৰ বৰ্মাৰ উমাচলৰ শিলা-লিপিৰ ওচৰ পাওঁ। ইয়াৰ আমাৰ আন এখন শিলা-লিপি হ'ল নগাজৰী-খনিকৰ গাৱঁৰ প্ৰস্ত-লিপি। “সমুদ্ৰ গুপ্তৰ প্ৰয়াগ শিলাস্তম্ভ-লিপি আদিৰ দৰে ইয়াতো ‘ব’ আৰু ‘ৰ’ আখৰৰ পাৰ্থক্য ৰখালৈ চাই, আন হাতে উমাচল-লিপিৰ পৰা আৰম্ভ কৰি পৰৱৰ্তী সকলো শিলা-লিপি আৰু তাম্ৰ-লিপিতে অধিক পৰিমাণে স্থানীয় প্ৰাকৃত ভাষাৰ প্ৰভাৱ পৰালৈ চাই আৰু ‘ব’ আৰু ‘ৰ’ আখৰৰ কোনো পাৰ্থক্য নথকালৈ চাই ইয়াক সংস্কৃত ভাষাত লিখিত এতিয়ালৈকে আৱিষ্কৃত অসমৰ প্ৰাচীনতম লিপি বুলি ভাবিবৰ অৱকাশ আছে।” ত্ৰিষ্টীয় পঞ্চম শতিকাৰ পৰা আৰম্ভ কৰি পৰৱৰ্তী কালত প্ৰাপ্ত বিভিন্ন শিলা লেখা আৰু তাম্ৰৰ ফলিৰ লিপিৰ অধ্যয়নে এইটো স্পষ্টৰূপে দেখুৱায় যে অসমীয়া লিপিটো অসমৰ শিলা-লেখ আৰু তাম্ৰৰ ফলিবোৰত ব্যৱহৃত লিপিৰ বিকাশপ্ৰাপ্ত এটা ৰূপ। এই লিপিৰ মূল ব্ৰাহ্মী আৰু তাৰ পৰৱৰ্তী গুপ্ত-লিপি। ইয়াৰ কুটিল-লিপিৰ লগত সাঙোৰাৰ বিশেষ যুক্তি নাই। কুটিল-লিপিৰ জন্ম কাল ধৰা হয় ষষ্ঠ শতিকাৰ পৰা; কিছু পঞ্চম শতিকাৰ পৰাই অসমত শিলা-লিপিৰ নিদৰ্শন বিদ্যমান। ওপৰত উল্লেখ কৰা উমাচলৰ শিলা-লিপি আৰু নগাজৰী-খনিকৰ গাৱঁৰ লিপিত পোৱা আখৰবোৰক গুপ্ত-লিপিৰ আখৰবোৰেৰে সৈতে ৰিজাই চালে এই শিলা-লিপি দুখনৰ প্ৰায়বোৰ আখৰ গুপ্ত-লিপিত পোৱা আখৰৰ সৈতে একেটা ৰূপত পোৱা যায়। শিলা-লেখ দুখনৰ ই, ক, খ, গ, চ, জ, ড, ণ, ত, দ, ধ, ন, প, ব, ভ, ম, য, ৰ, ল, ৱ, শ, ষ, স, হ, আৰু ৰা, জা, না, ধি, কী, শু, কৃ আদিৰ ৰূপ গুপ্ত-আখৰেৰে সৈতে একে।

উমাচলৰ শিলা-লিপি আৰু নগাজৰী-খনিকৰ গাৱঁৰ শিলা-লিপি দুখনৰ পাচত সপ্তম শতিকাৰ ভাস্কৰবৰ্মাৰ তাম্ৰৰ ফলিৰ আখৰবোৰ চালে সেইবোৰত ব্ৰাহ্মী আৰু গুপ্ত-লিপিৰ আখৰৰ পৰস্পৰা বন্ধিত হোৱা দেখা যায়। ভাস্কৰবৰ্মাৰ তাম্ৰ-শাসন কেইখনৰো ডুবৰ তাম্ৰ-শাসন আৰু নিধনপুৰ তাম্ৰ-শাসনৰ আখৰৰ গঢ় সুকীয়া হৈ পৰিছে। নিধনপুৰ আৰু ডুবৰ তাম্ৰ-শাসনত আখৰৰ পাৰ্থক্য আ,

ক, ত্ব, ব, য, ঝ, ল, স আদি আখৰত প্ৰকট হয়। নিধনপুৰ তাম্ৰ-শাসনৰ ক, ব, ল আদি আখৰবোৰ একেবাৰে আধুনিক ৰূপৰ। ব্ৰাহ্মী আৰু গুপ্ত-আখৰৰ নিচিনা ভাস্কৰ্য্যমূলক শিলা-লিপিতো কোনো এটা আখৰৰ শেষৰ অংশ সচৰাচৰ ৰূপতকৈ বেছি তললৈ নি উকাৰান্ত কৰা ৰীতি সংৰক্ষিত হৈছে। এই সময়লৈকে বাঞ্জন-বৰ্ণৰ পাচত লগ লগা আকাৰ, ইকাৰ আদিৰ ৰূপে পূৰ্বৱৰ্তী যুগৰ শিলা-লিপিত পোৱা পৰম্পৰা বহন কৰিছে।

সপ্তম শতিকাৰ পৰা নৱম শতিকালৈ গতি কৰিলে তাম্ৰ-শাসনবোৰৰ আখৰৰ এটা আমূল পৰিৱৰ্তনৰ দ্বাৰা চকুত পৰে। নৱম শতিকা আৰু দশম শতিকাৰ আগ-ভাগ, এই সময়ছোৱাত তামৰ ফলিৰ আখৰবোৰে আধুনিক অসমীয়া আখৰৰ গঢ় ল'বলৈ উপক্ৰম কৰে। ভাস্কৰৱৰ্মাৰ সময়লৈকে পোৱা আকাৰ, ইকাৰ আদিৰ গঢ়ৰ এই সময়ত সম্পূৰ্ণ সলনি ঘটে। ব্যঞ্জন-বৰ্ণবোৰৰ বহুখিনি আধুনিক ৰূপৰ কাষ চাপে। যুক্ত ব্যঞ্জনৰ আধুনিক গঢ়ৰ কথাও এই ক্ষেত্ৰত বিশেষভাৱে মন কৰিব লগীয়া। বনমালৱৰ্মাদেৱৰ পৰ্বতীয়া তাম্ৰ-শাসন, তৃতীয় বলৱৰ্মাৰ উত্তৰ বৰবিল, উলুবাৰী আৰু নগাওঁ তাম্ৰ-শাসনবোৰে ইয়াৰ সাক্ষ্য বহন কৰিছে। এই তামৰ ফলিবোৰত অ, আ, উ, ঊ, এ, ঔ, খ, গ, ঘ, জ, ঞ, ঢ, ত, থ, দ, ন, ফ, ব, ম, য, ল, ষ, স, ৎ, ং, ঃ আদি স্বৰ আৰু ব্যঞ্জন-বৰ্ণ, হ্ৰ, ঐ, ঋ, ঌ, ঍, ঙ্গ, ঙ্ঘ, ণ্ৰ, ণ্ড, ণ্ম, ণ্ড আদি যুক্ত ব্যঞ্জন, আৰু কৃ, ক্ৰ, ক্স আদি আখৰবোৰে আধুনিক গঢ় লৈছে। গতিকে খ্ৰিষ্টীয় নৱম-দশম শতিকাতে অসমীয়া লিপিয়ে এটা সুকীয়া ৰূপ লয় বুলি নিঃসন্দেহে ক'ব পাৰি। এইখিনিতে বলৱৰ্মাৰ (৮৮৫-৯১০) নগাৱাঁৰ তাম্ৰ-শাসনৰ 'ত্ৰৈলোক্যবিজয়তুঙ্গং যেনাপহন্তং যশো মহেন্দ্রস্য। কামৰূপে জিতকামৰূপঃ প্রাগজ্যোতিষাখ্যং পুষ্পধুরাস। ৰজা প্রজাবঞ্জন লক্ষবৰ্ণো।' এই শাৰী কেইটাবোৰ আখৰবোৰ মন কৰিব লগীয়া।

অসমীয়া লিপিৰ ইতিহাসক প্ৰধানকৈ তিনিটা ভাগত ভাগ কৰিব পাৰি। খ্ৰিষ্টীয় পঞ্চম শতিকাৰ পৰা ত্ৰয়োদশ শতিকালৈ পুৰণি অসমীয়া লিপি বা কামৰূপী লিপি, ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ পিচৰ পৰা ঊনবিংশ শতিকাৰ মাজ-ভাগলৈ ('অৰুণোদয়'ৰ জন্ম-কাললৈ) মধ্যযুগীয় অসমীয়া লিপি আৰু 'অৰুণোদয়'ৰ জন্ম-কাল ১৮৪৬ চনৰ পৰা বৰ্তমানলৈ আধুনিক অসমীয়া লিপি। খ্ৰিষ্টীয় পঞ্চম শতিকাৰ পৰা ত্ৰয়োদশ শতিকালৈ পোৱা অসমৰ বিভিন্ন সময়ৰ শিল্প-লেখ আৰু তামৰ ফলিবোৰৰ আখৰবোৰ ভালদৰে নিৰীক্ষণ কৰিলে কল্পনাৰ কোনো সহায় নোলোৱাকৈ সেই আখৰবোৰৰ মাজেদি ক্ৰমান্বয়ে অসমীয়া আখৰবোৰে কেনেদৰে বিকাশ লাভ কৰি আধুনিক অসমীয়া আখৰৰ গঢ় লৈছে তাৰ ছবি অতি স্পষ্ট হৈ উঠে। আকাৰ, ইকাৰ, ঈকাৰ, ঋকাৰ, একাৰ, ঐকাৰ, ওকাৰ, ঔকাৰ আদিৰ উপৰিও এনেদৰে বিকাশপ্ৰাপ্ত আখৰবোৰ হ'ল— অ, আ, এ, ও, ঔ; ক, খ, গ, ঘ, জ, ঞ, ড, ঢ, ত, থ, দ,

ন, ফ, ব, ভ, ম, য, ল, শ, ষ, স, ক্ষ। কিছুমান আখৰে পৰৱৰ্তী কালত আধুনিক ৰূপ লৈছে। দ্বাদশ-ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ পাচৰ শিলা-লেখ আৰু তামৰ ফলিবোৰত সেই পৰিৱৰ্তন সুৰক্ষিত হৈছে। এই ক্ষেত্ৰত ডঃ মহেশ্বৰ নেওগ সম্পাদিত *প্ৰাচ্য-শাসনাৱলী*ৰ অন্তৰ্ভুক্ত ৰুদ্ৰসিংহৰ লেপেটকটাৰ তামৰ ফলি, কামৰূপেশ্বৰ মাধৱদেৱৰ নীলাচল-তাম্ৰশাসন, সাঁচিপাতৰ মনুষ্য-ক্ৰয়-বিক্ৰয়ৰ পত্ৰ, বংশৰ পৰগণাৰ ব্ৰহ্মত্ৰৰ তামৰ ফলি, যৌতুকস্বৰূপ ব্ৰহ্মত্ৰৰ তামৰ ফলি, কোঁৱৰ ভাগ-পূৰ পাৰৰ ব্ৰহ্মত্ৰ - ধৰ্মত্ৰৰ তামৰ ফলি, পূৰ-পাৰ আদি পৰগণাৰ দেৱত্ৰৰ তামৰ ফলি, কামাখ্যাদেৱীৰ লক্ষ্মবলিৰ তামৰ ফলি, পাইক-ক্ৰয় আৰু হয়গ্ৰীৱ-মাধৱলৈ দানৰ তামৰ ফলি, পশ্চিম পাৰ পৰগণাৰ ব্ৰহ্মত্ৰৰ তামৰ ফলি, ভূমি ক্ৰয়-বিক্ৰয়ৰ শিলা-লিপি আদি বিশেষভাৱে উল্লেখযোগ্য। নীলাচলৰ কামাখ্যা মন্দিৰৰ শিলাৰ ফলিত ১৫৬৫ খ্ৰিঃ, ‘ব’ আৰু ‘ৰ’ আখৰ দুটা আছে। পিচত বিকাশ লাভ কৰা আখৰবোৰ হ’ল— জ, দ, ই, উ, ঐ, ঔ, ঙ, চ, ছ, ঝ, ট, ঠ, ণ, ধ, প, ৰ, ব, হ আদি।

নৱম আৰু দশম শতিকাৰ তামৰ ফলিত পোৱা আৰু আগতে উল্লেখ কৰা যুক্ত ব্যঞ্জনবোৰৰ উপৰি আৰু অনেক যুক্ত ব্যঞ্জন পঞ্চম শতিকাৰ পৰা ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ ভিতৰত শিলালেখ আৰু তামৰ ফলিবোৰত সংৰক্ষিত হৈছে। আধুনিক অসমীয়াত ব্যৱহাৰ হোৱা যুক্ত ব্যঞ্জন কিছুমান সেইবোৰত স্পষ্টৰূপে পোৱাৰ উপৰিও বহুতো যুক্ত ব্যঞ্জনে কেনেকৈ বৰ্তমানৰ ৰূপ ল’লে তাৰ বুৰঞ্জীযুক্ত ব্যঞ্জনবোৰৰ গঢ়ে স্পষ্ট কৰি তোলে। উদাহৰণস্বৰূপে ঋ, ঙ্গ, ঙ্গ আদি যুক্ত ব্যঞ্জনবোৰ প্ৰথমতে ‘ন’ৰ তলত ‘চ’ আৰু ‘জ’, আৰু ‘জ’ৰ তলত ‘ন’ বহুৱাই লোৱা হৈছিল। ‘ন’টোৰ আকৃতি প্ৰথমতে ‘ঋ’ৰ পিঠিত বহা অংশটোৰ দৰেই আছিল। ‘ঋ’ৰ নিচিনা ‘ঙ’ আৰু ‘জ্জ’ৰো ৰূপৰ সলনি হ’ল। ‘ঋ’ আৰু ‘ঔ’ৰ প্ৰথমতে ‘ষ’ৰ তলত ‘ণ’ আৰু ‘ষ’ৰ তলত ‘ট’টো লেখা নিয়ম আছিল। পিছত দুয়ো ‘ষ’ৰ পিঠিত বহিল হি।

অসমীয়া লিপিৰ ত্ৰয়োদশ শতিকালৈ পোৱা কামৰূপী লিপিয়ে এইদৰে অসমীয়া লিপিৰ সুদৃঢ় ভেটি স্থাপন কৰিলে। অসমীয়া লিপিৰ বিকাশৰ বিষয়ে আলোচনা কৰি ডিব্ৰুগড়ৰ নেওগে এইদৰে লেখিছে, “বঙলা লিপি আৰু মৈথিলী আখৰবোৰ প্ৰকৃততে এটা আৰু পুৰণি কামৰূপ-লিপিৰ সৈতে একে। কামৰূপ-লিপিয়ে গতি ৰুদ্ধ নকৰাকৈ আধুনিক অসমীয়া লিপিৰ ৰূপত নিজৰ সম্বন্ধ ৰক্ষা কৰিলে; কিন্তু বঙলা আৰু মৈথিলীয়ে ফালৰি কাটি তথাকথিত স্বতন্ত্ৰ জীৱন-যাত্ৰা আৰম্ভ কৰিলে।”^{১২} এই প্ৰসঙ্গতে উল্লেখ কৰিবলগীয়া যে তেৰ শতিকালৈকে বিকাশ

লাভ কৰা অসমীয়া আখৰৰ বহুতো আখৰ তেৰ শতিকাৰ উড়িয়াৰ ভুবনেশ্বৰ শিলা-লিপিৰ আখৰেৰে সৈতে একে ৰূপৰ। ডঃ সুকুমাৰ সেনে উল্লেখ কৰা অনুযায়ী দ্বাদশ শতিকাত বঙলা বৰ্ণমালাই পূৰ্ণৰূপে দেখা দিয়ে। এই সম্পৰ্কত লক্ষ্মণসেনৰ তাম্ৰ-পত্ৰখন বিশেষভাৱে মন কৰিব লগীয়া। এই ফলিখনৰ আখৰৰ লগত কামৰূপী লিপিৰ যথেষ্ট সাদৃশ্য আছে। ইপিনে ডঃ মিতালী চট্টোপাধ্যায়ে এখন গৱেষণা-পত্ৰত উল্লেখ কৰা মতে খুব সম্ভৱ দশম শতিকাৰ শেষৰ ফালে বঙলা বৰ্ণমালাই সম্পূৰ্ণ আৰু নিৰ্দিষ্ট ৰূপ লয়। একেখন পত্ৰতে তেওঁ লিখিছে যে ১৫৪৫ খ্ৰীষ্টাব্দৰ পৰা পোৱা বঙ্গদেশৰ বহুতো শিলা-লিপিত ‘ৰ’ টোক ‘ব’ৰ মাজত এটা ফুট দি লেখা পোৱা গৈছে। এই ‘ৰ’টোক অসমীয়া ‘ৰ’ আখৰৰ ৰূপত ১৬২৫ খ্ৰীষ্টাব্দৰ পৰা সমগ্ৰ বঙ্গ-দেশ জুৰি থকা বহুতো শিলা-লিপিত পোৱা যায়। তেওঁৰ নিজৰ ভাষাত “সোতৰ আৰু ওঠৰ শতিকাৰ শিলা-লিপিবোৰত সাধাৰণতে অসমীয়া ‘ৰ’ আখৰকে ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল।” আকৌ আধুনিক উড়িয়া আৰু মৈথিলী লিপিয়ে পুৰণি, মধ্যযুগীয় আৰু আধুনিক অসমীয়া লিপিৰ বহুতো আখৰ সামৰি গৈছে।

[illegible]

অধিকাৰ কৰিছে। এই আটাইবোৰত তামৰ ফলি আৰু শিলা-লেখবোৰত ব্যৱহাৰ কৰা অসমীয়া লিপিৰ পৰম্পৰাৰ অনুসৰণ হৈছে।

মধ্যযুগীয়া অসমীয়া লিপিক, বিশেষকৈ সাঁচিপতীয়া পুথিবোৰত ব্যৱহাৰ হোৱা লিপিক সচৰাচৰ গড়গঞা, বামুণীয়া আৰু কাইথেলী নামেৰে বুজোৱা হয়। আহোম ৰজাৰ ৰাজধানী গড়গাৱঁক কেন্দ্ৰ কৰি গঢ়ি উঠা লিপি গড়গঞা। সংস্কৃত টোলবোৰক কেন্দ্ৰ কৰি পুথি-পাঁজি ৰচনা আৰু নকল কৰা ৰীতিৰ ফলস্বৰূপে বামুণীয়া লিপিৰ সৃষ্টি হয়। নামনি-অসমত প্ৰচলিত লিপিটো কাইথেলী নামে জনাজাত। লেখন-ৰীতিৰ পিনৰ পৰা এইকেইটা ভাগ কৰা হৈছে। সাঁচিপতীয়া অসমীয়া আখৰে মিছনেৰিসকলৰ হাতত ছপা ৰূপ পালে। আত্মাৰাম শৰ্মাৰ অসমীয়া বাইবেলখন (ধৰ্মপুস্তক) প্ৰথম অসমীয়া ছপা-পুথি (১৮১৩ খ্ৰিঃ)। এইখন প্ৰথমবাৰ ছপা কৰোঁতে সাঁচিপতীয়া আখৰৰ গঢ়তে শ্ৰীৰামপুৰত ছপা কৰা হৈছিল। পিছত সাঁচিপাতৰ মাত্ৰ কৃ, কু, হু, হু আখৰকেইটাৰ পুৰণি ৰূপৰ সলনি কৰাত সেই লিপি সম্পূৰ্ণ আধুনিক ৰূপত পৰিণত হ'ল। আধুনিক অসমীয়া লিপিটো মিছনেৰিসকলৰ 'দান' নহয়। আধুনিক অসমীয়া লিপিটো অসমৰ সাঁচিপতীয়া পুথিৰ বা তাৰ আগৰ আখৰৰ স্বাভাৱিক বিকশিত ৰূপ নহয় বুলি কোৱাৰো কোনো যুক্তিযুক্ততা নাই। কামৰূপী লিপিয়ে বিকাশ লাভ কৰি মধ্যযুগীয় অসমীয়া লিপি আৰু অৱশেষত আধুনিক লিপিৰ ৰূপ পাইছে। অসমীয়া লিপিৰে সৈতে বঙলা, উড়িয়া, মৈথিলী আদি লিপিৰ এটা সম্পৰ্ক আছে। এই সম্পৰ্ক প্ৰাচীন কালৰে পৰা চলি অহা সম্পৰ্ক। এই সম্পৰ্কৰ পৰা পূৰ্বভাৰতীয় লিপিকেইটাৰ (অসমীয়া, বঙলা, উড়িয়া, মৈথিলী) মূল গুপ্ত-লিপিৰ পৰিৱৰ্তিত ৰূপ কামৰূপী লিপি বুলি ক'ব পৰা যায়। অসমীয়া লিপিৰ ইতিহাসে পূৰ্বভাৰতীয় সাংস্কৃতিক গোট এটাৰ কথাই সোঁৱৰাই দিয়ে।

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- ১। ডঃ মুকুন্দ মাধব শৰ্মা, নগাজৰী খনিকৰ গাওঁ প্ৰস্তুৰ খণ্ড লিপি, অধ্যয়ন পৰিচয়, ১৯৭৮; অসমীয়া লিপিৰ বিভিন্ন স্তৰৰ বিকাশৰ বিস্তৃত বিৱৰণৰ বাবে দ্ৰষ্টব্য : লেখকৰ *অসমীয়া লিপি*, অসম প্ৰকাশন পৰিষদ, ১৯৮৮

অসমীয়া লিপিৰ বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস

(১২২৮ ৰ পৰা ১৪৭০ লৈ)

(খ)

১২২৮ ৰ পৰা ১৪৭০ লৈ সময়ছোৱাৰ লিপিৰ বুৰঞ্জী কেইবাটাও কাৰণত গুৰুত্বপূৰ্ণ। প্ৰথমতে এই সময়ছোৱাতে অসমীয়া সাহিত্য ৰচনা আৰম্ভ হৈছিল। অসমীয়া সাহিত্যৰ এই সময়ৰ লিখক হেম সৰস্বতী, ৰুদ্ৰ কন্দলী, মাধৱ কন্দলী, হৰিহৰ বিপ্ৰ, কবিৰত্ন সৰস্বতী আদিয়ে এই লিপিতে সাহিত্য ৰচনা কৰিছিল।

দ্বিতীয়তে, দশম শতিকাৰ পাচত নব্য ভাৰতীয় আৰ্যভাষা হিচাপে অসমীয়া ভাষা বিকাশ হোৱা দুশ বছৰৰ পিছত এই লিপিতে অসমীয়া ভাষা লিপিবদ্ধ কৰা হৈছিল। ইয়াৰ আগলৈকে শিলালিপি, তামৰ ফলিৰ লিপি আদিত সংস্কৃত ভাষাহে লিখা হৈছিল। ফলত এই লিপি জনসাধাৰণৰ মাজত জনপ্ৰিয় হোৱাৰ সুযোগ নাপাইছিল।

তৃতীয়তে, এই সময়ছোৱাত লিখাৰ সঁজুলি হিচাপে কলমৰ ব্যৱহাৰ অতি ব্যাপকভাৱে হৈছিল। এই সময়ছোৱাত কেইবাজনো সাহিত্যিক ওলোৱাৰ পৰা কলমৰ ব্যৱহাৰৰ ব্যাপকতা অনুমান কৰিব পাৰি। অৱশ্যে ইয়াৰ আগতেও অসমত কলমৰ ব্যৱহাৰৰ সাক্ষ্য আছে। বাণভট্টৰ হৰ্ষচৰিত মতে ভাস্কৰৰমাই (৫৯৪-৬৫০) হৰ্ষবৰ্ধনলৈ পঠোৱা উপহাৰৰ মাজত সাঁচিপাতত লিখা সুভাষিতেৰে ভৰপূৰ কেইবাখনো পুথি (অণুৰুদ্ধকলিকল্পিতসঞ্চয়ানি চ সুভাষিতভাজি পুস্তকানি) আছিল। ৰত্নপালৰ (১০১০-৪০) পুতেক পুৰন্দৰপাল বীৰ আৰু কবি (শুৰশ্চ সুকৱিৰ্শ্চ) আছিল বুলি পুতেক ইন্দ্ৰপালে (১০৪০-৬৫) গুৱাহাটী তামৰ ফলিত লিখিছে। কামৰূপৰ ৰজা হৰ্ষপালৰ (১০৮৫-৯৫) সংস্কৃতত লিখা কেইবাটাও সুভাষিত সংস্কৃত ভাষাৰ প্ৰথম সুভাষিত সঙ্কলন *কৰীন্দ্র-ৰচন-সমুচ্চয়*ত সংগৃহীত হৈছে। ১২০৫ত ত শ্ৰীধৰ দাসে সঙ্কলন কৰা *সদুজিকৰ্ণামৃত* নামৰ সংস্কৃত সুভাষিত গ্ৰন্থত ৰজা ধৰ্মপালে (১০৯৫-১১২০) লিখা ১০ টা সুভাষিত সন্নিবিষ্ট কৰা হৈছে। এই তথ্যবোৰে প্ৰমাণ কৰে যে অন্তত : সপ্তম শতিকাৰ পৰা কামৰূপত সাঁচিপাতত কলমেৰে লিখা পদ্ধতিৰ প্ৰচলন আছিল।

এই সময়ছোৱাৰ লিপিৰ গঢ় আমি ১) ১১৫৪ শক বা ১২৩২ খ্ৰিঃ সমুদ্ৰপালৰ আমবাৰীৰ শিলালিপি, ২) ১২৫১ শক বা ১৩২৯ খ্ৰিঃ ৰ ৰজা

পুৰুষোত্তম দাসৰ ৰাউন্তকোচি তামৰ ফলি, ৩) ১২৮৪ শক বা ১৩৬২ খ্ৰিঃ ৰ গছতল স্তম্ভলিপি, ৪) ১৩১৪ শক বা ১৩৯২ খ্ৰিঃ সধয়াপুৰীশ্বৰ সতানাবায়ণ - প্রত্যক্ষনাবায়ণৰ ভূমিদানৰ তামৰ ফলি, ৫) ১৩২৩ শকৰ বা ১৪০১ খ্ৰিঃ ৰ স্বধয়াপুৰীশ্বৰ লক্ষ্মীনাবায়ণৰ ভূমিদানৰ তামৰ ফলি, ৬) ১৩৬৪ শক বা ১৪৪২ খ্ৰিঃ ৰ মুক্তাধৰ্মনাবায়ণৰ পায়ী তাম্ৰেশ্বৰীৰ মন্দিৰৰ তামৰ ফলি, আৰু ৭) ৰজা মাধৱদেৱৰ ১৫ শ শতিকাৰ নীলাচল তামৰ ফলিত পাওঁ।

১২শ-১৩ শ শতিকাৰ প্ৰাক্-অসমীয়া লিপি আৰু ১৪শ-১৫শ শতিকাৰ প্ৰাচীন অসমীয়ালিপি নামৰ দুই বিধ আখৰৰ গঢ় এই সময়ছোৱাৰ লিপিয়ে সামৰি লয়। তলত এই সময়ৰ লিপিৰ বৈশিষ্ট্যৰ আভাস দিয়া হৈছে।

স্বৰবৰ্ণ

অ :- ৮ম-১১শ শতিকাৰ নব্য কামৰূপী লিপিৰ পৰা ইয়াৰ বিকাশ ঘটিছে। ইয়াৰ দুটা গঢ় পোৱা যায়। এটা গঢ় প্ৰায় দেৱনাগৰী অ- ৰ দৰে আৰু আনটো গঢ় কিছু প্ৰতিমাণে দেৱনাগৰী স- ৰ দৰে আছিল। ১২শ- ১৩শ শতিকাৰ প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিত ইয়াৰ গঢ় অ-ৰ বঢ়া অংশটোৰ তলত কাটকুট চিনৰ দৰে এটা চিন যোগ হ'ল। ইতিমধ্যে ১৪শ-১৫শ শতিকাৰ প্ৰাচীন অসমীয়া লিপিত ইয়াৰ দুটা গঢ়ৰ বিকাশ ঘটিল। এটা মাত্ৰাহীন আধুনিক অসমীয়া অ-ৰ দৰে আৰু আনটো থ-ৰ দৰে।

আ :- ৮ ম ১১ শ শতিকাত দেৱনাগৰী অ-ৰ পাচত চুটি আ-কাৰ যোগ দি এই আখৰ লিখা হৈছিল। প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিৰ যুগত আ-কাৰডাল বহুখিনি দীঘল হয়। প্ৰাচীন অসমীয়া লিপিৰ যুগত প্ৰায় থা-ৰ নিচিনা হৈ পৰে।

ইঃ- নব্য কামৰূপী লিপিত দুটা পথলীয়া বিসৰ্গৰ তলত ৩ সংখ্যাটো লিখাৰ দৰে এটা ৰূপ আৰু পথলীয়া বিসৰ্গৰ তলত ২ সংখ্যাটো লিখাৰ দৰে আন এটা ৰূপ পোৱা গৈছিল। ১২শ-১৩শ শতিকাত পথলীয়া বিসৰ্গৰ তলত ২ সংখ্যাটো লিখাৰ দৰে ৰূপটো থাকিল। ১৪শ-১৫শ শতিকাৰ প্ৰাচীন অসমীয়া লিপিত পথলীয়া বিসৰ্গৰ প্ৰথমৰ বৃন্তটো মেল খাই ওপৰলৈ শূঁৰ মেলিলে আৰু আগৰ ২ সংখ্যাটো মাত্ৰা হীন হৈ পৰিল।

ঈঃ- ৪র্থ- ৭ম শতিকাত পথলীয়া বিসৰ্গৰ মাজেদি মাত্ৰায়ুক্ত থিয় আঁচৰূপে পোৱা ঈৰ ৮ম -১১শ শতিকাৰ নব্য কামৰূপী আৰু ১২শ-১৩শ শতিকাৰ প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিত নিদৰ্শন পোৱা নাযায়। প্ৰাচীন অসমীয়া বিসৰ্গটো ওলোমাই থোৱা হাঁকুটি এডালৰ ৰূপত ইয়াক পোৱা যায়।

উ :- নব্য কামৰূপী লিপিত ইয়াৰ ৰূপ ড-ৰ দৰে। প্ৰাক্ অসমীয়া লিপি আৰু প্ৰাচীন অসমীয়া লিপিত ইয়াৰ আকাৰ সলনি হোৱা নাই।

উ :- ৮ম-১১শ শতিকাত ইয়াৰ আকাৰ ড-ত এডাল হাতোৰা লগোৱাৰ দৰে আছিল। ১২শ-১৩শ শতিকাতো এই ৰূপৰ সামান্য লৰচৰহে হৈছিল। ১৪শ-১৫শ শতিকাত ইয়াৰ ৰূপ উদ্ধাৰ হোৱা নাই।

ঋ :- নব্য-কামৰূপী লিপিত ইয়াৰ ৰূপ প্ৰায় ঝ-ৰ দৰে আছিল। প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিত ঝ-ৰ মাত্ৰা সৈতে সংযোগ কৰা থিয় আঁচডাল দীঘল হ'ল।

ঋ :- এই আখৰটো এতিয়ালৈকে কোনো এখন ফলিতে উদ্ধাৰ হোৱা নাই।

৯ :- এই আখৰটোও ফলিবোৰত পোৱা নাযায়।

এ :- নব্য কামৰূপী লিপিত মেল খোৱা ত্ৰিভুজ এটাৰ ৰূপত পোৱা যায়- এই আখৰ প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিত প্ৰায় আধুনিক ৰূপত পোৱা যায়।

ঐ :- এই আখৰটো ফলিকেইখনত অনুপস্থিত।

ও :- প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিত ইংৰাজীৰ ৩ সংখ্যাটোৰ দৰে।

ঔ :- ৮ম-১১ শ শতিকাৰ নব্য কামৰূপী লিপিত ৩ ইংৰাজী সংখ্যাটো সোঁ মাজৰ পৰা ওপৰলৈ শূঁৰ এডাল বঢ়াৰ দৰে। ১২শ-১৩শ আৰু ১৪ শ-১৫শ শতিকাত লিপিবোৰত ই অনুপস্থিত।

ং :- ৮ম-১১শ শতিকাত ইয়াৰ ৰূপ বৰ্তমান ং-ৰ দৰে হয়।

ঃ :- ইয়াৰ ৰূপ ৪র্থ-৭ম শতিকাৰ পৰা একে। সুৰেন্দ্ৰ বৰ্মাৰ উমাচল গুহালিপিৰ তৃতীয় শাৰীৰ “ ভগৱত ঃ ” শব্দত থকা ৰূপটোৱেই কম-বেছি পৰিমাণে সংৰক্ষিত হৈছে।

ক :- ভাস্কৰবৰ্মাৰ নিধনপুৰ তামৰ ফলিৰ ১ম ফলকৰ ২য় শাৰীৰ “কৰোমি” শব্দতেই ইয়াৰ বিকাশ ঘটিছে। কম-বেছি পৰিমাণে সেই ৰূপেই সংৰক্ষিত হৈছে।

খ :- শূঁৰ লগা ব-ৰ নিচিনা ৮ম-১১ শতিকাৰ খ ১২ শ-১৩শ শতিকাত দুটা ৰূপ লয়। এটা ৰূপত শূঁৰ লগা ব-টো মাত্ৰাৰ ওচৰতে ফাঁক হৈ থ-ৰ দৰে বিকাশ হয়।

গ :- মাত্ৰা এডালত সৰু বন্ধনীৰ শেষ ভাগ আৰু অলপ পাচত থিয় আঁচ আকাৰৰ গ-ই ১৪-১৫শ শতিকাত আধুনিক ৰূপ গ্ৰহণ কৰে।

ঘ :- ১২শ-১৩শ শতিকাত ঙ্গ-ৰ দৰে ৰূপ লোৱা ঘ-ই ১৪শ-১৫শ শতিকাত প্ৰায় আধুনিক ৰূপ লয়।

ঙ :- দেৱনাগৰী ড-ৰ পাচত ওপৰ ফালে সৰু বৃত্ত এটা থকা প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিৰ ঙ ১৪শ-১৫শ শতিকাৰ প্ৰাচীন অসমীয়া লিপিত ড-ৰ পাচতে মাত্ৰাৰ লগত লগত সৰু বৃত্তটো আঁকি দিয়াৰ দৰে ৰূপ লয়।

চ :- ১২শ-১৩শ শতিকাৰ প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিৰ চ-ৰ পেট্টোৰ আগ ফালে আছিল। ১৪শ-১৫শ শতিকাৰ প্ৰাচীন অসমীয়া লিপিত দুয়ো পেট বাঢ়ি প্ৰায় সমান হয়।

ছ :- ১২শ-১৩শ শতিকাত আগ ফালে পেট থকা চ-ৰ পিছ ফালে নেজ লগোৱা ৰূপত ইয়াক পোৱা যায়। প্ৰাচীন অসমীয়া লিপিত দুয়ো ফালে সমানে পেট বঢ়া চ-ৰ পাচত নেজ লগাই ইয়াক লিখা হয়।

জ :- প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিতে জ-ই আধুনিক ৰূপ লৈছে।

ঝ :- ১২শ-১৩শ শতিকাতে ঝ-ই আধুনিক ৰূপ ললেও ইয়াৰ ৰূপটো চেপা খোৱা ধৰণৰ আছিল। ১৪শ-১৫শ শতিকাত স্বাভাৱিক ৰূপলৈ আহে।

ঞ :- ১২শ-১৩শ শতিকাৰ প্ৰাক্-অসমীয়া লিপি যুগতে ঞ-ই আধুনিক ৰূপ লৈছে।

ট :- গাতে লিখা বৰ ফলা ট-ৰ ওপৰত শুঁৰ লগোৱা ৰূপটো প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিৰ যুগতো চলি থাকে।

ঠ :- ১২ শ -১৩শ শতিকাত ইয়াৰ ৰূপ সৰু বৃত্ত এটাৰ দৰে। ইয়াৰ পাচৰ অৱস্থাত এই বৃত্তৰ ৰূপ কঁঠাল গুটিৰ দৰে দীঘলীয়া হয়।

ড :- প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিত দেৱনাগৰী ড-ৰ আকাৰৰ আখৰটোৱে প্ৰাচীন অসমীয়া লিপিৰ যুগত আধুনিক ৰূপ লয়।

ঢ :- ইয়াৰ ৰূপ বহু পৰিমাণে দেৱনাগৰী ঢ-ৰ সৈতে মিলিছিল। একে ৰূপতে ১৪শ-১৫শ শতিকাতো আখৰটো থাকি যায়।

ণ :- প্ৰাক্-অসমীয়া লিপি আৰু প্ৰাচীন অসমীয়া লিপি যুগত ণ-টো মাত্ৰাহীন ল-ৰ ৰূপত পোৱা যায়।

ত :- পিঠিত ৰছি লগাই শিং দুটা তল কৰি মাত্ৰাত ওলোমাই থোৱা ত-ই ১৪শ-১৫শ শতিকাত আধুনিক ৰূপ লবলৈ ধৰে।

থ :- দুয়োটা যুগতে ইয়াক নতুনকৈ আধুনিক ৰূপ লোৱা গঢ়ত পোৱা যায়।

দ :- ১২শ-১৩শ শতিকাতে দ-ই আধুনিক ৰূপ লৈছে।

ধ :- ১২শ-১৩শ শতিকাত ইয়াৰ এটা ৰূপ আছিল মাত্ৰাহীন য-ৰ দৰে। ১৪শ-১৫ শ শতিকাত ধ-ই বৰ্তমানৰ ৰূপ লয়।

ন :- প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিত ন-ক ওপৰলৈ শুঁৰ দঙা ৰূপত পোৱা যায়। পৰৱৰ্তী যুগত ই আধুনিক ৰূপ লয়।

প :- প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিত প-ৰ মাত্ৰাৰ ফালৰ অংশটো অসম্পূৰ্ণ আছিল। ইয়াৰ পৰৱৰ্তী যুগত অসম্পূৰ্ণ অংশটো পূৰ্ণ হৈ আধুনিক ৰূপ লয়।

ফ :- প্ৰাক্-অসমীয়া যুগতে ফ-ই আধুনিক ৰূপ লবলৈ আৰম্ভ কৰে।

ব :- ১২শ-১৩শ শতিকাত থিয় অথচ পেটুৱা ব-ই ১৪শ-১৫শ শতিকাত তিনিকুণীয়া ৰূপ লয়।

ভ :- ১২শ-১৩শ শতিকাত ভ-ৰ ৰূপ কুঁজা দেৱনাগৰী ড-ৰ দৰে আছিল। প্ৰাচীন অসমীয়া লিপিটো এই ভ ৰক্ষিত হৈছিল। কিন্তু ইয়াৰ সমান্তৰালভাৱে মাত্ৰাত

মূৰ লগাই থোৱা ভ-ৰ বিকাশ হয়।

ম :- নেজ লগা চতুৰ্ভুজ আকাৰৰ ম পৰৱৰ্তী যুগত ৰক্ষিত হয় যদিও ই প্ৰায় আধুনিক ম-ৰ ওচৰ চাপিবলৈ ধৰে।

য :- প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিতে য-ই আধুনিক ৰূপ লব ধৰিছে।

ৰ :- ১২শ-১৩শ শতিকাৰ দুডলীয়া ৰ পৰৱৰ্তী যুগত আধুনিক ৰূপ লয়।

ল :- প্ৰাক্-অসমীয়া যুগৰ আধুনিক ৰূপ লবলৈ ধৰা ল-ই পৰৱৰ্তী যুগত সম্পূৰ্ণ আধুনিক ৰূপ লয়।

ৱ :- প্ৰাক্-অসমীয়া যুগৰ ব- আৰু ৱ-ৰ মাজত পাৰ্থক্য নাছিল। মাত্ৰ ৱ-টো কিছু পৰিমাণে ভাঁজ লগা আছিল।

শ :- ওপৰলৈ শুঁৰ মেলা মাত্ৰাহীন ল- ৰ আকাৰৰ শ— এই যুগৰ পাচতো এই ৰূপতে থাকি যায়।

ষ :- প্ৰাক্-অসমীয়া লিপিৰ যুগত ষ-ই আধুনিক ৰূপ লয়।

স :- সমুখৰ ফালৰ বাঢ়ি যোৱা ঠেংটো যথেষ্ট বহল হৈ যোৱা স- পৰৱৰ্তী যুগতো একে ৰূপতে থাকি যায়।

হ :- শুঁৰহীন ঙ্গ- ৰ দৰে হ-ই ১৪শ-১৫শ শতিকাত আধুনিক ৰূপ লয়।

এই সময়ছোৱাত ড, ঢ, য়, ৎ, এই আখৰকেইটা বিকশিত হয় বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। কিন্তু এই সময়ছোৱাত অসমীয়া ভাষাত লিখা কোনো তামৰ বা শিলৰ ফলি উদ্ধাৰ নোহোৱাত এই আখৰকেইটা পোৱা নগ'ল। সংস্কৃতত এই আখৰকেইটাৰ ব্যৱহাৰ নাই। সেই সংখ্যাবাচক আখৰকেইটাও কোনো ফলিত পোৱা নাযায়। তামৰ ফলি আদিত সংখ্যাবোৰ শব্দেৰে লিখা আছিল।

স্বৰচিহ্নবোৰৰ বিকাশৰ ধাৰাৰ বিষয়ে তলত আলোচনা কৰা হ'ল :-

১ - কাৰ :- ১২শ-১৩শ শতিকাৰ প্ৰাক্- অসমীয়া লিপি আৰু ১৪শ-১৫শ শতিকাৰ প্ৰাচীন অসমীয়া লিপিত ১- কাৰ ডাল তুলনামূলকভাৱে আখৰটোতকৈ চুটি হৈ থকা দেখা যায়।

২ - কাৰ :- মাত্ৰাৰ পৰা সোঁহাতে তললৈ নামি অহা ক্ৰিয়াৰে মাত্ৰাৰ সৈতে থকা সংযোগ এই সময়ছোৱাত এৰিব পৰা নাই।

৩ - কাৰ :- মাত্ৰাৰ পৰা সোঁহাতৰ তললৈ নামি যোৱা ৩-কাৰে মাত্ৰাৰ সৈতে থকা সংযোগ এৰা নাই।

৪ - কাৰ :- কোনো কোনো ফলিত আখৰটোৰ তলৰ ক্ষুদ্ৰ বৃত্ত আকাৰে দেখা পোৱা যায় যদিও আধুনিক ৫ - কাৰৰ ৰূপৰ এই সময়ছোৱাতে বিকাশ ঘটিছে।

৬ - কাৰ :- কোনো কোনো ফলিত আখৰৰ তলত কাটকুট চিনৰ দৰে লিখা

দেখা পোৱা যায়। কিন্তু ১৪শ-১৫শ শতিকাৰ ফলিবোৰত ক্ষুদ্ৰ বৃত্তটোৰ এফাল ৰূপত লিখা দেখা যায়।

২- কাৰ :- এই সময়ছোৱাত ইয়াক কেতিয়াবা আখৰটোৰ তলতে লগাই দিয়া হসন্ত চিহ্ন ৰূপে পোৱা যায়। ১৪শ-১৫শ শতিকাৰ ফলিবোৰত আখৰটোৰ ঠিক তলতে লগাই দিয়া ধাতুৰ চিহ্ন ৰূপত পোৱা যায়।

৩- কাৰ :- এই সময়ছোৱাত ৩- কাৰৰ পূৰ্ণ বিকাশ ঘটিছে।

৪- কাৰ :- এই সময়ছোৱাত ৪- কাৰ ৩- কাৰৰ ওপৰতে শুঁৰ লগাই লিখা নহৈছিল। ৫- কাৰ যুক্ত আখৰটোৰ মাত্ৰাত শুঁৰ এডাল লগাই দি লিখা হৈছিল।

৬- কাৰ :- ইয়াৰ বিকাশ ৬- কাৰ আৰু ৭- কাৰৰ বিকাশৰ লগে লগে হৈছে।

৭- কাৰ :- এই সময়ছোৱাত ৭- কাৰৰ বিকাশ পূৰ্ণ ৰূপত হয়।

ইয়াৰ লগতে এই সময়ছোৱাৰ আখৰৰ হাতে অঁকা প্ৰতিকৰূপ সংযোগ কৰি দিয়া হৈছে।

— বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকা

সহায়ক গ্ৰন্থঃ

- (১) সৰ্বেশ্বৰ কটকী, *অসমীয়া প্ৰাচীন লিপি*, ১৯৩৬
- (২) ডঃ উপেন্দ্ৰ নাথ গোস্বামী, *অসমীয়া লিপি*, ১৯৮৭
- (৩) ডঃ মহেশ্বৰ নেওগ, (সম্পা), *প্ৰাচ্য শাসনাৱলী*, ১৯৭৪
- (৪) R.D. Banerji, *The Origin of the Bengali Script*, 1973.
- (৫) পদ্মনাথ ভট্টাচাৰ্য (সম্পা), *কামৰূপ শাসনাৱলী* ১৩৩৮ বঙ্গাব্দ = ১৯৩২
- (৬) Dr T. P. Verma, *Development of Script in Ancient Kāmarūpa*, 1976.
- (৭) Dr. Dimbeswar Sarma (ed.), *Kāmarūpāśāsnāvalī*, 1981
- (৮) Dr. Mukunda Madhava Sharma (ed.), *Inscriptions of Ancient Assam*, 1978
- (৯) Dr. D. C Sircar (ed.), *Some Epigraphic Records of the Medieval Period Eastern India*, 1979.
- (১০) বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকা, 'অসমীয়া লিপি আৰু ভাষাৰ ক্ৰমবিকাশ', *অসম গৌৰৱ* ত সঙ্কলিত, ১৯৭৮
- (১১) *অসমীয়া ভাষাৰ উৎপত্তি আৰু ক্ৰমবিকাশ*, ১৯৮৮

৩। প্রাক-অসমীয়া লিপি (১২ শ ১৩ শ শতিকা)

[illegible]

৪। প্রাচীন অসমীয়া লিপি (১৪ য় ১৫ শ শতিকা)

अ/अ	आ/आ	इ	ई
उ/उ	ए	अः	आः
ऊ	ऐ	अः	आः
क	ख	ग	घ
ख	ख	ग	घ
ग/ग	ङ	ज	झ
घ	ङ	ज	झ
ङ	०/०	ड	ढ
च	०	ड	ढ
उ/उ	च	प	फ
च	च	प	फ
प/प	...	ब/ब	भ/भ
प	...	ब	भ
य/य	ब/ब	ल/ल	व
य	ब	ल	व
म	ब	म/म	न/न
म	ब	म	न
न	कि	नी	नू
न	कि	नी	नू
न	कि	नी	नू
न	कि	नी	नू

৩। প্রাক-অসমীয়া লিপি (১২ নং ১৩ নং শতিকা)

অ	আ	ই	উ	ঊ
ঋ	৐	ঋ	৐	ঋ
ঋ	৐	ঋ	৐	ঋ
ঋ	৐	ঋ	৐	ঋ
ঋ	৐	ঋ	৐	ঋ
ক	খ	গ	ঘ	ঙ
ক	খ	গ	ঘ	ঙ
চ	ছ	জ	ঝ	ঞ
চ	ছ	জ	ঝ	ঞ
ট	ঠ	ড	ঢ	ণ
ট	ঠ	ড	ঢ	ণ
ত	থ	দ	ধ	ন
ত	থ	দ	ধ	ন
প	ফ	ব	ভ	ম
প	ফ	ব	ভ	ম
য/য়	র/ৱ	ল	ৱ	শ
য	ৱ	ল	ৱ	শ
স/ল	ষ/ষ	শ	ষ	ষ
স	ষ	শ	ষ	ষ
হ	কি	কি	কি	কি
হ	কি	কি	কি	কি
হ	কি	কি	কি	কি

৪। প্রাচীন অসমীয়া লিপি (১৪ য় ১৫ নং শতিকা)

अ/इ	आ/अ	ऊ/उ	का/क
अ	आ	ऊ	का
उ/उ	ए	प्रः	प्रः
उ	ए	प्रः	प्रः
क	ख	ग	घ
क	ख	ग	घ
ग/ग	क	ज	झ
ग	क	ज	झ
द	०/०	ड	ढ
द	०	ड	ढ
उ/उ	च	फ	न/न
उ	च	फ	न
ग/ग	...	य/य	य/य
ग	...	य	य
य/य	ब/ब	ल/ल	ल/ल
य	ब	ल	ल
म	ब	म/म	उ/उ
म	ब	म	उ
का	कि	की	कु
का	कि	की	कु
क	के	के	का
क	के	के	का

ষষ্ঠ অধ্যায়

মৌখিক সাহিত্য

আৰম্ভণি

অসমত সাহিত্য চৰ্চা কেতিয়া আৰম্ভ হয়, খাটংকৈ কোৱা টান। দশম শতিকাৰ পৰা ভাৰতীয় আৰ্যভাষাবোৰৰ প্ৰাদেশিক ৰূপ নব্য ভাৰতীয় আৰ্যভাষাবোৰৰ উদ্ভৱ হয়। নব্য ভাৰতীয় আৰ্যভাষা হিচাপে অসমীয়া ভাষা দশম শতিকাৰ পাচৰ পৰা প্ৰাচীন কামৰূপ বা অসমত উদ্ভৱ হৈছিল।

দশম শতিকাৰ আগৰ কালত অসমত সাহিত্য ৰচনা হোৱা তথ্য পোৱা যায়। সেই সাহিত্যৰ ভাষা সংস্কৃত আছিল যেন লাগে। প্ৰাচীন অসমত সাহিত্য চৰ্চা থকাৰ প্ৰথম উল্লেখ পোৱা যায় হৰ্ষবৰ্ধনৰ (৬০৬-৪৭) ৰাজকবি বাণভট্টই লিখা *হৰ্ষচৰিত*ত। এই গ্ৰন্থমতে ভাস্কৰবৰ্মাই (৫৯৪-৬৫০) হৰ্ষবৰ্ধনলৈ পঠোৱা উপহাৰৰ ভিতৰত সাঁচিপাতত লিখা সুভাষিতেৰে বা নীতি-বচনেৰে ভৰা কেইবাখনো পুথি (অণ্ডক বঙ্কল-কল্পিত-সঞ্চয়ানি চ সুভাষিত-ভাজি পুস্তকানি) আছিল। এই সুভাষিতৰ পুথিবোৰ নিশ্চয় কামৰূপতে ৰচনা কৰা হৈছিল। নহলে আৰ্য্যৱৰ্তত ৰচনা কৰা পুথি আৰ্য্যৱৰ্তলৈ পঠোৱাৰ কোনো কাৰণ থাকিব নোৱাৰে।

পাল বংশৰ ৰজা ইন্দ্ৰপালৰ (১০৪০-৬৫) মতে তেওঁৰ পিতাক পুৰন্দৰপাল “শুৰশ্চ সুকবিশ্চ”, অৰ্থাৎ বীৰ আৰু সুকবি আছিল। সংস্কৃত ভাষাৰ প্ৰথম সুভাষিত সংগ্ৰহ *কবীন্দ্র-ৰচন-সমুচ্চয়*ত পাল বংশৰ ৰজা হৰ্ষপালৰ (১০৮৫-৯৫) কেইবাটাও সুভাষিত শ্লোক সঙ্কলিত হৈছে। ধৰ্মপালৰ (১০৯৫-১১২০) পুষ্পভদ্ৰা তামৰ ফলিত তেওঁ নিজকে পাল বংশৰ পদুমবোৰৰ ভিতৰত সূৰ্য আৰু কবি চক্ৰবালৰ চূড়ামণি বুলি ঘোষণা কৰিছে। লগতে তেওঁ উক্ত ফলিৰ এই শ্লোকখিনি তেওঁ ৰচনা কৰিছে বুলি ঘোষণা কৰিছে (শ্ৰীধৰ্মপালনৃপতি... এতান্ প্ৰশস্তিং অকৰোং)। শ্ৰীধৰ দাসে ১২০৫ত সংগ্ৰহ কৰি সঙ্কলন কৰা *সদুক্তি-কৰ্ণামৃত*ত তেওঁ ৰচনা কৰা ১০টা সুভাষিত সন্নিবিষ্ট কৰা হৈছে।

সুভাষিত সাহিত্যৰ ভাষা আছিল সংস্কৃত। অন্যান্য নব্য ভাৰতীয় আৰ্য-ভাষাবোৰৰ দৰে ত্ৰিষ্টাৰ্প দশম শতিকাৰ পাচত অসমীয়া ভাষাৰ উদ্ভৱ হলেও কোনেও এই ভাষাত সাহিত্য ৰচনা কৰিবলৈ চেষ্টা কৰা নাছিল। অমৰসিংহৰ *নামলিঙ্গানুশাসন*ৰ বন্দ্যঘটীয়া সৰ্বানন্দই ১০৮১ শকাব্দ বা ১১৫৯ খ্ৰিষ্টাব্দত ৰচনা কৰা *টীকাসৰ্বস্বত* খোট (চৰাই ঠোটেৰে কৰা আঘাত), চাল (ঘৰৰ চাল), জেঠি (গুঁইৰ আকাৰৰ ঘৰত থকা ক্ষুদ্ৰ জীৱ), ডাউক (ডাউক চৰাই), নেৱালী (ফুল), পেড়া (পেৰা), ফৰিজ (ফৰিং), শৰালি (শৰালি হাঁহ) আদি খাটী অসমীয়া শব্দৰ উপস্থিতিয়ে প্ৰমাণ কৰে যে দ্বাদশ শতিকা বা তাৰ আগতে অসমীয়া ভাষাই বৰ্তমান ৰূপ পাইছে। পৃথিৱীৰ সকলো ভাষাৰে সাহিত্য প্ৰথমে মৌখিক সাহিত্য হিচাপেই আৰম্ভ হয়। সেই ফালৰ পৰা অসমীয়া সাহিত্যও ব্যতিক্ৰম নহয়। কিন্তু মৌখিক সাহিত্যৰ যিবোৰ উদাহৰণ আমি পাইছোঁ, সেইবোৰৰ ভাষা নিশ্চয় সেই সময়ৰ ভাষা হৈ থকা নাই। মানুহৰ মুখ বাগৰি গীতবোৰ আহোঁতে পুৰণি গীতৰ ভাষা, শব্দ-সম্ভাৰ, আন কি প্ৰকাশ-ভঙ্গীও সলনি হৈছে। উদ্ভৱ কালৰ প্ৰাচীনত্বৰ প্ৰতি দৃষ্টি ৰাখি মৌখিক সাহিত্যক প্ৰথমে স্থান দিব লাগিব।

হিন্দু ধৰ্মৰ প্ৰতি দুৰ্বলতা থকা আৰু সংস্কৃত টোলত শিক্ষা গ্ৰহণ কৰা হিন্দু পণ্ডিত কবিসকলৰ সংস্কৃত ভাষাৰ প্ৰতিহে দুৰ্বলতা আছিল। তেওঁলোকে কিবা লিখিবলৈ মন গলে সংস্কৃত ভাষাতে সুভাষিতেই হওক বা ৰজাঘৰীয়া প্ৰশস্তিয়েই লিখি পণ্ডিত সমাজত খ্যাতি পাওক বা নাপাওক, ৰাজ-অনুগ্ৰহ পাইছিল। মাতৃ ভাষাত বা কথিত ভাষাত সাহিত্য ৰচনা কৰিবলৈ পোন-প্ৰথমে সাহস কৰিলে ৰাজ অনুগ্ৰহ বা পণ্ডিতালিৰ স্বীকৃতি নিবিচৰা বজ্জয়ানী সিদ্ধসকলে। এওঁলোকে ৰচনা কৰা চৰ্যাগীতবোৰত সংস্কৃত, প্ৰাকৃত, অপভ্ৰংশ আৰু অসমীয়া ভাষাৰ সংমিশ্ৰণ ঘটিলেও, এই গীতবোৰকে অসমীয়া ভাষাৰ আদি ৰচনা বুলিব পাৰি।

এইদৰে সিদ্ধান্ত লোৱাৰ কেইটামান কাৰণ তলত উল্লেখ কৰা হ'ল:-

১। বজ্জয়ানৰ কেন্দ্ৰ স্থল নেপাল আৰু তিব্বতৰ সৈতে ভৌগোলিকভাৱে কামৰূপৰহে সম্পৰ্ক আছিল। *যোগিনী তন্ত্ৰ* মতে “নেপালস্য কাঞ্চনাদ্ৰিং”, নেপালৰ কাঞ্চনজঙ্ঘা কামৰূপৰ উত্তৰ সীমা আছিল।

২। কলহণৰ *ৰাজতৰঙ্গিণী*ৰ মতে কামৰূপৰ ৰাজকুমাৰী অমৃতপ্ৰভাক কাশ্মীৰৰ ৰজা মেঘবাহনে বিয়া কৰিছিল। কন্যাৰ লগত তিব্বত দেশৰ মহাযানী বৌদ্ধ ধৰ্মৰ গুৰু লো-স্ক্ৰুপাক পঠাইছিল। তেওঁৰ বাবে অমৃতপ্ৰভাই কাশ্মীৰত এটা বৌদ্ধ মঠ সজাইছিল। মেঘবাহনৰ সময় কামৰূপৰ ৰজা বলৰমাৰ (৪০৫-২০) সময়ৰ সৈতে মিলে। ইয়াৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি খ্ৰিষ্টীয় পঞ্চম শতিকাতে কামৰূপত মহাযানী বৌদ্ধ ধৰ্মৰ ৰূপ এটা সোমাইছিল।

৩। হিউৱেন-চাঙৰ মতে ভাস্কৰৰমাৰ ৰাজ্যত বৌদ্ধ ধৰ্মাৱলম্বীসকলে গোপনে প্ৰাৰ্থনা কৰিছিল (such disciples as there are of a pure faith, say their prayers secretly)। ইয়াৰ অৰ্থ, তেওঁৰ ৰাজ্যত গোপনে তান্ত্ৰিক বৌদ্ধ ধৰ্ম প্ৰচলিত আছিল।

৪। মহাযান পন্থাৰ শ্ৰেষ্ঠতা প্ৰতিপন্ন কৰি হিউৱেন-চাঙে লিখা শাস্ত্ৰখন হৰ্ষৱৰ্ধন আৰু ভাস্কৰৰমাৰক পঢ়ি শুনোৱাত সন্তুষ্ট হৈ হৰ্ষৱৰ্ধনে সেই মত প্ৰতিষ্ঠাৰ বাবে ধৰ্মসভা পাতে। ধৰ্মসভাত এই মত শ্ৰেষ্ঠ প্ৰতিপন্ন হোৱাৰ পাচত বুদ্ধদেৱৰ সোণৰ মূৰ্তি আগত লৈ ভাৰতৰ ২০খন ৰাজ্যৰ ৰজাৰে সৈতে কৰা শোভাযাত্ৰাত ব্ৰহ্মাৰ পোচাক পিন্ধি ভাস্কৰৰমাই ইন্দ্ৰৰ পোচাক পিন্ধা হৰ্ষৱৰ্ধনৰ সৈতে সমানে হাতীৰ পিঠিত বহি মূৰ্তি বিচি গৈছিল। ইয়াৰ পৰা প্ৰমাণিত হয়, ভাস্কৰৰমাই মহাযান পন্থাৰ শ্ৰেষ্ঠতাক ৰাজহুৱাকৈ স্বীকৃতি দিছিল।

৫। হিউৱেন-চাঙে দুবছৰৰো অধিক কাল অধ্যয়ন কৰা নালন্দা বিশ্ববিদ্যালয়ত ভাস্কৰৰমাৰ পোৰামাটিৰ চীল আৱিষ্কাৰ হোৱাৰ পৰা প্ৰমাণ হয় মহাযান পন্থাৰ এই বৌদ্ধিক কেন্দ্ৰটোৰ যোগেদি কামৰূপত মহাযান পন্থাৰ প্ৰভাৱ পৰিছিল।

৬। ৱাং-হিউৱেন-চিৰ নেতৃত্বত ৬৪৭ত অহা চীনা শাস্তি দলক হৰ্ষৱৰ্ধনৰ অবৈধ উত্তৰাধিকাৰী অৰ্জুনাস্থই আক্ৰমণ কৰিলত কোনো মতে পলাই গৈ নেপালত আশ্ৰয় লোৱা দলৰ ৱাং-হিউৱেন-চিৰ আহ্বানত তেওঁলোকৰ উদ্ধাৰৰ বাবে সামৰিক সাহায্য দিয়ে। নেপালে ৭ হেজাৰ অশ্বাৰোহী সৈন্য আৰু তিব্বতে এহাজাৰ পদাতিক সৈন্য দিয়ে আৰু ভাস্কৰৰমাই এই সৈন্য বাহিনীৰ সমস্ত ৰচদ-পাতিৰ যোগান ধৰে। মহাযান বৌদ্ধ ধৰ্মৰ প্ৰধান কেন্দ্ৰ নেপাল আৰু তিব্বতৰ সৈতে কামৰূপৰ সম্পৰ্কৰ কথা ইয়াৰ পৰা প্ৰমাণ হয়।

৭। পুৰণি কামৰূপৰ অন্তৰ্গত বৰ্তমান মেঘালয়ৰ বড়গোকুগিৰিত (ভাইতবাৰীত) এটা বৌদ্ধ স্তূপ-আৱিষ্কৃত হৈছে। পুৰাতত্ত্ববিদসকলে ইয়াৰ সময় ৭ম শতিকা বুলি নিৰ্ধাৰণ কৰিছে।

৮। নেপালৰ পশুপতি মন্দিৰৰ ৭৪৮ৰ তামৰ ফলি মতে ৰজা ২য় জয়দেবে কামৰূপৰ ৰজা শ্ৰীহৰ্ষৰ (৭২৫-৫০) জীয়েক ৰাজ্যমতীক বিয়া কৰিছিল।

৯। ডঃ বিনয়তোষ ভট্টাচাৰ্যৰ মতে চৰ্যাগীতিকোষৰ চাৰিটা গীতৰ লিখক সৰহপাদৰ জন্ম পূবৰ দেশ এখনৰ ৰাজ্যী নামে ঠাইত হৈছিল। ভাৰতৰ পূব অঞ্চলত অৱস্থিত কামৰূপৰ ৰাণী নামৰ ঠাইত (ৰাজ্যী > ৰাণী) তেওঁৰ জন্ম হোৱা বুলি ইয়াৰ দ্বাৰা প্ৰমাণিত হয়।

১০। ডঃ সুনীতি কুমাৰ চেটাৰ্জীয়ে তেওঁৰ বঙলা ভাষাৰ উৎপত্তি সম্পৰ্কে গৱেষণা গ্ৰন্থত লিখিছে, “but in pre-Moslem times, Assamese and Bengali were certainly one language” (p.109) ইয়াৰ আগতে তেওঁ লিখিছে, “Now one would expect one and identical language to have been current in North-Central Bengal (Punḍra-Vardhana) and North Bengal and west Assam (Kāma-rūpa) in the 7th century, since these tracts, and other parts of Bengal, had almost the same speech, at least in morphology, in the 15th and 16th centuries, as can be seen from the extant remains in Bengali and Assamese.” (p. 79.) ইয়াৰ পৰা কব পাৰি ডঃ চেটাৰ্জীৰ মতে ৭ম শতিকাৰ পৰা ১৫শ-১৬শ শতিকালৈ অসমীয়া আৰু বঙলা একেটা ভাষা আছিল। সেই একেটা ভাষাতে চৰ্যাগীত আৰু অন্যান্য সাহিত্য এই সময়ছোৱাত ৰচিত হৈছিল।

এই কাৰণেই আলোচিত সময়ছোৱাৰ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী তলত দিয়াৰ দৰে ভাগ কৰা হৈছে :-

৬। যুগ-নিৰপেক্ষ সাহিত্য

(ক) মৌখিক সাহিত্য

(খ) সাধু কথা

(গ) ফকৰা-যোজনা (প্ৰবচন)

(ঘ) ডাকৰ বচন

(ঙ) মন্ত্ৰ সাহিত্য

৭। আদি যুগৰ কবিসকল

(ক) চৰ্যাগীত

(খ) গোপীচন্দ্ৰৰ গান

(গ) ৰামাই পণ্ডিতৰ শূন্যপূৰাণ

(ঘ) চণ্ডীদাসৰ শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তন

৮। প্ৰাক্ শঙ্কৰী যুগৰ কবিসকল

(ক) হেম সৰস্বতীৰ প্ৰহ্লাদ চৰিত আৰু হৰ-গৌৰী সংবাদ

(খ) হৰিহৰ বিপ্ৰৰ লৱ-কুশৰ যুদ্ধ, বৰ্জবাহনৰ যুদ্ধ আৰু তাম্ৰধ্বজৰ
যুদ্ধ

(গ) কবিরত্ন সৰস্বতীৰ জয়দ্ৰথ বধ

(ঘ) ৰুদ্ৰ কন্দলীৰ সাত্যকি প্ৰৱেশ

(ঙ) মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণ আৰু দেৱজিৎ।

ষষ্ঠ অধ্যায়

মৌখিক সাহিত্য

(ক)

লোকসংস্কৃতিৰ অন্যতম অঙ্গ লোকসাহিত্য বা বাচিক কলা পৰম্পৰাগত কলা, পুৰুষানুক্ৰমে মুখে মুখে চলি আহি থাকে; ইয়াত লেখকৰ নাম-ধাম পোৱা নাযায়। সেইবাবে লোক সাহিত্য বা বাচিক কলা নৈৰ্ব্যক্তিক, সমাজসচেতন আৰু পৰিৱৰ্তনশীল। এই কাৰণে একেটা গীতৰে বিভিন্ন পাঠ লক্ষ্য কৰা যায়। গীতিমাধুৰ্য লোক-সাহিত্যৰ প্ৰয়োজনীয় বৈশিষ্ট্য। মৌখিক পৰম্পৰা আৰু মৌখিক সাহিত্য তথা বাচিক কলাৰ মাজত অনেক ক্ষেত্ৰত মিল থাকিলেও উভয়ৰ মাজত বৈপৰীত্য আছে। মৌখিক সাহিত্যই প্ৰায়ে লিখিত সাহিত্যৰ পৰম্পৰাত প্ৰৱেশ কৰিব পাৰে, তেনেদৰে লিখিত সাহিত্যয়ো মৌখিক পৰম্পৰাত প্ৰৱেশ কৰিব পাৰে। গতিকে লিখিত সাহিত্য আৰু মৌখিক সাহিত্যৰ মাজত সততে অন্যান্যক্ৰিয়া সম্পাদিত হয়। এই বিধ লোকসংস্কৃতিৰ উদ্ভৱ সম্পৰ্কে সুনিৰ্দিষ্ট সময় সীমা নিৰ্দেশ কৰিব নোৱাৰি বাবে ইয়াক যুগনিৰপেক্ষ ৰচনা বোলা হয়।

মৌখিক সাহিত্য, লোকসাহিত্য, অলিখিত সাহিত্য, বাচিক কলা আদি স্বৰূপে জনাজাত পৰম্পৰাগত কৃতি বা কলাক সাধাৰণভাৱে কেইটিমান উপ-ভাগত বিভক্ত কৰিব পাৰি ; যেনে :

- (ক) জাতিগত শ্ৰেণী বিভাজন (Ethnic Genres)
- (খ) তাত্ত্বিকভাৱে কৰা শ্ৰেণী বিভাজন (Analytical Categories)
- (গ) আঞ্চলিক শ্ৰেণী বিভাজন (Regional Classifications)
- (ঘ) প্ৰকাৰ্যাত্মক শ্ৰেণী বিভাজন (Functional Categories)
- (ঙ) বিষয়বস্তুগত শ্ৰেণী বিভাজন (Thematic Classifications) ইত্যাদি।
- (ক) জাতিগত শ্ৰেণী বিভাজন : সাংস্কৃতিক পদ্ধতিৰে বাচিক কলাক অভিজ্ঞাপন কৰাই জাতিগত শ্ৰেণীবিভাজনৰ মূল লক্ষ্য। প্ৰত্যেকটো জাতি বা

নৃগোষ্ঠীৰ মাজতে লোকসাহিত্যৰ বিভিন্ন শ্ৰেণীক সূচাবৰ বাবে বিভিন্ন পদ বা পৰিভাষা প্ৰয়োগ কৰা হয়। যেনে : গীত, পদ, নাম, বৰদৈগীত, সাধুকথা, সাজোকথা, উককথা, উপকথা, গোসাঁইকথা, কিচা, কাহিনী, কাহেনী, প্ৰবাদমূলক সাধু, জনশ্ৰুতি বা জনশ্ৰুতিমূলক সাধু, কিস্বদন্তীৰ সাধু, বচন, প্ৰবচন, যোজোনা, যোজনা, প্ৰবাদ, ফকৰা, দিস্তান, সাঁথৰ ইত্যাদি।

(খ) তাত্ত্বিক শ্ৰেণী বিভাজন : আন্তৰ্জাতিক শ্ৰেণী বিভাজনৰ প্ৰতি দৃষ্টি ৰাখি বাচিক কলাৰ বিভিন্ন উপাদান বিভিন্ন শ্ৰেণীত ভাগ কৰা পদ্ধতিৰ নাম তাত্ত্বিক শ্ৰেণী বিভাজন। তাত্ত্বিক কলাৰ লক্ষ্য বাচিক কলাৰ পাঠৰ (text) সুসংবদ্ধ সংগঠনৰ আৰ্হি প্ৰদৰ্শন। তাত্ত্বিক শ্ৰেণী বিভাজনৰ আৰ্হি অনুসৰি বাচিক কলাৰ পাঠ তলত দিয়াৰ দৰে শ্ৰেণী বিভাজন কৰিব পাৰি ; যেনে :

(১) লোকগীত, (২) গদ্যধৰ্মী লোককথা, (৩) প্ৰবচন, সাঁথৰ আৰু (৪) লোকভাষা।

(১) লোকগীত (ক) বেলেঙ বা মালিতা, (খ) ধৰ্মীয় গীত, (গ) প্ৰণয়গীত, (ঘ) কৰ্মগীত, (ঙ) উৎসৱ-অনুষ্ঠানৰ সৈতে জড়িত গীত, (চ) তত্ত্বপূৰ্ণ গীত (ছ) চিকাৰ আদিৰ লগত জড়িত গীত, (জ) বিদ্ৰূপাত্মক গীত, (ঝ) কেঁচুৱা ল'ৰা-ছোৱালীৰ লগত জড়িত গীত-টোপনি নিওৱা গীত (lullabies), নিচুকনি গীত (nursery rhymes)— শিশুৰ খেল-ধেমালিৰ লগত জড়িত গীত (children game songs)।

অসমীয়া লোকসাহিত্যৰ বিবিধ সমলৰাজি ওপৰোক্তাৰ পদ্ধতিৰে শ্ৰেণী-বিভাজন কৰিব পাৰি।

(ক) লোকগীত : লোকগীত অভিধাটো কিম্বৎ খোঁকোজা লগা; যিহেতু আজি-কালি দোতাৰাৰ লগত গোৱা গীতখিনিকহে মানুহে লোকগীত বোলে। দ্বিতীয়তে, গীত বুলি কোৱাৰ লগে লগে নৃত্য আৰু বাদ্যৰ কথাও মনলৈ আহে। লোক পৰিবেশ্য নামৰ আন এটা শাখাতো গীত-সঙ্গীত-নৃত্য আদিৰ বিষয়ে আলোচনা কৰা হয়। গতিকে বাচিক কলাৰ প্ৰসঙ্গত গীত বুলি নকৈ কবিতা বুলি কোৱাহে উচিত। কবিতাও আকৌ লিখিত সাহিত্যৰ সৈতে নিবিড়ভাৱে সম্পৰ্কযুক্ত। সেই লোকগীতৰ পৰিসীমাই যিহেতু কবিতা আৰু সঙ্গীত উভয়কে সামৰে গতিকে সঙ্গীত-বিহীন (গীত-বাদ্য-নৃত্য) লোকগীতক লোক কবিতা বা মৌখিক কবিতা আখ্যা দিয়াই ভাল। অন্য হাতে লোক কবিতাৰ স্থায়িত্ব আৰু জনপ্ৰিয়তা বিশেষভাৱে নিৰ্ভৰ কৰে লোকসমাজত, লোকসমাজে এই বিধ বাচিক কলাৰ ওপৰত গুৰুত্ব

দিয়ে ইয়াৰ সাজীতিক লয়ৰ বাবে— সেই বাবেই এইবিধ লোকসাহিত্য গেয় (sung)। তেনে অৱস্থাত এই বিধ বাচিক কলাক আমি লোকগীত বুলিবই লাগিব।

লোকগীতৰ অন্যতম উপশ্ৰেণী বেলেড অসমীয়া ভাষাত কাহিনীগীত বা মালিতা স্বৰূপে পৰিচিত। বেণুধৰ শৰ্মাই ‘বৰতী গীত,’ অভিধাটো ব্যৱহাৰ কৰিছিল বেলেডক সূচাবৰ বাবে। পিচে এই অভিধাটো জনপ্ৰিয় নহ’ল। পশ্চিম অসমত গীত, পদ আদি ৰূপেও এই বিধ বাচিক কলা জনাজাত। বেলেডৰ প্ৰতিশব্দ স্বৰূপে গাঁথা পদটোৰো ব্যৱহাৰ নথকা নহয়।

বেলেড বা মালিতা কাক বোলে? বেলেড বা মালিতা বৰ্ণনাত্মক মৌখিক গীত। ইয়াৰ প্ৰধান বৈশিষ্ট্যসমূহ - (ক) বেলেড বৰ্ণনামূলক, অৰ্থাৎ ই কাহিনী-প্ৰধান। (খ) বেলেড বা মালিতা গেয়, অৰ্থাৎ এই বিধ গীত সুৰ লগাই গোৱা হয়। (গ) কথাবস্তু, শৈলী আৰু (ঙ) নাম বা আখ্যাৰ ফালৰ পৰা বেলেড বা মালিতা লোকসমাজৰ সৈতে জড়িত। (ঘ) বেলেড বা মালিতাত একক ঘটনাৰ বৰ্ণনাহে পোৱা যায়। (ঙ) বেলেড বা মালিতা নৈৰ্ব্যক্তিক অৰ্থাৎ বস্তুনিষ্ঠ; ঘটনাৰ গতি, কাহিনী, কথোপকথন আদিৰ সহায়ত ই ক্ষিপ্ৰ গতিত উপসংহাৰৰ ফালে গতি কৰে।’

বেলেড বা মালিতা মুখ্যতঃ কাহিনী। সাধুকথা বা লোককথাতো কাহিনী থাকে। মালিতাৰ কাহিনী বৰ্ণিত হয় পদ্যৰূপত বা ‘পদবন্ধে’। অন্য হাতে লোক কথাৰ কাহিনী বৰ্ণিত হয় গদ্য ৰূপত বা ‘কথাবন্ধে’। মালিতা গেয়, অন্য হাতে লোককথা কথিত (told)। কাহিনী প্ৰবাহ, চৰিত্ৰ, পৰিৱেশ আৰু কথাবস্তুৰ স্থিতি, কাহিনী-প্ৰধান বাচিক কলাত লক্ষ্য কৰা যায়। মালিতাত এই চাৰিটা বৈশিষ্ট্যৰ ভিতৰত কাহিনী প্ৰবাহত তুলনামূলকভাৱে অধিক গুৰুত্ব দিয়া হয়। পৰিৱেশৰ বৰ্ণনা আকস্মিক, কথাবস্তু অপৰিহাৰ্য, মালিতাৰ চৰিত্ৰবোৰ প্ৰায়ে নিৰ্ধাৰিত গঢ়ৰ (type)। ইয়াৰ কাহিনী-প্ৰবাহ নাটকীয় গুণসম্পন্ন। বাদ্যযন্ত্ৰ সঙ্গত কৰি নৃত্যসহ মালিতা গোৱা হয়। কাহিনী আৰু সুৰৰ ভিতৰত বেলেডত প্ৰাধান্য লাভ কৰে কাহিনী বা কথাবস্তুৰে।

মালিতা লোকসমাজৰ সৃষ্টি হলেও এই বিধ বাচিক কলা আদিম সমাজৰ সৃষ্টি নহয়; যিহেতু মালিতাবোৰ মাজিত ৰুচি আৰু সাহিত্যিক চেতনাসম্পন্ন কবিৰ সৃষ্টি যেনহে লাগে। মৌখিক মালিতাই লিখিত সাহিত্য পৰম্পৰাত প্ৰৱেশ কৰে। সুদীৰ্ঘ মালিতা-পৰম্পৰা, সচেতন আৰু মাজিত সংস্কৃতিৰ দ্বাৰা অনুবদ্ধিত হ’ব পাৰে। লোক-জীৱনৰ পটভূমিত মালিতাবোৰ ৰচিত হোৱা বাবে এইবিধ কলাত

লোকজীৱনত প্ৰচলিত পুৰাণ কথা (myth), জনশ্ৰুতিমূলক কথা, স্থানীয় ইতিহাস, ৰীতি-নীতি, আচাৰ-ব্যৱহাৰ আদিৰ প্ৰতিফলন হোৱা স্বাভাৱিক। বেলেডত চুটি গল্পৰ দৰে একক ঘটনাইহে স্থান লাভ কৰে। গতিকে সাধুকথা বা লোককাব্য বা লোকমহাকাব্যৰ দৰে একাধিক ঘটনাৰ বৰ্ণনা বেলেডত প্ৰায়ে লক্ষ্য কৰা নাযায়।

ওপৰোল্লিখিত বৈশিষ্ট্যসমূহৰ বাহিৰেও মালিতাৰ আৰু কেইটিমান বৈশিষ্ট্য লক্ষ্য কৰা যায় ; যেনে (ক) দিহা বা ঘোষা, (খ) পদ বা পদাংশৰ পৌনঃপুনিকতা (গ) পূৰ্ণ স্তৱকৰ পৌনঃপুনিকতা, (ঘ) বৃদ্ধিগত পৌনঃপুনিকতা (ঙ) পদ্য ৰূপৰ প্ৰাধান্য, (চ) মঙ্গলাচৰণ আৰু (ছ) বিভিন্ন অংশত বিভাজন।

মালিতাৰ শ্ৰেণী বিভাজন :

মালিতাৰ কথাবস্তু বা কাহিনীৰ বিষয়বস্তু অনুসৰি এই বিধ বাচিক কলাক কেইটিমান শ্ৰেণীত বিভক্ত কৰিব পাৰি ; যেনে :—

(ক) পুৰাণগত মালিতা (Mythical ballad)

(খ) নৈদানিক মালিতা (Etiological ballad)

(গ) ঐতিহাসিক মালিতা (Historical ballad)

(ঘ) জনশ্ৰুতিমূলক মালিতা (Legendary ballad)

(ঙ) যাদুমূলক বা বিস্ময়াৱহ বা অলৌকিক মালিতা (Magical or Wornderous or Supernatural ballad),

(চ) ব্যঙ্গাত্মক মালিতা (Satirical ballad)

(ছ) বাস্তৱানুগ মালিতা (Realistic ballad)

ইয়াৰ বাহিৰেও ‘বাৰমাহী গীত’কো মালিতাৰ শ্ৰেণীত সামৰিব পাৰি ; যিহেতু এইবিধ গীততো কাহিনী একোটি বা কাহিনীৰ আভাস থাকে।

(ক) পুৰাণগত মালিতা : পুৰাণগত মালিতাক অতিকথা জাতীয় মালিতাও বুলিব পাৰি। এই বিধ মালিতাৰ কথাবস্তু বা কাহিনী মিথধৰ্মী। সাধাৰণতে মিথধৰ্মী কাহিনীত দূৰ অতীতৰ কাহিনী এটি বৰ্ণিত হয়। ইয়াৰ প্ৰধান চৰিত্ৰবোৰ মানুহ নহয়, অতিমানৱহে। পুৰাণগত মালিতাৰ কাহিনীভাগ পৱিত্ৰ আৰু বিশ্বাসযোগ্য বুলি বিবেচনা কৰা হয়। এই বিধ মালিতাৰ কাহিনীত এনে এখন জগতৰ বৰ্ণনা দিয়া হয়, যিখন জগত আমাৰ জগততকৈ সম্পূৰ্ণ বেলেগ। পুৰাণগত মালিতাবোৰ প্ৰায়ে ধৰ্মীয় অনুৰক্ত সৈতে জড়িত। অনেক ক্ষেত্ৰত পুৰাণগত মালিতাই কোনো এটা ধৰ্মীয় কৃত্যৰ চনদ, হুকুমনামা আৰু পথপঞ্জী স্বৰূপে কৰ্ম সম্পাদান কৰে। জগৎসৃষ্টিৰ

বর্ণনা, ধৰ্মীয় কৃত্য আৰু ইয়াৰ লগত জড়িত সমলৰাজিৰ উৎপত্তিৰ বিষয়ে এইবিধ মালিতাত পোৱা যায়।

পুৰাণগত মালিতাৰ প্ৰচলন অসমীয়া ভাষাত নাই বুলি কোনো কোনো পণ্ডিতে কব খোজে ; যদিও এই অনুমান সম্পূৰ্ণ সত্য নহয়। যিহেতু মৌখিক পৰম্পৰাত প্ৰচলিত কিছুমান কাহিনী গীতত জগৎসৃষ্টিৰ বৰ্ণনা, শিৱ-মহাদেৱ, কুবেৰ, বিষ্ণু আদি দেৱতা, দুৰ্গা, পদ্মাৱতী, শীতলা, নেতা, শুভাচেনী আদি দেৱীৰ উৎপত্তিৰ বৰ্ণনা পোৱা যায়। এই মালিতাবোৰ মনসা-পূজা বা বিষহৰি পূজা, শীতলা-পূজা আদি বিবিধ ধৰ্মীয় অনুষ্ঠিত ওজাপালিৰ নিচিনা পৰিৱেশ্য কলাই বাদ্যযন্ত্ৰ সহ আবৃত্তি কৰে। আই নামত গায়িকাসকলে আইৰ জন্মমূলকৈ কাহিনী-বিশিষ্ট গীত, অৰ্থাৎ মালিতা আবৃত্তি কৰে। বাসুদেৱ পূজা বা সভাৰ প্ৰসঙ্গত ব্যাস ওজাপালিৰ ওজা আৰু পালিয়ে তালযন্ত্ৰ বজাই জগৎসৃষ্টি, দেৱ-দেৱীসকলৰ জন্ম, ৰভাৰ জন্ম, আম গছ, ঘিঁউ আদিৰ জন্ম সম্পৰ্কীয় মৌখিক মালিতা আবৃত্তি কৰে। এই জাতীয় বেলেড বা মালিতাবিলাকেই পুৰাণগত মালিতা। আই-নামৰ অনুষ্ঠিত আবৃত্তি আইৰ জন্ম বিষয়ক মালিতা এটিৰ কিয়দংশ তলত দিয়া হ'ল উদাহৰণ স্বৰূপে ; যেনে :

বহাগৰ মাহতে আই ঋতুস্নান হৈলা।
 চতৰ মাহতে আই মোৰ গৰ্ভে স্থিতি ভৈলা।।
 দশমাহ দহ দিন গৰ্ভে দিলা ঠাই।
 উপজিবৰ বেলা মাই বৰ দুঃখ পাই।।
 আই উপজিবৰ দিনা বাপেক ঘৰত নাই।
 আই উপজিবৰ খবৰ পিতাকে বাটত পায়।।
 পাঁচ দিনৰ দিনা আই মোৰ পচতি কৰিলা।
 দহ দিনৰ দিনা আই মাই থিয় দঙা দিলা।।
 মাহ দিনৰ দিনা আই সিনানক গৈলা।
 ডাকিলাক ৰথখানি গগনে উৰাইলা।।
 নিমিষতে আই যাই যমুনাৰ পাৰ পাইলা।
 পাতা হেন পানীতে পাতা পাখালিলা।।
 ডিমা হেন পানীতে ডিমা পাখালিলা।
 উৰত হেন পানীতে আই মোৰ ফেৰা পাখালিলা।।...

চান্দ সূৰ্য বায়ু ব্ৰহ্মা তুমৰা হ'বা সাখী।
 পাঞ্চ ডুব মাৰি উঠিলা শিৱৰ কুমাৰী।।
 ডাকিলেক ৰথখানি গগনে উৰাইলা।
 নিমিষতে আই আহি গৃহখানি পাইলা।।...
 ভোলানাথে কান্দেৰে জীয়েকৰ গলে ধৰি।
 লাৰিতে নাপালোঁ আই মই পালিতে নাপালোঁ।
 দুৰাৰ জীয়ৰী যেন বালিতে এৰিলোঁ।।
 নাৰাখিবা পিতাই বুলি আইদেৱত বিদায় মাগিলা।
 মনিষকে যাইবোঁ বুলি আই তেখনে শয়ন কৰিলা।।...^২

সোণোৱাল কছাৰীসকলে চ'ত মাহত অনুষ্ঠিত 'বাইথ-পূজা'ৰ প্ৰসঙ্গত 'হাইদাং-গীত' বাদ্যযন্ত্ৰসহ আবৃত্তি কৰে। এই গীতটি অসমীয়াত ৰচিত। প্ৰচলিত পৰম্পৰামতে সাতদিন-সাতৰাতি আবৃত্তি কৰিলেহে গীতটো শেষ হয়। এই গীতটিত জগৎসৃষ্টি আৰু শিৱাদি দেৱতাসকলৰ জন্ম-বৃত্তান্ত পোৱা যায়। গতিকে গীতটিক পুৰাণগত মালিতা আখ্যা দিব পাৰি। 'হাইদাং' পৰিভাষাটোৰ অৰ্থ : হা = মাটি, পৃথিৱী, জগৎ, ই = সৃষ্টি, দাং = গীত, অৰ্থাৎ (হাইদাঙৰ অৰ্থ) পৃথিৱী বা জগৎ সৃষ্টিৰ গীত। সোণোৱালসকলৰ মাজত প্ৰচলিত পৰম্পৰাগত বিশ্বাসমতে হাইদাং-গীত আবৃত্তি কৰিলে বৰষুণ হয়। হাইদাং-গীতৰ উদাহৰণ স্বৰূপে তলত দুটি স্তৱক দিয়া হ'ল ; যেনে :

হা - অ - হা - অ - হা - অ - হা - অ
 হা - ইয়হ নমো নাৰায়ণ। হা ইয়হ পৃথিৱী হেনো সৃজাইছে।
 হা - ইয়হ প্ৰকাশ হেনো সৃজাইছে। হা ইয়হ আকাশ হেনো সৃজাইছে।।
 হা - ইয়হ আকাশ হেনো সৃজাইছে। হা ইয়াহ নিমখ হেনো পাতাইছে।।...
 ইয়ই কেৰক কেৰক হেনো কেৰাইছে।
 ইয়ই কেৰক কেৰক হেনো কেৰাইছে।।...
 হা ইয়হ ডাঙৰ ডাঙৰ কোন ডাঙৰ?
 হা ইয়হ দেৱৰ ডাঙৰ ষিৰিং ৰাজ জে।
 হা ইয়হ দেৱী ডাঙৰ কোন ডাঙৰ?
 হা ইয়হ দেৱী ডাঙৰ ভূকলী-হাবুকী।।...
 লৌ লৌ শিমলু চলৌ লাই।

এহেই খিৰিং ৰজা দেউতাক আনইছোং।

এনেই বায়ু ৰজা দেউতাক আনইছোং।...

লৌ লৌ শিমলু চলৌ লাই।

এহেই গীতৰ শিমলু শোধাইছোং।।...

এহেই সকলো দায়-দোষ একে ঠাই।

এহেই জামুকৰ খুটাতে দিছোং ঠাই।।...°

(খ) নৈদানিক মালিতা : পুৰাণগত মালিতাৰ সৈতে নৈদানিক মালিতাৰ বিষয়বস্তু, সংযুতি আৰু অনুযুক্ত ক্ষেত্ৰত সাধাৰণ মিল নথকা নহয়। এই মালিতাত জগৎসৃষ্টি, বিভিন্ন বস্তুৰ উৎপত্তি, প্ৰাকৃতিক ব্যাপাৰৰ ব্যাখ্যা, পৰ্বত-পাহাৰ আদিৰ জন্ম, গছ-বৃক্ষ, লতা-লতিকা আদিৰ উৎপত্তিৰ বৰ্ণনা পোৱা যায়। নৈসৰ্গিক জগৎ সম্পৰ্কীয় লোকসমাজৰ জ্ঞান আৰু অভিজ্ঞতাৰ আভাস এই গীতবোৰৰ জৰিয়তে পোৱা যায়। অসমীয়া ভাষাত নৈদানিক মালিতাৰ সংখ্যা তেনেই কম নহয়। মনসা-পূজা বা বিষহৰী-পূজাৰ প্ৰসঙ্গত ওজাপালিয়ে গোৱা ঢেঁকীৰ জন্ম, পিঠাগুৰিৰ জন্ম, তালৰ জন্ম, ঢোলৰ জন্ম, তামোল-পাণৰ জন্ম, পাটৰ (মৰাপাটৰ) জন্ম, কুমাৰৰ জন্ম, কুমাৰৰ চৰুৰ জন্ম, কুঁহিয়াৰৰ জন্ম আদি বিষয়ক মালিতাবোৰেই নৈদানিক মালিতা। বাসুদেৱ পূজা, জাগৰ পূজা আদিৰ অনুযুক্ত ব্যাস ওজাপালিয়ে আবৃত্তি কৰা জাগৰৰ জন্ম, মুদ্ৰা বা তৌৰ্যত্ৰিকযন্ত্ৰৰ জন্ম, ৰামগিৰি, অহিৰ, সুহাই, ধনশ্ৰী, ভৈৰৱ আদি ৰাগ-ৰাগিণীৰ জন্ম সম্পৰ্কীয় গীত, ঢুলীয়াই পালা প্ৰদৰ্শনৰ সময়ত গোৱা ঢোল-তালৰ জন্ম বিষয়ক মালিতা আদিয়েই নৈদানিক মালিতা। বিভিন্ন মন্ত্ৰৰ মাজতো নৈদানিক মালিতা পোৱা যায়। নৈদানিক মালিতাৰ উদাহৰণ স্বৰূপে তলত কল্যাণ-ৰাগৰ জন্ম বিষয়ক গীতটি (মালিতা) দিয়া হ'ল :

এক দিনা বৈকুণ্ঠত লক্ষ্মী-সৰস্বতী।

বিবাদ কৰন্তু দোহে ছয়া ক্ৰুদ্ধ মতি।।

কন্দলে নপাৰি পাচে সৰস্বতী আই।

বিষ্ণুৰ চৰণে পৰি কান্দন্তু কিনাই।।

হেন দেখি মহা কৃপাময় নাৰায়ণ।

সৰস্বতীক চাই হেন বুলিলা বচন।।

শুনা বাগেশ্বৰী তুমি জগতৰে মাতৃ।

বিদ্যা বিনোদিনী সৰে বেদ অধিষ্ঠাত্ৰী।।

লক্ষ্মীতো কৰিয়া জানিবাহা তুমি বৰ।
 তুমি ৰাগ কৈলে হৈবোঁ বৰ অখণ্ডৰ॥
 নিৰ্বাক হৈবন্ত জগতৰ যত প্ৰাণী।
 শুনি আনন্দিত ভৈলা জগত গোসানী॥
 বীণা যন্ত্ৰে পঞ্চসুৰ তুলি ৰাগ দিলা
 সবস্বতী কণ্ঠত কল্যাণ ৰাগ ভৈলা॥^১

(গ) জনশ্ৰুতিমূলক মালিতা : যি মালিতাত জনশ্ৰুতিগত কাহিনী একোটি বৰ্ণিত হয় সেই মালিতাক জনশ্ৰুতিমূলক মালিতা বোলে। জনশ্ৰুতিগত কাহিনী আৰু পুৰাণগত কাহিনীৰ মাজত অনেক ক্ষেত্ৰত মিল দেখা যায়। পুৰাণগত কাহিনীৰ দৰে জনশ্ৰুতিগত কাহিনীটো যি অঞ্চলত বা যি সমাজত প্ৰচলিত সেই সমাজৰ জন-গণে সেই কাহিনীটো সত্য ঘটনাৰ ইতিবৃত্ত বুলি ভাৱে। জনশ্ৰুতিগত কাহিনীত এনে এছোৱা সময়ৰ পৰিচয় পোৱা যায়, যি সময় বৰ্তমানৰ সময়তকৈ কিছু বেলেগ আছিল। জনশ্ৰুতিগত কাহিনীত বৰ্তমান জগতৰ লগত সাদৃশ্য থকা স্থানৰ বৰ্ণনা পোৱা যায়। এই জাতীয় কাহিনীত ধৰ্মীয় বা ধৰ্ম নিৰপেক্ষ অভিবৃ্ত্তি অভিব্যক্তি হ'ব পাৰে। জনশ্ৰুতিগত কাহিনীৰ প্ৰধান চৰিত্ৰবোৰ মানৱৰ ভিতৰতে প্ৰায়ে সীমিত থাকে।

জনশ্ৰুতিগত কাহিনীৰ ওপৰোল্লিখিত বৈশিষ্ট্যৰাজি জনশ্ৰুতিগত মালিতাতো পৰিলক্ষিত হয়। ইয়াৰ বাহিৰেও স্থানীয় ঐতিহাসিক বৰ্ণনায়ো জনশ্ৰুতিগত মালিতাত স্থান পাব পাৰে। প্ৰত্যেকটো অঞ্চলতে সুকীয়া সুকীয়া কিছুমান লোক ইতিহাস বিষয়ক ঘটনা বা কাহিনী মুখ-পৰম্পৰাৰে প্ৰচলিত। এই জাতীয় বিষয় বা ঘটনাৰ আধাৰতো জনশ্ৰুতিগত মালিতা ৰচিত হয়। জাতীয় আৰু সামাজিক নায়ক ; ন্যায়দান নায়ক অথবা অধাৰ্মিক নায়ক, স্থান, নদী, পৰ্বত, পাহাৰ, হৃদ-পুখুৰী, অতীতৰ ভাস্কৰ্য আদি বিষয়ক কেন্দ্ৰ কৰিও জনশ্ৰুতিগত মালিতা ৰচিত হ'ব পাৰে।

পাৰিজাতীৰ গীত, কেন্দুকলাইৰ গীত, বেউলা-লখাইৰ গীত, বৰ নদীৰ গীত, ভঁৰলীৰ গীত আদিলৈ আঙুলিয়াব পাৰি।

(ঘ) যাদুমূলক বা বিস্ময়াৱহ বা অলৌকিক মালিতা : যি মালিতাৰ মাধ্যমেৰে যাদুমূলক বা বিস্ময়াৱহ বা অলৌকিক কাহিনী একোটি বৰ্ণিত হয় সেই মালিতাৰ নাম যাদুমূলক বা বিস্ময়াৱহ বা অলৌকিক মালিতা। জাৰ্মান ভাষাত বহু

ব্যৱহৃত মাশ্যেন্ (Märchen) পদটোৰেও যাদুমূলক বা পৰীৰ সাধুক সূচায়। সেই ফালৰ পৰা যাদুমূলক বা বিস্ময়াৱহ সাধুকথাক মাৰ্খেন আখ্যা দিলে আপত্তি উঠিব নোৱাৰে। কোনো কোনো পণ্ডিতৰ মতে যাদুমূলকতা এই বিধ মালিতাৰ অন্যতম বৈশিষ্ট্য। সাধাৰণতে এজন সাধাৰণ মানুহৰ অলৌকিক জগতৰ সৈতে সংঘটিত সংঘৰ্ষ আৰু অলৌকিক শক্তিৰ সহায়ত তেওঁ অলৌকিক কাৰ্য সম্পাদন কৰাৰ বৰ্ণনাই যাদুমূলক মালিতাত প্ৰাধান্য লাভ কৰে। সেই ফালৰ পৰা যাদুমূলক মালিতাক ৰোমাঞ্চ আখ্যা দিব পাৰি। এই বিধ মালিতাত একক নায়কৰ প্ৰাধান্য পৰিলক্ষিত হয়। দ্বিতীয়তে, যাদুমূলক মালিতাত প্ৰতিনায়কো থাকিব পাৰে। তেনেদৰে এই শ্ৰেণীৰ মালিতাত নায়িকা আৰু প্ৰতিনায়িকাৰ স্থিতিয়ো অস্বীকাৰ কৰিব নোৱাৰি।

অসমীয়া ভাষাত ৰচিত আৰু বৰ্তমানলৈকে সংগৃহীত যাদুমূলক মালিতা - সমূহৰ ভিতৰত মণিকোঁৱৰৰ গীত, ফুলকোঁৱৰৰ গীত, কমলা কুঁৱৰীৰ গীত, তেজীমলাৰ গীত, জনা গাভৰুৰ গীত, চিকণ সৰিয়হৰ গীত আদি উল্লেখযোগ্য। যাদুমূলক মালিতাৰ উদাহৰণ স্বৰূপে কমলা কুঁৱৰীৰ গীতৰ কিয়দংশ তলত দিয়া হ'ল, যেনে :

হৰিচে ৰাজা হৰিচে এ।

দীঘিৰি খান্দে ৰাজা এ॥

দীঘিৰিৰ পাৰে পাৰে পাৰোৱা বলি দিলা ৰাজা হৰিচে এ।

দীঘিৰি খান্দে ৰাজা এ॥

দীঘিৰিৰে পাৰে পাৰে হাঁহ বলি দিলা ৰাজা হৰিচে এ।

দীঘিৰি খান্দে ৰাজা হৰিচে এ॥...

এক আঁঠু মান হৈলা পানী তেও নি নিয়ে ৰাজাই টানি

কৈত গৈলি মোৰ পিতা তামুলী।...

এক গলমান হৈলা পানী তেও নি নিয়ে ৰাজাই টানি

কৈত গৈলি মোৰ পিতা তামুলী।।’

বাৰমাহী গীত : বাৰমাহী গীতবোৰ মালিতাৰ এটি বিশেষ অংশ। ভাৰতৰ আন আন প্ৰদেশত বাৰমাহী গীত বাৰমাসী বা বাৰমাসা গীতৰূপে পৰিচিত। অসমৰ

বাহিৰে ভাৰতৰ আন আন অঞ্চলত চৌমাসা (অৰ্থাৎ চাৰিমাহ) আৰু ছয়মাসা (অৰ্থাৎ ছয়মাহ) গীতৰ পৰম্পৰাও প্ৰচলিত। বাৰমাহী নামটো এই জাতীয় গীতৰ বিষয়বস্তুৰ সংযুতিৰ প্ৰতি লক্ষ্য কৰিহে দিয়া হৈছে। এইবিধ মালিতাত বছৰটোৰ বাৰ মাহৰ বৰ্ণনা দিয়া হয়। বাৰ মাহৰ প্ৰাকৃতিক পৰিৱৰ্তনে বিৰহিনীৰ মনোজগতত কৰা প্ৰতিক্ৰিয়াৰ বৰ্ণনাই বাৰমাহী গীতৰ মূল লক্ষ্য। বাৰমাহী গীতৰ বিষয়বস্তুৰ বিষয়ে ড° প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামীৰ ভাষাৰে এনেদৰে কব পাৰি : “এজনী গাভৰুৱে হয়তো বিদেশত থকা গিৰিয়েকক স্মৰণ কৰি প্ৰত্যেক মাহৰ নিঃসৰ্গ জীৱনৰ পৰিৱৰ্তন আৰু নিজ অন্তৰৰ ক্ৰিয়া বৰ্ণনা কৰি গৈছে, নতুবা কোনো সাউদে ঘাটত নাও বান্ধি অজ্ঞাতভাৱে নিজৰ ঘৈণীয়েককে মাহৰ পাচত মাহ প্ৰণয় যাচি গৈছে— এয়ে বাৰমাহী গীতৰ সাধাৰণ বিষয়বস্তু”।^১

বাৰমাহী গীতত কাহিনী বা কাহিনীৰ আভাস থাকে। সেই বাবে এই বিধ গীতক মালিতা বোলা হয়। কাহিনীৰ কথা নধৰিলে বাৰমাহী গীতক ঋতুগীত বা বিলাপ-গীত অথবা প্ৰেম-প্ৰণয়-প্ৰধান গীত নাইবা বিৰহ-গীত বোলাত আপত্তি নাই। লিখিত সাহিত্যতো বাৰমাহী - গীতৰ পৰম্পৰা প্ৰচলিত। অসমীয়া বাৰমাহী গীত আৰম্ভ হয় আঘোণ মাহৰ পৰা। অন্য হাতে মৈথিলী, ভোজপুৰী বা হিন্দীভাষী অঞ্চলত আহাৰ মাহৰ পৰাহে ‘বাৰমাসী’ বা ‘বাৰহমাসে’ গীত আৰম্ভ হয়। অৱশ্যে বাৰমাহী গীত কেৱল যে আঘোণ মাহৰ পৰাহে আৰম্ভ হ’ব লাগিব তেনে নহয়, বহাগ মাহৰ পৰাও আৰম্ভ হ’ব পাৰে ; যেনে—

(বেউলা বাৰমাহী)

বহাগৰ মাহতে দেউতা প্ৰভু শিলে বৰহিলে।

সেই ন-পানীৰ গুণে নানা ফুল ফুলে।।

জেঠৰ মাহতে ৰ’দে কৰে ছৰাহৰি।

বৰ ঘৰটো ভাঙাইলে সে বিনা বাও-মুৰালি।।

আহাৰ মাহত প্ৰভু আকাশে কৰে আশা।

বনেৰ ঢালিয়া চোকা সিও বান্ধে বাসা।।...

মাঘৰ মাহতে প্ৰভু সকলো বলে মাথ।

মৰা স্বামী ভাসাই লৈ যাওঁ কায়ো নেদে মাত।।...

উজানে বাজায় ঢাক-ঢোল ভাঠিত বজায় বাঁশী।

ইয়াকে বৰ্ণাই থৈছি বেউলা বাৰমাসী।।

বাৰ মাহে তেৰখান লাগিবে বুনিয়া।

মই নাৰী ভাসি যাওঁ উজান বানিয়া।।

গীতটিত বিৰহিনী বেউলাৰ দুখ-যন্ত্ৰণা প্ৰাকৃতিক পৰিৱৰ্তনৰ সৈতে সম্পৰ্ক ৰাখি বৰ্ণনা কৰা হৈছে। অসমীয়া ভাষাত ৰচিত আৰু বৰ্তমানলৈকে সংগৃহীত বাৰমাহী গীতৰ ভিতৰত মধুমতীৰ গীত, সীতাৰ বাৰমাহী, জয়ধন বনিয়াৰ গীত, তাৰা পটেশ্বৰীৰ বিলাপ, শান্তি বাৰমাহী, ৰাম বাৰমাহী, কন্যা বাৰমাহী আদি উল্লেখযোগ্য।

ধৰ্মীয় গীত : লোকসাহিত্য বা বাচিক কলাৰ এটি বিশেষ স্থান দখল কৰি আছে ধৰ্মীয় গীতবোৰে। ধৰ্মীয় প্ৰসঙ্গ অৰ্থাৎ পূজা-পাতল-উপাসনা আদিৰ অনুসঙ্গত গোৱা গীতবোৰই ধৰ্মীয় গীত। দেৱ-দেৱীৰ উৎপত্তি, মৰ্ত্যত তেওঁলোকৰ পূজা-উপাসনা বিস্তাৰ, পূজা-উপাসনাৰ বিধি ব্যৱস্থা, পূজা কৰ্তা, ভক্ত, ব্ৰতী, ব্ৰতিনী আদিৰ আধ্যাত্মিক উৎকৰ্ষ আদিৰ বৰ্ণন এই বিধৰ গীতত পোৱা যায়। ধৰ্মীয় গীত পুৰাণ-গত মালিতা-ধৰ্মী হ'ব পাৰে। সাধাৰণতে পূজা খলা বা উপাসনা স্থান আদিত পুৰুষসকলে অথবা মহিলাসকলে নাইবা পুৰুষ-স্ত্ৰী উভয়ে পৰম্পৰাগত বাদ্যযন্ত্ৰ; যেনে— খোল, মৃদঙ্গ, নাগেৰা, তাল, কৰতাল, মঞ্জিৰা আদি সঙ্গত কৰি চাপৰি বজাই এই গীতবোৰ আবৃত্তি কৰে। ব্যাস ওজাপালি, সুকনান্নী ওজাপালি, মাৰে গান, পদ্মা-পুৰাণৰ গান, বাঁশী-পুৰাণৰ গান আদি পৰিৱেশ্য অনুষ্ঠানে বাদ্যযন্ত্ৰ সঙ্গত কৰি ধৰ্মীয় গীত আবৃত্তি কৰে সামাজিকক আধ্যাত্মিক, নৈতিক আৰু সামাজিক শিক্ষা দিয়াৰ প্ৰয়াসেৰে। ভক্তিৰ পৰাকাস্তা ধৰ্মীয় গীতবোৰৰ এটি উল্লেখযোগ্য বৈশিষ্ট্য। ধৰ্মীয় গীতবোৰ আকৌ কেইটিমান উপশ্ৰেণীত ভাগ কৰিব পাৰি; যেনে—

দেৱ-দেৱীৰ পূজা-পাতল আদিৰ লগত জড়িত গীত, যেনে : আইৰ নাম, সদাশিৱৰ নাম, জগন্নাথৰ নাম, দুৰ্গা দেৱীৰ নাম, মনসাৰ নাম, অপেচৰীৰ নাম, সুবচনীৰ নাম, লক্ষ্মীদেৱীৰ নাম, সৰস্বতীৰ নাম ইত্যাদি। নৱ বৈষ্ণৱ আদৰ্শ সম্পৃক্ত নামবোৰ প্ৰায়ে বিষ্ণু-কৃষ্ণ আৰু ৰাম চৰিত্ৰকেন্দ্ৰিক। আত্মলঘিমা, আত্মত্যাগ আৰু আত্মনিবেদনৰ গভীৰতাই এনেবোৰ গীতত প্ৰাধান্য লাভ কৰে; যেনে—

দিহা : অহে গোবিন্ কি দিৰোঁ যাদৱ ৰায়।

অহে ব্ৰহ্মাণ্ডৰ ভিতৰে যত বস্তু আছে

সমস্তে তোমাতে পায়।।

পদ : কিবা মই আসন / দিবোঁ নাৰায়ণ / গৰুড়ে যাৰ বাহন।
 কিবা অলঙ্কাৰে / ৰঞ্জিবোঁ তোমাৰে / কৌস্তুভে যাৰ ভূষণ।
 ঐশ্বৰ্য বিভূতি / কি দিবোঁ সম্প্ৰতি / আপুনি লক্ষ্মীৰ পতি।
 কিবা তুতি-নতি / কৰিবোঁ ভকতি / যাৰ ভাৰ্যা সৰস্বতী।
 হেন জানি হৰি / শৰণ পশিলোঁ / তেজিবাক নুযুৱায়।...^৮

আই-নাম অসমীয়া ধৰ্মীয় লোকগীতৰ আন এটি উল্লেখযোগ্য দিশ। বসন্ত ৰোগৰ নিৰাময় আৰু দূৰীকৰণ যাদুৰ আধাৰত শীতলা দেৱী বা আইৰ জন্ম। গীত-পদত আই হয় সন্তুষ্ট। সেই বাবে অকুমাৰী ছোৱালী অথবা আই-বাইসকলে ঘৰত কাৰোবাৰ আই ওলালে আই-নাম পাতি নাম ধৰে। এইবোৰত আইৰ জন্ম, তেওঁৰ শক্তি-মহিমা আৰু বিভূতি, তেওঁৰ কাৰুণিক দিশ আদিৰ পৰিচয় পোৱা যায়। আই নাম ধৰাৰ পৰম্পৰা অসমৰ জনজাতি, মুচলমান আৰু চাহ বাগানৰ সমাজতো কম-বেছি পৰিমাণে প্ৰচলিত। এই নাম বা গীতবোৰ যথার্থতে মন্ত্ৰমূলক। সৰ্পদেৱী মনসাৰ কন্যা শীতলা আই বিভিন্ন নামেৰে পৰিচিতা, তেওঁ স্বৰ্গ-মৰ্ত্য পাতালত পূজিতা, তেওঁ বিশ্বেশ্বৰী প্ৰসাদৰ অধিকাৰিণী :

দিহা : আইদেৱী ভগৱতী সিংহবাহিনী।

তুমি দেৱী নাৰায়ণী চণ্ডিকা গোসানী।।

পদ : উমা শিৱা ঘোৰ মূৰ্তি দেখি লাগে ভয়।

ৰক্ষা কৰিবা জয় দুৰ্গা তোমাৰ আশ্ৰয়।।

স্বৰগত পূজে দেৱে পাতালত নাগে।

মনুষ্যগণে পূজা কৰে ফুলে জলে।।...

আই আহে সন্ধ্যা কালে বৃষভে চৰি।

মনুষ্যে স্তুতি কৰে দুই চৰণে ধৰি।।...

আহিছা শীতলা আই এ বহিবা আসনে।

ফুলে জলে সেৱা কৰিম তোমাৰ চৰণে।।

কৈলাসত আছিল আই দেৱৰ পূজা খাই।

মনুষ্যক আনিলা আই পূজা-সেৱা পাই।।

পাতালত আছিল আই নাগৰ পূজা খাই।।

পৃথিৱীক আসিলা আই হাঁহ-পাৰ পাই।।^৯

উজনি অসমত আইক সন্তুষ্ট কৰাৰ অৰ্থে পতা নামক ‘গোপিনী সৰাহ’ বোলে। শ্ৰদ্ধা- ভক্তি আৰু আন্তৰিকতা উজাৰি দিয়া হয় আই নম্ৰৰ জৰিয়তে। আই-নামত নান্দনিক সৌন্দৰ্য প্ৰকট হৈ উঠাৰ লগে লগে নিঃসৰ্গ জীৱন প্ৰাণৱন্ত হৈ উঠা দেখা যায় :

উজাই আহিলে আইৰে সাতভনী সাতালি পৰেৱত জুৰি।

তৃণ-তৰু লতা সৰে মাথা দৌৱায় আই আহিবৰে শুনি।।

সোণৰে চকৰী উৰে জাকি মাৰি ৰূপৰে দুখানি পাখি।

চহৰ ফুৰিবলৈ আইলোক আহিছে জীৱদান মাগিছোঁ আমি।।

নেজানি সোমালোঁ আইৰে ফুলবাৰী, নিচিনি ছিঙিলোঁ কলি।

ইবাৰৰ দোষকে ক্ষমিবা ভৱানী মাতো চৰণতে ধৰি।।”

কোনো কোনো আই-নামত আত্মসমৰ্পণৰ ভাৱ ‘অনুপম কোমল ঠাচত’ প্ৰকাশ পাইছে ; যেনে—

আই মোৰ ঘৰো সাৰিলোঁ

আই মোৰ চোতালো সাৰিলোঁ

আই মোৰ পদুলি মুখলৈ চাই।..”

আই-নামৰ দৰে অপেশ্বৰী-সৰাহ বা অপেচৰী নাম নাৰী বা মহিলা সমাজতহে সীমিত। অপেশ্বৰী বা অপেচৰা পদটো বৈদিক ‘অপ্সৰা’ শব্দৰ পৰা উদ্ভৱ হৈছে। অপেশ্বৰীসকল অসমৰ বাহিৰে ভাৰতৰ আন আন ঠাইত পৰী (Fairies) নামেৰে পৰিচিত।^{১২} কল্যাণ-কামিনী আৰু অকল্যাণ-কামিনী উভয়দেৱীৰ ভূমিকা পালন কৰি আহিছে অপেশ্বৰাই। অকল্যাণ-কামিনী দেৱী স্বৰূপে অপেশ্বৰীসকলৰ কুদৃষ্টিত কোনো বেমাৰ-আজাৰ নোহোৱাকৈ ল’ৰা-ছোৱালী শুকাই-খীণাই যায় ; অথবা পঁয়া লাগে, নাইবা ল’ৰা-ছোৱালীয়ে হাত-ভৰি জোকাৰি চকু-মুখ পকাই কন্দা-কটা কৰে, নাইবা একাঙ্গী আদি নৰিয়া হয়, নাইবা চকু ফেঁচকুৰিওৱা ৰোগ হয়, নাইবা পিঠা-গলীয়া ব্যাধি হয়, অথবা ছোৱালী শাস্তি নোহোৱাকৈ থাকে, নাইবা ওপৰৰ ফালে চাই চাই কান্দি থাকে। অপেশ্বৰীসকলৰ এই কুদৃষ্টিক ‘উপৰেলীৰ লেঠা’ লগা বুলি কামৰূপৰ অঞ্চল বিশেষে কোৱা শুনা যায়। ইয়াৰ বিপৰীতে অপেশ্বৰীসকলক পূজা-উপাসনা কৰিলে এই ৰোগ-ব্যাধিবোৰ নিৰাময় হয়, অপেশ্বৰীৰ কৃপাত নিঃসন্তান নাৰীয়েও সন্তান লাভ কৰে, আন কি অবিবাহিতা গাভৰুৱেও স্বামী লাভ কৰে আৰু ধন-জন, পুত্ৰ-কন্যা লাভ কৰে। অপেশ্বৰী পূজা

দেওবাৰে ভৰ দুপৰীয়া নাৰীসকলে উদ্যাপন কৰে আৰু পূজাৰ প্ৰসঙ্গত গীত-পদ গোৱা হয়— দুয়ো হাতেৰে চাপৰি মাৰি। এই গীত-পদৰ নামেই অপেন্স্বৰী সাবাহৰ গীত। আই-নামৰ দৰে অপেন্স্বৰী গীততো আত্ম-সমৰ্পণৰ কোমল ভাব ৰণিত।

অসমৰ বিভিন্ন অঞ্চলৰ বিবাহিতা নাৰী আৰু অবিবাহিতা গাভৰুসকলে বছৰটোৰ বিভিন্ন দিন বা তিথিত কিছুমান ব্ৰত বা বৰত পালন কৰে; যেনে : চৰেই বৰত, সাঁথা বৰত, মনসাব্ৰত, সাবিত্ৰীব্ৰত ইত্যাদি। ব্ৰত বা বৰতৰ অনুযায়িতো নাৰী বা গাভৰুসকলে বিবিধ গীত-পদ আবৃত্তি কৰে। ভক্তি ৰসৰ মন্দাকিনী ধাৰা যেন এই গীতবোৰৰ মাজেৰে প্ৰবাহিত হৈ আছে।

গোৱালপাৰা অঞ্চলত প্ৰচলিত সোণাৰায়-পূজা, কাতি পূজা, বাঁশ পূজা, হদুম-পূজা আদিৰ সৈতে সম্পৃক্ত গীতখিনিকো ধৰ্মীয় গীত আখ্যা দিব পাৰি। সোণাৰায়-পূজা ব্যাঘ্ৰদেৱতা পূজাৰ অন্য এক অভিব্যক্তি। গোৱালপাৰা অঞ্চলৰ গৌৰীপুৰ, ধুবুৰী, গোলোকগঞ্জ, বাক্সিৰহাট, আগমনি আদিত ব্যাঘ্ৰ-দেৱতা সোণাৰায় স্বৰূপে পৰিচিত। প্ৰচলিত লোক বিশ্বাস মতে সোণাৰায়ক পূজা কৰিলে গৰু-গাই নিৰাপদে থকাৰ উপৰিও গৃহস্থৰ কুশল হয়। সোণাৰায় পূজাত গৰখীয়াসকলে গোৱা গীতবোৰৰ নামেই সোণাৰায় পূজাৰ গীত। কাতি-পূজা গোৱালপাৰা অঞ্চলৰ অন্যতম স্ত্ৰী আচাৰ। কাৰ্তিক দেৱতাই কাতি দেৱতা। নিঃসন্তান নাৰীয়ে কাতি পূজা কৰে সন্তান লাভৰ আশাত। কাতি-পূজাতো প্ৰাধান্য লাভ কৰে গীতে। এই গীতবোৰৰ নামেই কাতি পূজাৰ গীত। সাধাৰণতে অনাবৃষ্টিৰ সময়ত ধুবুৰী জিলাৰ বিভিন্ন অঞ্চলত মাজ নিশা পথাৰৰ মাজত নাৰীসকলে হদুম পূজা পাতে। হদুম বৃষ্টিদাতা দেৱতা। মৃদঙ্গ বাদকৰ বাহিৰে কোনো পুৰুষে হদুম-পূজাত যোগ দিব নোৱাৰে। নাৰীসকলে বিবসনা হৈ গীত-পদ গাই গাই হদুমদেৱতালৈ পূজা আগ বঢ়ায়। হদুম-পূজাৰ প্ৰসঙ্গত গোৱা গীতবোৰৰ নামেই হদুম গীত। এই গীতবোৰৰ কিছুমানত অল্লীল শব্দৰ প্ৰয়োগ পৰিদৃষ্ট হয়। হদুম গীতৰ উদাহৰণ স্বৰূপে তলত দুটিমান স্তবক দিয়া হ'ল। যেনে—

জাগৰে জাগৰে হদুম আজিকাৰ ৰাতি।

গৃহস্থীয়া কৰে পূজা দিয়া ধূপ চাইলন বাতি।।

আকাশতে ৰুৰ পূজা আকাশ কাওলী।

পাতালতে ৰুৰ পূজা এক কাল লাগালি।।....

হদুমেৰ মাও ৰুৰী হইল যোৰ মাৰেয়া তলেৰে।

হুদুম হুদুমৰে হুদুমে কি কাজ কৰিল ৰে।।

হুদুমের ঘৰ সাত ভাই কাৰে খেতত পানী নাই।

আছে পানী গাঙ্গতে ঢালিয়া দিব জমিতে। ... ১০

বাঁশ-পূজা দুইপ্ৰকাৰ, (ক) মদন - কাম আৰু (খ) ভগৱতী বাঁশ। এই দুয়োটা অনুষ্ঠানতে কেইবাডালো বাঁহ চিত্ৰ-বিচিত্ৰ কাপোৰেৰে মেৰিয়াই ঢোল-খোল-তাল আদি সঙ্গত কৰি নৃত্য আৰু গীতৰ মাধ্যমেৰে নচোৱা হয়। বাঁশ-পূজাৰ অনুসঙ্গত গোৱা গীতবোৰকেই বাঁশ পূজাৰ গীত আখ্যা দিয়া হয়। বাঁশ-পূজাৰ গীতৰ উদাহৰণ স্বৰূপে তলত এটি গীত দিয়া হ'ল :

জয় জয় বন্দং যশে বন্দং ৰাম।

প্ৰণাম কৰিয়া বন্দং গোসাইৰ চৰণ।।

মৃটিংগা সিঙ্জাইল গোসাই কৰিয়া যতন।

কৰ্ম বানে জনম হইল ঠাকুৰ মদন - কাম।।

দেৱ বন্দং ধৰম বন্দ ধৰম নইৰা কাৰ।

হৰ-গৌৰী মাধৱ বন্দং শিৱেৰ জটাভাৰ।। ১৪

বৰসেৱা, বৰখেলীয়া ভকত সেৱা, ভিতৰুৱা সকাম, পূৰ্ণ ধৰীয়া সকাম, পূৰ্ণসেৱা, থেকেৰা-ফুলীয়া ভকত সেৱা, মেৰু-পূজা বা কৰণি, পুঠিমেছীয়া ভকতসেৱা, কাছো মৰীয়া ভকত সেৱা আদিত মঞ্জিৰা, ৰামতাল, খঞ্জুৰী আদি সঙ্গত কৰি ভকতসকলে দাৰ্শনিক ভাৱবিশিষ্ট গীত কিছুমান গায়। সেই গীতবোৰ চিয়া-গীত নামেৰে পৰিচিত। 'চিয়া' পদটো 'চৰ্যা' পদৰ পৰা উদ্ভৱ হ'ব পাৰে। এই গীতবোৰত উল্লিখিত সম্প্ৰদায়সমূহৰ শৰণীয়া ভকতসকলে কি কি ধৰ্মীয় আচৰণ পালন কৰিব লাগে তাৰ আভাস পোৱা যায়। ৰাতিখোৱা (Night Worshipper) সম্প্ৰদায়ৰ ভকতসকলে গোৱা গীতবোৰ চিয়াগীতৰ সমধৰ্মী, তন্মূৰ্ত্তি এই শ্ৰেণীৰ গীত দেহবিচাৰৰ গীত স্বৰূপেহে পৰিচিত। চিয়াগীত বা দেহবিচাৰৰ গীতৰ ভাষা ৰূপকধৰ্মী। দেহবিচাৰৰ গীতবোৰ ধৰ্মীয় অনুসঙ্গত বাদ্যযন্ত্ৰসহ গোৱাৰ উপৰিও ভকতসকলে ঘৰে ঘৰে ভিক্ষা মাগি ঘূৰি ফুৰোঁতে টোকাৰী আৰু ৰামতাল বজাই গায়। টোকাৰী সঙ্গত কৰি গীতবোৰ গোৱাৰ কাৰণে ইয়াৰ আন নাম টোকাৰী গীত। ১৫ বৰসেৱা, ৰাতিখোৱা, পূৰ্ণসেৱা আদি সম্প্ৰদায়ে আত্মাতকৈ দেহত আৰু ঈশ্বৰতকৈ গুৰুৰ ওপৰত অধিক গুৰুত্ব দিয়ে। তেওঁলোকে শাৰীৰিক সুখ আৰু আনন্দৰ মাজেৰে পৰমতত্ত্ব উপলব্ধি কৰিবলৈ প্ৰয়াস কৰে। তাত্ত্বিকবাদ, বৌদ্ধসহজীয়াবাদ আদিৰ

প্ৰভাৱ এনেবোৰ অনুষ্ঠানত সুদূৰ-প্ৰসাৰী। দেহ বিষয়ক গীতৰ উদাহৰণ স্বৰূপে তলত এটি গীত দিয়া হ'ল; যেনে :

বৈকুণ্ঠত আছিল দেৱৰ দামেকলা, আহিল ভাৰতত নামি।
 হে ৰামে ৰুই গ'ল এইনো দামেকলা, লক্ষ্মণে চপাই গল মাটি
 শঙ্কৰদেৱ আহি জেওৰা দি গ'ল, হলে চাৰি যুগে পুলি।
 গৰ্ভৰ পৰা ওলাল ধুৰিপত্ৰ, থুললৈ কৰিলে মেও।।...
 পূবে কি পছিমে উত্তৰে, দেখিনে, পত্ৰ বা পাৰিম কোন দিশে।
 পূবলৈ আগকৈ পছিমলৈ গুৰিকৈ, মেৰুৰে মূৰতে থপা।।^{১৬}

কামৰূপী লোকগীত স্বৰূপে আকাশবাণী, দূৰদৰ্শন আদিৰ জৰিয়তে পৰিচয় লাভ কৰা সাস্কীতিক বৈশিষ্ট্যসম্পন্ন গীতখিনিত ভক্তিভাৱৰ গভীৰতা লক্ষ্য কৰিব পাৰি। এই জাতীয় গীতবোৰ বিশেষভাৱে কামৰূপ আৰু দৰঙত জনপ্ৰিয়। দৰং জিলাত এইবিধ গীত প্ৰধানকৈ ব্যাস ওজাপালিয়ে তাল যন্ত্ৰ সঙ্গত কৰি গায় আৰু কামৰূপত মঞ্জিৰা, দোতোৰা, খঞ্জৰী আদি সঙ্গত কৰি এজন বা একাধিক গায়কে গায়। এই গীতবোৰৰ আকৰ্ষণ ইয়াৰ সাস্কীতিক আৰু কাব্যিক গুণৰ বাবে, ভক্তিৰ গভীৰতাৰ বাবে নহয়। শিৱ-পাৰ্বতী, কৃষ্ণ-যশোদা আদি চৰিত্ৰৰ প্ৰাধান্য এই গীতবোৰত দেখা যায়। কামৰূপী লোক-গীতৰ উদাহৰণ স্বৰূপে তলত এটি গীত দিয়া হ'ল—

দিহা : অ' মাই যশোৱা হে মাইহে যশোৱা
 আমাক লাগিয়া অলপ তোৰ মৰম নাই।।
 পদ : তোৰ ঘৰে আসি গৰু চাৰি ফুৰোঁ
 কৰুকাৰা ভাত খাই।।
 কাঠ বাঁজী বুলি জগতে হাসয়।
 দেখিও সুমৰা হৰি।
 তোৰ ঘৰে আসি পুত্ৰ উপজিলোঁ
 ইটো দুখ দুৰ কৰি।।
 মোহোৰ মুখত লাজ লাগে অতি
 তোহোৰ গুণ কহন্তে।
 দুই ওঁঠ ফাটি তেজ বহি যাই
 বাঁহৰে বাঁহী বাজন্তে।।

এক তলা সোণাৰে বাঁহী গঢ়ে নেদা

ৰাজ পটেশ্বৰী ছই।

গুণন্তে গাথন্তে টাপলি বান্ধতে

ধনতে লাগিলা জুই।।^{১৭}

উৎসৱ-অনুষ্ঠানৰ লগত জড়িত গীত : পৃথিৱীৰ প্ৰায় সকলো সমাজতে পুনৰাবৃত্তিকভাৱে সময়ৰ ভাগ একোটি এফলীয়া কৰি থোৱা দেখা যায়— উৎসৱ-অনুষ্ঠানৰ বাবে। এই সময়ত বিশেষ ধৰণৰ তাৎপৰ্য-বিশিষ্ট অনুষ্ঠানৰ পৌনঃপুনিকতাই উৎসৱ। উৎসৱ - অনুষ্ঠানসমূহ সামাজিক আবৰণৰ বাহিৰে আন একো নহয়। সাধাৰণতে বিশ্বাস, ধৰ্মীয় কৃত্য আৰু পুৰাণ-কথাৰ আধাৰত পৰম্পৰাগত উৎসৱ-অনুষ্ঠানৰ উদ্ভৱ আৰু বিকাশ সম্ভৱ হৈছে। পৰম্পৰাগত উৎসৱ-অনুষ্ঠানবোৰ বিভিন্ন এককৰ সমষ্টি; যেনে : বিশ্বাস, ধৰ্মীয় কৃত্য, পুৰাণ- কথা, মেলা-বজাৰ, গীত-নৃত্য-বাদ্য-অভিনয়, সামূহিক ভোজন, শোভাযাত্ৰা ইত্যাদি। গীত-নৃত্যই উৎসৱ-অনুষ্ঠানৰ অনুৰূপত গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা গ্ৰহণ কৰি আহিছে। এই গীত-নৃত্য আদিয়েই উৎসৱ-অনুষ্ঠানৰ গীত স্বৰূপে পৰিচিত। উৎসৱ-অনুষ্ঠানসমূহৰ ভিতৰত ঋতুকালীন বা কৃষিভিত্তিক উৎসৱৰ গুৰুত্ব বেছি। ঋতুকালীন উৎসৱৰ পৰিসৰে বিহু-উৎসৱ (ৰঙালী, কঙালী, ভোগালী), বাম্বোল পিটা, ভঠেলি, সুৱেৰী, পাউৰা তোলা, পাচতি, মথনী, দেউল (ফাকুৱা উৎসৱ নহয়), মহো-হো বা মহৌ-হৌ, ভেকুলীৰ বিয়া, আমতি বা অম্বুবাচী আদি সামৰে। এই উৎসৱসমূহৰ প্ৰসঙ্গত গীত-নৃত্য আৰু বাদ্যই প্ৰাধান্য লাভ কৰে। বহাগ বিহু বা ৰঙালী বিহুৰ প্ৰসঙ্গত গীত আৰু নৃত্য অপৰিহাৰ্য। এই গীতবোৰ বিহু গীত, হুঁচৰি গীত আদি ৰূপে পৰিচিত আৰু গীতৰ সৈতে সঙ্গতি ৰাখি প্ৰদৰ্শন কৰা নৃত্যই বিহুনৃত্য বা বিহুনাচ আৰু হুঁচৰি নাচ। বিহুগীতবোৰ যদি বনৰীয়া তেন্তে হুঁচৰি গীতবোৰ ঘৰুৱা। হুঁচৰি গীতত ডেকা-বুঢ়া সকলোৱে যোগ দিব পাৰে আৰু এই গীত আৰম্ভ কৰা হয় নামঘৰ গোসাঁইঘৰ আদিৰ পৰা আৰু গাৱঁৰ সকলো মানুহৰ ঘৰে ঘৰে গোৱা হয়। অন্য হাতে বিহুগীত গোৱা হয় পথাৰত— ডেকা-গাভৰুৱে মিলি। বিহু গীত (বিহুনাচ) আৰু বনঘোষাৰ মাজত দৰাচলতে পাৰ্থক্য দেখুওৱা টান, যিহেতু দুয়ো বিধ গীতৰ বিষয়বস্তু আৰু প্ৰকাশভঙ্গীৰ মাজত অমিলতকৈ মিলৰ মাত্ৰাহে বেছি। “সম্ভৱ বিহুগীতৰ বহল প্ৰয়োগেই বনঘোষা। ... দুয়োবিধ গীতৰে পটভূমি হৈছে বাহিৰৰ জগতখন — পথাৰ-সমাৰ, মুকলি বতাহ, গছ-বিৰিখৰ নয়ন জুৰোৱা সেউজ, মন উৰুৱাই নিয়া নীলা

পৰ্বতমালা, প্ৰাণত জোকাৰ দিয়া বহল লুইত। মুঠৰ ওপৰত এইবিলাক পথৰুৱা গীত। বিহুগীত যেনিবা বিহু নাচৰ ভাষ্য বা টীকাহে। সম্ভৱ এই নাচত দুটা উদ্দেশ্য নিহিত আছিল : আদিম যুগত এই নাচ আছিল মন্ত্ৰমূলক, দ্বিতীয়তে ই যৌন মিলনৰ সহায়ক।”^{১৮} অসমৰ প্ৰকৃতি, ৰীতি-নীতি, আচাৰ-ব্যৱহাৰ, উৎসৱ-অনুষ্ঠান, পূজা-পাৰ্বণ, শিল্প-কলা, স্থাপত্য, অয়-অলঙ্কাৰ-প্ৰসাধন, খাদ্য-পানীয় আদিৰ প্ৰতিফলক ৰূপে বিহুগীতে অত্যন্ত গভীৰ ভূমিকা গ্ৰহণ কৰি আহিছে। এই গীতবোৰ প্ৰায়ে প্ৰতীক-ধৰ্মী। দুলভি ছন্দত বিহু গীতবোৰ ৰচিত। গীতবোৰৰ সুৰ প্ৰায় একে ধৰণৰ। বিহুচোল, পেঁপা, শিঙা, গগনা, টকা আদি সঙ্গত কৰি ডেকা-গাভৰু উভয়ে মিলি নাচি নাচি গীতবোৰ গায়। পৰম্পৰামতে ডেকা-গাভৰু উভয় মিলি বিহু নাচ নচা নাছিল, আজি-কালিহে নাচে। আন যি কি নহওক, বিহুগীত আৰু ইয়াৰ আনুষঙ্গিক নাচৰ প্ৰেৰণা যে যৌনমূলক তাত সন্দেহ নাই। নকুল চন্দ্ৰ ভূঞাই বিহুগীতবোৰৰ বিষয়বস্তু অনুসৰি বিহু, অঙ্গৰাগ, পূৰ্বৰাগ, অনুৰাগ, প্ৰণয়, বিষাদ, ভেদ, বিৰাগ, প্ৰেম (১+২), প্ৰেম-বৈচিত্ৰ্য, সন্তোষ, আদি ভাগত ভগাইছে।^{১৯} শ্ৰেণীবিভাজনৰ এই প্ৰেৰণা সংস্কৃত অলঙ্কাৰ শাস্ত্ৰৰ পৰা গ্ৰহণ কৰা হৈছে। অন্য হাতে ডিম্বেশ্বৰ নেওগে বিহু গীতৰ অধ্যায় বিভাগ কৰিছে; কিন্তু এই অধ্যায়বোৰৰ নামকৰণ কৰা নাই।^{২০} বিহু গীতৰ আৰম্ভণি সূচিত হয় দেৱী সৰস্বতীৰ বন্দনাৰে :

প্ৰথমে প্ৰণামো / দেৱী সৰস্বতী / দ্বিতীয়ে প্ৰণামো হৰি

তৃতীয়ে প্ৰণামো / গাৱঁৰ বুঢ়া-মেথা / ধৰি যাওঁ নামৰে গুৰি।।^{২১}

পৃথিৱীৰ বিভিন্ন জাতিৰ মাজত প্ৰচলিত গীত-পদত দৈৱিক উৎপত্তিৰ (Divine Origin theory) মত একোটি জাপি দিয়াৰ নিচিনাকৈ ‘বিহু গীত’ৰ উৎপত্তিও ঈশ্বৰ, ব্ৰহ্মা আদিৰ পৰা হোৱা বুলি কোৱা হৈছে :

নামৰে কঠীয়া / ঈশ্বৰ দিছিলে / ব্ৰহ্মায়ে চৰজা নাম।^{২২}

কাতি বিহু বা কঙালী আৰু মাঘবিহু বা ভোগালী বিহুৰ প্ৰসঙ্গতো বিভিন্ন গীত-পদ গোৱা হয়। সেইদৰে ভঠেলি, সুৱেৰি বা সৰি, মহৌ-হৌ, গাছ বিয়া, আদিৰ অনুৰূপত নৃত্যসহ গীত-পদ পৰিৱেশন কৰা দেখা যায়।

পঞ্জিকা আশ্ৰয়ী উৎসৱ-অনুষ্ঠানসমূহ বিশেষভাৱে তিথি-বাৰ আদিৰ সৈতে জড়িত। পূজা-পাতল আদিয়েই পঞ্জিকা আশ্ৰয়ী উৎসৱ-অনুষ্ঠান। এই জাতীয় উৎসৱ অনুষ্ঠানৰ সন্দৰ্ভত বাদ্যযন্ত্ৰ আৰু নৃত্য সহ বিবিধ গীত-পদ গোৱা হয়।

সংস্কারমূলক বা জীৱন-বৃত্তিৰ সৈতে সম্পৃক্ত কৃত্য বা উৎসৱ-অনুষ্ঠানৰ প্ৰচলন পৃথিৱীৰ বিভিন্ন সমাজত প্ৰচলিত। জীৱনৰ বিভিন্ন স্তৰৰ লগত এই কৃত্যবোৰ সম্পৰ্কযুক্ত আৰু প্ৰতিটো কৃত্যৰ সৈতে গীত-পদ জড়িত। এই গীত-পদবোৰ সংস্কারমূলক গীত হিচাপে পৰিচিত। মানুহৰ জন্মৰ পৰা মৃত্যুলৈকে জড়িত এই গীতসমূহ অনেক ক্ষেত্ৰত উপদেশধৰ্মী। সংস্কারমূলক গীতবোৰ জাতকৰ্ম, অন্নপ্ৰাশন, চূড়াকৰণ, উপনয়ন, চুলত, তোলনী বিয়া, আগ বিয়া, পাচ বিয়া আৰু পোহন বা পুহন বিয়াৰ গীত ৰূপে পৰিচিত। এই ক্ষেত্ৰত বিয়া-গীতবোৰৰ ভূমিকা তাৎপৰ্যপূৰ্ণ অসমীয়া বিয়াৰ আৰম্ভণি হয় কইনাক আঙঠি পিন্ধোৱাৰ লগে লগে আৰু শেষ হয় বাহী বিয়াৰ লগে লগে আৰু এই বিভিন্ন স্তৰবোৰৰ সৈতে সজ্জা ৰক্ষা কৰি বিবিধ গীত-পদ আই-বাইসকলে গায়। আই-বাইসকলে গোৱা বিয়া গীতৰ লগত বাদ্য-যন্ত্ৰ বা নৃত্য প্ৰায়ে নাথাকে। পানী তোলা আৰু সুৱাগ তোলাৰ ক্ষেত্ৰত ইয়াৰ ব্যতিক্ৰম দেখা যায়। গীতবিলাকত বহুত সময়ত হৰ-গৌৰী বা কৃষ্ণ-কল্কিণীক নায়ক-নায়িকা কৰি লোৱা হয়, কিন্তু বৰ্ণনাবিলাক বাস্তৱৰ ওপৰত ভেঁজা লোৱা আৰু সেইবিলাক বিশ্লেষণ কৰিলে অসমীয়া সমাজৰ ৰীতি-নীতিৰ চিন পোৱা যায়। যোৰা নাম বা খিজা-গীদ বা নিন্দাপদবোৰ যথার্থতে অভিনৱ সৃষ্টি। পাৰম্পৰিক বিৰোধী ভাৱৰ আধাৰত এইবোৰৰ জন্ম - কইনা ঘৰীয়াই দৰা ঘৰীয়াৰ বিৰোধিতা কৰে আৰু দৰা ঘৰীয়াই কইনা ঘৰীয়াৰ বিৰোধিতা কৰে, কিন্তু এই বিৰোধ ক্ষণস্থায়ী, উদ্দেশ্য কৌতুকতা; যেনে —

(ক) খৰুৱা বেঙেনা /জোকা হৰি হৰি /ঐ ৰাম খৰুৱা বেঙেনাৰ জোকা হৰিহে।

হোমৰে গুৰিতে / দৰাটো বহিছে / ঐ ৰাম নাকত সেঙুনৰ থোপাহে।।....

(খ) ধান দিলি আছে হৰে চৰুৰ বুকত /নাচি নাচি কথা কৰে জবাকৰ আগত।।^{২০}.....

কৰ্ম-গীত বুলি বাচিক কলা বা লোকসাহিত্যৰ এটা উপভাগ হোৱা উচিত নে অনুচিত এই সন্দৰ্ভত পণ্ডিতসকলে সৰ্বজনগ্ৰাহ্য মত এটি গ্ৰহণ কৰা দেখা নাযায়। কিছুমানৰ মতে যি কোনো গীতেই কৰ্ম গীত বা শ্ৰম গীত বা Work song হ'ব পাৰে। সেই ফালৰ পৰা কৰ্মগীত বা শ্ৰম গীত নামৰ উপশ্ৰেণী এটিৰ প্ৰয়োজনীয়তা মানি লোৱা টান, তত্ৰাচ কৰ্ম-গীত বা Work song ৰূপে এটি উপশ্ৰেণী পৰম্পৰাগত লোকতত্ত্ববিদসকলে স্বীকাৰ কৰি আহিছে। ভাগৰ, অৱসাদ আদি দূৰ কৰি নৱ উৎসাহেৰে কৰ্ম সম্পাদন কৰিবলৈ কৰ্মীসকলক অনুপ্ৰেৰণা যোগোৱাই শ্ৰম-গীতৰ অন্যতম লক্ষ্য। অতি পুৰণি কালৰে পৰা

নাৱৰীয়া, গৰু বা ম'হৰ গাড়ীৰ, চালক মাছমৰীয়া, ধান বা খেৰ কাটোতা, খৰিকটীয়া, বোৱতী, শিপিনী, বাটে, কমাৰ, কুমাৰ, হালোৱা, সূতা কাটোতা আদি পৰিশ্ৰম কৰি পেটৰ ভাতসাঁজ উপাৰ্জন কৰা লোকে কৰ্মৰ পাৰদৰ্শিতা বঢ়াবৰ বাবে আৰু অৱসাদ বিদূৰণৰ অৰ্থে শ্ৰম গীত এককভাৱে বা দলগতভাৱে গাই আহিছে। পথাৰত কাম কৰি ডেকা-গাভৰুৱে প্ৰায়ে শ্ৰম বা কৰ্ম-গীত ৰূপে গায় প্ৰেম-প্ৰণয়ৰ গীত। শ্ৰম-গীতত বাদ্য-যন্ত্ৰ প্ৰায়ে ব্যৱহাৰ কৰা নহয়; কোৰ, খন্তি, কুঠাৰ, কাঁচি, হাত, ভৰি আদিয়ে অনেক ক্ষেত্ৰত বাদ্যযন্ত্ৰৰ প্ৰকাৰ্য সাধন কৰে। কৰ্ম অনুসৰি গীতৰ সুৰ-তাল আদি বিভিন্ন হোৱা স্বাভাৱিক। এনে ক্ষেত্ৰত বাৰমহী গীতবোৰ নাৰীসকলে শ্ৰম-গীতৰূপে গায়। শ্ৰম-গীতৰ উদাহৰণ স্বৰূপে তলত এটি গীত দিয়া হ'ল; যেনে:

দিহা : হে ভাল ভাল গকুলে। ঘিলা খেলা আছিলে।।

পদ : এহিমানৰ কথা সেহিমনে থওঁ / অতিথি সোধাৰ কথা দুই চাৰাষাৰ কওঁ।।
সৰুজনী উঠি বোলে ডাঙৰজনী বাই/অতিথি আহিল আমাৰ কি কৰা
উপায়।। এ ডাঙাৰ জনী উঠি বোলে নকৰোঁ চিন্তা। এ বাৰীৰ পচলা সৈতে
বান্ধি থৈছোঁ মিতা।।..

এই গীতটো দৰং অঞ্চলত প্ৰচলিত আৰু নাৱৰীয়াই নাও বাওঁতে গীতটো ব'ঠা আৰু দাঁৰৰ তালে তালে সম'খৰে গায়।

প্ৰেম-প্ৰণয়মূলক গীতৰ শ্ৰেণী বিভাজন জাতিগত বা তাত্ত্বিক শ্ৰেণী বিভাজনৰ অন্তৰ্গত নহয়, বিষয়বস্তুগত (thematic) শ্ৰেণী বিভাজনৰহে অন্তৰ্গত। সাধাৰণতে পূৰ্বৰাগ, অনুৰাগ, সন্তোগ, বিপ্লৱ, মিলন আদি ভাৱবিশিষ্ট গীতবোৰেই প্ৰেম-প্ৰণয়মূলক গীত। এই জাতীয় গীত প্ৰায়ে লিৰিকধৰ্মী। প্ৰেমিক বা প্ৰেমিকাৰ গুণ-গান কীৰ্তন এই বিধ গীতৰ অন্যতম প্ৰেৰণা। প্ৰেম-প্ৰণয়মূলক গীত ধৰ্মনিৰপেক্ষ হলেও ধৰ্মীয় কৃত্যৰ সৈতে সম্পৃক্ত অথবা যাদুমূলক মন্ত্ৰৰ মাজতো প্ৰেম-প্ৰণয়মূলক গীতৰ সন্কেত পোৱা যায়। এই জাতীয় গীত প্ৰায়ে দ্বৈত সঙ্গীতমূলক (antiphonal)। প্ৰেমিকে গীতেৰেই প্ৰশ্ন কৰে আৰু প্ৰেমিকাই গীতেৰেই উত্তৰ দিয়ে, অথবা প্ৰেমিকাই গীতৰ মাধ্যমেৰে প্ৰশ্ন কৰে আৰু প্ৰেমিকে আকৌ গীতৰ সহায়েৰেই সেই প্ৰশ্নৰ উত্তৰ দিয়ে। এনে গীতত প্ৰেমিক আৰু প্ৰেমাস্পদৰ গভীৰ আসক্তি আৰু অনুৰাগৰ গভীৰতা অনুভৱ কৰিব পাৰি;

প্রেমাস্পদ : তোমালৈ চাওঁতে / জাপনা দেওঁতে / ফুটিলে অঘয়া হলে।

তোমাৰ মন হ'লে / আমাৰ মন হ'লে / কি কৰিব কলিতাৰ কুলে।।

প্ৰেমিকা : কেলেই আহিলা / এনুৰা সময়ত / লগাব নোৱাৰোঁ মাত।

তোমাৰ খতি হ'ল / হাতৰ কাঠী-কামী / আমাৰ খতি হ'ল তাঁত।।^{১৪}

প্ৰেম-প্ৰণয়মূলক গীতৰ পৰিধিয়ে গোৱালপাৰা অঞ্চলত প্ৰচলিত ভাৱাইয়া আৰু ছতকা গীতবোৰকো সামৰিব পাৰে। লিৰিকেল সৌন্দৰ্যৰ বাবে এই দুয়ো বিধ গীত উল্লেখযোগ্য। আন আন লোকগীতৰ দৰে ভাৱাইয়া আৰু ছতকা কোনো ধৰণৰ ধৰ্মীয় অনুযজ্ঞত গোৱা নহয়, হিন্দু-মুচলমান আদি বিভিন্ন ধৰ্মৰ বিভিন্ন লোকে এই গীতবোৰ অতি আনন্দেৰে শুনে। ভাৱাইয়া গীতবোৰ ভাৱপ্ৰধান আৰু ছতকা-গীতবোৰ ব্যক্তিপ্ৰধান। দোতোৰা, মঞ্জিৰা আদি বাদ্যযন্ত্ৰৰ সহায়ত এই গীতবোৰ গোৱা হয়। ভাৱাইয়া গীতত পৰিস্ফুট প্ৰেম ডেকা-গাভৰুৰ ৰোমাণ্টিক প্ৰেম নহয়, বৰং অবিবাহিতা গাভৰুৰ দৈহিক আসক্তি, বিশেষকৈ যৌন জীৱনৰ আকাঙক্ষাৰ বেদনাৰ স্ফুৰণহে। উদাহৰণ স্বৰূপে তলত এটি ভাৱাইয়া গীত দিয়া হ'ল :

কিসেৰ মোৰ ৰাঞ্জন, কিসেৰ মোৰ বাঢ়ন

কিসেৰ মোৰ হুলদি বাটা,

মোৰ প্ৰাণ ধন অন্যেৰ বাৰী যায়

মোৰ অঙ্গিনাই দিয়া ঘাটা।

ও সজনী কাৰবা আগে কব মোৰ দুখেৰ কথা।।

মোৰ বন্ধু গান গায় মাথা তুলি না চায়,

মই নাৰী যাং জলেৰ ঘাটে।।...

চেতন হয় দেখং বন্ধু নাই বগলে

গাৱখান মোৰ চেংচেঙা কৰে।

ও সজনী কাৰ আগে কব মোৰ দুখেৰ কথা।।^{১৫}

ৰূপতত্ত্বৰ দৃষ্টিভঙ্গীৰ ফালৰ পৰা ভাৱাইয়া আৰু ছতকাৰ শ্ৰেণীত ধৰিব পৰা আৰু দুবিধ গীত গোৱালপাৰা অঞ্চলৰ মৌখিক পৰম্পৰাত প্ৰচলিত, আৰু এই দুবিধ গীত হৈছে মুইছাল আৰু মাছত গীত। এই দুয়ো বিধ গীতকেই শ্ৰমগীত বা কৰ্মগীত বুলিলেহে ৰজিতা খায়; যিহেতু ম'হ গোৱাল আৰু হাতীৰ মাউতে ক্ৰমে ম'হ চৰোৱা আৰু বনৰীয়া হাতী ধৰাৰ প্ৰসঙ্গত এই দুয়ো বিধ গীত গায় শ্ৰম লাঘৱৰ অৰ্থে। বাথানত দিনে ৰাতি কৰ্মব্যস্ত মুইছালৰ বিৰহ-ব্যথিতা মুইছাল-পত্নীৰ

অস্তৰত জাগি উঠা অবৰ্ণনীয় দুখ-যন্ত্ৰণাৰ কৰুণ চিত্ৰণেৰে মুইছাল গীতবোৰ স্বাক্ষৰ। কোনো কোনো মুইছাল গীতত আনৰ পত্নীৰ (পৰেৰ কামিনীৰ) প্ৰতি মুইছালৰ অস্তৰত উদ্ৰেক হোৱা অনুৰাগৰ বৰ্ণনা পোৱা যায়। মুইছালী গীতৰ উদাহৰণ স্বৰূপে তলত এটি গীত দিয়া হ'ল—

মুইছালেৰ সাথ কৰিয়া পীৰিতি
কি মোৰ জঞ্জাল হইলৰে,
ৰাও ৰে ন কাঢ়ে মুইছাল মনেৰ গৈৰবে ৰে।
পুৱালী বাতাসে ওৰে মধুয়াৰ আগাল ঢোলে,
আমাৰ শাৰীৰ আঞ্চল সদায় ঢুলি থাকে ৰে।
ঘৰেৰ পাছিলাতে আছে ৰে আঠিয়া কলাৰে আৰা,
অইতে না থুইচুং মুইছাল দৈ চিৰাৰ ঢোঙাৰে।।*১*

মুইছালী গীতৰ তুলনাত মাছত বা মাউত-গীতবোৰ ৰূপ আৰু বিষয়বস্তুৰ ক্ষেত্ৰত বৈশিষ্ট্যপূৰ্ণ। দ্বিতীয়তে, এইবিধ গীতৰ পটভূমিও অসাধাৰণ। সাধাৰণতে ধুবুৰী অঞ্চলৰ উত্তৰ আৰু দক্ষিণ ফালে অৱস্থিত চিৰ-সেউজীয়া গহীন হাবি আৰু পাহাৰত হাতী ধৰা হয় আৰু মাউত আৰু মাউতৰ লগৰীয়াসকলে সেই গহীন আৰু নিৰ্জন হাবি আৰু পাহাৰত মাহৰ পাচত মাহ কটাব লগীয়া হয়- তেওঁলোকৰ পৰিয়ালবৰ্গৰ পৰা সাময়িকভাৱে আঁতৰত থাকি। তেনে অৱস্থাত তেওঁলোক নিজকে নিজক সান্ত্বনা দিবৰ কাৰণে কিছুমান গীত গায় আৰু এই গীতবোৰ মাছত গীত বা মাউত গীত ৰূপে পৰিচিত। মাছত-গীতৰ কিছুমান গীত নতুনকৈ ধৰা হাতীক পোহ মনাবলৈ গোৱা হয়। এনে বিধৰ দুই-চাৰিটা গীত পুৰাণ-গত মালিতা সদৃশ। তলত দিয়া মালিতাটোৰ মতে সোণাৰ ৰাৰী আৰু তামৰ কলহত সদায় পানী অনা এজনী অসুখী ব্ৰাহ্মণ-পত্নীৰ ৰূপান্তৰিত অৱস্থাই হাতী :

হস্তী কন্যা হস্তী কন্যা বামুণেৰ নাৰী,
মাথায় নিয়া তাম কলসীও
সখি হাতে সোণাৰ ৰাৰী।
অ মোৰ হয় হস্তী কন্যা ৰে, খানিক দয়া নাই মাছতক লাগিয়া ৰে।.....
আকাশতে নাইৰে চন্দ্ৰ, তাৰায় কি কাম কৰে।
আৰ যেও নাৰীৰ পুৰুষ নাই ও সখী ৰূপে কি কাম কৰে।।
আগাৰি-পিচাৰি হস্তীৰ ফেলাইলং বান্ধিয়া।

হৰিনাম নিয়া সখিও বসিলং ভিড়িয়া।।^{২৭}

কিছুমান মাছত-গীতত মাছত সাময়িকভাৱে তেওঁৰ পত্নীৰ পৰা আঁতৰি থকাৰ সময়তেই তেওঁৰ সৈতে কোনো গাভৰু বা সদ্য-বিবাহিতা বধূৰ গভীৰ প্ৰণয় গঢ়ি উঠে :

ওৰে গেলিলে কি আসিবেন মোৰ মাছত বন্ধুৰে।।

হস্তী নৰাণ হস্তী চৰাণ, ডকুৱা বাঁশেৰ আৰা।

ওৰে কি সাপে দংশিলে বন্ধুৱাক, বন্ধুৱা হইল মোৰ খোৰাৰে।।

ৰোজাই ঝাড়ে গ্লানিকে ঝাড়ে ঢেঁকিয়াৰ আগাল দিয়া।

মই নাৰী ঝাৰং বিষ ঐ কেশেৰ আগাল দিয়া।।..

সত্য কৰিয়া কওৰে মাছত কোনবা দেশে বাৰী।।

সত্য কৰিয়া কইলং কথা গৌৰীপুৰে বাৰী।।...

খাটো-খুটো মাছতৰে তোৰ মুখে চাপ দাৰি।

সত্য কৰিয়া কওৰে কথা ঘৰে কয়জনা নাৰী।।

হস্তী চৰাণ হস্তী নৰাণ হস্তীৰ পাৰে দৰি।

সত্য কৰিয়া কইলং কথা বিয়াও নাই কৰি।।^{২৮}

ল'ৰা-ছোৱালীৰ সৈতে জড়িত গীত : 'Children Song' অথবা ল'ৰা-ছোৱালীৰ সৈতে জড়িত গীত পৃথিৱীৰ সৰ্ব সংস্কৃতিত লক্ষ্য কৰা যায়। এই গীতবোৰৰ মাজত সাদৃশ্যও চকুত লগা। পণ্ডিতসকলৰ মতে প্ৰাচীন ধৰ্মীয় কৃত্য আৰু বিশ্বাসৰ আধাৰতহে এই গীতসমূহৰ জন্ম। অসমীয়া ভাষাত প্ৰচলিত এই জাতীয় গীত তিনিটা উপশ্ৰেণীত বিভক্ত ; যেনে—

(ক) টোপনি নিওৱা গীত (Lullabies) (খ) নিচুকনি গীত (Nursery Rhymes) আৰু (গ) খেলা-ধুলাৰ সৈতে জড়িত গীত (Game Songs)।

অন্য হাতে নিৰ্বাহিকাৰ দৃষ্টিভঙ্গীৰে এই গীতসমূহ দুটা ভাগত বিভক্ত : (ক) ল'ৰা-ছোৱালীসকলে নিজে গোৱা গীত আৰু (খ) ল'ৰা-ছোৱালী ব্যতিৰেক আন লোকে, যেনে পিতাক, মাক, আইতাক (আবুৱেক) আৰু ককাক (আতাক) আদিয়ে গোৱা গীত। ল'ৰা-ছোৱালীয়ে নিজে গোৱা গীতৰ উদাহৰণ স্বৰূপে খেল-ধেমালিৰ সৈতে জড়িত গীত, বিদ্ৰূপাত্মক গীত, বৰশী বোৱা গীত আদি উল্লেখ কৰিব পাৰি। ল'ৰা-ছোৱালী ভিন্ন আন মানুহে গোৱা গীতৰ উদাহৰণ হিচাপে আমি টোপনি নিওৱা আৰু নিচুকনি গীতলৈ আঙুলিয়াব পাৰোঁ।

আলোচনাৰ সুবিধাৰ বাবে প্ৰথম শ্ৰেণীৰ বিভাজনটো গ্ৰহণ কৰা উচিত। এই শ্ৰেণী-বিভাজনত উল্লেখ কৰা টোপনি নিওৱা গীত, ল'ৰা-ছোৱালীৰ লগত জড়িত গীতৰ এটি অন্যতম উপশ্ৰেণী। যি গীত আবৃত্তি কৰি বা গাই মাক-বাপেক, ককাক-আইতাক বা ধাই আদিৰ দ্বাৰা সৰু সৰু ল'ৰা-ছোৱালীক টোপনি নিয়াবলৈ প্ৰয়াস কৰা হয়, সেই গীতৰ নাম কেঁচুৱা বা সৰু সৰু ল'ৰা-ছোৱালীক টোপনি নিওৱা গীত। এই জাতীয় গীতৰ ৰূপগত বৈশিষ্ট্য সৰল-সহজ। গুণগুণনিৰ সৃষ্টি কৰিব পৰা কোমল মধুৰ শব্দৰ প্ৰয়োগ, দেহ আৰু মন শান্ত কৰিব পৰা ধ্বনিৰ ব্যৱহাৰ আদি আন আন কেইটিমান বৈশিষ্ট্য এনে বিধৰ গীতত দেখা যায়। টোপনি নিওৱা গীতত সংখ্যা-গণনীৰ সৈতে ৰাজিতা খুৱাই শিশু মনৰ খেয়ালী ভাৱ প্ৰকাশ কৰিবলৈ যত্ন কৰা হয়। এই জাতীয় গীতৰ ভাষাৰ বিশেষ অৰ্থ নাই বুলি কোনো কোনো পণ্ডিতে ক'ব খোজে যদিও এই কথা মানি লোৱা টান, যিহেতু শিশুৰ সৈতে জড়িত গীতবোৰ সামাজিক ব্যাপাৰ, গতিকে সামাজিক ব্যাপাৰ হিচাপে এইবোৰ অৰ্থবিশিষ্ট হোৱাই স্বাভাৱিক, আমি সেই ভাষা বুজি নেপাব পাৰোঁ। সাস্কীতিক দিশত গীতবোৰ চহকী নহলেও ইয়াত সাস্কীতিক আকৰ্ষণ নাই বুলিও ক'ব নোৱাৰি। যেনে :

আমাৰে মইনা শুব-এ / বাৰীতে বগৰী ৰুব-এ।

বাৰীৰে বগৰী পকি সৰিব / মইনাই বুটলি খাব-এ।।

(খ) কান্দি থকা শিশুক শান্ত কৰিবলৈ, গাখীৰ-কল-ভাত আদি খুৱাবলৈ মাক, আইতাক, বায়েক আদিয়ে গোৱা গীতৰ নামেই নিচুকনি গীত। এই বিধ প্ৰায়ে সংখ্যাবাচক, খেয়ালী ভাব-বিশিষ্ট, পাৰম্পৰিক সঙ্গতিবিহীন আৰু যুক্তি-বিহীন। এই জাতীয় গীতৰ লগত কাৰ্য বা আচৰণ জড়িত হৈ থাকে, কেতিয়াবা কেতিয়াবা গায়িকাই গীতৰ লগত নিৰ্বাক অভিনয়ো কৰি দেখুৱায়। নিচুকনি গীতৰ উদাহৰণ স্বৰূপে তলত এই জাতীয় এটি গীত দিয়া হ'ল :

এক তৰা, দুই তৰা / সৰগত বহি কি কৰা?

আম কঁঠাল লেতুক তুক / পুৱাই উঠি ভুতুক তুক।।

(গ) খেলা ধূলাৰ সৈতে জড়িত গীতবোৰো শিশুৰ সৈতে জড়িত। মানুহৰ কথা বাদেই চৰাই, চিৰিকতি, জন্তু আদিয়ে খেলা-ধূলা কৰি আনন্দ লাভ কৰে। ল'ৰা-ছোৱালীয়েও খেলিবলৈ পালে লাভ কৰে পৰম সন্তুষ্টি। এই আনন্দ অপাৰ্থিৱ, বাস্তৱ জীৱনৰ সৈতে ইয়াৰ কোনো সম্পৰ্ক নাই। খেলা-ধূলা ল'ৰা-ছোৱালীৰ বাবে

ভৱিষ্যত জীৱনৰ প্ৰস্তুতি মাথোন। এই জাতীয় গীতৰ অৰ্থ বিচাৰি পোৱা টান, ধ্বন্যাঙ্কক ক্ৰিয়া সম্পাদনৰ বাবেই গীত বা পদ ব্যৱহাৰ কৰা হয়। অনুশ্ৰাসৰ ক্ষিপ্ৰতাই অৰ্থৰ তুলনাত অধিক গুৰুত্ব লাভ কৰে। এই জাতীয় গীতৰ এটি উদাহৰণ তলত দিয়া হ'ল। গীতটো হাত লুকাই থোৱা খেলৰ সৈতে সম্পৰ্কযুক্ত। যেনে—

বগলী, বগলী, তোমাৰ হাত দুখন কিহে নিলে?

আম পাৰোঁতে আমে নিলে।।

সেই আম কি হ'ল? হাবিত পৰিল।

সেই হাবি কি হ'ল? পুৰি গ'ল।

সেই ছাই কোনে নিলে? ধোবাই নিলে।।...

শিশুৰ লগত জড়িত গীতবোৰ যি কল্পনাৰ ওপৰত ভেঁজা লৈ সৃষ্টি হয় সেই কল্পনা প্ৰবীণ লোকৰ স্বাভাৱিক কল্পনা নহয়, শিশু মনৰহে। কিন্তু শিশুৰ জীৱন ছুব লাগে বুলিয়ে এই কল্পনা সহানুভূতিৰ সহায়ত শিশুসুলভ হৈ পৰে। শব্দযোজনা... কাণত বজা ছন্দ নিচুকনি আৰু খেল-ধেমালিৰ গীত দুয়ো বিধৰে বিশেষত্ব।^{১০৬}

বিবিধ বিষয়ক গীত : ইতিমধ্যে উল্লেখ কৰি অহা শ্ৰেণী-বিভাজনৰ পৰিসৰে সামৰিব নোৱৰা কিছুমান গীত অসমীয়া ভাষাত পোৱা যায়। এই গীতখিনিক বিবিধ বিষয়ক গীত বোলা হৈছে। এইবিধ গীতৰ ভিতৰত কিছুমান হাস্য আৰু ব্যঙ্গ্যভাৱ বিশিষ্ট, যেনে - তামোল-চোৰৰ গীত, চাহ-পুৰাণৰ গীত, বেলগা-পুৰাণৰ গীত ইত্যাদি। কপাহৰ জুনা, পচলাৰ জুনা, তাঁতীৰ জুনা আদি গীতে পাতল হাস্যৰস উদ্ৰেক কৰিব পাৰে।

— ড° নবীন চন্দ্ৰ শৰ্মা

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- ১। Maria Leach (ed.), *Standard Dictionary of Folklore Mythology and Legend*, New York, 1972, p. 106
- ২। সংবাদদাত্ৰী : শ্ৰীসাবদা দাস (৫০) মৰনৈ, গোৱালপাৰা
- ৩। লভিত কুমাৰ শইকীয়া (সম্পা). *সোণোৱাল কছাৰী সংস্কৃতি হয়দাং আৰু ক্ষুদ্ৰি*, মেগেলা, ছৈখোৱা ঘাট, ডিব্ৰুগড়, ১৯৮১, পৃ: ৩৪-৪৫
- ৪। নৰেশ্বৰ শৰ্মা বৰুৱা (সম্পা), *গীত-মালিচা*-বন্দনা, পৃ: ৯৯.
- ৫। নবীন চন্দ্ৰ শৰ্মা, *অসমীয়া ভাষা আৰু সাহিত্যৰ ৰূপৰেখা*, ১৯৭০, পৃ: ১১১
- ৬। প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামী, *অসমীয়া জন সাহিত্য* ১৯৯৪, পৃ: ৯৫-৯৬

২৫৬ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

- ৭। সংবাদ দাতা : শ্ৰী খৰ্গেশ্বৰ সূত্ৰধাৰ ওয়া (৬) ৰংজুলি, গোৱালপাৰা, ৫-৬-৮৭
- ৮। নৰেশ্বৰ শৰ্মা বৰুৱা (সম্পা), গীত-মালটি-বন্দনা, গুৱাহাটী, ১৯৯৫, পৃ : ৯
- ৯। সংবাদদাত্ৰী : শ্ৰীমতী লতা দেৱী (৪৮), দুৰ্গা, দৰং
- ১০। প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামীৰ অসমীয়া জনসাহিত্য-ৰ পৰা উদ্ধৃত, পৃ : ৮৮
- ১১। উক্ত গ্ৰন্থৰ পৰা উদ্ধৃত, পৃ : ৮৯
- ১২। W. Crooke, *Popular Religion and Folklore of Northern India*, Vol 1., p. 265
- ১৩। ধীৰেন দাস, গোৱালপৰীয়া লোক সাংস্কৃতি আৰু লোকগীত, পৃ : ১৫৭
- ১৪। উক্ত গ্ৰন্থ, পৃ : ১৬৬
- ১৫। প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামী, প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃ : ১০৯
- ১৬। উক্ত গ্ৰন্থ, পৃ : ১১১
- ১৭। হেমন্ত কুমাৰ শৰ্মাৰ দ্বাৰা সংগৃহীত আৰু সম্পাদিত অসমীয়া লোকগীতি সঞ্চয়ন-ৰ পৰা উদ্ধৃত, পৃ : ১৩১-৩২
- ১৮। প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামী, প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃ : ১৯
- ১৯। নকুল চন্দ্ৰ ভূঞাৰ বহাগী দ্ৰষ্টব্য
- ২০। ডিম্বেশ্বৰ নেওগৰ আকুল-পথিক (বা বনঘোষা) দ্ৰ :
- ২১। আকুল পথিক, যোৰহাট, ১৯৪৪, পৃ : ১
- ২২। উক্ত গ্ৰন্থ
- ২৩। প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামী, প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃ : ৮৭-৮৮
- ২৪। নকুল চন্দ্ৰ ভূঞা (সম্পা), প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃ : ৯৯
- ২৫। হেমন্ত কুমাৰ শৰ্মা (সম্পা), প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃ : ২৭০
- ২৬। উক্ত গ্ৰন্থ, পৃ : ২৬৯
- ২৭। উক্ত গ্ৰন্থ পৃ : ২৬৭
- ২৮। উক্ত গ্ৰন্থ, পৃ : ২৬৮
- ২৯। প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামী, প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃ : ৮৯-৯১

সাধুকথা

(খ)

‘সাধুকথা’ পদটোৰে সাধাৰণতে গদ্য-ৰূপত প্ৰচলিত পৰম্পৰাগত মৌলিক কাহিনীক সূচোৱা হৈছে। আজি-কালি গদ্য ৰূপত প্ৰচলিত কাহিনীক বুজাবৰ বাবে ইংৰাজীত Prose narratives পদটো প্ৰয়োগ কৰা হয়। গদ্য-ৰূপত প্ৰচলিত বা গদ্য-গন্ধী লোককথা বা কাহিনীক ইয়াৰ বিষয়বস্তুৰ সংযুতি আৰু প্ৰসঙ্গ অনুসৰি তিনিটা শ্ৰেণীত ভাগ কৰিব পাৰি, যেনে—

(ক) পুৰাণকথা বা পুৰাকথা বা পুৰাবৃত্ত বা অতিকথা (myth);

(খ) জনশ্ৰুতিমূলক বা জনশ্ৰুতিগত কথা বা কাহিনী (legend) আৰু

(গ) সাধুকথা, সাধু, সাজোকথা, উপকথা, উককথা, কিচ্ছা, কাহিনী (tale)।

(ক) পুৰাণ কথা বা পুৰাকথা বা পুৰাবৃত্ত বা অতিকথা : অতি পুৰণি কালত উৎপত্তি হোৱা আৰু সত্য বুলি ঠাৱৰ কৰা বা গণ্য কৰা পৰম্পৰাগত কাহিনীৰ নাম ‘মিথ’ বা পুৰাণ কথা বা পুৰা কথা। কোনো জনগোষ্ঠীৰ সৃষ্টিতত্ত্ব আৰু অলৌকিক পৰম্পৰা, তেওঁলোকৰ বিশ্বাসত স্থান পোৱা দেৱ-দেৱী আৰু বীৰ-পুৰুষৰ কাৰ্য্যৱলী তথা সেই জনগোষ্ঠীৰ সাংস্কৃতিক লক্ষণ, ধৰ্মীয় বিশ্বাস আদিয়েই মিথৰ প্ৰধান উপজীব্য। মিথ বা পুৰাণ কথাক সূচাবৰ বাবে অঞ্চল বিশেষে ‘গোসাঁই-কথা’ অভিধাটিও প্ৰয়োগ কৰা দেখা যায়।

(খ) জনশ্ৰুতিমূলক বা জনশ্ৰুতিগত কথা বা কাহিনী : ধৰ্মীয় প্ৰসঙ্গ বা ভোজমেলত গৈ বা আবৃত্ত বা কথিত সাধুপুৰুষ বা শ্বহীদৰ জীৱন-বৃত্তৰ বৰ্ণনাক জনশ্ৰুতিমূলক বা জনশ্ৰুতিগত কথা বা কাহিনী বুলিব পাৰি। জনশ্ৰুতিগত কাহিনীত পৰম্পৰাগত সমল বা উপাদান সংযোজন কৰি ব্যক্তি, স্থান বা ঘটনা আদিৰ বৰ্ণনা দিয়া হয়। পুৰাণ-কথা আৰু জনশ্ৰুতিগত কথাৰ মাজত স্পষ্টকৈ পাৰ্থক্য দেখুৱাই দিয়া টান। পুৰাণ-কথাৰ দৰে জনশ্ৰুতিগত কথায়ো সামাজিক ৰূপকৰ আধাৰত পল্লৱিত। গতিকে উভয়ৰে উপৰুৱা আৰু ভিতৰুৱা অৰ্থ আছে আৰু উভয়েই

সামাজিক বাস্তৱিকতাৰ ওপৰত আলোকসম্পাত কৰে। কোনো কোনো ক্ষেত্ৰত জনশ্ৰুতিগত কাহিনীয়েই পুৰাণ-কথা স্বৰূপে; অথবা পুৰাণ-কথাই জনশ্ৰুতিগত কথাৰূপে বিবেচিত হ'ব পাৰে। নৰকাসুৰ সম্পৰ্কীয় কাহিনীভাগ পুৰাণ-কথা, অথবা জনশ্ৰুতিগত কাহিনী স্বৰূপে ধৰা দিব পাৰে। প্ৰসঙ্গ বা অনুসঙ্গ অনুযায়ী এটা লোককথাই পুৰাণ-কথা বা জনশ্ৰুতিগত কথা হিচাপে বিবেচিত হ'ব পাৰে। ভীমে শিৱৰ ঘৰত খেতি কৰা বিষয়ক কাহিনীটো জনশ্ৰুতিগত কথা; কিন্তু বাহীবিয়াৰ অনুসঙ্গত এই কাহিনীভাগ বৰ্ণিত হ'লে ই পুৰাণগত কথা।

(গ) সাধুকথা, সাধু, সাজোকথা, উপকথা, উককথা, কিছা, কাহিনী : ইংৰাজী tale পৰিভাষাৰ অৰ্থ বুজাবৰ বাবে অসমৰ বিভিন্ন অঞ্চলত সাধুকথা, সাধু, সাজোকথা, উপকথা, উককথা, কিছা, কাহিনী, চলোবাতা আদি অভিধা প্ৰয়োগ কৰা হয়। এই অভিধা কেইটিৰ ভিতৰত তুলনামূলকভাৱে অধিক প্ৰয়োগ হোৱা অভিধাটি হৈছে সাধু বা সাধুকথা। ড° প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামীৰ মতে সাধু অৰ্থাৎ সদাগৰবিলাকে বেপাৰ কৰিবলৈ বিভিন্ন অঞ্চল বা দেশলৈ গৈছিল। তেওঁলোকে সেইবোৰ অঞ্চলত বা দেশত বিভিন্ন পৰম্পৰৰ মৌখিক কথা শুনিছিল আৰু ঘূৰি আহি নিজ অঞ্চলত সেই কথাবোৰ কৈছিল। গতিকে সাধুৱে কোৱা কথাবোৰেই সাধুকথা বা সাধু।^{৩৭}

সাধুকথা গদ্যধৰ্মী কাহিনী আৰু এইবিধ বাচিক কলাক কাল্পনিক বুলি বিবেচনা কৰা হয়। সাধুকথাই প্ৰায়ে স্বমতাপ্ৰহ প্ৰকাশ নকৰে আৰু ইতিহাসৰ সমলো এইবিধ বাচিক কলাই দিব নোৱাৰে যেন লাগে। সাধুকথা কঁৰবাত সংঘটিত হোৱা বুলি কোৱা টান। এইবিধ কলাত ধৰ্মীয় ভাৱৰ ওপৰত বৰ বেছি গুৰুত্ব দিয়া নহয় যেন লাগে। আনন্দ প্ৰদানৰ বাবেই সাধুকথা কোৱা হয় বুলি বহুতে ভাবে যদিও সাধুকথাই বিভিন্ন সামাজিক প্ৰকাৰ্য সাধন কৰি আহিছে। নীতি-শিক্ষা দানত এই কথাবিলাকৰ ভূমিকা স্বীকাৰ কৰিবই লাগিব। সাধুকথা যি কোনো সময় আৰু যি কোনো ঠাইতে ৰচিত হ'ব পাৰে। সেই কাৰণে এইবিধ লোককথাক প্ৰায়ে সময় আৰু স্থান নিৰপেক্ষ বুলিব পাৰি। সাধুকথাবোৰ ল'ৰা-ছোৱালীৰ বাবেই নহয়, বয়সত প্ৰবীণসকলেও ইয়াৰ পৰা সমাজৰ বিভিন্ন আচৰণৰ আভাস পায়। সাধুকথাবোৰ সামাজিক ৰূপকৰ ভিত্তিত ৰচিত, গতিকে এইবোৰে সামাজিক জীৱনক প্ৰতিফলিত কৰিব পাৰে। পৰীৰ সাধু (fairy tales) ৰূপেও সাধুকথা পৰিচিত। পৰীৰ সাধুত বৰ্ণিত কাহিনী সত্যৰ ওপৰত প্ৰতিষ্ঠিত বুলি ক'ব খোজে;

কিন্তু সাধুকথাত পৰীয়ে দেখা নিদিয়ে। পৰী মানবৰ খেয়ালী মন আৰু বাসনাৰ অভিব্যক্তি।

সাধাৰণতে পৰম্পৰাগত সাধুকথা কিছুমানৰ আৰম্ভণিত নাইবা শেষত অথবা উভয়তে মূল কাহিনী ভাগৰ সৈতে সম্পৰ্কবিহীন কেইটিমান বাক্য বা উক্তি থাকে। কোনো কোনো পণ্ডিতে এনে বৰ্ণনা বা উক্তিৰ নাম দিছে আৰম্ভণিৰ সাক্ষেতিক চিহ্ন অৰ্থাৎ opening formula আৰু পৰিণতি বা সমাপ্তিৰ সাক্ষেতিক চিহ্ন অৰ্থাৎ closing formula। কোনো কোনো পণ্ডিতে আকৌ এনে বৰ্ণনা বা উক্তিৰ নাম দিছে মুক্ত উপাদান অৰ্থাৎ free element। অসমীয়া সাধুকথাৰ দুই এটাত এনে মুক্ত উপাদানে স্থান লাভ কৰিছে। সাধুকথাৰ কাহিনীৰ প্ৰতি শ্ৰোতাক সজাগ কৰি দিয়া আৰু সাধুকথাৰ জগতৰ পৰা তেওঁলোকক আঁতৰাই আনি ক্ৰমে আৰম্ভণিৰ আৰু পৰিসমাপ্তিৰ সাক্ষেতিক চিহ্নৰ উদ্দেশ্য।

সাধুকথাৰ শ্ৰেণী বিভাজন : বিষয়বস্তুৰ বিভিন্নতা অনুসৰি সাধুকথাবোৰ কেইটিমান উপভাগত বিভক্ত; যেনে :

- (ক) জন্তুকেন্দ্ৰিক সাধুকথা,
- (খ) যাদুমূলক বা বিস্ময়াবহ বা ৰোমান্টিক বা অতিলৌকিক সাধুকথা,
- (গ) নৈদানিক সাধুকথা বা ব্যাখ্যামূলক সাধুকথা,
- (ঘ) টেটকুটি,
- (ঙ) টেটোন বা টেটনৰ সাধুকথা,
- (চ) ক্ৰমপুঞ্জিত বা নিৰ্ধাৰিতগঢ়ী সাধুকথা,
- (ছ) সমস্যামূলক সাধুকথা,
- (জ) কথা-গীত (Cante-fable),
- (ঝ) অন্তহীন সাধুকথা, আৰু
- (ঞ) ধৰ্মমূলক সাধুকথা।

(ক) **জন্তুকেন্দ্রিক সাধুকথা :** জন্তুকেন্দ্রিক সাধুকথা অৱয়বৰ ফালৰ পৰা বৰ দীঘলীয়া নহয়। এইবিধ সাধুকথাৰ মুখ্য চৰিত্ৰ জন্তুৰ মাজত সীমিত আৰু জন্তু-চৰিত্ৰৰ দুঃসাহসিক ঘটনাৰ বৰ্ণনে ইয়াত প্ৰাধান্য লাভ কৰে। জন্তুকেন্দ্রিক সাধুকথাত স্থান পোৱা জন্তুবোৰে মানুহৰ দৰে ভূমিকা গ্ৰহণ কৰে আৰু এই জন্তুবোৰৰ জগতখনো মানুহৰ জগতৰ দৰে। এইবিধ সাধুকথাৰ কথাবস্ত্তৰ সংযুতি আৰু শৈলী সৰল আৰু কাহিনী বা কথা-বস্ত্তত পূৰ্বপক্ষ আৰু প্ৰতিপক্ষৰ মাজত সমান্তৰালতা বৈশিষ্ট্য লক্ষ্য কৰা যায়। চালাক বা মুৰ্খ টেটোনে অন্য এটা জন্তুক ঠগাবলৈ চেষ্টা কৰি কৃতকাৰ্যতা লাভ কৰে; অথবা নিজে ফান্দত পৰে। সাধাৰণতে বান্দৰ/শিয়াল; শিয়াল/কুকুৰনেচীয়া বাঘ/গাহৰি; শহা/শিয়াল; শিঙাল হৰিণ/নাহৰফুটুকীয়া বাঘ; বান্দৰ/বাঘ; শিয়াল/কাছ; কৈকোৰা/বাঘ; বগলী/বাঘ; শিয়াল/ঘঁৰিয়াল; টুনী/টোৰা কাউৰী আদিৰ মাজত বিৰোধ সংঘটিত হোৱাৰ পৰিচয় জন্তুকেন্দ্রিক সাধুকথাত পোৱা যায়। ইউৰোপ আৰু ভাৰতত কেইটিমান জন্তুৱেহে সাধাৰণতে সাধুকথাৰ চৰিত্ৰ স্বৰূপে দেখা দিয়ে। ভাৰতৰ দৰে মধ্যযুগৰ ফ্ৰান্স আৰু জাৰ্মানীত শিয়াল অতিকৈ ধূৰ্ত, ভালুক অঁকৰা, সিংহ শক্তিশালী কিন্তু টেঙৰ নহয়, কুকুৰা অনভিজ্ঞ। পঞ্চতন্ত্ৰৰ সাধুকথাবিলাকতো শিয়াল আৰু কাউৰীৰ ভূমিকা চাব লগীয়া। ভাৰতীয় সাধুত শিয়াল ধূৰ্ত, বান্দৰ লুভীয়া আৰু বাঘ অঁকৰা।^{৫৭} নীতিমূলক সাধুকথাৰ নামেই নীতিকথা বা ফেইবল (fable)। শিয়াল আৰু ঘঁৰিয়াল আদি সাধুকথা ফেইবল শ্ৰেণীৰ।

(খ) **যাদুমূলক বা বিস্ময়াবহ বা ৰোমান্টিক বা অতিলৌকিক সাধুকথাঃ** যাদুমূলক সাধুক জাৰ্মান ভাষাত ‘মাশ্যেন’ (Märchen) স্বৰূপে পৰিচিত। ইংৰাজী ভাষাত এইবিধ সাধু যাদুমূলক সাধুকথা, পৰীৰ সাধু আৰু বীৰৰ সাধু (Hero tale) নামেৰেও জনাজাত। এই শ্ৰেণীৰ সাধুকথাবিলাকৰ চিন্তা-চৰ্চা, বিচাৰ-বিশ্লেষণ চলিয়েই আছে। যাদুমূলক সাধুকথাৰ সমাদৰ কমা নাই, বাঢ়িছেহে। যাদুমূলক সাধুকথাত সন্নিবিষ্ট অতিলৌকিক সমলৰ ওপৰত গুৰুত্ব প্ৰদান কৰি আৰণে-থম্পছনৰ সূচীত ইয়াৰ শ্ৰেণীবিভাজন তলত দিয়াৰ দৰে কৰা হৈছে ; যেনেঃ

অতিলৌকিক প্ৰতিনায়ক—অতিলৌকিক অথবা সম্বোধিত স্বামী (পত্নী) নাইবা অন্য সম্পৰ্কীয় লোক— অতিলৌকিক কৰ্মসম্পাদন— অতিলৌকিক সহায়কাৰী— যাদুমূলক বস্ত্ত-অতিলৌকিক শক্তি আৰু জ্ঞান : অতিলৌকিক দুঃসাহসিক কৰ্মসম্পাদনৰ প্ৰতি মানৱৰ আকৰ্ষণ যাদুমূলক সাধুকথাৰ বিষয়বস্ত্তৰ

অন্যতম বিশেষত্ব। যাদুমূলক সাধুকথাত আমি পাওঁ সাধাৰণ মানুহ এগৰাকীৰ অতিমানৱীয় শক্তিৰ সৈতে সংঘৰ্ষ আৰু অতিলৌকিক কাৰ্য সম্পাদনৰ বাবে তেওঁৰ প্ৰয়োজনীয় শক্তি লাভ। এইবিধ লোককথা এক নায়ক-বিশিষ্ট আৰু ই যথার্থতে দুঃসাহসিক কাহিনী। যাদুমূলক সাধুকথাত থাকে প্ৰতীকী অৰ্থ। কোনো কোনো পণ্ডিতৰ মতে যাদুমূলক সাধুকথা বাস্তৱ জগতৰ উদ্ভট কল্পনাৰ প্ৰতিফলন মাথোন। মানৱৰ অৱদমিত বাসনাই যাদুমূলক সাধুকথাৰ জড়িয়েতে বাস্তৱৰূপ পৰিগ্ৰহ কৰে। সামাজিক অন্যায়ৰ বিৰুদ্ধে শোষিতৰ অন্তৰত সুপ্ত হৈ থকা বিদ্ৰোহ-আকাঙক্ষাই যাদুমূলক সাধুকথাৰ মাধ্যমেৰে মূৰ্ত ৰূপ লাভ কৰে বুলি আন এদল পণ্ডিতে ভাবে। মুঠতে যাদুমূলক সাধুকথা মানৱ-ইতিহাসৰ এক মূল্যবান দলিল। ফুলকোঁৱৰৰ সাধু, মণিকোঁৱৰৰ সাধু, তেজীমলাৰ সাধু, কমলাকুঁৱৰীৰ সাধু, তেজা আৰু তেজীৰ সাধু, পান্টে, চম্পাৱতী আদি অসমীয়া ভাষাৰ উল্লেখযোগ্য যাদুমূলক সাধুকথা।

(গ) নৈদানিক সাধুকথা বা ব্যাখ্যামূলক সাধুকথা : নৈদানিক বা ব্যাখ্যামূলক সাধুকথাত সাধাৰণতে জগত সৃষ্টি বিভিন্ন বস্তুৰ উৎপত্তি, যেনে : পূজাদি কৃত্যৰ লগত সম্পৃক্ত বিভিন্ন বস্তু, যেনে : আম-গছ, ঘিঁউ, তামোল-পাণ, পিঠাগুৰি আদি; প্ৰাকৃতিক ব্যাপাৰৰ ব্যাখ্যা, পৰ্বত-পাহাৰ আদিৰ জন্ম, নদ-নদী, পুখুৰী-হ্ৰদ আদিৰ উৎপত্তি, গছ-গছনি, লতা-লতিকা আদিৰ জন্ম বা উৎপত্তিৰ বৰ্ণনা পোৱা যায়। হুদু, ফেঁচা, বগলী, যমডাকিনী, কেতেকী, কপৌ, মইনা আদিৰ জন্ম সম্পৰ্কীয় সাধু অসমৰ বিভিন্ন জনজাতীয় ভাষা আৰু অসমীয়া ভাষাত পোৱা যায়। কিয় হ'ল? বা কেনেকৈ হ'ল? এনে প্ৰশ্নৰ উত্তৰ বা ব্যাখ্যা সন্নিবিষ্ট সাধুকথাবোৰেই নৈদানিক বা ব্যাখ্যামূলক সাধুকথা। সাধাৰণতে স্থানীয় জনশ্ৰুতিগত কাহিনীয়েই ব্যাখ্যামূলক সাধুকথা।

(ঘ) টেটকুটি : টেটকুটি আভিধাটিৰে সাধাৰণতে হাস্য-ব্যঙ্গ-প্ৰধান সাধুবোৰ সূচিত হয়। হাস্য-ব্যঙ্গ-প্ৰধান সাধুকথাৰ পৰিসৰ বহল। সাধুকথাৰ এই উপশ্ৰেণীটোৱে ঠাট্টা-মস্কৰা বিষয়ক সাধুকথা (Jest), ক্ষুদ্ৰ সত্য কাহিনী (Anecdote), ব্যঙ্গাত্মক সাধুকথা (Joke) আদিক সামৰে। অসমীয়া ভাষাত Joke বা Humorous taleৰ প্ৰতিশব্দৰূপে টেটকুটি পদটো পোনতে প্ৰয়োগ কৰিছে ড° প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামীয়ে তেওঁৰ 'টেটকুটি' নামৰ গ্ৰন্থখনত। টেটকুটিবোৰ তেনেই চুটি, ইয়াৰ ব্যঙ্গ-হাস্যও অনেক পৰিমাণে মসৃণ। নাটকীয় উক্তি-প্ৰত্যাশা আৰু প্ৰশ্ন-উত্তৰ আদিয়েও টেটকুটিত স্থান পায়। টেটকুটি বিভিন্ন প্ৰকাৰৰ হ'ব

পাৰে, যেনে : গোসাই প্ৰভুৰ টেটকুটি, ব্ৰাহ্মণ-ঠাকুৰৰ টেটকুটি, শইকিয়ানী আৰু হাজৰিকানীৰ টেটকুটি ইত্যাদি। এই জাতীয় টেটকুটিবিলাক প্ৰায়ে বাস্তৱানুগ।

ক্ষুদ্ৰ সত্যকাহিনী (Anecdote) : এনেক্‌ডোট বা ক্ষুদ্ৰ সত্য কাহিনী পল্লৱিত হয় ব্যক্তি, জন্তু, স্বৰ্ণযোগ্য ঘটনা, স্থান আদিক কেন্দ্ৰ কৰি। সাহিত্যিক (অৰ্থাৎ লিখিত) আৰু মৌখিক এই দুই প্ৰকাৰ এনেক্‌ডোট প্ৰচলিত। অৱশ্যে দুয়ো বিধৰে বিষয়-বস্তুৰ ক্ষেত্ৰত পাৰ্থক্য নাই। ‘গাজা-খুৰি’ কথাৰ যেনেকৈ নিৰ্দিষ্ট ৰূপ (form) নাই, তদ্রূপ এনেক্‌ডোটৰো নিৰ্দিষ্ট ৰূপ নাই। স্বৰ্ণযোগ্য বা বৈদক্ষ্যপূৰ্ণ উক্তি, মূৰ্খামি, ভ্ৰমণ, যুদ্ধ, কৰ্ম, দুঃসাহসিক ঘটনা, দুৰ্ঘটনা, মিছাকথা আদি বাস্তৱানুগ হাস্যাত্মক কাহিনী এনেক্‌ডোটৰ ৰূপত প্ৰচলিত।

মূৰ্খৰ সাধুকথা : হাস্য-ব্যঙ্গ্য সাধুকথাৰ আন এটি উপশ্ৰেণী মূৰ্খৰ সাধুকথাৰ জড়িয়তে কোনো এটা জনগোষ্ঠীৰ মূৰ্খামিক সামগ্ৰিকভাৱে বিদ্ৰূপ বা ঠাট্টা কৰা হয়। আঙ্গিকৰ দিশত মূৰ্খৰ সাধুকথা আৰু এনেক্‌ডোটৰ মাজত মিল আছে। অসমীয়া ভাষা আৰু অসমৰ জনজাতীয় ভাষাত মূৰ্খৰ সাধুকথাৰ প্ৰচলন লক্ষ্য কৰা যায়। অসমীয়া ভাষাত প্ৰচলিত এই জাতীয় সাধুকথাৰ ভিতৰত সাত মূৰ্খ, বামুণৰ কহুৱা, মূৰ্খ জোঁৱাই, অজলা টৌমুৰা, ফৰিং সৰবজান, জ্যোতিষী আদি উল্লেখযোগ্য।

(৬) **টেটোন বা টেণ্টনৰ সাধুকথা :** টেটোন বা টেণ্টন জাতীয় সাধুকথাবিলাক ইংৰাজীত ত্ৰিক্‌ষ্টাৰ টেইলছ (Trickster tales) নামেৰে পৰিচিত। টেটোন জাতীয় সাধুকথাৰ অন্যতম প্ৰধান চৰিত্ৰ বা নায়কে আন চৰিত্ৰক প্ৰতাৰণা কৰে বা ঠগায়। সমাজৰ পটভূমিত জেদী আৰু অনমনীয় চাৰিত্ৰিক বৈশিষ্ট্য সম্বলিত টেটোনৰ জন্তু। টেটোন অসংযত আৰু সাঙুৰাতিক ধৰণৰ চৰিত্ৰ। আদিম অধিবাসী, কৃষক, নগৰীয়া আদি সকলো শ্ৰেণীৰ লোকক বিমল আনন্দ যোগাই অহা টেটোন চৰিত্ৰই মকৰা বা শহাপছ অথবা সিংহ বা বাঘ নাইবা পৰিহাস্যকাৰক বা মূৰ্খ ৰূপত আত্মপ্ৰকাশ কৰে। এনে চৰিত্ৰই হাস্যোদ্দীপক অভিনয় বা ভাণ্ডনা কৰে শ্ৰোতাৰ মনোৰঞ্জনৰ বাবে। অৱশ্যে এই অভিনয় বা ভাণ্ডনাৰ অন্তৰালত সামাজিক প্ৰকাৰ্য অঙ্গীভূত হৈ থাকে। মনস্তাত্ত্বিক দৃষ্টিভঙ্গীৰ ফালৰ পৰাও টেটোন চৰিত্ৰ বিশ্লেষণ কৰিব পাৰি বিশেষকৈ মানুহ আৰু তেওঁৰ পৰিৱেশৰ অপৰ্যাপ্ততা কোনো এটা ক্ষুদ্ৰ প্ৰাণীৰ জড়িয়তে প্ৰকাশ কৰাৰ ক্ষেত্ৰত। এই ক্ষুদ্ৰ প্ৰাণীটোৱেই টেটোন চৰিত্ৰ স্বৰূপে ভূমিকা গ্ৰহণ কৰি তাৰ বিৰুদ্ধবাদীক পৰাভূত কৰে। টেটোন জাতীয় সাধুকথাৰ প্ৰধান চৰিত্ৰ অৰ্থাৎ টেটোনৰ ভূমিকা, মানুহ অথবা অন্য

প্ৰাণীয়েও গ্ৰহণ কৰিব পাৰে আৰু এই চৰিত্ৰটোৱে মানুহ বা আন জন্তু বা প্ৰাণীক ঠগাই ফুৰে। টেটোনৰ চাৰিত্ৰিক চাতুৰ্যৰ লক্ষ্য আনক ঠগোৱা। অৱশ্যে আনক ঠগাবলৈ গৈ টেটোনেও যে, ঠগ খাব লগীয়া হয় তাৰ দৃষ্টান্ত স্বৰূপে “নীলবৰণীয়া শিয়াল” নামৰ সাধুটোলৈ আঙুলিয়াব পাৰি। বিভিন্ন পৰিস্থিতিত টেটোনে বহুৱা, মূৰ্খ, পৰিহাস্যকাৰক, প্ৰৱৰ্তক, সংস্কৃতি-নায়েক আন কি ৰাক্ষস আদিৰ ভূমিকা গ্ৰহণ কৰা দেখা যায়। টেটোন এহাতে শ্ৰষ্টা, অন্য হাতে ধ্বংসকাৰী, এফালে প্ৰদাতা আন ফালে নিষেধভঙ্গকাৰী আৰু প্ৰতাৰক। আন কি, মাজে মাজে নিজৰ কাৰ্যৰ জড়িততেও এই চৰিত্ৰটি প্ৰতাৰিত হয়। প্ৰকৃতাৰ্থত প্ৰায়বিলাক সামাজিক জীৱ-জন্তুৰ মনত সুপ্ত হৈ থকা আদিম প্ৰবৃত্তিৰাজিৰ প্ৰতীকী প্ৰকাশেই টেটোন-চৰিত্ৰ। গজমূৰ্খৰ ৰূপত আত্মপ্ৰকাশ কৰা টেটোনে অৱস্থাৰ পৰিণতিত চতুৰ বা সিয়ানৰ ভূমিকা গ্ৰহণ কৰিবলৈ সক্ষম হোৱাৰ উদাহৰণো পোৱা যায়। ফ্ৰয়ডীয় বিশ্লেষণত টেটোন-চৰিত্ৰই পুৰুষ লিঙ্গৰ প্ৰতীক স্বৰূপে আত্মপ্ৰকাশ কৰিছে। ৰেডিন-এ ফ্ৰয়ডীয় আৰু যুগ্মীয় ধাৰণাৰ সমন্বয়ৰ ভিত্তিত কয় যে সকলো বস্তুৰ পৰা সকলো মানুহলৈকে টেটোনৰ অৱস্থিতি লক্ষ্য কৰা যায় আৰু যুগে যুগে আৰু পুৰুষে পুৰুষে টেটোনৰ বিষয়ে ন ন ভাৱে ব্যাখ্যা কৰি অহা হৈছে।

টেটোন জাতীয় সাধুকথাৰ পৰম্পৰা অসমীয়া ভাষাৰ বাহিৰেও অসমৰ জনজাতীয় ভাষাতো প্ৰচলিত। অসমীয়া ভাষাত প্ৰচলিত টেটোনৰ সাধুকথাৰ ভিতৰত টেটোন তামুলী, টেটোন, বামুণৰ বহুৱা, বান্দৰ আৰু শিয়াল, শিয়াল আৰু ঘঁৰিয়াল, শিয়াল আৰু হাতী উল্লেখযোগ্য।

(চ) ক্ৰমপুঞ্জিত বা নিৰ্ধাৰিতগঢ়ী সাধুকথা : ক্ৰমপুঞ্জিত বা নিৰ্ধাৰিতগঢ়ী সাধু কৌতুকপূৰ্ণ, হাস্যকাৰ আৰু খেল-ধেমালিৰ বৈশিষ্ট্যসম্বলিত। কাহিনী বা কথাবস্তুৱে এইবিধ সাধুত প্ৰাধান্য লাভ নকৰে। এইবিধ সাধুত এটা পৰিস্থিতিয়ে আন এটা পৰিস্থিতিক ঠেলি দিয়ে, সিটো পৰিস্থিতিয়ে আকৌ আন এটা পৰিস্থিতিক ঠেলি দিয়ে।^{১০} এইদৰে বিভিন্ন পৰিস্থিতি বিশেষক্ৰমত মিলিত হৈ সাধুটোৰ সৃষ্টি হয়। সেইবাবে এই শ্ৰেণীৰ সাধুৰ নাম ক্ৰমপুঞ্জিত সাধু। দ্বিতীয়তে, এই জাতীয় সাধুৰ সংযুতি বা গঢ় নিৰ্ধাৰিত। সেইবাবে ক্ৰমপুঞ্জিত সাধুৰ আন এটি নাম নিৰ্ধাৰিতগঢ়ী সাধু। এইবিধ সাধুত নৈদানিক সাধুৰ বৈশিষ্ট্য পৰিলক্ষিত নোহোৱাকৈ নাথাকে। ভেকুলী আৰু পৰুৱা নামৰ সাধুটোত ক্ৰমপুঞ্জিত আৰু নৈদানিক উভয়বিধ সাধুকথাৰ বৈশিষ্ট্য লক্ষ্য কৰা যায়। দ্বিতীয়তে, ক্ৰমপুঞ্জিত সাধুৰ লগত মিছলীয়া

সাধুকথাৰ (The tales of lying) সাদৃশ্য স্পষ্ট। নিৰ্ধাৰিত গঢ়ী সাধুকথাৰ অন্তৰ্গত ছল-সাধু অৰ্থাৎ Catch tale- ল'ৰা-ছোৱালীৰ লগত ৰসিকতা কৰাৰ প্ৰসঙ্গত কোৱা হয়। এনে সাধু কোৱাৰ প্ৰসঙ্গত কথকে কথনৰ মাজতে শ্ৰোতাক প্ৰশ্নৰ অৱতাৰণা কৰিবলৈ বাধ্য কৰোৱা হয় আৰু সেই প্ৰশ্নৰ যথাযথ অথবা ব্যঙ্গাত্মক উত্তৰ দিবলৈ কথকে যত্ন কৰা দেখা যায়। নিৰ্ধাৰিতগঢ়ী সাধুৰ পৰিসৰে সামৰি লোৱা আন এবিধ সাধুকথাৰ নাম অন্তহীন সাধু। এইবিধ সাধুৰ সংযুতিত পুনৰাবৃত্তিয়ে বিশেষভাৱে স্থান লাভ কৰা দেখা যায়। শ্ৰোতাৰ আমনি নলগালৈকে পুনৰাবৃত্তি চলি থাকে। সেইবাবে এই জাতীয় সাধুক বোলে অন্তহীন সাধু।

(ছ) সমস্যামূলক সাধু : সমস্যামূলক সাধুকথাক সূচাবৰ বাবে ইংৰাজী ভাষাত Dilemma tale পৰিভাষাটো প্ৰয়োগ কৰা হয়। অৱশ্যে এইবিধ সাধুকথাক সঙ্কটমূলক সাধুকথাও বুলিব পাৰি। সমস্যামূলক সাধুত এটা কাহিনী থাকে আৰু কাহিনীৰ পৰিণতিৰ সৈতে এটি সঙ্কটমূলক প্ৰশ্ন জড়িত হৈ থাকে আৰু এই প্ৰশ্নটোৰ কেইবাটাও উত্তৰ থাকিব পাৰে। শুদ্ধ উত্তৰ দিব পৰাজনেই জয় লাভ কৰে। অসমীয়া ভাষাত সমস্যামূলক সাধুৰ সংখ্যা গোটেই কম নহয়।

(জ) কথা-গীত (Cante fable) : কথা-গীতক সাধুকথাৰ পৰিসীমাত এই কাৰণেই ধৰা হৈছে, যিহেতু এইবিধ সাধুকথাত গীত আৰু সাধু উভয় সমলৰ স্থিতি লক্ষ্য কৰিব পাৰি। সাধাৰণতে প্ৰশ্ন আৰু উত্তৰৰ সহায়ত গীত-পদৰ ঘটনা-প্ৰৱাহ উপসংহাৰৰ ফালে ক্ৰমশঃ আগ বাঢ়ি যোৱা গীত বা সাধুৱেই কথা-গীত। এইবিধ সাধুৰ কাহিনী ভাগৰ কিছু অংশ গীত-পদৰ সহায়ত কথিত হয় আৰু বাকী অংশ গদ্যত বৰ্ণিত হ'ব পাৰে। তেজীমলা, কমলাকুঁৱৰী আদি সাধুকথাই অসমীয়া কন্ঠেফেবল বা কথা-গীতৰ উদাহৰণ।

উল্লিখিত সাধুকথাৰ বিভিন্ন উপশ্ৰেণীৰ বাহিৰেও ধৰ্মীয় সাধুকথা আখ্যা দিব পৰা কেইটিমান সাধুকথা সাধা-বৰতৰ প্ৰসঙ্গত মহিলা ব্ৰতিনীয়ে আন আন ব্ৰতিনীৰ আগত কয়। ধৰ্মীয় প্ৰসঙ্গত কোৱা বাবে এই সাধুবিলাকক ধৰ্মীয় সাধুকথা বোলাত আপত্তি নুঠাই স্বাভাৱিক।

অসমীয়া সাধুকথাই সমাজ-জীৱনৰ প্ৰতিফলক স্বৰূপে ভূমিকা গ্ৰহণ কৰি আহিছে। দ্বিতীয়তে অনানুষ্ঠানিক শিক্ষা প্ৰদানৰ ক্ষেত্ৰতো এইবোৰৰ তাৎপৰ্যপূৰ্ণ অৱদান লক্ষ্য কৰা যায়। অন্য হাতে দমিত আৰু শোষিত সমাজৰ প্ৰতিবাদৰ ধ্বনিও অসমীয়া সাধুকথাত ৰণিত নোহোৱাকৈ নাথাকে। সাধুকথা সামাজিক ব্যাপাৰ আৰু

সামাজিক ব্যাপাৰ ৰূপেই এইবিধ বাচিক কলা জীয়াই আছে আৰু থাকিব।

অসমীয়া লোকসাহিত্যৰ আছে এক অবিচ্ছেদ্যতা বা continuity। এই অবিচ্ছেদ্যতাৰ আন নাম পৰম্পৰা। পৰম্পৰাৰ অৰ্থ অতীতৰ প্ৰতি অন্ধ আনুগত্য নহয়, ই এক ঐতিহাসিক চেতনাহে। গতিকে পৰম্পৰাই পৰিৱৰ্তন আৰু উত্তৰণ উভয় প্ৰক্ৰিয়াক সামৰি লয়। অসমীয়া লোকসাহিত্য পৰম্পৰা-আশ্ৰয়ী হ'লেও ইয়াৰ দেহত পৰিৱৰ্তন আৰু উত্তৰণৰ ক্ৰিয়া স্পষ্ট ৰূপত লক্ষ্য কৰিব পাৰি। অসমীয়া লোকসাহিত্যৰ বিভিন্ন উপাদানে লাহে লাহে পৰম্পৰাৰ পৰা চ্যুত হৈ দ্বিতীয় অস্তিত্ব লাভ কৰিছে— কলা ৰূপত আৰু এইদৰে জন বা গণ মাধ্যম স্বৰূপেও এইবোৰে জনসমাজত সামাজিক প্ৰকাৰ্য সাধন কৰিবলৈ সক্ষম হৈছে।

— ড° নবীন চন্দ্ৰ শৰ্মা

সহায়ক গ্ৰন্থ :

৩৭। P. Goswami, *Ballads and Tales of Assam*. p. 80

৩৮। প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামী, *অসমীয়া জন সাহিত্য*, পৃঃ ৭০

৩৯। প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামী, *প্ৰাণ্ডুৰ গ্ৰন্থ*, পৃঃ ৫৬

ফকৰা-যোজনা আৰু সাঁথৰ

(গ)

ফকৰা-যোজনা

প্ৰবচন বা যোজনা অথবা পটন্তৰ বা প্ৰবাদ আদি অভিধা সাধাৰণতে ইংৰাজী Proverbৰ প্ৰতিশব্দৰূপে প্ৰয়োগ কৰা হয়। বাচিক কলাৰ অন্যতম উপশ্ৰেণী প্ৰবচন আৰু সাঁথৰক স্থিৰীকৃত বাক্-বৈশিষ্ট্য অৰ্থাৎ fixed-phrase genres আখ্যা দিব পাৰি; যিহেতু প্ৰবচন আৰু সাঁথৰৰ জমিন (texture) এটা ভাষাৰ পৰা আন এটা ভাষালৈ অনুবাদ কৰা টানেই নহয় অসম্ভৱো। জমিন পৰিভাষাই লোকবিদ্যা সম্পৰ্কীয় পাঠৰ ভাষাতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্যক সূচায়। প্ৰবচন আৰু সাঁথৰৰ জমিন হৈছে— ইহঁতৰ লয় আৰু অনুপ্ৰাসৰ ক্ষিপ্ৰতা। স্বাসাঘাত, সুৰ সংযোগ, স্বন বা সুৰ লহৰি, ধ্বন্যাশ্ৰুকতা আদি জমিনৰ আন আন উল্লেখযোগ্য বৈশিষ্ট্য।

প্ৰবচন আৰু সাঁথৰৰ প্ৰকৃত অৰ্থ বুজিবৰ বাবে ইহঁতৰ সামাজিক প্ৰসঙ্গ বা অনুষঙ্গৰ বিষয়ে সম্যক জ্ঞান অতিকৈ প্ৰয়োজনীয়। প্ৰবচন আৰু সাঁথৰ প্ৰত্যেকৰে আছে একোটিকৈ পাঠ (text)। পাঠৰ লগত অনুষঙ্গৰ সম্পৰ্ক অতিকৈ গভীৰ; যিহেতু অনুষঙ্গ অবিহনে পাঠৰ প্ৰকৃত অৰ্থ বুজিব নোৱাৰি। অনুৰূপে প্ৰবচন আৰু সাঁথৰৰ অৰ্থ ব্যাখ্যাৰ বাবে প্ৰসঙ্গ বা অনুষঙ্গ অপৰিহাৰ্য; যিহেতু প্ৰসঙ্গ বা অনুষঙ্গবিহীন প্ৰবচন আৰু সাঁথৰ স্বৰূপাৰ্থত স্পন্দনহীন দেহ তুল্য।’

প্ৰবচনবোৰ সংক্ষিপ্ত আৰু বুদ্ধিনিষ্ঠ পৰম্পৰাগত উক্তি। দৈনন্দিন জীৱনৰ কথা-বাৰ্তাৰ পৰা আৰম্ভ কৰি শৈক্ষিক আৰু ন্যায়িক পৰিস্থিতি পৰ্যন্ত প্ৰবচনবোৰ প্ৰয়োগ কৰা হয়। বাচিক কলাৰ আন আন উপাদানৰ নিচিনাকৈ প্ৰবচনবোৰ প্ৰয়োগ কৰা হয় ভাৱৰ প্ৰদান বা অভিজ্ঞাপনৰ বাবে। বিশেষ এটা সমস্যাৰ আধাৰত ইয়াৰ জন্ম আৰু বিবৃতি বিশেষৰ মাধ্যমত এই সমস্যাই আত্মপ্ৰকাশ কৰে। বস্তুনিষ্ঠ পৰিস্থিতিত এইবিধ বাচিক কলা প্ৰয়োগ কৰা দেখা গলেও ইয়াৰ অন্যতম লক্ষ্য

ব্যক্তিনিষ্ঠতা আৰু বুদ্ধিনিষ্ঠতা। সাধাৰণতে প্ৰবচনৰ ৰূপগত বা গঠনগত বৈশিষ্ট্য এটা বা দুটা বাক্যৰ ভিতৰতে সীমিত। সংক্ষিপ্ততা প্ৰবচনৰ অন্যতম বিশেষত্ব। কলাগত গুণো এইবিধ বাচিক কলাত লক্ষ্য কৰা যায়। মৌখিক কথোপকথনত প্ৰবচনৰ ব্যৱহাৰ বৰ বেছি, তেনেদৰে লিখিত পৰম্পৰাতো ইয়াৰ ব্যৱহাৰ দেখা যায়। লোকাৱ্যত সমাজত কোনো এটা কথা প্ৰবচন বা যোজনা বা পটন্তৰৰ সৈতে ক'ব নোৱাৰিলে সেই কথা প্ৰায়ে নৰজে। সেই বাবে প্ৰবচন-যোজনা-পটন্তৰ আদিক বেদৰ বাণীৰ দৰে বিবেচনা কৰা দস্তৰ সমাজত চলি আহিছে ('ডাকৰ বেদৰ বাণী')।

প্ৰবচনবোৰ পৰম্পৰাগত যুক্তিপূৰ্ণ উক্তি। এই উক্তিত অতি কমেও এটা বৰ্ণনাত্মক সমল থকা উচিত। বৰ্ণনাত্মক সমলেই প্ৰবচনৰ নিচেই সৰু একক। বৰ্ণনাত্মক সমল (descriptive element), বিষয়বস্তু (topic) আৰু মন্তব্যৰ (comment) সমষ্টি। অৱশ্যে এই দুটা এককৰ বাহিৰেও বৰ্ণনাত্মক সমল আৰু কেইবাটিও এককত বিভক্ত হ'ব পাৰে।

বৰ্ণনাত্মক সমল : 'হাতত নাই ধন/বৰ সবাহলৈ মন।'

'উপৰে গো বধ/তলে ব্ৰাহ্মণ বধ।'

ওপৰৰ প্ৰবচন দুটাৰ প্ৰত্যেকটোৱেই দুটা দুটা অংশত বিভক্ত আৰু প্ৰত্যেকটো প্ৰবচনৰ অংশ দুটাই পৰস্পৰ বিৰুদ্ধ ভাৱ প্ৰকাশ কৰে; যেনে : ধন/মন; গোবধ/ব্ৰাহ্মণ বধ।

কোনো কোনো ক্ষেত্ৰত একাধিক বাক্যৰ জৰিয়তেও প্ৰবচন গঠিত হ'ব পাৰে; যেনে :

'শঙ্খৰী ঘৰলৈ আহিলোঁ যি মোৰ কিবা হ'ল।

আইৰ আগত কবি দাদা মই ভাজেনী হ'লোঁ।

এহাত পুতল দুই হাত দীঘল মই কাপোৰ বোলোঁ।

ঘিতেই তামছা।

তিনি বহাগত এখন গামোছা।'^২

প্ৰবচনবোৰত কাব্যিক বৈশিষ্ট্য, বিশেষকৈ অন্ত্যানুপ্ৰাসৰ ক্ষেত্ৰত, ৰক্ষিত হোৱা দেখা যায়। ওপৰৰ প্ৰবচনটোত প্ৰথম শাৰীৰ অন্ত্য ধ্বনি 'ল' আৰু দ্বিতীয় শাৰীৰ অন্ত্যধ্বনি 'ল' মিলনান্ত। তেনেদৰে তৃতীয় শাৰীৰ অন্ত্যধ্বনি 'ল' আৰু চতুৰ্থ শাৰীৰ অন্ত্যধ্বনি 'লো' মিলনান্ত।

প্ৰায়বিলাক প্ৰবচনৰ সৈতে একোটি সাধুকথা বা কাহিনী জড়িত হৈ থকা দেখা যায়। কোনো কোনো সাধুকথা বা কাহিনীৰ শেষৰ বাক্যটোৱেই প্ৰবচনৰ ভূমিকা গ্ৰহণ কৰে।

প্ৰবচনবোৰ সাধাৰণতে চাৰিটা শ্ৰেণীত বিভক্ত কৰিব পাৰি ; যেনে :

(১) ধনাত্মক তুল্যতা (Positive Equivalence) :

- ০১। সময় অমূল্য ধন।
- ০২। ধনেই ধৰ্মৰ মূল।
- ০৩। যাৰ নাই ধন, তাৰ নাই মান।

(২) ঋণাত্মক তুল্যতা (Negative Equivalence) :

- ০১। কাকনো বুলিম ককা, আটাইৰে ডাঢ়ি-চুলি পকা।
- ০২। সুখৰ উপৰি সুখ।
কাঠিৰ কুকুৰে সাত পাক দি ঘুমাই
পিচৰ ফালে মুখ॥
- ০৩। আছে গৰু নাবায় হাল।
থকাতকৈ নথকাই ভাল॥

(৩) ধনাত্মক নিমিত্ততা (Positive Causational) :

- ০১। সৰ্ব গুণীয়াক ভাতে নাটে।
- ০২। বৈদ্য ছয়া মৰে আপুনি বিষে।
- ০৩। উৰিসা ঘৰত বাৰিষা থাকে।
যুৱত কন্যাক বাপেকে ৰাখে॥
- ০৪। অতি লোভ যাৰ সকলো অসাৰ তাৰ।

(৪) ঋণাত্মক নিমিত্ততা (Negative Causational) :

- ০১। খোৰা পীৰা ফটাগাত।
মুখ চাই ৰাঙ্কনী নিদিয়ে ভাত॥
- ০২। আসনৰ বৰ্জিত তিনি যাৰ খুৰা।
মিত্ৰৰ বৰ্জিত পিয়ে সুৰা॥
- ০৩। নদীৰ বন নাই খানে আৰু পোতে।

বিষয়াৰ বন নাই ভাঙে আৰু পাতে।।

প্ৰবচনৰ এটি উল্লেখযোগ্য উপশ্ৰেণী হৈছে ফকৰা। সাধাৰণতে বৈষ্ণৱ ভকতসকলৰ মাজত ফকৰাৰ সমাদৰ দেখা যায়। “সাধাৰণ ফকৰাবিলাকত স্থূল দেহৰ অসাৰতা, চিন্তদমন আদি নীতি লুকাই আছে।”^৩ ফকৰাৰ অৰ্থ সহজে বুজিব নোৱাৰি। তলত দুটি ফকৰা দিয়া হ’ল :

(ক) বাৰ হাত জালৰ তেৰ হাত ফটা।

ভাল মাৰিলি বাপৰ বেটা।।

ৰৌ-বৰালি সৰকি গ’ল।

পুঠী-খলিহা পাহে পাহে ৰ’ল।।

(খ) নিজৰা জৰে, অমৰা মৰে, মৰাই বায় হাল।

লখিমীৰ টিকাত ছিৰা-কানি মোৰ নাম নিধনীয়ে ভাল।।

ভকতীয়া অৰ্থ অথবা গুপ্ত অৰ্থবিশিষ্ট প্ৰবচনবোৰেই ফকৰা। ফকৰা আৰু যোজনাৰ মাজত মিল থকা দেখা যায়। ডাকৰ নামত প্ৰচলিত প্ৰবচনবোৰ অৰ্থাৎ ‘ডাক-প্ৰবচন’বোৰ যোজনাধৰ্মী। লোকজীৱনত সদা-সৰ্বদাই প্ৰচলিত প্ৰবচন-যোজনা আদি লিখিত পৰম্পৰাত ঠাই পায় আৰু এইদৰে প্ৰবচন-যোজনাবোৰ শিক্ষিত সমাজৰো উমৈহতীয়া সম্পত্তি হয়। ৰিজনি, চানেকি, আৰ্হি আদি অৰ্থত প্ৰবচন-যোজনা আদি প্ৰয়োগ কৰা হয় বাবে এইবোৰৰ আন নাম পটন্তৰ। লোক-সমাজত প্ৰবচন-যোজনা-ফকৰা-পটন্তৰ আদি মুখে মুখে চলি থাকে বাবে এইবোৰৰ আন নাম লোকোক্তি (লোক + উক্তি)। ড° প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামীৰ মতে যোজনা ব্যৱহাৰ কৰা হয় কথাত লাচত— প্ৰায়েই ঠাট্টাৰ সুৰত, সাধাৰণ বক্তব্যৰ মেৰ মাৰিবলৈ বা কিবা কথা ব্যাখ্যা কৰিবলৈ।^৪

ফকৰা-যোজনা-পটন্তৰ আদি অৰ্থাৎ প্ৰবচনবোৰ সঙ্কীৰ্ত্ত অভিজ্ঞতা আৰু জ্ঞানৰ ভঁৰাল। আফ্ৰিকাৰ আদালতত প্ৰবচনবোৰ আইন ৰূপে গৃহীত হৈছে। আমাৰ ইয়াতো সমাজ-জীৱনত প্ৰবচনৰ প্ৰভাৱ গুৰুত্বপূৰ্ণ। কোনো বাদ-বিবাদৰ প্ৰসঙ্গত দুই-এটা প্ৰবচন ক’ব পৰাজনেহে জয়লাভ কৰে। যোজনা-পটন্তৰ সহ কথা ক’ব পাৰিলেহে সেই কথা সমাজত ৰজে, অন্যথা নৰজে। প্ৰবচনবোৰ শতিকা জোৰা অভিজ্ঞতাৰ সমষ্টি।

সাঁথৰ

সাঁথৰ অভিধাৰ প্ৰতিশব্দৰূপে দৃষ্টান্ত, দিষ্টান আদি শব্দ ব্যৱহাৰ কৰা হয়। অসমীয়া ভাষাত প্ৰচলিত সাঁথৰ, দৃষ্টান্ত, দিষ্টান আদি অভিধাৰ প্ৰতি অভিধাৰূপে ইংৰাজী ভাষাত Riddle পদটো প্ৰচলিত। ড° প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামীৰ মতে সাঁথৰবিলাকো এক হিচাবে ফকৰা ; অৱশ্যে ফকৰাৰ অৰ্থ ভকতীয়া আৰু সাঁথৰৰ অৰ্থ বা সমাধান ঐহিক আৰু সাধাৰণ ফকৰাৰ দৰে সাঁথৰৰ ভাষাও প্ৰহেলিকাময়।

সাঁথৰ প্ৰহেলিকাময় প্ৰশ্ন। এই প্ৰশ্ন বৰ্ণনাৰ ৰূপত উপস্থাপন কৰা হয়। উত্তৰদাতাই এই বৰ্ণনা প্ৰায়ে অনুমান কৰি লব লগীয়া হয়। সাঁথৰৰ উত্তৰ নজনা সকলক বিভ্ৰান্ত কৰিবলৈ আৰু তেওঁলোকৰ উদ্ভাৱনীশক্তি পৰীক্ষা কৰিবলৈ সাঁথৰ ব্যৱহাৰ কৰা দেখা যায়। প্ৰবচনৰ দৰে সাঁথৰৰ প্ৰসঙ্গতো পৰস্পৰ-বিৰোধী বৰ্ণনা বা বাক্যৰ স্থিতি লক্ষ্য কৰিব পাৰি। আৰচাৰ টাইলাৰৰ মতে সাঁথৰৰ অতি প্ৰয়োজনীয় সংযুতি দুইপ্ৰকাৰ বৰ্ণনাত্মক সমলৰ সমষ্টি : এবিধ ধনাত্মক বা বাস্তৱিক বা অন্ত্যৰ্থক (Positive) আৰু আনটো ঋণাত্মক বা নঞাৰ্থক বা নাস্ত্যৰ্থক (Negative); ধনাত্মক বা বাস্তৱিক অংশটো প্ৰায়ে ৰূপাত্মক আৰু সাঁথৰৰ উত্তৰ এই অংশটোৰ ওপৰতেই নিৰ্ভৰশীল।

টাইলাৰৰ সূত্ৰটোত আঁসোৱা নোহোৱা নহয়, যিহেতু তেওঁ সাঁথৰৰ ৰূপক বা প্ৰতীকৰ ওপৰতহে তুলনামূলকভাৱে অধিক গুৰুত্ব দিছে। সাঁথৰৰ সাংযুতিক দিশত গুৰুত্ব দি ইয়াৰ সূত্ৰ তলত দিয়াৰ দৰে দিব পাৰি ; যেনে :

সাঁথৰ পৰস্পৰাগত বাচিক অভিব্যঞ্জন ; ই এটা বা তাতকৈ সৰহ বৰ্ণনাত্মক সমলৰ সমষ্টি। বৰ্ণনাত্মক সমলবোৰৰ ভিতৰত অন্ততঃ এযোৰাৰ মাজত পাৰস্পৰিক বৈপৰীত্য পৰিলক্ষিত আৰু বৰ্ণনাত্মক সমলৰ বিষয়বস্তু অনুমানসাপেক্ষ।

সাঁথৰত চাৰিবিধৰ বিৰোধ বা বৈপৰীত্য থাকিব পাৰে ; যেনে :

(১) ৰূপক বা প্ৰতীকৰ বৈপৰীত্য বা বিৰোধ।

(৪) অসম্পূৰ্ণ ৰূপক বা প্ৰতীক।

(৩) বৰ্ণনাৰ আধিকাৰ জৰিয়তে প্ৰকটিত বিৰোধ।

(৪) মিথ্যা ৰূপক বা প্ৰতীকৰ জৰিয়তে পৰিস্ফুট বিৰোধ।

বৰ্ণনাত্মক সাঁথৰ :

সাঁথৰত সন্নিবিষ্ট প্ৰশ্নৰ প্ৰকৃতি অনুসৰি এই বিধ বাচিক কলাক কেইটিমান উপশ্ৰেণীত ভাগ কৰিব পাৰি। সাঁথৰবোৰ দৰাচলতে প্ৰশ্নহে। অৱশ্যে সাধাৰণ প্ৰশ্ন আৰু সাঁথৰৰ প্ৰশ্নৰ মাজত পাৰ্থক্য আছে। সাধাৰণ প্ৰশ্নবোৰ প্ৰহেলিকাৰ আৱৰণেৰে আচ্ছন্ন নহয়; অন্য হাতে সাঁথৰৰ প্ৰশ্ন প্ৰহেলিকাময়। সেই বাবে হিন্দীভাষা প্ৰচলিত ভাৰতৰ বিভিন্ন অঞ্চলত সাঁথৰৰ নাম প্ৰহেলিকা। প্ৰশ্নৰ প্ৰকৃতি অনুসৰি সাঁথৰৰ এটা ভাগক বৰ্ণনাত্মক সাঁথৰ (Descriptive riddles) আখ্যা দিয়া হয়। বৰ্ণনাত্মক সাঁথৰৰ আন এটা নাম আচল সাঁথৰ (true riddles)। এইবিধ সাঁথৰত কেইবাটিও প্ৰশ্ন প্ৰহেলিকাময় ভাষা আৰু বৰ্ণনাৰ সহায়ত উপস্থাপন কৰা হয়। বৰ্ণনাত্মক সাঁথৰৰ পৰিসৰত কাব্যিক আৰু ৰূপকগত সাঁথৰবিলাককো ধৰিব পাৰি। বৰ্ণনাত্মক সাঁথৰৰ উদাহৰণ এটি তলত দিয়া হ'ল :

(১) 'সত্যযুগত মূৰত টুপী।

কৃষ্ণ অৱতাৰে মুহিলা গোপী।।

ৰাৱণ মৰিল ৰামৰ শৰত।

সেইখন আঞ্জা আমাৰ হাতত।।'

কোৱাচোন বস্তুটো নো কি ভাই? উত্তৰ : বাঁহৰ গাজ।

(২) বৈশম্পায়ন বদতি শুনা জন্মেজয়।

এক গোট জন্তু আছে মনুষ্যে ভুঞ্জয়।।

চৈধ্যখন ঠেং তাৰ কটিত নেঙুৰ।

মাথাত আছে তাৰ এডাল ত্ৰিশূল।। উত্তৰ : মিছামাছ।

(৩) চৌফালে চৌ ডাল, মাজতে ঔ ডাল।

চৌফালে জোকাৰে, মাজতে বোটলে। উত্তৰ : 'জাল'।

টেটকুঁটিমূলক প্ৰশ্ন (Joking Questions) : টেটকুঁটিমূলক প্ৰশ্নবোৰো এক প্ৰকাৰ সাঁথৰেই। এইবিধ সাঁথৰো প্ৰহেলিকাময়। টেটকুঁটিমূলক প্ৰশ্ন বা সাঁথৰত প্ৰশ্নটোৱেই সাঁথৰটোৰ শেষৰ বাক্য ৰূপে প্ৰকাৰ্য সাধন কৰে। টেটকুঁটিমূলক সাঁথৰক অন্য প্ৰকাৰে ওলোটো বা ওভোতা সাঁথৰ (reverse riddle) আখ্যা দিব পাৰি। এই জাতীয় প্ৰশ্ন বা সাঁথৰৰ উদাহৰণ তলত দিয়া হ'ল ; যেনে :

(১) কি হাটীৰ শূঁৰ নাই? উত্তৰ : গুৱাহাটীৰ।

- (২) শ ফুল ফুলিছে পিন্দোতা নাই।
কোৱাচোন এইবোৰ কি ফুল ভাই।। উত্তৰ : তৰা (তৰাৱলী)।
- (৩) শ পুত্ৰ মৰিছে কান্দোতা নাই।
শ পুত্ৰ কোন কোৱাচোন ভাই।। উত্তৰ : সাপ।
- (৪) সুপাটি পাৰিছে ঘূমাওঁতা নাই।
এইটো নি কি পাটি কোৱাচোঁ আই।। উত্তৰ : বানপানী।
- (৫) এক ঠেঙীয়া হাতী, ধন খায় পাচি পাচি। উত্তৰ : ঢেঁকী।
- (৬) কি গাঁড়ৰ খড়গ নাই। উত্তৰ : ৰাজগাঁড়ৰ।

জ্ঞানমূলক প্ৰশ্ন বা সাঁথৰ (Wisdom questions) : টেটকুঁটিমূলক প্ৰশ্ন বা সাঁথৰৰ নিচিনাকৈ জ্ঞানমূলক প্ৰশ্ন বা সাঁথৰৰ উত্তৰ, প্ৰশ্ন বা সাঁথৰটোৰ বিষয়বস্তুৰ পৰা দিব নোৱাৰি। বৰং এনে সাঁথৰ বা প্ৰশ্নৰ উত্তৰ ইতিমধ্যে জানি লব লাগিব। বিভিন্ন প্ৰকাৰৰ প্ৰহেলিকাময় সাঁথৰ বা প্ৰশ্নৰ উত্তৰৰ প্ৰসঙ্গত — উত্তৰ দিওঁতাজনে নিজৰ বুদ্ধি-কৌশল আদি প্ৰয়োগ কৰিব পাৰে ; কিন্তু জ্ঞানমূলক প্ৰশ্ন বা সাঁথৰৰ ক্ষেত্ৰত তেওঁ নিজৰ বুদ্ধি-কৌশল প্ৰয়োগ কৰিবলৈ সুবিধা নেপায়। গতিকে জ্ঞানমূলক প্ৰশ্ন বা সাঁথৰৰ আলঙ্কাৰিক বৈশিষ্ট্যৰ বিশেষ কিবা ভূমিকা আছে বুলি ক'ব নোৱাৰি। প্ৰায়বিলাক জ্ঞানমূলক প্ৰশ্ন বা সাঁথৰৰ উত্তৰ ভূগোল, পদাৰ্থবিজ্ঞান, ধৰ্ম, ভাষা, সাহিত্য আদি বিষয়ৰ পূৰ্বলব্ধ জ্ঞানৰ লগত সম্পৃক্ত। এইবিধ সাঁথৰৰ দুটামান উদাহৰণ তলত দিয়া হ'ল ; যেনে :

- (১) গাখীৰতকৈ বগা কি? উত্তৰ : বৰফ।
- (২) পৰ্বততকৈ ওখ কি? উত্তৰ : প্ৰেম/ধৰ্ম।
- (৩) বায়ুতকৈ বেগী কি? উত্তৰ : মন।
- (৪) কোন শত্ৰুক জয় কৰা আটাইকৈ টান? উত্তৰ : ছয়বিপু বা মন।
- (৫) মানৱৰ মহাধন কি? উত্তৰ : সন্তুষ্টি।

সমস্যাপ্ৰধান প্ৰশ্ন বা সাঁথৰ (Puzzles) : সমস্যা জড়িত প্ৰশ্ন বা সাঁথৰক সাধাৰণতে সমস্যাপ্ৰধান প্ৰশ্ন বা সাঁথৰ বুলিব পাৰি। সমস্যাপ্ৰধান সাঁথৰৰ উত্তৰ দিয়াৰ প্ৰসঙ্গত উত্তৰ দিওঁতাজনে আন সাঁথৰৰ তুলনাত অধিক মনোযোগ দিব লগীয়া হয়। জ্ঞানমূলক সাঁথৰৰ সৈতে সমস্যামূলক সাঁথৰৰ সাদৃশ্য নাই বুলি ক'ব নোৱাৰি, যিহেতু উভয় বিধ সাঁথৰেই বিশেষ বিশেষ জ্ঞানৰ লগত জড়িত। সমস্যা-প্ৰধান প্ৰশ্ন বা সাঁথৰৰ উদাহৰণ তলত দিয়া হ'ল; যেনে :

- (১) ইঘৰৰো মাক-জীয়েক সিঘৰৰো মাক-জীয়েক।
পকা কল তিনিটা গাইপতি কেইটা? উত্তৰ : এটাকৈ।
- (২) শুভক্ষৰীৰ ফাকি
চৌত্ৰিছৰপৰা তিনি 'শ' গ'ল
থাকিল কিমান বাকী? উত্তৰ : ৩১।
- (৩) হাতুৰী বটালী বাইচখন,
চোৰে নিলে তিনিখন;
থাকিল কেইখন বাকী? উত্তৰ : এখনো নাথাকে অৰ্থাৎ ০।
- (৪) ভাই-ভনী মোৰ নাইচোন।
কিন্তু সেই মানুহজনৰ পিতাক মোৰ পিতাৰ পো।
কোৱাচোন বাক তেওঁ মোৰ কোন? উত্তৰ : ভাই।

ছল-সাঁথৰ (Catch Riddle) : ছল-সাঁথৰ ছল-সাধুকথাৰ (Catch Tale) সৈতে জড়িত। অন্য হাতে এই জাতীয় সাঁথৰ ব্যঙ্গ্যপ্ৰধান সাঁথৰ ৰূপেও পৰিচিত। সেই বাবে ইংৰাজীত এনে বিধৰ সাঁথৰৰ নাম দিয়া হৈছে Parody Riddles। এই জাতীয় সাঁথৰ প্ৰায় নিৰ্ধাৰিতগঢ়ী। ইংৰাজীত প্ৰচলিত ছল-সাঁথৰ (Catch Riddle); অথবা ব্যঙ্গ্য প্ৰধান সাঁথৰৰ (Parody Riddle) এটি উদাহৰণ তলত দিয়া হ'ল :

“What is big, gray, lives in trees and is dangerous ?

উত্তৰ : Elephant।

অসমীয়া ভাষাত প্ৰচলিত এনে বিধৰ সাঁথৰৰ উদাহৰণ স্বৰূপে তলত দুটিমান দিয়া হ'ল ; যেনে :

(ক) মাক লতা-পতা, জীয়েক ফুলবাৰী/পুতেকৰ ভোচ্ভোচ্ কৰে গাঁৰি//
কিনো সেইটো অদ্ভুত প্ৰাণী/কোৱাচোন ভাবি-শুনি// উত্তৰ :
কোমোৰা।

(খ) দলে দলে ফুৰে দলপতি ৰাজা/

হাৰো নাই ছৰাও নাই মঙহৰ লদা// উত্তৰ : জোক।

সাঁথৰগঢ়ী সাধুকথাৰ (riddled type tale) লগতো সাঁথৰ বা প্ৰশ্ন জড়িত। “বেতাল পঞ্চ বিংশতি”ৰ আটাইকেউটা কাহিনীয়েই সাঁথৰগঢ়ী ; যিহেতু

প্ৰত্যেকটো কাহিনীৰ শেহত একোটি সাঁথৰ বা প্ৰশ্ন জড়িত। সমস্যা বা সঙ্কটমূলক সাধুকথাৰ লগতো সাঁথৰ বা প্ৰশ্ন বিজড়িত। সমস্যা বা সঙ্কটমূলক সাধুৰ লগত জড়িত “আপুনি আপোনাৰ যৈণীক কিলাবলৈ এৰিছে নে?” এনেধৰণৰ প্ৰশ্ন বা সাঁথৰৰ উত্তৰ দিয়া টান; যিহেতু ‘হয়’ বুলি ক’লেও মস্কিল, ‘নহয়’ বুলি ক’লেও মস্কিল।”২

অসমীয়া সমস্যামূলক সাধুকথা এটিত পোৱা যায়— তিনিজন বিবাহ পাৰ্থী ডেকাৰ ভিতৰত কোনজনে কইনাজনীক বিয়া কৰাব পাৰিব— এই সন্দৰ্ভত প্ৰশ্ন বা সাঁথৰৰ সন্মুখীন হ’ব লগীয়া হৈছে।

— ড° নবীন চন্দ্ৰ শৰ্মা

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- ১। "The text, of course, is extremely important, but without the context it remains lifeless." B, Malinoski , *Magic, Science and Religion*, p. 104
- ২। সংবাদদাত্ৰী : শ্ৰীমতী মোহেশ্বৰী দেৱী (৫৬), বঙাহাৰপাৰা, দৰং, ২৫-৪-৯০
- ৩। প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামী, প্ৰাণুক্ত গ্ৰন্থ, পৃ : ১১৬
- ৪। উক্ত গ্ৰন্থ, পৃ : ১৩১
- ১। প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামী , *অসমীয়া জনসাহিত্য*, পৃ : ১১৩
- ২। উক্ত গ্ৰন্থ, পৃ : ৮২

ডাকৰ বচন

(ঘ)

ডাক-বচন বা ডাক-প্ৰবচন বা ডাকৰ বচনবিলাক ডাক নামৰ এগৰাকী ব্যক্তিৰ সৈতে জড়িত আৰু এইজন পুৰুষক খৃঃ ৬ষ্ঠ শতিকাৰ বৰাহ-মিহিৰ নামৰ জনৈক জ্যোতিষীৰ পুত্ৰ বুলিও কোৱা হৈছে। ডাক ঐতিহাসিক ব্যক্তি হয় নেনহয় চাব লগীয়া। অসমত পৰম্পৰাগতভাৱে প্ৰচলিত ডাকৰ নামত সম্পৰ্কযুক্ত বচনৰ সদৃশ বচন অসমৰ বাহিৰে ভাৰতৰ আন আন প্ৰদেশতো প্ৰচলিত। এই বচনবিলাক ডাক, খনা, ডংক, ঘাঘ, ভড্‌ডৰ, ভড্‌ডৰী, অগস্তি আদি ব্যক্তিৰ সৈতে সম্পৃক্ত। কোনো কোনো পণ্ডিতে আকৌ 'ডাকার্ণৱ' গ্ৰন্থৰ লগত ডাক-প্ৰবচনবোৰৰ সম্পৰ্ক স্থাপন কৰিবলৈ বিচাৰে। কোনো কোনোৱে আকৌ ডাক-বচনবিলাকৰ মূল গ্ৰন্থ স্বৰূপে উক্ত গ্ৰন্থখনলৈ আঙুলিয়ায়।' কিন্তু ডাকার্ণৱ গ্ৰন্থৰ বিষয়বস্তু, প্ৰসঙ্গ (context) আৰু আদৰ্শৰ লগত ডাক-বচনবোৰৰ সাদৃশ্য নাই, বৰং বৈসাদৃশ্যহে স্পষ্ট। বৌদ্ধ সহজীয়াৰ সাধন-তত্ত্ব সম্বন্ধীয় আলোচনাই ডাকার্ণৱ গ্ৰন্থৰ বিষয়বস্তু। পটল বিভাজন, যজ্ঞচক্ৰ, মুদ্ৰা, ষড়চক্ৰ, ঈড়-পিসলা-সুমুন্না আদিৰ বৰ্ণনাই গ্ৰন্থখনিক তান্ত্ৰিক গ্ৰন্থৰূপে প্ৰতিপন্ন নকৰাকৈ থকা নাই।

কোনো কোনোৱে আকৌ অনুমান কৰে যে, খৃঃ ৭ম শতিকাত কামৰূপেশ্বৰ ভাস্কৰবৰ্মাই উত্তৰ ভাৰতৰ বিখ্যাত হিন্দু সন্ন্যাসী হৰ্ষবৰ্ধনলৈ হংসবেগৰ জড়িয়ে সাঁচি পাতত লিখা প্ৰবাদ-বচনৰ পুথি এখন উপহাৰ স্বৰূপে পঠিয়াইছিল আৰু এই পুথিখনেই ডাক-প্ৰবচনৰ প্ৰত্ন ৰূপ। সন্দেহ নাই যে পুথিখন সংস্কৃতত লিখা হৈছিল। গতিকে ভাস্কৰবৰ্মাই উপহাৰ স্বৰূপে প্ৰেৰণ কৰা সংস্কৃত-প্ৰবচন গ্ৰন্থৰ পৰা অসমীয়া, বঙলা, উড়িয়া, মৈথেলী, ভোজপুৰী আদি ভাষাত ডাক-প্ৰবচন ৰূপে প্ৰচলিত হোৱা কথাটো অনুমানহে কৰিব পাৰি; যুক্তিৰ ওপৰত প্ৰতিষ্ঠা কৰিব নোৱাৰি। দ্বিতীয়তে, সাঁচিপতীয়া পুথিখনৰ বিষয়বস্তু কি আছিল তাৰ নিৰাকৰণ যুক্তিৰ ওপৰত প্ৰতিষ্ঠিত নোহোৱাকৈ অৰ্থাৎ পুথিখনৰ বিষয়বস্তু

বিশ্লেষণ নকৰাকৈ ক'ব নোৱাৰি ; কিন্তু পুথিখনৰ বিষয়বস্তু কি আছিল জানিবৰ উপায় নাই। গতিকে যুক্তিৰ ফালৰ পৰা নৃপতি ভাস্কৰৰ্মাই উপ-টোকন স্বৰূপে প্ৰেৰণ কৰা সাঁচিপতীয়া পুথিখনৰ বিষয়বস্তুৰ সৈতে ডাক-প্ৰবচনৰ সম্পৰ্ক স্থাপন কৰা টান।

অসমত প্ৰচলিত পৰম্পৰামতে ডাক কুমাৰৰ ল'ৰা, এদিন-এৰাতিৰ বাবে বৰপেটাৰ ওচৰৰ লেহিডঙৰা গাৱঁত তেওঁৰ জন্ম হৈছিল। উপজিয়েই তেওঁ ডাক দিছিল বাবে তেওঁৰ নাম ডাক। দ্বিতীয়তে বৰাহমিহিৰৰ কৃপাত ডাকৰ জন্ম হৈছিল। পানীত পৰি তেওঁৰ মৃত্যু হয়। বঙ্গদেশ আৰু বাংলাদেশত খনা আৰু ডাক একাকাৰ হৈ পৰিছে। সাধাৰণতে কৃষি বিষয়ক প্ৰবচনবোৰ খনাৰ বচন আৰু জ্যোতিষ বিষয়ক প্ৰবচনবোৰ ডাকৰ বচন ৰূপে জনাজাত।^{১৮} কোনো কোনো পণ্ডিতৰ মতে বঙ্গদেশত প্ৰচলিত খনাৰ বচনবোৰকেই অসম, মিথিলা আদিত ডাকৰ বচন আখ্যা দিয়া হয়। বঙ্গদেশত প্ৰচলিত পৰম্পৰামতে ডাক গোৱালৰ ল'ৰা। তেনেদৰে উত্তৰ বিহাৰত প্ৰচলিত লোক পৰম্পৰামতেও ডাক গোৱালৰ ল'ৰা। অসমীয়া ডাকৰ নিচিনাকৈ বঙলা ডাকেও জন্ম লাভ কৰিছে বৰাহমিহিৰৰ কৃপাত আৰু তেওঁৰো মৃত্যু হৈছিল শিশু কালত আকস্মিকভাৱে। ডাকৰ নামত অসম আৰু বঙ্গদেশত প্ৰচলিত বচনবোৰৰ মাজতো চকু লগা সাদৃশ্য ৰক্ষিত হৈছে। অসম-বঙ্গদেশৰ নিচিনাকৈ পশ্চিম উৰিষ্যাৰ লোকসমাজত মুখ পৰম্পৰা প্ৰচলিত কৃষি আৰু জ্যোতিষ বিষয়ক বচনখিনিক ডাকৰ লগত সাঙোৰা হয়। উৰিষ্যাত প্ৰচলিত জনশ্ৰুতিমতে ডাকৰ জন্ম হৈছিল অম্পৃশ্য কন্যাৰ গৰ্ভত। উৰিষ্যাত প্ৰচলিত এই বচনবোৰৰ লগত অসম আৰু বঙ্গদেশত প্ৰচলিত ডাকৰ বচনৰ সাদৃশ্য স্পষ্ট। মিথিলাত প্ৰচলিত পৰম্পৰামতে ডাক, মিথিলাৰ জ্ঞানী পুৰুষ। পিৰ মহম্মদ যুচুফ, উমেশ মিশ্ৰ আৰু জীৱানন্দ ঠাকুৰৰ মতে ডাক মিথিলাৰ লোক।^{১৯} জীৱানন্দ ঠাকুৰৰ মতে ডাকৰ বচন মৈথিল ভাষাত ৰচিত হৈছিল আৰু মিথিলাৰ পৰাহে আন আন অঞ্চললৈ (উত্তৰ প্ৰদেশ, ৰাজস্থান, বঙ্গ, অসম ইত্যাদি) সাংস্কৃতিক প্ৰসাৰণৰ হেতু প্ৰসাৰিত হৈছে। অৱশ্যে তেওঁ ক'বলৈ বাধ্য হৈছে— একেজন ব্যক্তিয়েই মিথিলাত ডাক আৰু মিথিলা ভিন্ন অন্যান্য প্ৰান্তত ঘাঘ, ডংক আদি নামেৰে পৰিচয় লাভ কৰিছে।^{২০} বঙ্গদেশত প্ৰচলিত পৰম্পৰাৰ নিচিনাকৈ মিথিলাৰ ডাকো গোৱালৰ ল'ৰা ('কহি গেল ডাক গোআৰ') আৰু তেওঁৰ জন্ম হৈছিল বৰাহ-মিহিৰ মুনিৰ ঔৰসত। অসমৰ ডাকৰ নিচিনাকৈ মিথিলাৰ ডাকৰো মৃত্যু হৈছিল পানীত পৰি। অসমীয়া ডাকৰ বচনৰ সৈতে মৈথিল

ডাকৰ বচনৰ সাদৃশ্য অস্বীকাৰ কৰিব নোৱাৰি। ভোজপুৰী ক্ষেত্ৰতো (মল্ল, বজ্জি, কাশী, কাৰুণ) ডাকৰ বচন সদৃশ বিবিধ লোকোক্তি মৌখিক পৰম্পৰাত বিশেষকৈ লোকাৱ্যত সমাজত ঘাঘ, ভড়্‌ডৰ, ডাক আদি নামত প্ৰচলিত। ভোজপুৰী পৰম্পৰামতেও ডাকৰ জন্ম হৈছিল অহীৰ কুলত অৰ্থাৎ গোৱালৰ ঘৰত। উত্তৰ প্ৰদেশৰ লোকাৱ্যত সমাজত ডাকৰ বচন সদৃশ বিবিধ প্ৰবচন মৌখিক পৰম্পৰাত প্ৰচলিত, যদিও এই প্ৰবচনবোৰ ডাকৰ নামত প্ৰচলিত নহয়— ঘাঘৰ সৈতেহে জড়িত। ডাক আৰু ঘাঘ উভয় পদৰ অৰ্থ জ্ঞানী। দ্বিতীয়তে, উত্তৰ প্ৰদেশত ঘাঘ আৰু ডাক এই পদ দুটাৰ এটা আনটোৰ সলনি ব্যৱহাৰ হোৱা দেখা যায়, অৰ্থাৎ ডাক আৰু ঘাঘ অভিন্ন। ঘাঘৰো জন্ম হৈছিল গোৱাল যুৱতী এজনীৰ গৰ্ভত আৰু তেওঁৰ মৃত্যু হৈছিল পানীত পৰি। ঘাঘ আৰু ডাক দুয়ো গণনাকাৰী আৰু জ্যোতিষী। ইয়াৰ পৰা সহজে অনুমান কৰিব পাৰি যে ডাক আৰু ঘাঘ উভয় পৰম্পৰাৰ উদ্ভৱ হৈছে একেটা উৎসৰ পৰা। ভড়্‌ডৰ আৰু ভড়্‌ডৰী পৰম্পৰা বিহাৰ, মধ্যপ্ৰদেশ, উত্তৰ প্ৰদেশ, পঞ্জাব আৰু ৰাজস্থানত প্ৰচলিত। ভড়্‌ডৰ পিতৃও কোনোবা এগৰাকী জ্যোতিষী (বৰাহমিহিৰ?) আৰু মাতৃ অহীৰ পত্নী এগৰাকী। ডাকৰ দৰে ভড়্‌ডৰীও আছিল জ্যোতিষী। দ্বিতীয়তে, বি এন মেহতাই ভড়্‌ডৰৰ পিতৃৰ বিষয়ে ক'বলৈ গৈ কৈছে যে, প্ৰসিদ্ধ জ্যোতিষী বৰাহমিহিৰেই ভড়্‌ডৰৰ পিতৃ আছিল। তেওঁৰ মতে ভড়্‌ডৰ আৰু ভড়্‌ডৰী একেজন মানুহৰেই দুটা নাম। ভড়্‌ডৰ বা ভড়্‌ডৰীৰ বচনৰ লগত ডাকৰ বচনৰ অমিল নাই। গতিকে ডাক আৰু ভড়্‌ডৰ তথা ভড়্‌ডৰীৰ উৎস একেটাই।

ৰাজস্থানত ভড়্‌ডৰ, ভড়্‌ডৰী আৰু ডংক পৰম্পৰা মৌখিক ৰূপত প্ৰচলিত। ৰাজস্থানৰ কোনো কোনো অঞ্চলত বিশেষকৈ মাৰোৱাৰ অঞ্চলত প্ৰচলিত পৰম্পৰামতে ভড়্‌ডৰী বা ভড়্‌ডলী পুৰুষ নহয়, স্ত্ৰীহে। ভড়্‌ডৰী বা ভড়্‌ডলী খনৰ দৰে জ্যোতিষী। ডংক ব্ৰাহ্মণ জ্যোতিষী। পৰম্পৰামতে ডংক আৰু ভড়্‌ডৰী বা ভড়্‌ডলী উভয়ে আছিল স্বামী-স্ত্ৰী। ৰাজস্থানৰ অঞ্চল বিশেষে ডংক, জ্যোতিষী বৰাহমিহিৰৰ পুত্ৰ ৰূপে জনাজাত। ৰাজস্থানী ডংক পৰম্পৰা আৰু পূৰ্ব ভাৰতত প্ৰচলিত ডাক পৰম্পৰাৰ মাজত কোনো পাৰ্থক্য নাই। ৰাজস্থানী 'ডংক' পদৰ পৰাই মিথিলা, বিহাৰ, বংগদেশ, উৰিষ্যা আৰু অসমত চলতি থকা 'ডাক' পদটোৰ উদ্ভৱ হ'ব পাৰে। তেনেদৰে ৰাজস্থানী ডংকৰ নামত প্ৰচলিত প্ৰবচন আৰু অসমীয়া ডাকৰ নামৰ সৈতে সম্পৃক্ত প্ৰবচনৰ মিল চকুত লগা। এগৰাকী পণ্ডিতৰ মতে গুজৰাট

প্ৰদেশতো ডংক, ডাক, ঘাঘ, ভড়ডৰ আদি চৰিত্ৰৰ লগত জড়িত কৃষি আৰু জ্যোতিষ বিষয়ক অনেক প্ৰবচন পোৱা যায়।^১ দক্ষিণ ভাৰতত বিশেষকৈ তামিল দেশত ডাক, খনা বা ঘাঘৰ বচনৰ দৰে কৃষি, জ্যোতিষ আৰু শকুন বিষয়ক বিবিধ প্ৰবচন মুখে মুখে চলি আহিছে আৰু এই প্ৰবচনবোৰ ‘অগস্তি বচন’ (Sayings of Agasti)^২ স্বৰূপে পৰিচিত। দৰাচলতে এইবোৰ ঋষি অগস্তিৰ উক্তি নহয়, ডাক-প্ৰবচনৰ দৰে মুখ-পৰম্পৰা প্ৰচলিত প্ৰবচন যিবোৰ অগস্তিৰ সৈতে সম্পৃক্ত হৈ পৰিছে লোকবিশ্বাসত। ৰাজনৈতিকভাৱে ভাৰতৰ সৈতে সম্পৰ্কবিহীন অথচ সাংস্কৃতিকভাৱে সম্পৰ্কযুক্ত নেপালতো কৃষি আৰু জ্যোতিষ বিষয়ক বৃজন পৰিমাণৰ প্ৰবচন ডাকৰ সৈতে জড়িত।

ওপৰৰ আলোচনাৰ পৰা আমি সহজে অনুমান কৰিব পাৰোঁ যে ডাক, ঘাঘ, ভড়ডৰ, ভড়ডৰী, ডংক আদি ঐতিহাসিক ব্যক্তি নহয়; যিহেতু তেওঁলোকৰ ভিতৰত এজনৰো সময় বা পিতৃ-মাতৃ বা পৃষ্ঠপোষক নৃপতি আদিৰ বিষয়ে নিৰ্ণয় কৰিব পৰা নাই। ডাক, ডংক, ঘাঘ আদি যদি ঐতিহাসিক ব্যক্তি হ’লহেঁতেন তেনেহলে এজনৰ নহয় এজনৰ সময় সঠিকভাৱে স্থিৰ কৰিব পৰা গ’লহেঁতেন। গতিকে আমি স্পষ্টভাৱে ক’ব পাৰোঁ যে ডাক, ডংক, ঘাঘ আদি ঐতিহাসিক ব্যক্তি নহয়।

ডাক, ডংক, ঘাঘ আদি যে ঐতিহাসিক ব্যক্তি নহয়, এইবোৰ যে লোকায়াত সমাজৰ দ্বাৰা সৃষ্ট মৌখিক পৰম্পৰাহে, এই প্ৰমেয়ৰ অনুকূলে শশিশেখৰ তিৱাৰীয়ে সমীচীন মন্তব্য দাঙি ধৰিছে : “...ঘাঘ ভড়ডৰ, ভড়ডৰী আৰু ডাকৰ জন্মস্থান, জন্ম তিথি, মৃত্যু তিথি, প্ৰামাণিক নাম আৰু তেওঁলোকৰ প্ৰবচনৰ মূল ভাষাৰ প্ৰসঙ্গত নিশ্চিতভাৱে একো ক’ব নোৱাৰি। অসমৰ পৰা গুজৰাট পৰ্যন্ত প্ৰায়বিলাক আঞ্চলিক ভাষাত আৰু উপভাষাত এই কবিসকলৰ নামত প্ৰচলিত প্ৰবচন বা লোকোক্তি পোৱা যায়। এই লোকোক্তিবিলাকৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি ভাৰতবৰ্ষৰ বিভিন্ন ভাষা-ভাষী ক্ষেত্ৰৰ লোকে এই কবিসকলক নিজৰ নিজৰ ক্ষেত্ৰ আৰু ভাষাৰ কবি ৰূপে প্ৰতিপন্ন কৰিবলৈ চেষ্টা কৰি আহিছে।”^৩ ডাক, ঘাঘ, ভড়ডৰ আদি ঐতিহাসিক ব্যক্তি হোৱাহেঁতেন তেওঁলোকৰ স্থান-কাল আদিৰ বিষয়ে নিশ্চিত হ’ব পৰা গ’লহেঁতেন।

মুঠতে আমি নিৰ্ভুলভাৱে ক’ব পাৰোঁ যে ডাক, ডংক, ঘাঘ, ভড়ডৰ, ভড়ডৰী আদি ঐতিহাসিক ব্যক্তি নহয়। দুৰ অতীতৰ পৰা মুখ-পৰম্পৰাৰে চলি

অহা কৃষি, জ্যোতিষ, শুভাশুভ নিৰ্ণয়, যাত্ৰা বিচাৰ আদি সম্পৰ্কীয় প্ৰবচনবোৰ লোকমানসে ডাক, ভড়ডৰ, ডংক, ঘাঘ, ভড়ডৰী আদি কাল্পনিক ব্যক্তিৰ নামত সংযোগ কৰি দিছে, সেই প্ৰবচনবোৰৰ মূল্য আৰু গাভীৰ্য বঢ়াবলৈ। লোক মনস্তত্ত্বই ব্যক্তিনিৰপেক্ষ ৰচনাতকৈ ব্যক্তিসাপেক্ষ ৰচনাত গুৰুত্ব দিবলৈ প্ৰবৃত্তিগতভাৱে ভাল পায়। ব্যক্তিনিৰপেক্ষ মৌখিক বা বাচিক কলাৰ জন্ম নীড় কৃষিজীৱী লোকসমাজ; কিন্তু সেই লোকসমাজেই কোনো জ্ঞানী লোকৰ ৰচনা বুলি নক'লে অৰ্থাৎ প্ৰামাণ্য-বিহীন ৰচনা বা প্ৰবচন সৰ্বান্তঃকৰণে গ্ৰহণ কৰিবলৈ টান পায় আৰু তাৰেই পৰিণতিত জন্ম লাভ কৰিছে ডাক, ডংক, খনা, মিহিৰ, ঘাঘ, ভড়ডৰ, ভড়ডৰী, ভড়ডলী আদি কাল্পনিক ব্যক্তিয়ে। সুদীৰ্ঘ অবিচ্ছেদ্যতা বিশিষ্ট ভাৰতীয় লোকোক্তি বা প্ৰবচনৰ পৰম্পৰাই ভাৰতবৰ্ষৰ বিভিন্ন প্ৰান্তত, বিভিন্ন অঞ্চলত, বিভিন্ন ভাষা-উপভাষাত ডাক, ডংক, ঘাঘ, ভড়ডৰ, ভাড়, ভড়ডৰী, ভড়ডলী, খনা, মিহিৰ আদি নানা শাখা-প্ৰশাখাত বিকীৰ্ণ হোৱা স্বাভাৱিক। কাশ্মীৰৰ পৰা কন্যাকুমাৰিকালৈ আৰু দ্বাৰকাৰ পৰা নগাভূমিলৈ এই বিশাল ভূখণ্ডৰ প্ৰৱহমান লোকোক্তিবিলাক বিভিন্ন ভাষা আৰু উপভাষাত পোৱা গ'লেও সেইবিলাকৰ বিষয়বস্তু, ভাৱ আৰু অনুভৱৰ মাজত বিভিন্নতা নাই। এই সাদৃশ্যৰ মূল কাৰণ জনপ্ৰব্ৰজন আৰু সাংস্কৃতিক সম্পৰ্ক। অসমত প্ৰচলিত বুজ্জন সংখ্যক ডাক-প্ৰবচন, জন-প্ৰব্ৰজন আৰু সাংস্কৃতিক সম্পৰ্কৰ মাধ্যমেৰে পশ্চিমৰ পৰা আহিছে। সেই প্ৰবচনবোৰে অসমৰ ভৌগোলিক আৰু সাংস্কৃতিক পৰিৱেশ অনুসৰি ৰূপ সলাইছে। কিছুমান প্ৰবচন আকৌ স্থানীয়ভাৱেই উদ্ভৱ হৈছে। অৱশেষত ডাকৰ নামত মৌখিক পৰম্পৰাত প্ৰচলিত এই প্ৰবচনবোৰৰ কিছুমানে লিখিত ৰূপ পাইছে আৰু কিছুমান প্ৰবচন মুখে মুখেই চলি আছে, আন কি ডাক-প্ৰবচনৰ নিৰ্মাণ কাৰ্য বৰ্তমানো চলিয়েই আছে। গতিকে ডাক-প্ৰবচনসমূহ জীৱন্ত সামাজিক প্ৰক্ৰিয়া।

অসমীয়া ডাক-প্ৰবচন সন্নিবিষ্ট পাঠত উল্লেখ থকা চন-তাৰিখ, ইয়াৰ জেঁটনি-পদ্ধতি, ভাষা শৈলী আদি বিশ্লেষণ কৰি চাই ক'ব পাৰি যে, ডাকৰ বচনসমূহে এশ-ডেৰশ বছৰৰ ভিতৰতহে লিখিত ৰূপ লাভ কৰিছে। গতিকে এই জাতীয় বচনৰ বেছি পুৰণি পুথিও পোৱা নাযায়। ডাক-প্ৰবচনবোৰৰ কিছুমানে লিখিত ৰূপ পৰিগ্ৰহ কৰিলেও সেইবোৰ মৌখিক পৰম্পৰাৰ অঙ্গীভূত বাচিক কলা ৰূপে পৰিগণিত হোৱা স্বাভাৱিক।

অসমীয়া ভাষাত প্ৰচলিত ডাক-প্ৰবচন বা ডাকৰ বচনবোৰ কেইটিমান ভাগত বিভক্ত যেনে : জন্ম প্ৰকৰণ, ধৰ্ম প্ৰকৰণ, ন্যায় প্ৰকৰণ, নীতি প্ৰকৰণ, ৰাজন্যাদি প্ৰকৰণ, বন্ধন প্ৰকৰণ, গৃহিণী লক্ষণ, পৰিত্যাগ কথন, বৰ্ষাদি বৰ্ণন, বৃষ লক্ষণ, হলবাহনক্ৰম, কৃষি লক্ষণ, জ্যোতিষ প্ৰকৰণ, যমঘণ্টকথন, যাত্ৰা-লক্ষণ, গৃহ লক্ষণ, দ্ৰব্যগুণ কথন, নাগ লক্ষণ, কুপুৰুষ লক্ষণ, সুপুৰুষ লক্ষণ, নাৰী লক্ষণ, টোকন-নাল আদি, টোকনৰ গুণ, ওপৰঞ্চি : ডাকৰ জন্ম আৰু মৰণ। অৱশ্যে ডাক-প্ৰবচনৰ সকলো পুথিতে এই ভাগবোৰ পোৱা নাযায় অথবা কোনো কোনো পুথিত ইয়াতকৈ বেছি পোৱা যায়। জ্যোতিষ-প্ৰকৰণত লোকজীৱনৰ আঁচোৰতকৈ পণ্ডিতম্ণ্য লোকৰ সচেতন সৃষ্টিৰ আভাসহে পোৱা যায় বেছিকৈ। কৃষি বিষয়ক প্ৰবচনবোৰ শতিকা যোৰা অভিজ্ঞতাৰ স্পষ্ট স্বাক্ষৰ। এই জাতীয় প্ৰবচন বৰ্তমানো সৃষ্টি হৈয়েই আছে। ডাকৰ নামত প্ৰচলিত এই প্ৰবচনবোৰৰ মাধ্যমেৰে সমাজৰ বিভিন্ন স্তৰৰ আভাস পালেও খেতিয়ক সমাজৰ প্ৰতিফলনহে তুলনামূলকভাৱে অধিক হোৱা দেখা যায়। শ্ৰেণী-সংঘাতৰ আভাস পোৱা যায় ৰাজন্যাদি প্ৰকৰণৰ সংযোগত। এই বচনবোৰত নাৰীৰ প্ৰতি কঠোৰ মনোভাৱ ব্যক্ত কৰা হৈছে।

ডাক প্ৰবচনবোৰ পুৰণি হৈও নতুন। অতীতৰ প্ৰতিধ্বনিৰ লগতে বৰ্তমানৰো তেজস্বী কণ্ঠস্বৰ ডাক প্ৰবচনসমূহে বহন কৰি আহিছে। সেই বাবেই জন-গণ-মনত ডাক-প্ৰবচনৰ ইমান গভীৰ প্ৰভাৱ। ঘৰ সজাৰ পৰা গৰু কিনালৈ, বাৰী পতাৰ পৰা খেতি তোলালৈ, জনমৰ পৰা মৰণলৈকে জীৱনৰ সকলো দিশতে ডাক প্ৰবচনৰ আধিপত্য অস্বীকাৰ কৰিব নোৱাৰি। খেতিয়কসকলে খেতি-বাতি কৰাৰ সময়ত মনত পেলায় :

পুৱে ৰবি পশ্চিমে ছায়া/সেহিসে শস্যৰ অমৰ কায়া//
 তিনি শ যাঠি জোপা ৰুবা কল/মাহিলি মাহিলি চিকুণাবা তল//
 পাত-পচলা লাভতে খাবা/লক্ষাৰ বণিজ হাততে পাবা//
 আঠিয়াত গোবৰ মনোহৰত জাবৰ/পুৱাত খাই মালভোগত ছাই//
 ভাদত কৰিয়া কলা ৰোপণ/সবংশে মৰিল লক্ষাৰ ৰাৱণ//....
 সাতে পাতল পাঁচত ঘন/ছয়ত তামোল নদন-বদন//

প্ৰবচনত বৰ্তমান থকা সাৰ্বজনীনতা, সঞ্চিত বান্ধৱ অভিজ্ঞতা আৰু জীৱন তথা সমাজৰ লগত থকা নিবিড় সম্পৰ্কৰ দ্বাৰা এই বিধ বাচিক কলাই লোকজীৱনত

নৈৰ্ব্যক্তিৰ বাহনৰ ক্ৰিয়া সম্পাদনৰ ভূমিকা গ্ৰহণ কৰিবলৈ সক্ষম হৈছে। ডাকৰ বচন, খনাৰ বচন, ভড়ডৰ-ভড়ডৰী প্ৰবচন আদিয়ে পৰম্পৰাগত উক্তিৰ মাধ্যমত সাংস্কৃতিক অতীতৰ পৰা সামাজিক সত্যক বিবৃত কৰে সামাজিকক লক্ষ্য কৰি আৰু ইয়াতেই পৰ্য্যৱসিত প্ৰবচনৰ স্থায়িত্ব।

— ড° নবীন চন্দ্ৰ শৰ্মা

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- ১। দেবেন্দ্ৰ নাথ বেজবৰুৱা, অসমীয়া ভাষা আৰু সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী, পৃঃ ৬৫
- ২। আশুতোষ উট্টাচাৰ্য্য, বাংলাৰ লোক সাহিত্য, পৃঃ ৭৩
- ৩। J. Mishra, *Introduction to the Folk-Literature of Mithila* (Part I) p 44
- ৪। জীৱনন্দ ঠাকুৰ (সম্পা.), মৈথি লডাক, পৃঃ ৪-৫
- ৫। শশিশেখৰ তিৱাৰী, ভোজপুৰী লোকোক্তিমা, বিহাৰ ৰাষ্ট্ৰভাষা পৰিষদ, পাটনা, ১৯৭০ পৃঃ ২৩১
- ৬। সংবাদদাতা, আৰ. চন্দ্ৰশেখৰ, তামিলনাদ
- ৭। শশিশেখৰ তিৱাৰী, প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ২৩১

মন্ত্ৰ

(৬)

লোকাচাৰৰ অন্তৰ্গত লোকচিকিৎসা বা পৰম্পৰাগত চিকিৎসা পদ্ধতিক সামৰিব পাৰি। পৰম্পৰাগত চিকিৎসা পদ্ধতি দুটা ভাগত বিভক্ত; যেনে— প্ৰাকৃতিক বা ভেষজ চিকিৎসা আৰু যাদুমূলক ধৰ্মীয় চিকিৎসা (Magico-Religious Treatment)। যাদুমূলক-ধৰ্মীয় চিকিৎসা, ভেষজ বা প্ৰাকৃতিক চিকিৎসাৰ দৰে বাস্তবধৰ্মী নহয়, অনেক ক্ষেত্ৰত বিশ্বাস-প্ৰৱণতাত গুৰুত্ব দিব লগীয়া হয়। বেমাৰ- আজাৰ, ৰোগ-ব্যাদি আদি নিৰাময়ৰ বাবে বিজ্ঞান-সন্মত ঔষধ-পাতি নোলোৱালৈকে মানুহে যাদুমূলক আৰু ধৰ্মীয় কৃত্যত গুৰুত্ব দিছিল। জনগণৰ মাজত বিশ্বাস প্ৰচলিত আছে যে, প্ৰতিটো ৰোগ-ব্যাদিৰে একো জনকৈ অধিষ্ঠাতা দেৱতা বা একো জনী অধিষ্ঠাত্ৰী দেৱী আছে। সেই দেৱতা বা দেৱী বৰ্ত্তী হৈ কোনো এজন লোকৰ দেহত ব্যাদি ৰূপে লভে। গতিকে কোনো ৰোগ-ব্যাদিয়ে দেখা দিয়াৰ লগে লগেই সেই ৰোগব্যাদিৰ অধিষ্ঠাতা দেৱতা বা অধিষ্ঠাত্ৰী দেৱীক পূজা-উপাসনা কৰিব লাগে। এই উপাসনাৰ বিশিষ্ট মাধ্যম হৈছে মন্ত্ৰ। উদাহৰণ স্বৰূপে, ঘৰৰ কোনো পৰিয়ালৰ গাত বসন্ত ওলালেই আই বা শীতলা দেৱীৰ লেঠা বুলি ধৰা হয় ; অৰ্থাৎ আই-শীতলা বসন্ত ৰোগৰ অধিষ্ঠাত্ৰী দেৱী। গতিকে বসন্ত ৰোগৰ নিৰাময়ৰ বাবে গীত-পদ, স্তুতি-স্তৱ-প্ৰাৰ্থনা আদিৰে শীতলা দেৱীক পূজা কৰা উচিত। তেনেদৰে মাৰি-মৰক, সৰ্প-দংশন, অনেক মৃত্যু আদিৰ পৰা ৰক্ষা পাবৰ বাবে ; অথবা সেইবোৰৰ নিৰাময়ৰ বাবে মনসা-বিষহৰীক উপাসনা কৰা হয়— গীত পদ, স্তুতি- প্ৰাৰ্থনাৰে। পেটৰ বিষ, মূৰৰ কামোৰণি, থল কুবেৰ আদিক পূজা কৰে— গীত-পদ, স্তুতি-প্ৰাৰ্থনাৰে। তেনেদৰে শিৱ-মহাদেৱ, কালী-শ্যাম, বাসুদেৱ-গোপাল-বিষ্ণু, কামাখ্যা-হিন্ৰমন্তা-বগলা, ধূমা, ভূত-প্ৰেত, খেতৰ -খেতৰী, যথ-যথিনী আদিক বিবিধ স্তুতি-প্ৰাৰ্থনাৰে পূজা-উপাসনা কৰা হয়। দেৱ-দেৱীৰ পূজা-উপাসনাৰ প্ৰসঙ্গত প্ৰযুক্ত গীত-পদ, স্তুতি-স্তৱ, তুতি-প্ৰাৰ্থন মন্ত্ৰ। ধৰ্মীয় জীৱনৰ তাৎপৰ্য্যাপূৰ্ণ দিশ

ধৰ্মীয় কৃত্য অৰ্থাৎ পূজা-উপাসনা, সন্ধ্যা-উৎসৱ আদিৰ উদ্দেশ্যে যাদুমূলক প্ৰকাৰ্য সাধন আৰু এই প্ৰসঙ্গত মন্ত্ৰৰ ভূমিকা গুৰুত্বপূৰ্ণ। এইবোৰ ধৰ্মীয় মন্ত্ৰ।

আকৌ কিছুমান মন্ত্ৰেৰে নানা ব্যাধি নিৰাময়ৰ বাবে ৰোগীক জৰা-ফুকা কৰা হয়; আৰু এই বিধৰ মন্ত্ৰই যাদুমূলক মন্ত্ৰ। যাদু সম্পাদনৰ বাবে প্ৰযুক্ত মন্ত্ৰই চমুকৈ যাদুমূলক মন্ত্ৰ। মন্ত্ৰ পৰাম্পৰা অতিকৈ প্ৰাচীন। মানুহে ভাষাৰ মাধ্যমেৰে নিজ অন্তৰৰ ভাব-অনুভূতি প্ৰকাশ কৰিবলৈ সক্ষম হোৱাৰ দিন ধৰি মন্ত্ৰবোৰে সমাজ জীৱনত তাৎপৰ্যপূৰ্ণ স্থান লাভ কৰি আহিছে। পৃথিৱীৰ বিভিন্ন মানৱ সমাজত অতি প্ৰাচীন কালৰ পৰাই মন্ত্ৰ-পৰাম্পৰা চলি অহাৰ ঐতিহাসিক প্ৰমাণ পোৱা গৈছে।

ধৰ্মীয় ক্ৰিয়া-কাণ্ড তথা মন্ত্ৰ সৃষ্টিৰ মূলতে আছে মানৱৰ চিৰন্তন প্ৰবৃত্তি— ভয় আৰু বিস্ময়। প্ৰাকৃতিক ব্যাপাৰ, উপকাৰী আৰু অপকাৰী জীৱ-জন্তু, চৰাই-চিৰকতি, দ্ৰুম-বৃক্ষ, বনস্পতি আদিয়ে মানুহৰ অন্তৰত যুগে যুগে ভয় আৰু বিস্ময় ভাবৰ সৃষ্টি কৰি আহিছে। জুই (অগ্নি), বতাহ (বায়ু, মৰুৎ) পানী-জল (বৰুণ), বৃষ্টি-বৰষুণ (ইন্দ্ৰ) আদি প্ৰাকৃতিক উপাদানে মানৱৰ অন্তৰত ভয়-বিস্ময় ভাবৰ সৃষ্টি কৰিবলৈ সক্ষম হৈছে। তাৰ পৰিণতিত পৃথিৱীৰ বিভিন্ন সংস্কৃতিত ভয়াবহ আৰু বিষয়াৱহ প্ৰাকৃতিক উপাদানৰাজিক বিবিধ গীত-পদ, স্তুতি-প্ৰাৰ্থনা আদিৰে পূজা-উপাসনা কৰি আহিছে অকল্যাণ বিদূৰণ আৰু কল্যাণ কামনাৰ উদ্দেশ্যে। বৈদিক ঋষিসকলেও বিবিধ স্তুতিৰে অগ্নি, মৰুৎ, বৰুণ, ইন্দ্ৰ আদি দেৱতাক বন্দনা কৰি আহিছে মন্ত্ৰৰ সহায়ত। ঋগ্বেদৰ প্ৰথম মন্ত্ৰটোৱেই অগ্নি-বন্দনা বিষয়ক। গতিকে দেখা যায় যাদু আৰু ধৰ্মৰ ঘাই সহায়ক মন্ত্ৰ। অতি প্ৰাচীন কালৰে পৰা যে যাদু-মন্ত্ৰৰ পৰাম্পৰা চলি আহিছে, তাৰ প্ৰমাণ বৈদিক সাহিত্যত পোৱা যায়, বিশেষকৈ (বসিষ্ঠ) আৰু বিশ্বামিত্ৰ ঋষিৰ প্ৰসঙ্গত। বিশ্বামিত্ৰই বসিষ্ঠৰ অনিষ্ট সাধন কৰিবৰ বাবে অপকাৰী যাদু-মন্ত্ৰৰ সহায় হৈছিল। পণ্ডিতসকলৰ মতে যাদু-মন্ত্ৰ পৰাম্পৰা আৰম্ভ হৈছে অথৰ্ববেদৰ পৰা।

পৰাম্পৰাগত এটা পুৰাণ-কথা বা মিথৰ মতে জয়জয়তে ব্ৰহ্মাই ঋক্-যজুৰ্-সাম এই তিনিখন বেদ প্ৰনয়ন কৰে। যাগ-যজ্ঞ, ধৰ্মীয় কৃত্য, গীত-সঙ্গীত আদিৰ সৈতে এই তিনিখন বেদ সম্পৃক্ত; যদিও ৰোগ-ব্যাধি নিৰাময়ৰ বাবে কোনো ধৰণৰ উপায় ব্ৰহ্মাই তেতিয়ালৈকে মানৱক দিয়া নাছিল। ৰোগ-ব্যাধি নিৰাময়ৰ বাবে ব্ৰহ্মাই অথৰ্ববেদ ৰচনা কৰে। অথৰ্ব বেদ যাদু-মন্ত্ৰ-ঔষধ আদিৰ বৰ্ণনাৰে ঋদ্ধ। অকল যাদু-মন্ত্ৰ বা ঔষধৰ বৰ্ণনাৰে ৰোগ-ব্যাধি নিৰাময় নহয় যদি

সেইবোৰ যথোপযুক্তভাৱে প্ৰয়োগ কৰা নহয়। গতিকে চিকিৎসক এগৰাকীৰো সৃষ্টি ব্ৰহ্মাই নকৰাকৈ নাথাকিল। তেৱেঁই হ'ল পৰম্পৰাগত হিন্দু চিকিৎসা-পদ্ধতিৰ গুৰু বৈদ্যৰাজ ধন্বন্তৰি। ধন্বন্তৰি বিষ্ণুৰ এক অৱতাৰ হিচাপে পৰিগণিত যিজন ৰোগ-ব্যাদি বিদূৰণত সিদ্ধহস্ত তেৱেঁই ধন্বন্তৰি। ধন্বন-খেদি পঠোৱা, ধন্বতৰং-ধন্বন্তৰি। পৰম্পৰাগত বিশ্বাস মতে ধন্বন্তৰিয়ে চিকিৎসা-বিজ্ঞান নামৰ এখন চিকিৎসা-শাস্ত্ৰ প্ৰণয়ন কৰিছিল। ভাৰতীয় পৰম্পৰাগত চিকিৎসাত ধন্বন্তৰিৰ প্ৰভাৱ অখণ্ডনীয়, যিহেতু ধন্বন্তৰিৰ নামোচ্চাৰণ নকৰাকৈ কোনো বৈদ্য বা বেজেই মন্ত্ৰ প্ৰয়োগ নকৰে।

যাদু আৰু মন্ত্ৰ সম্পৰ্কে গভীৰ ভাৱে অধ্যয়নকাৰী চৈয়দ ইদ্ৰিচ শ্বাহৰ মতে যাদু বা ইল্দ্ৰজালৰ উৎস মধ্য এচিয়াৰ মঙ্গোলসকল। চৈয়দ ইদ্ৰিচ শ্বাহৰ এই অৱধাৰণা সহজে গ্ৰহণ কৰিব নোৱাৰি; যিহেতু যাদু বা ইল্দ্ৰজালৰ প্ৰকৃত উৎস মানৱৰ ভয় আৰু বিশ্বয়ানুভূতিতহে। এই ফালৰ পৰা যাদু বা ইল্দ্ৰজালবিদ্যা আৰু ইয়াৰ সহায়ক মন্ত্ৰ বিশেষ এক গোষ্ঠী বা বিশেষ এক অঞ্চলত সীমিত নহয়, ই বিশ্বজনীনপ্ৰণতাহে। ভাৰতৰ প্ৰসঙ্গত দেখা যায় যে, সৰ্ব গোষ্ঠীৰ মাজত অতি প্ৰাচীন কালৰে পৰা যাদু-মন্ত্ৰৰ পৰম্পৰা চলি আহিছে: প্ৰাক্-বৈদিক, বৈদিক, উত্তৰ-বৈদিক, লৌকিক সংস্কৃত, নব্য ভাৰতীয় ভাষা, আন কি আদিবাসীসকলৰ মাজতো যাদু-মন্ত্ৰৰ ঐতিহ্য প্ৰচলিত।

মন্ত্ৰ শব্দটো উদ্ভৱ হৈছে √ মন্ত্ৰ ধাতুৰ পৰা। শব্দটোৰ ব্যুৎপত্তি এনেদৰে দেখুৱাব পাৰি: √ মন্ত্ৰ + ঘঞ্ কৰ্ম; ইয়াৰ অৰ্থ √ ক “to speak” কথা পাত, আলাপ, উপদেশ প্ৰদান, উপদেশ গ্ৰহণ, চিন্তা কৰ, গোপনীয়ভাৱে কৰ্ কথোপকথন ইত্যাদি।

তন্ত্ৰ সাহিত্যত মন্ত্ৰ শব্দটো √ মন্ আৰু √ ত্ৰৈ ধাতুৰ সৈতে সম্পৃক্ত। √ মন্ ধাতুৰ অৰ্থ চিন্তা কৰ, ভাবি চা, √ ত্ৰৈ ধাতুৰ অৰ্থ মুক্ত কৰ। গতিকে ইয়াৰ পৰা সহজে অনুমান কৰিব পাৰি যে, মন্ত্ৰৰ সহায়ত মানুহে আসন্ন বিপদৰ পৰা উদ্ধাৰ লাভ কৰিব পাৰে, যদিহে মন্ত্ৰবোৰ ধ্যানৰ সহায়ত উপযুক্তভাৱে প্ৰয়োগ কৰা হয়।

যাদু-সম্পাদন, পূজা-উপাসনা, চিকিৎসা আদিৰ ক্ষেত্ৰত প্ৰয়োগ কৰা মন্ত্ৰৰ অৰ্থ আৰু উদ্দেশ্যৰ সৈতে তন্ত্ৰত ব্যৱহৃত মন্ত্ৰৰ সাদৃশ্য লক্ষ্য কৰা যায়। ৰোগ-ব্যাদি নিৰাময়ৰ বাবে ব্যৱহৃত মন্ত্ৰবোৰ তন্ত্ৰৰ বিস্তৃত পৰিসৰে সামৰে। শিৱ-শক্তি

উভয়ৰে তাৎপৰ্যপূৰ্ণ ভূমিকা ৰক্ষিত শাস্ত্ৰৰাজিৰ নাম তন্ত্ৰ। 'তন্ত্ৰ' শব্দৰ অৰ্থ পদ্ধতি; ধৰ্মশাস্ত্ৰৰ কৃত্য আৰু ব্যৱহাৰিক ক্ৰিয়া সম্পাদনত যি পদ্ধতি গুৰুত্ব দিয়ে সেই পদ্ধতিৰ নামেই তন্ত্ৰ। বেদত ধৰ্মীয় কৃত্যাদিৰ বৰ্ণনা আছে ; কিন্তু সেই কৃত্যাদি বাস্তৱ জীৱনত কি দৰে সম্পাদন কৰিব লাগে তাৰ সন্ধান নাই, তন্ত্ৰই ধৰ্মীয় কৃত্যৰ পদ্ধতিগত আচাৰ-অনুষ্ঠান দেখুৱাই দিয়ে আধ্যাত্মিক উৎকৰ্ষ সাধনৰ অৰ্থে। গতিকে জ্ঞানৰ বৈজ্ঞানিক আৰু পদ্ধতিগত অনুশীলনৰ মাধ্যমেৰে মোক্ষ লাভ কৰাই তন্ত্ৰৰ অন্যতম লক্ষ্য।

'তন্ত্ৰ' পদটোৰ উদ্ভৱ হৈছে - সংস্কৃত √ তন্ ধাতুৰ পৰা, অৰ্থ বিস্তাৰ কৰা বা বহলা। গতিকে সৰ্বতোমুখী আৰু ব্যাপক জ্ঞানৰ তন্ত্ৰ অনুসন্ধানই তন্ত্ৰ। মানৱ অস্ত্ৰৰ সজাগ জ্ঞানৰ পৰিণতিত মূৰ্ত বস্ত্ৰৰ জন্ম। স্থূল জগত সজাগ, অথচ অমূৰ্ত শক্তিৰ প্ৰতিফলন মাথোন। স্থূল জগতৰ বিভিন্ন উপাদানগত জ্ঞানৰ বিশ্লেষণৰ আধাৰত মানৱ-মনৰ উৎকৰ্ষ সাধন তন্ত্ৰৰ অন্যতম লক্ষ্য। তন্ত্ৰ-শাস্ত্ৰ শিৱ-পাৰ্বতীৰ কথোপকথনৰ আধাৰত পল্লৱিত। পাৰ্বতী পশু কৰ্ত্তী, শিৱ বক্তা। পূজা-উপাসনা আৰু যাদু-ইন্দ্ৰজাল বিদ্যা আদিৰ সৈতে পৃষ্ঠ মন্ত্ৰবোৰতো শিৱ-পাৰ্বতীৰ নামোল্লেখ সঘনে পোৱা যায়।

বৈদিক সাহিত্য দুটা ভাগত বিভক্ত ; যেনে : (ক) মন্ত্ৰ আৰু (খ) ব্ৰাহ্মণ। মন্ত্ৰৰ পৰিসৰে দেৱ-দেৱীৰ উপাসনাৰ বাবে আবৃত্ত প্ৰাৰ্থনাবাজিক সামৰে আৰু ব্ৰাহ্মণৰ ভাগটোৱে যজ্ঞৰ পদ্ধতি-প্ৰণালী আদিৰ বৰ্ণনাত গুৰুত্ব দিয়ে। যজ্ঞৰ বিভিন্ন স্তৰত মন্ত্ৰবোৰ আবৃত্ত হয়। অতি প্ৰাচীন কালৰে পৰা বিশ্বাস প্ৰাচলিত হৈ আহিছে যে মন্ত্ৰৰাজি উপযুক্ত প্ৰসঙ্গ বা অনুৰূপত (অৰ্থাৎ যজ্ঞ বা পূজাৰ প্ৰসঙ্গত) শ্বাসাঘাত, স্বন বা সুৰলহৰী, হস্ত-মুদ্ৰাসহ শুদ্ধকৈ আবৃত্ত হলেহে সেই মন্ত্ৰই দেৱ-দেৱী বা অপদেৱতা বা অপদেৱীক সন্তুষ্ট কৰিব পাৰে আৰু তেতিয়াহে মন্ত্ৰবোৰ কাৰ্যকৰী হয়। বৈদিক মন্ত্ৰৰ দেহ স্বৰূপ ভাষাত অন্তৰ্নিহিত হৈ আছে অপ্ৰকাশ্য অতিলৌকিক শক্তি; ইয়াৰ বাহ্যিক বা উপৰূপ অৰ্থই যথেষ্ট নহয় ; অন্তৰ্নিহিত অথবা গুহ্যতম অৰ্থতহে মন্ত্ৰৰ সাৰ্থকতা ৰক্ষিত হৈছে। গতিকে মন্ত্ৰৰ প্ৰকাৰ্য ৰক্ষিত হয় ইয়াৰ অন্তৰ্নিহিত অৰ্থত, বাহ্যিক বা উপৰূপ অৰ্থৰ দ্বাৰা মন্ত্ৰৰ প্ৰকৃত প্ৰকাৰ্য সাধিত নহয়। প্ৰকৃত প্ৰকাৰ্য সাধনৰ বাবে প্ৰয়োজন মন্ত্ৰৰাজিৰ ভাষাৰ ধ্বনি স্পন্দন (Sound Vibration)। বৈদিক পুৰোহিতসকলে সেই বাবেই মন্ত্ৰৰাজিৰ প্ৰকৃত শুদ্ধ উচ্চাৰণত অত্যধিক গুৰুত্ব দিছিল ; কাৰণ যথোপযুক্ত শ্বাসাঘাত, স্বৰলিপি, সুৰ

সহ মন্ত্ৰবোৰ উচ্চাৰণ কৰিব নোৱাৰিলে সুফলতকৈ কুফল লাভ কৰাৰ সম্ভাৱনাহে বেছি। বৈদিক যুগত মন্ত্ৰসমূহে সৰ্বশ্ৰেণীৰ মাজত সমাদৰ লাভ কৰিছিল ; কিন্তু বৌদ্ধ ধৰ্মৰ আগমনিৰ লগে লগে মন্ত্ৰৰাজিৰ সমাদৰৰ মাত্ৰা তুলনামূলকভাৱে সঙ্কুচিত হ'বলৈ বাধ্য হৈছিল- যিহেতু বৌদ্ধ ধৰ্মই বেদৰ প্ৰামাণিকতাক প্ৰত্যাখ্যান জনাইছিল। অৱশ্যে এইটোও ঠিক যে বৈদিক মন্ত্ৰই বৌদ্ধ ধৰ্মৰ বিভিন্ন দিশত গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা গ্ৰহণ কৰিবলৈও সক্ষম হৈছিল। বৌদ্ধ ধৰ্মৰ প্ৰবল আক্ৰমণৰ পৰা বেদ-মন্ত্ৰবোৰ ৰক্ষা কৰিবৰ বাবে মীমাংসকসকল আগ বাঢ়ি আহিল। তেওঁলোকে বৈদিক মন্ত্ৰৰ পৰা অলৌকিক সমলৰাজি বিদূৰ কৰি যুক্তিনিষ্ঠতা আৰোপ কৰি মন্ত্ৰৰ অন্তৰ্নিহিত শক্তি প্ৰদৰ্শনত গুৰুত্ব প্ৰদান কৰে। এইদৰে তেওঁলোকে শব্দ বা ধ্বনিৰ গুহ্যতম শক্তিত গুৰুত্ব আৰোপ কৰি শব্দতত্ত্ব বা ধ্বনিবাদ প্ৰৱৰ্তন কৰে। শব্দতত্ত্ব বা ধ্বনিবাদৰ উদ্দেশ্য 'শব্দ-শক্তি' প্ৰতিপাদন। শব্দ-শক্তি বা ধ্বনি বৈশিষ্ট্য মন্ত্ৰৰাজিৰ অন্যতম বিশেষত্ব। মীমাংসকসকলে দেৱতাৰ একত্বত (অৰ্থাৎ পৰমব্ৰহ্মত) গুৰুত্ব দিয়া নাছিল, গুৰুত্ব দিছিল বহুত্বত। আকৌ তেওঁলোকৰ মতে এই দেৱতাসৰৰ স্বকীয় অস্তিত্ব নাই, মন্ত্ৰৰাজিহে সেই দেৱতাসৰৰ অস্তিত্ব প্ৰতিপাদন কৰে ; অৰ্থাৎ মন্ত্ৰভিন্ন সেই দেৱতাসৰৰ স্বকীয় অস্তিত্ব নাই। মন্ত্ৰৰাজিহে দেৱতাৰ স্বৰূপ প্ৰকাশ কৰে। গতিকে মন্ত্ৰৰাজিৰ যি ৰহস্যাবৃত শক্তি আছে - দেৱতাসৰৰ সেই শক্তি নাই, মন্ত্ৰইহে দেৱতাসৰৰ ৰহস্যাবৃত শক্তি প্ৰতিপাদন কৰে। মীমাংসকসকলৰ মতে শব্দ চিৰন্তন সত্যৰ ধ্বনিমূলক প্ৰতিনিধি। চিৰন্তন সত্যই পৰম ব্ৰহ্ম। মীমাংসকসকলৰ মতবাদ অনুসৰি ধ্বনি চিৰন্তন আৰু শব্দই ব্ৰহ্ম, অৰ্থাৎ শব্দ ব্ৰহ্মৰূপী। শব্দক ব্ৰহ্মৰূপে প্ৰতিপাদন কৰাৰ ক্ষেত্ৰত মীমাংসকসকলৰ লগত উপনিষদৰ ভূমিকাও স্বীকাৰ কৰিব লাগিব। ব্ৰহ্ম অক্ৰিয়, নিৰ্গুণ ; শব্দৰ জৰিয়তে ব্ৰহ্ম সক্ৰিয় আৰু গুণযুক্ত হয়।

বৈদিক আৰু ব্ৰাহ্মণ সাহিত্যত বাক্ দেৱী ব্ৰহ্মাৰ কন্যা, আন ফালে তেওঁ ব্ৰহ্মাৰ পত্নী। বাক্‌দেৱী ব্ৰহ্মাৰ সৈতে অভিন্না। ছান্দোগ্য-উপনিষদত বাক্ আৰু প্ৰাণেই ব্ৰহ্মাৰ স্বাৰা সৃষ্টিৰ প্ৰথম মিথুন। বাকৰ অন্যতম নিৰ্যাস-ৰূপায়ণৰ জৰিয়তে সৃষ্টি হৈছে স্বৰ্গদেৱ। বাক্ আৰু মনৰ মিলনৰ মাধ্যমেৰে ব্ৰহ্মই জগৎ সৃষ্টি কৰাৰ বৰ্ণনা পোৱা যায় বৃহদাৰণ্যক-উপনিষদত। এইখন উপনিষদত কোৱা হৈছে যে, সনাতন পুৰুষে জগৎ সৃষ্টি কৰিবলৈ ইচ্ছা কৰি পোনতে বাক্ আৰু মনৰ মিলনৰ মাজেৰে প্ৰথম মিথুন সৃষ্টি কৰে। এই প্ৰসঙ্গত মন পিতৃ আৰু বাক্ মাতৃ। তন্ত্ৰত

‘মন’ আৰু ‘বাক’ ক্ৰমে বিন্দু আৰু নাদ স্বৰূপে পৰিচিত ; বিন্দুৱেই শিৱ আৰু নাদেই পাৰ্বতী (শক্তি)। স্বৰূপাৰ্থত শব্দই হৈছে ব্ৰহ্মৰ প্ৰথম অমূৰ্ত প্ৰকাশ। ব্ৰহ্মাক দুই প্ৰকাৰে জনা যায় : শব্দ ব্ৰহ্ম আৰু অশব্দ ব্ৰহ্ম। অশব্দ ব্ৰহ্ম নিৰ্গুণ-নিৰাকাৰ নিৰ্বিকাৰ-অজ্ঞেয়-জগৎ, সৃষ্টিত যাৰ ভূমিকা নেতিবাচক। অন্য হাতে শব্দ ব্ৰহ্ম আত্ম-সচেতন, আৰু শব্দই হ’ল সেই আত্ম-সচেতন ব্ৰহ্মৰ প্ৰথম অভিব্যক্তি। উপনিষদতো ব্ৰহ্মৰ সগুণ আৰু নিৰ্গুণ অভিব্যক্তিৰ পৰিচয় পোৱা যায়। শব্দ ব্ৰহ্মৰ সৈতে খৃষ্টিয়ান ধাৰণা logos অৰ্থাৎ wordৰ সৈতে তুলনা কৰিব পাৰি। চেণ্ট জনে (St. John) কোৱা “সৃষ্টিৰ প্ৰাৰম্ভণিত কেৱল আছিল শব্দ আৰু এই শব্দ ঈশ্বৰৰ সৈতে এক লগে আছিল আৰু শব্দই আছিল ঈশ্বৰ।” এই কথাষাৰৰ সুৰতে সুৰ মিলাই আমি কব পাৰোঁ যে word যেই শব্দব্ৰহ্ম। শব্দ আৰু ব্ৰহ্ম যে অভিন্ন এই ধাৰণাই ভাৰতীয় জন-সাধাৰণৰ মনত গভীৰভাৱে প্ৰভাৱ বিস্তাৰ কৰি থকা হেতু শব্দ আৰু প্ৰাণৰ অভিব্যক্তিময় মন্ত্ৰসমূহক কেন্দ্ৰ কৰি বিভিন্ন মতবাদৰ সৃষ্টি হৈছিল। মন্ত্ৰৰাজিয়ে যে কেৱল তন্ত্ৰৰ অনুৰূপতহে বৈশিষ্ট্যপূৰ্ণ প্ৰাধান্য লাভ কৰি আহিছে তেনে নহয়, ব্যাকৰণৰ ক্ষেত্ৰতো ইয়াৰ প্ৰভাৱ সুদূৰপ্ৰসাৰী উচ্চাৰিত শব্দৰ তাত্ত্বিক পৃষ্ঠভূমি থকাৰ অনুকূলে মত পোষণ কৰা দেখা যায়। এই প্ৰসঙ্গত ভাৰতীয় ব্যাকৰণবিদসকলেও অৰ্থযুক্ত ভূমিকা গ্ৰহণ কৰি আহিছে। শব্দৰ ধ্বনি, বায়ু আৰু কণ্ঠযন্ত্ৰৰ সহায়ত সৃষ্টি শব্দৰ বহিঃ-অভিব্যক্তি ভিন্ন আন একো নহয়। শব্দৰ এই বহিঃ-অভিব্যক্তিৰ নামেই শব্দৰ বৈখাৰী ৰূপ। বৈখাৰীৰ পূৰ্ণৱৰ্তী ৰূপ হৈছে মধ্যমা, ই শব্দৰ সূক্ষ্ম ৰূপ। মধ্যমা ৰূপটি শব্দৰ কেৱল বায়ৱীয় কম্পনবিশিষ্ট উচ্চাৰণতেই সীমিত নহয় যিহেতু ই ধ্বনিৰ এক মানসিক ক্ৰিয়া। মধ্যমা ৰূপটিৰ বাহিৰেও শব্দৰ আন এটি ৰূপ আছে, যিটো ৰূপ মধ্যমা ৰূপটোতকৈও সূক্ষ্মতৰ আৰু এই ৰূপটোৰ নামেই পশ্যন্তী। পশ্যন্তী ভৱত শব্দ আৰু অৰ্থৰ মিলন অপৰিহাৰ্য। শব্দ আৰু অৰ্থৰ মিলনৰ জৰিয়তে শব্দৰ দেহত যি শক্তি প্ৰকাশ পায় সেই শক্তিক প্ৰকাশ গছ এজোপাৰ বীজত থকা শক্তিৰ সৈতে তুলনা কৰিব পাৰি। শব্দ-শক্তিৰ প্ৰকৃত আধাৰৰ নামেই পৰা-শক্তি। গতিকে শব্দৰ অৰ্থ, শব্দৰ অৰ্থৰ মাজত নিবিড় সম্পৰ্ক অদ্বৈত সম্পৰ্ক আখ্যা দিব পাৰি। দ্বিতীয়তে, শব্দ আৰু অৰ্থৰ মিলনত বিশ্বসৃষ্টি প্ৰক্ৰিয়া নিহিত। শব্দৰ অৰ্থক জাগতিক শক্তিৰ অংশ বিশেষ বুলিব পাৰি। শব্দ-শক্তিৰ এই প্ৰভাৱ মন্ত্ৰৰাজিতো ৰক্ষিত হৈছে— সেই বাবে মন্ত্ৰ-শক্তিৰ প্ৰভাৱ লক্ষ্য কৰা যায়। শব্দত বৰ্তমান থকা ‘পৰা’ বৈশিষ্ট্যই শব্দক শব্দ ব্ৰহ্ম স্বৰূপে প্ৰতীয়মান

কৰাইছে। তদন্ত এই ‘পৰা বাক’ক পৰমা শক্তি আখ্যা দিয়া হৈছে। সৃষ্টিৰ পূৰ্বে সমস্ত জগত বীজ স্বৰূপে পৰমা শক্তিত অন্তৰ্হিত হৈ থাকে আৰু পৰমা শক্তিৰ ইচ্ছানুসৰি অক্ৰিয় জগৎ সক্ৰিয় হৈ উঠে।

মন্ত্ৰৰ দাৰ্শনিক ভিত্তি আৰু আদৰ্শ অস্বীকাৰ কৰিব নোৱাৰি। বৌদ্ধ ধৰ্মতো মন্ত্ৰৰ অৰ্থপূৰ্ণ ভূমিকা লক্ষ্য কৰা যায় যিহেতু এই ধৰ্মৰ প্ৰাৰম্ভণিৰ পৰা মন্ত্ৰই গুৰুত্বপূৰ্ণ ফল অধিকাৰ কৰি আহিছে। উদাহৰণ স্বৰূপে বৌদ্ধ ধৰ্মৰ পৰম্পৰাত প্ৰচলিত পৰিত (ৰক্ষা বন্ধন) সচ্চ বচন (সত্য বচন) আদিলৈ আঙুলিয়াব পাৰি। জৈনসকলেও ৰক্ষা-মন্ত্ৰত আস্থা স্থাপন কৰে (মঙ্গল-সূত্ৰ)। বৌদ্ধ ধৰ্মত ধাৰণী-মন্ত্ৰৰ পৰম্পৰা প্ৰচলিত। এই ধাৰণী-মন্ত্ৰ পৰম্পৰাই অসমীয়া ভাষাত ধাৰণী-মন্ত্ৰ স্বৰূপে প্ৰচলিত হৈছে। মহাযান বৌদ্ধ ধৰ্মত বিশেষকৈ এই ধৰ্ম সম্প্ৰদায়ৰ তান্ত্ৰিক স্তৰত মন্ত্ৰৰ গুৰুত্ব অস্বীকাৰ কৰিব নোৱাৰি। হিন্দু ধৰ্মৰ তান্ত্ৰিক মাৰ্গত মন্ত্ৰৰ যি ভূমিকা লক্ষ্য কৰা যায় সেই ভূমিকা বৌদ্ধ-ধৰ্মৰ তান্ত্ৰিক মাৰ্গতো লক্ষ্য কৰা যায়। বোধি-সত্ত্ব-ভূমি নামৰ এখন বিশিষ্ট গ্ৰন্থত বৌদ্ধ দাৰ্শনিক পণ্ডিত বসুবন্ধুৱে বৌদ্ধ-ধৰ্মৰ আদৰ্শ আগত ৰাখি মন্ত্ৰৰ ব্যাখ্যা উপস্থাপন কৰিছে। এই ব্যাখ্যাৰ প্ৰসঙ্গত তেওঁ দেখুৱাই দিছে যে, সৰ্বসাধাৰণে নিৰর্থক বুলি ভবা ইটি-মিটি-কিটি-ভিক্ষুংতি-পদানি-স্বাছা আদি শব্দাংশৰ দাৰ্শনিক তাৎপৰ্য আছে। বাহ্যিক দৃষ্টিত মন্ত্ৰৰ অৰ্থ বিচাৰি নেপালেও তাৰ অন্তৰ্নিহিত অৰ্থ নথকা নহয়। আকৌ অৰ্থবিহীনতাই মন্ত্ৰবোৰৰ প্ৰকৃত অৰ্থ বুলিও তেওঁ কব খোজে। গভীৰ অনুভূতি অথবা প্ৰতীতি অবিহনে মন্ত্ৰৰ অৰ্থ উপলব্ধি কৰা টান ; যিহেতু সাধকৰ বাবেহে ই সাধ্য। ধৰ্মৰ তত্ত্ব উপলব্ধি কৰিবৰ বাবে ইয়াৰ সৈতে জড়িত মন্ত্ৰবোৰো অৰ্থ বুজিব লাগিব।

ভাৰতীয় আধ্যাত্মিক জীৱনত মন্ত্ৰৰ প্ৰভাৱ বিশেষকৈ গায়ত্ৰী মন্ত্ৰৰ প্ৰভাৱ অনস্বীকাৰ্য। ঋগ্বেদৰ অন্তৰ্গত গায়ত্ৰী মন্ত্ৰৰ মাধ্যমেৰে সৰ্ব শক্তিৰ আধাৰ সূৰ্য দেৱতাক স্তুতি কৰা হৈছে : “হে সৰ্বিতা আমি তোমাক বন্দনা কৰোঁ— তুমি সৰ্ব স্ৰষ্টা- পৃথিৱী অন্তৰীক্ষ, স্বৰ্গ আদিৰ স্ৰষ্টা, তেওঁ আমাৰ ধী শক্তি বৃদ্ধি কৰক আৰু আমাক সুপথে পৰিচালিত কৰক।”

পৰৱৰ্তী কালত গায়ত্ৰী-মন্ত্ৰৰ বিভিন্ন ব্যাখ্যা আৰু বিভিন্ন আলোচনা আগ বঢ়োৱা হৈছে। এক অক্ষৰযুক্ত মন্ত্ৰৰ উদাহৰণ হৈছে ওম্ যাক প্ৰণৱ আখ্যা দিয়া হয়। উপনিষদত প্ৰণৱ সম্পৰ্কে অৰ্থাৎ ‘ওম’ৰ বিষয়ে বিভিন্ন ব্যাখ্যা উপস্থাপন কৰা হৈছে। ওম্ পৰম ব্ৰহ্মৰ প্ৰতীক। তিনিটা ধ্বনিৰ সমবায়ত অৰ্থাৎ অ, উ, ম— এই

তিনিটা ধ্বনিৰ মিলনত ওমৰ সৃষ্টি। প্ৰতিটো ধ্বনিয়েই নিৰ্দিষ্ট তত্ত্ব প্ৰকাশক। পৰম ব্ৰহ্মৰ অৱস্থা চাৰিটা — জাগ্ৰত, স্বপ্ন, সুষুপ্তি আৰু তুৰীয়। চতুৰ্থ অৱস্থাতে অৰ্থাৎ তুৰীয় অৱস্থা-অপ্ৰকাশক, অব্যক্ত। তুৰীয় অৱস্থাত ব্ৰহ্মৰ সগুণ নিৰ্গুণ আদি পাৰ্থক্যৰ বোধ নাথাকে। পৰম ব্ৰহ্মৰ প্ৰতীক ওম্ শব্দই পৰম ব্ৰহ্মৰ চাৰিটা অৱস্থাৰ প্ৰতীকী অৰ্থ প্ৰকাশ কৰিব পাৰে। যেনেঃ

অ = জাগ্ৰত ; উ = স্বপ্ন ; ম্ = সুষুপ্তি।

মন্ত্ৰৰ এই তিনিটা এককৰ সমষ্টিয়েই চতুৰ্থ অৱস্থাৰ জনক আৰু এই অৱস্থাত নিজৰ বৈশিষ্ট্য লুপ্ত হৈ মাত্ৰা স্বৰূপে বৰ্তমান থাকে, অথবা ওম্ মন্ত্ৰই তেনে অৱস্থাত নিৰ্গুণ নিৰাকাৰ অপ্ৰকাশক ব্ৰহ্মৰ প্ৰতিনিধি স্বৰূপে ভূমিকা গ্ৰহণ কৰিবলৈ সক্ষম হয়।

পৰৱৰ্তী কালত ওমৰ তিনিটা এককে (অ, উ, ম) স্থল, সূক্ষ্ম আৰু কাৰণ-তত্ত্বৰ প্ৰতিনিধিত্ব কৰিবলৈ সক্ষম হৈছে। অকল ইমানেই নহয়, প্ৰণৱৰ এই তিনিটি এককে আন কি সৃষ্টি (অ), স্থিতি (উ) আৰু ধ্বংসৰ (ম্) প্ৰতিনিধিত্ব কৰিছে। সৃষ্টি - স্থিতি-প্ৰলয় বা ধ্বংসৰ দেৱতা ক্ৰমে ব্ৰহ্মা, বিষ্ণু আৰু শিৱৰ প্ৰতিকল্প স্বৰূপেও প্ৰণৱৰ এককৰ ভূমিকা স্বীকাৰ কৰিব লাগিব। তাত্ত্বিকসকলৰ মতে প্ৰণৱৰ তিনিটা একক মানৱ দেহৰ অন্তৰ্ভাগত বিদ্যমান ষড়্‌চক্ৰৰ সৈতে সম্পৃক্ত। ওম্ শব্দাংশটি বিভিন্নমন্ত্ৰৰ বীজমন্ত্ৰ স্বৰূপে মন্ত্ৰ উচ্চাৰণ বা আবৃত্তি কৰাৰ পূৰ্বেই উচ্চাৰণ কৰা হয়।

বৈদিক যুগত অনুষ্ঠিত যজ্ঞত মন্ত্ৰৰাজি বহুলভাৱে ব্যৱহৃত হৈছিল। বৈদিক যুগৰ পৰৱৰ্তী কালত যজ্ঞৰ স্থান দখল কৰিলে বিভিন্ন দেৱ-দেৱীৰ পূজাই। দেৱ-দেৱীৰ পূজাতো মন্ত্ৰই অত্যন্ত গুৰুত্বপূৰ্ণ স্থান লাভ কৰি আহিছে। পূজাৰ প্ৰসঙ্গতে প্ৰাৰ্থনামূলক, প্ৰশংসামূলক, জপমূলক বা ধ্যানমূলক, প্ৰণামমূলক মন্ত্ৰৰ ব্যৱহাৰ আছে। এক অক্ষৰযুক্ত মন্ত্ৰ কিছুমানো প্ৰাৰ্থনামূলক, প্ৰশংসামূলক মন্ত্ৰৰ সৈতে পোনতে আবৃত্তি কৰা হয়। এনে মন্ত্ৰক বিভিন্ন দেৱ-দেৱীৰ বীজমন্ত্ৰ আখ্যা দিব পাৰি।

পাতঞ্জল-যোগ পদ্ধতি আৰু হঠযোগত মন্ত্ৰৰ পূৰ্ণ ভূমিকা পৰিলক্ষিত হয়। পতঞ্জলিয়ে পোনতে মন্ত্ৰত আধ্যাত্মিক গুৰুত্ব দিয়া নাছিল ; যিহেতু তেওঁৰ লক্ষ্য আছিল সমাধি স্তৰত উপনীত হোৱা। বিবিধ মানসিক স্তৰ আৰু প্ৰক্ৰিয়াৰ শেষ স্তৰেই সমাধি। সমাধি স্তৰত উপনীত হোৱাৰ ক্ষেত্ৰত মন্ত্ৰৰ ভূমিকা স্বীকাৰ কৰিবই লাগিব ; কিন্তু এইটোও ঠিক যে, মন্ত্ৰৰ অন্তিৰ্নিহিত শক্তিয়ে সমাধি লাভত

বিশেষ সহায় কৰিব নোৱাৰে। মন্ত্ৰ-জপ অতিকৈ প্ৰয়োজনীয় মনৰ একাগ্ৰতা সৃষ্টিত মন্ত্ৰ-জপ প্ৰক্ৰিয়াই বিশেষভাৱে সহায় কৰিব পাৰে। সমাধি লাভত প্ৰণৱ মন্ত্ৰ বা ওমৰ অৱদান অনস্বীকাৰ্য। মনস্তাত্ত্বিক সহায়তাৰ বাবে যোগ প্ৰক্ৰিয়াত মন্ত্ৰৰ ভূমিকা লক্ষ্য কৰিব পাৰি। হঠযোগীসকলে মন্ত্ৰৰ সহায়ত দীক্ষা গ্ৰহণ কৰে ; তথাপি হঠযোগৰ আন আন প্ৰক্ৰিয়াত মন্ত্ৰৰ বিশেষ অৰিহণা আছে বুলি কব নোৱাৰি।

হঠযোগী আৰু তান্ত্ৰিকসকলে সঘনে অনাহত ধ্বনি উচ্চাৰণ কৰে। এই অনাহত ধ্বনিৰো আধাৰ শব্দব্ৰহ্ম। নিৰ্গুণ আৰু নিৰূপাধি ব্ৰহ্ম উপলব্ধিৰ প্ৰক্ৰিয়াত অনাহত ধ্বনিৰ অৱদান অস্বীকাৰ কৰিব নোৱাৰি।

তন্ত্ৰত মন্ত্ৰৰ স্থান তাৎপৰ্যপূৰ্ণ। সেই কাৰণেই কোৱা হয় তন্ত্ৰ-মন্ত্ৰ। তান্ত্ৰিকসকলে মন্ত্ৰৰ মাধ্যমেৰে শিৱ-শক্তিৰ তত্ত্ব উপলব্ধি কৰিবলৈ প্ৰয়াস কৰে। তন্ত্ৰমৰ্গত শিৱ অশব্দ ব্ৰহ্মৰ প্ৰতীক আৰু পাৰ্বতী বা শক্তি শব্দ ব্ৰহ্মৰ প্ৰতীক। শিৱ আৰু শক্তিৰ এই দিশ দুটাক সূচাবৰ বাবে ক্ৰমে বিন্দু আৰু নাদ পদ দুটাও প্ৰয়োগ কৰা হয়। বিন্দুৰ অস্তিত্ব আছে, কিন্তু বিস্তাৰ বা প্ৰসাৰ নাই। বিস্তাৰ বা প্ৰসাৰতা প্ৰদান কৰে নাদে অৰ্থাৎ শক্তিয়ে। এই বিস্তাৰ বা প্ৰসাৰতাত বৰ্তমান সৃষ্টিমূলক কম্পন আৰু এই বাবে শক্তিক নাদ বোলে। মন্ত্ৰৰাজি নাদৰেই বিকাৰ আৰু প্ৰণালী বিশেষ। সাধকৰ বাবে ধ্বনি মাথ্ৰেই মন্ত্ৰ, যিহেতু এই ধ্বনিৰাজিয়ে মাতৃদেৱীৰ অসীম শক্তিৰ ক্ষুদ্ৰাতিক্ষুদ্ৰ অংশকেই প্ৰতিনিধিত্ব কৰে। আমি কাণেৰে কি শুনো অৰ্থাৎ সকলো ঋতিয়েই স্বৰূপাৰ্থত আই মাতৃৰ মন্ত্ৰ। আন কি কালী দেৱী ৫০টা বৰ্ণৰ সমষ্টিগত ৰূপ মাথোন। ৫০টা বৰ্ণৰ প্ৰত্যেকটো বৰ্ণৰ আধাৰত দেৱী গৰাকীৰ একো একোটি নামৰ সৃষ্টি হৈছে। স্বৰবৰ্ণ আৰু ব্যঞ্জন বৰ্ণ মিলি সংস্কৃতত সৰ্বমুঠ ৫০ টা বৰ্ণ পোৱা যায়। এই বৰ্ণবোৰ আই-মাতৃৰ অসীম অনন্ত শক্তিয়েই বিকাৰগত ৰূপ। সেই বাবে এই বৰ্ণসমূহ মাতৃকা নামেৰে পৰিচিত। তান্ত্ৰিক পদ্ধতিত প্ৰতিটো বৰ্ণৰ সহায়ত বিভিন্ন মন্ত্ৰ আবৃত্তি কৰি দেহৰ প্ৰতিটো অঙ্গৰ সৈতে সেই মন্ত্ৰ সংযোজন কৰা হয়। যেনে —

হৃদি— ওম্ নমঃ, খং নমঃ, গং নমঃ, ঘং নমঃ ইত্যাদি।

শিৰসি— ওম্ বং নমঃ, কৰ্ণে— ওম্ দং নমঃ, চক্ষুষোঃ, ওম্ দং নমঃ, বাং নমঃ, ইত্যাদি।

মাতৃ শক্তিৰ বিভিন্ন দিশৰ সৈতে মানৱ দেহৰ বিভিন্ন অঙ্গৰ উদ্দেশ্যপূৰ্ণ সম্পৰ্ক স্থাপন কৰিবলৈ সক্ষম হোৱাজনেহে মন্ত্ৰ শক্তি উপলব্ধি কৰিব পাৰে। ইয়াৰ

মূলতে হ'ল জৈৱিক আৰু মনস্তাত্ত্বিক বিভিন্ন প্ৰক্ৰিয়াৰ সৈতে মানৱ দেহ এক প্ৰকাৰ যন্ত্ৰ আৰু এই যন্ত্ৰ মাধ্যমেৰেই অলৌকিক বা দিব্য শক্তি প্ৰকটিত হৈছে। স্বৰূপাৰ্থত দেহ আৰু মন উভয়ৰ সৈতে আত্মসম্পৰ্ণৰ আদৰ্শ মন্ত্ৰসমূহৰ জৰিয়তে প্ৰকাশ পাইছে।

বীজমন্ত্ৰ আন এবিধ উল্লেখযোগ্য মন্ত্ৰ, যাক এক প্ৰকাৰে নিৰ্ধাৰিতগঢ়ী মন্ত্ৰ বুলিব পাৰি। বীজ মন্ত্ৰ প্ৰায়ে এক অক্ষৰবিশিষ্ট ; যেনে : ক্লীং, ক্ৰীং, শ্ৰীং, ঙ্গ, ঐং, ক্ৰীং, ঙ্গ, ক্ষৌং, যাং, ৰাং, লাং, বাং, আং, ক্ৰোং, দং ইত্যাদি। বীজমন্ত্ৰ অৰ্থশূন্য নহয়, অন্তৰ্নিহিত অৰ্থৰে ঋদ্ধ। এইবোৰৰ অংপৰ্য কেৱল সাধকসকলেহে উপলব্ধি কৰিব পাৰে। প্ৰতি গৰাকী দেৱ-দেৱীৰ সুকীয়া সুকীয়া বীজমন্ত্ৰ আছে। স্বকীয় স্বকীয় বীজমন্ত্ৰৰ জৰিয়তেই সেই সেই দেৱ-দেৱীক জাগ্ৰত কৰিব পাৰি বুলি ভবা হয়।

মনসা : ওম্ শ্ৰীং মাং মনসা দেৱৈ নমঃ।

শিৱ : ওম্ ঐং প্ৰমত্তং শক্তিসংযুক্তং বাণাখ্যঞ্চ মহাপ্ৰভং।

দুৰ্গা : ওম্ শ্ৰীং দুৰ্গায়ৈ নমঃ।

সূৰ্য্য : ওম্ শ্ৰীং শ্ৰীসূৰ্য্যায় নমঃ।

কৃষ্ণ : ওম্ শ্ৰীং কৃষ্ণায় নমঃ।

শীতলা : ওম্ শ্ৰী শীতলায়ৈ স্বাহা।

বীজমন্ত্ৰবোৰক এক প্ৰকাৰে Microcosmic Sound অৰ্থাৎ ক্ষুদ্ৰজাগতিক ধ্বনি বুলিব পাৰি।

এক অক্ষৰ, দ্বিঅক্ষৰ বা ত্ৰি অক্ষৰযুক্ত শব্দ কিছুমানৰ প্ৰয়োগ যাদু-বিদ্যা, মায়াবিদ্যা, ডাকিনী বিদ্যা আদিৰ সৈতে জৰিত। যেনে :

(ক) ওম্ ক্ৰীং চণ্ডে শ্ৰীং ফট্ স্বাহা।

(খ) ওম্ শ্ৰীং ক্ষৌং ফট্ স্বাহা।

(গ) ওম্ নমো শ্ৰীং কামিনীং অমুকীং মে বশমানয় স্বাহা।

(ঘ) ওম্ শ্ৰীং ৰক্ষ চামুণ্ডে তুৰু তুৰু অমুকং মে বশমানয় স্বাহা।

(ঙ) ওম্ নমো ভগৱতে ৰুদ্ৰায় স্তম্ভঃ ঠঃ।

বীজমন্ত্ৰ তালপত্ৰ, ভূৰ্জপত্ৰ আদিত লিখি তাবিজ, মাদলি আদিত ভৰাই ৰচীৰে সংযুক্ত কৰি বাহু, কঁকাল, ডিঙি আদিত বান্ধি বা আঁৰি ললে ৰোগ-ব্যাধি নিৰাময় হয় আৰু ভূত-প্ৰেত আদিও আঁতৰি যায়।

মূৰ্তি কলাত ধ্যান মন্ত্ৰৰ ভূমিকা অত্যন্ত গভীৰ। প্ৰত্যেক গৰাকী দেৱদেৱীৰ সুকীয়া সুকীয়া ধ্যান মন্ত্ৰৰ চলতি আছে— বিশেষকৈ সংস্কৃত পৰম্পৰাত। অমূৰ্ত দেৱ-দেৱীয়ে বিভিন্ন মাধ্যমৰ (মাটি, শিল, ধাতৱ পদাৰ্থ, তালপাত, সাঁচিপাত, ভূৰ্জপত্ৰ আদিৰ? জড়িয়তে চাক্ষুষ ৰূপ লাভ কৰে ধ্যান-বৰ্ণনত বৰ্ণিত বিষয়বস্তুৰ আধাৰত।

কিছুমান মন্ত্ৰৰ অৰ্থ নাই বুলি কোনো কোনোৱে কয়- অৰ্থাৎ সেই মন্ত্ৰ-সমূহৰ ভাষা আমি এতিয়া বুজি নেপাওঁ যিহেতু সেই ভাষা বৰ্তমান অপ্ৰচলিত হ'ব পাৰে। দ্বিতীয়তে, পণ্ডিতসকলৰ মতে অনেক মন্ত্ৰ ৰচিত হৈছিল মঙ্গোলীয়সকলৰ মাজত যি ভাষা বৰ্তমান সম্পূৰ্ণভাৱে অপ্ৰচলিত আৰু অবোধগম্য। কোনো কোনো পণ্ডিতে কব খোজে যে, ভাৰতত প্ৰচলিত অনেক মন্ত্ৰ আহিছে মহাচীনৰ পৰা। অৱশ্যে এই প্ৰমেয়টো চালি-জাৰি নোচোৱাকৈ গ্ৰহণ কৰিব নোৱাৰি।

জপ-মন্ত্ৰ, নাম-জপ আদিৰ বিষয়ে আলোচনা নকৰিলে মন্ত্ৰৰ বিষয়ে সম্পূৰ্ণকৈ আলোচনা কৰা নহ'ব। গায়ত্ৰীজপ, জপমন্ত্ৰৰ উৎকৃষ্ট উদাহৰণ। বীজমন্ত্ৰৰ সৈতেহে গায়ত্ৰী মন্ত্ৰ জপ কৰা হয়। নাম-জপ কৰাৰ প্ৰসঙ্গত অৰ্থ ভাৱনাৰ প্ৰতি সতেচন হ'ব লাগিব। নাম-শব্দৰ প্ৰতীক আৰু পৰম ব্ৰহ্মৰ শক্তিৰ সৈতে সম্পৃক্ত। নাম-জপৰ ক্ষমতা অসীম, কাৰণ নাম আৰু নামীৰ মাজত কোনো পাৰ্থক্য নাই।

শ্বেতাস্থেতৰ উপনিষদত মন্ত্ৰৰ বিষয়ে এনেদৰে কোৱা হৈছে :

য একো'বৰ্ণো বহুধা শক্তিয়োগাধ্বৰ্গাননেকান্নিহিতাৰ্থে দধাতি।

ৱি চৈতিচান্তে বিশ্বমাদৌ স দেৱঃ স নো বুধ্যা শুভয়া সংযুনক্তু।।^{৪/১}

উল্লিখিত শ্লোকটিত ব্যৱহৃত বৰ্ণ পদটো বিশ্বজগতৰ সৃষ্টি পদাৰ্থৰাজিৰ বিভিন্ন বৰ্ণৰাজিক সুচোৱাৰ ক্ষেত্ৰত ব্যৱহৃত হৈছে বুলি কব পাৰি, অথবা বিশ্বজগতৰ বিভিন্ন জীৱৰ ধৰণকো বুজাব পাৰে। অন্য হাতে বৰ্ণ পদটোৱে বৰ্ণমালাৰ বৰ্ণ বা আখৰক সূচাব পাৰে, নাইবা ধ্বনি কম্পন বৈশিষ্ট্যক বুজাবৰ বাবেও পদটো ব্যৱহৃত হ'ব পাৰে। সৃষ্টিৰ পূৰ্বে পৰম ব্ৰহ্মৰ (দেৱঃ) বাহিৰে আন কোনো নাছিল, জেতিয়া তেওঁ সৃষ্টি-স্পৃহা-বিহীন হৈ আছিল। তেনে অৱস্থাত তেওঁ শব্দ কম্পন (অবৰ্ণঃ) স্বৰূপে প্ৰকটিত হৈছিল। সেই সময়ত সৃষ্টি সম্পৰ্কীয় সকলো সম্ভাৱনা তেওঁতেই সুপ্ত হৈ আছিল (নিহিতাৰ্থঃ)। পৰম ব্ৰহ্মাই

তেওঁৰ শক্তিসমূহৰ সহায়ত ধ্বনি কম্পনৰ (বৰ্ণানেনকান্) সৃষ্টি কৰি জগৎ সৃষ্টিৰ প্ৰক্ৰিয়া আৰম্ভ কৰে।

মন্ত্ৰৰ পৰিসৰ অতিকৈ ব্যাপক। মন্ত্ৰসমূহ সংস্কৃত, অসমীয়া, জনজাতীয় ভাষা আদি সকলো ভাষাতে পোৱা যায়। বিভিন্ন ভাগত মন্ত্ৰবোৰ ভগাব পাৰি যেনে— (ক) প্ৰাৰ্থনা মন্ত্ৰ, (খ) ধৰ্মীয় কৃত্যৰ সৈতে জড়িত মন্ত্ৰ আৰু (গ) যাদু বিদ্যাৰ সৈতে জড়িত মন্ত্ৰ।

(ক) প্ৰাৰ্থনা মন্ত্ৰ :- বিভিন্ন প্ৰসঙ্গত দেৱ-দেৱীক কৰা স্তুতি-প্ৰাৰ্থনাৰ সৈতে জড়িত মন্ত্ৰৰ নামেই প্ৰাৰ্থনা মন্ত্ৰ। প্ৰাৰ্থনা মন্ত্ৰ বিনয়-সূচক আৰু এই বিধ মন্ত্ৰৰ উদ্দেশ্য দেৱ-দেৱীৰ অনুগ্ৰহ লাভ। প্ৰাৰ্থনা মন্ত্ৰ ব্যক্তিগতভাৱে বা সামূহিকভাৱে আবৃত্ত হ'ব পাৰে, অথবা গেয় হ'ব পাৰে। শাস্ত্ৰৰ সিন্ত এই বিধ মন্ত্ৰত বিপদ-তাৰণ আকাঙক্ষাৰ ভাবো সম্পৃক্ত হৈ থাকে। উদাহৰণ স্বৰূপে তলত এটি প্ৰাৰ্থনা মন্ত্ৰ দিয়া হ'ল ; যেনে—

(জয়) জন্মিলা দশভূজা	মহীতলে পূজা
অসুৰ বধৰ হেতু।	
যিজনে কৰে পূজা	দুৰ্গা চৰণে
সংসাৰ সাগৰ সেতু।।	
ভুকুতি মুকুতি	ঐশ্বৰ্য বিভূতি
দুৰ্গাক পূজিলে পায়।	
দুৰ্ঘোৰ সঙ্কটে	দুৰ্গা পদ বিনে
উদ্ধাৰ কৰন্তা নাই।।	
মহিম অসুৰে	দেৱতাক দেখি
লৈলা সৱে অস্বাৱতী।	
গৈলা দেৱচয়	যথা হৰিহৰ
ব্ৰহ্মাত লৈলা সন্মতি।।	
দেৱৰ কাতৰ	দেখি হৰিহৰ
পৰম কোপিত ভৈলা।	
সবাৰে শোণিত	এক স্থান কৰি
দুৰ্গাৰ জনম কৈলা।।	

চৰণৰ ভৰে মেদিনী কম্পয়
 মন্ত্ৰকে পাইলৈ আকাশ।
 চন্দ্ৰ সূৰ্য অগ্নি তিনি গোটা চক্ষু
 ত্ৰৈলোক্যে কৰে প্ৰকাশ।।
 মহেশে দিলন্ত আপোনাৰ অন্ত
 বোলয় যাক ত্ৰিশূল।
 সেহি শূল ধৰি অসুৰৰ হিয়া
 কৰিলা প্ৰাণ নিৰ্মূল।।....
 মোদ নাৰায়ণ নৃপতি বোলয়
 নজানো তুতি-মিনতি।
 ভূতাৰ সম্বন্ধি পুত্ৰ হেন মানি
 তুষ্ট হৈবা ভগৱতী।।

(খ) ধৰ্মীয় কৃত্যৰ সৈতে জড়িত মন্ত্ৰ : ধৰ্মীয় কৃত্যৰ সৈতে জড়িত মন্ত্ৰ সমূহত ধৰ্মীয় কৃত্য সম্পাদনৰ নিৰ্দেশ থাকে। তাৰ উপৰিও ফুল-পুষ্প, বেলপাত, তুলসী-পাত, চন্দন, দুবৰি আদিৰে কৰা পূজা-উপাসনা, ভূত শুদ্ধি, প্ৰাণ প্ৰতিষ্ঠা লিপিন্যাস, মাতৃকান্যাস, অঙ্গন্যাস, ধ্যান, মানস উপচাৰ, হোম-যজ্ঞ আদি বিভিন্ন স্তৰত স্তুতিৰ সৈতে ব্যৱহৃত মন্ত্ৰৰাজিক ধৰ্মীয় কৃত্যৰ সৈতে জড়িত মন্ত্ৰ বুলিব পাৰি।

(গ) যাদু বিদ্যাৰ সৈতে জড়িত মন্ত্ৰ : ৰোগ-ব্যাধি নিৰাময়ৰ বাবে ব্যৱহৃত মন্ত্ৰৰ সৈতে সু-যাদু আৰু কু-যাদু আদিত ব্যৱহৃত মন্ত্ৰবোৰৰ নাম যাদু-বিদ্যাগত মন্ত্ৰ। মন্ত্ৰ-ধ্বনিৰ বিশেষত্বত এই জাতীয় মন্ত্ৰৰ প্ৰকাৰ্য পৰ্যবসিত।

যাদুবিদ্যাৰ সৈতে জড়িত মন্ত্ৰৰাজিক দুটা ভাগত ভগাব পাৰি, যেনে :
 (১) বিনয় বা স্তুতিমূলক আৰু (২) ধমক বা ধমকি-প্ৰধান মন্ত্ৰ।

(১) বিনয় বা স্তুতিমূলক মন্ত্ৰ : ৰোগ-ব্যাধিৰ একো একোজন অধিষ্ঠাতা দেৱতা বা একো একোজনী অধিষ্ঠা ত্ৰীদেৱী থকা বুলি বিশ্বাস কৰা হয়। কোনো ৰোগ বা ব্যাধিয়ে দেখা দিয়াৰ লগে লগে সেই ৰোগ-ব্যাধিৰ অধিষ্ঠাতা দেৱতা বা অধিষ্ঠাত্ৰী দেৱীক বিনয় আৰু কাতৰভাৱে স্তুতি কৰা হয়, প্ৰাৰ্থনা কৰা হয় ৰোগীৰ প্ৰতি সদয় হ'বলৈ, ৰোগীক কৃপা কৰিবলৈ, কৰুণা কৰিবলৈ। উদাহৰণ স্বৰূপে বসন্ত

নিমখ দি পূজিম আই

এ পানী উঠি যায়।।

(২) ধমক বা ধমকি-প্ৰধান মন্ত্ৰ : কিছুমান মন্ত্ৰত ধমক বা ধমকিৰ সুৰ স্পষ্ট। ৰোগ-ব্যাদিৰ প্ৰথম স্তৰত বিনয় বা প্ৰাৰ্থনামূলক মন্ত্ৰেৰে স্তুতি প্ৰাৰ্থনা কৰা হয়। ৰোগীক দয়া কৰিবলৈ, কৃপা কৰিবলৈ। তাত কাম নহলে ধমক-প্ৰধান বা ধমকি প্ৰদান মন্ত্ৰ প্ৰয়োগ কৰা হয়, বিশেষকৈ ভূত-প্ৰেত আদি খেদিবলৈ। বিষ-কোপ আদি নিৰাময়ৰ বাবেও ধমক বা ধমকি প্ৰধান মন্ত্ৰ প্ৰয়োগ কৰা হয় ; যেনে :

শ্ৰী মহাদেৱৰ হংকাৰ।

চৈধ্য ভৱনৰ দেখি নিৰন্তৰ।।

হুং হুং হংকাৰ চাৰি যা লক্ষাৰ পাৰ।

নাহিবি অমুকাৰ ঘৰ বাৰী সীমাই সঞ্চাৰ।।

আশে পাশে তই যদি ৰস।

ঈশ্বৰ মহাদেৱৰ মাথা খাস।।

মোৰ হাক গুৰুৰ ডাক যদি নামানস।

আই পাৰ্বতীৰ স্তনত হাত দেস।।

যাদু দুবিধ : গুৰু যাদু অৰ্থৎ কল্যাণকাৰী যাদু বা সুযাদু, আৰু কৃষ্ণ-যাদু বা অকল্যাণকাৰী যাদু বা কুযাদু। গুৰু যাদু বা কল্যাণকাৰী যাদু বা সুযাদুৰ উদ্দেশ্য কল্যাণ কামনা, মঙ্গল কামনা। গুৰু যাদু বা মঙ্গলকাৰী যাদুৰ সৈতে জড়িত মন্ত্ৰৰো উদ্দেশ্য মঙ্গল কামনা। গতিকে এই বিধ মন্ত্ৰক উপকাৰী বা সুমন্ত্ৰ বুলিব পাৰি। কৃষ্ণ যাদুৰ উদ্দেশ্য অকল্যাণ কামনা, অপকাৰ কামনা আৰু ইয়াৰ সৈতে জড়িত মন্ত্ৰৰ উদ্দেশ্যও অকল্যাণ কামনা, গতিকে এই বিধ মন্ত্ৰক আমি কু-মন্ত্ৰ বুলিব পাৰোঁ। কুমন্ত্ৰবোৰ অভিচাৰ মন্ত্ৰ স্বৰূপে জনাজাত, কাৰণ এই বিধ মন্ত্ৰ আচাৰ-বিৰোধী। কৃষ্ণ যাদু বা অপকাৰী যাদুৰ আন এটি অঙ্গ হৈছে বাণ-প্ৰহাৰ। সৰিয়হ, জাতি তেল, বৰুণৰ খুঁটি, জাপ, বালি, মাটিৰ চপৰা আদিত মন্ত্ৰ প্ৰয়োগ কৰি অপকাৰ কৰিব খোজা ব্যক্তিৰ উদ্দেশ্যে প্ৰহাৰ কৰা হয়। মন্ত্ৰ প্ৰয়োগৰ এই প্ৰণালী বিশেষৰ নামেই বাণ মৰা। বাণ বিভিন্ন প্ৰকাৰ; যেনে : চক্ৰবাণ, বিষ্ণুবাণ, ৰুদ্ৰবাণ, সুদৰ্শনচক্ৰ বাণ, ত্ৰিশূলবাণ, শিৱবাণ, পাশুপতমন্ত্ৰ (বাণ), নৰসিংহ বাণ ইত্যাদি। মানৱ ৰক্ষাৰ্থে ভূত-

প্ৰেত, দৈত্য-দানৱ আদি নিধনৰ বাবে আৰু ৰোগ-ব্যাধি নিৰাময়ৰ উদ্দেশ্য সুদৰ্শন চক্ৰ বাণ প্ৰহাৰ কৰা হয়। গতিকে মন্ত্ৰ-পৰম্পৰাত যে মন্ত্ৰলকাৰী বাণ-প্ৰয়োগৰ ঐতিহ্য চলি আছে, তাত সন্দেহ নাই। প্ৰতিৰোধী বাণ-প্ৰহাৰ কৰা হয় সেৱা বেহাৰ বা বগা সৰিয়হৰ সহায়ত আৰু প্ৰতিৰোধী বাণ বাণ তোলা মন্ত্ৰ স্বৰূপেও পৰিচিত। সুদৰ্শন চক্ৰ বাণৰ কিয়দংশ তলত দিয়া হ'ল। যেনে :

অনন্ত শক্তি সুদৰ্শন চক্ৰধৰ।
 স্বৰ্গ মৰ্ত্য পাতাল নসহে যাৰ ভাৰ।।
 চৰাচৰ জগতৰ তেজ বল হৰি।
 প্ৰকাশ কৰন্তু সুদৰ্শন মূৰ্তি ধৰি।।...
 বিষুৱাণ সুদৰ্শন চক্ৰ মন্ত্ৰ পঢ়োঁ।
 দৈত্য-দানৱক কাটি খণ্ড খণ্ড কৰোঁ।।

অসমীয়া মন্ত্ৰ বিশেষকৈ যাদুমূলক মন্ত্ৰৰ পৰিসৰ অতি ব্যাপক। এই মন্ত্ৰসমূহ তলত দিয়াৰ দৰে ভাগ কৰিব পাৰি : সৰ্বটোক মন্ত্ৰ, ৰাম মূলমন্ত্ৰ, কৰতি মন্ত্ৰ, নৰসিংহ মন্ত্ৰ, ক্ষেত্ৰপাল মন্ত্ৰ, পক্ষীৰাজ মন্ত্ৰ, শ্ৰীৰাম মন্ত্ৰ, মুখভঙা মন্ত্ৰ, মূৰ কামোৰা, গাবান্ধনী, বান্ধ মেলা বা খোলা, সৰ্পৰ ধৰণীমন্ত্ৰ, সৰ্পৰ বিষ নমোৰা মন্ত্ৰ, উশাহ শূলৰ মন্ত্ৰ, মোৰৰ মন্ত্ৰ, পিশাচ মন্ত্ৰ, জ্বৰৰ মন্ত্ৰ, বায়ু মন্ত্ৰ, বাঘৰ মন্ত্ৰ, আছ মন্ত্ৰ, বিষৰ মন্ত্ৰ, বৰবেজালী, পৰীমোহনী, পুৰুষ মোহিনী, সৰ্ব মোহিনী, ইত্যাদি। মানুহৰ ৰোগ-ব্যাধি নিৰাময়ৰ বাবেই যে মন্ত্ৰ প্ৰয়োগ কৰা হয় তেনে নহয়; পশু-পক্ষীৰ চিকিৎসাৰ ক্ষেত্ৰতো মন্ত্ৰ প্ৰয়োগ কৰা হয়।

মন্ত্ৰ বোৰ গদ্য-পদ্য উভয় ৰূপতে পোৱা যায়। কোনো কোনো ক্ষেত্ৰত মন্ত্ৰৰ ভাষাই প্ৰাচীনত্বৰ পৰিচয় দিব পাৰে ; কিন্তু অনেক ক্ষেত্ৰত মন্ত্ৰৰ ভাষাই প্ৰাচীনত্বৰ পৰিচয় দিব নোৱাৰে। অসমীয়া মন্ত্ৰত গুৰুৰ কৃপাৰ ওচৰত গুৰুত্ব দিয়া হৈছে বিশেষ ভাৱে। বৈদ্যৰাজ শিৱ-মহাদেৱ তেওঁৰ অৱতাৰ ধন্বন্তৰি আৰু আই কামাখ্যা দেৱীৰ নামোক্তেই সঘনে পোৱা যায় মন্ত্ৰবোৰত।

মন্ত্ৰবোৰ গুৰুমুখী, গুৰুৰ পৰা শিকি, গুৰুৰ নিৰ্দেশমতে প্ৰয়োগ নকৰিলে মন্ত্ৰবোৰ নাফাঁপে, অৰ্থাৎ নিৰৰ্থক হয়। মন্ত্ৰৰ অন্যতম বৈশিষ্ট্য ইয়াৰ গোপনীয়তা।

মন্ত্ৰৰ পৰম্পৰা যে বৈদিক যুগৰ পৰাহে আৰম্ভ হৈছে তেনে নহয়। প্ৰাক-বৈদিক যুগতো মন্ত্ৰৰ প্ৰয়োগ আছিল। আন কি বৰ্তমানে যিবিলাক নৃ-গোষ্ঠী বৈদিক

পৰম্পৰাৰ প্ৰভাৱৰ পৰা দূৰৈত আছে সেইসকলৰ মাজতো বিবিধ প্ৰকাৰৰ মন্ত্ৰ, যেনে : স্তুতিমূলক, প্ৰাৰ্থনামূলক, পূজা-উপাসনাৰ সৈতে জড়িত আৰু ৰোগ-ব্যাধি নিৰাময়ক মন্ত্ৰৰ প্ৰচলন লক্ষ্য কৰা যায়। গুৰু আৰু কৃষ্ণ যাদুৰ সৈতে জড়িত অনেক বৈদিক মন্ত্ৰৰো উৎস অবৈদিক পৰম্পৰা। অসমীয়া ভাষাত প্ৰচলিত অনেক যাদুমূলক মন্ত্ৰৰো উৎস জনজাতীয় অৰ্থাৎ অবৈদিক পৰম্পৰা।

জনজাতীয় সমাজৰ অন্তৰ্গত বিভিন্ন গোষ্ঠীৰ মাজত নিজ নিজ গোষ্ঠীৰ ভাষাত ৰচিত মন্ত্ৰবোৰৰ পৰম্পৰা অবৈদিক অথবা বৈদিক পৰম্পৰা বহিৰ্ভূত হোৱাই স্বাভাৱিক। অন্য হাতে এনে কিছুমান মন্ত্ৰ জনজাতীয় সমাজত প্ৰচলিত যিবোৰৰ ভাষা প্ৰায় অসমীয়া। অৱশ্যে ইয়াৰ মাজে মাজে দুই চাৰিটা জনজাতীয় শব্দৰ প্ৰয়োগ লক্ষ্য কৰা যায়। এনে শ্ৰেণীৰ মন্ত্ৰ, বৈদিক পৰম্পৰাৰ পৰা আহিব পাৰে। এই বিধ মন্ত্ৰৰ উদাহৰণ স্বৰূপে বড়ো সমাজত প্ৰচলিত এটি মন্ত্ৰ তলত দিয়া হ'ল; যেনে—

বন্দী কৰিলং বন্দী কৰিলং, গহলেৰ ভাৰা
ছান-সূৰ্য কাছিলং, কাছিলং শতেক দুই ভাই।
বসুমতীক কাছিলং ধৰ্মেৰ দহায়।
শিৱ বন্দং গুৰু পাৱ,
অমুকাক ৰক্ষা কৰিবি
আই কালিকা চণ্ডী মাৱ।।
আকাশে কাছিলং পাতালেৰ দেৱ।
পাতালে কাছিলং পাতালেৰ দেৱ।।
মানুষক কাছিলং যোদ্ধা ডাকিনী।
হায় ! হায় ! ডাকিনী নাপাতাইছ।
তুই, মায়াৰ বদজালে বন্দী কৰিলং
অমুকাৰ গায়া
অমুকাক ৰক্ষা কৰিবি আই কালিকা চণ্ডীমাৱ। ১০

দেৱ-দেৱীক সন্তুষ্ট কৰিবলৈ আৰু ৰোগ-ব্যাধি নিৰাময়ৰ বাবে ৰাভা সমাজতো মন্ত্ৰৰ প্ৰয়োগ পৰিদৃষ্ট হয় ; যেনে

ওই ডালেৰ বীৰা না পাতেৰে বীৰা
 আকাশেৰ বীৰা না পাতালেৰ বীৰা
 হা বীৰা ! হা বীৰা হা
 ওই বীৰামন চাইতে কায়াও নাবাঢ়ে
 হা বীৰা ! হা বীৰা হা !
 ছেওৰা গাছৰ পাতে জনম পায়য়া
 বীৰানী হান্সা ও বীৰানী হান্সা
 তই বীৰানী হান্সা ও বীৰানী হান্সা
 বীৰানী হান্সা বীৰানী হান্সা ॥^{১১}

পণ্ডিতসকলৰ মতে যম-যথিনী, বীৰা-বীৰানী, ভূত-প্ৰেত, পিশাচ-
 পিশাচনী আদিৰ ধাৰণা প্ৰাক্‌বৈদিক যুগৰ। অৱশ্যে পৰৱৰ্তী কালত অপদেৱতাৰ
 ধ্যান-ধাৰণাই বৈদিক ধাৰণাতো প্ৰৱেশ কৰিছে। গতিকে যাদুবিদ্যা, তন্ত্ৰ-মন্ত্ৰ
 আদিৰ প্ৰসঙ্গত বৈদিক আৰু অবৈদিক উভয় পৰম্পৰাৰ মাজত অন্য ক্ৰিয়া
 ৰক্ষিত হৈ আহিছে। সেই বাবে ভাৰতীয় সংস্কৃতিৰ ক্ষেত্ৰত বৈদিক আৰু
 অবৈদিক এই দুই পৰম্পৰাৰ স্বয়ং-সম্পূৰ্ণ স্থিতি বা অৱস্থিতি দেখুৱাব নোৱাৰি,
 শান্তিপূৰ্ণ সহ-অৱস্থান অথবা অৰ্থপূৰ্ণ সমন্বয়হে দেখুৱাব পাৰি ; তদুপ মন্ত্ৰৰ
 ক্ষেত্ৰতো বৈদিক আৰু অবৈদিক উভয় পৰম্পৰাৰ মাজত জল-নিৰোধক water-
 tight সম্পৰ্ক দেখুৱাব নোৱাৰি, বৰং উভয় পৰম্পৰাৰ মাজত অৰ্থপূৰ্ণ সহ-
 অৱস্থানহে লক্ষ্য কৰা যায়। আৰু এই ঐতিহাসিক সমন্বয়ৰ পৰিণতিত উভয়
 পৰম্পৰাই হৈছে ঐশ্বৰ্য্যশালী। অৱশ্যে উভয় পৰম্পৰাৰ মাজত অন্যান্য প্ৰক্ৰিয়া
 অব্যাহত গতিত চলি থাকিলেও বৈদিক আৰু অবৈদিক উভয় পৰম্পৰাৰেই
 আছে সুকীয়া সুকীয়া বিশেষত্ব আৰু এই বিশেষত্বৰ ভিত্তিতেই উভয় পৰম্পৰাৰ
 ঐতিহাসিক আৰু সাংস্কৃতিক মূল্য ৰক্ষিত হৈ আহিছে।

মন্ত্ৰ আৰু গীত : প্ৰকৃতাৰ্থত মন্ত্ৰ আৰু গীতৰ মাজত পাৰ্থক্য নাই।
 মন্ত্ৰবোৰ সুৰ লগাই আবৃত্তি কৰে। গীতৰো প্ৰাণ সুৰ। বেদৰ প্ৰাৰ্থনা মন্ত্ৰবোৰ সুৰ-
 তাল স্বৰসহ আবৃত্তি কৰা হয় বাবে সেইবোৰক গান বা গীত আখ্যা দিয়া হয়;
 যেনে, সামগান। অসমীয়া স্তুতি মন্ত্ৰবোৰ গীতৰ দৰে গোৱাৰ পৰম্পৰা অতীতৰে
 পৰা চলি আহিছে।

বিষ-ব্যাদি নিৰাময়ৰ বাবে প্ৰয়োগ কৰা মন্ত্ৰবোৰো বিশেষ এটা সুৰত ওজা বা বেজে আবৃত্তি কৰে। এনে বিধ মন্ত্ৰৰ সুৰৰ যাদুৱেহে ৰোগীৰ মনত অধিক ৰেখা, পাত কৰে। সেই বাবে মন্ত্ৰত গীতাত্মক বৈশিষ্ট্য বৰ্তমান। জনজাতীয় স্তুতিমূলক মন্ত্ৰবোৰ আজিকালি গীত বা গানৰ দৰে পোৱা যায়। বড়োসকলৰ মাজত প্ৰচলিত পৰম্পৰাগত ‘খেৰাই মুচানাই’ত গীত নাছিল, দৌচিনীৰ দ্বাৰা আবৃত্তি স্তুতিমূলক মন্ত্ৰৰেহে আছিল। আধুনিক যুগত তাহানিৰ সেই মন্ত্ৰটো লৰা-ছোৱালীয়ে গান বা গীত স্বৰূপে গায়-বাদ্যযন্ত্ৰ সঙ্গত কৰি খেৰাই মুচানাই পৰিৱেশন কৰাৰ প্ৰসঙ্গত। ৰাভা, কাৰ্বি, মিচিং, ডিমাচা আদি জনজাতিৰ মাজতো পৰম্পৰাগত স্তুতি মন্ত্ৰবোৰ বৰ্তমান গান গীত স্বৰূপে গোৱা দেখা গৈছে।

আধুনিক যুগতো মন্ত্ৰৰ সমাদৰ কমা নাই, কাৰণ মন্ত্ৰ শক্তিৰ আধুনিক মনে বিশ্বাস আৰু শ্ৰদ্ধা কৰি অহাৰ প্ৰমাণ পোৱা যায়। পৰম্পৰাৰ বিশিষ্ট অঙ্গ স্বৰূপে মন্ত্ৰবোৰৰ সামাজিক মূল্য কোনো দিনে অস্বীকাৰ কৰিব নোৱাৰি।

— ড° নবীন চন্দ্ৰ শৰ্মা

সপ্তম অধ্যায়

চৰ্যা গীত

(ক)

১৯০৭ ত হৰপ্ৰসাদ শাস্ত্ৰীয়ে নেপালৰ ৰাজ দৰবাৰৰ গ্ৰন্থালয়ত তালপাতত লিখা ৫০টা চৰ্যাগীতৰ এখন পুথি পায়। পুথিখনৰ নাম *চৰ্যাচৰ্যাটীকা*। পুথিখনত ১ৰ পৰা ৩৪লৈ, ৩৯ৰ পৰা ৬৫লৈ আৰু ৬৭ৰ পৰা ৬৯লৈ সৰ্বমুঠ ৬৪খিলা পাত আছে। ৩৫ৰ পৰা ৩৮লৈ, ৬৬ আৰু শেষৰ পাতখিলা নাই। পাতবোৰৰ আকাৰ $১০ \frac{১}{২} \times ৬ \frac{১}{২}$ । প্ৰতি খিলা পাতত ৫টাকৈ শাৰী আছে। অসমীয়া সাঁচিপতীয়া পুথিৰ দৰে পাতখনৰ সোঁ মাজত নাভি আছে।

প্ৰথম শাৰীটো পাতখনৰ ইমূৰৰ পৰা সিমূৰলৈ লিখা। দ্বিতীয়, তৃতীয় আৰু চতুৰ্থ শাৰী মাজতে এক ইঞ্চিমান নাভিৰ বাবে ঠাই এৰি লিখা। আকৌ পঞ্চম শাৰীটো ইমূৰৰ পৰা সিমূৰলৈ লিখা। প্ৰথম পাতখিলাৰ ক পিঠিত *চৰ্যাচৰ্যাটীকা* নামটো লিখা আছে। খ পিঠিক বাওঁ হাতৰ পাঁথত (margin) অসমীয়া সাঁচিপতীয়া পুথিবোৰৰ দৰে *শ্ৰী* লিখা আছে। সাঁচিপতীয়া পুথিবোৰত *শ্ৰী* লিখি পাতৰ সংখ্যাবাচক আখৰ লিখা থাকে; যেনে— *শ্ৰী*১, *শ্ৰী*২, *শ্ৰী*৩, ইত্যাদি। কিন্তু এই পুথিত পাতৰ সোঁ পাঁথতহে সংখ্যা দিয়া হৈছে। সাঁচিপতীয়া পুথিৰ দৰেই এই পুথিতো প্ৰতি পৃষ্ঠাৰ সংখ্যা নিদি প্ৰতি খিলা পাততহে সংখ্যা লিখিছে। প্ৰথম পাতখিলাৰ বাদে বাকী পাতবোৰত *শ্ৰী* নাই। ক্ৰমিক সংখ্যাটোকে দুয়োটা পাঁথত লিখি দিয়া হৈছে প্ৰতিখিলা পাতৰ প্ৰথম পিঠিত সংখ্যা নিলিখি দ্বিতীয় পিঠিত সংখ্যা লিখা হৈছে।

পুথিখন বৌদ্ধ ধৰ্মৰ মহাযান শাখাৰ বজ্ৰযান, শূন্যযান আৰু সহজযান উপশাখাৰ সাধকসকলৰ বাবে লিখা ৫০টা চৰ্যাগীতিৰ মুনিদণ্ডই কৰা সংস্কৃত টীকা। টীকা লিখিবলৈ লওঁতে মুনিদণ্ডই সম্পূৰ্ণ গীতটো লিপিবদ্ধ কৰিছে। কিন্তু আমি সম্পূৰ্ণ ৫০টা গীত পুথিখনত নাপাওঁ। পুথিখনত ১, ২, ৩, ৪, ৫, ৬, ৭, ৮, ৯,

১০, ১১, ১২, ১৩, ১৪, ১৫, ১৬, ১৭, ১৮, ১৯, ২০, ২১, ২২, ২৩ (অসম্পূৰ্ণ), ২৬, ২৭, ২৮, ২৯, ৩০, ৩১, ৩২, ৩৩, ৩৪, ৩৫, ৩৬, ৩৭, ৩৮, ৩৯, ৪০, ৪১, ৪২, ৪৩, ৪৪, ৪৫, ৪৬, ৪৭, ৪৯ আৰু ৫০ সংখ্যক গীত পোৱা হৈছে। ২৪, ২৫ আৰু ৪৮ সংখ্যক গীত আৰু ২৩ সংখ্যক গীতৰ কিছু অংশ থকা পাতকেইখিলা নষ্ট হৈছে।

মুনিদত্তৰ টীকাৰে সৈতে চৰ্যাগীতিকাষখন তিব্বতী ভাষালৈ অনুবাদ কৰা হৈছিল। তিব্বতী ভাষাত পুথিখনৰ নাম আছিল *চৰ্যাগীতিকাষবৃত্তিনাম*। ডঃ প্ৰবোধ চন্দ্ৰ বাগ্‌চীয়ে তিব্বতী ভাষাৰ পৰা সংস্কৃতলৈ অনুবাদ কৰি ২৩ সংখ্যক চৰ্যাগীতৰ শেষৰ দুটা গাঁথা, ২৪ আৰু ২৫ সংখ্যক চৰ্যা আৰু ৪৮সংখ্যক চৰ্যাৰ কথাখিনি টীকাৰে সৈতে উদ্ধাৰ কৰিছে। এই সংস্কৃত অনুবাদখিনি ডঃ বাগ্‌চীয়ে তেওঁৰ চৰ্যাগীতৰ পুথিখনত প্ৰকাশ কৰিছে।

হৰপ্ৰসাদ শাস্ত্ৰীয়ে পুথিখনৰ *চৰ্যাচৰ্যা বিনিশ্চয়ঃ* নাম দিছে আৰু ইয়াৰ লগতে অদ্বয়বজ্ৰৰ টীকাৰে সৈতে সৰোজবজ্ৰৰ *দোহাকোষ*, মেখলা টীকাৰে সৈতে কৃষ্ণচাৰ্যৰ *দোহাকোষ*, আৰু ডাকৰ্ণব একত্ৰিত কৰি *হাজাৰ বছৰৰ পুৰান বাঙ্গালা ভাষায় বৌদ্ধগান ও দোহা* নাম দি সম্পাদনা কৰে আৰু বঙ্গীয় সাহিত্য পৰিষৎএ ১৯১৬ত ইয়াক প্ৰকাশ কৰে। শাস্ত্ৰীয়ে উদ্ধাৰ কৰা পাঠকে ভিত্তি কৰি ইয়াৰ লগত বঙলা ভাষাৰ টীকা সংযোগ কৰি *চৰ্যাপদ* নাম দি ১৯৪৫ত মণীন্দ্ৰ মোহন বসুৱে গীতবোৰৰ দ্বিতীয় সঙ্কলন প্ৰকাশ কৰে। ডঃ প্ৰবোধ চন্দ্ৰ বাগ্‌চী আৰু শান্তি ভিক্ষু শাস্ত্ৰীয়ে *চৰ্যাগীতিকাষ* নামেৰে ১৯৫৬ত আন এটা সঙ্কলন প্ৰকাশ কৰে। একে বছৰতে ডঃ সুকুমাৰ সেনে *চৰ্যাগীতিপদাৱলী* নাম দি আন এটা সঙ্কলন প্ৰকাশ কৰে। ১৯৬৩ত তাৰাপদ মুখাৰ্জীয়ে *The Old Bengali Language and the Text* নাম দি চৰ্যাগীতখিনিৰ ইংৰাজী অনুবাদ প্ৰকাশ কৰে। ১৯৬৬ত মহম্মদ শহীদুল্লাই *Buddhist Mystic Songs* নাম দি অন্য এটা ইংৰাজী অনুবাদ প্ৰকাশ কৰে। সেই বছৰতে শশিভূষণ দাশগুপ্তই *বৌদ্ধধৰ্ম ও চৰ্যাগীতি*, তাৰাপদ মুখাৰ্জীয়ে *চৰ্যাগীতি* নাম দি বেলেগ বেলেগ সংস্কৰণ প্ৰকাশ কৰে। ১৯৭৭ত নীলৰতন সেনে মূলপুথিৰ আলোকচিত্ৰ লৈ *চৰ্যাগীতিকাষ* নামেৰে ইয়াৰ প্ৰতিৰূপ সংস্কৰণ (Fascimile edition) এটা প্ৰকাশ কৰে। ডঃ পৰীক্ষিত হাজৰিকাই *চৰ্যাপদ* নামৰ এটা সংস্কৰণ প্ৰকাশ কৰিছে। ডঃ প্ৰণৱজ্যোতি ডেকাই *চৰ্যাগীত আৰু বৌদ্ধতত্ত্ব* নাম দি আন এটা সঙ্কলন প্ৰকাশ কৰিছে।

পুথিখনৰ নাম কি আছিল? হৰপ্ৰসাদ শাস্ত্ৰীয়ে নাম দিছে *চৰ্যাচৰ্য্যাবিনিশ্চয়ঃ*। মণীন্দ্ৰ মোহন বসুৱে দিছে *চৰ্য্যাপদ*। প্ৰবোধচন্দ্ৰ বাগ্‌চী আৰু শান্তিভিক্ষু শাস্ত্ৰীয়ে দিছে *চৰ্য্যাগীতিকা*। সুকুমাৰ সেনে নাম দিছে *চৰ্য্যাগীতিপদাবলী*। তাৰাশৰ মুখাজীয়ে নাম দিছে *চৰ্য্যাগীতি*। ইয়াৰ প্ৰতিকৰণ সংস্কৰণৰ সম্পাদক নীলৰতন সেনে নাম দিছে *চৰ্য্যাগীতিকা*।

এই পুথিখনৰ নাম টীকাকাৰ মুনিদত্তৰ মতে “চৰ্য্যশতেনাহতগীতিকানাম... কোষং” (এশটা চৰ্য্যগীতিৰ সঙ্কলিত কোষ)। চমুকৈ ইয়াক *চৰ্য্যাগীতিকা* বুলি কব পাৰি। এশটা চৰ্য্যৰ সঙ্কলনটোৰ নাম চৰ্য্য-গীতিকা আছিল। তাৰে আধা পঞ্চাশটা চৰ্য্য টীকা লিখি গ্ৰন্থ ৰচনা কৰোঁতে মুনিদত্তই বেলেগ নাম দিছিল নেকি? কাৰণ হাতে লিখা প্ৰতিলিপিটোত *চৰ্য্যচৰ্য্যটীকা* নামটো পোৱা গৈছে। কিন্তু কেইবাটাও কাৰণত এই নাম মুনিদত্তই দিয়া বুলি ধৰি লব নোৱাৰি।

(১) চৰ্য্যগীতখনৰ টীকাৰ ক’তো তেওঁ এই নামেৰে পুথিখন উল্লেখ কৰা নাই। টীকাৰ অন্তিম শ্লোকতো “অয়ং কোষস্য”, এই কোষখনৰ বুলিহে লিখিছে, এই চৰ্য্যচৰ্য্যটীকাৰ বুলি লিখা নাই।

(২) এই নামটো বেলেগ চিয়াঁহীৰে লিখা। মুনিদত্তই লিখা হলে একে চিয়াঁহীৰে লিখিলেহেঁতেন।

(৩) *চৰ্য্যচৰ্য্যটীকা* নামটো নাগৰী আখৰেৰে লিখা। বাকী গোটেই টীকাৰ আখৰ বেলেগ। মুনিদত্তই লিখা হলে একে আখৰ হ’লেহেঁতেন।

(৪) “আচৰ্য্যচৰ্য্য” শব্দটো মুনিদত্তৰ টীকাত পোৱা গলেও “চৰ্য্যচৰ্য্য” শব্দটো পোৱা নাযায়।

এতেকে, সিদ্ধান্ত কৰিব পাৰি— *চৰ্য্যচৰ্য্যটীকা* নামটো মুনিদত্তই দিয়া নহয়। গতিকে এশটা চৰ্য্যগীতিকাৰ যি নাম আছিল, পঞ্চাশটা গীতৰ সঙ্কলনটোতো সেই নামকেই ৰাখিব লাগে। সেই কাৰণে *চৰ্য্যাগীতিকা* নামটোৱেই যুক্তিযুক্ত।

অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীত চৰ্য্যগীতৰ আলোচনা হব লাগে এই কাৰণেই যে এই গীতবোৰত ভাষা প্ৰাচীন অসমীয়া। বঙালী পণ্ডিতসকলে ইয়াৰ ভাষা প্ৰাচীন বঙলা বুলিছে। মুনিদত্তই অৱশ্যে ইয়াৰ ভাষা প্ৰাকৃত বুলিছে (প্ৰাকৃত ভাসয়া)। প্ৰাচীন বঙলা বোলাৰ সপক্ষে যুক্তি প্ৰদৰ্শন কৰি হৰপ্ৰসাদ শাস্ত্ৰীয়ে কৈছে, “আমাৰ বিশ্বাস, যাঁৰা এই ভাষা লিখিয়াছেন, তাঁৰা বাঙ্গালা ও তন্নিকটবৰ্ত্তী দেশৰ লোক।” (হাজাৰ বছৰৰ পুৰাণ বঙ্গালা ভাষায় বৌদ্ধগান ও দোহা, “মুখবন্ধ” পৃঃ

৬)। ইয়াৰ পৰৱৰ্তী বঙালী পণ্ডিতসকলে শাস্ত্ৰীৰ এই উক্তিৰ প্ৰতিধ্বনি কৰিছে মাত্ৰ।

চৰ্যাগীতৰ ৰচনা কাল ৮মৰ পৰা ১২শ শতিকাৰ ভিতৰত বুলি ধৰা হৈছে। এই সময়ছোৱাত বঙলা ভাষা আছিল নে? ডঃ সুনীতি কুমাৰ চেটাৰ্জীয়ে *The Origin and Development of the Bengali Language* লিখিছে, "In the middle of the 7th century, as the testimony of Hiuen Tshang would seem to suggest, there was one language spoken in Bihar, Bengal and Western Assam." (p.91). তেওঁ কৈছে যে হিউৱেন-চাঙৰ সাক্ষ্যৰ পৰা সপ্তম শতিকাত বিহাৰ, বঙ্গ আৰু পশ্চিম অসমত এটা ভাষাই চলিছিল বুলি ইঙ্গিত পোৱা যায়। আকৌ তেওঁ কৈছে, "but in pre-Moslem times Assamese and Bengali were certainly one language." (p.109). প্ৰাক্-মুচলমান যুগত অসমীয়া আৰু বঙলা নিশ্চয় একেটা ভাষা আছিল। ১১৯৭-৯৮ত বখ্তিয়াৰ খাল্জিৰ পুতেক ইখ্টিয়াৰ - উদ্দিন মহম্মদে লক্ষ্মণসেনক পৰাজয় কৰাৰ পৰা বঙ্গদেশত মুচলমান যুগ আৰম্ভ হয়। এতেকে, প্ৰাক্-মুচলমান যুগ মানে সপ্তম শতিকাৰ পৰা দ্বাদশ শতিকালৈ। ডঃ চেটাৰ্জীৰ মতে এই সময়ছোৱাত অসমীয়া আৰু বঙলা একেটা ভাষা আছিল। এই ভাষাটোকে হিউৱেন-চাঙে কামৰূপত পাইছিল। তাৰ মানে এই ভাষাটো অসমীয়া আছিল। সেই কাৰণেই চৰ্যাগীতবোৰ প্ৰাচীন অসমীয়া কবিতা হিচাপে অধ্যয়ন কৰাটো যুক্তিসন্মত কথা।

বৌদ্ধ ধৰ্মৰ অৱনতি আৰু বজ্জয়ানৰ উদ্ভৱ

ৰাইচ ডেভিড্‌চৰ মতে ধৰ্মাচাৰেই যদি ধৰ্ম হয়, তেন্তে বৌদ্ধ ধৰ্ম ধৰ্মই নহয়; আৰু যদি নৈতিকতাই ধৰ্ম হয়, তেন্তে পৃথিৱীত এটা ধৰ্মই আছে, সেইটো হৈছে বৌদ্ধ ধৰ্ম। বৌদ্ধ ধৰ্ম অকল নৈতিকতাৰ ধৰ্মই নাছিল ই আছিল অতি যুক্তিসন্মত ধৰ্ম। বুদ্ধদেৱে (৫৬০-৪৮০ খ্ৰিঃ পূঃ) কৈছিল, "পৰীক্ষ্য ভিক্ষৱো গ্ৰাহ্যং মদ্বচো ন তু গৌৰবাৎ।" (হে ভিক্ষুসকল, মোৰ কথাবোৰ পৰীক্ষা কৰিহে গ্ৰহণ কৰিবা, সন্মান দেখুৱাই নহয়)।

কেৱল যুক্তিৰ ওপৰত প্ৰতিষ্ঠিত ধৰ্ম কাৰণে বৌদ্ধ ধৰ্মত প্ৰমাণ কৰিব নোৱৰা আত্মা, ঈশ্বৰ, পুনৰ্জন্ম আদিৰ স্থান নাছিল। কিন্তু তেওঁৰ শিষ্যসকলে বিশ্বাস

কৰিবলৈ ধৰিলে যে বুদ্ধদেৱে যি পৰম জ্ঞান লাভ কৰিলে, এই জ্ঞান এটা জন্মৰ পুণ্য কামৰ ফলতে লাভ কৰা সম্ভৱ নহয়। তেওঁ অসংখ্য জন্ম গ্ৰহণ কৰি অনেক জনকল্যাণমূলক কাম কৰিহে এই পৰম জ্ঞান লাভ কৰিলে। গতিকে, বুদ্ধদেৱে এই পূৰ্ব জন্মবোৰত কৰা কামৰ বিবৰণ শিষ্যসকলে ৰচনা কৰি উলিয়ালে। এই কাহিনীবোৰৰ মতে তেওঁ পূৰ্বতে ৫৫০বাৰ জন্ম গ্ৰহণ কৰি জন কল্যাণমূলক কাম কৰিছিল। এই দৰেই বুদ্ধদেৱৰ পাচত বৌদ্ধ ধৰ্মত জন্মান্তৰবাদ সোমাল।

নিৰ্বাণক এটা স্থিৰ সত্য বুলি ধৰি লোৱা হৈছিল। জীৱনত শীল পালন কৰি এই নিৰ্বাণ লাভ কৰিব পাৰি বুলি কোৱা হৈছিল। কিন্তু শিষ্যসকলে কঠোৰ জীৱন, সন্ন্যাস, ধ্যান আদিৰ যোগেদি সোনকালে নিৰ্বাণ লাভৰ চেষ্টা কৰিব ধৰিলে। নিৰ্বাণ লাভৰ বাবে কৰা নানা ধৰণৰ চমু উপায়ৰ পৰাই মন্ত্ৰ, ধাৰণী আদিৰ সৃষ্টি হ'ল।

কিছুমান শিষ্যই আকৌ পৰ জন্মত নিৰ্বাণ লাভ কৰাতকৈ এই জন্মতে সমৃদ্ধি লাভ কৰিব বিচাৰিছিল। এই শ্ৰেণীৰ শিষ্যক সম্ভষ্ট কৰিবলৈকে বুদ্ধদেৱে তেওঁৰ ধৰ্মত মন্ত্ৰ, ধাৰণী, মুদ্ৰা আৰু মণ্ডলৰ ব্যৱস্থা কৰিছিল। এই দৰেই যুক্তিপ্ৰধান বৌদ্ধ ধৰ্মত যুক্তিহীন ব্যৱস্থা কিছুমান সোমাই পৰিল।

বৌদ্ধ ধৰ্মত শীল-ব্ৰত পালন কৰাৰ ফলতেই নিৰ্বাণ লাভ হয় বুলি কোৱা হয়। এই শীল-ব্ৰতবোৰ তুলনামূলকভাৱে কঠোৰ। প্ৰথম পাঁচোটা শীল— প্ৰাণীহত্যা নকৰা, চুৰ নকৰা, ব্ৰহ্মচৰ্য ভঙ্গ নকৰা, মিছা কথা নোকোৱা আৰু মদ আদি ৰাগিয়াল বস্তু নোখোৱা ব্ৰত সকলোৱে জানে। ইয়াৰ পাচৰ শীলবোৰত যথাক্ৰমে আবেলি ভোজন পৰিত্যাগ ; নৃত্য, গীত, বাদ্য, নাট্যাভিনয় আদি উপভোগৰ বাধা; মালা, গন্ধ, প্ৰসাধন, ধুন মৰা, অলঙ্কাৰ পিন্ধাৰ পৰা বিৰত ; ওখ বিচনাত শোৱা, দেৰিকৈ শোৱা আদিৰ বাধা আৰু সোণ, ৰূপ আদি মূল্যবান দ্ৰব্য গ্ৰহণ কৰিবলৈ দিয়া বাধা সকলো শিষ্যই মানি লব পৰা নাছিল।

এনে শিষ্যবোৰে বুদ্ধদেৱৰ সন্মুখত এই নিয়মশোৰৰ বিৰুদ্ধে প্ৰতিবাদ কৰিবলৈ সাহস নকৰিলেও গোপনে এই অনুশাসনবোৰ ভঙ্গ কৰিছিল। তেওঁৰ জীৱন কালতে কোনো কোনো শিষ্যই ঘৈণীলৈ, গাভৰুলৈ, গাভৰু চাকৰণীলৈ ফুলৰ মালাৰ উপহাৰ পঠোৱা ; ঘৈণীয়েকৰ সৈতে, গাভৰু ছোৱালীৰ সৈতে, গাভৰু চাকৰণীৰ সৈতে একে আসনত বহা, একে বিচনাত শোৱা, একে কোঠাত থকাৰ অভিযোগ পোৱা গৈছিল। যেতিয়াই মন যায় তেতিয়াই আহাৰ খোৱা, নিচাযুক্ত পানীয় খোৱা, নচা, গান গোৱা, সঙ্গীত চৰ্চা কৰা

আদিৰ অভিযোগ প্ৰায়ে আহিছিল। তেওঁলোকে ভাবিছিল— ইমান কঠোৰ নিয়ম মানি কি লাভ হব? দুখ-কষ্টৰ অৱসানৰূপী নিৰ্বাণ লাভ হোৱাটো এটা সম্ভাৱনাহে। বুদ্ধদেৱে বিশ্বাসী শিষ্য পঠাই এই নিয়মভঙ্গকাৰীসকলক বৌদ্ধ ধৰ্মৰ পৰা বহিষ্কাৰ কৰিছিল।

বুদ্ধদেৱৰ জীৱন কালত বৌদ্ধ ধৰ্মত মতভেদ চকুত পৰাকৈ হোৱা নাছিল। খ্ৰিঃপূঃ ৩৫০ লৈকে বৌদ্ধ ধৰ্ম বুদ্ধদেৱে প্ৰচাৰ কৰা ধৰণেৰেই চলি আছিল। খ্ৰিঃপূঃ ৩৫০-১০০ লৈকে এক প্ৰকাৰৰ সানমিহলি ৰূপত এই ধৰ্ম চলিছিল। প্ৰথম শতিকাত খ্ৰিষ্টাব্দত বৌদ্ধ ধৰ্মৰ পৰা বহিষ্কৃত লোকসকলে মহাযান পন্থা তৈয়াৰ কৰে আৰু লোকৰক্ষিত নামৰ পণ্ডিত এজনে সংস্কৃত ভাষাত *প্ৰজ্ঞাপাৰমিতা* নামৰ মহাযান পন্থাৰ মূল গ্ৰন্থ ৰচনা কৰে।

সংযম আৰু ব্ৰহ্মাচৰ্যৰ কঠোৰ নিয়ম নমনা শিষ্যসকলে সাংসাৰিক সুখৰ পৰা আঁতৰি নগৈও বৌদ্ধ হৈ থাকিবলৈ মন কৰিলে। বৌদ্ধ ধৰ্ম নামটোত এনে এটা গৌৰৱ আছিল, যিটো তেওঁলোকে ত্যাগ কৰিব নুখুজিলে। গোপনে আঁচনি কৰি এওঁলোকে মন্ত্ৰ নামৰ এক শ্ৰেণী সাহিত্য ৰচনা কৰি তাত ধৰ্মৰ নামত সাংসাৰিক সুখৰ ব্যৱস্থা কৰি বিশ্বাসী লোকৰ মাজত প্ৰচলন কৰিব ধৰিলে। কিন্তু বুদ্ধদেৱে নোকোৱা কোনো কথাকে সৰ্বসাধাৰণ বৌদ্ধ ধৰ্মাৱলম্বীয়ে মানি নলয়, সেই কাৰণে এই তন্ত্ৰবোৰ সঙ্গীতি বা ধৰ্মসভাৰ সাহিত্য ৰূপে ৰচনা কৰা হ'ল। সঙ্গীতি শাস্ত্ৰবোৰ এইদৰে আৰম্ভ হয়, “এৱং ময়া শ্ৰুতং একস্মিন্ দিৱসে ভগৱান.. ব্ৰিহৰতি স্ম।” অৰ্থাৎ মই এনেকৈ শুনিবলৈ পাইছোঁ যে এদিন ভগৱান (বুদ্ধই) (অমুক ঠাইত) ফুৰি আছিল।

সঙ্গীতি সাহিত্যৰ অন্তৰ্গত শাস্ত্ৰবোৰ বুদ্ধদেৱৰ শিক্ষাৰ সম্পূৰ্ণ বিৰুদ্ধে সাংসাৰিক উপভোগৰ মতবাদবোৰ বুদ্ধদেৱৰ মত হিচাপে প্ৰচাৰ কৰা হ'ল। ইয়াৰ ফলত বৌদ্ধ ধৰ্ম মন্ত্ৰ, ধাৰণী, বন্দনা, আৰু অসংখ্য দেৱ-দেৱীৰ পূজাৰে ভৰি পৰিল। যেতিয়া গোপনে বুদ্ধদেৱৰ নামত ভোগবাদী ধৰ্ম চলাই থকাসকল সংখ্যা গৰিষ্ঠ হ'ল, তেওঁলোকে নিজকে বজ্জয়ানী বুলি ঘোষণা কৰি মহাযান পন্থাৰ বিপক্ষে যুদ্ধ আৰম্ভ কৰিলে। এই দৰেই নৈতিকতা আৰু যুক্তিবাদৰ ওপৰত প্ৰতিষ্ঠিত বৌদ্ধ ধৰ্ম অনৈতিকতা আৰু অন্ধ-বিশ্বাসৰ পিটনিত পোত গ'ল।

বৌদ্ধ ধৰ্ম ব্ৰাহ্মণ্য ধৰ্মৰ প্ৰতি প্ৰত্যাহান আৰু ব্ৰাহ্মণ্য ধৰ্মৰ অস্বীকাৰকৰণ আছিল। বহুতো চিন্তা কৰি, নানা যুক্তি আৰু বিবেচনাৰে পুণ্ডানুপুণ্ডৰূপে বিচাৰ

কৰি বুদ্ধদেৱে এই প্ৰত্যাহান আৰু অস্বীকৰণৰ ৰণনীতি তৈয়াৰ কৰিছিল। এইবাৰ তান্ত্ৰিক বৌদ্ধ ধৰ্মৰ পাল পৰিল বুদ্ধদেৱৰ কৰ্তৃত্বক প্ৰত্যাহান জনোৱাৰ আৰু বৌদ্ধ ধৰ্মৰ ভিতৰতে থাকি বুদ্ধদেৱৰ শিক্ষাক অস্বীকাৰৰ ৰণনীতি তৈয়াৰ কৰাৰ।

যাগ-যজ্ঞৰ নামত পশুহত্যাৰ আৰম্ভ কৰি যিবোৰ ব্যভিচাৰ হৈছিল, সেইবোৰ দূৰ কৰিবলৈ বুদ্ধদেৱে তেওঁৰ ধৰ্মত কঠোৰ নিয়মৰ প্ৰৱৰ্তন কৰিছিল। সকলো প্ৰকাৰৰ পাৰ্থিৱ উপভোগ, বিশেষকৈ মদ, নাৰী, মাছ, মণ্ডহ, সকলো প্ৰকাৰৰ উত্তেজক বস্তুৰ ব্যৱহাৰ নিষিদ্ধ কৰিছিল। এই ধৰ্মত ভিক্ষু বা ভিক্ষুণী হব খোজাসকলক সম্পূৰ্ণ ব্ৰহ্মাচৰ্য গ্ৰহণ কৰিবলৈ বাধ্য কৰা হৈছিল। প্ৰতিশোধৰ মনোভাৱেৰে তান্ত্ৰিক বৌদ্ধসকলে ম-কাৰৰ নামত এই গোটেইখিনিকে বৌদ্ধ ধৰ্মত সুমোৱাই লয়। আৰু এখেপ আগ বাঢ়ি তেওঁলোকে ঘোষণা কৰে যে এইবোৰ নহলে নিৰ্বাণ লাভেই নহয়।

তেওঁলোকে বুদ্ধদেৱক গুৰত্বহীন কৰিবলৈ প্ৰচাৰ কৰিলে যে তেওঁ এজন সাধাৰণ মৰণশীল বুদ্ধহে আছিল। হওঁতে তেওঁৰ যোগেদিয়েই বৌদ্ধ ধৰ্মৰ চিৰন্তন সত্যবোৰ জগতলৈ আহিছিল। অনেক বুদ্ধই কৰি যোৱাৰ দৰে, আৰু অনেক বুদ্ধই ভৱিষ্যতে কৰিব লগীয়াৰ দৰে জগতলৈ সত্য অনাৰ ক্ষেত্ৰত তেওঁ ডাকঘৰৰ ভূমিকাহে পালন কৰিছিল। এই যুক্তিৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি অনেক বুদ্ধৰ কল্পনা কৰা হ'ল। বুদ্ধদেৱৰ মত আছিল সকলো দৈহিক আৰু মানসিক অস্তিত্বৰ পৰিঘটনাবোৰক (phenomena) পাঁচটা স্কন্ধ বা ভাগত ভগাব পাৰি (১) ৰূপস্কন্ধ বা আকাৰৰ পৰিঘটনা, (২) বেদনা স্কন্ধ বা সংবেদনৰ পৰিঘটনা, (৩) সংজ্ঞা স্কন্ধ বা প্ৰত্যক্ষকৰণৰ পৰিঘটনা, (৪) সংস্কাৰ স্কন্ধ বা মানসিক গঠনৰ পৰিঘটনা আৰু (৫) বিজ্ঞান স্কন্ধ বা চেতনাৰ পৰিঘটনা। বৌদ্ধ তান্ত্ৰিক বজ্ৰযানীসকলে এই পাঁচটা স্কন্ধৰ অধিষ্ঠাতা হিচাপে পাঁচ-গৰাকী শক্তি বা পত্নীৰে সৈতে পাঁচজন ধ্যানী বুদ্ধৰ কল্পনা কৰিলে। ধ্যানী বুদ্ধসকল বিশেষ শ্ৰেণীৰ বুদ্ধ। এওঁলোক চিৰন্তন আৰু বোধিসত্ত্বসকলৰ দৰে তল পৰ্যায়ৰ পৰা বগাই যাব নালাগে। বোধিসত্ত্ব হৈছে বুদ্ধত্ব পাবৰ জোখাৰে জ্ঞানপ্ৰাপ্ত ভৱিষ্যত বুদ্ধ। তেওঁ বুদ্ধ জন্ম পোৱাৰ আগতে তুসিত স্বৰ্গত বাস কৰে। ধ্যানী বুদ্ধ আৰু শক্তিসকলৰ ঔৰসত অনেক বোধিসত্ত্ব জন্ম লৈ সংসাৰৰ তদাৰক কৰে। এজন বোধিসত্ত্বৰ ৰাজত্ব কালত আঠজন মৰণশীল বুদ্ধই জন্ম লয়। এই মতবাদৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি তান্ত্ৰিক বৌদ্ধসকলৰ হাতত বুদ্ধদেৱৰ অৱস্থা কেনেকুৱা হ'ল।

বুদ্ধদেৱ আক্ৰান্ত হোৱাৰ পাচত আক্ৰান্ত হল নিৰ্বাণৰ মতবাদ। বুদ্ধদেৱে নিৰ্বাণৰ সংজ্ঞা দিয়া নাছিল আৰু যেতিয়াই তেওঁক এই বিষয়ে সোধা হয় তেতিয়াই তেওঁ মৌনতা অৱলম্বন কৰিছিল। তান্ত্ৰিকসকলে নিৰ্বাণক শূন্য, বিজ্ঞান আৰু মহাসুখ বুলি সংজ্ঞা দিবলৈ ধৰে আৰু নিৰ্বাণপ্ৰাপ্ত বোধিচিন্তক নাৰীৰ আলিঙ্গনাবদ্ধ অৱস্থাত পোৱা সুখৰ দৰে অনুভৱ বুলি বৰ্ণনা কৰিবলৈ ধৰে। তান্ত্ৰিক বৌদ্ধসকলে বহুতো শক্তি বা নাৰীৰে সৈতে সংসৰ্গ কৰে, তেওঁলোকৰ সৈতে মিলনক যোগ বোলে, আৰু নাৰীক নিৰ্বাণ লাভৰ শক্তিশালী উপাদান বুলি কয়। তেওঁলোকৰ মতে, সৰ্বশূন্য নেতিবাদত উপঙি ফুৰা সাধকে যৌনাচাৰৰ দ্বাৰা পৃথিৱীলৈ নামি আহে কৰুণাৰ বাবে। শূন্য অৰ্থাৎ একো নাই, ঈশ্বৰ নাই, জগত নাই, পাপ নাই, পুণ্য নাই, ধৰ্ম নাই, অধৰ্ম নাই বুলি ভবা সাধকে মানসিকভাৱে শূন্যতে বিচৰণ কৰি ফুৰে। সাধিকাৰ সংসৰ্গলৈ আহিহে তেওঁ অনুভৱ কৰে যে তান্ত্ৰিকভাৱে একো নাই যদিও ব্যৱহাৰিকভাৱে সংসাৰ এখন আছে। যিহেতু সংসাৰৰ উপলব্ধি সাধিকাৰ যোগেদিহে হয়, এতেকে জগতৰ প্ৰতিটো সত্তা সাধিকাৰ দৰেই তেওঁৰ কৰুণাৰ পাত্ৰ।

হীনযানত প্ৰত্যেক ব্যক্তিকে নিৰ্বাণ লাভৰ বাবে উপদেশ দিয়া হৈছিল। এই দৃষ্টিভঙ্গী অনুসৰি নিৰ্বাণ অতি সৰ্ব্বোচ্চ আছিল আৰু পুৰোহিতসকল স্বাৰ্থপৰ আৰু পৃথিৱীৰ সহ-বাসিন্দাসকলৰ প্ৰতি উদাসীন আছিল। বজ্জয়ানীসকলৰ কৰুণাৰ মতবাদ মূল বৌদ্ধ ধৰ্মৰ এই আত্মকেন্দ্ৰিক নিৰ্বাণৰ ধাৰণাৰ প্ৰতি প্ৰত্যাৱৰ্তন আছিল। কিন্তু মহাপাপী আৰু অনৈতিক জীৱন যাপন কৰা বজ্জয়ানীসকলে অতি ঘৃণনীয় কাৰ্য-কলাপৰ বাবে কৰুণাৰ মতবাদত অজুহাত বিচাৰি পালে। তেওঁলোকে কয়, বোধিসত্ত্বই পীড়িত মানৱৰ কল্যাণৰ বাবে অবৰ্ণনীয় ত্যাগ কৰি আহিছে কাৰণে তেওঁ কৰিব নোপোৱা কোনো কাম নাই। এই তিনি ভূৱন ভক্তসকলৰ উপভোগৰ আৰু উপকাৰৰ বাবে বজ্জধাৰীয়ে সৃষ্টি কৰিলে। যিসকলে নিৰ্বাণ লাভ কৰিব খোজে তেওঁলোকে সদায় প্ৰজ্ঞাপাৰমিতা বা পূৰ্ণ সত্য উপভোগ কৰিব লাগে। পৃথিৱীৰ সকলো নাৰীতেই প্ৰজ্ঞা আছে, এতেকে কোনো সন্ধোচ নকৰাকৈ তেওঁলোকক উপভোগ কৰিব লাগে। তেওঁলোকৰ মত হল—

কৰ্মণা যেন ৱৈ সত্ত্বাঃ কল্পকোটিশতান্যপি।

পচ্যন্তে নৰকে ঘোৰে তেন যোগী ৰিমুচ্যতে॥

— জ্ঞানসিদ্ধি, ১৫ সংখ্যক শ্লোক।

অৰ্থাৎ যি (পাপ) কাম কৰি মানুহবোৰে এশ কোটি কল্প কাল ঘোৰ নৰকত পচে, সেই (পাপ) কাম কৰি যোগীয়ে মুক্তি লাভ কৰে।

তাত্ত্বিকসকলৰ এনেকুৱা বহুতো কাৰ্য-কলাপ আছে যিবোৰ জনসাধাৰণে জানিব পাৰিলে চকু খাই উঠিব। উক্ত কাৰ্য-কলাপবোৰ ব্যাপকভাৱে প্ৰচলন হোৱাৰ আগলৈকে সেই কাৰণে গোপনীয়তা এই মতবাদৰ মূলকথা আছিল। *গৃহ্যসমাজ*ত এনে কিছুমান প্ৰক্ৰিয়া আছে, যিবোৰ গ্ৰহণ কৰিবলৈ ক্ষেত্ৰ উপযোগী নোহোৱালৈকে প্ৰচাৰ হ'বলৈ দিব নোৱাৰি। এইদৰেই গুৰু-পৰম্পৰাৰ নিছিগা ধাৰেৰে প্ৰথম উদ্ভৱৰ ৩০০ বছৰলৈকে তাত্ত্বিকতা গোপনে চলি থাকিল। ৮৪ জন সিদ্ধপুৰুষৰ শিক্ষা আৰু সাঁথৰময় গীতবোৰৰ যোগেদি, শিষ্যবোৰৰ যোগেদি আৰু নিবিড় সম্পৰ্কলৈ অহা লোকৰ যোগেদি এই মতবাদ গোপনীয়ভাৱে প্ৰচাৰ হ'ব ধৰিলে।

এই সিদ্ধসকল খ্ৰিষ্টীয় সপ্তম, অষ্টম আৰু নৱম শতিকাৰ লোক আছিল। তেওঁলোকে গীতবোৰ সন্ধ্যা ভাষাত লিখিছিল। ইয়াৰ দ্বাৰা তেওঁলোকে বুজাব খুজিছিল যে এই গীতবোৰ দিনৰ পোহৰতো ব্যাখ্যা কৰিব পাৰি আৰু ৰাতিৰ আন্ধাৰতো ব্যাখ্যা কৰিব পাৰি। সিদ্ধাসকলে ৰচনা কৰা গীতবোৰত সদায়েই এটা গুপ্ত বা প্ৰহেলিকাময় অৰ্থ থাকে।

খ্ৰিষ্টীয় তৃতীয় শতিকাত মৈত্ৰেয়নাথে আৰম্ভ কৰা মহাযান বৌদ্ধ ধৰ্মৰ যোগাচাৰ দৰ্শনৰ পৰা পোনপটীয়াকৈ বজ্ৰযানৰ উদ্ভৱ হৈছে। যোগাচাৰ দৰ্শন অনুযায়ী আমি দেখা জগতখনৰ কোনো অস্তিত্ব নাই। ই মনৰ সৃষ্টি বা ই বাস্তৱ বস্তুৰ ক্ষণস্থায়ী চেতনা। পাৰ্থিৱ বস্তুবোৰ সপোনৰ নিচিনা বা ভোজবাজীৰ নিচিনা। সকলো ব্যক্তি ক্ষণস্থায়ী চেতনাৰ শিকলিৰে গঠিত। জন্ম আৰু পুনৰ্জন্মৰহিত নিৰ্বাণ লাভৰ আগলৈকে প্ৰত্যেকেই এলানি জন্ম আৰু পুনৰ্জন্মৰ মাজেদি অহাযোৱা কৰি থাকিব লাগে। নিৰ্বাণ লাভ কৰিলেহে এই গমনাগমনৰ অন্ত পৰে।

নিৰ্বাণ লাভ কৰাৰ বাটত দুই প্ৰকাৰৰ বাধা আছে। প্ৰথমটো ক্ৰেশাৱৰণ আৰু দ্বিতীয়টো জ্ঞেয়াৱৰণ। অনুৰাগ, বিৰাগ আদি অনুভূতিবোৰে যি কোনো বস্তুৰ স্বৰূপ বুজাত বাধা দিয়াকে ক্ৰেশাৱৰণ বোলে। পূৰ্ণ জ্ঞান বা পাৰমিতা উপলব্ধি নোহোৱাটোকে জ্ঞেয়াৱৰণ বোলে। শূন্যতা উপলব্ধিৰ যোগেদি ক্ৰেশাৱৰণ আঁতৰাব পাৰি। জ্ঞেয়াৱৰণ আঁতৰাবলৈ শূন্য বা নৈৰাত্ম্যৰ ধ্যান কৰিব লাগে। জগতৰ প্ৰতি অপাৰ কৰুণাৰে ইয়াৰ সৈতে একাত্ম উপলব্ধি কৰিব পাৰিলে জ্ঞেয়াৱৰণ আঁতৰাই সৰ্বজ্ঞ হ'ব পাৰে। সৰ্বজ্ঞতা লাভ কৰাৰ পাচত তেওঁ বোধিসত্ত্ব নাম পায়। তেওঁ

দুখাৰ্ত মানুহবোৰক উদ্ধাৰিবলৈ তেওঁৰ সঞ্চিত সকলো পুণ্য খটুৱাব লাগে। সকলোৱে নিৰ্বাণ লাভ কৰাৰ পাচতহে তেওঁ নিৰ্বাণ গ্ৰহণ কৰে।

চৌৰাশী সিদ্ধৰ এজন অনঙ্গবজ্জৰ সপ্তম শতিকাত ৰচিত *প্ৰজ্ঞোপায়-নিশ্চয়সিদ্ধি*ৰ পৰা সাধনা সম্পৰ্কীয় কিছু কথা উল্লেখ কৰা হ'ল। প্ৰথম অধ্যায়ত কোৱা হৈছে মিথ্যা কল্পনাৰ দ্বাৰা সৃষ্ট জগতৰ প্ৰতিফলনটোকে সত্য বুলি কল্পনা কৰা কাৰণে ভৱ বা অস্তিত্বৰ সৃষ্টি হয়। ভৱৰ ফলত নানা ধৰণৰ ক্লেশ, কাৰ্য আৰু পৰিণতিৰ জন্ম হয়। সেই কাৰণে তিনিও ভৱনক নিৰ্বাণ দান কৰিব খোজা লোকে বাস্তৱতা আৰু অৱাস্তৱতা দুইটাকৈ ত্যাগ কৰিব লাগে। দুয়োটাকে ত্যাগ কৰিলে এনে এটা অৱস্থা পোৱা যায় যিটো সংসাৰো নহয় নিৰ্বাণো নহয়। জ্ঞান আৰু জ্ঞেয়ৰ মাজত পাৰ্থক্য বিচাৰি চোৱাৰ পাচত যি শূন্যতা উপলব্ধি হয়, তাকে শ্ৰেষ্ঠতম জ্ঞান বা প্ৰজ্ঞা বোলে। ক্লেশ দূৰ কৰিবলৈ হোৱা অনুৰাগক কাৰুণ্য বোলা হয়। কাৰুণ্যকে উপায় বোলে। কাৰণ ই নাও এখনৰ দৰে সাধকক লক্ষ্য স্থানলৈ লৈ যায়। প্ৰজ্ঞা আৰু উপায়ৰ মিলন পানী আৰু গাখীৰৰ মিলনৰ দৰে। ইয়াত দ্বৈততা নোহোৱাকৈ একতা হৈছে কাৰণে ইয়াক প্ৰজ্ঞোপায় বোলে। প্ৰজ্ঞোপায় জগতৰ সৃষ্টি-তত্ত্ব, এই তত্ত্বৰ পৰাই সকলোৰে জন্ম, সকলোৰে বিকাশ হয়। ইয়াকে মহাসুখো বোলা হয়; কাৰণ ই অনন্ত সুখ দিয়ে আৰু সমস্তভদ্ৰও বোলা হয়, কাৰই ই সম্পূৰ্ণ মঙ্গলময়।

দ্বিতীয় অধ্যায়ত কোৱা হৈছে পূৰ্ণজ্ঞান সংজ্ঞাবদ্ধ কৰিব নোৱাৰি। ই আত্মোপলব্ধিৰ বস্তু। সেই কাৰণেই পূৰ্বৰ গুৰুসকলে সূত্ৰান্ত বা মন্ত্ৰবোৰত ইয়াক সংজ্ঞাবদ্ধ কৰা নাই। পথাৰখন যিমান ভালকৈ চহোৱা নহওক লাগে, বীজ নহলে সেই পথাৰত খেতি নহয়। সেয়ে তত্ত্ববিদ্যাত পাৰ্গত এজন গুৰু বিচাৰি তেওঁক সেৱা-পূজা কৰি পূৰ্ণজ্ঞান লাভ কৰিব পাৰি।

দীক্ষাদানৰ পদ্ধতি তৃতীয় অধ্যায়ত আলোচনা কৰা হৈছে। দেখিবলৈ আকৰ্ষণীয় আৰু সালঙ্কতা এগৰাকী নাৰীক বা মহামুদ্ৰাক লৈ গুৰুৰ ওচৰলৈ যাব লাগে। গুৰুক পূজা কৰাৰ পাচত দীক্ষা দিবলৈ অনুমতি কৰিব লাগে যাতে তেওঁ বুদ্ধ কুলৰ সন্তান হিচাপে গণ্য হ'ব পাৰে। মহামুদ্ৰাৰে সৈতে শিষ্যক সংযোগ ঘটাই গুৰুৱে দীক্ষা দিয়ে। তদুপৰি তেওঁ পাঁচোটা সময় বা চুক্তি আৰু সম্বৰ বা সংযমৰ বিষয়ে শিক্ষা দিয়ে। গুৰুৰ ওচৰত কৃতজ্ঞতা প্ৰকাশ কৰাৰ পাচত ত্ৰিভুৱনৰ সকলোকে বুদ্ধত্ব দিয়াৰ পিচতহে নিজে বুদ্ধত্ব বা নিৰ্বাণ গ্ৰহণ কৰিব বুলি প্ৰতিজ্ঞা কৰে।

চতুৰ্থ অধ্যায়ত বিষয়-বস্তু প্ৰজ্ঞাপায়ৰ ধ্যান। শূন্য বা অশূন্য গ্ৰহণ কৰিলে মিথ্যা ৰচনাৰ সৃষ্টি হয়। দুয়োটাকে ত্যাগ কৰিব খুজিলে দৃঢ়তা আহি পৰে। শূন্যতা আৰু দৃঢ়তা ত্যাগ কৰিবলৈ যত্ন কৰোঁতে আত্মাৰ জ্ঞান প্ৰধান হৈ উঠে। সেই কাৰণে এনেকুৱা সকলো পদ্ধতি ত্যাগ কৰা উচিত। সাধকে নিজকে আকাশৰ দৰে অপৰিৱৰ্তনশীল, পৰম, অনিৰ্বচনীয়, নিষ্কলঙ্ক, অনাদি, অনন্ত বুলি ভাবিব লাগে। কাৰণিক বোধিসত্ত্বই ক্লিষ্ট মানৱক অৱহেলা কৰিব নালাগে, তেওঁলোক আছে যেনে নাই এই বিষয়েও চিন্তা কৰিব নালাগে। পৰিৱৰ্তন নহয় কাৰণে প্ৰজ্ঞাক প্ৰজ্ঞা বোলে আৰু সকলোৰে উপকাৰ কৰিব খোজে কাৰণে কৃপাক কৃপা বোলে। প্ৰজ্ঞা আৰু কৃপা বা কাৰণিকতাৰ মিলন হলে জ্ঞান হয়। যেতিয়া এই মিলন হয়, তেতিয়া জ্ঞাত নাথাকে, জ্ঞান নাথাকে আৰু জ্ঞেয়ও নাথাকে। ইয়াকে শ্ৰেষ্ঠতম জ্ঞান বোলা হয়। ইয়াত কোনো কৰ্তা বা উপভোক্তা নাই, কাৰণ ই কৰ্তা আৰু উপভোক্তা জ্ঞানৰ পৰা মুক্ত। ইয়াত কোনো গ্ৰহীতা নাই, দাতা নাই, দেয় নাই, লভ্যও নাই। এই মহাসত্যক অদ্বয় বোলে, বোধিচিন্তা বোলে, বজ্ৰ বোলে, বজ্ৰসন্ত বোলে, আলোকিত বোলে, আলোক বোলে। সকলো বুদ্ধৰ ধ্যেয় বস্তু ইয়াকে প্ৰজ্ঞাপাৰমিতা, বা সকলো পাৰমিতাৰ স্বৰূপ, বা সমতা বা সাম্য বোলে। যোগীয়ে এই তত্ত্ব ধ্যান কৰি সিদ্ধি লাভ কৰে।

ইয়াৰ পাচত অনঙ্গবজ্ৰই সংসাৰ আৰু নিৰ্বাণ বৰ্ণনা কৰা দুটা শ্লোক দিছে—

অনল্প সঙ্কল্পতমঃ অভিভূতং

প্ৰভঞ্জনোন্নততডিৎচলং চ।

ৰাগাদিদুৰ্বাৰমলারলিপুং

চিন্তং হি সংসাৰং উবাচ ৰঞ্জী।।

অৰ্থাৎ বহুত বেছি সঙ্কল্পকৰ্মী অন্ধকাৰৰ দ্বাৰা অভিভূত, ধুমুহাৰ সময়ত মৰা বিজুলীৰ দৰে খস্কীয়া আৰু অনুৰাগ আদি একৱাব নোৱৰা মলৰ দ্বাৰা প্ৰলিপ্ত চিন্তকে বজ্ৰীয়ে সংসাৰ বোলে।

তেওঁ ইয়াৰ বিপৰীত অৱস্থাকে নিৰ্বাণ বুলি সংজ্ঞাবদ্ধ কৰিছে—

প্ৰভাস্বৰং কল্পনয় বিমুক্তং

প্ৰহীণৰাগাদিমলপ্ৰলেপম্।

গ্ৰাহ্যং ন চ গ্ৰাহকং অগ্ৰসঙ্গং

তৎ এৱ নিৰ্বাণৱৰং জগাদ।।

অৰ্থাৎ, কল্পনাৰ পৰা মুক্ত হোৱা বাবে উজ্জ্বল, অনুৰাগ আদি মলৰ প্ৰলেপ নথকা, যিটো গ্ৰাহ্যও নহয় গ্ৰাহকো নহয় (যিজন জ্ঞাতাও নহয় জ্ঞেয়ও নহয়), সেই শ্ৰেষ্ঠ সত্তাকেই উত্তম নিৰ্বাণ বুলি কোৱা হয়।

এই সংসাৰ আৰু নিৰ্বাণৰ সংজ্ঞা দুটাৰ পৰা বুজিব পাৰি অতীন্দ্ৰিয় দৰ্শনত বজ্জয়ানীসকলৰ কল্পনা কিমান ওপৰলৈ উঠিছিল।

পঞ্চম অধ্যায়ত নিৰ্বাণ লাভৰ বাবে আচৰণ কৰিব লগীয়া তত্ত্বচৰ্যা নামৰ তাত্ত্বিক অভ্যাসকেইটামানৰ বিষয়ে উপদেশ দিয়া হৈছে। এই তত্ত্বচৰ্য্যাবোৰ মুৰাৰি (বিষ্ণু), শিৱ, ইন্দ্ৰ, কুবেৰ আদি হিন্দু দেৱতাসকলেও আদৰ কৰে। এই তত্ত্বচৰ্য্যাবোৰ অভ্যাস কৰিয়েই তথাগত বুদ্ধসকলে নিৰ্বাণ লাভ কৰিছিল। এই অভ্যাসবোৰৰ ভিতৰত আছে মন্ত্ৰযানত উল্লেখ কৰা সময়বোৰ, অৰ্থাৎ চুক্তিবোৰ পালন, প্ৰদীপৰ বা বিষ্ঠাৰ ভোজন, আৰু পৃথিৱীৰ পজ্ঞাপাৰমিতাৰ এই ৰূপ নাৰীৰ সঙ্গত অনবৰত কাল যাপন আদি।

যদিহে যোগীৰ মনৰ লক্ষ্য বোধি হয়, যদিহে তেওঁ বহিৰ্দৃশ্যবোৰৰ অন্তঃপ্ৰকৃতি শূন্য বুলি ভাবে, আৰু যদিহে তেওঁ সকলো জীৱৰ ক্লেশ দূৰ কৰিবলৈ অবিৰতভাৱে চেষ্টা কৰি থাকে, তেতিয়া তেওঁ এটা জীৱনতে পূৰ্ণতা লাভ কৰিব পাৰে। যিজনে লাভ আৰু লোকচান, মান আৰু অপমান, নিন্দা আৰু প্ৰশংসাক একে চকুৰে চায়, যিজন সকলো প্ৰকাৰৰ মিথ্যা সঙ্কল্পৰ পৰা মুক্ত, যিজন পাৰ্থিৱ জীৱৰ প্ৰতি কৰুণাশীল আৰু যিজন চৰ্য্যায়ানৰ অনুসৰণকাৰী তেওঁ কোনো কষ্ট নকৰাকৈ নিৰ্বাণ লাভ কৰে।

চৰ্য্যাগীতৰ উদ্দেশ্য আৰু সাংকেতিকতা

চৰ্য্যাগীতৰ উদ্দেশ্য কি আছিল এই বিষয়ে মুনিদত্তই লিখা টীকাত পোৱা নাযায়। হাতে লিখা প্ৰতিলিপিৰ ৬৯সংখ্যক পাতৰ পাচৰ পাতটো পোৱা নাই। সেই কাৰণে তেওঁ নিজা লিখাৰ পৰা এই বিষয়ে জনাৰ উপায় নাই। কিন্তু মুনিদত্তৰ টীকাৰ সৈতে সম্পূৰ্ণ এই সংস্কৰণৰ পাঠখিনি তিব্বতী ভাষালৈ অনুবাদ কৰা হৈছিল। সেই তিব্বতী অনুবাদৰ ডঃ প্ৰবোধ চন্দ্ৰ বাগচীয়ে সংস্কৃত অনুবাদ কৰিছে।

সেই সংস্কৃত ভণিতাৰ তলত অনুবাদ কৰা হল, “শ্ৰীমৎ হেৰুকতত্ত্বৰাজ সাগৰৰ গুহ্য সমাজ আদিৰ পৰা, শ্ৰীমৎ সদগুৰুনাথৰ বাক্য মথনৰ ফলত যি সত্য ওলাল, সেই শ্ৰীমৎতত্ত্বসুধাৰসৰ পৰা উদ্ভৱ সন্দৰ্শনৰ অন্তত উদ্ভিত হোৱা নিত্য বস্তুটি শ্ৰীতত্ত্বপৰায়ণসকলৰ বিচাৰৰ বাবে অপৰ্ণ কৰা হল ॥১॥ তাত আহত আৰু বিচাৰিত হোৱা গীতিকাবিলাকৰ পৰা জ্ঞানীসকলে সংবোধি বিচাৰৰ উদ্দেশ্যে এশ গীতিকাৰৰ এখন কোষ ৰচনা কৰিলে ॥২॥ শিষ্যৰ অৱবোধৰ বাবে আৰু সকলোৰে জ্ঞান লাভৰ বাবে সেই কোষৰ আধাখিনি গীতিকাৰ অৰ্থ তেওঁ (মুনিদত্তই) ইয়াত প্ৰকট কৰিলে, সেয়েই এই (টীকা) ॥ ৩ ॥”

ভণিতাৰ কথাখিনিৰ পৰা আমি জানিব পাৰিলোঁ— হেৰুকতত্ত্ব অনুসৰণ কৰা গুহ্য সমাজত সদগুৰুনাথে যি তত্ত্ব প্ৰকাশ কৰিছিল, সেই তত্ত্ব ৰসৰ পৰা এবিধ সং দৰ্শন প্ৰতিষ্ঠিত হল। সেই দৰ্শনত প্ৰতিষ্ঠিত নিত্যবস্তুটি, অৰ্থাৎ চৰ্যাগীতত প্ৰকাশিত ধৰ্ম মতটি তত্ত্বগ্ৰাহীসকলৰ হাতত অপৰ্ণ কৰা হৈছে। গুহ্য সমাজত এই ধৰ্মমত স্থাপনৰ বাবে জ্ঞানীসকলে এশটা গীতৰ এখন কোষ ৰচনা কৰিছিল। তাৰে আধাখিনিৰ, অৰ্থাৎ পঞ্চাশটা গীতৰ অৰ্থ শিষ্যসকলৰ বোধৰ বাবে আৰু সকলো লোকৰ জ্ঞান লাভৰ বাবে মুনিদত্তই টীকা কৰি গ্ৰন্থ ৰচনা কৰিলে।

কোনো কোনোৱে দাবী কৰিব খোজে যে মুনিদত্তৰ টীকাৰ সহায় নোলোৱাকৈও গীতবোৰৰ অৰ্থ বুজিব পাৰি। হয়তো পাৰি, কিন্তু তুলকৈ উদ্ধাৰ কৰা পাঠ আৰু সাক্ষেতিক ভাষাৰ সাগৰৰ মাজত বুৰ নোযোৱাকৈ জাল মাৰিবলৈ মুনিদত্তৰ টীকাই তুলুঙা হলেও নাৱৰ কাম কৰে।

চৰ্যাগীতৰ ভাষা সঙ্খ্যা বুলি মুনিদত্তই কৈছে, “কুক্কুৰীপাদাঃ সঙ্খ্যাভাষয়া প্ৰকটয়িতুং আশুঃ”, কুক্কুৰীপাদে সঙ্খ্যাভাষাৰে প্ৰকাশ কৰিবলৈ কৈছে। সঙ্খ্যাভাষাৰ অৰ্থ ডঃ বাগ্চীৰ মতে, “যথাকৃতং অৰ্থং অভিপ্ৰেতং অৰ্থং সন্দৰ্ভী ভাষা।” উক্ত অৰ্থ আৰু অভিপ্ৰেত অৰ্থ ধৰি ৰখা ভাষাকে সঙ্খ্যা ভাষা বোলে। তেওঁৰ মতে ভাষাটোৰ নাম সঙ্খ্যাভাষা হোৱা উচিত আছিল ; কিন্তু প্ৰয়োগত সঙ্খ্যাভাষা হৈ পোৱা গৈছে। শাস্ত্ৰীয় আৰু লৌকিক সকলো কথা প্ৰয়োগৰ অধীন। সিদ্ধসকলৰ ভাষাই নিয়ম অনুসৰণ নকৰে, নিয়মেহে সিদ্ধসকলৰ ভাষা অনুসৰণ কৰে। সিদ্ধসকলৰ ভাষাৰ কথা বাদেই দিয়ক, ভাষাভাষীসকলো নিয়মৰ দাস নহয়। শশ (শহা পছ) আছে কাৰণে চন্দ্ৰক শশী বোলে, কিন্তু ইয়াক, মৃগ আছে যদিও, মৃগী নোবোলে।

সন্ধ্যাভাষা সম্বন্ধে হেৰজুতন্ত্ৰত ভগৱান বুদ্ধই কৈছে —

“বন্ধে অহং বজ্জৰ্গৰ্ত্তো” যং শৃণু ত্বং একচেতসা।

সন্ধ্যাভাষং মহাভাষং সময়সন্ধেতবিস্তৰং।।১

*** **

বজ্জৰ্গভং মহাসত্ত্বং যং ময়া কথিতং ত্বয়ি।

তং সৰ্বং সাদৰং গ্ৰাহ্যং সন্ধ্যাভাষং মহাত্মতম্।।১০

যো’ভি ষিক্তো’ত্র ন বদেৎ সন্ধ্যাভাষয়া।

সময়বিস্ত্ৰোহনং তস্য জায়তে নাত্র সংশয়ঃ।।১১

ইত্থাপদ্রৱচৌৰৈশ্চ গ্ৰহজ্জৰিবুদ্ধো’পি।

স্মিয়তে’ সৌ যদি বুদ্ধো’পি সন্ধ্যাভাষং ন ভাষয়েৎ।।১২

স্বসময়বিস্ত্ৰান্ প্ৰাপ্য যদি ন ভাষয়েদিদং ৱচঃ।

তদা ক্ষোভং প্ৰকুৰ্ৱন্তি যোগিন্যশ্চতুষ্পীঠজাঃ।।১৩

অৰ্থাৎ, মই বজ্জৰ্গৰ্ত্ত বা বজ্জয়ান মতে বিস্তৰ চুক্তিৰ সন্ধেতেৰে ভৰপূৰ মহাভাষা সন্ধ্যাভাষাৰ বিষয়ে কওঁ তুমি একমনে শুনিবা।।১।।... মই তোমাক কোৱা অতি অদ্ভুত বজ্জৰ্গৰ্ত্ত মহাসত্তা সন্ধ্যা ভাষাক সকলোৱে সাদৰেৰে গ্ৰহণ কৰা উচিত।।১০।। যিজনে (বজ্জয়ানত) শৰণ লৈও সন্ধ্যা ভাষাৰে কথা নকয়, তেওঁৰ যে চুক্তিভঙ্গ (অপৰাধ) হয় তাত কোনো সন্দেহ নাই।।১১।। এই চুক্তিভঙ্গকাৰী চোৰবোৰ গ্ৰহজ্জৰত জাগৃত বুদ্ধ হলেও সন্ধ্যা ভাষা নকলে মৰে।।১২।। নিজৰ চুক্তি জনাসকলে যদি এই ভাষা পাই ব্যৱহাৰ নকৰে, (কামৰূপৰ?) চাৰিপীঠৰ যোগিনীসকলে (তেওঁলোকৰ প্ৰতি) ক্ষোভ প্ৰকাশ কৰে।।১৩।।

সন্ধ্যা ভাষাই উক্ত অৰ্থ আৰু অভিপ্ৰেত আৰ্থ দুয়োটাকে ধৰি ৰাখে। উদাহৰণ স্বৰূপে, ২ সংখ্যক চৰ্যাৰ ৰূথেৰ তেত্তলি কুজীৰে খাঅ বাক্যটো লোৱা হওক। প্ৰথম শব্দৰ অভিপ্ৰেত অৰ্থ হ’ল দেহ আৰু উক্ত অৰ্থ হ’ল ৰূথ বা বৃক্ষ। দ্বিতীয় শব্দৰ অভিপ্ৰেত অৰ্থ হ’ল চিন্তাৰ বক্তৃতা আৰু উক্ত অৰ্থ হ’ল তেত্তলি বা তেঁতেলী। তৃতীয় শব্দৰ অভিপ্ৰেত অৰ্থ হ’ল কুজক যোগ আৰু উক্ত অৰ্থ হ’ল কুজীৰ। চতুৰ্থ শব্দৰ অভিপ্ৰেত অৰ্থ হ’ল লোপ কৰ আৰু উক্ত অৰ্থ হ’ল খা। গতিকে উদ্ধৃত বাক্যটোৰ অভিপ্ৰেত অৰ্থ হ’ল— সাধকে কুজক যোগৰ সহায়েৰে

দেহৰ ভিতৰত থকা চিত্তৰ বক্তৱতা বা চঞ্চল্য আঁতৰাব লাগে। এইখিনি কথাকে উক্ত অৰ্থত কৈছে গছৰ তেঁতেলী কুস্তীৰে খায়।

এই সন্ধ্যা ভাষাৰ সহায়ত বক্তব্যান পস্থালৈ দীক্ষিত হৈ অহা শিষ্যসকলক সাধনাৰ শিক্ষা দিবলৈ এশ গীতৰ এখন কোষ গ্ৰন্থ গুহা সমাজৰ জ্ঞানীসকলে ৰচনা কৰিছিল। মুনিদত্তই তাৰে আধাখিনি গীতৰ সংস্কৃত টীকা লিখিলে শিষ্যসকলে গীতৰ প্ৰকৃত অৰ্থ বুজিবৰ কাৰণে আৰু সৰ্বসাধাৰণে গীতৰ অৰ্থ বুজিবৰ কাৰণে।

চৰ্যাগীতৰ ৰচকসকল

মুনিদত্তই টীকা লিখা চৰ্যাগীতকোষৰ ৰচকসকল হল— ১। আৰ্যদেৱপাদ, ২। কঙ্কণপাদ, ৩। কাম্বলাস্বৰপাদ, ৪। কুক্কুৰীপাদ, ৫। কৃষ্ণৰজ্জপাদ ৬। কৃষ্ণাচাৰ্যপাদ, ৭। গুণ্ডৰীপাদ, ৮। চাটিল্পপাদ, ৯। জয়নন্দীপাদ, ১০। ডোম্বীপাদ, ১১। চেন্‌চণপাদ, ১২। তন্ত্ৰীপাদ, ১৩। তাড়কপাদ, ১৪। দাৰিকপাদ, ১৫। ধামপাদ, ১৬। বিক্বাপাদ, ১৭। বীণাপাদ, ১৮। ভাদেপাদ, ১৯। ভুসুকুপাদ, ২০। মহীধৰপাদ, ২১। লুইপাদ, ২২। শবৰপাদ, ২৩। শাস্তিপাদ, আৰু ২৪। সবহপাদ।

এওঁলোকৰ ভিতৰত কেইবাজনৰ বিষয়ে জানিবলৈ পোৱা নাই। তন্ত্ৰীপাদৰ ৰচনা নেপালত উদ্ধাৰ হোৱা একমাত্ৰ প্ৰতিলিপিটোত পোৱা নাযায়। এই পুথিৰে অবিকল তিব্বতী অনুবাদত তেওঁ গীতটো পোৱা গৈছে। ২৫ সংখ্যক গীত থকা পাতখিলা নেপালী হস্তলিপিটোত নষ্ট হৈছে। ডঃ প্ৰবোধচন্দ্ৰ বাগ্‌চীয়ে কৰা সংস্কৃত অনুবাদৰ পৰা গীতটোৰ বিষয়-বস্তুৰ ধাৰণা কৰিব পাৰি। তলত যিমান দূৰ সম্ভৱ চৰ্যাৰ কবিসকলৰ পৰিচয় দিবলৈ চেষ্টা কৰা হৈছে।

১। আৰ্যদেৱপাদ : তাৰনাথৰ ভাৰতৰ বৌদ্ধ ধৰ্মৰ বুৰঞ্জী মতে শালচন্দ্ৰ ৰজাৰ পুতেক চন্দ্ৰগুপ্তৰ দিনত আৰ্যদেৱপাদ আৰু নাগাৱহ আচাৰ্যই নালন্দা বা শ্ৰীনলেন্দত ধৰ্মৰ শাসন চলাই আছিল। তিব্বতীয় পৰম্পৰা অনুসৰি সিংহল দ্বীপৰ ৰজাৰ ফুলনি বাৰীত পদুম ফুলৰ এপাহৰ পৰা তেওঁৰ জন্ম হৈছিল। ৰজাই তেওঁক তোলনীয়া পো কৰি লৈছিল। তেওঁ আচাৰ্য নাগাৰ্জুনৰ শিষ্য হয়। আচাৰ্য চন্দ্ৰকীৰ্তিয়ে চতুঃশতকবৃত্তিত লিখিছে যে সিংহলৰ ৰজা পঞ্চশৃঙ্গৰ মাস্তলিক চিন থকা পুত্ৰ এটা জন্ম হয়। বয়স হ'লত সিংহাসনত আৰোহণ কৰিলে যদিও বৌদ্ধ ধৰ্মত দীক্ষিত হ'বলৈ হেঁপাহ হ'ল। হেমদেৱ উপাধ্যায়ৰ পৰা তেওঁ প্ৰব্ৰজ্যা আৰু উপসম্পদাৰ

দীক্ষা লয়। ত্ৰিপিটকৰ অধ্যয়ন শেষ কৰি তেওঁ জম্বুদ্বীপলৈ (ভাৰতলৈ) তীৰ্থ কৰিবলৈ আহে। ভাৰতত তেওঁ নাগাৰ্জুনক লগ পায়। দক্ষিণাত্যৰ শ্ৰীপৰ্বতলৈ গৈ তেওঁ নাগাৰ্জুনৰ ওচৰত ৰসায়ন আদি ঐশ্বৰ্য্যজালিক বিদ্যা শিকে।

নাগাৰ্জুনৰ মৃত্যুৰ পাচত তেওঁ শ্ৰীপৰ্বতত ২৪ টা মঠ নিৰ্মাণ কৰাই সুভগা নামৰ যক্ষিণীক (ভিক্ষুণীক?) পৰিচালনাৰ ভাৰ দিয়ে। নালন্দালৈ আহি তেওঁ দুৰ্ধৰ্ষকাল নামৰ বৌদ্ধ ধৰ্ম বিৰোধী এজনক পৰাস্ত কৰে। আৰ্যদেৱ নালন্দাত বহু দিন থাকি শেষ বয়সত আকৌ দক্ষিণাত্যলৈ যায়। তেওঁ ৰঙ্গনাথ আৰু কাঞ্চী মঠৰ দায়িত্ব ৰাখলভদ্রক দি সংসাৰৰ পৰা বিদায় লয়।

তেওঁ সৰ্বমুঠ ১৩ খন গ্ৰন্থ ৰচনা কৰিছিল : ১। চৰ্যামেলায়ন-প্ৰদীপ, ২। চিন্ত-আৱৰণ-ৰিশোধন, ৩। চতুঃ-পীঠ-তন্ত্ৰৰাজ-মণ্ডল-উপায়িকা-ৰিধি-সাৰ-সমুচ্চয়, ৪। জ্ঞান-ডাকিনী, ৫। একদ্রুম-পঞ্জিকা, ৬। প্ৰদীপ-উদ্যোতন-অভিসন্ধি-প্ৰকাশিকা-ব্যাখ্যা টীকা, ৭। আৰ্য-প্ৰজ্ঞা-পাৰমিতা-মহাপৰিপৃচ্ছা - নাম। ৮। হস্ত-বাল-প্ৰকৰণ-নাম, ৯। হস্ত-বাল-প্ৰকৰণ-নাম-বৃত্তি, ১০। চতুঃ-শতক-শাস্ত্ৰ-কাৰিকা, ১১। স্থলিত-প্ৰমথন-যুক্তি-হেতু-সিদ্ধি, ১২। জ্ঞান-সাৰ-সমুচ্চয়, আৰু ১৩। মধ্যমক ভ্ৰমঘাত। মধ্যমক-ভ্ৰমঘাত ভণিতাত কোৱা হৈছে যে তেওঁ এই গ্ৰন্থখন জম্বুদ্বীপৰ ৰজা সুখাচাৰ্য, ওৰফে উদয়ি, ওৰফে সদ্বহৰ অনুৰোধত নালন্দা বিহাৰত বহি লিখিছিল। তেওঁ এই সঙ্কলনৰ ৩১ সংখ্যক চৰ্য্যটোৰ লিখক। তেওঁ লিখিছে—

জহি মণ ইন্দিঅ পৰণ হোই গঠা।

ণ জানমি অপা কহি গই পইঠা।।

য'ত মন ইন্দ্ৰিয় পবন নষ্ট হয়, আত্মা ক'লে গৈ প্ৰৱেশ কৰিলে মই নাজানোঁ।

২। কঙ্কণপাদ : তাৰনাথৰ ভাৰতৰ বৌদ্ধ ধৰ্মৰ বুৰঞ্জীত এওঁৰ নাম নাই। ডঃ সুকুমাৰ সেনে এই নামৰ কোনো সিদ্ধ নাই বুলি অনুমান কৰে। তেওঁৰ মতে এইটো এটা ছদ্ম নাম। ৪৪ সংখ্যক গীতটো তেওঁৰ ৰচনা। গীতটোৰ প্ৰথম স্তৱক—
সুনে সুন মিলিত্তা জৰেঁ।

সঅল ধাম উইআ তৰেঁ।।

শূন্যত শূন্যৰ যেতিয়া মিলন হল, তেতিয়া সকলো ধৰ্ম উদিত হল।

৩। কম্বলান্বৰপাদ :- তাৰনাথৰ বুৰঞ্জীত কম্বলান্বৰপাদৰ নাম নাই।

কম্বলপা বা কম্বলপাদ নামৰ সিদ্ধ এজনৰ কথাহে পোৱা যায়। ডঃ সুকুমাৰ সেনৰ মতে তেওঁৰ নাম কম্বলপাদ। তাৰনাথে কয়, যে চৰ্যা-সংগ্ৰহ-প্ৰদীপত পদ্মথৰজ্ঞ আৰু কম্বলপাক মন্ত্ৰযানৰ মূল প্ৰৱৰ্তক বোলা হৈছে যদিও আৰ্য-দেশৰ (ভাৰতবৰ্ষৰ) মঙ্গলৰ বাবে তেওঁ কোনো কাম কৰাৰ সাক্ষ্য নাই। এওঁ প্ৰজ্ঞা-পাৰমিতা-নৰ নামৰ গ্ৰন্থৰ ৰচয়িতা। কম্বলপাদ, আৰু শ্ৰীগুপ্তৰ শিষ্য জ্ঞানগৰ্ভই মাধ্যমিক মতবাদৰ অন্তৰ্গত স্বভাৱহীনবাদ গ্ৰহণ কৰিছিল।

কম্বলপাদে ১৩খন গ্ৰন্থ ৰচনা কৰিছিল— (১) আৰ্য-প্ৰজ্ঞা-পাৰমিতা-উপদেশ, (২) ভগৱৎ-হেৰজ্ঞ-সাধন-তত্ত্ব - চতুৰক্ৰম, (৩) অসম্বন্ধ-দৃষ্টি, (৪) অসম্বন্ধ-সৰ্গ-দৃষ্টি, (৫) মণ্ডল-বিধি, (৬) ভগৱতী-প্ৰজ্ঞা-পাৰমিতা-নৰ-শ্লোক-পিণ্ডাৰ্থ, (৭) উক্ত গ্ৰন্থৰ টীকা, (৮) সাধন-নিদান-নাম-শ্ৰী-চক্ৰ-সম্বন্ধ-পঞ্জিকা, (৯) ভগৱৎ-শ্ৰীচক্ৰ-সম্বন্ধ-সাধন-ৰত্ন-চূড়ামণি, (১০) চক্ৰ-সম্বন্ধ-মণ্ডল-উপায়িকা-ৰত্ন-প্ৰদীপ-উদ্যোতন-নাম, (১১) কম্বল-গীতিকা, (১২) চক্ৰ-সম্বন্ধ-অভিসময়-টীকা, আৰু (১৩) আৰ্য-সপ্ত-শ্লোকিকা-ভগৱতী-প্ৰজ্ঞা-পাৰমিতা-নাম-সূত্ৰ। এওঁ এই সকলনৰ ৮ সংখ্যক গীতৰ ৰচয়িতা। তেওঁ লিখিছে—

সোনে ভৰিলী কৰুণা নাৰী।

ৰূপা থোই নাহিকে ঠাৱী।।

সোণেৰে কৰুণাৰ নাওখন ভৰিল। তাত ৰূপ থবলৈ ঠাই নাই।

৪। কুক্কৰীপাদ :- তেওঁ কপিল-ভণ্ড ৰাজাৰ এজন ব্ৰাহ্মণ আছিল। তেওঁ সাধাৰণ সিদ্ধি লাভ কৰি ৩৩জন দেৱতাৰ এজন হিচাপে গণ্য হৈছিল। তেওঁ পোহা কুক্কৰজনী ডাকিনী হৈ তেওঁক পৰম সিদ্ধি লাভ কৰিবলৈ পৰামৰ্শ দিয়ে। ধৰ্মপাল সিংহাসনত উঠাৰ পিচত কুক্কৰীপাদে ভঙ্গলৈ আহি মানুহৰ কল্যাণত ব্ৰতী হয়। তেওঁ তলত দিয়া ১৬খন গ্ৰন্থ ৰচনা কৰি থৈ গৈছে।

(১) ৰজ্ঞ-সত্ত্ব-গুহাৰ্থ-ধৰ-বাহু, (২) ৰৈৰোচন-গুহাৰ্থ-ধৰ-বাহু, (৩) ৰজ্ঞ-হেৰুক-গুহাৰ্থ-ধৰ-বাহু, (৪) পদ্ম-নৰ্ত্তেশ্বৰ-গুহাৰ্থ-ধৰ-বাহু, (৫) ৰজ্ঞ-ৰত্নপ্ৰভ-গুহাৰ্থ-ধৰ-বাহু, (৬) সুঘোট-ললিত-গুহাৰ্থ-ধৰ-বাহু, (৭) সৰ্ব-মণ্ডল-অনুসাৰেণ-পঞ্চ-বিধি, (৮) সৰ্ব-বুদ্ধ-সমযোগ-মণ্ডল-বিধি, (৯) মহামায়া-তন্ত্ৰ-অনুসাৰিণী-হেৰুক-সাধনা-উপায়িকা, (১০) ৰজ্ঞ-সত্ত্ব-সাধনা, (১১) মোহ-তৰণ-কল্প, (১২) মহামায়া সাধন-মণ্ডল-বিধি, (১৩) মহামায়া-মণ্ডল-দেৱ-স্তোত্ৰ, (১৪) তন্ত্ৰ-সুখ-ভাৱনা-অনুসাৰি-যোগ-ভাৱনা-উপদেশ, (১৫) আৱ-পৰিচ্ছেদন, আৰু (১৬) মহামায়া-ৱলি-বিধি।

কুক্কৰীপাদৰ দুটা গীত সঙ্কলনখনত আছে। দুই সংখ্যক আৰু ২০ সংখ্যক গীত তেওঁৰ ৰচনা। ইয়াৰ উপৰিও ৪৮ সংখ্যক গীতটোৰ ৰচকো তেওঁ। গীতটো থকা পাতখিলা হেৰাইছে। তিব্বতী অনুবাদত গীতটো সংৰক্ষিত হৈ আছে।

২ সংখ্যক গীতটো নতুন শিষ্যসকলক সাধনাৰ শিক্ষা দিবলৈ ৰচনা কৰা হৈছে বুলি জানিব পাৰি। চৰ্যাটো আৰম্ভ হৈছে এইদৰে

দুলি দুহি পিটা ধৰণ ন জাঅ।

ৰুখেৰ তেস্তুলি কুস্তীৰে খাঅ॥

কাছ খীৰালত কঁৰিয়াত (গাখীৰ) নধৰা হৈছে। গছৰ তেঁতেলী কুস্তীৰে খায়।

৫। কৃষ্ণৰজ্ঞপাদ :- তাৰনাথৰ বুৰঞ্জী মতে কৃষ্ণৰজ্ঞপাদ কৃষ্ণাচাৰ্যপাদতকৈ আগৰ। এওঁ এখন দোহাকোষ লিখিছিল। কৃষ্ণাচাৰ্যপাদে এই দোহাকোষৰ ওপৰত টীকা লিখিছিল। এই সঙ্কলনত ১৮ সংখ্যক গীতটো তেওঁৰ ৰচনা। গীতটো এনেকৈ আৰম্ভ হৈছে—

তিনি ভূৱন মই ৰাহিঅ হেলোঁ।

হাঁউ সুতেলি মহাসুখ লীলে॥

তিনি ভূৱন মই হেলাৰঙে অতিবাহিত কৰিলোঁ। মই লীলা কৰি মহাসুখত শুইছোঁ।

৬। কৃষ্ণাচাৰ্যপাদ : *An Introduction to Buddhist Esoterism* ত ডঃ বিনয়তোষ ভট্টাচাৰ্যই তেওঁৰ সময় ৭১৭ খ্ৰিষ্টাব্দ বুলি উল্লেখ কৰিছে। তাৰনাথৰ বুৰঞ্জীত কেইবাজনো কৃষ্ণাচাৰ্যৰ নাম পোৱা যায়। ডঃ ভট্টাচাৰ্যই কৃষ্ণাচাৰ্যক জালন্ধৰিপা আৰু গোপীচন্দ্ৰৰ সম-সাময়িক বুলি ভাবে। পাগ্ - চাম্-জোন্-জান্অৰ মতে তেওঁ উৰিষ্যাৰ ব্ৰাহ্মণ পৰিয়ালত জন্ম গ্ৰহণ কৰিছিল। জালন্ধৰিপাদৰ ওচৰত এওঁ দীক্ষা লৈছিল। তেওঁৰ তান্ত্ৰিকা (তন্ত্ৰীপাদ) নামৰ এজন শিষ্য আছিল। পুৰুষ আৰু স্ত্ৰীদেৱতা আলিঙ্গনাৰ দ্বাৰা হৈ থকা মতবাদৰ তন্ত্ৰ ৰচনা কৰিছিল বুলি উক্ত গ্ৰন্থত লিখা হৈছে।

তাৰনাথৰ বুৰঞ্জীত কৃষ্ণ আৰ্য, কৃষ্ণ ব্ৰাহ্মণ, কৃষ্ণ চাৰ্যধৰ, কৃষ্ণাচাৰী, কৃষ্ণাচাৰ্য আচাৰ্য, কনিষ্ঠ কৃষ্ণাচাৰ্য, কৃষ্ণ-মুনিৰাজ, কৃষ্ণ-সময়-বজ্জ আৰু কৃষ্ণৰজ্ঞপাদ এই দহজন লোকৰ নাম পোৱা যায়। এওঁ লিখা ৭, ৯, ১০, ১১, ১২, ১৩, ১৯,

(২৪), ৩৬, ৪০, ৪২ আৰু ৪৫ সংখ্যক গীত এই সঙ্কলনত পোৱা যায়। ইয়াৰে ২৪ সংখ্যক গীতটো লিখা পাতখন হেৰাল। তিববতী অনুবাদত পৰা ইয়াৰ বিষয়-বস্তু জানিব পাৰি।

৭ সংখ্যক চৰ্যাত কৃষ্ণপাদে বিপদসঙ্কুল পথৰ বৰ্ণনা দিছে। ৯ সংখ্যক গীতত হিমেজু বোৱা মাতাল হাতীৰ বৰ্ণনা কৰিছে। ডোম গাভৰুৰ সৈতে প্ৰেমৰ কথা আছে ১০ সংখ্যক চৰ্যাত। কাপালিকে নটৰ ভাও ধৰি নগৰ ভ্ৰমণৰ বৰ্ণনা ১১ সংখ্যক চৰ্যাগীতত আছে। ১২ সংখ্যকত দৰাখেল, ১৩ সংখ্যকত নৌকা-ভ্ৰমণ, ডুমুনী বিবাহ বৰ্ণাইছে ১৯ সংখ্যকত, টোপনি গধুৰৰ বৰ্ণনা ৩৬ শ চৰ্যাত, বোবা গুৰু আৰু কল্যা শিষ্যৰ কথা ৪০ সংখ্যক চৰ্যাত দিয়া হৈছে। ৪২ সংখ্যক চৰ্যাত কৃষ্ণপাদৰ মৃত্যুত শোকাকুলক সাঙ্ঘনা দিছে। ৪৫ সংখ্যক চৰ্যাত পোৱা যায় গছ-কটাৰ বৰ্ণনা।

কৃষ্ণচাৰ্যপাদৰ ১০ সংখ্যক চৰ্যা এনেকুৱা—

নগৰ বাহিৰি ৰে ডোম্বী তোহোৰি কুড়িআ।

ছোই ছোই যাই সো ৰামহ নাড়িআ।।

আলো ডোম্বি তোএ সম কৰিবো ম সঙ্গ।

নিঘিণ কহু কাপালি জোই লাংগ।।

এক সো পদম চৌসঠী পাখুড়ী।

তাই চড়ি নাচঅ ডোম্বী বাপুড়ী।।

হালো ডোম্বী তো পুছমি সদভাৰে।

আইসসি যাসি ডোম্বি কাহৰি নাৰে।।

তান্তি বিকণঅ ডোম্বী অৱৰনা চঙ্গতা।

তোহোৰ অন্তৰে ছাড়ি নড় এড়া।।

তু লো ডোম্বী হাউ কৱালী।

তোহোৰ অন্তৰে মোএ ঘলিলি হাড়েৰি মালী।।

সৰবৰ ভাঞ্জঅ ডোম্বী খাঅ মোলান।

মাৰমি ডোম্বী লেমি পৰাণ।।

নগৰৰ বাহিৰত ডোম্বী তোৰ কুটিৰ। তাইক বামুণ আৰু নেড়াবোৰে ছুই ছুই যায়। হেৰা ডোম্বী, মই নিঘিণ কৃষ্ণ কাপালিক নঙঠা যোগীয়ে তোমাৰে সৈতে সঙ্গ কৰিম! এপাহ পদুম চৌৰঙিটা পাই। তাতে উঠি ৰেচেষী ডোম্বীয়ে নাচে।

হেৰা ডোম্বী, তোমাক মই সদভাৱে সোধোঁ, “কাৰ নাৱেৰে তুমি আহ আৰু যোৱা?” ডোম্বী, তুমি সূতা আৰু খৰাহী বেচা। তোমাৰ কাৰণে মই হাড়ৰ মালা গ্ৰহণ কৰিলোঁ। সৰোবৰ ঘোলা কৰি ডোম্বী, তুমি পদুমৰ নলা খোৱা। ডোম্বী, তোমাক মাৰি প্ৰাণ লম।

৭। **গুণ্ডৰীপাদ :** গুণ্ডৰীপাদৰ নাম তাৰনাথৰ ভাৰতত বৌদ্ধধৰ্মৰ বুৰঞ্জীত নাই। সেই কাৰণে এই নামৰ এজন চৰ্যাকাৰ আছিল বুলি ডঃ সুকুমাৰ সেনে বিশ্বাস নকৰে। তেওঁ গুণ্ডৰীপাদটো ছদ্ম নাম বুলি ভাবে। ৪ সংখ্যক চৰ্যাগীতটো তেওঁ লিখা। গীতটোৰ আৰম্ভণি এনেকুৱা—

তিঅড্ডা চাপী জোইনি দে অন্ধৱালী।

কমল কুলিশ ঘাণ্টে কৰহ বিআলী।।

হেৰ যোগিনী, তিনি বাধা অতিক্ৰম কৰি আলিঙ্গন দে। পদুম-বজ্জৰ সংঘৰ্ষ কৰোঁ বিয়লিত।

৮। **চাটিম্পাদ :-** তাৰনাথৰ বুৰঞ্জীত চাটিম্পৰ নাম পোৱা নাযায়। সেই কাৰণে এওঁক গীতটোৰ ৰচক বুলি ডঃ সুকুমাৰ সেনে বিশ্বাস নকৰে। মুনিদত্তই অৱশ্যে এওঁক চৰ্যাগীতৰ ৰচক বুলিয়েই ধৰিছে। ৫সংখ্যক চৰ্যাটি এওঁৰ ৰচনা। গীতটোত চাটিম্পই ভৱনদী পাৰ হোৱাৰ উপায় বৰ্ণনা কৰিছে এনেদৰে—

ভৱণই গহণ গম্ভীৰ বেগে বাহী।

দুআন্তে চিখিল মশ্বে ন থাহী।

ভৱনদী দ, গম্ভীৰ বেগে বয়। দুইকাষে বোকা, মাজত থাউনি নাই।

৯। **জয়নন্দীপাদ :-** ৪৬ সংখ্যক চৰ্যাগীতটোৰ বাহিৰে জয়নন্দীপাদৰ নাম ক’তো পোৱা নাযায়। টীকাকাৰ মুনিদত্তই তেওঁকো চৰ্যা-লিখকৰ সন্মান দিছে। তেওঁ লিখিছে—

পেখু সুঅণে অদশ জইসা।

অন্তৰালে মোহ তইসা।।

স্বপ্ন আৰু আচীত যেনেকৈ চাবা, অন্তৰালৰ মোহকো তেনেকৈ চাবা।

১০। **ডোম্বীপাদ :** চৌৰাশী সিদ্ধৰ কাহিনী মতে ডোম্বীপাদ শালিপুৰ

নগৰৰ ধোবা আছিল। এজন যোগীৰ পৰা তেওঁ দীক্ষা লয়। তেওঁ যোগীজনৰ পৰা তেওঁৰ জীৱিকাৰ সৈতে সম্পৰ্ক থকা পৰিভাষাৰে উপদেশ লাভ কৰিছিল ; যেনে— গৰম পানীৰ মুদ্ৰাৰে দেহৰ মল পৰিষ্কাৰ কৰা, শব্দৰ পানীৰে জিভা ধোৱা, পিতৃ-মাতৃৰ মিলনেৰে আত্মা পৰিষ্কাৰ কৰা। ১২বছৰ সাধনাৰ পাচত তেওঁ মহামুদ্ৰা সিদ্ধি লাভ কৰে। ডঃ সুকুমাৰ সেনৰ মতে ডোন্সী এটা ছদ্ম নাম।

আন হাতে ডঃ বিনয়তোষ ভট্টাচাৰ্যই *An Introduction to Buddhist Esoterism* ত ডোন্সীপাদক ডোন্সী হেৰুক বুলি চিনাক্ত কৰি তেওঁৰ সময় ৭৭৭খ্ৰিঃ বুলি সিদ্ধান্ত কৰিছে। তেওঁ সহজযোগিনীৰ শিষ্য আছিল। তেওঁ মগধৰ ৰজা আছিল, পিছত যোগী হয়। তেওঁ সহজযান আৰু বজ্জযানৰ বিষয়ে গ্ৰন্থ লিখে। তেওঁ নিজৰ ভাষাত *ডোন্সী গীতিকা* নামৰ এখন গ্ৰন্থ লিখে। তেওঁ নৈৰাশ্ৰয় সাধনা প্ৰৱৰ্তন কৰে। তেওঁ হেবজ্জতন্ত্ৰ মানি চলিছিল। তেওঁ সংস্কৃতত কেইবাখনো গ্ৰন্থ লিখিছিল, তাৰে এখনৰ নাম আছিল *সহজসিদ্ধি*। কুল উপাসনা নকৰিলে তান্ত্ৰিক ধৰ্মত একো সিদ্ধি লাভ কৰিব নোৱাৰি বুলি তেওঁ এই গ্ৰন্থত লিখিছে। তেওঁ মহা সুখৰ চাৰিটা ভাগ কৰিছে আনন্দ, পৰমানন্দ, বিৰমানন্দ আৰু সহজানন্দ। তেওঁ লিখা গ্ৰন্থবোৰ হ'ল—

(১) গুহ্য-ৰজ্জ-তন্ত্ৰ-ৰাজ্জ-বৃত্তি, (২) একবীৰ-সাধনা, (৩) দশ-তন্ত্ৰ, (৪) যোগি-যোগিনী-নাম-সাধাৰণ-অৰ্থ-উপদেশ, (৫) গণ-চক্ৰ-বিধি, (৬) ত্ৰি-ক্ৰম-উপদেশ, (৭) নৈৰাশ্ৰয়-যোগিনী-সাধনা, (৮) আৰ্য-তাৰা-কুৰুকুমা-স্তোত্ৰ, (৯) শ্ৰী-সহজ-সিদ্ধি, (১০) নাম-সঙ্গীতি-বৃত্তি, (১১) সন্তোত্ৰ-কুৰুকুমা-সাধনা, (১২) মৃত-বিধি, আৰু (১৩) শ্ৰী-গণপতি-চক্ৰ-সূৰ্য। তেওঁ এই সকলনত থকা ১৪ সংখ্যক গীতটো ৰচনা কৰিছে। গীতটো আৰম্ভ হৈছে এইদৰে—

গঙ্গা জউনা মাঝেঁ ৰে বহই নাই।

তহি বুড়িলী মাতঙ্গি পোইআ লীলেঁ পাৰ কৰেই।।

গঙ্গা আৰু যমুনাৰ মাজেৰে নাও গৈছে। তাত বুৰা (ডুব যোৱা) হাতী-পোৱালিক (যোগিনীয়ে) লীলা কৰি পাৰ কৰে।

১১। **চেষ্টণপাদ ৪**:- চেষ্টণপাদৰ বিষয়ে তাৰনাথৰ বুৰঞ্জীত পোৱা নাযায়। ডঃ প্ৰণৱজ্যোতি ডেকাই *চৰ্যাগীত* আৰু *বৌদ্ধতন্ত্ৰ*ত দিয়া তথ্য অনুযায়ী চেষ্টণপাদ যোগাচাৰ-তন্ত্ৰৰ সমৰ্থক আছিল। যোগাচাৰ-তন্ত্ৰৰ প্ৰচলন তিব্বতত নাছিল আৰু

অন্য ঠাইতো এই তন্ত্ৰ অনুগামীৰ সংখ্যা কম আছিল। তেওঁ অনুস্তৰ তন্ত্ৰ, মহাতন্ত্ৰ আৰু অতিতন্ত্ৰৰ বিৰোধী আছিল। গীতটোৰ আৰম্ভণিতে তেওঁ ক্ৰিয়াতন্ত্ৰ, চৰ্যাতন্ত্ৰ আৰু অনুস্তৰতন্ত্ৰক ব্যক্তি কৰিছে, সেই তন্ত্ৰবোৰত প্ৰকৃত জ্ঞান নাই বুলি।

টালত মোৰ ঘৰ নাই পড়বেৰী।

হাড়ীত ভাত নাই নিতি আৱেশী।।

টীলাত মোৰ ঘৰ, মোৰ ওচৰ-চুবুৰীয়া নাই। কলহত ভাত (পোহৰ) নাই, নিতৌ প্ৰৱেশ কৰে।

ক্ৰিয়াতন্ত্ৰ, চৰ্যাতন্ত্ৰ আৰু অনুস্তৰতন্ত্ৰৰ সাধনা অনুসৰি কলহ বা ঘট স্থাপন কৰি ইষ্ট দেৱ বা দেৱীক আহ্বান কৰে। শেষত সাধকে মহামুদ্ৰা বা যৌনাচাৰত লিপ্ত হব লাগে। ঢেংঢংপাদৰ মতে হাড়ীত বা কলহত ভাত বা পোহৰ বা ধৰ্ম নাই। কিন্তু মানুহে তালৈ, অৰ্থাৎ ক্ৰিয়াতন্ত্ৰ, চৰ্যাতন্ত্ৰ আৰু অনুস্তৰতন্ত্ৰৰ সাধনালৈ ঢাপলি মেলে।

১২। তাড়কপাদ :- তাৰনাথৰ বুৰঞ্জীত তাড়কপাদৰ বিষয়ে পোৱা নাযায়। এই কাৰণে ডঃ সুকুমাৰ সেনে এইটো ছদ্ম নাম বা উপাধি বুলি ভাবে। এওঁ লিখা ৩৭সংখ্যক চৰ্যাগীতটো সঙ্কলনখনত পোৱা যায়।

অপণে নাই মো কাহেৰি সন্ধা।

তা মহামুদেৰি কুটি গেলি কংখা।।

আপুনিয়েই (নিজেই) নাই (শূন্য), মোৰ শন্ধা কালৈ? সেই কাৰণে মহামুদ্ৰাৰ (যৌনমিলনৰ) আকাঙক্ষা টুটি গল।

১৩। দাৰিকপাদ : তাৰনাথৰ মতে আচাৰ্য দিগ্‌নাগৰ সময়ত উৰিষ্যাত নাগেশ নামে এজন ৰজা আৰু নাগকেশ নামে তেওঁৰ এজন ব্ৰাহ্মণ মন্ত্ৰী আছিল। আচাৰ্য লুইখাদে তেওঁলোকক ধৰ্মাস্ত্ৰৰ কৰায় আৰু ৰাজ্য ত্যাগ কৰায়। সিদ্ধি লাভ কৰাৰ পাচত ৰজাৰ নাম হয় দাৰিকপাদ আৰু মন্ত্ৰীৰ নাম হয় দিঙ্গীপাদ। লুইপাদৰ অভিষেক পদ্ধতিৰ বিষয়ে এওঁ প্ৰস্থ লিখিছিল। ডঃ বিনয়তোষ ভট্টাচাৰ্যই এওঁৰ সময় ৭৫৩ খ্ৰিঃ বুলি স্থিৰ কৰিছে। তেওঁৰ মতে দাৰিকপাদ লীলাৱন্তৰ শিষ্য। পিচত তেওঁ ৰাজকুমাৰী লক্ষ্মীন্ধৰাৰ শিষ্যত্ব গ্ৰহণ কৰে। লুইপাদ আদি সিদ্ধ কাৰণে সকলো তান্ত্ৰিকে তেওঁক গুৰু বুলি উল্লেখ কৰে। তেওঁ চক্ৰসংহৰতন্ত্ৰ, কাল-চক্ৰ-তন্ত্ৰ আৰু বজ্জ-যোগিনী তন্ত্ৰৰ বিষয়ে লিখিছিল।

তেওঁ লিখা গ্ৰন্থবোৰ হ'ল— (১) কালচক্ৰ- তত্ত্ব-ৰাজস্ব - সেক- প্ৰক্ৰিয়া-
বৃত্তি-বজ্জপদ-উদ্ঘাটনী-নাম, (২) চক্ৰ-সম্বৰ-সাধন-তত্ত্ব-সংগ্ৰহ -নাম, (৩) চক্ৰ-
সৰ্বৰ-মণ্ডল-ৰিধি-তত্ত্ব-অৱতাৰ-নাম, (৪) চক্ৰ-সম্বৰ - ভোক্ত-সম্বাৰ্থ-সিদ্ধি-ৰিশুদ্ধ-
চূড়ামণি-নাম, (৫) যোগানুসাৰিণী-নাম-ৰজ্জ-যোগিনী-টীকা, (৬) ৰজ্জ- যোগিনী-
পূজা-ৰিধি, (৭) কঙ্কাল-তাৰণ-সাধন, (৮) ওড্ডিয়ান-বিনিৰ্গত-মহা-গুহা-তত্ত্ব-
উপদেশ, (৯) সপ্তম-সিদ্ধান্ত, (১০) তথতা-দৃষ্টি, আৰু (১১) প্ৰজ্ঞা-পাৰমিতা-
হৃদয়-সাধন।

এই সঙ্কলনত ৩৪ সংখ্যক চৰ্চাটো তেওঁৰ ৰচনা তেওঁ কৈছে—

সুন কৰুণৰি অভিনচাৰেঁ কাঅৱাক্‌চিঅ।

বিলসই দাৰিক গঅণত পাৰিমকুলেঁ।।

শূন্য আৰু কৰুণাৰ অভিন্ন প্ৰয়োগত কায় - ৰাক্‌-চিত্ত লৈ দাৰিকে শূন্যৰ
সিপাৰত বিলাস কৰে।

১৪। ধামপাদ : তাৰনাথে ধামপাদৰ বিষয়ে তেওঁৰ বুৰঞ্জীত একো লিখা
নাই। ডঃ সুকুমাৰ সেনে কয়, তিববতী ঐতিহ্য অনুসৰি আচাৰ্য ধৰ্মপাদ কৃষ্ণপাদৰ
বংশধৰ। ধৰ্মপাদৰ প্ৰাকৃত ৰূপ ধামপাদ। এওঁৰ দুখন গ্ৰন্থৰ তিববতী অনুবাদ পোৱা
যায়— এখন সুগতদৃষ্টিগীতিকা আৰু আনখন হৃদ্ধাৰ-চিত্ত-বিন্দু-ভাৱনা-ক্ৰম। এওঁৰ
ৰচনা এই সঙ্কলনত ৪৭ সংখ্যক গীত ৰূপত আছে। গীতটো এনেকুৱা—

কমল কুলিশ মাৰেঁ ভইঅ মিললী।

সমতা জোঁঞ জলিঅ চণ্ডালী।।

পদুম-বজ্জৰ মাজত মিলন হল। সমতা যোগেৰে চণ্ডালী জ্বলিল।

১৫। বিৰূপাপাদ : বিৰূপাপাদৰ জীৱনৰ প্ৰথমার্ধত আৰ্য চন্দ্ৰমণি নালন্দা
বিহাৰৰ উপাধ্যক্ষ আছিল। *The Blue Annals* অৰ মতে তেওঁ ডোয়ী হেৰুৰ
গুৰু আছিল। তেওঁ ইন্দ্ৰভূতি ৰজাৰ ভনীয়েক লক্ষ্মীকৰাৰ ওচৰত শৰণ লৈছিল।
বিৰূপাপাদৰ এগৰাকী শিষ্যৰ নাম আছিল সুখসিদ্ধা।

তেওঁ নালন্দাত পঢ়ি থাকোঁতে এবাৰ পূবৰ দেবীকোটলৈ (বৰ্তমান
বাংলাদেশৰ) আহোঁতে মহিলা এগৰাকীয়ে তেওঁক এপাহ নীলা পদুম আৰু কড়ি
এটা দিয়ে। মানুহবোৰে লগে লগে সেইবোৰ পেলাই দিবলৈ কোৱাত তেওঁ
পেলাবলৈ চেষ্টা কৰিও নোৱাৰিলে। সেইবোৰ তেওঁৰ হাতৰ পৰা নেৰা হল। ঘৰুৱা
ডাকিনী এজনীয়ে কলে যে দিনৰ ভিতৰতে পাঁচ যোজন পাৰ হৈ গ'লে সেইজনী

ডাকিনীয়ে তেওঁক অপকাৰ কৰিব নোৱাৰে। পাঁচ যোজন পাৰ হোৱাৰ আগতে আন্ধাৰ হোৱাত তেওঁ চৰাইখানা এটা পাই ডাঙৰ মাটিৰ পাত্ৰ এটা উৰুৰিয়াই তাতে সোমাই শূন্য ধ্যান কৰি থাকিল। ডাকিনীবোৰে লগৰীয়া লৈ আহি বিচাৰি ৰিকুৰ্বাপাদক নাপাই ৰাতিপুৱালত গুচি গল। ডাকিনীৰ হাতৰ পৰা ৰক্ষা পাই নালন্দালৈ ঘূৰি আহি তেওঁ পণ্ডিত হল।

ডাকিনীক দমন কৰিবলৈ তেওঁ দক্ষিণাত্যৰ শ্ৰীপৰ্বতলৈ গৈ আচাৰ্য নাগবোধিৰ অধীনত যমাৰিক আৰাধনা কৰি সিদ্ধি লাভ কৰে। অধিক জপ কৰাত তেওঁ শ্ৰীমহাক্ৰোধৰ সমান শক্তিশালী হয়। এইবাৰ তেওঁ আকৌ দেবীকোটলৈ গল। আগতে চিন দি থোৱা মানুহটো আহিছে বুলি ডাকিনীবোৰে তেওঁক বেড়ি ধৰিলে। তেওঁ যমাৰি-মণ্ডল আঁকি দিয়াত ডাকিনীবোৰ মুৰ্ছা গৈ মৰোঁ মৰোঁ হল। ডাকিনীবোৰক তাতে বান্ধি থৈ নালন্দালৈ আহি চৰ্যা গ্ৰহণ কৰে। তেওঁ সকলো তন্ত্ৰৰ শিক্ষা দিব পাৰিছিল।

তেওঁ ৰচনা কৰা গ্ৰন্থবোৰ হল— (১) ৰক্ত-যমাৰি-সাধন, (২) ৰক্ত-যমাস্তক-সাধন, (৩) বলি-ৰিধি, (৪) প্ৰভাস - উদয়-ক্ৰম, (৫) সুনিস্প্ৰপঞ্চ-তন্ত্ৰ-উপদেশ, (৬) ৰক্ত-যমাৰি-সাধন-ৰিধি, (৭) যমাৰি-যন্ত্ৰাবলী, (৮) অমৃত-অধিষ্ঠান, (৯) শ্ৰী-বিকপ-পদ-চতুঃ-অশীতি, (১০) দোহা-কোষ, (১১) মাৰ্গ-ফলাস্থিত-অৱবাদক, (১২) অমৃত-সিদ্ধি-মূল, (১৩) কৰ্ম-চণ্ডালিকা-দোহাকোষ-গীতি, (১৪) বিকপ-ৰক্ত-গীতিকা, (১৫) বিকপ-গীতিকা, (১৬) ছিন্নমুণ্ড-সাধন, (১৭) উড্ডিয়ান-শ্ৰী-যোগি-যোগিনী-স্বয়ম্ভু-সন্তোষ-শ্মশান-কল্প-নাম, (১৮) গুহা-অভিষেক-প্ৰক্ৰিয়া, (১৯) অমৰ-সিদ্ধি-বৃদ্ধি, আৰু (২০) অমৃত-সিদ্ধি।

এই সঙ্কলনত থকা ৩ সংখ্যক গীতটো বিকুৰ্বা বা বিকপপাদৰ ৰচনা। তেওঁ লিখিছে—

এক সে শুভিনী দুই ঘৰে সাক্ষঅ।

চীঅণ বাকলঅ বাকণি বাক্ষঅ।।

এজনী শুঙীয়ে দুটা ঘৰক একেলগ কৰে। চিকণ বাকলিৰে তেওঁ মদ বনায়।

১৬। বীণাপাদ : ডঃ সুকুমাৰ সেনৰ মতে তিব্বতী ঐতিহ্যত বীণাপাদ বিকুৰ্বাপাদৰ বংশধৰ আছিল। তেওঁ *ৰক্তডাকিনীনিষ্পন্নক্ৰম* গ্ৰন্থৰ লিখক। এই সঙ্কলনৰ ১৭সংখ্যক চৰ্যাপীত এওঁ লিখিছে। গীতটোৰ আৰম্ভণি এনে ধৰণৰ—

সুজ লাউ সসি লাগেলি তান্তী।

অনহা দাণ্ডী বাকিকিয়ত অৱধুতী।।

সূৰ্য লাউকোটোৰা, চন্দ্ৰ ইয়াৰ তাঁৰ।। অনাহত দণ্ডীৰে (ৰেপনিৰে)
অৱধুতীয়ে কথা কোৱায় (বাকীকৃতঃ)।

১৭। ভাদেপাদ : তিববতী ঐতিহ্যত তেওঁক আচাৰ্য বোলা হৈছে বুলি
ডঃ সেনে কৈছে। তেওঁ লিখা *সহজানন্দদৃষ্টিগীতিকা* নামৰ পুথিখনৰ তিব্বতী
অনুবাদ পোৱা যায়। তেওঁক জালন্ধৰিপাদ আৰু কৃষ্ণপাদ দুয়োৰে শিষ্য বুলি ধৰা
হয়। তাৰনাথৰ মতে তেওঁ জালন্ধৰিপাদ আৰু কৃষ্ণপাদ দুয়োৰে শিষ্য আছিল বুলি
ডঃ সেনে উল্লেখ কৰিছে। সঙ্কলনত থকা ৩৫ সংখ্যক চৰ্যাটো তেওঁৰ ৰচনা। তেওঁ
লিখিছে—

এত কাল হাউঁ আছিলোঁ স্বমোহেঁ।

এৱেঁ মই বুঝিল সদগুৰু ৰোহেঁ।।

ইমান দিনে মই আত্মমোহত আছিলোঁ। এতিয়া সদগুৰুৰ শিক্ষাত মই বুজি
পালোঁ।

১৮। ভূসুকুপাদ :- তাৰনাথৰ বুৰঞ্জীত ভূসুকুৰ বিষয়ে বিশেষ তথ্য পোৱা
নাযায়। মুঠ ৮টা চৰ্যাৰ ভিতৰত দুটাত ভূসুকুৰ লগতে ৰাউতু শব্দও ভণিতা হিচাপে
পোৱা যায়; যেনে—

ৰাউতু ভণই কট ভূসুকু ভণই কট সঅলা অইস সহাব (৪১ চৰ্যা)।

ভূসুকু ভণই কট ৰাউতু ভণই কট সঅলা এহ সহাব (৪৩ চৰ্যা)।

ডঃ সুকুমাৰ সেনে ভূসুকুৰ ক্ষত্ৰিয় জাতিৰ লোক বুলি ভাবে। তেওঁৰ মতে
ৰাউতু শব্দ ৰাউত্ত শব্দৰ অপভ্রংশ। প্ৰাকৃত ভাষাত ৰাউত্ত মানে ৰাজপুত্ৰ বা ক্ষত্ৰিয়
লোক। তেওঁৰ গীতত হৰিণ চিকাৰ, জলদস্যু হৈ কৰা আক্ৰমণ আদিৰ পৰা ক্ষত্ৰিয়
লোকৰ পৰিচয় পোৱা যায় বুলিও ডঃ সেনে ভাবে। কলকাতাৰ এচিয়াটিক চ'চাইটিৰ
পুথিভঁৰালত ভূসুকুৰে লিখা *চতুৰাভৰণ* নামৰ পুথিৰ হাতেলিখা প্ৰতিলিপি এটা
সংৰক্ষিত হৈছে। এই পুথিৰ নকল কৰা সময় ১২৯৫ খ্ৰিষ্টাব্দ। গতিকে ভূসুকুৰ
সময়ৰ অন্তিম সীমা ইয়াতকৈ আগৰ হ'ব লাগিব।

তেওঁ সঙ্কলনটোত থকা ৫০ টা গীতৰ ভিতৰত ৮টা গীত লিখিছে।
গীতকেইটাৰ ক্ৰমিক সংখ্যা যথাক্ৰমে ৬, ২১, ২৩, ২৭, ৩০, ৪১, ৪৩, আৰু ৪৯।

ইহঁতৰ ভিতৰত ৬ আৰু ২৩ সংখ্যক গীতত হৰিণ চিকাৰ ৰূপকৰ বৰ্ণনা পোৱা যায়। ৪৯ সংখ্যক গীতত জলদস্যুতা, ২১ সংখ্যকত নিগনিৰ ৰূপক, ৩০ সংখ্যকত চন্দ্ৰ উদয়ৰ ৰূপক, আৰু ২৭ সংখ্যক গীতত ফুলা পদুমৰ বৰ্ণনাৰে মহাসুখৰ বৰ্ণনা দিয়া হৈছে আৰু ৪৩ সংখ্যক গীতত পোনপটীয়াকৈ সমৰস বা নিৰ্বাণৰ অনুভূতি প্ৰকাশ কৰা হৈছে।

ভুসুকুৰে সমৰস বা নিৰ্বাণৰ যি ধাৰণা দিছে তাক উপলব্ধি কৰোঁচোন—
 সহজ মহাতৰু ফৰিঅ এ তেলোএ।
 খসমসভাৰে বে বাণত মুকা কোএ।।
 জিম জলে পাণিআ টলিআ ডেউ ন জাঅ।
 তিম মণ-ৰঅণ সমৰসে গঅণ সমাঅ।।
 জাসু নাহি অগ্না তাসু পৰেলা কাহি।
 আই অনুঅণা বে জাম মৰণ ভৱ নাহি।।
 ভুসুকু ভণই কট ৰাউতু ভণই কট সঅলা এই সভাৱ।
 জাই ন আৱই বে ণ তহি ভাবাভাৱ।।

সহজ নামৰ ডাঙৰ গছজোপা ত্ৰৈলোক্যত বিস্তাৰিত হৈ আছে। এই শূন্য স্বভাৱত কোন বৰ্ণমুক্ত হৈ থাকে? যেনেকৈ পানীত পানী পৰিলে (পানীৰ) পাৰ্থক্য নাজানি, তেনেকৈ মনৰত্ন (বোধিচিহ্ন) গগনত সোমায়। (ফলত পাৰ্থক্য নাথাকে)। যাৰ আপোন নাই, তাৰ পৰ কেনেকৈ থাকিব? যাৰ আদিয়েই অনুৎপন্ন, অৰ্থাৎ উৎপন্ন হোৱা নাই, তাৰ জন্ম, মৃত্যু আৰু স্থিতি নাথাকে। ভুসুকুৰে সনিৰ্বন্ধে কৈছে, ৰাউতুৱে সনিৰ্বন্ধে কৈছে, সকলোৰে (সংসাৰৰে) এই স্বভাৱ। কোনো নাযায়, কোনো নাহে। ইয়াত জন্মও নাই, মৃত্যুও নাই।

১৯। মহীধৰপাদ : মহীধৰপাদৰ গীতৰ ভণিতাত মহিশা নামহে পোৱা যায়। টীকাকাৰ মুনিদত্তই মহীধৰপাদক সিদ্ধাচাৰ্য মহীধৰ বুলিছে। তাৰনাথৰ বুৰঞ্জীত মহীধৰৰ নাম পোৱা নাযায়। তেওঁ ১৬সংখ্যক গীতটো ৰচনা কৰিছে—

তিনিওঁ পাটে লাগেলি বে অণহ কসণ ঘণ গাজ্জই।

তা সুনি মাৰ ভয়ঙ্কৰ বে বিসঅ মণ্ডল সঅল ডাজ্জই।।

তিনি পাটন্ত লাগিল অৰে, হিংসক আৰু দৃঢ় আনাহতে গাজ্জিছে। অৰে, তাকে শুনি ভয়ঙ্কৰ মাৰে তেওঁৰ অনুচৰমণ্ডলৰ সৈতে ব্ৰন্ত হৈছে।

নিৰ্বাণৰ বাবে মতলীয়া বোধিচিন্তক মতলীয়া হাতীৰ সৈতে তুলনা কৰি গীতটো ৰচনা কৰা হৈছে।

২০। লুইপাদ :- তাৰনাথৰ মতে লুইপাদ আদি সিদ্ধাচাৰ্য। অসঙ্গ আৰু বসুবন্ধুৰ সময়ত আচাৰ্য পৰমাশ্ব, মহাচাৰ্য লুইপাদ, সিদ্ধ শবৰীপাদ আৰু অন্যান্য সিদ্ধসকল আছিল। উৰিষ্যাৰ ৰজা নাগেশক লুইপাদে বজ্জয়ান পন্থাত দীক্ষিত কৰায় আৰু তেওঁক ৰাজ্য ত্যাগ কৰায়। তেওঁক মৎস্যস্ৰাদ আৰু মৎস্যোদৰ বুলিও কয়। মৎস্যস্ৰাদৰ অৰ্থ যিজনে মাছৰ পেটু খায়, আৰু মৎস্যোদৰৰ অৰ্থ যাৰ পেটত মাছ থাকে। ৰজা নাগেশ দীক্ষিত হোৱাৰ পাচত সিদ্ধি লাভ কৰি দাৰিকপাদ নাম লয়। গুৰু লুইপাদৰ অভিষেক সম্বন্ধে দাৰিকপাদে গ্ৰন্থ ৰচনা কৰিছে।

পগ্-চম্-জোন্-জনৰ মতে তেওঁ এজন মাছমৰীয়া লোক আছিল আৰু উড়িয়ানৰ ৰজাৰ কেৰাণী আছিল। তেওঁৰ নাম আছিল সামন্তশুভ। শবৰীপাদে তেওঁক তান্ত্ৰিক দীক্ষা দিয়ে। অধ্যাপক হাৰ্মান্ যাকোবিৰ মতে উড়িয়ান অসমৰ এখন ঠাই। ডঃ সুকুমাৰ সেনে লুইপাদৰ সময় দশম শতিকা বুলি ভাবে। ডঃ বিনয়তোষ ভট্টাচাৰ্যই তেওঁৰ সময় ৬৬৯ খ্ৰিঃ বুলি বিভিন্ন তথ্যৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি সিদ্ধান্ত কৰিছে।

তলত দিয়া গ্ৰন্থবোৰ লুইপাদে ৰচনা কৰিছিল— ১। ভগৱদ্-অভিসময়, ২। বজ্জ-সঙ্ঘ-সাধন, ৩। তত্ত্ব-স্বভাৱ-দোহাকোষ-গীতিকা-দৃষ্টি-নাম, ৪। লুইপাদ-গীতিকা আৰু ৫। বুদ্ধোদয়। বুদ্ধোদয় গ্ৰন্থখন টঙ্কিপাদে পুনৰীক্ষণ কৰিছে।

এই সম্বলনটোত লুইপাদৰ ৰচনা ১সংখ্যৰ আৰু ২৯সংখ্যক গীত। এই গীত দুটাত লুইপাদে দুবাৰকৈ ভণিতা দিছে— এবাৰ ধ্ৰুৱপদত আৰু এবাৰ শেষত। ১সংখ্যক গীতত কায়-চৰ্যা আৰু যোগীপীঠ চৰ্যা একেলগে বৰ্ণাইছে। ২৯সংখ্যক চৰ্যাত দুৰ্লক্ষ্য বিজ্ঞান চৰ্চা কৰিছে।

ভাৱ ন হোই অভাৱ ন হোই।

অইস সংবোহেঁ কো পতিয়াই।।

লুই ভণই বট দুলক্খ ৰিণাণা।

তিঅ ধাএ ৰিলসই উছ ণা ঠাণা।।

জাহেৰ বান চিহ্ন কৰ ণ জাণী।

সো কইসে আগম ৰেএ ৰখাণী।।

কাহেৰে কিয় ভণি মই দিৰি পিৰিচ্ছা

উদক চান্দ জিম সাচ ন মিছা।।

লুই ভণই ভাইৰ কীষ।

জা লই অছম তাহেৰ উহ ৭ দিস।।

সৃষ্টি হোৱা নাই, সংহাৰ হোৱা নাই— এই বোধ দিলে কোনো পতিয়াব? লুয়ে কয়— বিজ্ঞান (বিশেষ জ্ঞান) দুৰ্লক্ষ্য (উপলব্ধিৰ বাহিৰ)। তিনিটা ধাতুৰে (কায়, বাক আৰু চিন্তেৰে) বিলাস কৰে কাৰণে (সংসাৰৰ) ধৰ্ম বা গুণ নেদেখে। যাৰ বৰ্ণ, চিহ্ন আৰু ৰূপ জানিব নোৱাৰি, তাক আগম আৰু বেদে কেনেকৈ বখানিব? কাক কি বুলি (সৃষ্টিৰ বিষয়ে) মই উত্তৰ দিম? পানীত দেখা চন্দ্ৰটোৰ দৰে (সৃষ্টিখন) সঁচা নে মিছা? লুয়ে কয়— ভাবিব লগীয়া কি আছে? যাকে লৈ আছোঁ তাৰে স্বৰূপ নাজানোঁ।

২১। শবৰপাদ : শবৰপাদ শবৰ জাতিৰ লোক। তেওঁ দৃগৰাকী পত্নী লোকী আৰু গুণীৰে সৈতে নাগার্জুনৰ শিষ্যত্ব গ্ৰহণ কৰে। সাধনাৰ পাচত তিনিও সিদ্ধত্ব লাভ কৰে। তেওঁ কুৰুকুল্লাৰ সাধনা প্ৰচলন কৰে। তেওঁ বজ্ৰযোগিনী সম্প্ৰদায়ো প্ৰতিষ্ঠা কৰে।

গুৰুৰ পৰা শিষ্যলৈ জ্ঞান বিনিময় হোৱা পৰম্পৰা শবৰপাদ আৰু নাগার্জুনৰ দিনৰ পৰা সিদ্ধ শবৰপাদৰ দিনলৈকে চলি আছিল। ইয়াৰ আগতে কোনোবাই অনুত্তৰ গুহ্য-মন্ত্ৰ বিনিময় কৰিছিল বুলি জনা নাযায়। ডঃ বিনয়তোষ ভট্টাচাৰ্যৰ মতে শবৰপাদৰ সময় ৬৫৭ খ্ৰিঃ।

তেওঁ ৰচনা কৰা গ্ৰন্থবোৰৰ নাম— (১) শ্ৰীসহজ-উপদেশ-স্বাধিষ্ঠান-নাম, (২) শ্ৰী-সহজ-সম্বৰ-স্বাধিষ্ঠান-নাম, (৩) ৰক্ত-বজ্ৰ-যোগিনী-সাধন, (৪) শ্ৰী-বজ্ৰ-যোগিনী-সাধন, (৫) দোহাকোষ-নাম-মহামুদ্ৰা-উপদেশ, (৬) সাৰ্ধ-পঞ্চ-গাথা, আৰু (৭) শ্ৰী-শবৰ-স্তোত্ৰ-ৰত্ন। এই সম্বলনৰ ২৮ আৰু ৫০ সংখ্যক গীত দুটা তেওঁৰ ৰচনা।

২৮ সংখ্যক চৰ্যাত শবৰপাদে লিখিছে —উষ্ণা উষ্ণা পাবত তঁহি ৰসই সবৰী বালী। মোৰঙ্গি পীছ পৰহিণ সবৰী গিৰত গুঞ্জৰী মালী।।

ওখ ওখ পৰ্বতত শবৰী গাভৰুৱে বাস কৰে। ম'ৰাৰ পাৰি পিছা গাভৰুৱে ডিঙিত লাটুমণিৰ মালা পিন্ধে।

২২। শান্তিপাদ : শান্তিপাদ জাতিত ব্ৰাহ্মণ আছিল। ধৰ্মপালৰ দিনত

তেওঁ বিক্ৰমশীল বিশ্ববিদ্যালয়ৰ পূব দ্বাৰৰ দ্বাৰ-পণ্ডিত আছিল। সিংহলৰ ৰজা ঘৰিনে নিমন্ত্ৰণ কৰি তেওঁক সিংহললৈ নিয়ে। তিনি বছৰৰ পাচত বিক্ৰমশীললৈ ঘূৰি আহোঁতে বাটতে কোটালিক দীক্ষা দি আহে। ১২ বছৰৰ পাচত সিদ্ধি লাভ কৰি তেওঁক সন্মান জনাবলৈ আহোঁতে শান্তিপাদে অনুভৱ কৰিলে যে তেওঁৰ জীৱনত একো নহল। তেওঁ একান্ত মনে ১২বছৰ সাধনা কৰি মহামুদ্ৰা সিদ্ধি লাভ কৰে।

শান্তিপাদে নৰোপাদক তান্ত্ৰিক দীক্ষা দিছিল। সিদ্ধি লাভ কৰাৰ পাচত নৰোপাদ বিক্ৰমশীল বিশ্ববিদ্যালয়ৰ উত্তৰ দুৱাৰৰ দ্বাৰ-পণ্ডিত হয়। শান্তিপাদক কলি যুগৰ সৰ্বজ্ঞ বোলা হয়।

এদিন নৰোপাদে মৰা হাতী এটাৰ দেহত প্ৰবেশ কৰি মৰিশালিলৈ গৈ আছিল। শান্তিপাদক দেখি হাতীৰূপী নৰোপাদে কলে যোগী হলে কিবা লক্ষণ দেখুৱাব লাগে। শান্তিপাদৰ দৰে পণ্ডিত যোগীয়ে কিবা লক্ষণ নেদেখুৱাব নে? শান্তিপাদে কলে নৰোপাদৰ দৰে যোগীয়ে অনুমতি দিলে তেওঁ কিবা এটা লক্ষণ দেখুৱাব পাৰে।

সেই সময়ত কিছুমান লোকে কলহত পানী লৈ আহি আছিল। শান্তিপাদে কলহৰ পানীবোৰ সোণ কৰি পেলালে। ভিক্ষু আৰু ব্ৰাহ্মণৰ মাজত তেওঁ সোণবোৰ বিলাই দিলে।

শান্তিপাদে ১১খন গ্ৰন্থ ৰচনা কৰিছিল (১) সুখ-দুঃখ-দ্বয়-পৰিত্যাগ-দৃষ্টি, (২) মধ্যমক-অলঙ্কাৰ-বুদ্ধ্য-মধ্যমক-প্ৰতিপদা-সিদ্ধি-নাম, (৩) প্ৰজ্ঞা-পাৰমিতা-উপদেশ, (৪) প্ৰজ্ঞা-পাৰমিতা-ভাৱনা-উপদেশ, (৫) বিজ্ঞপ্তি-মাত্ৰতা-সিদ্ধি, (৬) অন্তৰ ব্যাপ্তি, (৭) আৰ্য-অষ্ট-সাহিত্যিকা-প্ৰজ্ঞা-পাৰমিতা-পঞ্জিকা-সাৰোত্তমা-নাম, (৮) সূত্ৰ-সমুচ্চয়-ভাষ্য-ৰত্নালোক-অলঙ্কাৰ-নাম, (৯) মধ্যমক-অলঙ্কাৰ-উপদেশ, (১০) ছন্দ-ৰত্নাকৰ, আৰু (১১) ৰত্ন-তাৰা-সাধনা।

শান্তিপাদে ৰচনা কৰা দুটা গীত সঙ্কলনটোত পোৱা যায়। ১৫ আৰু ২৬ সংখ্যক গীত দুটা তেওঁ ৰচনা কৰা। ২৬ সংখ্যক গীতত শান্তিপাদে কৈছে—

তুলা ধুনি ধুনি আঁসু ৰে আঁসু।

আঁসু ধুনি ধুনি গিৰবৰ সেগু।।

তুলা ধুনি ধুনি (পোৱা যায়) আঁহ অৰে আঁহ। আঁহ ধুনি ধুনি (পোৱা যায়) অবয়বহীন শেষ (শূন্য)।

২৩। **সৰহপাদ :-** পৰ্ণ-চন্দ্ৰ-জ্ঞান-জনৰ মতে সৰহপাদ বা ৰাছলভদ্র পূব ভাৰতৰ ৰাজ্ঞী নগৰত এজন ব্ৰাহ্মণ আৰু এজনী ডাকিনীৰ সংযোগত জন্ম হৈছিল। তেওঁ ব্ৰাহ্মণ্য আৰু বৌদ্ধ দুয়ো বিধ ধৰ্মাচাৰতে পাৰ্গত আছিল। প্ৰাচ্যৰ ৰজা চন্দনপালৰ ৰাজত্ব কালত তেওঁ জীৱিত আছিল। ৰজা ৰত্নফল আৰু তেওঁৰ ব্ৰাহ্মণ মন্ত্ৰীৰ আগত অদ্ভুত কাৰ্য দেখুৱাই ৰজা আৰু মন্ত্ৰীক বৌদ্ধ ধৰ্মত দীক্ষিত কৰে। পৰৱৰ্তী কালত তেওঁ নালন্দা মঠৰ প্ৰধান পুৰোহিত হয়গৈ। উৰিষ্যা ভ্ৰমণ কালত তেওঁ মহাৰাষ্ট্ৰলৈ যায়। এগৰাকী যোগিনীয়ে ব্যাধৰ জীয়ৰীৰ ৰূপ ধৰি তেওঁৰ সৈতে যোগত মিলিত হয়। ইয়াৰ ফলত তেওঁ মহামুদ্রা সিদ্ধি লাভ কৰি সিদ্ধ সৰহ নামেৰে খ্যাত হয়। তেওঁক সৰহভদ্র আৰু ৰাছলভদ্র বুলিও জনা যায়। তেওঁ ধৰ্মকীৰ্ত্তিৰ (৬০০-৫০) সমসাময়িক আছিল। ডঃ বিনয়তোষ ভট্টাচাৰ্য্যৰ মতে তেওঁৰ সময় ৬৩৩ খ্ৰিঃ। সৰহপাদে নাগাৰ্জুনক অনুত্তৰ গুহ্য-মন্ত্ৰ শিকাইছিল। তন্ত্ৰবাদ প্ৰচাৰ কৰাত আৰু জনপ্ৰিয় কৰাত সৰহপাদে সক্ৰিয় অংশ গ্ৰহণ কৰিছিল। তেওঁ ধৰ্মকীৰ্ত্তিৰ (৬০০-৫০) সমসাময়িক লোক আছিল আৰু তেওঁৰ জীৱনকালতে বা অলপ পাচতে তন্ত্ৰবাদে আত্মপ্ৰকাশ কৰিছিল।

সৰহপাদে তলত দিয়া ২৪খন গ্ৰন্থ ৰচনা কৰিছিল- (১) ৰজ্জযোগিনী সাধন, (২) বুদ্ধকপাল-তন্ত্ৰস্য পঞ্জিকা জ্ঞানৱতী-নাম, (৩) বুদ্ধকপাল - সাধন, (৪) সৰ্ব-ভূত-বলি-বিধি, (৫) বুদ্ধকপাল-নাম-মণ্ডল-বিধি-ক্ৰম-প্ৰদ্যোতন, (৬) দোহা-কোষ-গীতি, (৭) দোহা- কোষ-নাম-চৰ্যাগীতি, (৮) দোহা-কোষ-উপদেশ-গীতি, (৯) কথস্য-দোহা, (১০) কথস্য-দোহা টিপ্পণ, (১১) কায় -কোষ-অমৃত-ৰজ্জ-গীতা, (১২) ৰাক্-কোষ-কচিৰ-স্বৰ-গীতা, (১৩) চিত্ত-কোষ-অজ-ৰজ্জ-গীতা, (১৪) কাৰ্য্য-ৰাক্-চিত্তমনসিকাৰ, (১৫) তন্ত্ৰ-উপদেশ-শিখৰ-দোহা-গীতি, (১৬) সৰহ-গীতিকা, (১৭) মহামুদ্রা-উপদেশ ৰজ্জ-গুহ্য-গীতি, (১৮) ত্ৰৈলোক্য-বংশকৰ লোকেশ্বৰ সাধন (ওড়িয়ান-উত্তৰ-ক্ৰম), (১৯) অধিষ্ঠান-মহাকাল-সাধন, (২০) মহাকাল-স্তোত্ৰ, (২১) সৰহপ্ৰভু-মৈত্ৰীপাদ-প্ৰশ্নোত্তৰ (মহাব্ৰাহ্মণ-সৰহপাদপ্ৰভু-মৈত্ৰীপাদ-মহামুদ্রা-প্ৰশ্নোত্তৰ), (২২) দ্বাদশ উপদেশ-গাথা, (২৩) স্বাধিষ্ঠান - ক্ৰম, (২৪) ভাৱনা-দৃষ্টি-চৰ্যা-ফল-দোহাকোষ- গীতিকা।

এই সঙ্কলনটোত ২২, ৩২, ৩৮, আৰু ৩৯ সংখ্যক গীতকেইটা তেওঁৰ ৰচনা। ২২ সংখ্যক গীতটোত সৰহপাদে জন্ম আৰু মৃত্যুৰ অভেদতাৰ কথা কৈছে—
অপণে ৰচি ৰচি ভৱ-নিৰাণ।

মিছেঁ লোঅ বন্ধাবএ অপণা॥
 অস্ত্বে ন জাণহুঁ অচিন্ত জেই।
 জাম মৰণ ভৱ কইসণ হোই।।
 জইসা জাম মৰণ ৰি তইসো।
 জীৱন্তে মঅলৈঁ গাহি ৰিশেসো।।
 জা এথু জাম মৰণে ৰি সন্ধা।
 সো কৰউ ৰস-ৰসাণেৰে কঙ্কা।।
 জে সচৰাচৰ তিঅস ভমন্তি।
 তে অজৰামৰ কিম্পি ন হোন্তি।।
 জামে কাম কি কামে জাম।
 সবহ ভগতি অচিন্ত সো ধাম।।

নিজে জীৱন (জীয়াই থকা কাৰ্য) আৰু মৰণৰ (নিৰ্বাণৰ) কল্পনা কৰি (ৰচনা কৰি) মিছাকৈ মানুহে নিজকে (ধৰ্মৰ ডোলেৰে) বন্ধায়।। আমি অচিন্ত্য যোগীয়েই নাজানো জন্ম, মৰণ আৰু জীৱন কেনেকৈ হয়।। জন্ম যেনেকুৱা, মৰণো তেনেকুৱা। জীৱন্ত আৰু মৃতৰ মাজত বিশেষ (পাৰ্থক্য) নাই।। যিজনে ইয়াত (ইহ জগতত) জন্ম আৰু মৰণলৈও ভয় কৰে, তেওঁ ৰসযুক্ত ৰসায়নৰ (খাই শৰীৰ সবল কৰাৰ) হেঁপাহ কৰক (আমি কিন্তু নকৰোঁ)। যিসকলে সচৰাচৰ ত্ৰিদশাৰ (উৎপত্তি, স্থিতি আৰু বিনাশত) ভ্ৰমি ফুৰে, তেওঁলোক কেতিয়াও অজৰ-অমৰ নহয়।। জন্মৰ ফলত (ধৰ্মৰ) কৰ্ম (কৰিব লগীয়া) হয়, নে (ধৰ্মৰ) কৰ্মৰ ফলত জন্ম লাভ হয়? সবহে কয়— সেই ধৰ্ম অচিন্তনীয়।।

অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীত চৰ্মাগীতবোৰৰ স্থান অনন্য এই কাৰণেই যে ভাষাৰ দৃষ্টিত ইয়াত অসমীয়া শব্দসম্ভাৰ (যেনে- গোহালী, কুঠাৰ, উজা, তই, মই, আদি), কাৰক বিভক্তি (যেনে— কৰ্তাকাৰকত - এ, কৰ্মকাৰকত - ক, নিমিত্তকাৰকত - লই, সম্বন্ধপদত - ৰ আৰু অধিকৰণ কাৰকত -ত) পোৱা যায়। অসমীয়া ভাষাৰ ক্ৰিয়া-বিভক্তিবোৰৰ কেইবাটাও ইয়াত পোৱা যায়; যেনে বৰ্তমান কালৰ হুঁ - হুঁ; স্বৰূপ ভূতৰ - ল, - লি, - লে; ভৱিষ্যৎ কালৰ - ব, বি, - বে; অনুজ্ঞাৰ বিভক্তি - হ; বৰ্তমান কৃদন্ত - অস্ত্বে; অসমাপিকাৰ বিভক্তি - ই। সেইদৰে সড়ি পৰ, ৰাতি পোহা আদি জতুৱা ঠাঁচ এই গীতবোৰত পোৱা। এইবোৰ অবিসম্বাদীভাৱে অসমীয়া ব্যাকৰণৰ বিভক্তি আৰু ৰূপ।

ইয়াৰ উপৰিও দশম-শতিকাৰ পৰা দ্বাদশ শতিকাৰ ভিতৰত ৰচিত অসমীয়া সাহিত্যৰ সুন্দৰ প্ৰতিনিধি হিচাপে চৰ্যাগীতবোৰলৈ আঙুলিয়াব পাৰি।

— বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকা

সহায়ক গ্ৰন্থ :

১। Dr. Satish Chandra Chatterjee and Dr. Dharendra Mohan Datta *An Introduction to Indian Philosophy*, 1954

২। Debiprasad Chattopadhyaya (ed.), *Tārantha's History of Buddhism in India*, 1990.

৩। ডঃ প্ৰণৱজ্যোতি ডেকা (সম্পা), *চৰ্যাগীত আৰু বৌদ্ধতত্ত্ব*, ২০০১

৪। মণীন্দ্ৰমোহন বসু (সম্পা), *চৰ্যাপদ*, ১৯৬৬

৫। Prabodh Chandra Bagchi and Santi Bhikshu Sastri (ed.), *Caryāgītikoṣa of Buddhist Siddhas*, 1956

৬। Dr. Berroytosh Bhattacharyya, *An Introduction to Buddhist Esoterism*, 1989.

৭। Nil Patan Sen (ed.), *Caryāgītikoṣa*, 1977

৮। ডঃ সুকুমাৰ সেন (সম্পা), *চৰ্যাগীতি -পদাবলী*, ১৯৬৬

৯। ডঃ পৰীক্ষিত হাজৰিকা (সম্পা), *চৰ্যাপদ*, ১৯৮৭

গোপীচন্দ্ৰৰ গান

(খ)

‘গোপীচন্দ্ৰৰ গান’ৰ পৰম্পৰা অসম, উত্তৰ বঙ্গ, পূৰ্ব বঙ্গ, পশ্চিম বঙ্গ, উৰিষ্যা, বিহাৰ, নেপাল, ত্ৰিপুৰা, মহাৰাষ্ট্ৰ, ৰাজস্থান, অযোধ্যা, পঞ্জাব, মধ্যভাৰত আদি অঞ্চলত কথিত বা লিখিত ৰূপত প্ৰচলিত। এই কাৰণেই বোধকাৰী ধৰ্মানন্দ মহাভাৰতীয়ে “বঙ্গৰ ব্ৰাহ্মণ ৰাজবংশ” নামৰ গ্ৰন্থত লিখিবলৈ বাধ্য হৈছে : “ভাৰতবৰ্ষৰ প্ৰায় সৰ্বত্ৰ প্ৰাচীন কাল হইতে গোপীচান্দ নামক এক ৰাজ্যৰ বিবৰণ লিখিত ও কথিত হইতেছে।” মালিতা বা কাহিনী গীত, সাধুকথা আদি ঐতিহাসিক আৰু ভৌগোলিক কাৰণবশতঃ বিশেষকৈ সাংস্কৃতিক প্ৰসাৰণৰ মাধ্যমেৰে ইয়াৰ উৎস ভূমিৰ পৰা বিভিন্ন অঞ্চললৈ বিস্তাৰিত হোৱা দেখা যায়। আকৌ কোনো কোনো পণ্ডিতৰ মতে একে ধৰণৰ কাহিনী গীত বা সাধুকথা স্থানীয়ভাৱেই উৎপত্তি হ’ব পাৰে। এই মতবাদ সমৰ্থনকাৰীসকলে (Anthropological theory) সাধুকথা বা কাহিনী গীতৰ একাধিক-জন্মৰ (Polygenesis) ধাৰণাৰ ওপৰত গুৰুত্ব আৰোপ কৰে। অন্য হাতে ঐতিহাসিক-ভৌগোলিক-তত্ত্ব সমৰ্থনকাৰী অৰ্থাৎ প্ৰসাৰবাদীসকলে সাধুকথা বা কাহিনী গীতৰ একক-জন্মৰ (Monogenesis) ধাৰণাৰ পোষকতা কৰে।

গোপীচন্দ্ৰৰ গানৰ উদ্ভৱ, বিকাশ আৰু প্ৰসাৰ আদি প্ৰক্ৰিয়া প্ৰসাৰবাদী আৰু নৃতত্ত্ববাদী উভয় মতবাদৰ ফালৰ পৰা আলোচনা কৰিব পাৰি। প্ৰসাৰবাদী মতবাদ-তত্ত্ব অনুসৰি গোপীচন্দ্ৰৰ গান বা গীতৰ উৎসভূমি (Oikotype, i.e., “at home”)^১ স্বৰূপে ৰংপুৰলৈ আঙুলিয়াব পাৰি ; যিহেতু বৰ্তমান পশ্চিম বঙ্গৰ অন্তৰ্গত আৰু তাহানি প্ৰাগজ্যোতিষ-কামৰূপৰ ভৌগোলিক সীমাৰেখাৰ ভিতৰুৱা ৰংপুৰ জিলাৰ লোকসমাজত মুখ্য পৰম্পৰাত প্ৰচলিত গোপীচন্দ্ৰৰ লগত জড়িত সুদীৰ্ঘ কাহিনী গীত এটি সংগ্ৰহ কৰিছিল চাৰ জৰ্জ আব্ৰাহাম গ্ৰিমাৰ্চন চাহাবে আৰু খ্ৰিঃ ১৮৭৮ ত এই গীতটি ‘মাণিকচন্দ্ৰ ৰাজ্যৰ গান’ নামেৰে ‘জাৰ্ণেল অব এচিয়াটিক

চোচাইটি'ত পোনতে ছপা কৰে।° ১৯২৪ ত বিশ্বেশ্বৰ ভট্টাচাৰ্য, ড° দীনেশ চন্দ্ৰ সেন আৰু বসন্তৰঞ্জন ৰায় বিদ্বদ্ভগ্নভৰ সম্পাদনাত কলিকতা বিশ্ববিদ্যালয়ৰ পৰা 'মাণিক চন্দ্ৰ ৰাজাৰ গান'ৰ বিষয়বস্তুৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি দুটা খণ্ডত 'গোপীচন্দ্ৰৰ গান' প্ৰকাশিত হৈছিল। অৱশ্যে 'গোপীচন্দ্ৰৰ গান'ত গ্ৰিয়ার্চন-এ সংগ্ৰহ কৰা পাঠটিৰ বাহিৰেও আৰু তিনিটা পাঠ সংযোজন কৰা দেখা যায়। ইয়াৰে এটা পাঠ সংগ্ৰহ কৰিছিল বিশ্বেশ্বৰ ভট্টাচাৰ্যই ৰংপুৰ জিলাৰ নীলফামাৰি অঞ্চলৰ কৃষকসকলৰ পৰা। গ্ৰিয়ার্চন-এ সংগ্ৰহ কৰা 'মাণিকচন্দ্ৰ ৰাজাৰ গান'ৰ লগত ভট্টাচাৰ্যই সংগ্ৰহ কৰা পাঠটিৰ সাদৃশ্য স্পষ্ট। এই ফালৰ পৰা দ্বিতীয় পাঠটিক প্ৰথম পাঠৰ প্ৰতিৰূপ আখ্যা দিব পাৰি। 'ময়নামতীৰ গান'ৰ বিষয়বস্তুক উপজীব্য কৰি ভবানী দাস নামৰ এগৰাকী কবিয়ে "গোপীচাঁদেৰ পাঁচালী" কাব্য প্ৰণয়ন কৰে। মৌখিক পৰম্পৰাই কেনেদৰে লিখিত পৰম্পৰাত প্ৰৱেশ কৰে তাৰ আভাস এই কাব্যখনৰ পৰা পাব পাৰি। উল্লিখিত চাৰিটা পাঠৰ আধাৰত আব্দুল কৰিম চাহাবে ভবানী দাস-বিৰচিত 'গোপীচাঁদেৰ পাঁচালী'ৰ পাঠটি সম্পাদন কৰে। 'মাণিক চন্দ্ৰ ৰাজাৰ গান' বা 'ময়নামতীৰ গান'ৰ মৌখিক ৰূপৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি সুকুৰ মামুদে 'গোপীচন্দ্ৰৰ সন্ম্যাস' আৰু দুৰ্জ্জভ মল্লিকে 'গোপীচন্দ্ৰ-গীত' ৰচনা কৰে।° ত্ৰিপুৰাৰ পৰাও গোপীচন্দ্ৰৰ গীতৰ এটি মৌখিক পাঠ উদ্ধাৰ কৰা হৈছে। মুঠতে "হাতে ঢুকি পোৱা-নোপোৱা এনে আটাইখিনি গীতৰ পৰা বসন্ত ৰঞ্জন ৰায় আৰু দীনেশচন্দ্ৰ সেনৰ সম্পাদিত বৰ্তমান 'গোপীচন্দ্ৰৰ গান' প্ৰকাশিত হৈছে।"°

ওপৰৰ আলোচনাৰ পৰা সহজে অনুমান কৰিব পাৰি যে, "গোপীচন্দ্ৰৰ গান"ৰ প্ৰমেয় মূলপাঠ (hypothetical Ur-type)-গ্ৰিয়ার্চন চাহাবে ৰংপুৰ জিলাৰ পৰা সংগ্ৰহ কৰা পাঠটি। এই পাঠটিৰ পৰাই বিভিন্ন অঞ্চললৈ 'গোপীচন্দ্ৰৰ গান' জনপ্ৰব্ৰজন আৰু সাংস্কৃতিক প্ৰসাৰণ হেতু প্ৰসাৰিত হৈছে। ত্ৰিপুৰা, বঙ্গদেশৰ বিভিন্ন অঞ্চল, উৰিষ্যা, বিহাৰ আদি পৰ্যন্ত সম্প্ৰসাৰিত 'ময়নামতীৰ গান' বা 'গোপীচন্দ্ৰৰ গান'ৰ মূল স্বৰূপে আঙুলিয়াব পাৰি গ্ৰিয়ার্চন চাহাবে সংগ্ৰহ কৰা পাঠটিলৈ আৰু এই ফালৰ পৰা এই পাঠটিক 'গোপীচন্দ্ৰৰ গান'ৰ মূল গীত বা পাঠ অৰ্থাৎ Oikotype আখ্যা দিয়া যুক্তিসঙ্গত।

ৰংপুৰ জিলা সৌ সিদিনালৈকে কামৰূপ-কমতা ৰাজ্যৰ ভিতৰুৱা আছিল। কামৰূপৰ কমতা ৰাজ্য বঙ্গদেশৰ অন্তৰ্ভুক্ত হোৱাৰ বহু বছৰ পিচত লিখিত ৰূপ লাভ কৰিবলৈ সক্ষম হোৱা 'গোপীচন্দ্ৰৰ গান'ৰ ভাষাত কামৰূপ-কমতাৰ ভাষাৰ

স্পষ্ট নিদৰ্শন পোৱা যায়। এই অনুমানৰ সপক্ষে ডিম্বেশ্বৰ নেওগৰ এটি মন্তব্য উপস্থাপন কৰিব পাৰি : “বিশেষৰূপে মৌখিক গীতৰ ওপৰত সংগৃহীত হ’লেও আৰু সেই মৌখিক গীতবোৰো পুৰণি কামৰূপৰ কমতা ৰাজ্য বঙ্গদেশৰ অন্তৰ্ভুক্ত হোৱাৰ ভালেমান কালৰ পাছত লিখিত অৱস্থালৈ আনিলেও, এইবোৰ যে পুৰণি কামৰূপ-কমতাৰ পুৰণি অসমীয়া ভাষা সেই কথা নাজানি বা পাহৰি অসমীয়া ভাষাৰ গভীৰ অন্তৰ্ভাৱে সংগ্ৰাহক বা সম্পাদকসকলে ইয়াক বঙলা গীত বুলি ব্যৱহাৰ কৰিলেও এই গীতৰ পাঠত, ঘাইকৈ পাঠান্তৰত, অসমীয়া শব্দাবলী আৰু অসমীয়া ব্যাকৰণৰ চিন-চাব একেবাৰে মাৰি পেলাব পৰা নাই নিশ্চয়।”^{১০} গতিকে ‘গোপীচন্দ্রৰ গান’ নামৰ কাহিনী গীতটি পুৰণি অসমৰ পৰা ত্ৰিপুৰা, পূৰ্ববঙ্গ, পশ্চিমবঙ্গ, বিহাৰ, উৰিষ্যা আদি বিভিন্ন অঞ্চললৈ সম্প্ৰসাৰিত হৈছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি।

নৃতাত্ত্বিক মতবাদ অনুসৰিও ‘গোপীচন্দ্রৰ গান’ৰ উৎসস্থল নিৰ্ণয় কৰিবলৈ প্ৰয়াস কৰিব পাৰি। এই তত্ত্ব বা মতবাদৰ মতে স্বপ্ন, ক্ৰিয়া-কাণ্ড, আকাশী বা স্বৰ্গীয় ব্যাপাৰ, আদিম প্ৰবৃত্তি, দমিত শিশুসুলভ উদ্ভট কল্পনা আদিক কেন্দ্ৰ কৰি বিভিন্ন অঞ্চলৰ বিভিন্ন গোষ্ঠীৰ মাজত স্বতন্ত্ৰভাৱে একে বা একেধৰণৰ কাহিনী বা কাহিনী গীতৰ সৃষ্টি হয়। গতিকে আমাৰ আলোচ্য গোপীচন্দ্রৰ গানো উল্লিখিত কাৰণসমূহ বা ইয়াৰ এটা কাৰণৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি অসম, ত্ৰিপুৰা, বঙ্গদেশ, বিহাৰ, উৰিষ্যা আদিত উদ্ভৱ হোৱা স্বাভাৱিক। ইয়াৰ প্ৰত্যক্ষ প্ৰমাণ স্বৰূপে অসমত প্ৰচলিত ‘গোপীচন্দ্রৰ গীত’লৈ আঙুলিয়াব পাৰি। ‘জনা-গাভৰুৰ গীত’ত গোপীচন্দ্র বা ‘গোপীচান’ কোঁৱৰৰ বীৰত্বৰ কাহিনী পোৱা যায়।^{১১} এই গীতটিৰ উৎস স্থল সম্ভৱ নগাওঁ ; যিহেতু গোপীচান বা গোপীচন্দ্রই নগাৱঁত বাস কৰিছিল। ড° লীলা গগৈৰ মতে টিয়ক-কাকজান অঞ্চলৰ কোনো কোনো মৰীয়া মানুহে গীতটো জানিছিল।^{১২} শিৱসাগৰৰ তাঁতীসকলৰ মাজতো এই গীতটোৱে এসময়ত জনপ্ৰিয়তা লাভ কৰিছিল।^{১৩}

ড° প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামীৰ মতে মধ্যযুগীয় বঙলা ৰাজকুমাৰ গোপীচন্দ্রৰ লগত ‘জনা গাভৰুৰ গীত’ত উল্লেখ থকা গোপীচান বা গোপীচন্দ্রৰ সম্পৰ্ক নাই ; আন কি বঙলা ৰাজকুমাৰ গোপীচন্দ্রৰ দৰে অসমীয়া কোঁৱৰ গোপীচন্দ্রই নাথ বা যোগীধৰ্মত দীক্ষিত হোৱা নাই। তেওঁৰ ভাষাত : “Gopichan of this ballad (i.e., Janā gābharur-gīt) does not have anything to do with the

medieval Bengali Prince Gopichand and his conversion to the Natha-cult”^{১০}

দ্বিতীয়তে, বঙলা- পৰম্পৰাত প্ৰচলিত ‘গোপীচন্দ্ৰৰ গান’ নাথ-সাহিত্যৰ শ্ৰেণীভুক্ত। ইয়াৰ বিপৰীতে নাথ-সাহিত্যৰ লগত ‘জনা-গাভৰুৰ গীত’ৰ কোনো সম্পৰ্ক নাই।

তৃতীয়তে, বঙলা ‘গোপীচন্দ্ৰৰ গান’ মঙ্গলাচৰণৰ সৈতে আৰম্ভ হোৱা নাই; আৰম্ভ হৈছে ‘মাণিকচন্দ্ৰ ৰাজাৰ জন্ম বৃত্তান্ত’ৰে আৰু মৌখিক পৰম্পৰাত প্ৰচলিত এই গীতটিৰ চাৰি শৰীয়া পদসংখ্যা ২৩৫০। ইয়াৰ বিপৰীতে ‘জনা-গাভৰুৰ গীত’ৰ আৰম্ভণি সূচিত হৈছে সৰস্বতীৰ বন্দনাৰে আৰু গীতটি ৩৩৪ টা চাৰি শৰীয়া পদৰ সমষ্টি।

চতুৰ্থতে, বঙলা পৰম্পৰাত ‘গোপীচন্দ্ৰৰ গান’ পালা ৰূপতহে অভিনীত হয়। সেইবাবে ‘ময়নামতী’, ‘গোপীচন্দ্ৰ’ আদি ‘পালা গান’ ৰূপে পশ্চিম অসম, বঙ্গদেশ আদিত জনাজাত। নামনি অসম তথা বঙ্গদেশত ‘গান’ পদে গীত আৰু অভিনয় উভয় অৰ্থ সূচায় (যেনে : মাৰে গান, ভাৰী বা ভাও-গান, কুশান-গান ইত্যাদি)। ইয়াৰ বিপৰীতে, ‘জনা-গাভৰুৰ গীত’ বাদ্যযন্ত্ৰসহ গায়কে গাইছিল (ballads are sung to the accompaniment of musical instruments) যদিও অভিনয় কৰা (পালাৰূপত) হোৱা নাছিল।

‘জনা-গাভৰুৰ-গীত’ৰ কথাবস্ত্তৰ ৰূপৰেখা তলত দিয়া হ’ল :

জনা-গাভৰু ‘গৰুচৰ’ (গৰুবাঙ্গ) ৰাজ্যৰ ৰাণী অৰ্থাৎ তেওঁ ‘তিৰী হৈ ৰাজপাট খায়’। ৰাণী-গৰাকীয়ে দেশে দেশে ‘পঢ়না’ পঠিয়াইছে— বোলে যিজন ডেকাই তেওঁৰ তিনিটা পৰীক্ষাত উঠিব পাৰিব তেৱেঁই জনা গাভৰুক বিয়া কৰাব পাৰিব, অন্যথাই তেওঁ কাৰাবৰণ কৰিব লাগিব। ইতিমধ্যে জনা-গাভৰুক লাভ কৰিবলৈ ন শ কৌৱৰে চেপ্টা কৰি পৰীক্ষাত উঠিব নোৱাৰি কাৰাৰুদ্ধ হ’বলৈ বাধ্য হ’ল। কামপুৰ চহৰৰ কলিধন নটে গাভৰুক পত্নীৰূপে লাভ কৰিবলৈ সাজি-কাছি গৈ এখন নদীৰ পাৰত উপস্থিত হ’ল। নাৱৰীয়া এজনক কলিধন নটে অনুৰোধ কৰিলে নদীখন পাৰ কৰি দিবলৈ। নাৱৰীয়াজনে জনাক বিয়া কৰাবলৈ গ’লে কি ভীষণ পৰিণতিৰ সন্মুখীন হ’ব লাগিব সেই বিষয়ে কলিধনক সাৱধান কৰি অহা বাটে তেওঁক ঘূৰি যাবলৈ নিৰ্দেশ দিলে। অৱশেষত অনুৰোধ এৰাব নোৱাৰি নাৱৰীয়াজনে কলিধন নটক নদীখন পাৰ কৰি দিলে। জনাৰ ছুৰীৰ প্ৰহাৰত কলিধনে

নাক-কাণ হেৰুৱাই ওঁঠ-মোঠ চেলেকি ফেঁচাটোৰ দৰে ঘৰলৈ ঘূৰি আহিবলৈ বাধ্য হ'ল। জনাৰ ওপৰত পোটক তুলিবৰ বাবে বুদ্ধি-পাণ্ডি কলিধন গ'ল তেওঁৰ সখিয়েক নগাৱঁৰ গোপীচন্দ্রৰ ওচৰলৈ আৰু পাকে-প্ৰকাৰে জনাক ধৰি আনিবলৈ তেওঁ গোপীচন্দ্রক উচটনি দিলে। প্ৰথমতে নও পোণ মাদৈৰ স্বামী গোপীচন্দ্রই হেঁহো-নেহোঁ কৰিছিল; যদিও অৱশেষত, বিশেষকৈ কাৰাৰুদ্ধ নশ কোঁৱৰক উদ্ধাৰ কৰিবৰ বাবে আৰু লগতে ৰূপহী জনাক পত্নীৰূপে লাভ কৰাৰ আশাৰে তেওঁ কলিধনৰ লগত গৰুচৰ ৰাজ্যলৈ যাবলৈ উদ্যত হ'ল :

“ন শ কোঁৱৰক / জনাই বন্দী কৰে / দাঢ়িয়ে ঠাই ঘৰ সাৰে/
কোন ধৰমীয়ে / ধৰম কৰি যাব / সিহঁতক উধাৰিব পাৰে//
অলপতে আছদি / নেথাবা সখিদেউ / তোমাৰ মান বলৱান নাই/
তুমি নুধাৰিলে / ন শ কোঁৱৰক / আৰু উধাৰোঁতা নাই//
তোমাৰ বলে হব / মোৰে বুদ্ধি হব / জনাৰ নগৰে যাম/
তোমাৰ জুৰীয়া / জনা-গাভৰুক / গৈ হাতে হাতে পাম//
যেতিয়া তেনেকৈ / কৰলৈ ধৰিলে / গোপীচনে মেলিলে মন/
জনা গাভৰুক / আনিব নোৱাইলে / মিছা ঘৰে বাৰী ধন//
মিছাতে আনিবলৈ / ন পোণ মাদৈ / মিছাতে কটালোঁ কাল/
জনা গাভৰুক / আনিব নোৱাইলে / একোতে নেলাগে ভাল//”

মন থিৰ কৰি কোঁৱৰ গ'ল বাঁৰী মাকৰ ওচৰলৈ অনুমতি বিচাৰি। পুতেকৰ কথা শুনি মাকে ক'লে যে জনা শাখিনী, কুলক্ষণী, গজমুৰী, খাইমুৰী, আপচু, এঙাৰ-কলীয়া, ওফন্দা-গলীয়া, কেঁকোৰা-চুলীয়া, উজলা-দাঁতিনী, আগটী; গতিকে জনাক পাটীৰ তিৰী কৰি আনিব নালাগে, লাগিলে সুগটী, শুবনী চাই আৰু কেইজনীমান গাভৰু আনি দিব : “আমাৰ বোপাই তই, নেলাগে আনিব, ভালে চাই আনি দিম মই।” মাকৰ ‘চিৰি মুখ’ লৈ চাই কোঁৱৰে কলে যে তেওঁ নাৰী আশাত জনাৰ ওচৰলৈ যাবলৈ ওলোৱা নাই, ওলাইছে “তিৰী হৈ ৰাজপাট” খোৱা জনাক মৰ্দন কৰি বন্দী নও শ কোঁৱৰক উদ্ধাৰ কৰিবলৈ :

“মাকক মাতি গ'ল / গোপীচন কোঁৱৰে / মাকৰ চিৰিমুখ চাই/
জনা গাভৰুক / আনিব লগীয়া / মোৰো গৰজকে নাই//
তিৰী-কেলেছৰা / মোক নেদেখিবা / তিৰীৰ আশাত ওলোৱা নাই/
ন শ কোঁৱৰক / তাই বন্দী কৰে // তিৰী হৈ ৰাজপাট খায়//”

বিধবা মাকে গোপীচন্দ্ৰক অনেক বুজালে ; কিন্তু নিজৰ সিদ্ধান্তত তেওঁ অচল-অটল হৈ থাকিল। ঘৈণীয়েকহঁতে গোপীচন্দ্ৰক নানা অনুনয়-বিনয় কৰিলে জনা-গাভৰুৰ ৰাজ্যলৈ নাযাবলৈ। ডাঙৰজনী ঘৈণীয়েকক গোপীচন্দ্ৰই ক'লে যে যদি তেওঁ ছয় মাহৰ ভিতৰত ঘূৰি নাহে তেন্তে ঘৈণীয়েকসকলে মিলি তেওঁৰ অস্ত্যেষ্টিক্ৰিয়া সম্পাদন কৰিব। লগতে জনা গাভৰুৰ চুলি কাটিবলৈও তেওঁ প্ৰতিজ্ঞা কৰিলে। মহেন্দ্ৰ ক্ষণত কলিধন নটৰ লগত গোপীচন্দ্ৰই যাত্ৰা কৰি সেই নদীখনৰ পাৰত উপস্থিত হ'লগৈ। নদীখন পাৰ কৰি দিবৰ বাবে গোপীচন্দ্ৰ আৰু কলিধনে নাৱৰীয়াক অনুৰোধ কৰিলে; কিন্তু যুৱক দুজনৰ ভবিষ্যত পৰিণতিৰ কথা চিন্তা কৰি নাৱৰীয়াই তেওঁলোকক নদীখন পাৰ কৰি নিদিলে। অৱশেষত কলিধনৰ দিহা মতে গোপীচন্দ্ৰই বাসুদেৱৰ থান, কেঁচাই খাতী গোসানী আটাইকে সেৱা জনাই তেওঁলোক দুয়ো জাঁপ মাৰি নদীখন পাৰ হ'ল। গোপীচন্দ্ৰৰ কাণফটা চৰ আৰু লাঠি খাই জনাৰ লিগিৰীয়ে দৌৰি গৈ ৰাণীক খবৰ দিলে। জনা গাভৰুৱে এশ মোণ দোৱা-ভজা চিৰা, এশ মোণ দৈ, এশ মোন বেনাৰচী চেনিৰে প্ৰস্তুত জলপানটি তিনি গৰাহকৈ খাই, ভৰিত সোণৰ জোতা, কাণত গজমুকুতাৰ লং আৰু মূৰত বালিচৰি জং পিন্ধি ৰণুৱা সাজি গোপীচন্দ্ৰক খেদি গৈ ক'লে :

“ক'ৰ পৰা আহিছে / বঙাল কছাৰী / যাবি কোন দেশে তই/

আও মৰণেৰে / মৰিব খুজিছ / বাপেৰৰ বুঢ়ীমাৰ মই//”^{৩০}

ছল বুজি কলিধনেও ক'লে যে গাভৰুৱে যাক বঙাল-কছাৰী আখ্যা দিছে তেওঁ আচলতে জনাৰ স্বামীহে আৰু জনাৰ মাকৰ স্বামী হ'ল কলিধন :

“ছলে পাই মাতি গ'ল / নটৰ কলিধনে / বঙাল বুলিছ তই/

সেইজন যেনিবা / তোমাৰেই চোৱামী / মাৰৰ চোৱামী মই//”^{৩১}

খঙত অগ্নিশৰ্মাই ঘৰলৈ ঘূৰি যাব খোজোঁতেই কলিধনৰ ইঙ্গিতমতে গোপীচন্দ্ৰই দৌৰি গৈ জনাৰ হাতত ধৰি পাচলৈ টান মৰাৰ লগে তেওঁ লুটি খাই মাটিত বাগৰি পৰিল। মাটিৰ পৰা উঠি জনাই ‘গোপীচন্দ্ৰক চাউদাঙৰ জাত’ বুলি এটি এটিকে তিনিটা পৰীক্ষা কৰিলে। চন্দ্ৰ, সুৰুয, পগলা-পাৰ্বতী, কেঁচাইখাতী গোঁসানী, শিৱদেৱতা, বাসুদেৱ থান, গুৱাহাটীত থকা বাঁৰী মাক আদিক সেৱা জনাই আৰু বলি-বিধানৰে পূজা-পাতল কৰিবলৈ মানস কৰি জনাৰ তিনিওটা পৰীক্ষাত গোপীচন্দ্ৰ উঠিল। গাভৰুৱে আৰু এটা পৰীক্ষা দিবলৈ গোপীচন্দ্ৰক নিৰ্দেশ দিলে :

“মোৰ ঘৰৰ পূবে / তাল-শাল বিৰিখে / আছে বাৰ পুৰা জিনি/
 সেই গছৰ শিপা / ওপৰে ধৰিছে / হাত নো তিনিশ তিনি//
 তলে কিমান আছে / কব মই নোৱাৰোঁ / মই খানি চোৱা নাই/
 সেই গছৰ তলে / যাব নোৱাৰি / বাঘে মানুহ ধৰি খায়//
 সেই গছৰ গুৰিতে / বান্ধি ৰাখিছে / বাৰে কুৰি বলিয়া হাতী/
 এটা ডালেৰে / কত ঠাই জুৰিছে / ধৰিছে কত ঠাই ছাটি//
 সেই জুপি তাল / শাল বিৰিখৰ / আগত জাপ মাৰি ধৰি/
 গাৰ নো জোৰেৰে / উঘালি পেলাবা / এটা আঁজোৰ মাৰি//
 এই পৰীক্ষাত / উঠিব পাৰিলে / তোমাক মই ভজি যাম/
 যদিহে পৰীক্ষাত / উঠিব নোৱাৰা / মই নো বন্দী কৰি থম/””৭

কথা শুনি গোপীচন্দ্রৰ ভয় লাগিল। কলিধনৰ উদ্দীপনাপূৰ্ণ উক্তিৰ অনুপ্রাণিত হৈ দেৱ-দেৱীক সেৱা-সংকাৰ কৰি কোঁৱৰে জাপ মাৰি গছজোপাৰ আগত ধৰি আঁজোৰ মৰাৰ লগে লগে তাল-শাল উঘালি পৰিল। ইয়াৰ লগে লগে জনাৰ দেহত যেন জীউ নোহোৱা হৈ মাটিত লুটি খাই পৰিল। অৱশেষত জনাই তামোল এখন কোঁৱৰক দি স্বামী বৰণ কৰি দোষৰ বাবে ক্ষমা খুজিলে; কিন্তু কোঁৱৰে তামোল গ্ৰহণ নকৰি পোনে পোনে কাৰাগাৰলৈ গৈ বন্দী কোঁৱৰসকলক মুক্তি দিলে। ইয়াৰ পিচতহে কোঁৱৰে তামোল গ্ৰহণ কৰে। জনাৰ হাতত ধৰি গোপীচন্দ্রই প্ৰৱেশ কৰিলে গৰুচৰ নগৰত। জনাৰ ভ্ৰাতৃ অভিমনৰ লগত গোপীচন্দ্রৰ সাত দিন-সাত ৰাতি যুদ্ধ চলিল। পাৰ্বতী দেৱীৰ কৃপাত কোঁৱৰে অভিমনক বধ কৰে। জনাৰ পিতাককো গোপীচন্দ্রই যুদ্ধত পৰাস্ত কৰে। পৰাজিত জনাৰ পিতাকে গাভৰুক কোঁৱৰৰ লগত বিয়া দিবলৈ প্ৰতিজ্ঞা কৰে। পত্নী জনাৰ সৈতে গোপীচন্দ্র নিজ ৰাজ্যলৈ ঘূৰি আহে। বাঁৰী মাকে পুতেক-বোৱাৰীয়েক উভয়কে সাদৰি ল'লে। প্ৰতিজ্ঞা পূৰণৰ বাবে গোপীচন্দ্রই জনাৰ চাৰি আঙুলি চুলি কাটে :

“বচনক ৰাখিলোঁ / মোৰ ঐ গাভৰু / বচনক ৰাখিলোঁ মোৰ/
 ইমান দীঘল চুলি / কেলেই লাগিছে / চাৰি আঙুল কাটিলোঁ তোৰ/””৮

সৰস্বতীৰ (‘আই সৰেচতী’) প্ৰাৰ্থনা আৰু সভাসদৰ ওচৰত ৰচয়িতাৰ ক্ষমা-প্ৰাৰ্থনাৰে (apologia) কাহিনী ভাগৰ অন্ত পৰিছে।”

গোপীচন্দ্রৰ গানত বৰ্ণিত কাহিনী ভাগৰ ৰূপৰেখা তলত দিয়া হ'ল :

ৰজা মাণিকচন্দ্ৰই বুঢ়া বয়সত আৰু পাঁচজনী গাভৰু বিয়া কৰায়। বুঢ়ী ৰাণী ময়নামতীক তেওঁ ৰাজকাৰেঙৰ পৰা খেদি দিয়ে। বাধ্য হৈ ময়নামতীয়ে ফেৰুসা নামৰ স্থানত বাস কৰে। তেওঁ গোৰক্ষনাথৰ ওচৰত দীক্ষা গ্ৰহণ কৰে। মাণিকচন্দ্ৰৰ মৃত্যুৰ পিচত ময়নামতীৰ গৰ্ভত গোপীচন্দ্ৰৰ জন্ম হয়। শিশুপুত্ৰ গোপীচন্দ্ৰক সিংহাসনত বহুৱাই ময়নামতীয়ে ৰাজকাৰ্য চলাবলৈ ধৰে। যৌৱন কালত ভৰি দিয়াৰ লগে লগে গোপীচন্দ্ৰই অদুনা আৰু পদুনাক বিয়া কৰায় আৰু ৰাজ্য শাসনৰ ভাৰ তেওঁ গ্ৰহণ কৰে। এইদৰে কিছু দিন যোৱাৰ পিচত ময়নামতীয়ে পুত্ৰ গোপীচন্দ্ৰক নিৰ্দেশ দিলে বাৰ বছৰৰ বাবে সন্ন্যাস গ্ৰহণ কৰিবলৈ; অন্যথা তেওঁৰ মৃত্যু সুনিশ্চিত। অনিচ্ছা সত্ত্বেও সন্ন্যাস গ্ৰহণ কৰিবলৈ গোপীচন্দ্ৰ বাধ্য হ'ল। 'গুৰুভাই হাড়ি সিদ্ধাক' ময়নামতীয়ে সন্ন্যাসীপুত্ৰ গোপীচন্দ্ৰৰ সঙ্গী কৰি দিলে। হীৰা নামৰ এজনী গণিকাৰ গৃহত বাৰ বছৰৰ বাবে গোপীচন্দ্ৰক বন্ধক থৈ হাড়ি সিদ্ধা আঁতৰি গ'ল। হীৰাই কামনাৰ জাল তৰিলে গোপীচন্দ্ৰক বন্দী কৰিবলৈ; কিন্তু তেওঁ সন্ন্যাসৰ পৰীক্ষাত উত্তীৰ্ণ হ'ল। বাৰ বছৰ পাৰ হৈ গ'ল। তেওঁ ৰাজধানীলৈ ঘূৰি আহি ৰাজপাটত উঠিল।

জনা গাভৰুৰ গীত আৰু গোপীচন্দ্ৰৰ গানত বৰ্ণিত কাহিনী দুটাৰ ৰূপৰেখাৰ আভাস ওপৰত দিয়া হৈছে। ইয়াৰ পৰা দেখা যায় যে কাহিনী দুটাৰ কথাস্বৰোৰৰ মাজত মিল নাই। অৱশ্যে দুয়োটা কাহিনীতে বিধবা মাকৰ দ্বাৰা কাহিনীৰ নায়ক গোপীচন বা গোপীচন্দ্ৰ লালিত-পালিত হৈছিল। 'মণিকোঁৱৰৰ গীত' আৰু 'ফুলকোঁৱৰৰ গীত'ত উল্লেখ থকা ময়নাৱতী আৰু কাঁচনমালা (কাঁচনকুঁৱৰী) নাম দুটাৰ জৰিয়তে অৱশ্যে 'গোপীচন্দ্ৰৰ গান'ৰ দূৰ সম্পৰ্ক দেখুৱাব পাৰি; যিহেতু এই কাহিনী গীতটিতো ময়নামতী আৰু কাঞ্চসোণাৰ নামোক্তেখ পোৱা যায়।^{১৮}

ইতিমধ্যে উল্লেখ কৰা হৈছে যে গোপীচন্দ্ৰৰ পৰম্পৰা পঞ্জাব, মহাৰাষ্ট্ৰ, গুজৰাট আদিতো প্ৰচলিত। দ্বিতীয়তে নামধৰ্ম বা যোগীধৰ্মৰ লগত এই কাহিনী ভাগ বিশেষভাৱে সম্পৃক্ত। নামধৰ্মৰ সম্প্ৰসাৰণৰ লগে লগে গোপীচন্দ্ৰৰ পৰম্পৰাও ৰাজস্থান, পঞ্জাব আদিৰ ফালৰ পৰা জন-প্ৰব্ৰজনৰ মাধ্যমেৰে বিহাৰ, বঙ্গদেশ, উৰিষ্যা, অসম আদিলৈ সম্প্ৰসাৰিত হোৱা স্বাভাৱিক। এই প্ৰসঙ্গত ডাক-পৰম্পৰা, সৰ্পদেৱী বিষহৰী-মনসা পৰম্পৰা আদিৰ লগত গোপীচন্দ্ৰৰ-গান-পৰম্পৰাৰ সাদৃশ্য লক্ষ্য কৰিব পাৰি।

চৰ্যাগীতিৰ ক্ষেত্ৰত যিদৰে বিহাৰ, নেপাল, বঙ্গ, উৰিষ্যা, অসমৰ মাজত এজমালিত্ব (commonness) লক্ষ্য কৰা যায়, তদ্রূপ ডাক-পৰম্পৰা, মনসা-পৰম্পৰা আৰু গোপীচন্দ্রৰ পৰম্পৰাৰ সন্দৰ্ভতো এই এজমালিত্ব ৰক্ষিত হোৱা স্বাভাৱিক। এই দৃষ্টিভঙ্গীৰ ফালৰ পৰা গোপীচন্দ্রৰ পৰম্পৰাক অসমীয়া, বঙলা, বিহাৰী আদিৰ উমৈহতীয়া পৰম্পৰা আখ্যা দিব পাৰি। এই অঞ্চলসমূহৰ মাজত এক উমৈহতীয়া সাহিত্যিক ভাষাৰো প্ৰচলন আছিল। চৰ্যাগীতি, বৰগীত আদিৰ ভাষাই এই উমৈহতীয়া সাহিত্যিক ভাষাৰ নিদৰ্শন। গতিকে গোপীচন্দ্রৰ গানৰ ভাষা এই উমৈহতীয়া ভাষাৰ প্ৰকৃষ্ট ধাৰক আৰু বাহক।

গোপীচন্দ্রৰ গানত নাথধৰ্ম বা যোগীসম্প্ৰদায়ৰ ধৰ্মীয় তত্ত্ব আৰু দাৰ্শনিক সিদ্ধান্তৰ ওপৰত গুৰুত্ব দিয়া হৈছে, অৰ্থাৎ নাথধৰ্মৰ লগত এই গীতটো জড়িত। এই ফালৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে নাথধৰ্মৰ উৎস স্থলতেই গোপীচন্দ্রৰ গানৰো উদ্ভৱ আৰু বিকাশ হ'ব পাৰে। পিচে নাথ ধৰ্মৰ উৎস স্থল ৰূপে কোনো এখন বিশেষ স্থানলৈ আঙুলিয়াব নোৱাৰি; যিহেতু অতি প্ৰাচীন কালৰ পৰাই নাথ ধৰ্ম বা যোগ ধৰ্ম পৰম্পৰাগতভাৱে ভাৰতবৰ্ষত চলি আহিছে। শৈৱ ধৰ্মৰ লগত নাথ ধৰ্মৰ সাদৃশ্য স্পষ্ট। কোনো কোনো পণ্ডিতৰ মতে শৈৱ ধৰ্মৰ পৰা নাথ ধৰ্মৰ উদ্ভৱ হৈছে আৰু শৈৱ ধৰ্মৰ প্ৰসাৰৰ লগে লগে নাথ ধৰ্মও কামৰূপ-অসম পৰ্যন্ত প্ৰসাৰিত হৈছিল। নাথধৰ্মই যে পুৰণি অসমত গা কৰি উঠিছিল তাৰ প্ৰমাণ পোৱা যায় চৰ্যাগীতি, মাধৱ কন্দলীৰ দ্বাৰা অনুদিত ৰামায়ণ আদিৰ পৰা। অবিভক্ত গোৱালপাৰা জিলাৰ যোগীঘোপা নামৰ প্ৰসিদ্ধ স্থানখনে আজিও যোগ ধৰ্মৰ পৰম্পৰা বহন কৰি আহিছে। নাথ ধৰ্ম বা যোগ ধৰ্মৰ প্ৰসাৰৰ লগে লগে গোপীচন্দ্রৰ গানৰ পৰম্পৰাও কামৰূপ-অসম পৰ্যন্ত সম্প্ৰসাৰিত হ'ব পাৰে।

অন্য হাতে গোপীচন্দ্রৰ গান ধৰ্মনিৰপেক্ষ মৌখিক মালিতা ৰূপে মুখ পৰম্পৰাৰে প্ৰচলিত হৈ থকাৰ অনুকূলেও মত পোষণ কৰিব পাৰি আৰু পৰৱৰ্তী কালত এই মালিতাটি নাথ ধৰ্ম বা যোগ ধৰ্মৰ লগত সম্পৃক্ত হ'ব পাৰে। সম্ভৱ ধৰ্মনিৰপেক্ষ মৌখিক মালিতাটিৰ এটি ৰূপ কামৰূপ-অসমত পৰম্পৰাগতভাৱে চলি আছিল আৰু এই গীতটিৰেই এটা পাঠ 'জনা গাভৰুৰ গীত'ৰ ৰূপত (form) ৰূপেশ্বৰ দত্তই ১৯২৫ চনত প্ৰকাশ কৰিছিল। 'জনা গাভৰুৰ গীত'ত প্ৰকৃতাৰ্থত গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা গ্ৰহণ কৰিছে গোপীচন্দ্র বা গোপীচনে, জনা গাভৰুৰ ভূমিকা তাৎপৰ্যপূৰ্ণ বুলিব নোৱাৰি। এই ফালৰ পৰা গীতটিৰ নাম

‘গোপীচন্দৰ গীত’হে হোৱা উচিত। আন যি কি নহওক ‘জনা গাভৰুৰ গীত’ যে ‘গোপীচন্দৰ গান’ পৰম্পৰাৰ পৰোক্ষ বাহক তাত সন্দেহ নাই। ধৰ্ম নিৰপেক্ষ ‘গোপীচন্দৰ গান’ৰ দৰে ‘জনা গাভৰুৰ গীত’ৰ লগত নাথ ধৰ্ম বা যোগ ধৰ্মৰ কোনো সম্পৰ্ক নাই।

গোপীচন্দৰ গানৰ ৰূপ (form), গঠনৰীতি (structure), বিষয়বস্তু আদিৰ ফালৰ পৰা ইয়াক মালিতা বা কাহিনীগীত অৰ্থাৎ বেলেড (ballad) আখ্যা দিব পাৰি। বেলেডৰ দৰে গোপীচন্দৰ গীততো এটা কাহিনী বৰ্ণিত হৈছে। বেলেড ৰচিত হয় পদ্য বা পদত। তেনেদৰে আমাৰ আলোচ্য গীতটিও ৰচিত হৈছে পদ্য বা পদত। বেলেডৰ নিচিনাকৈ গোপীচন্দৰ গান গীত বা পদৰ শৈলীত গোৱা হয়। বেলেড লোকগীত, গতিকে লোকগীতৰ বিষয়বস্তু, শৈলী আদিৰ স্থিতি বেলেডত লক্ষ্য কৰা যায়। তেনেদৰে গোপীচন্দৰ গানতো লোকগীতৰ বৈশিষ্ট্য ৰক্ষিত হৈছে। বেলেডৰ দৰে গোপীচন্দৰ গানো নৈৰ্ব্যক্তিক, সংলাপধৰ্মী আৰু গতি (action) প্ৰধান। বেলেডৰ নিচিনাকৈ গোপীচন্দৰ গানতো দিহা, অৰ্থহীন বাক্যৰ প্ৰয়োগ, সৰল পুনৰুক্তি, ক্ৰমপুঞ্জিত পুনৰুক্তি আদিৰ স্থিতি লক্ষ্য কৰিব পাৰি। অবশ্যে গোপীচন্দৰ গীতৰ ছপা ৰূপত দিহাৰ প্ৰয়োগ দেখা নাযায়, যদিও এই গীতটি গোৱাৰ সময়ত দিহাৰ সহায়তহে গোৱা হৈছিল।

গোপীচন্দৰ গান বা জনা গাভৰুৰ গীতক ইয়াৰ বিষয়বস্তুৰ লক্ষণৰ ফালৰ পৰা ঐতিহাসিক বেলেড বুলিবলৈ ইচ্ছা হয়। ঐতিহাসিক বেলেডত প্ৰাধান্য লাভ কৰে ঐতিহাসিক ঘটনা বা কাহিনীয়ে। গোপীচন্দ, জনা গাভৰু আদি ঐতিহাসিক চৰিত্ৰ যেন লাগে। বঙলা পণ্ডিতসকলৰ মতে গোপীচন্দ বঙ্গদেশৰ (‘বঙ্গালাৰ’) ৰজা আছিল।” মহাৰাষ্ট্ৰীয় পৰম্পৰা অনুসৰি গোপীচন্দ ত্ৰৈলোক্যচন্দ আৰু মৈনৱতীৰ পুত্ৰ, তেওঁ গোড়-বঙ্গৰ ৰাজধানী কাঞ্চন নগৰত ৰাজত্ব কৰিছিল। হিন্দীভাষী লোকসকলৰ মাজত প্ৰচলিত পৰম্পৰা অনুসৰি ভৰ্তৃহৰিৰ ভগ্নী মৈনৱতীৰ পুত্ৰ গোপীচন্দ আৰু কন্যা চন্দ্ৰৱলীৰ বিবাহ সম্পাদিত হৈছিল সিংহল দ্বীপৰ ৰাজা উগ্ৰসেনৰ লগত। তিব্বতীয় গ্ৰন্থত থকা উল্লেখৰ পৰা জানিব পাৰি যে গোপীচন্দৰ পূৰ্ব-পুৰুষৰ নাম আছিল সিংহচন্দ। সিংহচন্দ আছিল ঐতিহাসিক ব্যক্তি; গতিকে গোপীচন্দও ঐতিহাসিক ব্যক্তি হোৱাই স্বাভাৱিক। কৈলাসচন্দ সিংহৰ দ্বাৰা ৰচিত ‘ৰাজমালা’ গ্ৰন্থৰ মতে গোপীচাঁদ বা গোপীচন্দ ত্ৰিপুৰাৰ ৰজা আছিল। উৰিষ্যা

প্ৰচলিত পৰম্পৰা অনুসৰি ঐতিহাসিক ব্যক্তি সুৰচন্দ্রৰ বংশধৰ আছিল গোপীচন্দ্র।^{১০} দ্বিতীয়তে, ‘গোপীচন্দ্রৰ গান’ত উল্লেখ থকা ‘এক ঠেঙ্গিয়াৰ দেশ’, ‘কাণ-ফাড়াৰ দেশ’, ‘মশা ৰাজ্যৰ দেশ’, ‘মেচপাড়াৰ দেশ’ আদিয়েও ‘গোপীচন্দ্রৰ গান’ৰ ঐতিহাসিক পৰিৱেশ ৰচনা কৰিছে। ‘বদনবৰফুকনৰ গীত’তো ‘এঠেঙ্গিয়াদেশ’, ‘ঘোঁৰামুৱা দেশ’ আদিৰ বৰ্ণনা পোৱা যায়।^{১১} বৰাহ-মিহিৰৰ ‘বৃহৎ সংহিতা’, ‘স্কন্দ-পুৰাণ’, ‘মৎস্য-পুৰাণ’, ‘ৰামায়ণ’, হিউয়েন-চিয়াঙৰ ভ্ৰমণ কাহিনী, মেগাস্থেনিজৰ ভ্ৰমণ কাহিনী আদিত ‘অশ্বমুখ’ আৰু ‘একপাদ’ এই দুই অঞ্চলৰ উল্লেখ থাকিলেও আৰু “এই দেশবিলাকৰ স্থান নিৰ্ণয় কৰিবলৈ যত্ন কৰিলেও, মগধ, কোশল, কামৰূপ আদি ঠাইৰ দৰে এইবিলাকৰ কোনো সুনিৰ্ধাৰিত ভৌগোলিক অস্তিত্ব নাই আৰু দেখে দেখকৈয়ে মানুহৰ ঘোঁৰাৰ মুখ নাইবা একেখন মাত্ৰ ভৰি হোৱা সম্ভৱ নহয়। হয়তো কেতবিলাক লোকৰ ঘোঁৰাৰ মুখৰ লগত সাদৃশ্য থকা কাৰণেই এওঁলোকক ঘোঁৰামুৱা বোলা হৈছিল; সেইদৰে হাতে হাতে দীঘল টোকোন লৈ ফুৰা মানুহকো এঠেঙ্গীয়া বোলা হ’ল নে কি? মুঠৰ ওপৰত, এনে দেশ আৰু লোক বৰ্তি আছিল পৰম্পৰাগত জনবিশ্বাসৰ জীপ লৈ।”^{১২} ‘মশা ৰাজ্যৰ দেশ’, ‘মেচপাড়াৰ দেশ’ আদিয়ে অসমৰ পশ্চিম অঞ্চলত বাস কৰি অহা মঙ্গোল গোষ্ঠীয়ে বড়ো-কছাৰীসকলৰ সৰু-সুৰা ৰাজ্যক বুজাব পাৰে। মেচপাৰা আঞ্চলিক আৰু সেই নামেৰেই চলি আছে। গোপীচন্দ্রৰ গানৰেই আন এটি ৰূপ জনা গাভৰুৰ গীততো বুৰঞ্জীৰ আঁচোৰ দেখা যায়। কামপুৰ চহৰ, লুইত, নগাওঁ, গুৱাহাটী, মানৰ ৰণ, চিংফৌৰ ৰণ, তাম্ৰেশ্বৰী মন্দিৰ, কেঁচাইখাতী গোঁসানী আদিৰ উল্লেখ এই গীতটিক ঐতিহাসিক বেলেডৰ ওচৰ চপাইছে। তেনেদৰে বাখৰামি কৰা গোমচেঙৰ চোলা, পাটৰ চুৰিয়া, দাউকীয়া পাগ, জৰদৰ টঙালি, গজ-মুকুতাৰ লং আদিৰ উল্লেখও গীতটিত ঐতিহাসিক বেলেডৰ পৰিৱেশ নিৰ্মাণত সহায় কৰিছে। ইছাৰা, কয়েদী, আচমান, দিল, গৰজ, মইদান, হুকুম আদি ইচলামীয় শব্দৰ প্ৰয়োগেও গীতটিৰ ঐতিহাসিক পটভূমি সৃষ্টিত অৰিহণা যোগাইছে। সন্দেহ নাই গোপীচন্দ্রৰ গান অথবা জনা গাভৰুৰ গীত ঐতিহাসিক পৰিৱেশত ৰচিত হৈছে; কিন্তু এই বেলেড দুটি কোনো ধৰণৰ ঐতিহাসিক ঘটনা বা কাহিনীৰ সৈতে সম্পৃক্ত নহয়। গতিকে এই বেলেড দুটিক ঐতিহাসিক বেলেড আখ্যা দিব নোৱাৰি। দ্বিতীয়তে, গীত দুটিত সঘনে উল্লেখ থকা যাদুমূলক আৰু বিস্ময়াৱহ ঘটনাৰাজিয়েও ইয়াৰ ঐতিহাসিকতা অনেক পৰিমাণে ক্ষুণ্ণ কৰিছে। এই ফালৰ পৰা গীত দুটিক বিস্ময়াৱহ বা যাদুমূলক বেলেড বুলিলেহে ৰজিতা খায়। বিস্ময়াৱহ বা যাদুমূলক বেলেডত অতিলৌকিক শক্তি আৰু যাদুমূলক কৃত্যৰ

ওপৰত বিশেষভাৱে গুৰুত্ব আৰোপিত হয়। অলৌকিক শক্তি-সম্পন্ন প্ৰতিনায়ক (‘জনা গাভৰুৰ গীত’ত অভিনয়), অতিলৌকিক অথবা যাদুমূলক স্বামী বা পত্নী (গোপীচন্দ্ৰ আৰু জনা), অতিলৌকিক কাৰ্য্যৱলী (জাঁপ মাৰি লুইত পাৰ হোৱা, গছত নলগা, কটাৰীয়ে নকটা আৰু চুণ নলগোৱা গুৱাপাণ হাতৰ মুঠিৰ পৰা উলিয়াই গোপীচন্দ্ৰই জনাক দিয়া ; গছত নলগা, টেকীত নবনা, হাত নলগোৱা চাউলেৰে আঁঠুৰ মূৰত জনাই ৰান্ধি দিয়া ভাত; পটাৰ ঠাৰিৰ নাল লগোৱা এক সেৰ ওজনৰ কুঠাৰেৰে এঘাপ মাৰি লোহাৰ ঢেকী সমানে দুফাল কৰা ; দুৱাৰ মুখত থকা শিলৰ ওপৰত ক্ষুদ্ৰ শৌচ কৰি এহাত দ লোৰ কৰি দিয়া; বাৰ পুৰা মাটি জুৰি থকা তাল-শালৰ গছজোপা একে আঁজোৰে উভালি পেলোৱা; তাল-শাল গছজোপা উভালি পৰাৰ লগে লগে অচেতন হৈ জনা গাভৰু লুটি খাই পৰা^{২৩}; পাৰ্বতীয়ে নিজৰ মূৰৰ চুলি ছিঙি গোপীচন্দ্ৰৰ গাত পেলাই দিয়াৰ বাবে কোঁৱৰৰ দুগুণ শক্তি লাভ ; অভিনয় কোঁৱৰৰ মূৰটো ছিগি উৰি গৈ খলখলাই হাঁহি বাপেকৰ নগৰত পৰা ইত্যাদি); অলৌকিক সহায়কাৰী (অভিনয়ৰ লগত যুদ্ধৰত গোপীচন্দ্ৰক সহায় কৰিছে- পগলাৰ (শিৱৰ) পত্নী পাৰ্বতীয়ে যাদুমূলক কাৰ্য্যৰ জৰিয়তে^{২৪}), যাদুমূলক কৃত্য সম্পাদন (তামৰ দেওঘৰ, কেঁচাইখাতী গোঁসানী, পগলা-পাৰ্বতী আদি দেৱ-দেৱীলৈ বলিসহ পূজা-উপাসনা কৰিবলৈ মানস কৰা, চন্দ্ৰ-সূৰ্য-বাসুদেৱলৈ সেৱা আগ বঢ়োৱা, ‘নৰ-মনিষ’ৰ বলি দিবলৈ সথাথ তোলা, যাত্ৰাৰ আগ মুহূৰ্ত্তত মঙ্গল চোৱা, ইত্যাদি), অলৌকিক শক্তি আৰু জ্ঞান (নায়ক গোপীচন্দ্ৰ আৰু নায়িকা জনা অলৌকিক শক্তিয়ে বলীয়ান আৰু অলৌকিক জ্ঞানৰ অধিকাৰী) আদি বৈশিষ্ট্যৰে গীত দুটি ঋদ্ধ। গতিকে গোপীচন্দ্ৰৰ গান আৰু জনা গাভৰুৰ গীতক বিন্ধ্যৱাহৰ বা যাদুমূলক বেলেড বুলিব পাৰি।

জনা-গাভৰুৰ গীতত সৃষ্টিমূলক মিথৰ বৈশিষ্ট্যও প্ৰকটিত হৈছে। যুদ্ধৰত গোপীচন্দ্ৰই অভিনয় কোঁৱৰক আকাশলৈ দলি মাৰি দিলে। মাটিত পৰি অভিনয়ৰ দেহটো হাঁহকণী ভগাৰ নিচিনাকৈ ভাগিল। কোঁৱৰৰ চকুযোৰ উৰিগৈ আচমানৰ ওপৰত (চন্দ্ৰ-সূৰ্য হৈ?) লাগি থাকিল। অভিনয়ৰ চুলিবোৰ পৰা ঠাইবিলাকত জাও বন গজিল (অৰ্থাৎ চুলিৰ পৰা জাও বনৰ সৃষ্টি হল); ভুৰটোৰ পৰা সৃষ্টি হল দলবনৰ; বুকুৰ পৰা সৃষ্টি হল চন্দনৰ পটাৰ ; কলীয়া লতাৰ সৃষ্টি হল অভিনয়ৰ আঁতবোৰৰ পৰা ; তেওঁৰ দাঁতবোৰৰ পৰা হল হাতীৰ নখ, গুৰি দাঁতৰ পৰা সৃষ্টি হল সাগৰৰ শব্দৰ।

জনা আৰু গোপীচন্দ্ৰৰ কাহিনী ভাগত পৰিদৃষ্ট হোৱা কথাসমূহ, যেনে, জনাৰ বিভিন্ন কাৰ্য্যৱলী, গোপীচন্দ্ৰৰ যাদুমূলক শক্তি, অভিমনৰ দেহৰ বিভিন্ন অঙ্গৰ ৰূপান্তৰণ আদি পৃথিৱীৰ বিভিন্ন অঞ্চলত প্ৰচলিত লোককথাবোৰতো দেখা যায়। যেনে :

কথাঙ্গ A 500-599 : উপদেৱতা আৰু সংস্কৃতি-নায়ক :

গোপীচন্দ্ৰ সংস্কৃতি-নায়ক যিহেতু শত্ৰুক পৰাভূত কৰাৰ প্ৰসঙ্গত তেওঁ দেৱীৰ কৃপা লাভ কৰিছে। তেওঁ বিভিন্ন গছ, লতা, শঙ্খ, হাতীৰ নখ আৰু চন্দ্ৰ-সূৰ্যৰ (অভিমনৰ দুই চকু) স্ৰষ্টা। বাৰ বছৰ ধৰি 'কয়েদী ৰূপে' জনাৰ কাৰাগাৰত বন্দী হৈ থকা নও শ কোঁৱৰক উদ্ধাৰ কৰি অনায়াসৰ বিৰুদ্ধে সাহসেৰে থিয় হৈ ন্যায় প্ৰতিষ্ঠা কৰি প্ৰকৃত সংস্কৃতি-নায়কৰ ভূমিকা পালন কৰিছে।

কথাঙ্গ A 710 আৰু 740 : সূৰ্য আৰু চন্দ্ৰৰ সৃষ্টি :

অভিমনৰ চকু দুটা আকাশত লাগি থাকিল ('অভিমন কোঁৱৰৰ, চকুযোৰ উৰি গৈ, আচমানৰ ওপৰত লাগিল'); যদিও গীতটিত উল্লেখ নাই, তথাপি অনুমান কৰিব পাৰি যে, অভিমনৰ চকুযুৰিৰ পৰা চন্দ্ৰ-সূৰ্যৰ সৃষ্টি হৈছিল। আকাশলৈ মাৰি পঠিওৱা বস্ত্ৰৰ পৰা গ্ৰহ-নক্ষত্ৰৰ জন্ম হোৱাৰ উল্লেখ পোৱা যায় কথাঙ্গ A 763ত।

কথাঙ্গ A 2060-2699 : গছ-গছনিৰ সৃষ্টি :

কথাঙ্গ A 2611 দ্বিখণ্ডিত ব্যক্তিৰ দেহৰ পৰা গছ-গছনিৰ সৃষ্টি :

অভিমনৰ দ্বিখণ্ডিত দেহৰ বিভিন্ন অঙ্গৰ পৰা জাও, দল, লতা আদিৰ সৃষ্টি হৈছে।

গোপীচন্দ্ৰৰ কাহিনী ভাগ মুখ্যতঃ দুঃসাহসিক অভিযানমূলক সাধুকথা (Quest tale)^{১৪} এনেধৰণৰ সাধুত যুৱক নায়কে ভাগ্যৰ অন্বেষণত যাত্ৰা কৰে দূৰ-দূৰণিলৈ আৰু নানা দুঃসাহসিক কৰ্ম সম্পাদনৰ অন্তত এগৰাকী বা তাতকৈ অধিক ৰাজকুমাৰীক বিয়া কৰাবলৈ সক্ষম হয়। গোপীচন্দ্ৰয়ো ভাগ্যৰ অন্বেষণত যাত্ৰা কৰি বন্ধু, পথ-প্ৰদৰ্শক আৰু দাৰ্শনিক (friend, guide and philosopher) কলিধন নটৰ সহায়-সহযোগত জনাক পত্নীৰূপে লাভ কৰিবলৈ সক্ষম হৈছে। বিবাহৰ প্ৰসঙ্গত সাঁথৰ বা দিষ্টানৰ (riddle) ভূমিকা বিভিন্ন সংস্কৃতিত লক্ষ্য কৰা যায়। জনা আৰু গোপীচন্দ্ৰৰ মিলনৰ সন্দৰ্ভতো পৰম্পৰে পৰম্পৰৰ দক্ষতাৰ প্ৰমাণ লৈছে সাঁথৰৰ (বিশেষত্বপূৰ্ণ প্ৰশ্নৰ নাম সাঁথৰ) সহায়ত। স্বামী বা স্ত্ৰীৰ মানসিক প্ৰয়োজনীয় পাৰদৰ্শিতা আৰু সামাজিক অৰ্থতা প্ৰতিপন্ন কৰাৰ ক্ষেত্ৰত সাঁথৰৰ ভূমিকা তাৎপৰ্যপূৰ্ণ।

গোপীচন্দ্ৰ আৰু জনা সম্পৰ্কীয় কাহিনী ভাগত সঙ্কটমূলক বা সমস্যামূলক সাধুকথাৰ (dilemma tales) বিশেষত্বও লক্ষ্য কৰিব পাৰি। জনাই গোপীচন্দ্ৰক কৰা পৰীক্ষা আৰু গোপীচন্দ্ৰই জনাক কৰা পৰীক্ষাত উঠাৰ ক্ষেত্ৰত একাধিক বা বিকল্প বাছনি বা নিৰ্বাচন (alternative choice) নথকা নহয়। এইবোৰৰ ভিতৰত শুদ্ধ বাছনিৰ জৰিয়তেহে গোপীচন্দ্ৰই জনা গাভৰুক পত্নীৰূপে লাভ কৰাৰ পথ প্ৰশস্ত হৈ উঠিছে।

বাচিক বা মৌখিক কলা মুখ পৰম্পৰা প্ৰচলিত হৈ থকা হেতু ইয়াৰ পাঠ আৰু জমিনত পৰিৱৰ্তন বা যুগৰ প্ৰভাৱ পৰা স্বাভাৱিক। জনা গাভৰুৰ গীত আৰু গোপীচন্দ্ৰৰ গানৰ প্ৰমেয় মূল পাঠ (typothetical ur-type) যিমানেই পুৰণি নহওক কিয় বৰ্তমান লিখিত ৰূপ লাভ কৰা গীত দুটিৰ জমিনে (texture) অষ্টাদশ শতিকাৰ পঞ্চম দশকৰ পিচৰ ভাষা আৰু সামাজিক তথা ৰাজনৈতিক পৰিৱেশৰ পৰিচয়হে দিয়ে। জনা গাভৰুৰ গীতৰ পাঠটিত স্থান পোৱা কিছুমান শব্দৰূপ বিশেষকৈ গালি-শপনিৰূপে প্ৰয়োগ কৰা শব্দবোৰ পৰৱৰ্তী কালৰ সংযোজন হব পাৰে।

— ড° নবীন চন্দ্ৰ শৰ্মা

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- ১। বিশ্বেশ্বৰ ভট্টাচাৰ্য্য, 'প্ৰথম সংস্কৰণেৰ মুখবন্ধ', গোপীচন্দ্ৰৰ গান, কলিকাতা, ১৯২৪
- ২। Smith Thompson, *The Folktale*, 1977, p. 440
- ৩। আশুতোষ ভট্টাচাৰ্য্য (সম্পা), *গোপীচন্দ্ৰৰ গান*, কলিকতা বিশ্ববিদ্যালয়, ১৯৬৫, পৃ : ৪৪৫
- ৪। উক্ত গ্ৰন্থ, ভূমিকা, পৃ : ১২
- ৫। ডিম্বেশ্বৰ নেওগ, *অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী*, গুৱাহাটী, ১৯৯৩, পৃ : ৫৯
- ৬। উক্ত গ্ৰন্থ, পৃ : ৫৯-৬০
- ৭। ৰূপেশ্বৰ দত্ত (সম্পা), *জনা গাভৰুৰ গীত*, যোৰহাট, ১৯২৫
- ৮। ডঃ লীলা গগৈ, *অসমীয়া লোক-সাহিত্যৰ ৰূপৰেখা*, ডিব্ৰুগড়, ১৯৮৪, পৃ : ১৭৯
- ৯। Dr. P. Goswami, *Ballads and Tales of Assam*. Gauhati University, 1970, p. 41

- ১০। "Folklore in North-Eastern India", *Assam Academy Review*, Special issue (ed.), Dr. B. Datta, Guwahati, 1983-84, P. 6
- ১১। ড° প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামী (সম্পা), *বাৰ মাহৰ তেৰ গীত*, পৃঃ ২১৪-১৫
- ১২। উক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ২১৬
- ১৩। উক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ২১৭
- ১৪। উক্ত গ্ৰন্থ
- ১৫। উক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ২২২-২৩
- ১৬। যোগেশচন্দ্ৰ তামূলী (সম্পা), *অসমীয়া লোকগীত-সংগ্ৰহ*, শ্বেচ্ছাট, ১৯৭৮ পৃঃ ২০৮
- ১৭। উক্ত গ্ৰন্থ
- ১৮। Dr. M. Neog, "Phulkowar and Janagabharu" *Journal of the University of Gauhati*, Vol. II, 1951
- ১৯। বিশ্বেশ্বৰ ভট্টাচাৰ্য্য, 'প্ৰথম সংস্কৰণেৰ ভূমিকা' *গোপীচন্দ্ৰৰ গান*, ১৯৬৫ পৃঃ ৪৪৮
- ২০। উক্ত প্ৰবন্ধ, পৃঃ ৪৪৮-৫০
- ২১। 'উজাই গৈ পালেগৈ ঘোঁৰামুৱাদেশ' *বৰফুকনৰ গীত*, সূৰ্য্যকুমাৰ ভূঞা (সম্পা), ১৯৫০ পংক্তি ৩২৮
 'উজাই গৈ পালেগৈ এঠেঙ্গীয়া দেশ' উক্ত গ্ৰন্থ, পংক্তি ৩৩২
- ২২। ড° প্ৰফুল্লদত্ত গোস্বামী, *জাপানৰ জনকৃষ্টি আৰু অন্যান্য ৰচনা*, ১৯৮৪, পৃঃ ১৫-১৭
- ২৩। যাদুমূলক সাধুকথাত নায়ক- নায়িকা বা প্ৰতিনায়ক- প্ৰতিনায়িকা অথবা ৰাক্ষক- ৰাক্ষসীৰ জীৱ লাউ, কোমোৰা, ভোমোৰা, কপৌ চৰাই, পাৰ চৰাই আদিত থকাৰ বৰ্ণনা পোৱা যায়। জনা গাভৰুৰ জীৱনৰ সম্পৰ্ক তাল-শাল গছজোপাৰ লগত।
- ২৪। মাতক মাতি গ'ল। পাৰ্বতী আয়ে। পগলাৰ মুখলৈ চাই। 'চোৱাচোন পগলা। তললৈ মনকৈ। সেইটো ভাগিন হ'ব পায়।। মূৰৰ চুলি ছিঙি। দিয়ে পাৰ্বতীয়ে। পৰিবি ভাগিনৰ গাত। যদি মোৰ ভাগিন হয়। বলেই বেছি হওক। মোৰ ভাগিনৰ গাত।।' পৃঃ ২০১
- ২৫। Dr. P. Goswami, *Ballads and Tales of Assam*, p. 47

ৰামাই পণ্ডিতৰ শূন্য পুৰাণ

(গ)

শূন্য পুৰাণৰ কৰি ৰামাই পণ্ডিত। পণ্ডিত হৰপ্ৰসাদ শাস্ত্ৰীয়ে উল্লেখ কৰিছে, 'ধৰ্ম ঠাকুৰেৰ পুথি পড়িতে গেলেই একজনেৰ নাম সৰ্বত্ৰ দেখিতে পাওয়া যায়, ইহাৰ নাম ৰামাই পণ্ডিত। (শূন্য পুৰাণ, ভক্তি মাধব চট্টোপাধ্যায় সম্পাদিত ১৯৭৭, পৃষ্ঠা ৪)। বাংলা সাহিত্যৰ এজন বিশিষ্ট পণ্ডিত দীনেশ চন্দ্ৰ সেনৰ মতে শূন্য পুৰাণৰ কৰি ৰামাই পণ্ডিতেই বঙ্গ দেশত 'ধৰ্মমত' প্ৰচাৰ কৰাসকলৰ ভিতৰত প্ৰধান। জনশ্ৰুতি মতেও ৰামাই পণ্ডিতেই মৰ্ত্য ধামত প্ৰথম ধৰ্ম পূজা প্ৰচাৰ কৰিছিল আৰু তেওঁক ধৰ্ম অৱতাৰ বুলি জনসমাজে বিশ্বাস কৰিছিল। ৰামাই পণ্ডিতৰ জীৱন কথাও জনশ্ৰুতিৰ ওপৰত বহুতখিনি নিৰ্ভৰশীল। প্ৰামাণিক তথ্যৰ অভাৱ। ধৰ্মমঙ্গলৰ কবিসকলে ৰামাই পণ্ডিতক ধৰ্ম পূজাৰ আদি প্ৰৱৰ্তক বুলি বিশেষ শ্ৰদ্ধা কৰিছিল। ৰামাই পণ্ডিত সম্বন্ধে নানা কাহিনীও প্ৰচলিত আছে। ড° অসিত বন্দোপাধ্যায়ে তেখেতৰ বাংলা সাহিত্যেৰ সম্পূৰ্ণ ইতিবৃত্ত (৩য় সংস্কৰণ ১৯৭১) গ্ৰন্থত ৰামাই পণ্ডিতৰ জীৱন কাহিনী উল্লেখ কৰিছে তলত দিয়াৰ দৰে—

ৰামাই পণ্ডিত আছিল ব্ৰাহ্মণ কুমাৰ। কিন্তু বাল্য কালতে পিতৃ-মাতৃহীন হৈছিল। নিঃস্ব ব্ৰাহ্মণ সন্তানক কোনে যজ্ঞোপবীত দিব? গতিকে যথা সময়ত ৰামাইৰ চূড়াকৰণ নহ'ল। স্বয়ং ধৰ্মঠাকুৰ আহি ব্ৰাহ্মণ সন্তানক তাম্ৰ দীক্ষা দিছিল, অৰ্থাৎ তাম্ৰপৈতা বা লগুণ দিছিল। তাৰ পাচৰ পৰাই ধৰ্ম পুৰোহিতসকলে তাম্ৰ ধাৰণ কৰিবলৈ লৈছিল। তাম্ৰ দীক্ষা হোৱাৰ পাচত ৰামাই বন্ধুকা নদীৰ পাৰত ধৰ্মৰ তপস্যা কৰিছিল গৈ। তেওঁ লাহে লাহে বৃদ্ধ হৈ আহিছিল। কিন্তু তেতিয়াও সংসাৰত প্ৰৱেশ কৰা নাছিল, অৰ্থাৎ অবিবাহিত আছিল। গতিকে তেওঁৰ পাচত কোনে পূজা অৰ্চনা কৰিব চিন্তা কৰিছিল। তেতিয়া ধৰ্ম নিৰঞ্জনৰ নিৰ্দেশত অতি বৃদ্ধ বয়সত ৰামাইয়ে বিয়া কৰিছিল। পত্নীৰ নাম আছিল কেশৱতী। ধৰ্মৰ পুণ্ডাৰ্য্যসিদ্ধ জল পান কৰি কেশৱতীয়ে যথা সময়ত এটি পুত্ৰ সন্তান জন্ম দিছিল। ৰামাইয়ে পুত্ৰৰ নাম ৰাখিছিল ধৰ্মদাস। ধৰ্মদাস প্ৰাপ্তবয়স্ক হোৱাৰ পাচত পিতৃ-আজ্ঞাত নানা

স্থানলৈ গৈ ধৰ্মঠাকুৰৰ মহিমা প্ৰচাৰ কৰি ফুৰিছিল। কিন্তু এদিন দুপ্ত কলিৰ প্ৰৰোচনাত পৰি ধৰ্মদাসে কিছু অনাচাৰ কৰিছিল। সেই কথা ৰামাই পণ্ডিতে জানিব পাৰি পুত্ৰ ধৰ্মদাসক অভিশাপ দিছিল, ‘হইবি ডোমৰ পুৰোহিত’। এই কাহিনীৰ পৰা জনা যায় যে ৰামাইৰ পুত্ৰ ধৰ্মদাসৰ পৰাই ধৰ্মপূজকসকল ডোমৰ পুৰোহিত হৈ গৈছিল। কিন্তু ৰামাই পণ্ডিত আছিল বিশুদ্ধ ব্ৰাহ্মণ যদিও চূড়াকৰণৰ সলনি তেওঁৰ তাম্ৰ দীক্ষা হৈছিল।

পিতৃ ৰামাই পণ্ডিতৰ দ্বাৰা পুত্ৰ ধৰ্মদাস অভিশপ্ত হৈ ধৰ্মদাসে স্মৃতি দুখ পাইছিল। ৰামাই পণ্ডিতে পুত্ৰক আশ্বাস দিছিল— ডোমৰ পণ্ডিত হ’লেও ধৰ্মদাস আৰু তেওঁৰ সন্তান-সন্ততিয়ে সমাজত ব্ৰাহ্মণসকলৰ দৰেই শ্ৰদ্ধা পাব। এয়া ৰামাই পণ্ডিতৰ এক জীৱন কাহিনী।

শূন্য পূৰাণৰ এজন সম্পাদক ভক্তিমাদব চট্টোপধ্যায়ৰ সম্পাদিত গ্ৰন্থৰ পাতনিৰ এঠাইত ৰামাই পণ্ডিতৰ জীৱন কথাৰ বিষয়ে কিছু কথা পোৱা গৈছে। কিন্তু ওপৰত উল্লেখ কৰা কাহিনীৰ পৰা কিছু পৃথক। বঙ্গদেশৰ বাঁকুড়া জিলাৰ বিষুপুৰৰ ওচৰৰ ময়নাপুৰত যাত্ৰাসিদ্ধি নামে ধৰ্মঠাকুৰ আছিল। তেওঁৰ পৰাই বিনোদ বিহাৰী কাব্যতীৰ্থই ৰামাই পণ্ডিতৰ জীৱনী আনি শূন্য পূৰাণৰ প্ৰথম সম্পাদক নগেন্দ্ৰ নাথ বসুক দিছিলহি। বিবৰণটো যাত্ৰাসিদ্ধি ৰায়ৰ পূজা পদ্ধতিৰ অন্তৰ্ভুক্ত। ইয়াত ৰামাই পণ্ডিতৰ জীৱন কাহিনী সুললিত ২৪০ টা পয়াৰ ছন্দত বিস্তৃতভাৱে লিপিবদ্ধ কৰিছে। কাহিনীভাগ এনে ধৰণৰ—

ৰামাইৰ পিতৃ বিশ্বনাথ ধৰ্মপূজক আছিল। মাকৰ নাম নাই। বহাগ মাহ, শুক্লাপঞ্চমী তিথি, ভৰণী নক্ষত্ৰ, দেওবাৰে ৰামাইৰ জন্ম হৈছিল। পঞ্চম বছৰত পিতৃ মাতৃহীন হৈছিল। অনাথ বালকক ব্ৰাহ্মণেৰে বেশে ধৰ্মই প্ৰতিপালন কৰিছিল। পঞ্চদশ বছৰত তাম্ৰ দীক্ষা দিছিল আৰু বেদাদি শাস্ত্ৰত পাৰ্গত কৰি তুলিছিল। ধৰ্মপূজাত ৰামাইৰ অন্তৰত গৰ্ব অনুভৱ কৰাৰ কাৰণে ধৰ্ম অসন্তুষ্ট হৈ ৰামাইক অভিশাপ দিছিল। পুনৰ তুষ্ট হৈ পূজা-পদ্ধতি প্ৰণয়ন কৰিবলৈ আদেশ দিছিল—

“পঞ্চম বেদ কৰ তুমি বেদেৰ প্ৰমাণ।

তব কীৰ্ত্তি ৰহে যেন কহিতে সমান।।

কলি কালে হৰে য়েবে পূজাৰ পদ্ধতি।

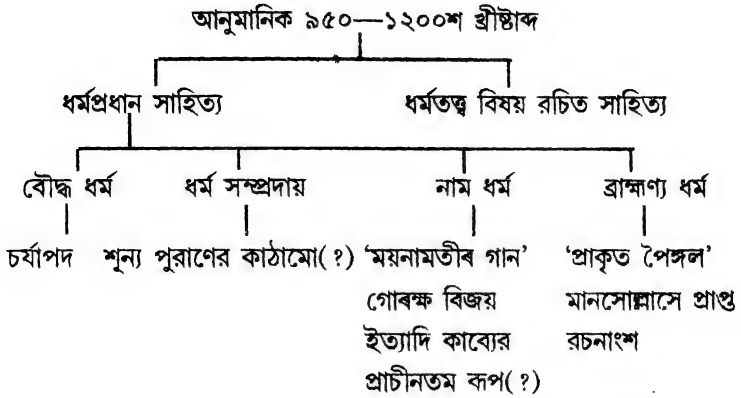
ৰামৰায়ের মতে পূজা করে নিৰবধি।।”

ৰামাইয়ে ধৰ্মৰ আদেশ পালন কৰিছিল। দিন পাৰ হৈ গৈ আছিল। ৰামাইয়ো বৃদ্ধ হৈ আহিছিল। কিন্তু সমস্যা হৈছিল ৰামাই প্ৰণীত পূজা-পদ্ধতি চলাই যাবলৈ ৰামাইৰ পিচত আৰু কোনো নাছিল। ৰামাই তেতিয়াও অবিবাহিত আছিল। “কেবা সেবা কৰে ধৰ্ম আমিতো সন্ধ্যাসী”। তেতিয়া ধৰ্মৰ দক্ষিণ চৰণত সৃষ্টি কৰিছিল কেশৱতী কন্যাক। ৰামাই পণ্ডিতে তেওঁক বিয়া কৰাইছিল। ৰামাইৰ বয়স হৈছিল তেতিয়া “একশত পঁচিশ”। কন্যাৰ অনুৰোধত “শ্ৰীধৰ বলিয়া ৰামাই কন্যাৰ গৰ্ভে হস্ত দিল। সেই গৰ্ভে তাৰ এক বালক জন্মিল।” বালকৰ নাম ৰাখিছিল ধৰ্মদাস। ৰামাইয়ে পুত্ৰক ধৰ্মৰ পূজা-পদ্ধতি শিকাইছিল। পুত্ৰই পিতাকক বংশ ৰক্ষা কৰাৰ কথা সুধিলত পিতাকে পুত্ৰক অভিষাপ দিছিল, “কলি কালে হবে তুমি ডোমের পুরোহিত”, আৰু ডোম জাতিৰ উদ্ভৱ ইতিহাস বিবৃত কৰিছিল। ধৰ্মৰ ধৰ্মজাত সদা ডোমে কালিন্দীৰ পাৰত কলাৱতী কন্যাক সন্ধ্যা কালত বিবাহ কৰিছিল। তেওঁলোকৰ চাৰিটা সন্তান উপজিছিল— মাধৱ, সনাতন, শ্ৰীধৰ আৰু সুলোচন। ইয়াৰ পাচত এওঁলোকৰ বংশ বৃদ্ধি হৈছিল।

ওপৰত উল্লেখ কৰা দুইটা কাহিনী অলৌকিক আৰু বিশ্বাসযোগ্য নহয়। কিন্তু ৰামাই পণ্ডিতৰ তথ্যভিত্তিক জীৱন কথাও তেনেকৈ পোৱা নেযায়। ড° অসিত কুমাৰ বন্দ্যোপধ্যায়ে উল্লেখ কৰিছে যে ৰামাই পণ্ডিতৰ সকলো কথা ঐতিহাসিক বুলি ধৰিব পৰা নেযায়। ই নিতান্তই গল্পৰ লগৰ গল্প। ইফালে ৰামাই পণ্ডিত সম্পৰ্ক ঐতিহাসিক তথ্য-পাতি পাবলৈ নাই।

ৰামাই পণ্ডিতৰ জীৱন কালৰ সম্বন্ধেও নানা সাহিত্যৰ ইতিহাস সমালোচকৰ নানা মত। দীনেশ চন্দ্ৰ সেনৰ মতে, শূন্য পুৰাণৰ ৰামাই পণ্ডিত একাদশ শতিকাৰ আগ ভাগৰ কবি আৰু গোঁড়ৰ ৰজা ধৰ্মপালৰ সমসাময়িক। যোগেশ চন্দ্ৰ বিদ্যানিধিৰ মতে শূন্য পুৰাণ চতুৰ্দশ শতিকাৰ আগৰ হ'বই নোৱাৰে। ডঃ সুনীতি কুমাৰ সেনে শূন্য পুৰাণৰ ভাষা-তাত্ত্বিক বিচাৰ কৰি সিদ্ধান্ত কৰিছিল— ষোড়শৰ পৰা অষ্টাদশ শতিকাৰ মাজৰ বহু দেশৰ বিভিন্ন অঞ্চলত প্ৰচলিত বাংলা ভাষাৰ চাব শূন্য পুৰাণত আছে। বাংলা সাহিত্যেৰ ইতিকথা প্ৰথম পৰ্য্যায়, চতুৰ্থ সংস্কৰণ, ১লা জুলাই, ১৯৬৫। গ্ৰন্থৰ ৰচক ভূদেৱ চৌধুৰীয়ে ধৰ্মপ্ৰধান সাহিত্য সম্বন্ধে আলোচনা কৰি তলত দিয়াৰ দৰে ভাগ কৰিছে—

বাংলা সাহিত্যেৰ প্ৰথম পৰ্যায়



ভূদেৱ চৌধুৰীয়ে উল্লেখ কৰিছে— লোক ধৰ্ম মিশ্ৰিত বাংলা সাহিত্যৰ নিদৰ্শন হিচাপে *শূন্য পুৰাণ* নামৰ ৰচনাৰ উল্লেখযোগ্যতাৰ বিষয়ে ঐতিহাসিক মহলত প্ৰথমৰ পৰাই সংশয় আছে। প্ৰাচ্য বিদ্যামহাৰ্ণৱ নগেন্দ্ৰ নাথ বসুৱে পোৱা তিনিখন পুথিৰ পাঠ মিলাই ১৩১৪ বাংলা চনত “বঙ্গীয় সাহিত্য পৰিষদ”ৰ পৰা গ্ৰন্থ ৰূপত সম্পাদনা কৰি প্ৰকাশ কৰিছিল। তিনিওখন পুথিৰ ক’তো নামাক্তিত পৃষ্ঠা পোৱা নাছিল। গতিকে গ্ৰন্থৰ আচল নাম জনাৰ উপায় নাছিল। নগেন্দ্ৰ নাথে পুথিৰ নতুন নামকৰণ কৰিছিল *শূন্য পুৰাণ*। এই কাব্যত *শূন্যময়তা দেৱতা* ধৰ্মঠাকুৰৰ পূজা-পদ্ধতি বিবৃত হৈছে। সেই কাৰণে পুথিৰ নাম *শূন্য পুৰাণ* ৰখা হ’ল। *শূন্য পুৰাণ*ৰ সম্পাদক নগেন্দ্ৰ নাথ বসুৰ মতে *শূন্য পুৰাণ* খৃষ্টীয় একাদশ শতিকাৰ ধৰ্মপাল ৰজাৰ ৰাজত্ব কালত আৱিৰ্ভূত হৈছিল। *শূন্য পুৰাণ*ক আদি যুগৰ বাংলা সাহিত্যৰ নিদৰ্শন বুলি ধৰিছিল। (*শূন্য পুৰাণ*, সম্পাদক নগেন্দ্ৰ নাথ বসু, পৃষ্ঠা ৬৩)

বিশ্বকোষত ৰামাই পণ্ডিতক প্ৰথম ধৰ্মপালৰ সমসাময়িক বুলি উল্লেখ কৰি *শূন্য পুৰাণ*ৰ ভূমিকাত আকৌ এই মত খণ্ডন কৰি ২য় ধৰ্মপালৰ সমসাময়িক বুলি উল্লেখ কৰিছে। (ভূমিকা, *শূন্য পুৰাণ*, ১ম সংস্কৰণ)

শূন্য পুৰাণৰ এজন সম্পাদক ভক্তি মাধৱ চট্টোপধ্যায়ে পাতনিত উল্লেখ কৰিছে— পশ্চিমে বঙ্গৰ বৌদ্ধৰ সৰ্বশেষ পৰিণতি ধৰ্মঠাকুৰৰ মাজত সেন বংশৰ অভ্যুদয় আৰু প্ৰতিষ্ঠা কালতেই বৌদ্ধ ধৰ্মৰ পৰিণতি বুলি ধৰিলে ধৰ্মঠাকুৰৰ বীজ দ্বাদশ শতাব্দীত অঙ্কুৰিত হৈছিল বুলিব পাৰি। কোনো কোনো পণ্ডিতৰ অভিমত মহাযানী শূন্যবাদেই ধৰ্মঠাকুৰৰ প্ৰতিপাদ্য বিষয়। এই মতবাদ বঙ্গদেশত পাল ৰাজত্বৰ কালত বিশেষ গুৰুত্ব লাভ কৰিছিল।

প্ৰাচীন কালত ৰচনাসমূহত, বিশেষকৈ ধৰ্মমঙ্গল কাব্যসমূহত কবিৰ জীৱনী, ৰচনা কাল, গ্ৰন্থৰ উৎপত্তি আদিৰ বিৱৰণ অতি সুন্দৰকৈ দিয়া থাকে, কিন্তু ৰামাই পণ্ডিতে শূন্য পুৰাণত কবি পৰিচয়, ৰচনা কাল আদিৰ বিষয়ে ক’তো উল্লেখ কৰি যোৱা নাই। ধৰ্মতত্ত্ব ব্যাখ্যা কৰোঁতা, ধৰ্ম পদ্ধতিৰ প্ৰচলন কৰোঁতা ৰামাই পণ্ডিত নিজৰ পৰিচয়, কাব্য ৰচনাৰ কাল সম্বন্ধে লিপিবদ্ধ কৰাত হয়তো বৰ নিষ্পৃহ লোক আছিল।

‘History of Bengali Literature’ (University of Calcutta, 1954, Second Edition) অত প্ৰফেচাৰ দীনেশ চন্দ্ৰ সেনে ৰামাই পণ্ডিত সম্বন্ধে লিখিছে, “Ramai Pandit was a contemporary of Dharma Pal II, who reigned in Gaud in the early part of the 11th century A.D. Rajendra Chola’s rock-inscription (1012 A.D.) discovered in Tirumalaya, probably makes mention of this monarch. Rama Rai Pandit was born on the 5th day of the waxing moon, in the month of Baisakh, towards the end of the 10th century. A.D.”. (Page 34)

অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী (কাতি-আষাঢ়, ১৮৭৮ শক) লেখক সৰ্গীয় ডিম্বেশ্বৰ নেওগে উল্লেখ কৰি গৈছে, “ভাষামূলক বিচাৰ আৰু ঘাইকৈ অসমীয়া মন্ত্ৰ সাহিত্যৰ লগত ইয়াৰ ভাব-ভাষাৰ মিলৰ পৰা শূন্য পুৰাণৰ ৰচনা ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ পাছৰ বুলি অনুমান কৰা হয়, অৱশ্যে ৰামাই পণ্ডিতৰ জন্মস্থান বা শূন্য পুৰাণ পুথি বৰ্তমান অসমৰ ভিতৰত থকাৰ কোনো সঁহাৰি নাই। তদুপৰি ‘ধৰ্ম’ আৰু ‘শূন্য’ শব্দ দুটাৰ পৰাই এই গীতবোৰত শৈৱতকৈ বৌদ্ধ প্ৰভাৱৰ কথাহে সূচায় বুলি বুজিব পাৰি। পুথিৰ ভাষাও ঠায়ে ঠায়ে অঙ্গৰূপত হোৱা যেন লাগে।” (পৃষ্ঠা ১৫৬)

বৌদ্ধ দোহা বা চৰ্যাপদসমূহ, কৃষ্ণ কীৰ্তন আৰু শূন্য পুৰাণ—এই তিনিও ভাগ ৰচনা বাংলা আৰু অসমীয়া উভয় ভাষাৰ সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীত নিজস্ব সাহিত্য সম্পদ ৰূপে স্থান লাভ কৰিছে। কাৰণ এইটোৱেই ধৰিব পৰা যায়— অসমীয়া

আৰু বাংলা উভয় ভাষাৰ লগত ইয়াৰ ভাষাৰ সাদৃশ্য। শূন্য পুৰাণৰ বিষয়বস্তু আৰু ভাষাৰ মাজত নিহিত থকা অৰ্থৰ প্ৰহেলিকা ভঙাটো সহজ নহয়। কিন্তু অসমীয়া ব্যাকৰণৰ সাঁচ প্ৰায় পৰিস্ফুট তাত সন্দেহ নাই। শূন্য পুৰাণক প্ৰাক্-শঙ্কৰী যুগৰ অসমীয়া সাহিত্যৰ ইতিহাসত অসমীয়া ভাষাৰ সাহিত্য সম্পদ ৰূপে স্থান দিছে। প্ৰাচীন অসমীয়া ভাষাৰ লগত শূন্য পুৰাণৰ ভাষাৰ সাদৃশ্য মন কৰিব লগীয়া। ইয়াৰ বৈয়াকৰণিক ৰূপলৈ মন কৰিলে প্ৰাচীন কামৰূপ ৰাজ্যৰ নাইবা প্ৰাচীন কামৰূপী পণ্ডিতৰ ৰচনা যেন অনুমান হয়। বিভক্তিৰ-ত, ষষ্ঠীৰ-ৰ, নিজ অৰ্থত 'আপুনি' সৰ্বনামৰ প্ৰয়োগ আদি অসমীয়া ব্যাকৰণৰ লগত মিল থকা দেখা যায়। ইয়াৰোপৰি শূন্য পুৰাণত ব্যৱহাৰ হোৱা অনেক শব্দৰ অসমীয়া ভাষাৰ শব্দৰ লগত মিল থকা দেখা যায় ; যেনে— জুই (জ্যোতি), খৰিকা, টোপোলা, দেউল, দৰব, জিয়ৰী, গজাল, বেগেতে ইত্যাদি। অসমীয়া সাহিত্যৰ ইতিবৃত্তৰ (১৯৭১) লেখক ড° সত্যেন্দ্ৰ নাথ শৰ্মাই উল্লেখ কৰিছে, “নাৰায়ণ দেৱৰ পদ্মপুৰাণৰ দৰে হয়তো শূন্য পুৰাণৰো কোনো কোনো খণ্ড এসময়ত অসম আৰু বঙ্গদেশ দুই ঠাইতে প্ৰচলিত আছিল। সেই কাৰণে মনকৰৰ কাব্যৰ লগত স্থান বিশেষে শূন্য পুৰাণৰ অংশ বিশেষৰ অদ্ভুত সাদৃশ্য দেখা পাওঁ। পঞ্চদশ শতিকাৰ শেষ আৰু ষোড়শ শতিকাৰ আগ ভাগৰ কবি, সেই হিচাপে শূন্য পুৰাণৰ অংশ বিশেষৰ ৰচনা কাল পঞ্চদশ শতিকা বা তাৰ অলপ আগত নিৰ্ণয় কৰিব পাৰি।” (পৃষ্ঠা ৭৫)

শূন্য পুৰাণৰ অন্তৰ্গত বিষয়বস্তুৰ ‘অথ বাৰমাসি’, ‘অথ ধৰ্মস্থান’ আদি খণ্ডত মাজে মাজে গদ্যও ব্যৱহাৰ কৰিছে। দেখাত ই গদ্য যেন লাগিলেও প্ৰকৃততে ই গদ্য নহয়। কেৱল গদ্য বুলি ভ্ৰম হয়। যেনে— “কোন মাসে কোন ৰাসি। চৈত্ৰ মাসে মীন ৰাসি। হে কালিন্দি জল বাৰ ভাই বাৰ আদিস্ত। হস্ত পাতি লহ সেবকেব অৰ্ঘ পুষ্প পানি। সেৱক হব সুখি আমনি ধামাংকামি।” ইত্যাদি, বাক্যবিলাক চুটি চুটি আৰু উক্তি-প্ৰত্যুক্তিৰে ভৰা। এই ‘অথ বাৰমাসি’ খণ্ডত চ’ত মাহৰ পৰা গোটেই বাৰ মাহৰ; প্ৰতি মাহৰে ৰাশি, ৰাশিৰ অধিপতি দ্বাদশ আদিত্যৰ নামত অৰ্ঘ-পুষ্প, জল নিবেদন কৰি সুখ আৰু মুক্তি কামনা কৰিছে। বাৰজন দেৱতা, দ্বাদশ ভাতৃ-ভগ্নীৰ কল্পনা কৰিছে আৰু প্ৰত্যেকক আদিত্য বুলিছে। তেনেকৈয়ে ‘অর্থ ধৰ্ম স্থান’ অংশটো শঙ্কৰ বৰ্ণনা কৰিছে। ইয়াৰো কিছু অংশ গদ্যত ৰচনা কৰিছে। এই গদ্যৰো বৈশিষ্ট্য আছে। ‘অথ বাৰ মাসি’ আৰু ‘অথ ধৰ্মস্থান’ দুয়ো খণ্ডৰে গদ্য ৰচনাত পদ্যৰ ছন্দ থকা যেন লাগে। এয়া ৰচকজনৰ বৈশিষ্ট্য বুলিব পাৰি।

শূন্য পুৰাণৰ বিষয়বস্তু আৰম্ভ হৈছে, সৃষ্টি পতন অধ্যায়েৰে। আৰম্ভৰ আগতে 'শ্ৰীশ্ৰী ধৰ্ম্মায় নমঃ' বুলি প্ৰণাম জনাইছে। তাৰ পাচত বিষয়বস্তু আৰম্ভ কৰিছে—

“নহি ৰেক নহি ৰূপ নহি ছিল বস্তু চিন।

ৰবি সসী নহি ছিল নহি ৰাতি দিন।।

নহি ছিল জল থল নহি ছিল আকাশ।

মেৰু মন্দাৰ ন ছিল ন ছিল কৈলাস।। ইত্যাদি

আদিতো পাহাৰ, পৰ্বত, ৰবি, শশী, সাগৰ, ব্ৰহ্মা, বিষ্ণু, ঋষি-মুনি, দশ দিকপাল, তীৰ্থস্থান, চাৰি বেদ, জীৱ-জন্তু একোৱেই নাছিল বুলি উল্লেখ কৰিছে। এদিন প্ৰভুৰ দয়া হ'ল আৰু নিজৰ পৰাই “জনমিল পুৰুষ তাৰ নহি হাত পাও। ৰজ বীজে জনম তাৰ নাহ বাপ মাও।” (শূন্য পুৰাণ, ভক্তি মাধৱ চট্টোপধ্যায় সম্পাদিত, ১৯৭৭, পৃষ্ঠা ৭০) এনেয়েকৈ শূন্য পুৰাণৰ কাহিনী আৰম্ভ হৈছে।

চৌদ্ধ যুগ যোৱাৰ পাচত প্ৰভুৱেই কেনেকৈ বিভিন্ন জীৱ-জন্তু, চৰাচৰৰ জন্ম দিলে তাৰ বৰ্ণনা কৰিছে। আন কি পুৰুষ প্ৰকৃতিৰ সৃষ্টি কৰি “স্ত্ৰীলিঙ্গ পুংলিঙ্গ বোলি বোলিবাক সৰ্বজন” বুলিও উল্লেখ কৰিছে।

বঙ্গীয় সাহিত্য পৰিষদে প্ৰকাশ কৰা শূন্য পুৰাণৰ সৰ্বমুঠ ৫৬ টা অধ্যায় আছে। ইয়াৰে ৫ টা অধ্যায় সৃষ্টি পাতনি সম্বন্ধে আৰু বাকীকেইটাত ধৰ্মপূজাৰ বিবিধ পদ্ধতি সম্বন্ধে আলোচনা কৰিছে। ৰজা হৰিশ্চন্দ্ৰ আৰু ধৰ্মৰ উপাসকসকলে ধৰ্মৰ কাৰণে কেনেকৈ ত্যাগ স্বীকাৰ কৰিছিল সেই সম্বন্ধেও উল্লেখ আছে। গ্ৰন্থৰ শেষৰ অধ্যায় “নিৰঞ্জনৰ উত্থা” (নিৰঞ্জনৰ ক্ৰোধ) অধ্যায়ত সৎ ধৰ্মৰ অৰ্থাৎ বৌদ্ধ ধৰ্মৰ পতন আৰু হিন্দু ধৰ্মৰ পুনৰ উত্থানৰ কথা লিপিবদ্ধ কৰিছে।

ভূদেব চৌধুৰীয়ে (বাংলা সাহিত্যেৰ ইতিকথা, প্ৰথম পৰ্য্যায়, চতুৰ্থ সংস্কৰণ, ১লা জুলাই, ১৯৬৫) মত প্ৰকাশ কৰিছে “মহামহোপাধ্যায় হৰ প্ৰসাদ শাস্ত্ৰীয়েই সৰ্ব প্ৰথম ধৰ্মঠাকুৰ সম্বন্ধে আলোচনা কৰিছিল। তেওঁৰ মতে এই দেৱতা বঙ্গ দেশত বৌদ্ধ প্ৰভাৱৰ সৰ্বশেষ প্ৰতীক। কিন্তু আজি আৰু সংশয় নাই যে ধৰ্মঠাকুৰ আৰ্য-পূৰ্ব বঙ্গলোকসকলৰ মাজৰ নিজস্ব কল্পনাপ্ৰসূত দেৱ মণ্ডলীৰ এজন। কালৰ সোঁতত এই পূজা পদ্ধতিত আৰ্য, অনাৰ্য, বৈদিক, পৌৰাণিক, বৌদ্ধ প্ৰভৃতি নানা প্ৰভাৱৰ দ্বাৰা জড়িত হৈ পৰিছিল। অসম্ভৱ নহয় ‘ধৰ্ম’ নামটোও হয়তো বৌদ্ধ ধৰ্মৰ দান।” (পৃষ্ঠা ৬৫)

‘ধৰ্মপূজা’ বঙ্গদেশৰ পশ্চিম অঞ্চলৰ ধৰ্মীয় উৎসৱ। বঙ্গ দেশত সাধাৰণতে পতিত ব্ৰাহ্মণ আৰু নিম্ন শ্ৰেণীৰ হিন্দুৰ মাজত এই পূজা প্ৰচলিত। ধৰ্মদেৱতা শূন্যৰূপী। কিন্তু তেওঁ বিষ্ণু, সূৰ্য আৰু যমকো প্ৰতিফলিত কৰিছে। জনশ্ৰুতি মতে এই ‘ধৰ্ম পূজা’ মৰ্যত প্ৰথম ৰামাই পণ্ডিতেই প্ৰচলন কৰিছিল। কোনো কোনোৱে ৰামাই পণ্ডিতক ধৰ্মৰ অৱতাৰ বুলি মানিছিল। ধৰ্মমঙ্গলৰ পণ্ডিতসকলে ৰামাই পণ্ডিতক ধৰ্ম পূজাৰ আদি প্ৰৱৰ্তক বুলি শ্ৰদ্ধা কৰিছিল।

অসমতো ধৰ্ম পূজাৰ প্ৰচলন এসময়ত আছিল বুলি জনা যায়। বৈষ্ণৱ যুগৰ চৰিত পুথিত এই সম্বন্ধে উল্লেখ আছে। চৰিত পুথি সমূহৰ ভিতৰত বিজ্ঞত বিবৰণৰ চৰিত পুথি কথা গুৰু চৰিতত (সম্পাদনা উপেন লেখাৰু, ১৯৫২, পৃষ্ঠা ৪১) ধৰ্ম পূজা সম্বন্ধে উল্লেখ আছে। মহাপুৰুষ শঙ্কৰদেৱৰ সমসাময়িক অনন্ত কন্দলী ধৰ্ম পূজাক আছিল। কিন্তু তেখেতৰ পত্নী পৰম বিষ্ণু ভক্তা আছিল। পূৰাণ, ভাগৱত, বেদ, জ্যোতিষ আদিত অতি পাৰ্গত লেখক আছিল। “ধৰ্ম পূজে সন্তোষ হৈ পূজাত ব্যক্ত হৈ বৃষভ স্বৰূপে গ্ৰহণ কৰে নিতে। তাৰাৰ পত্নীটো মহা শান্তি বিষ্ণুৰ ভক্তা, অশোকাৰ বিপ্ৰপত্নী সদৃশ। আএ নিতে হৰি গুণ গাই গুৰুজনৰ মাহাত্ম্য উৎকৰিষা কৰি থাকে” (পৃষ্ঠা ৪১)। অনন্ত কন্দলীৰ তাতে খং। গতিকে এদিন আন কিবা কথাত লাগি পত্নীগৰাকীক মাৰি সেই খণ্ড হোৰ তুলিলে। সেই দিনাৰ পৰা পূজা কৰেহে কৰে। কিন্তু বৃষভৰূপী ধৰ্মই দেখা নিদিয়ে, পূজা গ্ৰহণ নকৰে। গতিকে অনন্ত কন্দলীৰ মনটো বৰ বিষন্ন। তাকে দেখা পাই পত্নীয়ে কাৰণ সোধাত অনন্ত কন্দলীয়ে উত্তৰ দিছিল, “বোলে কি সোধ, মই যাক পূজিছিলোঁ চৈতন্য ৰূপে লৈছিল। তোক মাৰিবৰ পৰা নোলাই নাখাইও” (পৃষ্ঠা ৪১)। তেতিয়া অনন্ত কন্দলীৰ পত্নীয়ে উত্তৰ দিছিল, “শ্ৰীশঙ্কৰ ৰূপে হৰি অৱতাৰ পূৰ্ণে বৰদ্বাৰাত, ত’ লৈকে গ’ল।” (পৃষ্ঠা ৪১)। পত্নীৰ কথা শুনাৰ লগে লগে অনন্ত কন্দলী বৰদ্বাৰা গৈ মহাপুৰুষ শঙ্কৰদেৱক ভক্তৰ সৈতে হৰি কথা চৰ্চা কৰাতে পাইছিল। পাই আচৰিত হৈছিল। শঙ্কৰদেৱৰ স্থানত “ধৰ্ম পৰি আছে কপিলা গো ৰূপে” (পৃষ্ঠা ৪১)। শঙ্কৰদেৱে অনন্ত কন্দলীক দেখি প্ৰশ্ন কৰিছিল, “মধু ভাৰতী দেখো অহা যায়। তোমাৰ ভাগৱত বক্তা, পণ্ডিতৰ মध्ये শিৰোমণি।” অনন্ত কন্দলীয়ে উত্তৰ দিছিল, “বাপ দৰ্শনৰো কাৰ্য আৰু আমি ধৰ্মক পূজিছিলো। উত্তৰ হৈ পূজা লৈ গ্ৰহণ কৰিছিল। আত দেখো আছেহি। ত’ত পূজোহে হই, নাই” (পৃষ্ঠা ৪১)। শঙ্কৰদেৱে তেতিয়া উত্তৰ

দিছিল। “তোমাৰ যদি হয় নিয়া যক : আমি অনা নাই” (পৃষ্ঠা ৪১)। কিন্তু অনন্ত কন্দলীয়ে কপিলা গাইৰ নোম এডালো লৰাব নোৱাৰি অধোমুখে ঘৰলৈ ঘূৰি গৈছিল।

ওপৰৰ কাহিনীত অলৌকিক কথা থাকিলেও এইটো প্ৰতীয়মান হয় যে শঙ্কৰদেৱৰ সময় অসমত ধৰ্ম পূজাৰ প্ৰচলন আছিল আৰু “প্ৰাচীন আৰু মধ্য যুগৰ ধৰ্ম সাহিত্যত ধৰ্মক বৃষত ৰূপে ধাৰণা কৰা দেখা যায়। পুৰণি ফলি আৰু খোদিত ৰূপতো এই ধাৰণাৰ প্ৰমাণ আছে। (পুৰণি অসমীয়া সমাজ আৰু সংস্কৃতি, মহেশ্বৰ নেওগ, ১৯৭১, পৃষ্ঠা ৪৯)।

পশ্চিম অসমত মনসা পূজাৰ লগতে ধৰ্ম পূজা হয়। তাৰ পূজাৰ আগ দিনা মনসা দেৱীৰ বেদীৰ অলপ অতৰত এটা আম ডালিৰে পূৰ্ণ ঘট আগলি কলপাতত পতা হয় আৰু ইয়াক ধৰ্মৰ ঘট বোলা হয়। মনকৰৰ মনসা গীততো এই ধৰ্ম সম্বন্ধে উল্লেখ আছে।

“পদ্ম পূজিবাক কৰে নাৰীগণ।

সাত পাঞ্চ নৰে কহে ধৰ্মৰ কাহিনী।”

সুকবি নাৰায়ণ দেৱেও নিজ মনসা কাব্যত ধৰ্মৰ কথা উল্লেখ কৰিছে, “ধৰ্মৰ নামত বেউলাই পাৰ মেলিলা।”

স্বতঃপ্ৰধানভাৱে নহলেও আনুষঙ্গিকভাবে আৰু গৃহ দেৱতা ৰূপে ধৰ্ম দেৱতাৰ পূজা বৰ্তমান নামনি অসম অঞ্চলত প্ৰাচীন কালৰে পৰা চলি আহিছে। উজনি অসমত বিয়াৰ হোমৰ ওচৰত কইনাৰ মোমায়েকে ধৰ্মৰ ঘট ধৰা কথাটো আৰু চাওঁতাল আদি অষ্টিক ভাবীলোকৰ বিয়াত কইনাৰ মোমায়েকৰ প্ৰাধান্যৰ কথা এই বিষয়ত বিশেষ মন কৰিব লগা।” (পুৰণি অসমীয়া সমাজ আৰু সংস্কৃতি,, মহেশ্বৰ নেওগ, ১৯৭১ পৃষ্ঠা ৫১)

শূন্য পুৰাণৰ ভাষা পুৰণি কামৰূপী ভাষাৰ লগত মিলে। ব্যাকৰণৰ গঢ়তো মিল থকা দেখা যায় বুলি অসমীয়া বুৰঞ্জীৰ ৰচক যতীন্দ্ৰ নাথ গোস্বামীয়ে উদাহৰণ দাঙি ধৰিছে — ‘সংখ উপজিল কৰ সংখৰ বিচাৰ; পিতাক খুৰাক কৰিলেস্তনমস্কাৰ’ ইত্যাদি।

ডঃ সত্যেন্দ্ৰ নাৰায়ণ গোস্বামীয়েও উল্লেখ কৰিছে “ৰামাই পণ্ডিতৰ দ্বাৰা ৰচিত শূন্য পুৰাণ আন এখনি অসমীয়া-বঙালী ভাষাৰ উমৈহতীয়া নিদৰ্শন দাঙি ধৰা কাব্য। বঙালীসকলে কাব্যৰ ৰূপত এই পুথিৰ তুলনা কৰিব পাৰে। এই পুথিত মহাযানী বৌদ্ধ আৰু তান্ত্ৰিক হিন্দুৰ আচাৰ বিচাৰ, ধ্যান বিশ্বাস আদিৰ প্ৰভাৱ মন

কৰিব লগীয়া। তদুপৰি পুথিত নানা কালৰ কথিত ভাষাৰ প্ৰভাৱ লগতে কৰা যায়। এইবিলাকৰ পৰাও অনুমান হয় সম্ভৱত এই পুথিয়ে লিখিতভাৱে সম্পূৰ্ণ ৰূপ লাভ কৰাৰ আগতে মানুহৰ মুখ বাগৰি কিছু কাললৈ চলি আহিছিল। আৰু ৰামাই পণ্ডিতে ব্যক্তিগতভাৱে কবি প্ৰাণৰ আবেগ তুলি তাকেই নতুন জীৱন দিলে। অৱশ্যে এই কথা একেবাৰে ন দি কোৱাও টান (অসমীয়া সাহিত্যৰ কথা, আগষ্ট, ১৯৯১ পৃষ্ঠা ১৪)।

ৰামাই পণ্ডিতৰ শূন্যপুৰাণক অসমীয়া আৰু বাংলা ভাষাৰ উমৈহতীয়া সাহিত্য সম্পদ হিচাপে অসমীয়া আৰু বাংলা সাহিত্যৰ ইতিহাসত স্থান লাভ কৰিছে।

— ড° মিনতি হাজৰিকা

বড়ু চণ্ডীদাসৰ শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তন

(ঘ)

শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তন ৰাধাকৃষ্ণৰ প্ৰেম-লীলা বিষয়ৰ এখনি শৃঙ্গাৰ ৰসাত্মক কাব্য। এই কাব্যখনি ১৯০৯ -ত বঙলা পণ্ডিত বসন্ত ৰঞ্জন ৰায়ে পশ্চিমবঙ্গৰ বাঁকুৰা জিলাৰ বন-বিষ্ণুপুৰৰ কামৰ কাঁয়াকিলা গাওঁ নিবাসী দেবেন্দ্ৰনাথ মুখোপাধ্যায়ৰ ঘৰৰ পৰা উদ্ধাৰ কৰি তেওঁৰে সম্পাদনাত ১৯১৬ -ত বঙ্গীয় সাহিত্য পৰিষদৰ যোগেদি প্ৰকাশ কৰায়। যদিও কাব্যখনৰ উদ্দেশ্য বিষ্ণু বা কৃষ্ণকে একমাত্ৰ উপাস্য দেৱতা হিচাপে প্ৰতিষ্ঠা কৰা, ৰাধা-কৃষ্ণৰ যুগল মূৰ্তিৰ উপাসক বঙালী বৈষ্ণৱ সমাজৰ বাবেও এই কাব্য ৰুচিসন্মত নহয়।^১ তদুপৰি ইয়াৰ ভাষা ইমান পুৰণি আৰু আঁচহুৱা যে এসময়ত ইয়াক জাল পুথি বুলিও ভবা হৈছিল। সুনীতি কুমাৰ চট্টোপাধ্যায়, সুকুমাৰ সেন আদি ভাষাবিদে ইয়াক প্ৰাচীন আৰু মধ্য বঙলাৰ নিদৰ্শন বুলি মত প্ৰকাশ কৰে।

কাব্যখনৰ প্ৰকৃত নাম কি আছিল জনা নাযায়। মূল পুথিখন অসম্পূৰ্ণ। ৰাধাকৃষ্ণৰ জন্ম বৃত্তান্তেৰে আৰম্ভ হোৱা ‘জন্মখণ্ড’ৰ প্ৰথম দুখিলা পাত নাই। অন্তিম ‘ৰাধা বিৰহ’ খণ্ডটিও “মন কৈলৌ কৰিবৌ মো কংসেৰ বিনাস।। বিৰহে কা...” ইয়াতেই অসমাপ্ত হৈ ৰৈছে। মাজৰ খণ্ডকেইটাৰো ভালেকেইটা পাত নাই। হেৰোৱা পাতকেইখিলাত যদি কাব্যখনৰ কিবা নাম আছিলও, সি কালৰ গৰ্ভত লীন হ’ল। প্ৰাপ্ত অংশত ক’তো ইয়াৰ নাম নাই। চণ্ডীদাস নামৰ কবি এজনৰ দ্বাৰা কৃষ্ণকীৰ্ত্তন ৰচিত হৈছিল বুলি চলি অহা জন-বিশ্বাসৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি কাব্যখনৰ বিষয়-বস্তু মিলা কাৰণে সম্পাদক ৰায়ে ইয়াৰ নাম শ্ৰীকৃষ্ণ-কীৰ্ত্তন ৰাখে।^২

গীতবোৰৰ ভণিতাৰ পৰা কবিৰ দুটা নাম পোৱা যায়— অনন্ত বড়ু আৰু বড়ু চণ্ডীদাস। অনন্ত নামটো কাব্যখনত সাত বাৰমানহে ব্যৱহৃত হৈছে। সঘনাই ব্যৱহৃত হৈছে বড়ু চণ্ডীদাস নামটো। কবিৰ আচল নাম সম্ভৱতঃ অনন্ত, চণ্ডীদাস তেওঁৰ ছদ্মনাম আৰু বড়ু উপাধি। বড়ু শব্দৰ লগত অসমীয়া ‘বৰুৱা’ (বড়ুৱা) শব্দৰ

মিল মন কৰিব লগীয়া। কাব্যত থকা “বড়ুৱাৰ খিয়াৰী বড়ু নাম ধৰি। তাহে বড়ুৱাৰ বোঁ” আদি পদে বৰুৱা শব্দৰ লগত বড়ু শব্দৰ সম্পৰ্ক সূচায় বুলি ক’ব পাৰি।^৮ দুই-এগৰাকী বঙলা সাহিত্যিকে “বটু” (ব্রাহ্মণ) শব্দৰ পৰা বড়ু হৈছে বুলি ক’ব খোজে আৰু বৈষ্ণৱ পদাৱলী ৰচয়িতা দ্বিজ চণ্ডীদাসক বড়ু চণ্ডীদাসেৰে অভিন্ন বুলি ধৰে। কিন্তু বৈষ্ণৱ পদাৱলী আৰু শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তনৰ ভাষাই দুজন পৃথক চণ্ডীদাসৰ অস্তিত্বৰ সাক্ষ্য দিয়ে।

বঙ্গদেশত প্ৰচলিত সপ্তদশ-অষ্টাদশ শতিকাৰ দুটা পৃথক জনশ্ৰুতিৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি পণ্ডিতসকলে বড়ু চণ্ডীদাসক বীৰভূম জিলাৰ নানুৰৰ অথবা বাঁকুৰাৰ পৰা কিছু দূৰত অৱস্থিত ছাতনাৰ লোক বুলি ক’ব খোজে।^৯ ৰায়ে শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তনৰ ভাষাৰে সৈতে চুবুৰীয়া দেশৰ মাধৱ কন্দলী, শঙ্কৰদেৱ, বিদ্যাপতি, জগন্নাথ দাস প্ৰভৃতি কবিসকলৰ ভাষাৰ সাদৃশ্য আছে বুলিছে আৰু শেষৰজন লিপিকাৰৰ হাতত পৰাৰ আগেয়ে পুথিখনে কামৰূপ বা অসম ভ্ৰমণ কৰি অহা বুলি অনুমান কৰিছে।^{১০} সুনীতি কুমাৰ চট্টোপাধ্যায়ে ইয়াৰ ভাষাৰে সৈতে উত্তৰ বঙ্গ আৰু অসমীয়া ভাষাৰ সাদৃশ্যৰ কথা স্বীকাৰ কৰিছে।^{১১} পণ্ডিত বিদ্যানিধিয়ে কৈছে হয় শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তনে অসম দেশ ঘূৰি আহিছে, নহয় অসমীয়া আৰু পুৰণি বঙলা একে আছিল।^{১২} ড° সুকুমাৰ সেন, ৰমেশ চন্দ্ৰ দত্ত প্ৰমুখ্যে বঙলা সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী প্ৰণেতাৰূপে পঞ্চদশ শতিকাৰ আগতে পূৰ্ণাঙ্গ ৰূপত কোনো বঙলা সাহিত্য ৰচিত হোৱা নাছিল বুলি মত প্ৰকাশ কৰিছে। দত্তৰ মতে ৰামায়ণ-মহাভাৰতৰ ভাঙনিৰে পঞ্চদশ শতিকাতহে বঙলা সাহিত্যৰ শুভাৰম্ভ হয়।^{১৩} আন হাতে ত্ৰয়োদশ-চতুৰ্দশ শতিকাত হৰিবৰ বিপ্ৰ, মাধৱ কন্দলী আদি কবিৰ হাতত অসমীয়া ভাষা-সাহিত্যই পূৰ্ণাঙ্গ ৰূপ লাভ কৰে। তদুপৰি বঙ্গদেশৰ পুথি এখনে অসম দেশ ভ্ৰমণ কৰি অসমীয়া ভাষাৰ বৈশিষ্ট্য লৈ আকৌ বঙ্গদেশলৈ উভতি যোৱা কথাটোও কোনোপধ্যে বিশ্বাসযোগ্য নহয়। এনে দাবীৰ কোনো বৈজ্ঞানিক ভিত্তিও নাই।

শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তনত পৰ্যাপ্ত পৰিমাণে অসমীয়া ভাষাৰ বৈশিষ্ট্য ৰক্ষিত হোৱালৈ চাই আৰু তেওঁৰ সমসাময়িক কোনো বঙালী কবি এতিয়ালৈকে নোলোৱালৈ চাই বড়ু চণ্ডীদাসক কামৰূপৰ লোক বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। কামৰূপৰ পৰা যোৱা কোনো পণ্ডিত-সজ্জনৰ জৰিয়তে এই পুথি বঙ্গদেশৰ বিষ্ণুপুৰ পাবগৈ পাৰে।

কাব্যখনিত বড়ু চণ্ডীদাসে তেওঁৰ কাল আৰু বংশ পৰিচয় দি যোৱা নাই। পৰৱৰ্তী কালত ৰচিত চণ্ডীদাস চৰিত, বাসলী মহাশ্বা আৰু চণ্ডীদাস সম্পৰ্কীয়

বিভিন্ন আলোচনাৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি ৰায়ে কবিৰ আনুমানিক সময় আৰু বংশ পৰিচয় দিছে, যদিও সেয়া তেওঁৰ মতেই সন্দেহাতীত নহয়।^{১৬} বৰ্তমানলৈকে শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্তনৰ এখন প্ৰতিলিপিহে আৱিষ্কৃত হৈছে। মিলৰ কাগজৰ দৰে পাতল কাগজত এই পুথিখন লেখা হৈছে, ইয়াৰ চিয়াঁহীও অনুজ্জ্বল। পুথিখনত ‘মজুৰী’, ‘মজুৰিয়া’ৰ দৰে আৰবী-পাৰ্চী মূলৰ শব্দৰ ব্যৱহাৰে পুথিখনৰ প্ৰাচীনতা সম্পৰ্কে সন্দেহ জন্মায়। এইবোৰ কথালৈ লক্ষ্য কৰি ড° সুকুমাৰ সেনে ইয়াৰ সময় অষ্টাদশ শতিকাৰ শেষ ভাগ বুলি ক’ব খোজে।^{১৭} লিপিবিদ ৰাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যায়ে ইয়াৰ সময় খৃষ্টীয় চতুৰ্দশ শতিকাৰ প্ৰথমার্ধ বুলি মত প্ৰকাশ কৰিছে।^{১৮} আন হাতে, মহম্মদ শহীদুল্লাহ, ডঃ সুনীতি কুমাৰ চট্টোপাধ্যায় প্ৰমুখ্যে ভাষাবিদসকলে ইয়াৰ ৰচনা কাল চতুৰ্দশ-পঞ্চদশ শতিকা বুলি সিদ্ধান্ত কৰিছে।^{১৯} হৰপ্ৰসাদ শাস্ত্ৰীয়ে ইয়াৰ ৰচনাকাল আৰু কবিৰ সময় জয়দেৱৰো আগৰ বুলিব খোজে। পিচত এই মত অগ্ৰাহ্য হয় যদিও শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্তনৰ ভাষা অসমীয়া-বঙলা পৃথক হৈ ওলোৱাৰ প্ৰাক-কালৰ ভাষা^{২০} বুলি কৰা ডঃ কাকতিৰ মতৰ সৈতে এই মতৰ মিল আছে। এইবোৰ কাৰণতে বড়ু চণ্ডীদাস আৰু তেওঁৰ কাব্যৰ ৰচনা কাল ত্ৰয়োদশ-চতুৰ্দশ শতিকাৰ পাচলৈ আনিব নোৱাৰি।

কাব্যখনিত তেৰটা খণ্ড আছে— জন্ম, তাম্বুল, দান, নৌকা, ভাৰ, ছত্ৰ, বৃন্দাবন, কালীয় দমন, বস্ত্ৰ হৰণ, হাৰ, বাণ, বংশী আৰু ৰাধা-বিবহ খণ্ড। পূৰ্বৱৰ্তী খণ্ডৰ লগত পৰৱৰ্তী খণ্ডৰ অনেক ঠাইত সংযোগ-সূত্ৰ আছে যদিও প্ৰকৃততে প্ৰতিটো খণ্ডই স্বয়ংসম্পূৰ্ণ। য’তেই সংযোগ-সূত্ৰ হেৰাই গৈছে, ত’তেই কবিয়ে নিজৰ উক্তি অথবা সংস্কৃত শ্লোকৰ সহায়েৰে সঙ্গতি ৰক্ষা কৰিছে। কাব্যখনিত মুঠ ১৬১ টা শ্লোক আৰু গীতত সৰ্বমুঠ ৪১৮ টা পদ আছে।^{২১} কিছুমান শ্লোকত কবিয়ে চৰিত্ৰৰ কাৰ্যৰ নিৰ্দেশ দিছে বা মানসিক অৱস্থাৰ বৰ্ণনা কৰিছে আৰু কিছুমানত নিজৰ মনোভাৱ ব্যক্ত কৰিছে। গীতবোৰৰ ভাগ দুটা— ধ্ৰুবক আৰু পদ। প্ৰথম ছশাৰী পদক ধ্ৰুবক বোলা হয়। প্ৰতিটো গীতৰ আৰম্ভণিতে ৰাগ, তাল আৰু কেতিয়াবা গীত গোৱা সময় তথা ৰীতি (যেনে— দণ্ডক, চিত্ৰক, লগনী, প্ৰকীৰ্ণক) আৰু ঠাটৰ উল্লেখ আছে।^{২২} ইয়াৰ পৰা সুৰ দি গীতবোৰ গাবৰ বাবে ৰচনা কৰা হৈছিল বুলি ধৰিব পাৰি। এটা পুৰুষ আৰু একাধিক নাৰী চৰিত্ৰ থকা গুণে কোনো কোনোৱে ইয়াক বুয়ুৰ শ্ৰেণীৰ শৃঙ্গাৰ ৰসাত্মক গীতিকাব্য বুলিব আৰু উত্তৰ বঙ্গৰ ‘জাগেৰ গান’ৰ সৈতে মিল দেখুৱাব খোজে।^{২৩}

আখ্যান ভাগৰ মূল হিচাপে কোনো এখন পুৰাণ বা উপপুৰাণলৈ আঙুলিয়াব নোৱাৰি। জন্ম, বৃন্দাবন, কালীয় দমন, বস্ত্ৰহৰণ আৰু ৰাধাবিবহ খণ্ডত ভাগৱত, বিষ্ণু আৰু ব্ৰহ্মবৈৱৰ্ত পুৰাণৰ ছাঁ পৰিছে বুলি ক'ব পাৰি। কিন্তু তাম্বুল, দান, নৌকা, ভাৰ, হাৰ, ছত্ৰ, বংশী আৰু বাণ খণ্ডৰ উৎস সম্পৰ্কে জনা নাযায়। সুকুমাৰ সেনৰ মতে এই খণ্ডকেইটা হৰিবংশ নামৰ কোনো লৌকিক পুৰাণ, লৌকিক কাহিনী অথবা সম্পূৰ্ণ কবি-কল্পনাৰ সহায়ত ৰচনা কৰা হৈছে।^{১৭} কাব্যখনিৰ বিভিন্ন খণ্ডৰ আখ্যান ভাগ তলত চমুকৈ বৰ্ণোৱা হৈছে :

দেৱতাসকলৰ প্ৰাৰ্থনাক্ৰমে কংসক বধ কৰিবলৈ নাৰায়ণে পঠোৱা 'ধল-কাল' দুডাল কেশৰ পৰা বলোৰাম আৰু কৃষ্ণৰ জন্ম, কৃষ্ণক মৰ্দ্দিবলৈ কংসৰ চেষ্টা, যোগমায়াৰ আকাশ-বাণী, কংসৰ পুতনা আদিক প্ৰেৰণ আৰু কৃষ্ণৰ দ্বাৰা নিধন আৰু কৃষ্ণৰ মনোভিলাষ পূৰণৰ কাৰণে পদ্মাৰ গৰ্ভত লক্ষ্মীৰ ৰাধাকপে জন্ম আৰু নপুংসক আইহনৰ পত্নীত্ব গ্ৰহণ, ৰাধাৰ তত্ত্বাবধায়িকাৰূপে বৃদ্ধা বড়ায়িৰ নিযুক্তি জন্ম খণ্ডৰ বৰ্ণনীয় বিষয়। তাম্বুল খণ্ডত বড়ায়ি আৰু সখীসকলৰ সৈতে ৰাধাৰ মথুৰা-যাত্ৰা, বাট ভুল কৰি বড়ায়িৰ বৃন্দাবন প্ৰৱেশ আৰু কৃষ্ণৰ সাক্ষাৎ লাভ, বড়ায়িৰ মুখে ৰাধাৰ ৰূপ-গুণৰ বৰ্ণনা শুনি কৃষ্ণৰ ব্যাকুলতা, গুৱাপাণ আৰু ফুল দি বড়ায়িৰ যোগেদি ৰাধালৈ কৃষ্ণৰ প্ৰেম-নিবেদন আৰু ৰাধাৰ দ্বাৰা প্ৰেম প্ৰত্যাখ্যানৰ বৰ্ণনা কৰা হৈছে। দান খণ্ডত, পথ আৰু হাটৰ দান বা শুদ্ধ আদায়কাৰী হৈ কৃষ্ণই দধি-দুগ্ধৰ লগতে ৰাধাৰ প্ৰতিটো অঙ্গ আৰু আভৰণৰ বাবে শুদ্ধ দাবী কৰি প্ৰেমালিঙ্গনৰ বিনিময়ত ৰেহাই দিয়াৰ প্ৰস্তাৱ আগ বঢ়োৱাত তেওঁ অমান্তি হয়, কিন্তু কৃষ্ণই বলেৰে মিলন-সুখ উপভোগৰ বৰ্ণনা দিয়া হৈছে। নৌকা খণ্ডত কৃষ্ণই নাৱৰীয়া হৈ যমুনা পাৰ কৰোঁতে নাও বুৰোৱাৰ ভয় দেখুৱাই ৰাধাক আত্মসমৰ্পণ কৰিবলৈ বাধ্য কৰে। ভাৰখণ্ডত সুৰতিৰ আশা দি কৃষ্ণক দধি-দুগ্ধৰ ভাৰ বোৱায় আৰু একে ধৰণৰ লোভ দেখুৱাই ছত্ৰ খণ্ডত ৰাধাৰ ছাতি ধৰিবলৈ জোৰ কৰে। কিন্তু কৃষ্ণই নিজকে হৰি, হৰ আৰু মহাযোগী বুলি কৈ ছাতি নধৰে। তেওঁৰ ঈশ্বৰত্ব নামানি ৰাধাই 'সাম্বৰ (সোউদৰ) ধন-সম্পত্তি দেখি চকু পূৰি মৰা চোৰ' বুলি কৃষ্ণক ঠাট্টা কৰে। ৰাঁহীৰ সুৰ শুনি ৰাধা আদি গোপীসকল বৃন্দাবনলৈ অহাত সকলোৰে মনৰ কামনা পূৰণ কৰি কৃষ্ণই ৰাধাৰ 'চৰণ-পঙ্কজ' মূৰত লৈ মদন-বিকাৰ দূৰ কৰিবলৈ বৃন্দাবন খণ্ডত অনুৰোধ কৰে। কালীয় দমন খণ্ডত কালীনাগৰ দংশনত অচেতন কৃষ্ণই বলোৰামৰ স্তুতিত চৈতন্য লাভ কৰি তাক সপৰিয়ালে দক্ষিণ

সাগৰলৈ পঠায়। বস্ত্ৰহৰণ খণ্ডত জলক্ৰীড়াৰতা গোপীসকলে পাৰত খহাই থোৱা সকলো বস্ত্ৰ কৃষ্ণই চুৰি কৰা ৰাধাৰ অনুৰোধত ঘূৰাই দিয়ে যদিও তাইৰ হাৰডাল লুকুৱাই থয়। যশোদাৰ আগত গোচৰ দিয়াত তেওঁ কৃষ্ণক তিৰস্কাৰ কৰি ভৱিষ্যতে তেনে নকৰিবলৈ হাৰ খণ্ডত সৱধান কৰি দিয়ে। বাণ খণ্ডত অহঙ্কাৰী ৰাধাৰ অহঙ্কাৰ চূৰ্ণ কৰিবলৈ কৃষ্ণই পুষ্পবাণ মাৰি ৰাধাক অচেতন কৰাত বড়ায়ি আৰু সখীসকলে চেতন কৰিবলৈ অনুৰোধ কৰে আৰু তেওঁ চেতন কৰি দিয়ে। বংশী খণ্ডত বড়ায়িয়ে কৃষ্ণবিৰহিনী ৰাধাৰে সৈতে গৈ বৃন্দাবনত বাঁহী বজাই থকা কৃষ্ণক ‘নিদ্ৰাউলি’ মন্ত্ৰেৰে অচেতন কৰি ৰাধাৰ হতুৱাই বাঁহী চুৰ কৰাই, ৰাধাৰ কথা অমান্য নকৰাৰ প্ৰতিশ্ৰুতি আদায় কৰি বাঁহী ঘূৰাই দিয়ায়। অন্তিম খণ্ডত বিৰহ-কাঁতাৰ ৰাধাৰ বড়ায়িৰে সৈতে বৃন্দাবন গমন, ৰাধাৰ দ্বাৰা প্ৰেম-নিবেদন, ৰাধা-কৃষ্ণৰ মিলন, শ্ৰান্ত ৰাধাৰ কৃষ্ণৰ উৰুত শয়ন আৰু এই ছেগতে কৃষ্ণৰ মথুৰা গমন, সাৰ পাই কৃষ্ণক নেদেখি ৰাধাৰ ব্যাকুলতা, বড়ায়িৰ মথুৰা-গমন, কৃষ্ণৰ গোকুল প্ৰত্যাৱৰ্তনৰ অনিচ্ছা আৰু কংসক বধিবলৈ সিদ্ধান্ত বৰ্ণিত হৈছে। পুথিখন অসমাপ্ত কাৰণে পাচৰ ঘটনা জানিবৰ উপায় নাই।

শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্তনৰ ভাষা : দেবেন্দ্রনাথ বেজবৰুৱা প্ৰমুখ্যে সাহিত্য বুৰঞ্জী প্ৰণেতা সকলে কাব্যখনৰ ভাষাৰ বিষয়ে চমু আলোচনা কৰিছে। অসম সাহিত্য সভা পত্ৰিকা আৰু কামৰূপ অনুসন্ধান সমিতিৰ পত্ৰিকাত দুটা প্ৰবন্ধত ডিম্বেশ্বৰ নেওগে পুথিখনৰ ভাষাৰ অসমীয়াত্বৰ সম্পৰ্কে আলোচনা কৰিছে।^{১২} ড° কাকতিয়ে ইয়াৰ ভাষা অসমীয়া ভাষাৰ প্ৰাক-ৰূপ বুলিছে যদিও বিস্তৃত আলোচনা কৰা নাই। কাব্যখনৰ ভাষাৰ বিষয়ে বিস্তাৰিত আলোচনা কৰিছে ড° উপেন্দ্ৰ নাথ গোস্বামীয়ে। তেওঁ অসমীয়া ভাষাৰ বিভিন্ন স্তৰৰ সৈতে শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্তনৰ ভাষাৰ সাদৃশ্য দেখুৱাই ইয়াক “পূৰ্ব ভাৰতৰ উমৈহতীয়া সম্পদ” বুলিছে।^{১৩}

দুটা ভাষাৰ মিল-অমিল বিচাৰ কৰিবলৈ হ’লে ভাষা দুটাৰ সৰ্বনাম, শব্দবিভক্তি, ক্ৰিয়াপদ আৰু ক্ৰিয়াবিভক্তিবোৰৰ পৰীক্ষা কৰিব লাগিব। কাব্যখনত ব্যৱহৃত সৰ্বনামবোৰ এনে ধৰণৰ—

ব্যক্তিবাচক সৰ্বনাম :

কৰ্তাকাৰক : ১ম পুৰুষ (এক বচন) মো, মৌ, মোএ, মোএঁ, আন্দো; (বহু বচন) আন্দোসব, আন্দোৰা; ২য় পুৰুষ (এক) তো, তৌ, তোএ, তোএঁ, তুম্বা, তোন্দো; (বহু) তোন্দোসব, তোন্দোৰা; ৩য় পুৰুষ : সে, তে, তেহে ইত্যাদি।

কৰ্মকাৰক : ১ম পুং আন্মাক; ২য় পুং তোক, তোন্মাক; ৩য় পুং তাক, তাহাক ইত্যাদি।

সম্বন্ধ পদ : ১ম পুং (এক) মোৰ, মোহোৰ; (বহু) আন্মাৰ; ২য় পুং তোৰ, তোহোৰ, তোন্মাৰ; ৩য় পুং তাৰ, তাহাৰ ইত্যাদি।

অধিকৰণ কাৰক : ১ম পুং আন্মাত; ২য় পুং তোন্মাত; ৩য় পুং তাহাত ইত্যাদি।

ব্যক্তিবাচকৰ বাহিৰেও কাহাক, কোন, কেহো, আপন, আপুনী আদি সৰ্বনামে শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তনৰ ভাষা যে অসমীয়াৰ ওচৰ চপা তাকে প্ৰমাণ কৰে।

শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তনৰ শব্দবিভক্তিবোৰ অসমীয়াৰ দৰে— ১ম বিভক্তি— এ, ২য়াত - ক, ৩য়াত - বে, - এৰে, ৬ষ্ঠীত - ৰ, আৰু ৭মীত - ত পাওঁ। পুৰণি অসমীয়া আৰু কামৰূপী উপভাষাৰ দৰে ইয়াতো - ক বিভক্তিতে অথবা - কৰ পাচত লাগি বা লেগি পৰসৰ্গেৰে সম্প্ৰদান বা নিমিত্ত কাৰকৰ অৰ্থ প্ৰকাশ কৰা হয়; যেনে — যমুনাক যাই, তাক লাগি ইত্যাদি। পুৰণি অসমীয়াত হস্তে পৰসৰ্গেৰে অপাদান অৰ্থ প্ৰকাশ কৰাৰ দৰে এই কাব্যতো ‘হতৈ’, বা ‘হৈতৈ’ পৰসৰ্গেৰে অপাদান কৰা হয়; যেনে— এৰে হতৈ, আজি হৈতৈ ইত্যাদি। অসমীয়াত এ বিভক্তিতে প্ৰায়বোৰ কাৰকৰ অৰ্থ প্ৰকাশ কৰাৰ নিচিনাকৈ শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তনতো কৰা হয়; যেনে— বিধাতাএ (কৰ্তা), মোৰে (কৰ্ম), উপাএ (কৰণ), হাটে (নিমিত্ত), সখি মুখে (অপাদান) আৰু পুণ্যে (অধিকৰণ)। কাব্যখনৰ শূন্য বিভক্তি প্ৰয়োগৰ নীতিও অসমীয়াৰে সৈতে একে।

শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তনৰ ক্ৰিয়াপদ আৰু ক্ৰিয়াবিভক্তিবোৰ কাল আৰু পুৰুষ অনুযায়ী এনেকুৱা—

নিত্য বৰ্ত্তমান (১ম পুং) কৰো, কৰি, জাওঁ, জানো, পাওঁ, দেউ, দেওঁ আদি; (২য় পুং) কৰ, কৰহ, দেহ, হঅ, জা, জাহা, দে, আছ ইত্যাদি; (৩য় পুং) কৰে, কৰএ, পীএ, পোড়ে, হএ, আছে, আছএ আদি;

অনুজ্ঞা (২য় পুং) কৰিউ, কহ, খাউ, দে আদি; (৩য় পুং) পড়ু, পড়ুক, হউ, হউক, জীআউক আদি;

স্বৰূপ ভূত (১ম পুং) দিলোঁ, দেখিলোঁ, শুনিলোঁ, পাইলোঁ, লহিলোঁ, কহিলোঁ, কৰিলোঁ, কৈলোঁ, হয়িলাহোঁ আদি; (২য় পুং) কৰিলি, কৈলি, চলিলি, হৈলা, ভৈলা, উপজিলা আদি; (৩য় পুং) কৈলে, কহিলে, গেলি, গাইল, ভৈল, কাটিলেক, কহিলান্ত আদি;

পূৰ্ণ ভূত (৩য় পুং) আনিছিল, আলিছিল (আহিছিল) আদি;
 ভৱিষ্যত (১ম পুং) কৰিব, জাইব, কৰিবোঁ, জাইবোঁ, খাইবোঁ আদি; (২য়
 পুং) জাইবি, দিবি, পাইবে, কৰিবে আদি; (৩য় পুং) আসিবেক, জাইব, লইব আদি।
 যৌগিক ক্ৰিয়া : মৰি যাহা, কাটি নিলে, লইআঁ দিল আদি।
 নঞর্থক ক্ৰিয়া : নহে, নাহি, নহোঁ, নাজাএ, নাজানো, নাদেখিলোঁ, নাকৈলে,
 নাপাইআঁ আদি।

অসমাপিকা ক্ৰিয়া : থাকি, কৰি, কৰিআঁ, কৰিলে, বাইলে, দিবাক,
 ধৰিবাক, জীৱাৰ, জাইবাৰ আদি।

কৃদন্ত ৰূপ : থাকিতে, বুঝিতে, কাটিল (ঘাতত) আদি।

নাম ধাতু : আদেশিল, খণ্ডিব আদি।

কাব্যখনৰ নিৰ্দিষ্টতাৰাচক -জন, -গুটি, -খানি আদি; বহু বচনৰ -সব, -
 গণ আদি প্ৰত্যয়ে আৰু একেটা শব্দকে পুনৰুক্তি কৰা (যেনে— বাৰে বাৰে, সত্যে
 সত্যে, মনে মনে) দস্তাবে অসমীয়া ভাষাৰ লগত কাব্যখনৰ সম্বন্ধ দৃঢ় কৰি তোলে।

পুৰণি অসমীয়াৰ দৰে এই কাব্যতো স্বৰৰ হ্রস্ব-দীৰ্ঘতা আৰু ণ/ন, চ/ছ,
 জ/য, শ/ষ/স ৰ ব্যৱহাৰৰ ধৰাবন্ধা নিয়ম নাই; যেনে— নাহি/নাহী,
 অনুমতি/আনুমতী; মন/মণ, শূণ/সুণ, জাব/যাব আদি। ধ্বনিতত্ত্ব আৰু লিপিতত্ত্বৰ
 ক্ষেত্ৰত মন কৰিব লগীয়া বিশেষত্ব হ'ল ইয়াৰ মূল প্ৰতিলিপিত পেটকটা 'ৰ' আৰু
 'ৱ'ৰ ব্যৱহাৰ, যিটো ছপা পুথিত নাই। মহাপ্ৰাণীভৱন (সুখান, হাখী আদি), স্বৰ
 ভক্তি (পৰভাত, সবদ, মৰম, যতন আদি), বৰ্ণবিপৰ্যয় (হুদ > দহ) আদি ধ্বনিতাত্ত্বিক
 প্ৰক্ৰিয়াৰ ক্ষেত্ৰতো কাব্যখনৰ ভাষাৰে সৈতে অসমীয়াৰ মিল আছে।

কাব্যখনত ব্যৱহৃত তপত, অলপ, আজি, উজান, টুটা, বিচনি, দুআৰ,
 নৈ, নেআলি, সেআলি, খেমা, বুঢ়া, বুঢ়ী, তিৰী, বিআৰী, পো, নাতিনী, ঘৰিয়াল,
 লাজ, ঘৰ, পানী, কাকুতী, তেস্তুলি, হিয়া আদি অসংখ্য খাচ অসমীয়া শব্দই
 শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তন যে “প্ৰাচীন বঙলাৰ খাটি নমুনা” এই দাবীৰ অসত্যতা প্ৰতিপন্ন কৰে।
 গঠন কালৰ চৰ্যাগীতৰ দৰেই শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তনো উদ্ভৱকালীন অসমীয়া ভাষাৰ এক
 অমূল্য নিদৰ্শন।

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- ১। ড° সুকুমাৰ সেন, *বাংলা সাহিত্যেৰ ইতিহাস*, পৃঃ ১৩৫
- ২। বসন্ত ৰঞ্জন ৰায় (সম্পা), *শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তন*, ‘ভূমিকা’, ১৯৬৪ পৃঃ ১১
- ৩। বাংলা সাহিত্যেৰ ইতিহাস, পৃঃ ১৩৯
- ৪। ড° সত্যেন্দ্ৰ নাথ শৰ্মা, *অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত*, পৃঃ ৮৬.
- ৫। বাংলা সাহিত্যেৰ ইতিহাস, পৃঃ ১৭৮
- ৬। “The genuineness of the work is borne out by the remarkably archaic character of the forms which agree with such widely distant dialects as North Bengali and Assamese”. *Oirgin Develoment of Bangali Language*, p. 140
- ৭। বঙ্গীয় সাহিত্য পৰিষদ পত্ৰিকা, ১৩২৬ বি-ই
- ৮। R. C. Dutta, : *Literature of Bengal*. Preface, p. IV
- ৯। *শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তন*, “ভূমিকা”, পৃঃ ১১
- ১০। বাংলা সাহিত্যেৰ ইতিহাস, পৃঃ ১৩৪
- ১১। “শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তন পুথিৰ লিপিকাল”, ৰায় সম্পাদিত *শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তন*, পৃঃ ২
- ১২। ড° সুনীতিকুমাৰ চট্টোপাধ্যায়. *বাংলা ভাষাতত্ত্বেৰ ভূমিকা*. পৃঃ ২২-২৩
- ১৩। *Assamese, Its formation and Development*, p 11-12.
- ১৪। অমিত্ৰসূদন ভট্টচাৰ্য (সম্পা), *শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তন*, পৃঃ ১২০
- ১৫। ড° অসিত কুমাৰ বন্দ্যোপাধ্যায়, *বাংলা সাহিত্যেৰ ইতিবৃত্ত*, পৃঃ ৩৯৮
- ১৬। প্ৰাচ্যগ্ৰন্থ, পৃঃ ৩৯৭-৩৯৮
- ১৭। *বাংলা সাহিত্যেৰ ইতিহাস*, পৃঃ ১৪১-১৪২
- ১৮। ডিম্বেশ্বৰ নেওগ, “শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তনৰ ভাষা বঙলা নে?” *অসম সাহিত্য সভা পত্ৰিকা*? ১১৬১ শকাব্দ;— “Shri Krishna Kritana and its Language.” *Journal of the Assam Research Society*, 1941
- ১৯। ড° উপেন্দ্ৰনাথ গোস্বামী, *ভাষা আৰু সাহিত্য*, পৃঃ ১১-১২

অষ্টম অধ্যায়

হেম সৰস্বতী

(ক)

অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী লিখকসকলৰ ভিতৰত কালিৰাম মেধি, ড° সত্যেন্দ্ৰ নাথ শৰ্মাই হেম সৰস্বতীক ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ শেষ নাইবা চতুৰ্দশ শতিকাৰ প্ৰথমার্ধৰ কবি বুলি নিৰ্ধাৰণ কৰিছে। ডিম্বেশ্বৰ নেওগে কবিক ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ বুলি ভাবে। কনকলাল বৰুৱা, দেৱানন্দ উৰালিয়ে হেম সৰস্বতীৰ কাল চৈধ্য শতিকাৰ মাজ ভাগতকৈ আগৰ নহয় বুলি বিশ্বাস কৰে। ‘হেম সৰস্বতী’ নামৰ প্ৰবন্ধত হেম গোস্বামীয়ে এডৱাৰ্ড গেইটৰ *A History of Assam*ৰ তথ্যৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি কবিৰ পৃষ্ঠপোষক ৰজা দুৰ্লভনাৰায়ণক ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ শেহ ভাগৰ ৰজা বুলি মত প্ৰকাশ কৰিছে।

এতিয়ালৈকে হেম সৰস্বতীয়ে ৰচনা কৰা দুখন পুথি পোৱা গৈছে। এখন সৰু পুথি *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ* (কালিৰাম মেধি সম্পাদিত পুথিত ‘প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ’ আছে) আৰু বৰ্তমানেও ছপা হৈ নোলোৱা *হৰগৌৰী সম্বাদ*। *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*ত উল্লেখ থকা মতে কবিৰ পৰিচয় হ’ল :

কমতামণ্ডল, দুৰ্লভনাৰায়ণ, নৃপবৰ অনুপাম।

তাহান ৰাজ্যত, ৰুদ্ৰসৰস্বতী, দেৱযানী কন্যা নাম।।

তাহান তনয় হেম সৰস্বতী, ধ্ৰুৱৰ অনুজ ভাই।

পদবন্ধে তেহো, প্ৰচাৰ কৰিলা, বামন পুৰাণ চাই।।’

কমতামণ্ডলৰ ৰজা দুৰ্লভনাৰায়ণ। কিন্তু *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*ৰ পৰা কবি হেম সৰস্বতীক ৰুদ্ৰসৰস্বতী নে দেৱযানীৰ পুত্ৰ তাক স্পষ্টকৈ নিৰ্ধাৰণ কৰিবলৈ অসুবিধা। কাৰণ, হেম সৰস্বতীৰ ৰচিত আনখন গ্ৰন্থ *হৰগৌৰী-সম্বাদ* কবিৰ ভণিতা বেলেগ :

ভূপ দুৰ্লভনাৰায়ণ পাত্ৰ পশুপতি-সূত
 সৰ্বশাস্ত্ৰে পণ্ডিত সূজান
 তাহাৰ তনয় চাৰি ধনঞ্জয় আদি কৰি
 ধনৰ ভৈল কুলত প্ৰধান
 অপৰ হেমন্ত কবি হৰগৌৰীপদ সেৱি
 হেম সৰস্বতী ভৈল নাম।।২

কমতামণ্ডলৰ ৰজা দুৰ্লভনাৰায়ণ আৰু তেওঁৰ পাত্ৰ (বিষয়া) হল পশুপতি-সূত অৰ্থাৎ পশুপতিৰ পুত্ৰ। ‘সূজান’ ব্যক্তিজনাক কবিৰ পিতৃৰূপে স্বীকৃতি দিব লাগিলে তেওঁৰ চাৰিজন পুত্ৰ হ’ব— ধনৰ, ধনঞ্জয়, হেমন্ত আৰু এজন। সেইমতে, হেম সৰস্বতী নিশ্চয় পশুপতিৰ নাতি। সেই সময়ৰ ৰীতি অনুসৰি প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰৰ পৃষ্ঠপোষক ৰজা দুৰ্লভনাৰায়ণৰ ঠিক পিচতে গুৰুত্ব পোৱা ব্যক্তিজন হল কবিৰ পিতৃ গৰাকী। হৰগৌৰী-সম্বাদত ৰজাৰ পিচতে গুৰুত্ব পাইছে ৰজাৰ পাত্ৰ পশুপতি-সূতে। দুয়োখন কাব্যৰ কবি-পৰিচয়ৰ মূল কথাখিনি একেলগ কৰি ফঁহিয়াই চালে দেখা যাব যে ৰুদ্ৰ সৰস্বতী আৰু পশুপতি-সূতৰ অৱস্থান সম পৰ্যায়ৰ। সেই বিচাৰত হেম সৰস্বতীক ৰুদ্ৰ সৰস্বতী বা পশুপতিৰ পুত্ৰৰ পুত্ৰ বুলি ধৰি লোৱাত আপত্তি নাথাকে। হৰগৌৰী-সম্বাদত পশুপতিৰ পুত্ৰজন সৰ্বশাস্ত্ৰত পণ্ডিত সূজান (জ্ঞানী) আৰু তেৱেঁই হেম সৰস্বতীৰ পিতৃ হ’ব। এইখিনিতে এটি উল্লেখনীয় বিষয়লৈ দৃষ্টি আকৰ্ষণ কৰিব পাৰি যে প্ৰাক্-শঙ্কৰী যুগৰ আন এজন পৰৱৰ্তী অসমীয়া কবি কবিৰত্ন সৰস্বতীয়ে জয়দ্রথ বধৰ কাহিনী ৰচনা কৰোঁতে হেম সৰস্বতীয়ে অনুসৰণ কৰা পৰম্পৰা এটি অটুট ৰাখি পৃষ্ঠপোষক ৰজা ইন্দ্ৰনাৰায়ণৰ পিচতে কবিৰ পিতৃ তথা ৰাজবিষয়া চক্ৰপাণিক ‘পণ্ডিত-তিলক, কুল-প্ৰকাশক নিষ্কলঙ্ক যেন শশী’ বুলি প্ৰশংসা কৰি কবি-পৰিচয় দাঙি ধৰিছে। বাস্তৱিকৈ, দুয়োজন কবিৰ পিতৃ দুজনো পণ্ডিত আৰু ৰাজবিষয়া আছিল। হৰগৌৰী-সম্বাদ পুথিখনৰ সমীক্ষাত্মক পাঠ প্ৰকাশ নোহোৱা পৰ্যন্ত এই বিষয়ত কোনো সিদ্ধান্তত উপনীত হোৱাটো সমীচীন নহ’ব।

একেজন কবি-পৰিচয় সম্পৰ্কত একেজন কবিৰে ৰচনা দুখন কাব্যৰ সামঞ্জস্য নথকাটো ৰহস্যজনক। ভিন্ ভিন্ নকলকাৰৰ হাতত পৰি একেখন পুথিতে অদ্ভুত অদ্ভুত আৰু কেতিয়াবা বিপৰীত তথ্য সংযোজিত হোৱাটো

একো অসম্ভৱ নহয়। এই পৰিপ্ৰেক্ষিতত, কঠোৰ সমালোচক ডিম্বেশ্বৰ নেওগৰ মন্তব্য প্ৰণিধানযোগ্য : ‘এতিয়ালৈকে পোৱা সাঁচিপতীয়া অসমীয়া পুথিৰ ভিতৰত যে দুশ-আঢ়ৈশ বছৰৰ আগৰ লিপি়েই পাৰলৈ নাই, অন্ততঃ পূৰ্ববৈষ্ণৱ বোলা সদৌ সাহিত্যই যে বৈষ্ণৱ সাহিত্যৰ ভিতৰেদি চালনী সৰকা দি আহিছে, বিশেষকৈ বৈষ্ণৱ যুগৰ অসমীয়া সমাজত অবৈষ্ণৱ কথা বুলিলেই অধৰ্ম বুলি বিবেচিত হোৱা হেতুকে সম্পাদকৰ ইচ্ছাকৃত ভাবত বা লিপিকাৰৰ অজ্ঞাতসাৰে সেইবোৰ পুথি বৈষ্ণৱ গঢ়লৈ ৰূপান্তৰিত হৈছিল তাত কোনো সন্দেহ নাই।’ (পৃঃ ১৭২, নতুন পোহৰত অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী, ১৯৬৪।)

হেম সৰস্বতীৰ পিতৃ যিজনেই নহওক কিয়, তেওঁৰ পিতৃ আৰু কবি নিজে যে পণ্ডিত ব্যক্তি আছিল ই ধূৰূপ। বিশিষ্ট পণ্ডিত ব্যক্তিকেহে ‘সৰস্বতী’ উপাধি দিয়া হৈছিল। এইখিনিতেই, কোঁচৰজা নৰনাৰায়ণে ‘অসমীয়া ব্যাস’ বুলি জনাজাত মহাভাৰতৰ কবিক ‘ৰাম সৰস্বতী’ উপাধি প্ৰদান কৰাটোৱেই প্ৰত্যক্ষ প্ৰমাণ।

এসময়ত কামৰূপ, গোৱালপাৰা, কোচবিহাৰ আৰু জলপাইগুৰি জিলাক সামৰি লোৱা অঞ্চলক ‘কমতামণ্ডল’ বোলা হৈছিল।^{১০} সম্ভৱতঃ আমাৰ কবি হেম সৰস্বতী গোৱালপাৰা জিলাৰ লোক আছিল।

।। প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ ।।

সময়ৰ দৃষ্টিকোণৰ পৰা গুৰুত্ব প্ৰদান কৰিলে হেম সৰস্বতীয়ে লিখা ‘এশ চৰণযুক্ত’ সৰু কাব্য *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ* (*প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*)ৰ মূল্য অধিক আৰু সঁচাকৈয়ে অসমীয়া সাহিত্য ভঁৰাললৈ ই এখন আপুৰুগীয়া গ্ৰন্থ। ১৯২৩ চনত ভাষাবিদ কালিৰাম মেধিয়ে *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ* সম্পাদনা কৰি কাব্যখনৰ ভিতৰত এটা মাথোন যাৱনিক শব্দ নফৰ আবিষ্কাৰ কৰি মন্তব্য কৰিছিল “মুছলমানসকল গোঁড়ত সোমোৱাৰ বহু আগে *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ* লিখিছিল বুলি মনে নধৰে।” (উদ্ধৃতিখিনি ডিম্বেশ্বৰ নেওগৰ *নতুন পোহৰত অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী*, ১৯৬৪, পৃঃ ৭২ৰ পৰা লোৱা হৈছে)।

সৰু বৰ্ণনাত্মক কাব্য হিচাপেও *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ* চতুৰ্দশ শতিকাৰ প্ৰাক-বৈষ্ণৱ যুগৰ অসমীয়া কবি এজনৰ অমূল্য দান। কাব্যখনৰ আৰম্ভণিতে আমি দানৱৰাজ হিৰণ্যকশিপুক পুত্ৰ প্ৰহ্লাদৰ বিফলভক্তিৰ গভীৰতাত বিচলিত হোৱা দেখা পাইছোঁ।

পুত্ৰৰ কাৰ্যত বিৰক্ত হৈ কদৰ্শনা কৰা, অসুৰৰ শাস্ত্ৰ 'বামানয়'ৰ প্ৰতি প্ৰহ্লাদে দেখুওৱা অনীহা, প্ৰহ্লাদৰ মুখত বৈষ্ণৱ শব্দ 'হৰি' সঘনে উচ্চাৰণ কৰোৱাই কাব্যখনৰ নতুন দিশ এটি উন্মোচন কৰিছে। হাতী, সৰ্প, বিষ, গব্ৰ ত্ৰেলৰ প্ৰয়োগ আৰু এশ যোজন ওখ পৰ্বতৰ পৰা তললৈ নিক্ষেপণ কৰা আদি অমানুষিক শাস্তিবোৰৰ অকাৰ্যকাৰিতাই হৰিভক্ত প্ৰহ্লাদক জীয়াই থকাৰ অনুপ্ৰেৰণা প্ৰদান কৰাত হিৰণ্যৰ ধৈৰ্যচ্যুতি ঘটাইছে, ক্ৰমান্বয়ে জেদো বঢ়াইছে। কাব্যৰ এনে বৰ্ণাঢ্য বিষয়ৰে পাঠক-শ্ৰোতাক ৰোমাঞ্চকৰ পৰিৱেশ এটালৈ টানি লৈ গৈছে। হৰিৰ শ্ৰেষ্ঠতা প্ৰতিপন্ন কৰি নৰসিংহৰূপী হৰিৰ হাতত অত্যাচাৰী দৈতাৰাজ হিৰণ্যকশিপুৰ অভূতপূৰ্ব কৰুণ মৃত্যুত কাব্যখনৰ সামৰণি দেখুৱাইছে।

কাহিনীৰ গতানুগতিকতা আছেই। বৰপ্ৰাপ্ত অসুৰৰ তলত অতীষ্ঠ জীৱন-যাপনৰ সমাপ্তি বিচাৰি দেৱতাসৰে জনোৱা পাৰ্থনাত প্ৰতিকাৰার্থে আগ বাঢ়ি আহিছে বৈকুণ্ঠৰ পতি বিষ্ণু। প্ৰহ্লাদৰ হৰিভক্তিয়ে ভাতৃবৈৰী হৰিৰ প্ৰতি হিৰণ্যকশিপুৰ অসূয়া বঢ়াইছে, প্ৰহ্লাদক 'বামানয়' শাস্ত্ৰ পঢ়ুৱাত শুভ্ৰগাৰ্য বাৰ্থ হোৱাত খঙৰ ভমকত প্ৰহ্লাদক কঠোৰ শাস্তি বিহিবলৈ ৰজাই কুণ্ডাবোধ কৰা নাই। প্ৰহ্লাদক সৈমান কৰাবলৈ 'মৃত্যুভয়' দেখুৱালেও প্ৰহ্লাদৰ মুখত 'হৰি সুমৰন্তে মোৰ যাউক প্ৰাণখানি' বাক্য প্ৰয়োগৰ দ্বাৰা কবিয়ে প্ৰহ্লাদৰো অনুৰূপ জেদ প্ৰকাশ কৰাইছে। প্ৰহ্লাদ সেও হোৱা নাই। প্ৰহ্লাদৰ দৃঢ় বিশ্বাস— 'মাধৱত পৰে কোন আছে সংসাৰত।' স্বাভাৱিকতে, হিৰণ্যকশিপুৰে 'কোটি সহস্ৰ হস্তীক প্ৰহ্লাদক মাৰিবলৈ প্ৰেৰণ কৰিলেও মাধৱৰ কৃপাত প্ৰহ্লাদৰ 'বজ্ৰসম দেহ'ত হাতী বাৰ্থ হোৱাত অসুৰে ভাবিবলৈ ল'লে 'হস্তী সাধ্য মন্ত্ৰ কিছু জানে দুৰাচাৰ'। হাতী, সৰ্পৰো দাঁত ভাঙ্গিল— 'দান্ত ভাঙ্গা সৰ্পৰ যে ফোঙ্কাৰে সে সাৰ'। প্ৰহ্লাদৰ শাৰীৰিক উজ্জ্বলতা বাঢ়িল 'হৰি যাক ৰক্ষা কৰে মাৰে তাক কুনে'। প্ৰহ্লাদে আওকাণ কৰিছে হিৰণ্যকশিপুৰ তিৰস্কাৰ 'আমাৰ বংশত তই ভৈলি কুলাঙ্গাৰ', 'মোহোৰ বংশত উপজিল ধুমকেতু'। ভক্ত প্ৰহ্লাদক প্ৰাণ সঙ্কটৰ পৰা উদ্ধাৰ আৰু দেৱতাসৰক দিয়া আশ্বাসৰ ভিত্তিত বিষ্ণুৱে প্ৰভাততে অসুৰ বধৰ ইচ্ছা ব্যক্ত কৰাৰ সময়তে হিৰণ্যকশিপুৰে পুত্ৰক কৈছে 'হেন গুণবিদ্যা বাপ অভ্যাসিলি কৈত'। 'হৰি' নাম স্মৰণ কৰাৰ পৰা বিৰত কৰিবলৈ হিৰণ্যকশিপুৰে প্ৰহ্লাদক 'ৰাজ্যভাৰ' অৰ্পণ কৰাৰ লোভনীয় প্ৰস্তাৱ দাঙি ধৰাৰ উপৰিও মাধৱক গালি পাৰিবলৈকো উদগনি দিছে। পিচে, প্ৰহ্লাদ বিবুধি হোৱা নাই, স্পষ্টকৈ ব্যক্ত কৰিছে :

মাধবেসে পিতামাতা মাধবেসে প্ৰাণ।

মাধৱত পৰে কোন বন্ধু আছে আন।।^৪

হৰি আৰু হিৰণ্যকশিপুৰ দ্বৈৰথ যুদ্ধখনৰ প্ৰাৰম্ভণত ঈশ্বৰৰ অস্তিত্ব লৈ পিতা-পুত্ৰৰ ভিতৰত তৰ্ক যুদ্ধৰ অৱতাৰণাই কবিক দৰ্শনশাস্ত্ৰজ্ঞ ব্যক্তি বুলি পৰিগণিত কৰিছে। হিৰণ্যকশিপুৱে তৰ্কৰ পাতনি মেলিছে :

বুলে জে সবাবো গাত আছে দামুদৰ।

সবে লোক নুহি কিঅ একে সমসৰ।।

কেহু সুখি কেহু দুখি বহুত অন্তৰ।

কেহু কাকে বাএ কাকো কৰয় নফৰ।।^৫

ইয়াতেই ক্ষান্ত নাথাকি হিৰণ্যকশিপুৱে দোহাৰিছে :

একৰ জীঅনে হৌক সবাবে জীঅন।

একৰ মৰণে হৌক সবাবে মৰণ।।^৬

এই ধৰণৰ পৰিপ্ৰেক্ষিততহে হিৰণ্যকশিপুৱে প্ৰত্যয় যাব যে দামোদৰ সকলোতে আছে। প্ৰহ্লাদে এই কথাৰ প্ৰতিবাদ কৰাই নহয়, অহং ভাবেৰে পিতৃৰ যুক্তি প্ৰত্যাখ্যান কৰি পিতৃৰ ভুল আঙ্গুলিয়াই দেখুৱাইছে, ‘তুমি কিছু নাজানাহা আমি আছো জানি’। হিৰণ্যকশিপু হৰি-বিকদ্ধ ভাৱাপন্ন ব্যক্তি, সেইবাবে তেওঁ উপলব্ধি কৰিবলৈ অসমৰ্থ ‘পাপ-পুণ্য ফলে সুখ দুখ ভুঞ্জি নৰ’। অৰ্থাৎ পূৰ্ব জন্মৰ কৰ্ম অনুসৰি ফল ভোগে সকলোৱে। প্ৰকৃততে, হৰিৰ কাৰো প্ৰতি পক্ষপাতিত্ব নাই, ‘আচাৰত ভিন্ন হৰি বিচাৰত এক’। হৰি সকলোতে বিৰাজমান, প্ৰমাণ চাবলৈ প্ৰত্যাহান জনাইছে প্ৰহ্লাদে, ‘ফটিকৰ তন্ত্ৰে হৰি দেখিয়ো প্ৰত্যথ’। হিৰণ্যকশিপুৰ মুষ্টিৰ প্ৰহাৰত স্তম্ভ ভাগিল, নৰসিংহৰূপী হৰিয়ে অসুৰক সাৰাট ধৰিলে, যুদ্ধ অৱশ্যস্তাৱী হৈ পৰিল। হেম সৰস্বতীৰ ঘৰুৱা অথচ যুদ্ধৰ চমৎকাৰী বৰ্ণনাই ধুনীয়া চিত্ৰকল্প এটিৰে বাস্তৱ যুদ্ধখন চকুৰ আগলৈ আনি দিছে :

হেন দেখি নাৰায়ণে গুণে মনে মনে।

মোক যে এনুৱা চোটে আন সহে কুনে।।

গিৰ্ গিৰ্ শৱদে লৰিলা ভূমি চাল।

ঘনে ঘনে কাম্পন্ত পৃথিৱী সাত তাল।।

চোবায়ৈ দখন অতি তেজয় আটাস।
 সৰ্গ মৰ্ত পাতালত লাগিল তবাস।।
 থলে য়েবে যুজে থল যাই বসাতল।
 জলে য়েবে যুজে জল শুখায় সকল।।
 গিৰিত যুজয় গিৰি খণ্ড খণ্ড হয়।
 দেবাসুৰে নৰে বোলে মিলিল প্রলয়।।^১

যুদ্ধখনৰ পৰিসমাপ্তি তাতেই ঘটা নাই। ‘চিত্ৰ’ পাই অসুৰে হৰিৰ শতেক
 যোজন’ পথ ওপৰলৈ দলিয়ালে ; অবিশ্বাস্য যেন লাগিলেও পৃথিৱীত পৰি হৰি
 অচেতন হ’ল। অৱশ্যে, ক্ষন্তেক পিচতে চেতন পাই হৰিয়ে সন্ধ্যা ক্ষণৰ সঠিক
 সময়ত অসুৰক পানীপোতালৈ চোঁচোৰাই নি জল, স্থল নহয় কিন্তু উৰুত বহাই—

অস্ত্ৰে শস্ত্ৰে নকাটিল নখে বিদাৰিলা।
 ৰাত্ৰি দিন কিছু নোহে সন্ধ্যাতে মাৰিলা।।^২

উপমা অলঙ্কাৰৰ প্ৰয়োগৰ দ্বাৰা অসুৰৰ মৃত্যুৰ দৃশ্য দাঙি ধৰিছে—
 গিৰিক ভেদিয়া যেন বহি যাই জল।
 হিৰণ্যৰ তেজে বসুমতী গৈলা তল।।^৩

হিৰণ্যকশিপুৰ মৃত্যুত প্ৰহ্লাদ বাস্তৱ জগতলৈ ঘূৰি আহিছে। পিতৃৰ মৰণত
 উথলি উঠা পুত্ৰৰ শোক আৰু বিলাপে স্বাভাৱিকভাৱে শোকাৱহ পৰিৱেশ সৃষ্টিৰ
 বৰ্ণনাত কবি কৃতকাৰ্য হৈছে। অনুতপ্ত প্ৰহ্লাদে পিতৃৰ মৃত্যুৰ বাবে দোষৰ ভাগী
 বুলি ধৰি লৈছে :

হা প্ৰাণ পিতৃ মই কিসত কি কৰিলো।
 তুমি কি নিজীলা মই প্ৰাণে নমৰিলো।।
 পিতৃসে পৰম গুৰু পিতৃ ইষ্টদেৱ।
 পিতৃ বিনে সংসাৰত বন্ধু নাহি কেৱ।।
 যাহাৰ প্ৰসাদে মই দেখিলো সংসাৰ।
 পিতৃ অবিহনে দেখো দিনতে আন্ধাৰ।।^৪

পিতৃৰ বিয়োগ অতি অসহনীয়, মমাস্তিক। কাব্যৰ্শ্মিৰ সামৰণিৰ পিনে নাৰায়ণৰ
 মুখত দাৰ্শনিক তথ্য সম্বলিত বাক্যেৰে প্ৰহ্লাদক সাধুনা দিয়াৰ চিত্ৰ এখনিও কবিয়ে

দাঙি ধৰিবলৈ পাহৰা নাই। এই জগতত কোনো কাৰো সম্বন্ধীয় নহয়। এই প্ৰসঙ্গত কবিয়ে উপমা অলঙ্কাৰৰ মাধ্যমেৰে নাৰায়ণৰ মুখেৰে ব্যক্ত কৰাইছে :

নাকান্দা নাকান্দা বাপু নকৰা সন্তাপ।
কৈৰ ভাৰ্য্যা পুত্ৰ দেখা কৈৰ মাৰ বাপ।।
যেহেন বৃক্ষত পক্ষী থাকে এক সঙ্গে।
নিশা গোট বধে যেন মতে বঙ্গে ঢঙ্গে।।
ৰজনী প্ৰসন্ন ভৈলে দশোদিশে যাই।
পিতৃৰ পুত্ৰৰ জানা তেনয় পৰায়।।^{১১}

ৰাতি হ'লে একেডাল গছক আশ্ৰয় কৰি সহ-অৱস্থান কৰা পক্ষীসেৱে ৰজনী বিদূৰ হোৱাত ভিন্ ভিন্ দিশলৈ গতি কৰে ; পিতা-পুত্ৰয়ো নিজ কক্ষপথত বিচৰণ কৰে। বাস্তৱ দিশৰ সম্যক জ্ঞানেৰে ৰঢ় বাস্তৱৰ লগত পৰিচয় কৰাইছে, আসন্তে একলা যাহন্তে উলঙ্গট'। ইয়াতেই তাৰ যতি পৰা নাই। হৰিয়ে প্ৰহ্লাদক প্ৰকৃত সত্যক অনুধাৱন কৰাইছে :

তই মই উপজিলো হিৰণ্য বধিত।।
আপোনাক আপুনি নিচিনা কিয় তই।
প্ৰহ্লাদ স্বৰূপে উপজিয়া আছে মই।।^{১২}

ভগৱানৰ উদ্দেশ্য পূৰণ কৰাত প্ৰহ্লাদ নিমিত্ত মাত্ৰ। নাৰায়ণৰ কথাত পতিয়ন গৈ প্ৰহ্লাদে সন্তাপ এৰি ভগৱানৰ স্তুতি কৰিছে :

নমো নাৰায়ণ প্ৰভু দেৱ যদুপতি।
তোমাৰ চৰণে মোৰ থাকোক ভকতি।।
ভকত বৎসল প্ৰভু কৰুণা সাগৰ।
মই অনাথক নছাৰিবা দামোদৰ।।
অভয় চৰণে মই পশিলো শৰণ।
অপাৰ সাগৰে পাৰ কৰা নাৰায়ণ।।^{১৩}

নাৰায়ণৰ চৰণত আকুলভাৱে আত্ম-সমৰ্পণ কৰা প্ৰহ্লাদৰ কাকূতিয়ে বৈষ্ণৱ যুগৰ ভক্তৰ একান্ত প্ৰাৰ্থনালৈ সঘনে মনত পেলায়। হেম সৰস্বতীৰ শব্দ-চয়নত

ক্ৰটি নাই। স্বাভাৱিকভাৱে বৈষ্ণৱ গ্ৰন্থ ‘প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ’ত বৈষ্ণৱ কথাৰ পয়োভৰ থাকিবই।

সৰু কাব্যখনৰ মাজত বৈষ্ণৱ ভণিতা থকাটো মন কৰিব লগীয়া বিশেষত্ব।
পুথিখনত বিভিন্ন শাস্তিৰ বৰ্ণনাৰ পিচতেই কবিয়ে নাৰায়ণলৈ প্ৰণতি জনাইছে :

নমো নাৰায়ণ প্ৰভু দেৱ যদুপতি।

তোমাৰ চৰণে মোৰ থাকোক ভকতি।।

হেম সৰস্বতী ভণে এৰি আন কাম।

পাতক ছাৰোক ডাকি বোলা ৰাম ৰাম।।”^{১৪}

হেম সৰস্বতীৰ প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ (প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ)ত আখৰ-জোঁটনিত প্ৰাকৃত ব্যাকৰণৰ প্ৰভাৱ পৰিছে ; অন্ততঃ “শ ষো সং” ৰ ক্ষেত্ৰত। এই নীতিয়ে মাগধী প্ৰাকৃতৰ “ষ সো শঃ” নিয়মৰ লগত সম্পৰ্ক ৰখা নাই। ১৯২৩ চনত কালিৰাম মেধি সম্পাদিত আৰু প্ৰকাশিত প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ (প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ)ৰ পাতনিত এই নিয়ম উল্লিখিত হৈছে। বৰ্তমানে ছপা হোৱা প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ আৰু মেধি সম্পাদিত প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰৰ পাৰ্থক্য দেখুওৱা হ’ল :

- | | |
|---|--|
| ১। যুক্তাক্ষৰৰ সৰলীকৰণ | : অগিয়ান (অগিয়ান) |
| ২। ‘অ’কাৰৰ সলনি ‘উ’কাৰ, ‘ও’কাৰ | : হিৰণ্যোক (হিৰণ্যক)
দামুদৰ (দামোদৰ) |
| ৩। আদি যুক্তব্যঞ্জন এটা ব্যঞ্জনলৈ পৰিৱৰ্ত্তন | : তন্ত্ৰ (ভন্ত্ৰ)
ফটিক (স্ফটিক)
তৰাস (ত্ৰাস) |
| ৪। হ্ৰস্ব, দীৰ্ঘ, মুৰ্খন্য আৰু দন্ত্যৰ যথেষ্ট ব্যৱহাৰ | : যেনে, দুখি, নাৰায়ণ, সৰন,
পুৰান (‘ণ’ নাই) |
| ৫। ‘ই’ ৰ ঠাইত ‘ঐ’ | : মঐ (মই), ঠাঐ (ঠাই) |
| ৬। ‘ঈ’ কাৰ ‘ঐ’ কাৰ হৈছে | : সুখি (সুখী), দেবি
(দেবী), সৰোচতি
(সৰস্বতী) |

৭। 'ব' > 'অ' হৈছে	: জীঅনে (জীৱনে)
৮। 'ও' কাৰ 'উ' কাৰ হৈছে	: কেছ (কেহো)
৯। 'ছ' > 'চ' হৈছে	: কিছু (কিছো), আচন্ত (আছন্ত)
১০। শ, ষ, স > 'স' হৈছে	: আদেসিয়া (আদেশিয়া)
১১। কেতিয়াবা 'ষ' > 'খ' হৈছে	: বিখ (বিষ)
১২। কেতিয়াবা 'শ' > 'খ' হৈছে	: বংখত (বংশত), আদেখিলা (আদেশিলা)
১৩। 'য' > 'জ' হৈছে	: জিটো (যিটো), জি (যি)
১৪। 'য়' > 'অ' হৈছে	: কিঅ (কিয়)
১৫। 'ষ' ৰ ঠাইত 'ষ্ট' সঘনে দেখা যায়	: বৈষ্টৱ (বৈষ্ণৱ) বিষ্টু (বিষ্ণু)
১৬। 'ষ্ম' > 'শ' হৈছে	: বৈশানৰ (বৈশ্বানৰ)
১৭। 'ল' > 'ৰ' হৈছে	: প্ৰহ্লাদ (প্ৰহ্লাদ)
১৮। 'স্ব' > 'চ' হৈছে	: সৰোচতি (সৰস্বতী)
১৯। 'ক্ষ' > 'খ' হৈছে	: প্ৰত্যখ (প্ৰত্যক্ষ) ^{১৫}

আখৰ-জোঁটনিৰ পৰিৱৰ্তনখিনি ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মাই লিপিকাৰৰ প্ৰমাদে হ'ব পাৰে বুলি ক'ব খোজে।^{১৬} এই সম্ভাৱনা একেধাৰে নুই কৰা নাযায়। বৰ্তমানে ছপা হোৱা *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰত* ওপৰৰ বৈশিষ্ট্য নাই। কেতিয়াবা সম্পাদকৰ শুদ্ধ বানান লিখাৰ প্ৰৱণতাই পৌৰাণিক বৈশিষ্ট্য নোহোৱা কৰে। ডিম্বেশ্বৰ নেওগে উল্লেখ কৰা মতে '*প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*'ৰ নকল কৰাৰ সময় ১৮৪৭ খ্ৰীষ্টাব্দ (১৭৬৯ শক, ১০ মাঘ)।^{১৭} ইয়াৰ অন্ততঃ ২০০/২৫০ বছৰৰ আগতে ১৬ শতিকামানত নিশ্চয় প্ৰথম নকল কৰোঁতাৰ আখৰ-জোঁটনি আছিল। হেম সৰস্বতীৰ নিজৰ আখৰ-জোঁটনি চৈধ্য শতিকাৰ। কবিৰ হৰগৌৰী-সম্বাদত প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰৰ বৰ্ণাশুদ্ধি নায়েই বুলিব পাৰি। একেজন কবিৰ ভিন্ ভিন্ ৰচনাৰ আখৰ-জোঁটনি দুই প্ৰকাৰৰ হোৱাটো নিশ্চয় আশা কৰা নাযায়। প্ৰাক্-বৈষ্ণৱ যুগৰ কবিসকল কেইবা শতাব্দীৰ আগৰ। এই কবিসকলে সৃষ্টি কৰা ৰচনাবোৰৰ আখৰ-জোঁটনি সম্পূৰ্ণভাৱে নকলকাৰৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীল।

হেম সৰস্বতীয়ে *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰাখ্য* ষি ৰূপতেই গঢ় নিদিয়ক কয়, তাত বৈষ্ণৱ যুগ তথা অসমীয়া সমাজত প্ৰচলিত প্ৰবচন সদৃশ বাক্যই কাহিনীত ওজস্বিতা দান কৰিছে : ‘আমাৰ বংশত তই ভৈলি কুলাঙ্গাৰ’, ‘দাস্ত ভাঙ্গা সৰ্পৰ যে ফোকাৰে সে সাৰ’, ‘মোহোৰ বংশত উপজিলা ধুমকেতু’, ‘আচাৰত ভিন্ন হৰি বিচাৰত এক’, ‘পতঙ্গম হয় কৰে অগনিত জাস’ ইত্যাদি।

কবিয়ে অনুবন্ধে অলঙ্কাৰৰ সুপ্ৰয়োগ কৰি কাব্যখনৰ প্ৰতি আকৰ্ষণ বঢ়াইছে :

- ১। তপ্ত তৈল জুৰ ভৈলা যেন জলময়। (উপমা)
- ২। ফনায়ে লঙিঘলা যেন মেঘ আকাশৰ। (উপমা)
- ৩। তালুত লাগিলা যেন প্ৰচণ্ড অগনি। (উপমা)
- ৪। একো একো হস্তী যেন পৰ্বত সদৃশ। (উপমা)
- ৫। পুৰিবাৰ প্ৰভাৱে অধিক জ্বলে কান্তি।
তপ্ত সূৰ্য্যত কৰি অধিকে জ্বলন্তি।। (উপমা)
- ৬। যেহেন বৃক্ষত পক্ষী থাকে এক সঙ্গে।
নিশা গোট বন্ধে যেনমতে ৰঙ্গে ঢঙ্গে।।
ৰজনী প্ৰসন্ন ভৈলে দশোদিশে যাই।
পিতৃ-পুত্ৰৰ জানা তেনয় পৰায়।। (উপমা)
- ৭। গিৰিক ভেদিয়া যেন বহি জাই জল।
হিৰণ্যৰ তেজে বসুমতী গৈলা তল।। (উৎপ্ৰেক্ষা)
- ৮। পতঙ্গম হয় কৰে অগনিত জাস।। (নিদৰ্শনা)
- ৯। একো একো সৰ্পক দেখন্তে ভয়ঙ্কৰ।
ফনায়ে লঙিঘলা যেন মেঘ আকাশৰ।। (অতিশয়োক্তি)
- ১০। প্ৰহ্লাদৰ গাৰ যেন চন্দন শীতল।। (বিভাৱনা)
- ১১। দুনাই বিষ খুৱাইলেক বিষ নলাগিল।। (বিশেষোক্তি)
- ১২। চোবায়ৈ দশন আতি তেজয় আটাস।
স্বৰ্গ মৰ্ত্য পাতালত লাগিল তৰাস।। (অতিশয়োক্তি)

কবিৰ উদ্ধৃতিৰ আঁত ধৰিলে প্ৰতিভাত হয় যে *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*ৰ আধাৰ গ্ৰন্থ *বামন পুৰাণ*। বৰ্তমানৰ বামন পুৰাণ (উপপুৰাণ)ত হিবন্যকশিপু বধৰ বিৱৰণ নাই। ক'বলৈ গ'লে এই কাহিনী সম্ভৱতঃ নৃসিংহ পুৰাণৰপৰা অনা হৈছে। বোধকৰো চৈধ্য শতিকাত প্ৰচলিত বামন পুৰাণ নামৰ মহাপুৰাণ এখনৰ পৰাই হেম সৰস্বতীয়ে বিষয়বস্তু সংগ্ৰহ কৰিছিল। পণ্ডিতসকলৰ মতে, কিছু কালৰ আগলৈকে উল্লিখিত বামন পুৰাণৰ অস্তিত্ব আছিল।

কাব্যখনত সূক্ষ্ম কলা আৰু সুদূৰ প্ৰসাৰী কল্পনাৰ সৌধ বিচাৰি উলিওৱা কঠিন কাম। অৱশ্যে, পৰিস্থিতি সাপেক্ষে ঘটনাৰ সহজ, সৰল বৰ্ণিত বিৱৰণে পাঠক আৰু শ্ৰোতাক আকৰ্ষণ কৰিব। অসমীয়া সমাজত প্ৰতিধ্বনিত বাক্য 'দাস্ত ভাঙ্গা সৰ্পৰ ফেম্ফনিহে সাৰ', 'হৰি যাক ৰক্ষা কৰে মাৰে তাক কুনে', 'মোহোৰ বংশত উপজিল ধূমকেতু', 'আচাৰত ভিন হৰি বিচাৰত এক' আদি ঘৰুৱা চিত্ৰকল্পই পাঠকক সহজে স্পৰ্শ কৰিছে।

গ্ৰন্থখনত বিষ্ণুভক্তিৰ মাহাত্ম্য যিখিনি পোৱা গৈছে তাক একাধাৰতে বৈষ্ণৱ যুগতে প্ৰক্ষিপ্ত হোৱা বুলি কোৱাটো সমীচীন নহয়। হৰিভক্তি মাহাত্ম্যক গ্ৰন্থখনি কবিয়ে স্বইচ্ছাৰে বাছি লোৱাৰ ক্ষেত্ৰত কোনো পৃষ্ঠপোষক বা মহানুভৱ ব্যক্তিৰ নিৰ্দেশ আছিল বুলি ক'তো উল্লেখ কৰা নাই। অসুৰৰ বামানয় শাস্ত্ৰ বাতিল কৰি প্ৰহ্লাদে বিষ্ণু-ভক্তিৰ পৰাকাঠা দেখুৱাই প্ৰহ্লাদ তথা হৰিৰ জয় ঘোষণা পল্লৱিত কৰাত কালিৰাম মেধিয়ে কাব্যখনিক বৈষ্ণৱ ধৰ্মৰ প্ৰথম অসমীয়া পুথি বুলি আখ্যা দিবলৈ প্ৰয়াস পাইছে। বৈষ্ণৱ ধৰ্ম বা অসমীয়া সাহিত্যৰ ক্ষেত্ৰত হেম সৰস্বতীৰ সময়ত আদৰ্শ আৰু আৰ্হি নাছিল বুলিবই পাৰি। অৱশ্যে, হেম সৰস্বতীৰ পূৰ্ববৰ্তী কোনো কবিৰ অস্তিত্ব থকাৰ সম্ভাৱনা নাই কৰিব নোৱাৰি। নহ'লে একে দিনাই ভাষাৰ এনে ধৰণৰ শ্ৰীবৃদ্ধি আশা কৰাটো সুদূৰ পৰাহত।

বিশ্লেষণাত্মক দৃষ্টিৰে চালি-জাৰি চালে শঙ্কৰদেৱৰ পূৰ্ববৰ্তী কবি হেম সৰস্বতীৰ ভণিতাৰ লগত বৈষ্ণৱ যুগৰ কবিসকলৰ ভণিতাৰ পাৰ্থক্য বিচাৰি পোৱা নাযায়। 'হেম সৰস্বতি ভনে এড়ি আন কাম, পাতক ছাৰোক ডাকি বোলা ৰাম ৰাম'; 'হেম সৰস্বতি ৰচিলা সম্প্ৰতি, ডাকি বোলা হৰি হৰি' আদি বৈষ্ণৱ ভাৱাপন্ন বাক্যৰ বাহিৰে অন্য প্ৰক্ষিপ্ত নাই বুলি ডিম্বেশ্বৰ নেওগে ক'ব খোজে। গ্ৰন্থখনৰ সাজ-সজ্জাত বৈষ্ণৱ পোচাক। নহ'লেনো কবিয়ে কাব্যখনিৰ আৰম্ভণিতেই 'হৰিণ্যৰ পুত্ৰ ভৈলা বৈষ্ণৱ প্ৰহ্লাদ' বুলিয়েই পাতনি মেলে নে?

বিশেষভাৱে গুৰুত্ব দিব লগীয়া শব্দ এটা সকলোৱে এৰাই চলিছে। কাব্যখনিত 'হিৰণ্যক্ষ' শব্দটো ১১ বাৰ, 'হিৰণ্য' শব্দটো ১২ বাৰ আৰু 'হিৰণ্যকশিপু' শব্দটো মুঠেই এবাৰ ব্যৱহাৰ হোৱা সত্ত্বেও কোনো এজন অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীলিখকে 'হিৰণ্যক্ষ' শব্দটো 'হিৰণ্যকশিপু' হোৱা উচিত বুলি ক'তো উনুকিওৱা নাই। 'হেমকোষ'ৰ মতে 'হিৰণ্যক্ষ, হিৰণ্যকশিপু : এজন দৈত্য ৰজা';^{১৮} Monier Williamsৰ মতে দুজন ব্যক্তি, যঁজা।^{১৯} কিন্তু, কাব্যৰ মাজত 'বিশেষত হৰি মোৰ হস্তা বড় ভাই'^{২০} য়ে স্পষ্টকৈ আঙ্গুলিয়াইছে যে হিৰণ্যক্ষক বৰাহৰূপী বিষুগৰে বধ কৰিছিল আৰু তেওঁ আছিল প্ৰহ্লাদৰ পিতৃ হিৰণ্যকশিপুৰ ককায়েক।

সময়ৰ ফালৰ পৰা বিচাৰ কৰিলে, প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰই ঐক্ষ-বৈষ্ণৱ যুগৰ অসমীয়া সাহিত্যৰ মাজত এখন সুকীয়া আসন দাবী কৰিব পাৰে। বৈষ্ণৱ যুগত এইখনক নিশ্চয় আৰ্হি স্বৰূপে ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। সেই গতিকে, বৈষ্ণৱ যুগৰ ভাৱধাৰা আৰু শব্দাৱলীৰ পাৰ্থক্য খুব কম।

।। হৰগৌৰী-সম্বাদ ।।

হেম সৰস্বতীৰ আৰু এখন কাব্য হ'ল *হৰগৌৰী-সম্বাদ*। পঞ্চদশ শতিকাৰ শেষ দশকলৈ গ্ৰন্থখনৰ জনপ্ৰিয়তা থকাৰ কথা অসম বুৰঞ্জীত উল্লেখ আছে। গ্ৰন্থখনক কেন্দ্ৰ কৰি সৃষ্টি হোৱা দুৰ্ভাগ্যজনক বিভ্ৰান্তিমূলক ঘটনাই দুখন ৰাজ্যৰ মাজত সংঘাত কঢ়িয়াই আনিছিল। ইয়েই শেষত, গৌড়েশ্বৰ হুচেন চাহৰ দ্বাৰা খেন বংশৰ শেষ ৰজা নীলাশ্বৰৰ ৰাজ্য আক্ৰমণ আৰু কমতাপুৰ ধ্বংসৰ পথ মুকলি কৰে।

হেম সৰস্বতী ৰচিত *হৰগৌৰী-সম্বাদ*ৰনকল এটা ধুবুৰীৰ ড° অজয় কুমাৰ চক্ৰৱৰ্তীৰ হাতত পোৱা গৈছে। অসম বুৰঞ্জী আৰু পুৰাতত্ত্ব বিভাগে সংৰক্ষিত কৰি ৰখা কেইবাখনো *হৰগৌৰী-সম্বাদ* পুথিৰ (সম্পূৰ্ণ সংস্কৃত আৰু সংস্কৃত শ্লোকসহ অসমীয়া গদ্য ভাঙনিৰে) সন্ধান পোৱা গ'লেও সেইবোৰৰ লগত কবি হেম সৰস্বতী জড়িত নহয়।

অসম বুৰঞ্জীৰ তথ্যানুযায়ী গৌড়েশ্বৰ হুচেন চাহে ১৪৯৮ খ্ৰীষ্টাব্দত কমতাপুৰ নগৰ ধ্বংস কৰাৰ কিছু বছৰৰ আগতে *হৰগৌৰী-সম্বাদ* পুথিখন নিশ্চয় ৰচিত হৈছিল বুলি খাটাংভাৱে ক'ব পাৰি। সুকুমাৰ মহন্তৰ ঘৰৰ পৰা পোৱা অসম

বুৰঞ্জীত কমতেশ্বৰ, গৌড়েশ্বৰৰ বেটা সুশুদ্ধি ওৰফে গৰমা কুঁৱৰী আৰু পুস্তক হৰগৌৰী-সম্বাদৰ তথ্য এটি লিপিবদ্ধ হৈ আছে। 'ৰাজাৰ পোৰোহিত নীলাম্বৰ ব্ৰাহ্মণৰ বেটা দীননাথ, চন্দ্ৰভাল, চন্দ্ৰশেখৰৰ মুখে হৰগৌৰী-সম্বাদ পুস্তক শুনি থাকে কমতেশ্বৰে অভ্যস্তৰত দুই ভাৰ্যা সহিতে। ৰাজা আনন্দ হই বঁটা-বাহন দি চন্দ্ৰশেখৰক সন্তোষ কৰি পঠায়, দুই ভাৰ্যায়ে অনেক ৰূপে খুৱাই-খুৱাই বঁটা-বাহন পিন্ধাই পঠায়।' অসম বুৰঞ্জীত উল্লেখ কৰা মতে গৌড়েশ্বৰৰ জীয়ৰী আৰু কমতেশ্বৰ নীলাম্বৰৰ পত্নী সুশুদ্ধিৰ (পিচলৈ গড়মা কুঁৱৰী) নীলাম্বৰ পুৰোহিতৰ পুত্ৰ চন্দ্ৰশেখৰৰ লগত হোৱা গোপন প্ৰণয়ক কেন্দ্ৰ কৰি উদ্ভৱ হোৱা কেলেঙ্কাৰীত চন্দ্ৰশেখৰৰ হত্যা, গড়মা কুঁৱৰীৰ এঘৰীয়া আৰু কছাৰী ৰজালৈ পলায়ন, জোঁৱায়েক কমতেশ্বৰৰ ওচৰত অপূৰ্ণ হৰগৌৰী-সম্বাদ পুস্তক অৰ্ঘ্যেণ আৰু গৌড়েশ্বৰে কমতাপুৰ ধ্বংস কৰা আদি ঘটনা ঐতিহাসিক সত্যৰ ওপৰত প্ৰতিষ্ঠিত।^৭

হৰগৌৰী-সম্বাদ পুথিখনত মুঠতে ছটা অধ্যায় আৰু ৮৯৯ টা পদ আছে। প্ৰত্যেক অধ্যায়ৰ শেষত ক্ৰমান্বয়ে 'ইতি নৰসিংহ পুৰাণে হিৰণ্যকশিপু বধ', 'ইতি হৰগৌৰী সম্বাদে তাৰক জুদ্ধ সমাপ্ত', 'ইতি হৰগৌৰী সম্বাদে মন্থথ দহন সমাপ্ত', 'ইতি হৰগৌৰী সম্বাদে হৰ-পাৰ্বতী বিবাহ সমাপ্ত', 'ইতি হৰগৌৰী সম্বাদে কাৰ্ত্তিক, জন্ম সমাপ্ত আৰু 'ইতি হৰগৌৰী সম্বাদে যোগ কথনম্' সংযোজিত হৈছে। 'হিৰণ্যকশিপু বধ'ৰ কাহিনী নৃসিংহ পুৰাণৰ পৰা লৈছে বুলি ধৰিব পাৰি। কবিৰ সময়ত প্ৰচলিত হৰগৌৰী-সম্বাদনামৰ কোনো মহাপুৰাণৰপৰা বাকী ২-৫ অধ্যায়ৰ বিষয়বস্তু লোৱাটো সম্ভৱ। তাৰকাসুৰৰ অত্যাচাৰ, শিৱৰ তপস্যা, মদন ভস্ম, হৰ-পাৰ্বতীৰ বিবাহ, কাৰ্ত্তিকৰ জন্ম আদি কাহিনীত কালিদাসৰ কুমাৰ সম্ভৱ, কালিকা পুৰাণ আদি গ্ৰন্থৰ প্ৰভাৱ পৰাৰ সম্ভাৱনা নথকা নহয়।

পুথিখনৰ শেষৰ ফালে থকা যোগ-কথনম্ অধ্যায়ত যোগ-প্ৰক্ৰিয়াৰ আভাস দাঙি ধৰিছে :

বায়ু মণ্ডলত বায়ু কৰিবা স্তম্ভন।

বায়ুৰ আহাৰ বিন্দু কৰিবা ভোজন॥

বায়ুক ৰাখয় বিন্দুক ৰাখয় বায়ু।

দুই সমে নৰ হয় চিৰন্তন আয়ু॥^৮

কাব্যখনত পাৰ্বতীয়ে কৰা প্ৰশ্ন আৰু মহাদেৱে (হৰে) দিয়া প্ৰশ্নোত্তৰ সম্বলিত সমিধান নীতি পিচত ৰচিত হোৱা যোগিনীতন্ত্ৰতো দেখিবলৈ পোৱা যায়।

অতীতৰ স্বৰূপ পাহৰি পাৰ্বতীয়ে হৰক প্ৰশ্ন সুধিছে :

পাৰ্বতি বদতি প্ৰভু শূনা^১ প্ৰাণনাথ।

হাৰমালা দেখি কেনে তোমাৰ গৃবাত।।

হিৰা মণি মাণিক মুক্তা ৰতন।

এসব এড়িয়া কেনে হাৰক যতন।।^২

পূৰ্বৰ দুৰ্বলতা প্ৰকাশ হোৱাৰ ভয়ত সঙ্কুচিত হৰে শেষত পাৰ্বতীৰ অনুৰোধ
উপেক্ষাও কৰিব নোৱাৰিলে :

পূৰ্ব জনমত তুমি দক্ষৰ দুহিতা।

সতি নামে আছিলো আমাৰ বিবাহিতা।।

দক্ষ জঞ্জা কোপে তুমি এৰিলা প্ৰাণ।

তোমাৰ মৰণে মোৰ হৰিল গিয়ান।।

তোমাৰ সৰক মই কান্ধত কৰিলো।

প্ৰদক্ষিণে সসাগৰা পিথিবি ফুৰিলো।।

উৰু শিৰ কন্দা জিহবা কৰতল।

যোনি মুদ্ৰা স্তন জুগল চৰণ কমল।।

খসি খসি অঙ্গ সবে হৈল বেকত।

কালিকা কামাক্ষা আদি ৰূপ জত জত।।

সৰি গলি গৈল দেহ আমাৰ গাৱত।

শেষ হাৰ পায় পাছে পিঙ্কিলো গলত।।^৩

দক্ষ যজ্ঞত দক্ষ-দুহিতা সতীৰ দেহত্যাগ আৰু সেই দেহ লৈ হৰৰ
উদ্ভাস্ত ভ্ৰমণত গেলি-পচি যোৱা সতী-দেহৰ (অন্য গ্ৰন্থত বিষ্ণু চক্ৰই সতীৰ দেহ
খণ্ড খণ্ড কৰিছে) অৱশিষ্ট হাৰ এডাল ডিঙিত আঁৰি হৰে পূৰ্বস্মৃতি জাগ্ৰত কৰি
পিচৰ জন্মলৈকে মৰমৰ এনাজৰীডাল সজীৱ কৰি ৰাখিছে।

নৃসিংহ পুৰাণৰ ভিত্তিত ৰচনা কৰা 'হিৰণ্যকশিপু বধ'ত কবিৰ আনখন
পুথি প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰৰ ছাঁ অনুভৱ কৰা যায় :

দেখিয়া হিৰণ্য আতি ভৈল ভয় ভিত।

কম্পিত হৃদয় আতি দেহ জৰজৰিত।।

আথে বেথে সাৱতিয়া বুলে ধন্য পুত্ৰ।

এহি খানি কথা বাপু সিখিলিহি কৈত।।*

প্ৰহ্লাদৰ স্তুতিৰ জৰিয়তে বিষ্ণু বা হৰিকেই শ্ৰেষ্ঠ দেৱতা বুলি প্ৰতিপন্ন কৰিবলৈ বিচৰা উক্তি প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰত নাই :

জয় জয় জগবনাথ জগত কাৰণ,
ব্ৰহ্ম মহেশ্বৰ জাৰ সেৱে চৰণ,
স্ৰষ্টি স্থিতি প্ৰলয়ৰ তুমি সে কাৰণ
তোমাৰ চৰণে প্ৰভু পশিলো সৰণ।।*

হৰগৌৰী-সম্বাদ আৰু প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰত দেখুওৱা হিবণ্যকশিপুৰ মৃত্যুত পুত্ৰ প্ৰহ্লাদৰ কণ্ঠত ফুটি উঠা কাতৰোক্তিৰ অদ্ভুত মিল দুয়োখন কাব্যত লক্ষ্য কৰিব লগীয়া :

পিতৃৰ মৰণ পাছে প্ৰহ্লাদ দেখিলা
হৃদয়ত তান মহা সন্তাপ লাগিলা
হে প্ৰাণ পিতা ময়ি কি কাম কৰিলো।* (হৰগৌৰী-সম্বাদ)
প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰতো কবিয়ে প্ৰায় একেখিনি কথাকে তুলি ধৰা দেখা যায়:
পিতৃৰ মৰণ পাছে প্ৰহ্লাদে দেখিলা।
হৃদয়ত দাৰুণ সন্তাপ জ্বলি গৈলা।।
হা প্ৰাণ পিতৃ মই কিসত কি কৰিলো।* (প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ)

হেম সৰস্বতীৰ সময়ত হৰগৌৰী-সম্বাদ আৰু প্ৰহ্লাদ-চৰিত্ৰৰ লগত জৰিত নৃসিংহ পুৰাণ আৰু বামন পুৰাণৰ মূল এখন মহাপুৰাণেই আছিল নে কি? বোধকৰোঁ, একেজন লিপিকাৰৰ হাতত দুয়োখন পুথিৰ কিছুমান উক্তি একে হৈ থাকিল। ই সঁচাকৈয়ে চিন্তাৰ বিষয়।

হেম সৰস্বতী অতি উচ্চ খাপৰ কবি নহ'লেও ভাৱ, ভাষাৰ উপস্থাপনত তেওঁ বৈষ্ণৱ যুগত ব্যৱহৃত প্ৰবাদ বাকাৰ অনুৰূপ আৰ্হি কিছুমান ৰাখি থৈ গ'ল বুলি নিঃসন্দেহে ক'ব পাৰোঁ। ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মাই হৰগৌৰী-সম্বাদ পঢ়ি সমীচীন মন্তব্য এটি দাঙি ধৰিছে, 'হৰগৌৰী সম্বাদ কবিৰ পৰিণত বয়সৰ ৰচনা বুলি ধাৰণা হয়। এই পুথি প্ৰকাশ হ'লে হেম সৰস্বতীৰ কাব্য-প্ৰতিভাৰ সম্যক আলোচনা সম্ভৱ হ'ব।'

(পৃঃ ৬৪, অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত : ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মা, ১৯৮৯)

হৰগৌৰী-সংবাদ পুথিখন এতিমাই নৈকে প্ৰকাশ নোপোৱাটো ৰহস্যজনক কথা। পুথিখনৰ অভাৱত, অনিচ্ছা সত্ত্বেও, পুথিখন তথা কবিৰ পাণ্ডিত্য দাঙি ধৰাৰ প্ৰচেষ্টাৰ পৰা বিৰত থাকিব লগীয়া হ'ল।

— ড° সদা বেজবৰুৱা

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- ১। সোণাপতি দেৱশৰ্মা, সাহিত্যৰ সাজ
- ২। ডিম্বেশ্বৰ নেওগ, অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী, ১৯৫৭
- ৩। " " নতুন পোহৰত অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী, পঞ্চম সংস্কৰণ, ১৯৬৪
- ৪। ড° মহেশ্বৰ ", অসমীয়া সাহিত্যৰ ৰূপৰেখা, ৪ৰ্থ সংস্কৰণ, ১৯৭৪
- ৫। দেৱানন্দ ভঁৰালি, অসমীয়া ভাষাৰ মৌলিক বিচাৰ, ৩য় সংস্কৰণ, ১৯৯৩
- ৬। ড° সূৰ্য্যকুমাৰ ভূঞা (সম্পা), অসম বুৰঞ্জী (সুকুমাৰ মহন্তৰ ঘৰৰ), ৩য় সংস্কৰণ, ১৯৮৮
- ৭। তীৰ্থনাথ শৰ্মা, সাহিত্য বিদ্যা পৰিক্ৰমা, ৬ষ্ঠ প্ৰকাশ, ১৯৯১
- ৮। ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মা, অসমীয়া সাহিত্যৰ ইতিবৃত্ত, ৪ৰ্থ প্ৰকাশ, ১৯৬৫
- ৯। ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মা, অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত, প্ৰথম প্ৰকাশ, ১৯৮১
- ১০। বেণুধৰ শৰ্মা (সম্পা), পণ্ডিত হেমচন্দ্ৰ গোস্বামী ৰচনাৱলী, ১৯৭২
- ১১। হেম সৰস্বতী, প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ, ১৯৯১
- ১২। Kanaklal Barua, *Early History of Kamarupa*, 2nd Edition, 1966
- ১৩। Dr Ajoy Kumar Chakravartti, *Literature in Kamata-Koch Bihar Raj Darbar*, 1962
- ১৪। Edward Gait, *A History of Assam*, 2nd Edition, 3rd Reprint, 1977
- ১৫। Dr.R.C. Hazra, *Studies in the Upa-puranas*, Vol.II, 1963
- ১৬। Hem Chandra Goswami, *Descriptive Catalogue of Assamese Manuscripts*, 1930

- ১৭। Dr. B. K. Kakati (ed.), *Aspects of Early Assamese Literature*, 2nd Edition, 1959
- ১৮। V.S. Apte, *Student Sanskrit- English Dictionary*, Reprint, 1982.
- ১৯। হেমচন্দ্ৰ বৰুৱা, *হেমকোষ*, ৬ষ্ঠ সংস্কৰণ, ১৯৮৫
- ২০। John Dowson, *A Classical Dictionary of Hindu Mythology*, 1984
- ২১। গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়, *চন্দ্ৰকান্ত অভিধান*, ২য় সংস্কৰণ, ১৯৬২
- ২২। Monier Williams, *Sanskrit -English Dictionary*, First Reprint, 1984.

টোকা : ড° অজয় কুমাৰ চক্ৰবৰ্তীয়ে সম্পাদনা কৰা “প্ৰাচীন পুথি, পুৰাণানুবাদ আৰু যোগকথনং” নামৰ সঙ্কলন এটা নতুন দিল্লীৰ সাহিত্য অকাদেমিয়ে ১৯৯৬ত প্ৰকাশ কৰিছে। পুথিখন অসম্পূৰ্ণ। পুথিখনত মুঠ ৮৯২ টা পদ আৰু ২৬ টা অধ্যায় আছে। আৰম্ভণিৰ পদ—

“জয় জয় জগন্নাথ জগত কাৰণ।

আৰু অসম্পূৰ্ণ পুথিখনৰ শেষৰ পদ—

“হৰগৌৰি সন্মাদক আছিল বিস্তৰ।

গুৰু উপদেশ যামি বুদ্ধি অনুসৰ।”

ছপা পুথিখন আৰম্ভ হৈছে “শ্ৰীকৃষ্ণায় নমঃ, গনেশায় নমঃ” বাক্যাংশেৰে। লিখকৰ নাম হেম সৰস্বতী। “প্ৰহ্লাদ চৰিত” শিতানেৰে আৰম্ভ হোৱা ১ম অধ্যায়ত ১ সংখ্যক পদৰ পৰা ১২ সংখ্যক পয়াৰ ছন্দৰ পদ আছে। ছবি ছন্দেৰে ২য় অধ্যায় আৰম্ভ হৈছে ১৩ সংখ্যক পদেৰে আৰু শেষ হৈছে ১৮ সংখ্যক পদত। পয়াৰ ছন্দত ৰচনা কৰা ১৯ সংখ্যকৰ পৰা ৮৬ সংখ্যক পদত ৩য় অধ্যায়ৰ অন্ত পৰিছে। কালিৰাম মেধিয়ে সম্পাদনা কৰি প্ৰকাশ কৰা “প্ৰহ্লাদ চৰিত”ৰ (১৯১৩) কাহিনী ভাগ এই খণ্ডতে আছে। ৮৬ সংখ্যক পদৰ পাচত দুটা অধিক চৰণ পোৱা গৈছে—

“সুভ সুভ জয় জয় মীলিল মঙ্গল।

হেম সৰস্বতী বাণি পাপৰ অনল।।”

পূৰ্বে মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণৰ অধ্যায়বোৰৰ শেষত উপদেশ নাছিল, “শুভ শুভ”হে আছিল বুলি “কথা-গুৰু-চৰিত”ত কোৱা হৈছে। হেম সৰস্বতীৰ

ৰচনাত তাৰ উদাহৰণ পোৱা গৈছে যেন লাগিছে। ইয়াৰ পাচতে আছে, “ইতি নৰসিংহ পুৰাণে হিৰণ্যকশিপু বধ।”

“তাৰক যুদ্ধ” শিতানেৰে ৮৭ৰ পৰা সংখ্যক পদলৈ পয়াৰ ছন্দত ৪র্থ অধ্যায় ৰচনা কৰা হৈছে। শেষ হৈছে “ইতি হৰগৌৰিসম্বাদে তাৰক জুদ্দ সমাপ্ত” বাক্যেৰে। “মম্বত দহন” শিতানেৰে ১৫৮ৰ পৰা ১৭৮ পদলৈ পয়াৰ ছন্দত ৫ম অধ্যায় ৰচিত হৈছে। “বয়ঃসন্ধি” শিতানেৰে ছবি ছন্দেৰে ১৭৫ পদৰ ৬ষ্ঠ অধ্যায় আৰম্ভ হৈ ১৮৪ সংখ্যক পদত শেষ হৈছে। পয়াৰ ছন্দৰ ২০০ সংখ্যক পদৰ পৰা সংখ্যক পদত ৭ম অধ্যায় সমাপ্ত হৈছে। “শিৱৰ তপস্যা” শিতানেৰে ২০১ সংখ্যক পয়াৰৰ পদ আৰম্ভ হৈ সংখ্যক পদৰ পাচত দুটা চৰণ বাঢ়ি ৮ম অধ্যায় অন্ত হৈছে। “অকাল বসন্ত” শিতানেৰে পয়াৰ ছন্দত ২৮৯ৰ পৰা সংখ্যক পদত ৯ম অধ্যায় শেষ হৈছে। “ইতি হৰগৌড় সম্বাদে মম্বতদহন সমাপ্ত” বাক্যেৰে।

“কাৰ্ত্তিক জন্ম” শীৰ্ষকেৰে দুলাড়ি ছন্দেৰে আৰম্ভ হৈছে ৩৩৭ৰ পৰা ১০ পদলৈ ১০ম অধ্যায়। ৩৪৯ পদৰ পৰা ৩৮০ পদলৈ পয়াৰ ছন্দত ১১শ অধ্যায় ৰচনা কৰা হৈছে। “ৰতি বিলাপ” শিতানেৰে পয়াৰ ছন্দত ৩৮১ৰ পৰা ৪৩৯লৈ ১২শ অধ্যায়। দুলাৰি ছন্দেৰে ৪৪০ৰ পৰা ৪৫১লৈ ১৩শ অধ্যায়। পয়াৰ ছন্দত ৫৭৪ৰ পৰা ৫৭৯ সংখ্যক পদলৈ ছবি ছন্দত ১৫শ অধ্যায় ৰচিত। দুলাড়ি ছন্দত ৫৮০ৰ পৰা ৫৮৮ পদলৈ ১৬শ অধ্যায়। ১৭শ অধ্যায় ৰচিত হৈছে পয়াৰ ছন্দৰ ৫৮৯পদৰ পৰা ৬৬১সংখ্যক পদলৈ। ছবি ছন্দেৰে আৰম্ভ হোৱা ১৮শ অধ্যায় ৬৬২ৰ পৰা ৬৭৮ সংখ্যক পদত অন্ত হৈছে। ৬৭৫ৰ পৰা ৬৯৫ সংখ্যক পদলৈ ১৯শ অধ্যায় ৰচিত হৈছে পয়াৰ ছন্দত।

“মদনৰ পুনৰ্জীৱন লাভ” শিতানেৰে ৬৯৬ৰ পৰা ৭০৪ পদলৈ পয়াৰ ছন্দত ২০ অধ্যায় লিখা হৈছে। ৭০৫ৰ পৰা ৭০৯ পদলৈ ২১শ অধ্যায় ছবি ছন্দত। “গনেশ জন্ম” শিতানেৰে পয়াৰ ছন্দত ৭১০ৰ পৰা ৭৭৬পদলৈ ২২শ অধ্যায়। “ইতি হৰগৌৰি সম্বাদে কাৰ্ত্তিক জন্ম বধ” শিতানেৰে অধ্যায় শেষ হৈছে। “তাৰক বধ” শিতানেৰে দুলাড়ি ছন্দত ৭৭৭ৰ পৰা ৭৮৪লৈ ২৩শ অধ্যায়। ২৪শ অধ্যায় ৭৮৫ত আৰম্ভ হৈ ৮৩৩ পদত শেষ হৈছে পয়াৰ ছন্দত। “ইতি হৰগৌৰি সম্বাদে তাৰক বধ” বাক্যেৰে অধ্যায় শেষ হৈছে।

“যোগকথনং” শিতানেৰে পয়াৰ ছন্দত ৮৩৪ৰ পৰা ৮৬১ পদত ২৫শ শেৰ হৈছে। ইয়াৰ অন্তত “ইতি হৰগৌৰীৰ সম্বাদে যোগকথনং” বাক্য আছে। “যোগ বিবৃতি” শিতানত পয়াৰ ছন্দত ৮৬২ৰ পৰা ৮৯২ সংখ্যক পদলৈ ২৬শ অধ্যায়। পুথিৰ পাত নাই কাৰণে অধ্যায়টো অসম্পূৰ্ণ।

পুথিৰ বিষয়-বস্তু সম্পৰ্কে ১ম অধ্যায়ত কোৱা হৈছে—

“হেমবন্ত সিখৰ দেখিতে মনোৰম।

পৰ্বত কুমাৰি দেবি হৈল উতপন্ন।।

মহাদেৱ বিবাহ কৰিল জেন মত।

আদি যন্তু কহি কথা সুন মহাৰথ।।৬।।”

পুথিখনৰ আৰম্ভণিতে *প্ৰহ্লাদ চৰিত* নাম আছে যদিও এইখনেই প্ৰখ্যাত *হৰগৌৰী সম্বাদ* বুলি ধাৰণা কৰিব পাৰি।

— সম্পাদক

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- ১। ডঃ সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মা, *অসমীয়া সাহিত্যৰ ইতিবৃত্ত* ১৯৬৫, পৃঃ ৫৪
- ২। Dr. Ajoy Kumar Chakravarti, *Literature in Kamata-Koch Bihar Raj-Darbar*, 1962, পৃঃ ২৬
- ডঃ মহেশ্বৰ নেওগ, *অসমীয়া সাহিত্যৰ ৰূপৰেখা*, ১৯৭৪, পৃঃ ৭২
- ৩। K. L. Barua, *Early History of Kamrupa* 1966, পৃঃ ১৬৪
- ৪। হেম সৰস্বতী, *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*, ১৯৯৯, পৃঃ ১৮
- ৫। সম্পাদক-বেণুধৰ শৰ্মা, *হেম সৰস্বতী-পণ্ডিত হেমচন্দ্ৰ গোস্বামী ৰচনাৱলী*, ১৯৭২, পৃঃ ৩২৪
- ৬। প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, ১৯৭২, পৃঃ ৩২৪
- ৭। ডঃ সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মা, *অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত*, ১৯৮১, পৃঃ ৬৩
- ৮। হেম সৰস্বতী, *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*, ১৯৯১, পৃঃ ২১
- ৯। প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ২১

- ১০। প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ২২
- ১১। প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ২২-২৩
- ১২। হেম সৰস্বতী, *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*, ১৯৯১, পৃঃ ২৩
- ১৩। প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ২৩
- ২৪। প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ১২-১৩
- ১৫। বন্ধনীৰ বাহিৰত থকা শব্দবোৰ কাব্যখনৰ। আখৰ-জোটনি নকলকাৰৰ বুলি দেবানন্দ ভৰালি, আৰু ডঃ সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মাই বিশ্বাস কৰে।
- ১৬। ডঃ সত্যেন্দ্ৰ নাথ শৰ্মা, *অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত*, পৃঃ ৬২
- ১৭। ডিম্বেশ্বৰ নেওগ, *নতুন পোহৰত অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী*, ১৯৬৪, পৃঃ ৭২
- ১৮। হিৰণ্যকশিপু, হিৰণ্যাক্ষ, বি এজন দৈত্যৰ ৰজা, তেওঁ প্ৰহ্লাদৰ পিতাক আছিল, তেওঁক বিঘূৰে নৰসিংহ ৰূপ ধৰি বধ কৰে (হেমকোষ, পৃঃ ১০০৯, ১৯৮৫)
- ১৯। Hiranyāksha, of a noted Daitya (twin brother of Hiranya-Kasipu, and killed by Vishnu, in his thurd, or Varāha Avatāra), p 1300, *A Sanskrit English Dictionary* by Monier Williams
- ২০। হেম সৰস্বতী, *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*, ১৯৯১, পৃঃ ৪

হৰ-গৌৰি সম্বাদ

- ১। সুকুমাৰ মহন্তৰ ঘৰৰ পৰা পোৱা *অসম বুৰঞ্জী* (সম্পা), ডঃ সূৰ্য্যকুমাৰ ভূঞা, ১৯৮৮, পৃঃ ১২
- ২। প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ১২-১৩
- ৩। Dr. Ajoy Kr. Chakravarti, *Literature in Kamata-Koch Bihar Raj-Darbar*, 1962, পৃঃ ২৮

- ৪। Dr. Ajoy Kr. Chakravartti, *Literature in Kamata-Koch Bihar Raj-Darbar* , 1962, পৃঃ ২৮
- ৫। প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ২৮
- ৬। প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, তুলনা, পৃঃ ২৯
- দেখি হিৰণ্যাক্ষ অতি ভৈল ভয় ভীত
কম্পিলা হৃদয় অতি দেহা জৰ্জৰিত।।
আথে বেথে আশ্বাসিয়া বোল পুত্ৰ পুত্ৰ।
হেন গুণবিদ্যা বাপ অভ্যাসিলি কৈত।। পৃঃ ১২, *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*, ১৯৯১
- ৭। প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ২৯
- ৮। প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ৩০
- ৯। হেম সৰস্বতী, *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*, ১৯৯১, পৃঃ ২২

হৰিবৰ বিপ্ৰ

(খ)

প্ৰাক্-শঙ্কৰী যুগৰ শ্ৰেষ্ঠ কবিসকলৰ ভিতৰত মাধৱ কন্দলীৰ পিছতে কবি হৰিবৰ বিপ্ৰৰ স্থান। হৰিবৰ বিপ্ৰই তেওঁৰ দ্বাৰা ৰচিত *বৰব্ৰাহ্মনৰ যুদ্ধ* নামৰ পুথিত লিখিছে—

“জয় জয় নৰপতি দুৰ্লভ নাৰায়ণ ৰাজা
 কামপুৰে ভৈলা বীৰবৰ
সপুত্ৰ বান্ধৱে য়েৱে সুখে ৰাজ কৰন্তোক
 জীৱন্তোক সহস্ৰ বৎসৰ।।
তাহান ৰাজ্যত থিত সাধুজন মনোনীত
 অশ্বমেধ বিৰচিত সাৰ।
• বিপ্ৰ হৰিবৰ কই গৌৰীৰ চৰণ সেই
 পদ বন্ধে কৰিলোঁ প্ৰচাৰ।।”

ইয়াৰ পৰা হৰিবৰ বিপ্ৰ কামপুৰ বা কমতাপুৰৰ ৰজা দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ সময়ৰ কবি আছিল। ইয়াত সন্দেহৰ কোনো কাৰণ দেখা নেযায়। ড° নগেন্দ্ৰ নাথ আচাৰ্যই তেওঁৰ গৱেষণা গ্ৰন্থ *The History of Medieval Assam* ত (1966) দুৰ্লভ নাৰায়ণক প্ৰতাপধ্বজৰ পুতেক বুলি কৈছে। ১৩২৫-ত প্ৰতাপধ্বজৰ মৃত্যুত তেওঁৰ দুৰ সম্পৰ্কীয় ধৰ্মনাৰায়ণে ৰাজসিংহাসন দখল কৰে। পাঁচ বছৰ যুদ্ধ কৰি দুৰ্লভ নাৰায়ণে ১৩৩০-ত সৰহ অংশ ৰাজ্য উদ্ধাৰ কৰি কোঁচবিহাৰ নগৰৰ পৰা ৯ ঘণ্টাৰ বাট (প্ৰায় ২৭ মাইল) পশ্চিমে থকা গৰিয়াত ৰাজধানী পাতি তাৰ পৰা বৰনদীলৈকে ৰাজ্যখণ্ড শাসন কৰে। হৰিবৰ বা হৰিবৰ তেওঁৰে ৰাজসভাৰ কবি আছিল (পৃ: ১৫৯-৬০)। ১৩৫০-ত তেওঁৰ শাসনকাল অন্ত পৰে।

দুৰ্লভ নাৰায়ণ কোন সময়ৰ ৰজা আছিল সেই বিষয়ে পণ্ডিতসকল একমত হ'ব পৰা নাই। এই বিষয়ে ড° বিৰিঞ্চি কুমাৰ বৰুৱা আৰু ড° মহেশ্বৰ

নেওগৰ দ্বাৰা সম্পাদিত *বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ আৰু তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ* (প্ৰথম প্ৰকাশ : ১৯৬০) নামৰ গ্ৰন্থৰ পাতনিত লিখা হৈছে, “এই দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ সময় কালিৰাম মেধি ডাঙৰীয়াই ‘প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ’ৰ পাতনিত ১২৪৯ খৃষ্টাব্দ বুলি কৈছে। কনকলাল বৰুৱা ডাঙৰীয়াই মেধিৰ পদ্ধতিৰেই কিন্তু অলপ কঠোৰভাৱে সময়ৰ লেখ কৰি দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ সময় চতুৰ্দশ শতিকাৰ দ্বিতীয় পাদ (১৩৩০-১৩৫০) বুলি ঠিক কৰিছে। ড° বাণীকান্ত কাকতিয়ে আকৌ দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ সময় নিৰ্ণয় কৰিছে ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ শেষ কিম্বা চতুৰ্দশ শতিকাৰ আগ ভাগতহে।” (পৃঃ ১১ ৭.)। হৰিবৰ বিপ্ৰৰ জীৱন-কাল প্ৰসঙ্গত দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ ৰাজত্ব কাল সম্বন্ধে অলপ আলোচনা কৰাটো অসম্ভৱ নহ’ব।

প্ৰাক-শঙ্কৰী যুগৰে আন এজন কবিৰ ৰচিত *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*ৰ (প্ৰথম প্ৰকাশ : ১৯১৩) বিজ্ঞানসন্মতভাৱে সম্পাদনা কৰোঁতা কালিৰাম মেধিদেৱে চাৰ এডোৱাৰ্ড গেইট, কনক লাল বৰুৱা আদি পূৰ্বৱৰ্তী পণ্ডিতসকলৰ মতামত বিচাৰ কৰি দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ সময়ৰ বিষয়ে কৈছে, “খৃষ্টীয় দ্বাদশ শতাব্দীৰ শেষ বা ত্ৰয়োদশ শতাব্দীৰ আগ ভাগত দুৰ্লভ নাৰায়ণে কমতাপুৰত ৰাজত্ব কৰিছিল বুলি ধৰিলে বৰ ভুল হ’ব নাপায়।” ড° বাণীকান্ত কাকতিদেৱে তেখেতৰ গৱেষণা গ্ৰন্থত লিখিছে— তেওঁ (হেম সৰস্বতী) তেওঁৰ পৃষ্ঠপোষক ৰজা কমতাপুৰৰ দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ উল্লেখ কৰিছে। ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ শেষৰ ফালে এওঁ ৰাজত্ব কৰিছিল বুলি জনা যায়।^১ ইয়াৰ দ্বাৰা ড° কাকতিয়ে ৰজা দুৰ্লভ নাৰায়ণক ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ দ্বিতীয়াৰ্ধ বুলি পৰোক্ষভাৱে মানি লৈছে। এই বিষয়ত গেইট চাহাবৰ লগত ড° কাকতিৰ মতৰ মিল আছে।

সাম্প্ৰতিক যুগৰ অসমীয়া সাহিত্যৰ সুপ্ৰতিষ্ঠিত সমালোচক ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মাদেৱে যুক্তিৰে প্ৰতিপাদন কৰি কৈছে— “চতুৰ্দশ শতিকাৰ প্ৰথমার্ধৰ দুৰ্লভ নাৰায়ণ ৰজাই হৰিবৰ বিপ্ৰৰ পৃষ্ঠপোষক আছিল বুলি ধৰাই বেছি সমীচীন হ’ব।”^২

ড° বৰুৱা আৰু ড° নেওগ সম্পাদিত *বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ আৰু তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ* (১ম সংস্কৰণ, ১৯৬০) পুথিত “হৰিবৰ বিপ্ৰৰ সময় পঞ্চদশ শতিকাৰ শেষ ভাগ” বুলিহে ঠাৱৰ কৰা হৈছে। এই মত সমূলি গ্ৰহণযোগ্য নহয়। আন কোনো পণ্ডিতে হৰিবৰ বিপ্ৰক ইমান পিচৰ বুলি অনুমান কৰা নাই। তদুপৰি *Aspects of Early Assamese Literature* (২য় সংস্কৰণ : ১৯৫৯) গ্ৰন্থত ড° নেওগে লিখিছে “সেই সময়ৰ সাহিত্যত উল্লেখ কৰা ৰজাসকলৰ ভিতৰত দুৰ্লভ নাৰায়ণেই

প্ৰাচীনতম যেন অনুমান হয়। তেওঁক ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ পিছৰ ফালে নাইবা চতুৰ্দশ শতিকাৰ মাজ ভাগৰ আছিল বুলি অনুমান কৰা হয়।”^৪ এই গ্ৰন্থৰে আন এঠাইত তেখেতে লিখিছে “পণ্ডিতসকলে সিদ্ধান্ত কৰিছে যে চতুৰ্দশ শতিকাৰ দ্বিতীয় পাদ (১৩৩০-৫০) নাইবা ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ পিছৰ ভাগেই দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ ৰাজত্বৰ সময় আছিল।”^৫ ইয়াত দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ সময় সম্বন্ধে ড° নেওগদেৱে অলপো সন্দেহ প্ৰকাশ কৰা নাই। (৫ ক)। আকৌ ‘হৰিবৰ’ নামটোৰ বিষয়ে আলোচনা কৰোঁতেও তেওঁক শঙ্কৰদেৱৰ পূৰ্ব পুৰুষ চণ্ডীবৰৰ সমসাময়িক বুলি কৈছে, আৰু চণ্ডীবৰক দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ সময়ৰ অৰ্থাৎ ত্ৰয়োদশ-চতুৰ্দশ শতিকাৰ বুলি পৰোক্ষভাৱে মত প্ৰকাশ কৰিছে।^৬ তদুপৰি হৰিবৰ বিপ্ৰৰ ভাষাৰ বিষয়ে আলোচনা কৰোঁতেও ড° নেওগদেৱে এনে কিছুমান উদাহৰণ দিছে যিবোৰ ভাষাতাত্ত্বিক ড° কাকতিৰ মতে চতুৰ্দশ শতিকাৰ পিচৰ হ’ব নোৱাৰে।^৭

গতিকে *বৰন্বাহনৰ যুদ্ধ* আৰু *তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ* নামৰ গ্ৰন্থৰ পাতনিত হৰিবৰ বিপ্ৰক পঞ্চদশ শতিকাৰ শেষ ভাগৰ বুলি ঠাৱৰ কৰিলেও ড° নেওগ দেৱে পৰোক্ষভাৱে ত্ৰয়োদশ-চতুৰ্দশ শতিকাকে হৰিবৰ বিপ্ৰৰ সময় বুলি মানি লৈছে।

হৰিবৰ বিপ্ৰৰ ৰচনাৰ আভ্যন্তৰীণ প্ৰমাণ, যেনে, বিষয়-বস্তু, প্ৰকাশ-ভঙ্গী, ভাষা আদিৰ পৰাও ইয়াক ত্ৰয়োদশ-চতুৰ্দশ শতিকাৰ যেনহে অনুমান হয়। তদুপৰি মূলত থকা বাসুদেৱ পূজাৰ উল্লেখও (*বৰন্বাহনৰ যুদ্ধ*, পদ ১০৫) হৰিবৰ বিপ্ৰৰ কাব্য নৱ-বৈষ্ণৱ ধৰ্ম প্ৰচাৰৰ আগৰ ৰচনা বুলি প্ৰমাণ কৰে। গতিকে হৰিবৰ বিপ্ৰ ত্ৰয়োদশ শতিকাৰ শেষ ভাগ আৰু চতুৰ্দশ শতিকাৰ মাজৰ সময়ৰ লোক আছিল বুলি নিঃসন্দেহে ক’ব পাৰি।

কবিৰ নামটোৰ সম্পৰ্কে অৰ্থাৎ ‘হৰিবৰ’ নে ‘হৰিহৰ’— সেই বিষয়েও পণ্ডিতসকলৰ মাজত কিছু সন্দেহ আছিল যদিও পিচলৈ প্ৰায় সকলো পণ্ডিতেই ‘হৰিবৰ’ বুলিয়েই গ্ৰহণ কৰিছে।

কবি হৰিবৰ বিপ্ৰই তেওঁৰ ৰচনাৰ মাজত ছেগা-চোৰোকাকৈ নিজৰ বিষয়ে যি সামান্য উল্লেখ কৰিছে তাৰ পৰা জনা যায় যে তেওঁ জাতিত ব্ৰাহ্মণ আছিল। এঠাইত তেওঁ ‘গৌৰীৰ চৰণ সেই’ (*বৰন্বাহনৰ যুদ্ধ*, পদ ২২৩) বুলি উল্লেখ কৰিছে। তাৰ পৰা অনুমান হয় যে তেওঁ শক্তিৰ উপাসক আছিল। কিন্তু জৈমিনীয় মহাভাৰতৰ বৈষ্ণৱ ভাবাপন্ন কাহিনী অসমীয়া ভাষালৈ ভাঙনি কৰি আৰু বিষ্ণুৰ শ্ৰেষ্ঠতাসূচক পদৰ স্বৰূপ অনুবাদ কৰি আৰু নিজাকৈও সংযোজন কৰি বিষ্ণুৰ প্ৰতিও

যে কবিৰ আনুগত্য আছিল সেই কথাকে সূচাইছে। সেয়ে নহ'লেও ধৰ্ম বিষয়ত যে তেওঁ উদাৰ ভাবাপন্ন আছিল সেই বিষয়ে কোনো সন্দেহ নাই। বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধ কাব্যত ৰজা দুৰ্লভ নাৰায়ণৰ জয় ঘোষণা কৰালৈ চাই কবিয়ে ৰাজকীয় পৃষ্ঠপোষকতা পাইছিল যেন অনুমান হয়।

হৰিবৰ বিপ্ৰৰ ৰচনা বুলি পণ্ডিতসকলে এতিয়ালৈকে তিনিখন কাব্য চিহ্নিত কৰিছে। সেই কেইখন হৈছে বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধ, লৱ-কুশৰ যুদ্ধ আৰু তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ। তিনিওখন মূলতঃ অনুবাদ কাব্য। জৈমিনীয় মহাভাৰতৰ আশ্বমেধিক পৰ্বৰ দ্বাদশ অধ্যায়ৰ পৰা ষট্চত্বাৰিংশ অধ্যায়লৈ (১২শ—৪৬শ) বৰ্ণিত কাহিনীকে লৈ উক্ত তিনিখন কাব্য ৰচিত হৈছে। ভাষা, প্ৰকাশভঙ্গী আদিৰ ক্ষেত্ৰত সামান্য পাৰ্থক্য থাকিলেও তিনিওখন কাব্যৰ মাজত সাদৃশ্য যথেষ্ট আছে। বিষয়-বস্তুও একেখন মূল পুথিৰ পৰাই আহৰণ কৰা হৈছে। পুথি কেইখনৰ নাম কেইটাৰো সাদৃশ্য আছে। গতিকে তিনিওখন কাব্য হৰিবৰ বিপ্ৰৰ হোৱাটোৱেই বেছি সম্ভৱ। বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধ কাব্যখনৰ নাম শিৱনাথ ভট্টাচাৰ্য্য সম্পাদিত আৰু হৰিনাৰায়ণৰ দত্ত বৰুৱা সম্পাদিত সংস্কৰণ দুটাত বৰেন্দ্ৰবাহ পৰ্ব বুলিহে পোৱা যায়। কিন্তু মূলত বৰেন্দ্ৰবাহ পৰ্ব বা বৰেন্দ্ৰবাহন পৰ্ব বুলি কোনো পৰ্ব নাই। কাব্য কেইখনত যুদ্ধৰ ওপৰত বিশেষ গুৰুত্ব দিয়া হৈছে কাৰণে বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধ নামটোহে বেছি উপযোগী। ড° মহেশ্বৰ নেওগ সম্পাদিত লৱ-কুশৰ যুদ্ধ কাব্যত কবি হৰিবৰে কৈছে—

“ৰামক জিনিল যেন লৱ-কুশ শৰে।

অৰ্জুনক জিনিলেক মণিপুৰেশ্বৰে।।”

...দুয়ো কথা শুনিবাৰ মোৰ মন লাগে।

তথাপিহে ৰাম কথা কাহিয়োক আগে।।”

ইয়াৰ পৰা অনুমান হয় যে অৰ্জুন-বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধৰ কাহিনী ৰচনা কৰাৰ আগতে কবিয়ে লৱ-কুশৰ যুদ্ধ ৰচনা কৰিছিল। অৱশ্যে মূল জৈমিনীয় আশ্বমেধিক পৰ্বত অৰ্জুন-বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধৰ কাহিনী বৰ্ণনা কৰোঁতে বাপেক-পুতেকৰ যুদ্ধ প্ৰসঙ্গতহে লৱ-কুশ আৰু ৰামৰ মাজত হোৱা যুদ্ধৰ কাহিনীটো বৰ্ণনা কৰিছে। সেইমতে বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধৰ কাহিনীটোহে আগতে ৰচিত হ'ব লাগিছিল। লৱ-কুশৰ যুদ্ধ কাব্যৰে আন এঠাইত কবিয়ে কৈছে,

“অৰ্জুনৰ যুদ্ধ

আছোক এখনে

পাছে কহোঁ সিটো কথা।।”

-- ইয়াতো লৱ-কুশৰ যুদ্ধ কাব্যখন যে বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ কাব্যতকৈ আগতে ৰচনা কৰিছিল সেইটোকে সচেতনভাৱে সূচাইছে। লৱ-কুশৰ যুদ্ধ পুথিখনৰ মাজেৰে প্ৰকাশ পোৱা কাব্যিক প্ৰতিভাৰ পৰাও অনুমান কৰিব পাৰি যে এইখন কাব্যত কবি-প্ৰতিভাৰ যিখিনি নূন্যতা আছে সেইখিনি বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ কাব্যত নাই। আন কথাত, বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ হৰিবৰ বিপ্ৰৰ পূৰঠ কাপৰ পৰা ওলোৱা, অৰ্থাৎ লৱ-কুশৰ যুদ্ধ কাব্যতকৈ পিচৰ ৰচনা। তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ কাব্যখন সেই দৃষ্টিকোণৰ পৰা চালে আৰু বেছি পূৰঠ আৰু উচ্চ মানৰ হোৱা উচিত আছিল, কিন্তু তেনে হোৱা নাই। সম্ভৱতঃ কবিয়ে এইখন কাব্য ৰচনাত যিমানখিনি মনোযোগ দিব লাগিছিল সিমানখিনি দিব নোৱাৰিলে। ঘটনাৰ ক্ৰম অনুসৰি তাম্ৰধ্বজৰ কাহিনী বৰুৱাহনৰ যুদ্ধৰ পিচৰ ঘটনা। সেইমতে সেইখন কাব্য পিচৰ ৰচনা হোৱা সম্ভৱ। মুঠতে লৱ-কুশৰ যুদ্ধ, বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ আৰু তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ— এই অনুক্ৰমতে কাব্য কেইখন ৰচিত বুলি ধৰিলে বিশেষ ভুল নহ'ব যেন লাগে।

লৱ-কুশৰ যুদ্ধ : জৈমিনীয় মহাভাৰতৰ অশ্বমেধ পৰ্বৰ পঞ্চবিংশতি অধ্যায়ৰ পৰা ষট্ৰিংশ (২৫শ—৩৬শ) অধ্যায়ৰ ভিতৰত 'কুশ-লৱোপাখ্যান' নামেৰে ৰামৰ অযোধ্যালৈ উভতি অহাৰ পৰা লৱ-কুশৰ লগত যুদ্ধৰ পিচত অযোধ্যাত অশ্বমেধ যজ্ঞ সম্পাদন কৰালৈকে কাহিনী বৰ্ণিত হৈছে। এই কাহিনীকে লৈ হৰিবৰ বিপ্ৰই লৱ-কুশৰ যুদ্ধ কাব্যখন ৰচনা কৰিছে। মূলত যদিও 'কুশ-লৱ' বুলিহে আছে আমাৰ কবিয়ে 'লৱ-কুশ' বুলিহে ব্যৱহাৰ কৰিছে। ৰামৰ লগত লৱ-কুশৰ যুদ্ধ বৰ্ণনা কৰাটোহে কবিৰ উদ্দেশ্য। সেয়ে কবিয়ে কাব্যখনৰ নাম দিছে লৱ-কুশৰ যুদ্ধ বুলি আৰু যুদ্ধৰ শেষ হওঁতে কাব্যৰো অন্ত পৰিছে। ৰামে অশ্বমেধ যজ্ঞ কৰা নাইবা সীতা আৰু লৱ-কুশক লৈ বাৰ্মীকিয়ে ৰামৰ ৰাজসভালৈ যোৱাৰ বিষয়ে কবিয়ে উল্লেখ কৰা নাই। মূলৰ বাৰটা অধ্যায়ত ৰামৰ লক্ষা বিজয়ৰ পিচত অযোধ্যালৈ উভতি যোৱা, বসিষ্ঠ আদিৰ আদৰ্শণি, ৰাম-সীতা আদিৰ সকলোৰে লগত পুনৰ মিলন, ৰামৰ ৰাজ্য শাসন, ৰাম ৰাজ্যৰ বৰ্ণনা, ৰামৰ সপোন, সীতাৰ পুংসৱন সংস্কাৰ, গুপ্তচৰৰ দ্বাৰা ধোৱাৰ উক্তি কথন, সীতাক পৰিত্যাগৰ বাবে ৰামৰ সিদ্ধান্ত আৰু গঙ্গা তীৰত সীতাক পৰিত্যাগ কৰিবলৈ লক্ষ্মণক আদেশ, অকলশৰীয়া সীতাৰ মূৰ্ছা, বাৰ্মীকিৰ আগমন, বাৰ্মীকিৰ লগত আশ্ৰমলৈ গমন, লৱ-কুশৰ জন্ম, বাৰ্মীকিৰ দ্বাৰা লৱ-কুশৰ সংস্কাৰ, সাজ বেদ আৰু ৰামৰ চৰিত্ৰ শিক্ষাদান, অস্ত্ৰ প্ৰদান, ৰামৰ অশ্বমেধ যজ্ঞৰ ঘোঁৰা আশ্ৰমত প্ৰবেশ, লৱৰ দ্বাৰা অশ্ব বন্ধন, শত্ৰুদ্বৰ

লগত লৱৰ যুদ্ধ, মুৰ্ছিত লৱক ৰথত তুলি শত্ৰুঘ্নৰ প্ৰস্থান, মুনি কুমাৰৰ পৰা লৱৰ বাৰ্তা পাই সীতাৰ বিলাপ, কুশৰ হাতত শত্ৰুঘ্ন আদিৰ পৰাজয়, লক্ষ্মণৰ লগত কুশৰ যুদ্ধ, লক্ষ্মণৰ পৰাজয়, লৱ-কুশৰ হাতত ভৰত আদিৰ পৰাজয় আৰু মুৰ্ছা, কুশৰ লগত ৰামৰ যুদ্ধ আৰু পতন, লৱৰ দ্বাৰা হনুমান আদিক সীতাৰ ওচৰলৈ আনয়ন, সীতাৰ দ্বাৰা তেওঁলোকৰ মুক্তি, বাৰ্মীকিৰ আগমন আৰু অমৃতময় জলেৰে সকলোৰে জীৱন দান, ৰাম আদিৰ অযোধ্যালৈ প্ৰত্যাবৰ্তন, বাৰ্মীকিৰ সীতা আৰু লৱ-কুশক লৈ ৰামৰ ওচৰলৈ গমন, অশ্বমেধ যজ্ঞ সমাপন— এইখিনি কাহিনী বৰ্ণিত হৈছে।

হৰিবৰৰ কাব্যৰ কাহিনীও একেই। অৱশ্যে কাহিনীৰ শেষত সীতা আৰু লৱ-কুশৰ অযোধ্যালৈ উভতি যোৱা আৰু ৰামে অশ্বমেধ যজ্ঞ সম্পাদন কৰা বিষয়ে হৰিবৰে উল্লেখ কৰা নাই। মূল কাহিনীৰ কোনো সাল-সলনি কবিয়ে ঘটোৱা নাই যদিও সৰু-সুৰা দুই-এটা কথাৰ সামান্য সাল-সলনি ঘটাইছে। মূলত আছে ৰামে দহ হেজাৰ বছৰ ৰাজত্ব কৰা বুলি, “দশৱৰ্ষসহস্ৰানি ৰাজ্যং চক্ৰে স ৰাঘৱঃ (২৬/১)।” হৰিবৰে ৰামৰ ৰাজত্ব কাল “নৱধিক হাজাৰ বৎসৰ” (পদ ১৮) বুলি বৰ্ণনা কৰিছে। সেইদৰে লৱ-কুশৰ লগত যুদ্ধত ৰাম আদিৰ পতন হোৱাৰ পিচত কুশই ৰামৰ আৰু লৱই লক্ষ্মণৰ অলঙ্কাৰ, কিৰীটি-কুণ্ডল আদি পিন্ধি লোৱা বুলি হৰিবৰে বৰ্ণনা কৰিছে (পদ ৫৩৭, ৫৩৮)। মূল জৈমিনীয় কাব্যত কিন্তু ইয়াৰ উল্লেখ নাই।

— “... কুশ লৱৌ জ্ঞাত্বা মুৰ্ছিতং জানকীপতিম্।।

সমুত্তীৰ্য ৰথাং তস্মাজ্জগৃহাতে অস্য কুণ্ডলে।

কেয়ুৰং কণ্ঠহাৰং চ লক্ষ্মণস্যাপি মণ্ডনম্।। (৩৬/৬২, ৬৩)

কবিয়ে কোনো কোনো ঠাইত নিজা কথাও সংযোগ কৰিছে; যথা, সীতাৰ পুংসৱন উৎসৱত কবিয়ে কৈছে,

“দুহানো টিকনি এক থান কৰি আনি।

বশিষ্ঠৰ বোলে যে জনেকে ঢালে পানী।। (পদ ৪১)

আকৌ “সুৱৰ্ণৰ খালে সীতা গৰ্ভক ঢাকিলা” (পদ ৪০)

আৰু হনুমান, জাম্বৱন্তক ডিঙিত ডোল লগাই সীতাৰ ওচৰলৈ নিয়া আদি কথা কবিৰ নিজা সৃষ্টি।

কবিয়ে কোনো কোনো ঠাইত ৰসাল আৰু প্ৰাঞ্জল কৰাৰ উদ্দেশ্যে বৰ্ণনা কিছু বিস্তৃত কৰিছে। উদাহৰণ স্বৰূপে মূলত ভৰত আদিৰ পৰাজয়ৰ কথা শুনি

ৰাম দুঃখিত আৰু বিস্মিত হ'ল বুলি মাত্ৰ দুশাৰী শ্লোকত শেষ কৰা বৰ্ণনা (মূলৰ ৩৬/৩৪) কবিয়ে ৪৯৭,৪৯৮ আৰু ৪৯৯ সংখ্যক পদত বিস্তৃত কৰিছে। —

“দূতৰ বচনে ৰাম বাতুল পৰায়।..... ..
একে সমৰত হত ভৈলা তিনি ভাই।। ৪৯৭
আৰম্ভিলোঁ যজ্ঞ নভৈলেক সমাপতি।
হা কি কৰিলা বিধি মোৰ দৈৱ-গতি।।
গজ বাজী প্ৰজা সাজি পঠাইলোঁ বিপুল।
শিশুৰ হাতত সৰে ভৈলেক নিৰ্মূল।। ৪৯৮
ইষ্ট-বন্ধু-বান্ধৱক মৰাইলোঁ সকল।
সাগৰ তৰিয়া গো-খোজত গৈলোঁ তল।।
এহি বুলি সন্তাপ কৰিলা হৃদি মাজ।
বিভীষণ সুগ্ৰীৱ যুদ্ধক হোৱা সাজ।। ৪৯৯

ইয়াৰ পিচৰ যুদ্ধ-যাত্ৰাৰ বৰ্ণনাও কবিয়ে কিছু বিস্তৃতভাৱে দিছে। লৱ-কুশই ৰামক ভৎসনা কৰাৰ বৰ্ণনাও কবিয়ে ৫১৩,৫১৪ আৰু ৫১৫ সংখ্যক পদত বসালভাৱে বিস্তাৰ কৰিছে। আন এঠাইত শত্ৰুঘ্নৰ মাৰাত্মক শৰাঘাতত মুৰ্ছিত হোৱা লৱ নমৰি জীয়াই থকাৰ কাৰণ কবিয়ে নিজাকৈ দিছে—

“বিষুৎ অংশ হেতু তাৰ বৈলেক পৰাগ” বুলি।

আন হাতে মূলৰ বিস্তৃত বিৱৰণ চমু কৰাৰ উদাহৰণো কাব্যখনৰ কেবাঠাইতো আছে। যেনে, লৱ-কুশই বিপক্ষৰ বীৰসকলক আৰু তেওঁলোকৰ হাতী-ঘোঁৰা আদি কাটি-মাৰি খাঙাং কৰা আৰু হাতীৰ কটা শুঁৰেৰে আকাশত নক্ষত্ৰ সৃষ্টি হোৱাৰ বিৱৰণ মূলত তেৰটা শ্লোকত (৩৬/১-১৩) দিছে। সেই বৰ্ণনা সমূলি বাদ দিছে। সেইদৰে লৱ-কুশৰ চূড়াকৰণ, মুঞ্জীৰক্ষন, উপনয়ন আদি সম্পাদন কৰাৰ বৰ্ণনাও কবিয়ে বাদ দিছে।

মুঠতে কবিয়ে অসমীয়া পাঠক-শ্ৰোতাৰ উপযোগী কৰি কাহিনীটো সহজ-সৰল আৰু আকৰ্ষণীয়ভাৱে সৃষ্টি কৰিছে।

বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ : হৰিবৰ বিপ্ৰৰ শ্ৰেষ্ঠ কাব্য বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ জৈমিনীয় অশ্বমেধ পৰ্বৰ চতুৰ্দশ অধ্যায়ৰ পৰা চত্বাৰিংশ (৪১শ— ৪০শ) অধ্যায়ৰ কাহিনীৰে ৰচনা কৰা হৈছে। মূলত নামটো ‘বৰুৱাহন’ বুলিহে আছে। কবিয়ে কিয় ইয়াক

‘বক্স-বাহন’ কৰিলে, নে ই লিপিকাৰেই ভুল সেইটো এতিয়া আৰু জনাৰ উপায় নাই।

মূলত চতুৰ্দশ অধ্যায়ত পাণ্ডৱৰ অশ্বমেধ যজ্ঞৰ ঘোঁৰা মাহিষ্মতী পুৰত প্ৰৱেশ কৰাৰ পৰা চত্বাৰিংশ অধ্যায়ত শ্ৰীকৃষ্ণই সঞ্জীৱনী মণিৰ সহায়ত অৰ্জুন আদিক জীয়াই তোলা, ভীম আদিৰ হস্তিনাপুৰলৈ উভতি যোৱা আৰু নাগসকলৰ পাতাললৈ উভতি যোৱালৈকে বৰ্ণনা কৰা হৈছে। চতুৰ্দশ পঞ্চদশ অধ্যায়ত মাহিষ্মতী পুৰৰ ৰজাৰ লগত অৰ্জুনৰ পক্ষৰ যুদ্ধ, ৰাণী জ্বালাৰ দ্বাৰা গঙ্গাৰ তিৰস্কাৰ, গঙ্গাৰ দ্বাৰা অৰ্জুনক শাপদান আৰু জ্বালাই অগ্নিত প্ৰৱেশ কৰি বাণকপে অৰ্জুনৰ টোনত প্ৰৱেশ কৰাৰ বিৱৰণ আছে। ইয়াৰ পিচত দ্বাবিংশ অধ্যায়ৰ পৰা চতুৰ্বিংশ অধ্যায়লৈ অৰ্জুন-বক্সবাহনৰ কাহিনী— ঘোঁৰাৰ মণিপুৰত প্ৰৱেশ, ৰজা হংসধ্বজৰ দ্বাৰা অৰ্জুনৰ আগত বক্সবাহনৰ পৰিচয় প্ৰদান, মন্ত্ৰীৰ পৰামৰ্শমতে বক্সবাহনৰ দ্বাৰা অৰ্জুনক ঘোঁৰা ওভতাই দিবলৈ যোৱা, অৰ্জুনৰ দ্বাৰা বক্সবাহনক তিৰস্কাৰ, যুদ্ধ আৰম্ভ, অনুশাল্লব, প্ৰদ্যুম্ন, আদিৰ লগত বক্সবাহনৰ যুদ্ধৰ বৰ্ণনা কৰাৰ পিচত পঞ্চবিংশ অধ্যায়ৰ পৰা ষট্ৰিংশ (২৫শ—৩৬শ) অধ্যায়লৈ লৱ-কুশৰ যুদ্ধ বৰ্ণনা কৰি সপ্তবিংশ অধ্যায়ৰ পৰা আকৌ বক্সবাহনৰ লগত হংসধ্বজ, সুবেগ, বৃষকেতুৰ যুদ্ধ আৰু অৰ্জুনৰ পতন, মণিপুৰত বক্সবাহনৰ আদৰ্শগি, চিত্ৰাঙ্গদাৰ বিলাপ, সঞ্জীৱনী মণি আনিবলৈ পুণ্ডৰীকৰ পাতাল গমন, মণি দিয়াত ধৃতৰাষ্ট্ৰ নাগৰ বাধাদান, বক্সবাহনৰ লগত নাগসকলৰ যুদ্ধ আৰু পৰাজয়, শেয়নাগৰ দ্বাৰা বক্সবাহনক মণি দান, শ্ৰীকৃষ্ণৰ দ্বাৰা মণিৰ সহায়ত অৰ্জুন আদিৰ জীৱন দান, ভীম আদিৰ হস্তিনাপুৰলৈ আৰু শেয়নাগ আদিৰ পাতাললৈ যোৱাৰ কাহিনী বৰ্ণনা কৰা হৈছে।

কবি হৰিবৰ বিপ্ৰই এই কাহিনীকে লৈ বক্সবাহনৰ যুদ্ধ কাব্য ৰচনা কৰিছে যদিও কাহিনীৰ ক্ৰমৰ কিছু সাল-সলনি ঘটাইছে। ইয়াত কবিয়ে অৰ্জুন-বক্সবাহনৰ কাহিনীৰ মাজতে, সঞ্জীৱনী মণি আনিবলৈ গৈ পুণ্ডৰীকে নাগৰাজৰ প্ৰশ্নৰ উত্তৰত অৰ্জুনৰ মৃত্যুৰ বিষয়ে কওঁতে প্ৰসঙ্গক্ৰমে জ্বালাৰ কাহিনী বৰ্ণাইছে।

মূল কাহিনী কবিয়ে প্ৰায় ছবছ অনুবাদ কৰিছে। গ্ৰহণ, বৰ্জন, সংক্ষিপ্তকৰণ আৰু বিস্তৃতকৰণৰ বিষয়ত অৱশ্যে কবিয়ে নিজ কল্পনা আৰু বিবেচনাৰ সুপ্ৰয়োগ কৰিছে। মূলত প্ৰদ্যুম্ন আৰু বক্সবাহনৰ যুদ্ধত মৰা সৈন্য আদিৰ অঙ্গ-প্ৰত্যঙ্গ, তেজ আদিৰে ৰণক্ষেত্ৰৰ যি বিভৎস আৰু বিস্তৃত বৰ্ণনা আছে তাৰ বৰ্ণনা কবিয়ে বাদ দিছে। মৃত আৰু অৰ্ধমৃত বীৰক লৈ অঙ্গৰাসকলে কৰা আদি ৰসাত্মক বৰ্ণনা

জৈমিনীৰ কাব্যত আছে (২৪/৩৭-৪০)। সেইবোৰ স্থান, কালৰ উপযোগী নহ'ব বুলিয়েই সম্ভৱতঃ হৰিবৰ বিপ্লই বাদ দিছে। পুণ্ডৰীকে সঞ্জীৱনী মণি আনিবলৈ পাতাললৈ যাওঁতে পোৱা হাটকেশ্বৰ শিৱ লিঙ্গৰ কথাও কবিয়ে বাদ দিছে (৩৮/১৮২-৮৩)। অৰ্জুনক শৰেৰে থকা-সৰকা কৰি বত্ৰবাহনে কৈছে—

“পাৰ্থ দ্ৰোণাচ্চ দেৱেভ্যস্ত্যাস্তানি পূৰা ৰিভো।
শিক্ষিতান্যধুনা তানি ৰিফলানি কথং তৱ।।”
(৩৮/৪৪)

‘হে পাৰ্থ, দ্ৰোণৰ পৰা আৰু দেৱতাসকলৰ পৰা যিবোৰ ‘অস্ত্ৰ শিকিছিলো, সেইবোৰ এতিয়া বিফল হৈছে কিয়?’— এইখিনি কথা কবি হৰিবৰে অলপ বেলেগ ধৰণে কোৱাইছে,

“অবা ধনঞ্জয় মোৰ সদ বুধি ধৰা।
আপদ বেলাত গুৰু দ্ৰোণক সুমৰা।। ৩০৯
গুৰু সুমৰণে কিছু সদ বুধি হোক।
পাসৰিবাৰ অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰ মনত পৰোক।।...৩০৮”

আকৌ বত্ৰবাহনৰ লগত হোৱা যুদ্ধৰ সময়ত, আপদ-কালত শ্ৰীকৃষ্ণ অৰ্জুনৰ লগত নথকাৰ কাৰণ কবিয়ে নিজাকৈ দিছে—

“কৃষ্ণ নাসিবাৰ কথা কহিবোঁ প্ৰস্তুত।
অকাৰ্য্যত সতী আই কান্দিলা বহুত।। ৩১০
সিকাৰণে অধৰ্ম্মী পাতকী বৰ ভৈলা।
প্ৰিয় সখি বাসুদেৱ তোমাক এৰিলা।।...৩১১”

অৰ্জুনৰ দ্বাৰা অপমানিত হৈ বত্ৰবাহনে যুদ্ধৰ আয়োজন কৰাৰ বৰ্ণনা কবিয়ে নিজ কল্পনাৰে বিস্তাৰিতভাৱে দিছে। মৃত্যু সুনিশ্চিত বুলি জানি অৰ্জুনে বৃষকেতুৰ আগত দুখ কৰি কোৱা কথাখিনিতো কবিয়ে নিজ কল্পনাৰ যথেষ্ট বহণ বোলাইছে। মণিপুৰ নগৰত ৰণজয়ৰ উৎসৱৰ বিষয়ে মূলত মাত্ৰ দুটা শাৰী হৈ আছে—

“বাদিত্ৰানি চ সংজঘ্ৰুঃ পুষ্পৰৰ্ষং চ কন্যাকাঃ।
চক্ৰমুদা যুতাঃ সৰ্বাঃ স্বনাথৱিজয়ে তদা।।”
(৩৮/৬৯)

ইয়াকে কবিয়ে চাৰি শৰীয়া আঠটা পদত (পদ ৩৪০-৪৭) বিস্তাৰিতভাৱে বৰ্ণাইছে। আকৌ অৰ্জুনৰ মৃত্যুত সন্দেহ কৰি উলুপীয়ে কৈছে—

“... প্ৰিশামি স্বকং বনম্॥ ১০০

যত্ৰ পাৰ্থেন কথিতং সমাগ্ৰে মৰণং পুৰা।

দাড়িমীপঞ্চকং দেৱি যদা দক্ষং ভৱিষ্যতি॥ ১০১

স্বয়মেৱ তদা জ্ঞেয়ং ভৱত্যা মৰণং মম।

আয়াহি যত্ৰ পশ্যামি সংকেতং তাদৃশং বনে॥ ১০২”

‘বনত পাঁচডাল ডালিম যেতিয়া (বিনা জুয়ে) দক্ষ হ’ব তেতিয়াই মোৰ মৰণ হোৱা বুলি জানিবা। মই বনলৈ গৈ সেই সঙ্কেত চাম, তুমিও ব’লা।’ — ইয়াকে অলপ সলনি কৰি কবিয়ে উলুপীৰ মুখে কোৱাইছে—

“তেৱেসে জানিলা মৃত্যু ভৈলা অৰ্জুনৰ॥ ৩৬৮

ডালিম পঞ্চফুল ছিঙি থৈবা একে স্থানে।

যেবে ফুল ভস্ম উঠি বিনা বহিদানে॥

আসা আসা বাই উৱাৰিক লাগি যাওঁ।

জীৱ মৰণ প্ৰভুৰ জিঞ্জাসিয়া চাওঁ॥ ৩৬৯”

অৰ্জুনৰ মৃত্যু হোৱা বুলি নিশ্চিতভাৱে জনাৰ পিছত ‘দুয়ো নাৰী’য়ে ‘সূতা আমডালি’ হাতত লোৱাৰ উল্লেখো কবিৰ নিজা। অৰ্জুনক বৰ্ণনাবাহনে ৰণাহান জনাই কোৱা কথা, অৰ্ধচন্দ্ৰ বাণ নিক্ষেপ কৰা দেখি অৰ্জুনে শ্ৰীকৃষ্ণক স্মৰণ কৰি কোৱা কথা আদিত হৰিবৰৰ কল্পনাই অধিক গুৰুত্ব পাইছে।

ইয়াৰ বাহিৰে বাকী ক্ষেত্ৰত কবিয়ে মূলৰ ছব্ব অনুবাদ কৰিছে। উদাহৰণ স্বৰূপে—

“গন্ধৰ্ব ৰাজ দুহিতা জননী তৱ নৰ্তকী।

ত্বং নটো ভৱ গচ্ছাদ্য ৰাজ্যং ত্যক্ত্বা গৃহে ধনুঃ॥”

আৰু

“মাতৃৱংশং গৃহাণ ত্বং বদ্ধা কণ্ঠে তু মৰ্দলম্।

বালেয়ং পৃষ্ঠতো বদ্ধা ৰঙ্গে নৃত্যং প্ৰৱৰ্তয়॥”

(২৩/৬০,৬২)

কবিয়ে অনুবাদ কৰিছে—

“চাঞ্চৰী মাহাৰ তোৰ নটৰ আচাৰ।

নটৰ ছবালৰ কিসৰ ৰাজ্য ভাৰ॥ ৮১”

আৰু

“শৰ-ধনু-কৰচক পাছ কৰি থৈয়ো।

চান্দি-বাক্সি মাদলি গলত তুলি লৈয়ো॥ ৮২”

পাতালৰ ধৃতৰাষ্ট্ৰ নাগ আৰু বব্ৰবাহনৰ যুদ্ধৰ বৰ্ণনাৰ এঠাইতে আছে।

ধৃতৰাষ্ট্ৰস্য সৰ্বাঙ্গং জাতং পলৱিৱৰ্জিতম্।

ভিত্ত্বাশ্ৰীনি পুনৰ্মৰ্জ্জাং পন্নগস্য পিপীলিকাঃ॥

অশ্ৰীনি চিঞ্চাফলৱৎ কোটৰং হি প্ৰকুৰ্বতে॥”

(৩৯/৪৭)

— এইখিনি হৰিবৰে অনুবাদ কৰিছে—

“ছাল থৈ মাংস খাই ভিতৰ সোমাই॥

ভিতৰে ভিতৰে যাই যাই কতো দূৰ।

শাস কৰা দেখি যেন তেতুলিৰ ফুল॥ ৫০০”

এই অনুবাদত যি সাৱলীলতা আৰু স্বচ্ছন্দতা প্ৰকাশ পাইছে সিয়ে কবিৰ ৰচনাক মৌলিক সৃষ্টিৰ মৰ্যাদা প্ৰদান কৰিছে।

তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ : জৈমিনীয় মহাভাৰতৰ অশ্বমেধ পৰ্বৰ একচত্বাৰিংশ অধ্যায়ৰ পৰা ষট্চত্বাৰিংশ (৪১ শ-৪৬ শ) অধ্যায়ৰ কাহিনীৰে তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধৰ আখ্যান ভাগ গঢ়ি উঠিছে। মূল কাহিনী মতে মণিপুৰৰ পৰা ঘোঁৰা গৈ ময়ূৰধ্বজৰ ৰাজ্যত প্ৰৱেশ কৰিলে, তাত ময়ূৰধ্বজৰ পুত্ৰ তাম্ৰধ্বজে ঘোঁৰা ধৰে, তাম্ৰধ্বজে শ্ৰীকৃষ্ণক ৰণাহ্বান জনায়, অৰ্জুনৰ সেনা বাহিনীৰ লগত তাম্ৰধ্বজৰ ঘোৰ যুদ্ধ লাগে, তাৰ পিচত অৰ্জুনৰ লগত যুদ্ধ লাগে, শ্ৰীকৃষ্ণই যুদ্ধ কৰিবলৈ উদ্যোগ কৰে, তাম্ৰধ্বজে শ্ৰীকৃষ্ণক ঠাট্টা কৰাত অৰ্জুনৰ সাৰথি হয়, তাৰ পিচত সুদৰ্শন চক্ৰৰে তাম্ৰধ্বজৰ সেনা সংহাৰ কৰে, তাম্ৰধ্বজৰ হাতত শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুন মুৰ্ছিত হয়, তাম্ৰধ্বজে ঘোঁৰা আদি লৈ নগৰলৈ যায়, মন্ত্ৰী বহুলধ্বজৰ মুখে যুদ্ধৰ সকলো বাতৰি শুনি বিষণ্ণভক্ত ময়ূৰধ্বজে পুত্ৰ তাম্ৰধ্বজক তিৰস্কাৰ কৰে শ্ৰীকৃষ্ণক এৰি ঘোঁৰা অনা বাবে। মুৰ্ছা ভঙ্গ হোৱাত শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু অৰ্জুন দুয়ো ময়ূৰধ্বজৰ নগৰলৈ গৈ যজ্ঞ মণ্ডপত উপস্থিত হয়, শ্ৰীকৃষ্ণই ব্ৰাহ্মণ বেশেৰে ছল কৰি ময়ূৰধ্বজৰ অৰ্ধ শৰীৰ দান বিচাৰে, ৰজাই দান দিবলৈ সন্মত হয়, পত্নী কুমুদতী আৰু পুত্ৰ তাম্ৰধ্বজে

কৰত লৈ ৰজাৰ শৰীৰ দ্বিখণ্ড কৰিবলৈ লয়, ৰজাৰ বাওঁ চকুৰ পানী ওলোৱাত শ্ৰীকৃষ্ণই দান লবলৈ অমান্তি হৈ গুচি যায়, শৰীৰৰ বাওঁ ফালটোৱে সৎ কামত লাগিবলৈ নোপোৱা কাৰণে চকুপানী ওলোৱা বুলি বুজাই কোৱাত শ্ৰীকৃষ্ণ উভতি আহে আৰু ময়ূৰধ্বজৰ প্ৰতি সন্তুষ্ট হৈ চতুৰ্ভুজ ৰূপে দৰ্শন দিয়ে, ৰজাই শ্ৰীকৃষ্ণক স্তুতি কৰে। তাৰ পিচত যোঁৰা ৰক্ষাৰ বাবে ৰজা ময়ূৰধ্বজে অৰ্জুনৰ লগত যাত্ৰা কৰে। মূল পুথিৰ এইখিনি কাহিনীকে লৈ তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ কাব্য ৰচনা কৰা হৈছে। কাব্যখনৰ মাজে মাজে কিছু পদ সময়ৰ আঁচোৰত লুপ্ত হৈছে যদিও কবিয়ে কাহিনীৰ যে বিশেষ পৰিবৰ্তন ঘটোৱা নাই সেইটো বুজিব পাৰি। অৱশ্যে মূলত ময়ূৰধ্বজৰ নগৰৰ ‘বত্ননগৰ’ নাম কবিয়ে ‘বাণপুৰ’ কৰিছে। তাম্ৰধ্বজৰ নাম মূলত ঠায়ে ঠায়ে ‘সুচিদ্ৰ’ বুলিও আছে, কবিয়ে এই নাম ব্যৱহাৰ কৰা নাই। মূলত মন্ত্ৰীৰ নাম ‘বহুলধ্বজ’, কিন্তু কবিয়ে ‘বংশধ্বজ’ নামটোহে ব্যৱহাৰ কৰিছে। ‘বহুলধ্বজ’ৰ পৰা বংশধ্বজ হোৱাটো লিপিকাৰৰ ভ্ৰমো হ’ব পাৰে।

মূলৰ দুই-এটা কথা কাব্যত বাদ দিয়া হৈছে। উদাহৰণ স্বৰূপে, বহুলধ্বজে ৰজাৰ আগত অৰ্জুনৰ বিষয়ে কওঁতে বৰুৱাহনৰ দ্বাৰা ময়ূৰধ্বজক কৰ হিচাপে দিয়া মুক্তা নৰ্তকীসকলৰ পুষ্পাঞ্জলি হিচাপে ব্যয় হোৱাৰ যি বৰ্ণনা মূলত আছে (৪১/২২,২৩), সেইখিনি কাব্যত বাদ দিয়া হৈছে। শ্ৰীকৃষ্ণই তাম্ৰধ্বজৰ বিষয়ে অৰ্জুনৰ আগত কৈছিল—

“শূৰো অয়ং জিতকামস্তু সত্যৱাগনসূয়কঃ।

ন যোধনীয়ঃ পাৰ্থেন সত্যমেতদ্ ৱদামি তে।।”

(৪১/৩৭)

‘এই তাম্ৰধ্বজ শূৰবীৰ, এওঁ কামজয় কৰিছে। এওঁ সত্যবাদী, আনৰ অসুয়া চৰ্চা নকৰে। এওঁৰ লগত তুমি (অৰ্থাৎ অৰ্জুনে) যুদ্ধ কৰা অনুচিত। মই সত্য কৰি তোমাক এই কথা কলোঁ।’ শ্ৰীকৃষ্ণৰ এই উক্তি আৰু যুদ্ধৰ বাবে ব্যুহ ৰচনাৰ বিস্তৃত বিৱৰণ কবিয়ে বাদ দিছে। এনে ধৰণৰ দুই-চাৰিটা কথাৰ বাহিৰে কাব্যৰ বাকীখিনি মূলানুগ। উদাহৰণ স্বৰূপে তাম্ৰধ্বজে শ্ৰীকৃষ্ণক যুদ্ধলৈ আহ্বান জনাই কৈছে—

“নান্যেবাং ৱিদ্যতে শক্তিহুয়াং ৱিনা দেৱকীসূত।

ময়া সমং মহাৰণে সম্যগ্ যোধয়িতুং হৰে।।”

(৪১/৪৯)

“হে দৈৱকী নন্দন হৰি, তোমাত বাজে আন কাৰো এই মহাৰণত মোৰ
লগত যুদ্ধ কৰিবৰ শক্তি নাই।” কবি হৰিবৰে ইয়াৰ অনুবাদ কৰিছে এনে ধৰণে—

“আন বীৰ সহিতে যুঁজিলে নাই ৰস।

জিনিলেও যশ নাই হাৰিলে কুশশ।। ৩২”

অনিৰুদ্ধ, বৃষকেতু, বৰুণাহন আদিৰ লগত তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধৰ বৰ্ণনা কবিয়ে
মূলানুগ কিস্তি বিস্তৃত কৰিছে আৰু য’তেই সুৰুঙা পাইছে তাতে নিজা কথা সংযোগ
কৰি কাব্যৰ আকৰ্ষণীয়তা বৃদ্ধি কৰিছে। উদাহৰণ স্বৰূপে অনিৰুদ্ধৰ লগত হোৱা
যুদ্ধত তাম্ৰধ্বজে অৰ্জুনৰ চতুৰঙ্গ সেনা কেনেকৈ কাটি-মাৰি খাত্ৰাং কৰিছিল সেই
বৰ্ণনা কবিয়ে ৪৬ৰ পৰা ৪৯ সংখ্যক পদত বিস্তাৰ কৰিছে। তাম্ৰধ্বজে শ্ৰীকৃষ্ণক
গাট্টা কৰি কৈছে—

“ওবা নাৰায়ণ বৰ ৰণত কুশল।

আবেসে জানিলোঁ সৰে তমু মায়া-বল।।

মোক লাগি চক্ৰ ধৰি আগে আইলা ধাই।

হস্তী এৰি মাখিত কিসৰ মুনিবাই।। ১২৯”

কথাখিনি কবিৰ নিজা সংযোগ।

“অনাবৰে খলকিল সাগৰৰ জল।

মুহূৰ্ত্তে কম্পিলা গৈলা সুৰৰ মণ্ডল।।

দশো দিশে ফুৰে যেন সবাতো আকলি।

ভয় শাস্ত সৰ্পগণ ভৈলেক মণ্ডলী।। ১২৫”

এইখিনি মূলৰ ৪৩/৪৮,৪৯ সংখ্যক শ্লোকৰ ছবছ অনুবাদ। ইয়াৰ ঠিক
পিচৰ পদত থকা

“আতি বিপৰীত কৰ্ম্ম কৰন্তু মাধৱ।।

ৰথী ছয়া চক্ৰ ধৰি যুঝন্ত মুৰাৰি।

মহন্তে অকাৰ্য্য কৰে কি বুলিতে পাৰি।। ১২৬”

এয়া অতি উপযোগী অথচ কবিৰ নিজা মন্তব্য। হৰিবৰ বিপ্ৰৰ অনুবাদৰ স্বচ্ছন্দতা
তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ কাব্যতো সততে দেখা যায়। উদাহৰণ স্বৰূপে, মূলৰ

“বিৰেজুন্তে নৰা ভূমৌ পতিতাস্চাস্য সায়েকৈঃ।।

ক্ষীণ পুণ্যা ইৱ জনা গগনাদ্ ভূতলে যথা।”

হৰিবৰ বিপ্ৰৰ অনুবাদ—

“ৰথ এৰি পৃথিৱীত তেজিলা শৰীৰ॥

পুণ্য ক্ষীণ প্ৰাণী যেন স্বৰ্গ পথ এৰি।

নিৰাশ্ৰয় ৰূপে ধৰণীত থাকে পৰি॥ ৬৫”

মুঠতে তিনিওখন কাব্যতে অতি উচ্চ খাপৰ অনুবাদ কাৰ্য সম্পাদন কৰি কবিয়ে নিজ প্ৰতিভাৰ সম্যক্ পৰিচয় দিছে। কাব্যকেইখনৰ পৰা বুজিব পাৰি যে কবি হৰিবৰ বিপ্ৰ এজন উচ্চ খাপৰ পণ্ডিত আৰু ৰসজ্ঞ ব্যক্তি আছিল। কাব্যৰ বিষয়-বস্তু গ্ৰহণ-বৰ্জনৰ ক্ষেত্ৰত কবিয়ে যি সুবিবেচনাৰ পৰিচয় দিছে তাৰ পৰাও কবিৰ অসাধাৰণ প্ৰতিভাৰ পৰিচয় পোৱা যায়। কাব্যৰ জনপ্ৰিয়তা বৃদ্ধিৰ কাৰণে আৰু বিষয়-বস্তুক অধিকতৰ প্ৰাঞ্জল আৰু মনোগ্ৰাহী কৰাৰ উদ্দেশ্যে কবিয়ে যিবোৰ উপমা, ৰূপক আদি অলঙ্কাৰ প্ৰয়োগ কৰিছে সেইবোৰে কাব্যৰ শোভা আৰু ওজঃগুণ বৃদ্ধি কৰিছে। যেনে,

১। “আগে যেন মনুষ্যে লৱড়ে খৰতৰি।

ছাগ বুলি বাঘৰ গলত আছে ধৰি॥

মনুষ্যে এড়ন্তে গলৰ নেৰে বাঘে।

তোৰ মোৰ পটন্তৰ সেহিমতে লাগে॥”

(বত্ৰবাহনৰ যুদ্ধ—৭৬-৭৭)

২। “সিবেলাত সুবেগক সম্ম নাহি কেৱ।

নিমাইবাৰ বেলা যেন জ্বলে দীপ ক্ষেৱ॥”

(বত্ৰবাহনৰ যুদ্ধ—১৯৬)

৩। “হৃদয়ত পৰি বীৰে দুই হাতে আটে।

বলৱন্ত নাৰী যেন বেসুৰাৰ বাটে॥

(বত্ৰবাহনৰ যুদ্ধ—২৬৪)

৪। “সাগৰ বুলিয়া ৰাম্প দিলৌ পিয়াসত।

সিও শুকাই খালি ভৈল মোহোৰ ভাগ্যত॥”

(তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ—৩০১)

৫। “যেন পানী খোজন্তে দধিক দিলা বিধি॥”

(তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ—২০)

৬। “হস্তীৰ আগত যেন কদলীৰ পখা।”
(তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ—২৫)

৭। “বালিত নৰহে যেন অল্ল বৃষ্টিজল।”
(লৱ-কুশৰ যুদ্ধ—৫৩১)

৮। “গোড় কটা কল যেন পড়িলন্ত যেনি।।”
(লৱ-কুশৰ যুদ্ধ—১৩০)

৯। “লোণ নাৱ তল গৈল আঙ্গুলিক চাখা।”
(লৱ-কুশৰ যুদ্ধ—৫০৯)

কাব্যকেইখনত ফকৰা-যোজনা, প্ৰবাদ পটন্তৰো পাৰ নেজীয়াকৈ খাপ খুৱাই ব্যৱহাৰ কৰা হৈছে। উদাহৰণ স্বৰূপে,

১। “নখে যিবা কাৰ্য্য সিবে কুঠাৰ লগাস।”
(বৰবাহনৰ যুদ্ধ—৪২৫)

২। “বুঢ়াৰ হাতৰ চেক্সলি সেপ্তৰে নাযাস।।”
(বৰবাহনৰ যুদ্ধ—৮৭)

৩। “হস্তীৰো পিছলে পাৰ সুজানে বুডাৰে নাৱ।”
(বৰবাহনৰ যুদ্ধ—২২০)

৪। “সোণা এৰি দিলি তই সনিয়াত গাছি।।”
(তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ—১৬১)

৫। “দোলাত যিজনে যায় উজনি কি ভাটী।।”
(তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ—২৭৯)

৬। “পাণ্ডে কি কৰিব পাৰে মুখ উৰুৰন্তে।।”
(লৱ-কুশৰ যুদ্ধ—১৩৮)

৭। “ফৰিঙ্গাৰ ৰাস আসে মৰিবাৰ লাই।।”
(লৱ-কুশৰ যুদ্ধ—২৯০)

তিনিওখন কাব্যতে গাৱ ঘেলৱস (পাৰ ঘেলৱস) ল. কু. যু. —২৮৫); উগাৰ চাৰস (ল. কু. যু.—৪০৩); কটকটায় ঘাৰ (ব. যু. —১০২); যমে পাত মলচে (ব. যু.—১০২) আদি খণ্ডবাক্য, জঁতুৱা ঠাঁচ আদিৰো সুপ্ৰয়োগ দেখা যায়।

মণিপুৰৰ ৰাজসভাৰ বিৱৰণ, গঙ্গাৰ পাৰৰ প্ৰাকৃতিক দৃশ্য আদিৰ বৰ্ণনাত কবিয়ে অসমৰ গছ-গছনি, ফুল-পাত, চৰাই-চিৰিকতি, অসমৰ থলুৱা বাদ্যযন্ত্ৰ

আদিৰে বিস্তৃত বৰ্ণনা সংযোগ কৰিছে। প্ৰাচীন অসমৰ সামাজিক ৰীতি-নীতি, লোকাচাৰ লোক-বিশ্বাস আদিৰো সুপ্ৰয়োগ ঘটাইছে। উদাহৰণ স্বৰূপে লৱ-কুশৰ যুদ্ধত সীতাৰ পুংসৱন উৎসৱ, বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধত মণিপুৰত ৰণজয়ৰ উৎসৱলৈকে আঙুলিয়াব পাৰি। বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধ কাব্যৰ অৰ্জুনৰ মূৰৰ ওপৰত শগুণ উৰা, কুন্তীয়ে সপোনত অৰ্জুনক গায়ে মূৰে তেল ঘঁহি, জবা ফুলৰ মালা পিন্ধি গাত গোবৰৰ প্ৰলেপ সানি, ম'হৰ পিঠিত উঠি দক্ষিণলৈ যোৱা দেখা; লৱ-কুশৰ যুদ্ধ কাব্যত সীতাৰ বাওঁ চকু লৰা, ৰামৰ সেনাৰ ওপৰত শগুণ উৰা আদি জন-বিশ্বাসৰ কথাও কাব্য কেইখনত আছে। অৱশ্যে ইয়াৰ অধিকাংশ মূল পুথিৰ পৰা লোৱা।

হৰিবৰ বিপ্ৰৰ কাব্যৰ ভাষাত প্ৰাক্-শঙ্কৰী যুগৰ ভাষাৰ বৈশিষ্ট্যসমূহ দেখা যায়। উৱাৰি, বাপুতৰ, নোগোকা, তৰিবিৰি-কাপৰি, আকলি, কিটাইল, শনাইবাৰ, ওছাই, পছাৰ বজাস্ত, ধাৰ দিলোঁ, পাত মলচিল আদি ভালেমান প্ৰাচীন আৰু অধুনা অপ্ৰচলিত শব্দ কাব্যকেইখনত পোৱা যায়। 'পুত্ৰৱতে শিশু ধৰি', 'হন্তী কান্ধ নামি' আদিত অপাদান অৰ্থত ধৰি, এৰ ব্যৱহাৰ, কৰ্ত্তৃ কাৰকত -এ বিভক্তিৰ যোগত আ-কাৰাস্ত, ই- কাৰাস্ত শব্দৰ সংকোচন (যেনে, বেলা+এ=বেলে, উলুপী+এ=উলুপে, বাৰ্ম্মীকি+এ=বাৰ্ম্মীকে ইত্যাদি) আদিত ভাষাৰ প্ৰাচীনতাৰ লক্ষণ দেখা যায়। অতীত কৃদন্ত পদ বুজাবলৈ -ইব প্ৰত্যয়ৰ ব্যৱহাৰ আৰু স্বাৰ্থিক অনুসৰ্গ হিচাপে -এৰ ৰ ব্যৱহাৰ প্ৰাক্-শঙ্কৰী ভাষাৰ লক্ষণ বুলি ভাষাবিদ ড° বাণীকান্ত কাকতিদেৱে তেখেতৰ গৱেষণাগ্ৰন্থত দেখুৱাই গৈছে। এই দুটা লক্ষণ হৰিবৰৰ কাব্য কেইখনতো দেখা যায়। উদাহৰণ স্বৰূপে,

‘পাসৰিবাৰ অস্ত্ৰ’ (বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধ—৩০৮),

‘হৰাইবাৰ মুণ্ড’ (বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধ—৫৬৪),

‘শিখিবাৰ শৰ’ (তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ—৫৬),

‘শনাইবাৰ শৰ’ (লৱ-কুশৰ যুদ্ধ—৩০২),

‘দেখায়েৰোঁ’ (বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধ—৪৭৯),

‘চিণ্ডিয়েৰোঁ’ (বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধ—৫৫০),

‘খুজি এৰোঁ’ (তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ—৩৯)।

অৱশ্যে হৰিবৰ বিপ্ৰৰ কাব্যৰ দুই-এঠাইত ভাষাৰ অৰ্বাচীন ৰূপ দেখা যায় যেনে, ‘তাকৰ’ (ব. যু.—৪৯৯), ‘যুঝিৰ নুৱাৰি’ (ব. যু.—৫০৪), ‘পলাব নিদিবা’

(ল. কু. যু.—৩৬১) ইত্যাদি। পণ্ডিতসকলে এনেধৰণৰ প্ৰয়োগ পক্ষিষ্ঠ বুলি অনুমান কৰে।*

হৰিবৰ বিপ্ৰৰ কাব্য কেইখনত পদ আৰু দুলৰী ছন্দৰ প্ৰয়োগেই বেছি। বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধত অৰ্জুনৰ খেদ আৰু লৱ-কুশৰ যুদ্ধত ৰামৰ খেদ আৰু সীতাৰ বিলাপৰ বৰ্ণনাত মাত্ৰ ছবি ছন্দ ব্যৱহাৰ কৰিছে। বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধত যুদ্ধৰ বাবে সাজু হোৱাৰ বৰ্ণনাৰ এঠাইত মাত্ৰ ঝুমুড়ি ছন্দ প্ৰয়োগ কৰিছে। তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধত পদ ছন্দৰ বাহিৰে অন্য ছন্দ ব্যৱহাৰ কৰা নাই।

মুঠতে সংস্কৃত কাব্যৰ অনুবাদক হিচাপে অসমীয়া সাহিত্যত প্ৰাক-শঙ্কৰী যুগৰ কবিসকলৰ ভিতৰত হৰিবৰ বিপ্ৰৰ এখন বিশিষ্ট আসন আছে।

— ভূৱনেশ্বৰী বৈশ্য

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- ১। কালিৰাম মেধিৰ দ্বাৰা সম্পাদিত *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*, দ্বিতীয় সংস্কৰণ, ১৯০০ শক (১৯৭৮ খৃঃ)
- ২। "He (Hemsarasvati) makes mention of his patron king Durlabhanarayana of Kamatapur, who is said to have ruled in the later part of the thirteenth century."
(*Assamese, Its Formation and Development*, first edition, 1941)
- ৩। *অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত*, ৮ম সংস্কৰণ, ১৯৮১
- ৪। "Durlabhanarayana seems to be the earliest of the kings mentioned in the literature of the age and is considered to have belonged to the later part of the thirteenth or the middle of the fourteenth century"
- ৫। "Scholars have arrived at about the second quarter of the fourteenth century (1330-50) or the later part of the thirteenth century as the date of Durlabhanarayana's reign"
- ৬। বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধ আৰু তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ, (পৃ : ১১৮) ৫৬
- ৭। বৰেন্দ্ৰবাহনৰ যুদ্ধ আৰু তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধ, (পৃ : ১৮) আৰু *Assamese : Its Formation and Development* গ্ৰন্থৰ পাতনি দ্ৰষ্টব্য
- ৮। *অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত*, (৮ম সংস্কৰণ, ১৯৮১) পৃ : ৭২

কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ জয়দ্রথ বধ

(গ)

কমতাপুৰৰ ৰজা দুৰ্লভনাৰায়ণৰ পুত্ৰ ইন্দ্ৰনাৰায়ণৰ কাল চতুৰ্দশ শতিকাৰ মাজ ভাগ। স্বভাৱতে গম্ভীৰ প্ৰকৃতিৰ ইন্দ্ৰনাৰায়ণ সদায়েই ‘হৰিসেৱা’ত ব্ৰতী। নিজ বাহুবলেৰে ‘অখণ্ড মহীমণ্ডল’ৰ অধিকাৰী হোৱাত বিপক্ষ ৰজাসকলে তেওঁৰ ‘সাৰ্বভৌমত্ব’ স্বীকাৰ কৰিবলৈ বাধ্য হৈছিল। সদাশিৱৰ পৰা ৰজাই ‘পাঞ্চ গৌড়েশ্বৰ’ৰ অধিপতি তথা পিতা-পুত্ৰ চিৰঞ্জীৱ হোৱাৰ বৰ লাভ কৰিছিল।

কবি কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ ঘৰ বৰপেটাৰ ওচৰৰ ছোটা শিলা গ্ৰামত। কায়স্থ চক্ৰপাণি শিকদাৰ আছিল কবিৰ পিতৃ আৰু তেওঁ ৰাজবিষয়া আছিল। চন্দ্ৰমাৰ দৰে নিষ্কলুষ চক্ৰপাণি শিকদাৰ আছিল বংশৰ মুখ উজ্জ্বল কৰোঁতা পণ্ডিত, প্ৰধান ব্যক্তি। এনে হেন পণ্ডিত ব্যক্তিৰ পুত্ৰ কবিৰত্ন সৰস্বতীয়ে ইন্দ্ৰনাৰায়ণৰ পৃষ্ঠপোষকতা লাভ কৰি মহাভাৰতৰ দ্ৰোণ পৰ্বৰ অন্তৰ্গত জয়দ্রথ বধ অসমীয়ালৈ অনুবাদ কৰে।

হৰিনাৰায়ণ দত্তবৰুৱা সম্পাদিত ‘অসমীয়া মহাভাৰত’ৰ দ্বিতীয় খণ্ডত সংযোজিত হোৱা দ্ৰোণ পৰ্বৰ অন্তৰ্গত ‘জয়দ্রথ বধ’ৰ কবি কবিৰত্ন সৰস্বতীয়ে দুলাড়ী ছন্দত লিখা ‘কৈলাস বৰ্ণনা’ৰ ভণিতা এনেধৰণৰ—

নৃপ শিৰোমণি	দেৱ মহামানী
দুৰ্লভনাৰায়ণ ৰজা।	
নিতে পুত্ৰৱতে	পালিলা সততে
পৃথিৱীৰ যত প্ৰজা।।	
তাহান তনয়	ভৈল ধৰ্মময়
ইন্দ্ৰনাৰায়ণ দেৱ।	
মহাবীৰ ধীৰ	স্বভাৱে গম্ভীৰ
নিতে কৃত হৰি দেৱ।।	

নিজ বাহুবলে পাইলা অবিকলে
 অখণ্ড মহীমণ্ডলে।
 যাত খাটে নমি সততে প্ৰণামি
 বিপক্ষ নৃপসকলে।।
 যাত সৰ্বক্ষণ ইন্দুনাৰায়ণ
 বৰ দেহু সদাশিৱ।
 হৌক নৰেশ্বৰ পাণ্ডু গৌড়েশ্বৰ
 পিতা-পুত্ৰ চিৰঞ্জীৱ।।’

কবিৰ ভণিতাৰ ভিতৰতে থকা তলৰ উদ্ধৃতিখিনি ব্যাতিক্ৰম পৰ্যায়ৰ—

দেৱ দ্বিজগণ কৰিলা পূজন
 সঘনে ধৰ্ম প্ৰসঙ্গ।
 নিত্য উপগত যাৰ অভ্যাগত
 নভৈলেক আশা ভঙ্গ।।
 নিজ গুণবলে লভিল সকলে
 ধন ধান সতকাৰ।
 নৃপতি প্ৰধান দুৰ্লভনাৰায়ণ
 প্ৰশংসয় বাৰে বাৰ।।
 তানে পৰলোক ভৈল সৰ্বে শোক
 নিজ তনু ভঙ্গে ৰণে।
 মেৰু শৃঙ্গ ভঙ্গ সিদ্ধু ভৈলা পঙ্ক
 মাণিক বিক্ষিলা ঘূণে।।’

নিজ পৰিচয় দাঙি ধৰাৰ একে ক্ৰমতে থকা ওপৰৰ কথাখিনি কবিজনৰ ব্যক্তিগত স্বভাৱ আৰু কাৰ্যাৱলীৰ লগত কোনো ধৰণে খাপ নাখায়। ‘দেৱ দ্বিজগণ’ক পূজা কৰা, ‘সঘনে ধৰ্ম প্ৰসঙ্গ কৰা’, ‘অভ্যাগতৰ আশা ভঙ্গ নকৰা’, ‘ধন ধান সৎকাৰ’ লাভ কৰা চাৰিত্ৰিক বৈশিষ্ট্যবোৰ ৰজাৰ চৰিত্ৰতহে প্ৰযোজ্য। ‘তানে পৰলোক ভৈল সৰ্বে শোক’ শব্দচয়নে ‘নৃপতি প্ৰধান দুৰ্লভনাৰায়ণ’ৰ মৃত্যুত দেশৰ প্ৰজা সাধাৰণ

গভীৰ শোকত অভিভূত হোৱা কথালৈকে স্পষ্টভাৱে আঙুলিয়াইছে, চক্ৰপাণি শিকদাৰলৈ নহয়। *Aspects of Early Assamese Literature*ত (পৃঃ ৪৩) ড° মহেশ্বৰ নেওগে ওপৰৰ উল্লিখিত কথাখিনি অন্য এজন ব্যক্তিৰ ওপৰত আৰোপ কৰিবলৈ বিচৰাটো ভ্ৰমাত্মকেই নহয়, ই পটুৱৈক বিভ্ৰান্ত কৰিছে।^{১০} ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মাই বোধকৰো সেই বাবেই *অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত*ত কবিৰ ভণিতাৰ সেই অংশ সম্পূৰ্ণ পৰিহাৰ কৰিছে।^{১১} আমাৰ বিচাৰত ওপৰৰ উদ্ধৃতি ‘দেৱ দ্বিজগণ ... যুগে’ হয় প্ৰক্ষিপ্ত নহয় লিপিকাৰৰ প্ৰমাদৰ হেতু বা অনৱধানবশত কবি পৰিচয়ৰ লগত সামঞ্জস্য ৰাখি যথা স্থানত লিপিবদ্ধ নকৰাত খেলি-মেলিৰ সৃষ্টি হৈছে।

ভণিতাটিৰ শেষৰ অংশই কবিৰ গ্ৰাম, পিতৃ পৰিচয়, পিতৃৰ পাণ্ডিত্য তথা পদবী স্পষ্টৰূপত প্ৰকাশ কৰিছে :

ছেটশিলা নাম	আছে এক গ্ৰাম
যত গ্ৰাম মধ্য সাৰ।	
আছিল তথাত	জগত প্ৰখ্যাত
চক্ৰপাণি শিকদাৰ।।	
পটু নৰবৰ	কায়স্থ প্ৰবৰ
ধৰ্মৱন্ত মহাযশী।	
পণ্ডিত তিলক	কুল প্ৰকাশক
নিষ্কলঙ্ক যেন শশী।।	
তাহান তনয়	অতি শুভনয়
কবিৰত্ন সৰস্বতী।	
দ্রোণ পৰ্ব পদ	জয়দ্ৰথ বধ
কৌতুহলে নিগদতি।। ^{১২}	

মাধৱদেৱৰ ভাগিনীয়েক ৰামচৰণ ঠাকুৰৰ উৰ্বৰতম সপ্তম পুৰুষৰ অৱস্থানত আছে মহাভাৰতৰ কবি কবিৰত্ন সৰস্বতী।

মূল মহাভাৰতৰ দ্ৰোণ পৰ্বৰ অন্তৰ্গত ‘জয়দ্রথ বধ’ কাহিনীৰ ক্ষিৰিষ্ঠ স্বকীয় কাল্পনিক দৃষ্টিৰে ‘কৈলাসৰ বৰ্ণনা’ আগ বঢ়াইছে কবিৰত্ন সৰস্বতীয়ে। দুলভী ছন্দত সঁচাকৈয়ে ফুটি উঠিছে এখনি মনোৰম চিত্ৰ।

ফটিক সদৃশ হৰৰ কৈলাসত শত শত উদ্যান জাতিষ্কাৰ কৰা ফল, ফুলৰ গোন্ধত, সকলোৰে মন-প্ৰাণ উতলা হৈছে। সৰোবৰ উপৰি পৰিছে শীতল নিৰ্মল পানীৰে। পদুম ফুলৰ মধুৰ দ্বাৰা আকৰ্ষিত হৈ ক্ৰীড়াৰত জলচৰ পখী হংস, চক্ৰবাকে ক্ষণে ক্ষণে উৰি আকৌ ফুলতে পৰিছে। ফুলৰ ভৰত ‘ডাল ভাগো ভাগো হোৱা’ গছৰ ফুলবোৰে যেন বতাহতে হালি-জালি গীত গাই বৈচিত্ৰ্যময় উদ্যানক ৰূপায়িত কৰিছে এক সন্মোহিত ৰূপ।

বসন্ত ঋতুৰ আগমনত মলয়া বতাহ, ভ্ৰমৰৰ গুঞ্জন, কোকিলৰ ৰাও আৰু কামদেৱৰ পঞ্চবাণৰ সমাহাৰে বিৰহীৰ অন্তৰত জ্বলাইছে কামনাৰ জুই। গিৰি-গহুৰত মৃগ-চৰ্মত পদ্মাসনৰে ধ্যানস্থ হোৱা সিদ্ধসকল, শিৱ আৰাধনাত ব্ৰতী তপস্বীগণ, ব্ৰহ্মা, নাৰায়ণ, সুৰপতি, দেৱতাসৰৰ নিতৌ শিৱ পূজাৰ আড়ম্বৰৰ মাজতে অব্যাহত আছে বেদজ্ঞ ঋষিসৰৰ ‘শুদ্ধ মনে’ আৰু ‘আতি দীৰ্ঘ ৰাৱে’ শিষ্যক জ্ঞান দিয়াৰ প্ৰচেষ্টা। চাৰি বেদ চৈধ্য শাস্ত্ৰ ৰোমন্থন কৰি জ্ঞানৰ ভাণ্ডাৰ বুটলিবলৈ প্ৰয়াস কৰা তপস্যাৰত অনুসন্ধিৎসুগণে পুৰাণ, ভাৰত, তৰ্কশাস্ত্ৰত প্ৰবৃত্ত হৈছে অহৰ্নিশে।

সপোন ৰাজ্যতে কৈলাস পৰ্বতত আৰোহণ কৰা মধ্যম পাণ্ডৱ অৰ্জুনৰ চকুত পৰিছে শিৱ-অনুচৰ প্ৰমথসকলৰ বিকৃত শৰীৰবোৰ। মুণ্ডহীন, কবন্ধ সদৃশ, ডাঙৰ গলযুক্ত, ওলমা অণুকোষধাৰী, ভৰিহীন, বহুভৰিয়ুক্ত, বেঁকা মূৰৰ প্ৰমথবোৰ। শিৱ থানৰ চাৰিওফালে বিচৰণ কৰা সহজে চকুত পৰা ‘কুলা হেন কাণ লৰে ঘনে ঘন কুপ হেন চক্ষু দুই’ৰ দেহাধাৰী বিকৃতাকাৰৰ প্ৰমথৰ দৰ্শনত সপোনতে প্ৰত্যক্ষ কৰা অৰ্জুনৰ ভীতিবিহ্বলতা পৰিলক্ষিত হৈছে।

মদনবিহুলা কঠিন পীনোন্নত স্তনৰ গৰাকী অপৰূপা অপেশ্বৰীসৰে আকুলতাৰে স্মৰণ কৰিছে প্ৰেমিক প্ৰভুসকলক। নখ-ক্ষতত নিগৃহীতা তথা আলিঙ্গনবন্ধা নাৰীৰ, স্বামীৰ নিষ্পেষণত সোলকা খোপাৰ সুবাসিত ফুলৰ পাহিবোৰ বিক্ষিপ্তভাবে সিঁচৰতি হৈ পৰিছে। পুলকিতা চঞ্চলা চকুযুৰিত ভাহি উঠিছে আঁকি দিয়া অধৰৰ দন্ত-ক্ষতৰ চিনবোৰ। নিশাৰ অন্ধকাৰত ৰতি-তৃপ্তা নাৰীৰ তিনি-চাৰিজনীয়ে সদ্য দন্ত-ক্ষতৰ চিহ্নকো আওকাণ কৰি সন্ধাচহীনভাৱে গৌৰৱেৰে

আৰু আনন্দেৰে পথ অতিক্ৰম কৰাত ব্যস্ত। নাৰী দেহত হালি-জালি থকা পাতল পাট কাপোৰ মলয়া বতাহৰ বা লাগি অতি লাজ লগাকৈ শৰীৰৰ পৰা পিছলি পৰাত উন্মুক্ত হৈছে দেহাৰ অসমান ভাঁজবোৰ। আনহাতে, যৌৱনদীপ্তা নিতম্বিনী নাৰীসৰে মন্ত্ৰৰ গতিত গম্ভীৰ স্থানলৈ গতি কৰিছে। তেওঁলোকৰ নয়ন কটাক্ষত বন্দী হৈছে মুখ-মণ্ডলত ফুটি উঠা চিত্ত-বিশ্ৰমৰ সঞ্চাৰী ভাবৰ মাদকতাবোৰ। ঘোৰ কামবাণত জৰ্জৰিত প্ৰাণ চঞ্চলময়ী প্ৰেমিকাই মিলনৰ তীব্ৰ আকাঙক্ষাত প্ৰেমিকৰ আহ্বানক স্বাগতম জনাই তেওঁৰেই ওচৰ চাপিছে।

ফল, ফুলৰ বৰ্ণনাৰ পৰিপ্ৰেক্ষিততহে কবিৰ ‘কৈলাস বৰ্ণনা’ৰ চিত্ৰখন শঙ্কৰদেৱৰ ‘হৰমোহন’ৰ সমকক্ষ। চঞ্চলা নাৰীৰ উদ্ভাস্তা যৌৱনে ব্যাকুল কৰি তোলা আপোন-পাহৰা মহাদেৱৰ বাতুলতাৰ চিত্ৰ ইয়াত দেখুওৱা নাই।

মূল মহাভাৰতৰ দ্ৰোণ পৰ্বৰ ভিতৰুৱা ‘জয়দ্ৰথ বধ’ কাহিনীত সপোন ৰাজ্যত বিচৰণ কৰা অৰ্জুনে ‘কৈলাস’ যাত্ৰাৰ শেষত উপস্থিত হোৱা মহাদেৱৰ স্থানত প্ৰাকৃতিক দৃশ্য উপভোগ কৰোঁতে বিভিন্ন ধৰণৰ কম সংখ্যক ফল, ফুল, চৰাইক আৱিষ্কাৰ কৰিছে। তাৰ তুলনাত, কবিৰত্ন সৰস্বতীয়ে ‘কৈলাস বৰ্ণনা’ত অসমৰ ২০ বিধ ফলৰ গছ, ২৪ বিধ ফুল আৰু নানা বৰণৰ ৪ প্ৰকাৰ চৰাইৰ নাম দাঙি ধৰিছে। এইখিনিতে বোধকৰোঁ কোৱাটো অপ্ৰাসঙ্গিক নহ’ব যে পৰৱৰ্তী কবি শঙ্কৰদেৱে ‘হৰমোহন’ৰ উপবন বৰ্ণনাৰ সম্পৰ্কত ৪৫ বিধ ফুল আৰু ৮ বিধ চৰাইৰ নাম সন্নিৱিষ্ট কৰিছে। পূৰ্ববৰ্তী কবিৰ পৰা পৰৱৰ্তী কবিয়ে বিষয়বস্তু তথা আনুষঙ্গিক উপাদান সংগ্ৰহ কৰা প্ৰথা এটাৰ পৰম্পৰা চলি আহিছে। মাধৱ কন্দলী, কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ লিখনিৰ দ্বাৰা শঙ্কৰদেৱ উপকৃত হৈছিল বুলি আমি ধৰি ল’ব পাৰোঁ। শঙ্কৰদেৱৰ উত্তৰা কাণ্ড ৰামায়ণত ‘পূৰ্ব কবি অপ্ৰমাদী মাধৱ কন্দলী আদি’ৰ উদ্ধৃতিৰ সাৰমৰ্ম এনেদৰে উপলব্ধি কৰিব পাৰি।

‘কৈলাস বৰ্ণনা’ত হৰৰ উদ্যানৰ ফল, ফুলবোৰে অসমৰ ফল, ফুললৈহে মনত পেলায়। কবি উল্লিখিত ফলবোৰ হ’ল, যেনে— আম, কল, কমলা, গুৱা, চাম, চকলা, জাম, জৰা, জামীৰ, জিহ্ন, তাল, দাড়িম্ব (ডালিম), নাৰিকল, পনীয়ল, মধুৰী, লেতেকু, শাল, সোলঙ্গ, সফুৰা, কণ্টকি (কঁঠাল) আদি। বিভিন্নতা থকা ফুলৰ নাম, যেনে— কনক, কমল, কুন্দ, কুৰুবক, কদম্ব, কেতেকী, চম্পা, জয়ন্তী, জাঁই, তগৰ, ধুস্তৰ, নাগেশ্বৰ, নেৱালী (নৱমল্লিকা), পাৰিজাত, বকুল, বন্দুলি, মদাৰ, মালতী, মালী, ৰেৱতী, লৱঙ্গ, সেৱালী (শেৱালী), সেউতি, শিৰীষ আদি। চৰাইৰ

ভিতৰত ৩ বিধৰ নাম, যেনে— কোকিল (কুলি), হংস (হাঁহ), চক্ৰবাক (চাকৈ চকোৱা চৰাইৰ মতা) আৰু ভ্ৰমৰ (ভোমোৰা) (ফুলৰ মৌ-পিয়া ক'লা পতঙ্গ)।

কৈলাস বৰ্ণনা কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ স্বকল্পিত সৰল, সৰস বৰ্ণনা। মূল মহাভাৰতৰ 'দ্ৰোণ পৰ্ব'ৰ ভিতৰুৱা 'জয়দ্ৰথ বধ' কাহিনীৰ (২৭—৩০ শ্লোক, ৭১ অধ্যায়) ভিতৰত 'কুবেৰৰ উদ্যান', 'সৰোবৰ' নানাবিধ ফল, ফুলৰ গছ আৰু উৰি ফুৰা চৰাইৰ উল্লেখ সাধাৰণভাৱে থকাটো মন কৰিব লগীয়া। মূলত অকল পদুম আৰু মদাৰ ফুলৰ চিনাকিৰে ফুলৰ তালিকা সম্পূৰ্ণ কৰিছে। সেই পৰিপ্ৰেক্ষিতত, আগৰ ছেদতে উল্লিখিত ফল, ফুল আৰু চৰাইৰ অন্তৰ্ভুক্তিয়ে কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ বাস্তৱ জ্ঞান দাঙি ধৰিছে। আকৌ, মূল মহাভাৰতৰ ভয়াৱহ জীৱ-জন্তু বাঘ আৰু সিংহৰ সলনি আমাৰ কবিয়ে উপস্থাপন কৰিছে বিকৃত ৰূপৰ শিৱ-অনুচৰ প্ৰমথসকলক। গীত গোৱা কুবেৰৰ অনুচৰ কিন্নৰসকলৰ বিপৰীতে কবিয়ে আৱিষ্কাৰ কৰিছে লাস্যময়ী অভিসাৰিকা আৰু নাৰীসকলক। এইয়া কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ কৃতিত্ব।

মূলৰ উপমাদি অলঙ্কাৰৰ দ্বাৰা কিছু দূৰ উপকৃত হ'লেও কবিৰ কল্পচিত্ৰ, উপমাদি প্ৰয়োগত মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণ, হৰিবৰ বিপ্ৰৰ বজ্ৰবাহনৰ যুদ্ধৰ প্ৰভাৱ আওপকীয়াভাৱে পৰাটোহে সম্ভৱ। মাধৱ কন্দলীৰ কালৰ অৰ্থাৎ চৈধ্য শতিকাত সংস্কৃত ৰামায়ণৰ 'গৌড়ীয় পাঠ'ৰ সংস্কৰণ অসমত প্ৰাপ্তি হোৱাৰ কথাই পূৰ্ব ৰচিত অসমীয়া কাব্যৰ প্ৰচলনৰ সম্ভাৱনা সুদৃঢ় কৰিছে। পূৰ্বৱৰ্তী কবিৰ ৰচনা পৰৱৰ্তী কবিৰ হাতত পৰাটো বাস্তৱ দৃষ্টিত সত্য।

কৈলাস বৰ্ণনাৰ উপমা, চিত্ৰকল্পবোৰ 'বুৰোঁ বুৰোঁ কৰে তীৰ', 'ফুল ভৰে ভাগে ডাল', 'বহয় মলয়া বাৰ', 'কোকিলে তেজয় ৰাৱ', 'কুলা হেন কাণ লৰে ঘনে ঘন, কুপ হেন চক্ষু দুই', 'উন্নত কঠিন ঘন পীন স্তন', 'তান নখে ক্ষত সুৰত বেকত', 'যৌৱনৰ ভৰে চলে ধীৰে ধীৰে দুঃসহ নিতম্ব ভৰে' ইত্যাদিয়ে পাঠক, শ্ৰোতাক মনোৰম ৰম্যপুৰী এখনলৈ লৈ যাব। এনে ধৰণৰ সুন্দৰ চিত্ৰকল্পৰ সৃষ্টিকাৰী কবিজনৰ কবিত্বময়ী ভাষাত ভাৱাবেগ, উচ্ছাসক গুৰুত্ব দি নিৰপেক্ষ বিচাৰেৰে প্ৰকৃত মূল্যায়ন কৰাটো সমীচীন হ'ব। ৰামায়ণ কবি মাধৱ কন্দলী বা বজ্ৰবাহনৰ যুদ্ধৰ কবি হৰিবৰ বিপ্ৰৰ ৰচনাৰ তুলনা পোনপটীয়াভাৱে ইয়াত আহি নপৰে। কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ ৰচনাৰ সীমাবদ্ধতা (অকল কৈলাস বৰ্ণনা) হেতু ইয়াত ঘৰুৱা উপমাৰ চিত্ৰ সংখ্যাত তাকৰ যদিও গভীৰ অৰ্থব্যাঞ্জক। অবশ্যে, জতুৱা ঠাঁচ সীমিত।

শঙ্কৰদেৱৰ ‘হৰমোহন’ আৰু কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ *কৈলাস বৰ্ণনা* (আৰম্ভণি) বিষয়বস্তু ‘উপবন’ৰ মিল লক্ষ্য কৰি *অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী*ৰ প্ৰণেতা ডিম্বেশ্বৰ নেওগে ক’বলৈ প্ৰয়াস পাইছে যে “ফুল ভৰে ভাগে ডাল”, “বহয় মলয়া বাৰ”, “কোকিলে ত্যোজিলে বাৰ” আদি শঙ্কৰদেৱৰ প্ৰতিধ্বনি যেন। ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মাই *অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত*ত কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ ‘কৈলাস বৰ্ণনা’ৰ উপবন-বৰ্ণনা লক্ষ্য কৰি কৈছে “মহাপুৰুষ শঙ্কৰদেৱৰ হৰমোহনৰ উপবন-বৰ্ণনাৰ সমকক্ষ নহ’লেও প্ৰায় ওচৰে ওচৰে যাব পৰা কাব্য-সৌন্দৰ্য কৈলাস বৰ্ণনাত আছে বুলি ক’লেও ভুল নহ’ব।”*

শঙ্কৰদেৱ কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ পৰৱৰ্তী কবি। প্ৰাকশঙ্কৰী যুগৰ কবি কবিৰত্ন সৰস্বতী শঙ্কৰদেৱৰ হৰমোহনৰ দ্বাৰা প্ৰভাৱান্বিত হোৱাটো অসম্ভৱ। মহাপুৰুষৰ কীৰ্ত্তন আৰু অষ্টম স্কন্ধ ভাগৱত (অসমীয়া)ত হৰমোহন সন্নিৱিষ্ট হৈছে। কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ দুলাড়ী ছন্দৰ স্তৱকটো (৩য় ফাকি)ত ‘ফুল ভৰে ভাগে ডাল’, ‘বহয় মলয়া বাৰ’ (৩য় ফাকি), ‘খোপা সুলকিল কুসুম খসিল’ (৪—৫ ফাকি) ইত্যাদি চিত্ৰকল্পৰ অংশ কেইটা একে দুলাড়ী ছন্দতে ৰচিত শঙ্কৰদেৱৰ ‘হৰমোহন’ৰ ‘ফুল ভৰে ভাগে ডাল’ (৬ষ্ঠ ফাকি), ‘বহয় মলয়া বাৰ’ (৬ষ্ঠ ফাকি), ‘সোলকৈ উচ্চল খোপা খসৈ পাৰিজাত খোপা’ (৪র্থ—৫ম ফাকি) ইত্যাদিৰ লগত আদ্ৰুত ধৰণৰ মিল মন কৰিব লগীয়া। ভিন্ ভিন্ সময়ৰ দুয়ো বিধ বৰ্ণনাত দুলাড়ী ছন্দৰ প্ৰয়োগ, খণ্ডবাক্যৰ একে অৱস্থিতি আৰু আক্ষৰিক মিলে (দুঠাইত) আমাক এই বিষয়ত নতুন দৃষ্টিকোণৰ পৰা চিন্তা আৰু বিচাৰ কৰিবলৈ নিশ্চয় অনুপ্ৰেৰণা যোগাব।

কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ *কৈলাস বৰ্ণনা* প্ৰকৃততে ‘জয়দ্রথ বধ’ৰ পাতনিহে। দুলাড়ী ছন্দত (পদ চাৰি, যতি-ভাগ ছয়টা) ৰচিত *কৈলাস বৰ্ণনা*ত মুঠ $1৯ \times ২ = ৩৮$ টা ছন্দতে (৯০২—৯২০) সীমাবদ্ধ। অকল *কৈলাস বৰ্ণনা*ই কবিজনাবৰ সমগ্ৰ সাহিত্যিক অৱদান বুলি আমাৰ বিশ্বাস নহয়। কিন্তু কবিৰ সম্পূৰ্ণ ‘জয়দ্রথ বধ’ কাব্য উদ্ধাৰ নোহোৱা পৰ্যন্ত হাতত পৰা ‘কৈলাস বৰ্ণনা’ৰ ভিত্তিত কৰা মূল্যায়ন আংশিকহে।

কবি-পৰিচয়ত ‘জয়দ্রথ বধ’ ৰচনা কৰা বুলি কবিয়ে স্পষ্টভাৱে উল্লেখ কৰিছে। কবিৰ কথাত সন্দেহ কৰিব লগীয়া নাই। কিন্তু, *অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি অসমীয়া মহাভাৰত* (২য় খণ্ড) আদিত কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ *কৈলাস বৰ্ণনা*ৰ বাহিৰে অন্য ৰচনা সন্নিৱিষ্ট কৰা নাই। কবিৰ ‘জয়দ্রথ বধ’ৰ কোনো পাণ্ডুলিপি (সাঁচিপাত

বা তুলাপাত) সম্ভৱ এতিয়ালৈকে উদ্ধাৰ হোৱা নাই। পৰিতাপৰ কথা যে অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ প্ৰণেতা ডিম্বেশ্বৰ নেওগ, ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মা, ড° মহেশ্বৰ নেওগে 'জয়দ্রথ বধ' কাব্যৰ দুস্তাপ্য অৱস্থাৰ বিষয়ে তেওঁলোকৰ গ্ৰন্থত উল্লেখ কৰা নাই। অনিচ্ছা সত্ত্বেও উপাদানৰ অভাৱত কবিজনৰ সাহিত্যিক অৱদানৰ সঠিক মূল্যায়ন কৰিব পৰা নগ'ল।

— ড° সদা বেজবৰুৱা

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- ১। মাধৱ কন্দলী, সপ্তকান্ত ৰামায়ণ, ১৯৮৫
- ২। হৰিবৰ বিপ্ৰ, বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ, ১৯৬০
- ৩। হৰিনাৰায়ণ দত্তবৰুৱা (সম্পা), অসমীয়া মহাভাৰত (২য় খণ্ড) ১৯৫৫
- ৪। হৰিদাস সিদ্ধান্ত বাগীশ (সম্পা), মহাভাৰতম্, দ্ৰোণ পৰ্ব, (২২ সংখ্যা), ১৯৮১
- ৫। শঙ্কৰদেৱ, কীৰ্ত্তন, ১৯৮০
- ৬। ডিম্বেশ্বৰ নেওগ, অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী
- ৭। ড° মহেশ্বৰ নেওগ, অসমীয়া সাহিত্যৰ ৰূপৰেখা, ১৯৭৪
- ৮। ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মা, অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত, ১৯৮৬
- ৯। ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মা, ৰামায়ণৰ ইতিবৃত্ত, ১৯৮৪
- ১০। ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মা, সাহিত্যৰ আভাস, ১৯৬৩
- ১১। তীৰ্থনাথ শৰ্মা, সাহিত্য বিদ্যা পৰিক্ৰমা, ১৯৯১
- ১২। হেমচন্দ্ৰ বৰুৱা, হেমকোষ, ১৯৮৫
- ১৩। গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়, চন্দ্ৰকান্ত অভিধান, ১৯৬২
- ১৪। Dr. Banikanta Kakati (ed.), *Aspects of Early Assamese Literature*, 1959

৪১২ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

- ১। অসমীয়া মহাভাৰত (২য় খণ্ড), দ্ৰোণপৰ্ব, পৃ : ৬০
- ২। প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ , পৃ: ৬০
- ৩। *Aspects of Early Assamese Literature*, পৃ : ৪৩
- ৪। ড° সত্যেন্দ্ৰ নাথ শৰ্মা অসমীয়া সাহিত্য সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত, পৃ : ৬৬-৬৭
- ৫। ড° সত্যেন্দ্ৰ নাথ শৰ্মা, অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত , পৃ : ৬৬-৬৭
- ৬। অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত, পৃ: ৬৭

ৰুদ্ৰ কন্দলীৰ সাত্যকি প্ৰৱেশ

(ঘ)

আদি কবি হেম সৰস্বতীৰ *প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ*, হৰিবৰ বিপ্ৰৰ *বৰ্হাবাহনৰ যুদ্ধ* আৰু কবিৰত্ন সৰস্বতীৰ *জয়দ্রথ বধ*ৰ ভণিতাত দুৰ্লভনাৰায়ণক কম'তাৰ ৰজা বুলি পশ্চিমভাৱে উল্লেখ কৰিছে। গৌড়েশ্বৰ ধৰ্মনাৰায়ণ (ডিম্বেশ্বৰ নেওগ, ড° মহেশ্বৰ নেওগৰ মতে ধৰ্মপাল) কমতেশ্বৰ দুৰ্লভনাৰায়ণৰ প্ৰতিদ্বন্দ্বী আৰু সমসাময়িক ৰজা আছিল বুলি জনা যায়। এই ধৰ্মনাৰায়ণৰে পুত্ৰ শ্ৰীমন্ত তাম্ৰধ্বজ দুৰ্লভনাৰায়ণ পুত্ৰ ইন্দ্ৰনাৰায়ণৰ সমবয়সী আৰু দুয়ো চতুৰ্দশ শতিকাৰ মাজ ভাগত নিজ নিজ অঞ্চলৰ ৰজা আছিল।

তাম্ৰধ্বজ ৰজাৰ পৃষ্ঠপোষকতাত কবি ৰুদ্ৰ কন্দলীয়ে সংস্কৃত মহাভাৰতৰ দ্ৰোণ পৰ্বৰ অন্তৰ্গত 'জয়দ্রথ বধ'ৰ ভিতৰুৱা *সাত্যকি প্ৰৱেশ*ৰ অনুবাদ সম্পূৰ্ণ কৰে। ৰজাৰ পৰা অনুপ্ৰেৰণা লাভ কৰা কবিৰ ভণিতাত তলৰ কথাখিনি প্ৰকাশ পাইছে—

শ্ৰীমন্ত তাম্ৰধ্বজ অনুজ্ঞে সহিতে।
বৃদ্ধৰ সমান ধৰ্ম শিশু বয়সতে।।
বুদ্ধিত গভীৰ ক্ষেমাবন্ত শুভনয়।
যাহাৰ যশক সৰ্বজনে প্ৰশংসয়।।
বিষ্ণুৰ ভকত মহামায়াৰ সেৱক।
পুত্ৰৰ সমান কৰি দৰিদ্ৰ পালক।।
দুই ভাইৰ স্নেহ যেন ৰাম লক্ষ্মণৰ।
সবাক্ষৰে জীৱন্তোক সহস্ৰ বৎসৰ।।'

ভণিতা অনুসৰি ৰজা তাম্ৰধ্বজ সৰুৰেপৰা 'বৃদ্ধ'ৰ দৰে ধাৰ্মিক আৰু ক্ষেমাবন্ত। সকলো পিনে যশস্যা আৰু খ্যাতি অৰ্জন কৰা ৰজাজন এফালে 'বিষ্ণুৰ ভকত' আনফালে 'মহামায়াৰ সেৱক'। উদাৰ চৰিত্ৰৰ অধিকাৰী ৰজাজন যে দুখীয়া-

দৰিদ্ৰৰ প্ৰতি সহানুভূতিশীল হ'ব তাত কোনো সন্দেহ নাই। অনুজৰ প্ৰতি ৰজাৰ স্নেহক ৰাম-লক্ষ্মণৰ ভাতৃপ্ৰেমৰ লগত ৰিজাব পাৰি। কবিয়ে কামনা কৰিছে যেন ৰজাই সবাক্ষে হাজাৰ বছৰ জীয়াই থাকক। ভণিতাৰ শেষত কবিয়ে নিজক 'হৰিৰ সেৱক' বুলি চিনাকি দিছে।

ভণিতাত পৃষ্ঠপোষক ৰজাৰ বংশ-পৰিয়ালৰ লগতে তেওঁৰ গুণ-গৰিমা প্ৰকাশ পায়। পৰম্পৰা অনুযায়ী ভণিতাৰ শেষত কবিজনৰ পৰিচয়জ্ঞাপক কিছু কথা সংযোজন হ'ব পাৰে। মাধৱ কন্দলী 'ৰামায়ণ'ৰ অধ্যায়ৰ শেষত 'ভক্তিৰ আঁচুফুল' বৈষ্ণৱ যুগত অন্তৰ্ভুক্ত হোৱাৰ কথা সৰ্বজনবিদিত। ই প্ৰক্ষিপ্ত ৰূপেই স্বীকৃত।

প্ৰাক-শঙ্কৰী যুগৰ কবি ৰুদ্ৰ কন্দলীৰ *সাত্যাকি প্ৰৱেশৰ* ভণিতাত প্ৰক্ষিপ্ত অংশৰ পদ সোমাই পৰাটো প্ৰত্যক্ষ কৰা হৈছে। ৰজা বা কবিৰ লগত পোনপটীয়া সম্বন্ধ নথকা তলৰ পদখিনি প্ৰকৃততে বৈষ্ণৱ যুগৰ 'হৰি প্ৰশস্তিহে'।

শুনিয়েক নৰলোক একচিত্ত মনে।
 মুক্তিৰ কাৰণে 'হৰি বিনে নাহি আনে।।
 শিশু মাধৱক তিনি লোকত বিদিত।
 ভকত জনাৰ নানাকপে সন্নিহিত।।
 একৰূপে হৰি ব্ৰহ্মৰূপে অৱতাৰ।
 চক্ষুয়ে দেখিলে সংসাৰত পাই পাৰ।।
 তৰ ব্ৰহ্ম গঙ্গাজলে তাতে কৰে স্নান।
 পাপক এৰায়া চলে বৈকুণ্ঠ ভুৱন।।
 আৰো ব্ৰহ্মৰূপ বেদ পুৰাণ ভাৰত।
 পঢ়িলে শুনিলে থাকে বৈকুণ্ঠ পুৰত।।
 হেন জানি একচিতে শুনিবা ভাৰত।
 হৰিত ভকতি হৈবা অচিৰ কালত।।
 জ্ঞানে বা অজ্ঞানে যত পাপক সাধিয়া।
 তাকে বিনাশিবা যমপুৰক বধিয়া।।^২

ভণিতাৰ শেষত 'হৰিৰ সেৱক ৰুদ্ৰ কন্দলী বদতি' বাক্যাংশৰ পৰিপ্ৰেক্ষিতত উদগনি স্বৰূপে 'হৰি' বা 'মাধৱ'ৰ 'ভক্তি-মাহাত্ম্য' পদ সম্ভৱ বৈষ্ণৱ যুগতেই সংযোজিত হৈছিল বুলি পতিয়ন যাব পাৰি।

ৰুদ্ৰ কন্দলীৰ অনুবাদত শিনিপুত্ৰ সাত্যকিতকৈ দ্ৰোণৰ লগত হোৱা ধৃষ্টদ্যুম্নৰ পঞ্চভাতৃৰ বিৰকত আৰু চাৰিজন (মূলত চিত্ৰকেতু, সুধৰ্ম্মা, চিত্ৰবৰ্ম্মা আৰু চিত্ৰৰথ)ৰ যুদ্ধ আৰু মৃত্যুৰ বিৱৰণে স্থান পাইছে। তাৰ পিচত ক্ৰমান্বয়ে বৰ্ণিত হৈছে শিশুপাল পুত্ৰ ধৃষ্টকেতু আৰু তেওঁৰ পুত্ৰ, জৰাসন্ধ পুত্ৰ আৰু কৈকেয় ৰজা বৃহৎ-ক্ষত্ৰৰ লগত বেলেগে বেলেগে হোৱা যুদ্ধকেইখন। বিৰকত, ধৃষ্টকেতু আৰু বৃহৎ-ক্ষত্ৰৰ লগত হোৱা দ্ৰোণৰ তুমুল যুদ্ধ একোখনৰ বিস্তৃত ছবি মুখ্যভাৱে দাঙি ধৰি কবিয়ে বাকী কেইখন যুদ্ধক গোঁণ পৰ্যায়লৈ লৈ গৈছে। দ্ৰোণৰ হাতত বিৰথী হোৱা সাত্যকি ভাতা চেকিতানৰ যুদ্ধখনো সামান্যভাৱে উল্লেখ হৈছে।

সাত্যকি আৰু দুৰ্যোধন ভাতা দুঃশাসনৰ যুদ্ধৰ বিৱৰণ আনকেইখনতকৈ দীঘলীয়া। চাৰি শাৰীযুক্ত ১২ পদতে (১৭৮৯-১৮০০ পদ) অনুদিত আৰু চমকপ্ৰদ বৰ্ণনাৰে পল্লৱিত কৰা যুদ্ধখনৰ ভিত্তি হৈছে মূলৰ ২২ টা শ্লোক (১—৯ শ্লোক, ১৯—৩১ শ্লোক, ১০৭ অধ্যায়, দ্ৰোণ পৰ্ব)। অনুদিত সাত্যকি প্ৰৱেশৰ কোনো কোনো অংশত কবিয়ে কল্পনাৰে খাপ খোৱা বৰ্ণনা সংযোজন কৰি আকৰ্ষণীয় কৰাৰ প্ৰচেষ্টা প্ৰশংসনীয়। সেই তুলনাত, সাত্যকি-ত্ৰিগৰ্ত সৈন্যৰ যুদ্ধখন মুঠ ৯ টা শ্লোকতে (৯—১৬ শ্লোক, ৩০ শ্লোক, ১০৬ অধ্যায়, দ্ৰোণ-পৰ্ব) সীমাবদ্ধ। ৰুদ্ৰ কন্দলীয়েও মাথোন ৪ টা পদেৰে (১৭৯১—১৭৯৩, ১৮০১ পদ) অনুবাদ সামৰিছে। উক্ত সংক্ষিপ্ত যুদ্ধখনৰ বিষয়ে ড° মহেশ্বৰ নেওগে *অসমীয়া সাহিত্যৰ ৰূপৰেখাত* (পৃঃ ৭৭) উল্লেখ কৰাৰ দৰে দীঘল বৰ্ণনাৰ যুদ্ধখন চুটি কৰাৰ প্ৰয়োজনেই নাই। মূলতেই ই সংক্ষিপ্ত। ষড়ধিকশততমো'ধ্যায়ৰ ৪৭-৬৪ শ্লোকতে (১৮ শ্লোক) ব্যাপ্ত হোৱা দ্ৰোণ-ধৃষ্টদ্যুম্নৰ অদ্ভুত (অতি ওচৰৰ পৰা 'বিগছিয়া'শৰ নিক্ষেপ) যুদ্ধখনৰ অনুবাদ ১০ টা পদতেই (১৭৭৮-১৭৮৭) সমাপ্ত হৈছে।

কবিৰ যুদ্ধৰ বিৱৰণ সীমিত। ব্ৰাহ্মণ দ্ৰোণৰ চৰিত্ৰৰ ওপৰত কটাক্ষ নিশ্চিত হৈছে কবিসৃষ্ট ঘৰুৱা গালি-শপনিৰ জৰিয়তে। পাঞ্চাল সৈন্যৰ মুখেৰে বৰ্ষিত হোৱা কটু, সঙ্গত প্ৰশ্ন বাণে তেওঁৰ ক্ষত্ৰিয়নীতি আৰু কাৰ্য্যবলীক কঠোৰ ভাষাৰে থকা-সৰকা কৰিছে। দ্ৰোণৰ ক্ষত্ৰিয়নীতি গৰিহণাৰ যোগ্য। তথাপি, কৌশলগত কাৰণত,

এনেদৰে তিৰস্কৃত হৈয়ো 'দ্রোণ নিৰ্বিকাৰ। যাৰ লোণ খায় তাৰ গুণ গোৱা নীতিত অটল বিশ্বাস ৰখা দ্রোণৰ কৰ্তব্য-নিষ্ঠা শলাগিব লগীয়া। তুলনাত্মকভাৱে, পাঞ্চালপুত্ৰ ধৃষ্টদ্যুম্নৰ চৰিত্ৰত কোমলতা বৰ্তমান। মানৱীয় দুৰ্বলতাৰ প্ৰতীক ধৃষ্টদ্যুম্নৰ আবেগ-প্ৰৱণ, 'হাঃ মই কি কৰিলোঁ কোঠাইক যাওঁ' বোলা কথাষাৰি বীৰ এজনৰ মুখত শোভা পোৱা নাই। ই সঁচাকৈয়ে 'দুৰ্ভগীয়া উক্তি'। আকৌ, দুৰ্যোধনে অতিষ্ঠ কৰা পাণ্ডৱৰ বিষময় জীৱন সুৰঁৰি ক্ষমাৱন্ত যুধিষ্ঠিৰৰো ধৈৰ্যৰ বান্ধু ছিঙাই নহয় সহিষ্ণুতাৰ শেষ বিন্দুত উপনীত কৰাইছে। সেয়েহে যুধিষ্ঠিৰৰ মুখত অতৰ্কিতে ওলাইছে, 'বোলে কৰি এৰোঁ আজি কলহৰ অন্ত।'

যুদ্ধক্ষেত্ৰত সাত্যকিৰ প্ৰতি দুঃশাসনৰ উক্তি 'পৰৰ নিমিত্তে কেনে মৰিবাক আইলা' অপ্ৰাসঙ্গিক, সজ্জিতহীন বাক্যবাণ। মাধৱ কন্দলী, হৰিবৰ বিপ্ৰয়ো এনে ধৰণৰ বাক্যবাণ বা বাক-যুদ্ধৰ বিৱৰণ দাঙি ধৰি জনসাধাৰণৰ মনোৰঞ্জন সাধিবলৈ যত্ন কৰাটো মন কৰিব লগীয়া কথা।

চতুৰ্দশ শতিকাৰ আগভাগত মাধৱ কন্দলীয়ে মূল সংস্কৃত ৰামায়ণৰ গৌড়ীয় পাঠ সংস্কৰণ সংগ্ৰহ কৰি অনুবাদত ব্যৱহাৰ কৰিবলৈ সুবিধা পোৱাৰ দৰে ৰুদ্ৰ কন্দলীয়েও *সাত্যকি প্ৰৱেশ* অনুবাদৰ ক্ষেত্ৰত সংস্কৃত মহাভাৰতৰ গৌড়ীয় পাঠ (ডিম্বেশ্বৰ নেওগৰ মতে 'বঙ্গবাসী সংস্কৰণ') সংস্কৰণ সংগ্ৰহ কৰিছিল বুলি আমি ধৰি ল'ব পাৰোঁ। যি অনুকূল পৰিৱেশে গৌড়ীয় পাঠ সংগ্ৰহ সহজসাধ্য কৰি তুলিছিল সেই একে পৰিৱেশে কবিৰ হাতত মাধৱ কন্দলীৰ *সপ্তকাণ্ড ৰামায়ণ*, হৰিবৰ বিপ্ৰৰ *বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ* (মূল জৈমিনীয়াশ্বমেধপৰ্ব)ৰ একোটা নকল তুলি দিয়াটো সম্ভৱ। সেই কাৰণেই, পূৰ্ব কবিৰ প্ৰভাৱ পৰৱৰ্তী কবিৰ ওপৰত পৰিছে। যুদ্ধ-বৰ্ণনাত একে ধৰণৰ শব্দ-সাদৃশ্য মন কৰিব লগীয়া। অৱশ্যে, এই ক্ষেত্ৰত সংস্কৃত সাহিত্যৰ উপমা আদি অলঙ্কাৰ, কবি-প্ৰসিদ্ধিয়ে অবিহণা আৰু অনুপ্ৰেৰণা যোগোৱাটো নুই কৰা নাযায়। তলৰ উদ্ধৃতিবোৰে উপৰোক্ত কথাৰ যুক্তিযুক্ততা দাঙি ধৰিব।

সপ্তকাণ্ড ৰামায়ণ (মাধৱ কন্দলী)

সাত্যকি প্ৰৱেশ (ৰুদ্ৰ কন্দলী)

(১) অস্ত্ৰৰ অগনি নিকলয় জাকে জাকে। (১) গদা পাকে জাকে জাকে অগ্নি নিকলিল।

৫৯৩২ পদ, লঙ্কাকাণ্ড।

১৮৪০ পদ, সাত্যকি প্ৰৱেশ।

(২) খণ্ড খণ্ড ছয়া অস্ত্ৰ ধৰণীক পাইল। (২) খণ্ড খণ্ড ছয়া গদাভূমিত পৰিল।

৫৯৩৪ পদ, লক্ষাকাণ্ড। ১৮৪১ পদ, সাত্যকি প্ৰৱেশ।

(৩) এত হন্তে লক্ষ্মণেয়ো অস্ত্ৰ গুণি পাইল। (৩) কতোক্ষণে ব্ৰহ্ম অস্ত্ৰ মনে গুণি পাইল।

৫৯৫৭ পদ, লক্ষাকাণ্ড। ১৮৪০ পদ, সাত্যকি প্ৰৱেশ।

বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ (হৰিবৰ বিপ্ৰ) সাত্যকি প্ৰৱেশ (ৰুদ্ৰ কন্দলী)

(১) আৰো শৰে সাৰথিৰ লৈলন্ত পৰান। (১) এক শৰ মাৰি সাৰথিৰ লৈলা প্ৰাণ।

২৪০ পদ, বঃ যুঃ। ১৭৯৮ পদ, সাঃ প্ৰঃ।

(২) বুড়িল বুড়িল বুলি চেঞ্চাই সামৰাজে। (২) মৰিল মৰিল বুলি পাণ্ডৱে চেঞ্চয়।

২৭৭ পদ, বঃ যুদ্ধ। ১৮১৬ পদ, সাঃ প্ৰঃ।

(৩) লাল কটা পদ্ব যেন সৰোবৰে ভাসে। (৩) লালছিঙ্গা পদ্ব যেন কৰয় প্ৰকাশ।

২৮৭ পদ, বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ। ১৭৭৬ পদ, সাঃ প্ৰঃ।

পঞ্চভাতৃৰ মৃত্যুত উত্থলি উঠা শোকৰ বিননিৰ সজীৱ চিত্ৰখন জীৱন্ত হৈ উঠিছে স্বাভাৱিকভাৱে নিগৰি ওলোৱা ধৃষ্টদ্যুম্নৰ চকুৰ পানীৰে (তুলনাঃ তশোধ্বিন্মো নেত্ৰাভ্যাং পাতয়ন্ জলম্, ৪৭ শ্লোক, ষড়ধিকশততমো'ধ্যায়ঃ, দ্ৰোণ পৰ্ব)। কবিয়ে বাস্তৱানুগ দৃষ্টিৰে দৃশ্যটো আৰু আকৰ্ষণীয় ৰূপত সজাবলৈ ধৃষ্টদ্যুম্নৰ মুখত উক্তি সংযোজন কৰিছে, 'নিতে নিতে ব্ৰহ্মাবধী ভাঙ্গে মোৰ পাখি।' ৰুদ্ৰ কন্দলীৰ স্বকীয় কল্পনা শক্তিৰ পূৰ্ণৰূপ দেখা পাইছোঁ প্ৰতিশোধৰ ইচ্ছা পুহি ৰখা দ্ৰোণৰ প্ৰতি পাঞ্চাল সৈন্যৰ বিৰোধগৰত (মূলত নাই)। ঘৰুৱা কথাই হয়তো অনুবাদকৰ গাভীৰ্য হ্ৰাস কৰাব পাৰে। তথাপি, জনসাধাৰণৰ মন তুষ্টিৰ বাবে সহজ, সৰল, অভিধা অভিব্যক্তিৰ চিত্ৰ সংযোজন ৰসগ্ৰাহী পৰ্যায়ৰ—

মৰিলে মৰিলে ব্ৰহ্মাবধী পাপশালী॥

কিসক লাগিয়া ব্ৰহ্মকুলে উপজিলি।

কিসক লাগিয়া তুমি তপ আচৰিলি॥

পুৰাণ সংহিতা পঢ়িলাহা চাৰি বেদ।

ধৰ্মৰো শাস্ত্ৰৰো তুমি জানা অবিচ্ছেদ্।।
কোন শাস্ত্ৰ বলে ব্ৰাহ্মণৰ হিংসা ধৰ্ম।
কিস লাগি এৰিলাহা আপোনাৰ কৰ্ম।।°

অকল ব্ৰাহ্মণ্য-ধৰ্ম অনুসৰণ কৰাই নহয়, দুষ্কৰ তপস্যা কৰা ব্ৰাহ্মণ দ্ৰোণে
শাও দি মাৰিব পাৰিও কেলেই অস্ত্ৰ হাতত তুলি লৈছে সেইয়াও তেওঁলোকৰ
সম্মুখত ডাঙৰ প্ৰশ্ন। মূলৰ চিন্তাধাৰা অটুট ৰাখিও এই ক্ষেত্ৰত কবি আঁতৰি গৈছে—

শপি মাৰিবাক পাৰা কেনে কৰা যুদ্ধ।
কিসক লাগিয়া হাতে ধৰিলা আয়ুধ।

বাছকবনীয়া শব্দচয়নেৰে যুদ্ধৰ বৰ্ণনা দিয়া কবি ৰুদ্ৰ কন্দলী মূলৰ পৰা
আঁতৰি যোৱা নাই। কবিৰ প্ৰকাশ-দক্ষতা প্ৰাক্-শঙ্কৰী যুগৰ অগ্ৰণী কবিসকলৰ প্ৰায়
সমপৰ্যায়ৰ বুলি ধৰি ল'ব পাৰি।

দ্ৰোণক প্ৰত্যাহান জনোৱা কৈকেয় ৰজা ক্ষত্ৰধৰ্মাক ধ্বংস কৰাৰ অভিপ্ৰায়ে
ব্ৰহ্মাস্ত্ৰ উলিওৱাৰ মুহূৰ্ততে অভাৱনীয়ভাৱে পৰিৱৰ্তিত হোৱা নৈসৰ্গিক দৃশ্যৰ
ভয়াৱহ অৱস্থাৰ চিত্ৰকল্প অঙ্কন কৰিছে কবিয়ে সুন্দৰ প্ৰতীক আৰু উপমা
অলঙ্কাৰেৰে। এই চিত্ৰণৰ দৃশ্যপটত ভাহি উঠিছে খলকা পৃথিৱী, সাগৰৰ কম্পন,
ত্ৰিদশৰ বিস্ময়, দশোদিশৰ উজ্জ্বলতা, ৰুধিৰৰ বৃষ্টি, খৰবায়ু, দিব্য ভাগত অজ্ঞকাৰ
সৃষ্টি আদিৰ সঘন পৰিৱৰ্তিত নৈসৰ্গিক ৰূপ।

যেতিক্ষণে ব্ৰহ্মা অস্ত্ৰ গুণে আনি থৈল।
ধনুৰ্গুণ হস্তে শৰ বজাইবাক লৈল।।
পৃথিৱীয়ো খলকিল সাগৰ কম্পিল।
ত্ৰিদশ দেৱৰ মাজে বিস্ময় মিলিল।।
দশোদিশ উজ্জ্বল পৰে পৰয় নিৰ্ঘাত।
ৰুধিৰৰ বৃষ্টি ভৈলা পাণ্ডৱী সেনাত।।
খৰ বায়ু বহে দিব্য ভাগে অজ্ঞকাৰ।
সকল সেনাৰ মাজে শুনি হাহাকাৰ।।°

বিষয়বস্তুক চকুৰ আগত তুলি ধৰিবলৈ ৰুদ্ৰ কন্দলীয়ে তিনিবিধ প্ৰক্ৰিয়াৰ সহায় লৈছে। প্ৰক্ৰিয়া কেইটা হ'ল— (১) মূল সংস্কৃত শ্লোকৰ ছব্ধ আক্ষৰিক অনুবাদ, (২) কিছুমান শ্লোকৰ আংশিক অনুবাদ আৰু বাকী অংশৰ ভাৱানুবাদ বা অভিযোজনা আৰু (৩) কাহিনীৰ ভাৱাৰ্থ অনুধাৱন কৰি স্বকীয় উদ্ভাৱনা বা নিজ বৈশিষ্ট্যৰে কাহিনী পূৰণ।

(১) মূলৰ অনুবাদ : কবি ৰুদ্ৰ কন্দলীয়ে মূলৰ ষড়ধিকশততমো'ধ্যায়ৰ পৰা নৱাধিকশততমো'ধ্যায়ৰ ভিতৰৰ কিছুমান শ্লোকৰ আক্ষৰিক অনুবাদ কৰিছে। প্ৰকৃততে, দ্ৰোণ পৰ্বৰ অন্তৰ্গত সাত্যাকি প্ৰৱেশৰ কাহিনীৰ মাজ ঔংশৰ পৰাহে অনুবাদ আৰম্ভ হৈছে। অনুবাদৰ চানেকি তলত দিয়া হ'ল—

(ক) স দ্ৰোণং পঞ্চভিৰ্গণৈৱিদ্ধা সন্নতপৰ্বভিঃ।

ধ্বজমেকেন ৱিৰ্যাধ সাৰথিঞ্চাস্য সপ্তভিঃ।।

৩০, দ্ৰোণ পৰ্বণি, ষড়ধিকশততমো'ধ্যায়ঃ

(ক্ৰমে তেওঁ মিহি, চেপেটা পাঁচডাল শৰেৰে দ্ৰোণক বিদ্ধি, এডাল শৰেৰে তেওঁৰ ধ্বজ আৰু সাতডাল শৰেৰে সাৰথিক বিদ্ধিছে।)

দ্ৰোণৰ হৃদয়ে ভেদিলেক পাঞ্চ শৰ।

সাত শৰে সাৰথিক কৰিলা সংহাৰ।

এক শৰ মাৰিয়া ধ্বজক কম্পাইলা।

চাৰি শৰ মাৰি তাৰ বথক তন্তাইলা।।

১৭৭১ পদ, সাত্যাকি প্ৰৱেশ

মূলত সাৰথিক 'বিদ্ধা'ৰ বিপৰীতে অসমীয়া দ্ৰোণ পৰ্বত 'সংহাৰ' শব্দৰ প্ৰয়োগ মন কৰিব লগীয়া। সংযোজন কৰা চতুৰ্থ শাৰী পদ কবিৰ নিজা সৃষ্টি।

(খ) ততো দ্ৰোণং মহাৰাজ! পাঞ্চাণ্যঃ ক্ৰোধমুৰ্ছিতঃ।

আজঘানোৰসি ক্ৰুদ্ধো নৱত্যা নতপৰ্বণাম্।।

স গাঢ়বিদ্ধো বলিনা পাৰ্ষতেন দ্বিজৰ্বভঃ।

নিষসাদ ৰথোপস্থে কশ্মলঞ্চ জগাম হ।।

৫০-৫৯, দ্ৰোণ পৰ্বণি, ১০৬ অধ্যায়।

(মহাৰাজ! তাৰ পিচত ধৃষ্টদ্যুম্নই খঙত উত্তেজিত হৈ নকৈডাল মিহি, চেপেটা শৰেৰে দ্রোণৰ বুকুত আঘাত হানিছে। তেতিয়া, বলী ধৃষ্টদ্যুম্নৰ দ্বাৰা ব্ৰাহ্মণশ্ৰেষ্ঠ দ্রোণ গুৰুতৰভাৱে শৰবিদ্ধ হৈ ৰথতে বহি পৰিল আৰু মোহিত হ'ল।)

দুনাই দুনাই কোপে ধৃষ্টদ্যুম্ন নৃপবৰ।

কৰিলন্ত নকৈ শৰে হৃদয় দোহাৰ।।

বৰ চোট পায়৷ দ্রোণে ৰথত পৰিল।

দুনাই দশ শৰে তাৰ ললাট ভেদিল।।

১৭৮০-৮১ পদ, সাত্যকি প্ৰৱেশ।

অনুদিত খণ্ডৰ চতুৰ্থ শাৰী মূলত নাই। ইয়াক কবিৰ স্বকীয় উদ্ভাৱনা বুলি গণ্য কৰা উচিত হ'ব।

(গ) কৈকেয়ো'স্ত্ৰং সমালোক্য মুক্তং দ্রোণেন সংযুগে।

ব্ৰহ্মাস্ত্ৰেণৈৱ ৰাজেন্দ্ৰ! ব্ৰাহ্মমস্ত্ৰমশাতয়ৎ।।

১৩, দ্রোণ পৰ্বণি, ১০৯ অধ্যায়।

(ৰাজশ্ৰেষ্ঠ! যুদ্ধত দ্রোণ-নিক্ষিপ্ত সেই ব্ৰহ্মাস্ত্ৰ দেখি তেতিয়া বৃহৎক্ষত্ৰই ব্ৰহ্মাস্ত্ৰৰ দ্বাৰা তাক বিনাশ কৰিলে)

বৃহৎক্ষেত্ৰে দেখে ব্ৰহ্মা অস্ত্ৰ আসে চানি।

ব্ৰহ্মাশৰ নিবাৰিলা ব্ৰহ্মা অস্ত্ৰ হানি।।

১৮২৭ পদ, সাত্যকি প্ৰৱেশ।

(২) মূলৰ আংশিক অনুবাদ : দ্রোণ পৰ্বৰ ভিতৰুৱা সাত্যকি প্ৰৱেশৰ মূল কাহিনী অনুসৰণ কৰোঁতে কেতিয়াবা মূল শ্লোকৰ ছবছ অনুবাদ, কেতিয়াবা এটাতকৈ অধিক শ্লোকৰ আংশিক অনুবাদ কৰি বাকী অংশ ভাৱানুবাদ বা অভিযোজনাৰে সম্পূৰ্ণ কৰা পৰিলক্ষিত হৈছে। পিচৰ পৰ্যায়ৰ অনুবাদত কবিৰ পাণ্ডিত্য ফুটি উঠিছে। ইয়াত কবিৰ পৰিকল্পনা-পৰিৱেশন শলাগিব লগীয়া—

(ক) তং প্ৰয়াস্তং নৰশ্ৰেষ্ঠং পুত্ৰো দুঃশাসনস্তৰ।

বিব্যাধ নৰভিক্ষুৰ্ণং শৰৈঃ সন্নতপৰ্বভিঃ।।

স তু তং প্ৰতিবিৰ্য্য পঞ্চভিনিশিতৈঃ শৰৈঃ ॥

ৰুদ্ৰপুৰুষৈৰ্মহেশ্বৰাসো গাৰ্ধপত্ৰৈৰজিহ্মগৈঃ ॥

১৯-২০, দ্ৰোণ পৰ্বণি, ১০৭ অধ্যায়

(আপোনাৰ পুত্ৰ দুঃশাসনে মিহি, চেপেটা নডাল শৰেৰে যাবলৈ উদ্যত হোৱা সাত্যকিক বিক্ষিলে! তেতিয়া, সাত্যকিয়েও ধাৰযুক্ত, স্বৰ্ণপুষ্প, গৃধ্ৰপক্ষযুক্ত পোনপটীয়া পাঁচডাল শৰেৰে ওলোটাই দুঃশাসনক বিক্ষিলে)।

দুৰ্নাই দুঃশাসনে নৱ শৰ হানিলন্ত ॥

সাত্যকিয়ো তাক হানিলন্ত পঞ্চবাণ ॥

১৭৯৩-১৭৯৪ পদ, সাত্যকি প্ৰৱেশ।

মূলৰ চমু অনুবাদে কবিৰ সংস্কৃত, অসমীয়া উভয় ভাষাৰ গভীৰ জ্ঞান, পাণ্ডিত্য আৰু দক্ষতা প্ৰকাশ কৰিছে।

(খ) দুৰ্যোধনেৰে সমৰে পাণ্ডৱী পৃথনা ৰণে।

নলিনী দ্বিৰদেৱেৰে সমস্তদ্বিপ্ৰলোড়িতা ॥

২৭, দ্ৰোণ পৰ্বণি, অষ্টাধিক শততমো'ধ্যায়ঃ।

(যেনেকৈ এটা হাতীয়ে পদুম সৰোবৰৰ সকলো দিশত খলকনি তোলে তেনেকৈ এজন দুৰ্যোধনেও ৰথ, গজ, অশ্ব সমন্বিতে ৩ বাহিনী পাণ্ডৱ সৈন্যক যুদ্ধত আলোড়িত কৰিছে।)

তাতে ধনু ধৰি ধাইল ৰাজা দুৰ্যোধন।

পাণ্ডৱী দলত পশি কৰিলেক দন ॥

যেন মন্ত হস্তীগোটে সৰোবৰে নামি।

আপোনাৰ মন ৰঙ্গে ভাঙ্গে কমলিনী ॥

১৮০৫ পদ, সাত্যকি প্ৰৱেশ (দ্ৰোণ পৰ্ব)

(৩) স্বকীয় উদ্ভাৱনা : মূল মহাভাৰতৰ দ্ৰোণ পৰ্বৰ অন্তৰ্গত সাত্যকি প্ৰৱেশৰ কাহিনী ভিন্ ভিন্ শ্ৰেণীৰ যুদ্ধ বৰ্ণনাৰে সমৃদ্ধ। কিছুমান শ্লোকৰ অনুবাদ মূলানুগ আৰু সাৰ্থক। ইয়াৰ উপৰিও, মূল শ্লোকৰ গাঁথনিৰ বৰ্ণিত কাহিনীৰ ভাৱাৰ্থ

অটুট ৰাখিও কবিয়ে সৃজনী শক্তিয়ে কল্পনাৰ সৌধ ৰচনা কৰি পাঠক-শ্ৰোতাৰ মন আলোড়িত কৰিবলৈ সক্ষম হৈছে। পৰিৱেশ চিত্ৰণত অভিনিৱিষ্ট কবি-সৃষ্ট যোজনাই দাঙি ধৰিছে কবিজনাৰ পাণ্ডিত্য। অনুকূল বাতৰৰণত অনুবাদ-সাফল্য কবিৰ প্ৰাপ্য। স্বকীয় কল্পনাৰ সুকৌশল প্ৰয়োগৰ বাহিৰেও মাজে মাজে মূলৰ উপমা, উৎপ্ৰেক্ষা আদি অলঙ্কাৰৰ সাৰ্থক ৰূপান্তৰ আৰু উপযুক্ত স্থানত সেইবোৰৰ ৰজিতা খুওৱা কৌশলে ভাৱাৰ্থক প্ৰাঞ্জল কৰি সৌন্দৰ্যবৰ্ধনত সহায়ক হৈছে। পাঠকৰ হৃদয়-তন্ত্রীত অনুৰণিত কাহিনীৰ উপস্থাপনত কবিৰ চিন্তা-ভাৱনাৰ যি উন্মেষ ঘটিছে তাৰ পূৰ্ণ প্ৰতিফলন তলত দিয়া ধৰণৰ—

(ক) পূৰ্ণচন্দ্ৰ সম জ্বলে চাৰিৰো বদন।

ভঞ্জে কাটিলন্ত ভৰদ্বাজৰ নন্দন।।

চাৰিৰো বদন ধৰণীত পৰি ভাসে।

লালছিঙ্গা পদ্ম যেন কৰয় প্ৰকাশে।।

১৭৭৬ পদ, সাত্যকি প্ৰৱেশ (দ্ৰোণ পৰ্ব)

(খ) দ্ৰোণৰ ৰথক ঢাকিলেক শৰবেগে।

ভাস্কৰক ঢাকে যেন বাৰিষাৰ মেঘে।

তাহাৰ বিক্ৰম দেখি দ্ৰোণৰ বিস্ময়।

শৰ চোট পায় বৰ শৰীৰ কাম্পয়।।

১৮৪৬ পদ, সাত্যকি প্ৰৱেশ।

(গ) ধনু টানি সাত্যকিক ষাঠি বাণ হানি।

দশ শৰ প্ৰহাৰিয়া বুলিলন্ত বাণী।

অৰে বৃষ্টি বংশ তুমি শৰচোট পাইলা।

পৰৰ নিমিত্তে কেনে মৰিবাক আইলা।।

১৭৮৯ পদ, সাত্যকি প্ৰৱেশ।

যুদ্ধক্ষেত্ৰত বাক-যুদ্ধ অৱতাৰণা কৰাটো আমাৰ কবিসকলৰ এটি পৰম্পৰা। মাধৱ কন্দলী, হৰিবৰ বিপ্ৰই যুদ্ধবৰ্ণনাৰ মাজতে বাক-যুদ্ধৰ সংযোগ কৰি পাঠক-শ্ৰোতাৰ মনক ইতিমধ্যে উত্তেজিত কৰা আত্মকলীয়া যুদ্ধৰ ভয়াৱহতা কিছু পৰিমাণে প্ৰশমিত কৰি সকাহ দিবলৈ যত্ন কৰাটো মন কৰিব লগীয়া কথা। মূলৰ উপমা

বিভিন্ন অলঙ্কাৰৰ অনুবাদৰ মাজত জতুৱা উপমা, ঘৰুৱা চিত্ৰকল্পৰ সংযোজনাই জনসাধাৰণৰ মনক সহজে আকৰ্ষণ কৰিছে। মূলৰ উপমা আৰু কবিৰ উৰ্ণৰ মস্তিষ্কৰ সংমিশ্ৰণত গঢ়ি উঠা সৌন্দৰ্যমণ্ডিত, ব্যঞ্জনাময় বৈচিত্ৰ্যই বাস্তৱ দিশৰ আভাস দাঙি ধৰিছে—

- (১) লালছিঙ্গা পদ্ম যেন কৰয় প্ৰকাশে। ১৭৭৬ পদ।
- (২) কেটেলা পশুৰ যেন ভৈল কলেবৰ। ১৭৮৫ পদ।
- (৩) পিম্পৰাৰ দল যেন দিল পটোৱাৰ। ১৭৯২ পদ।
- (৪) যেন দৰিদ্ৰৰ বাঞ্ছা মনত লুকাই। ১৮০৩ পদ।
- (৫) যেন মত্ত হস্তী-গোটে সৰোবৰে নামি।

আপোনাৰ মন ৰঙ্গে ভাঙ্গে কমলিনী।। ১৮০৫ পদ।

- (৬) যেন অগনিক লাগি পতঙ্গকো ধৰি। ১৮৩৪ পদ।
- (৭) প্ৰলয়ৰ বহি যেন সংহৰয় প্ৰজা। ১৮৪৯ পদ।
- (৮) সাগৰে খলকে যেন মগৰে আউৰাইল। ১৮৬৪ পদ।
- (৯) মধ্যাহ্ন বেলাত যেন প্ৰচণ্ড মাৰ্তণ্ড। ১৮৫৬ পদ।

মূলৰ উপমা আদি অলঙ্কাৰ, চিত্ৰকল্প অসমীয়া কবিৰ বাস্তৱ তুলিকাৰ পৰশত মূৰ্তিমান হৈ উঠিছে। নৱাধিকশততমো’ধ্যায়ৰ ৪২ নং শ্লোকৰ ‘অদৃশ্যমকৰোভুৰ্গ জলদো ভাস্কৰং যথা’ৰ সাৰ্থক অসমীয়া ৰূপান্তৰ ‘ভাস্কৰক ঢাকে যেন বাৰিষাৰ মেঘে’ চিত্ৰকল্পই পৰিষ্কাৰৰূপে বাৰিষাৰ কালত ‘মেঘে ঢকা সূৰ্য’ৰ সুন্দৰ ছবিখনলৈ আমাৰ দৃষ্টি আকৰ্ষণ কৰিছে।

কম পৰিসৰৰ অনুবাদ সাহিত্যৰ মাজতো কবি ৰুদ্ৰ কন্দলীয়ে সুৰুঙা উলিয়াই উপমা, ৰূপক আদি বিভিন্ন অলঙ্কাৰ প্ৰয়োগ কৰাত তেওঁৰ সাহিত্যই চহকী অৱস্থা এটা পাইছে।

অলঙ্কাৰ :

- (১) ভাস্কৰক ঢাকে যেন বাৰিষাৰ মেঘে। (উপমা)।
- (২) পূৰ্ণচন্দ্ৰ সম জ্বলে চাৰিৰো বদন। (ৰূপক)।
- (৩) যমদণ্ড সম শৰ শ্ৰুগত যুৰিলা। (ৰূপক)।
- (৪) ভূমিত পৰিল গৈয়া মৰা কলেবৰ।

বাতাসে ভাঙ্গিল যেন বৃক্ষ চম্পকৰ।। (উৎপ্ৰেক্ষা)।

(৫) খণ্ড খণ্ড ছয়া গদা ভূমিত পৰিল।

গগনমণ্ডলে যেন তাৰা সঞ্চৰিল।। (উৎপ্ৰেক্ষা)।

(৬) বাঘৰ আগত যেন মৃগৰ ছৱাল।

পতঙ্গক ভুঞ্জি যেন বিভূক্ষিত ব্যাল।। (উৎপ্ৰেক্ষা)।

(৭) সুপুত সিংহক যেন জগাইল চৰণে। (নিদৰ্শনা)।

(৮) পৃথিৱীয়ো খলকিল সাগৰ কম্পিল। (সমাসোক্তি)।

(৯) সৰ্পক দেখিয়া যেন গৰুড় কাম্পন্ত। (বিষম)।

অমিল (Discrepancy) :

(১) মূল দ্রোণ পৰ্বত দ্রোণক খেদি অহা পাঞ্চাল ৰাজকোঁৱৰৰ নাম আছিল “বীৰকেতু”। (তুলনা : পাঞ্চালপুত্ৰো দ্যুতিমান বীৰকেতুঃ সমভয়োৎ। ২৯ শ্লোক, ১০৬ অধ্যায়)। ৰুদ্ৰ কন্দলী বৰ্ণিত মহাভাৰতৰ ৰাজকোঁৱৰৰ নাম “বিৰকত”।

পাঞ্চাল ৰাজাৰ তনয় বিৰকত।

দ্রোণক মাৰিয়া বৰ দেখাইলা বীৰত্ব।।

(২) পঞ্চ ভাইৰ মৃত্যুত খং, দুখ, ক্ষোভ, শোকত বিহ্বল হৈ ধৃষ্টদ্যুম্নই দৃঢ়তাৰে নিক্ষেপ কৰা শৰৰ আঘাতত ৰথতেই মুৰ্ছিত হোৱা দ্রোণক কাটিবলৈ তৰোৱাল উলিয়াই ৰথত উঠিছে। (তুলনা : তং ৱৈ তথাগতং ধৃষ্টা ধৃষ্টদ্যুম্নঃ পৰাক্রমী। সমুৎসৃজ্য ধনুৰ্ভুগং জগ্ৰাহাসিং স ৱীৰ্য্যৱান্।। ৫২ শ্লোক, ১০৬ অধ্যায় ধৃষ্টদ্যুম্নে ঋণা ধৰি নামিলা ৰথত।

(৩) শৰাঘাতত অচেতন হোৱা দ্রোণে চেতনা লাভ কৰি ইতিমধ্যে আক্রমণোদ্যত ধৃষ্টদ্যুম্নক “বৈতন্তিক” (হাতৰ তলুৱাত ৰাখিব পৰা ৯ ইঞ্চি দীঘল শৰ) শৰেৰে থকা-সৰকা কৰিছে। (তুলনা : তৈ হি বৈতন্তিকা নামশৰা আসন্নযোধিনঃ। ৫৬ শ্লোক, ১০৬ অধ্যায়)। কন্দলী ৰচিত সাত্যকি প্ৰৱেশত দ্রোণ-নিষ্কিন্ত ‘বিগছিয়া’ শৰত ধৃষ্টদ্যুম্ন ‘কেটেলা পছ’ৰ দৰে হৈছে।

তেখনে ধৰিলা ধনু বিগত প্ৰমাণ।

বিগছিয়া শৰ দ্ৰুত কৰিলা সন্ধান।।

(৪) দ্রোণক খেদি যোৱা কৈকেয়ৰ জ্যেষ্ঠজনৰ নাম ‘বৃহৎক্ষত্ৰ’। ৰুদ্ৰ

কন্দলীয়ে তেওঁৰ নাম অলপ সলনি কৰি 'বৃহৎক্ষত্ৰ' ৰাখিছে (তুলনা : তমভায়াদ বৃহৎক্ষত্ৰঃ কৈকেয়ানাং মহাৰথঃ। ৫ শ্লোক, ১০৫ অধ্যায়।)

কৈকেয়ৰ ৰজা বৃহৎক্ষত্ৰ বুলি যাক।

মাৰিলেক দ্ৰোণক লাগিয়া সাতজাক।।

(৫) ধৃষ্টদ্যুম্নৰ পুত্ৰ ক্ষত্ৰধৰ্মাই অৰ্ধচন্দ্ৰ বাণেৰে দ্ৰোণৰ ধনু ছেদন কৰিছে। (তুলনা : অৰ্দ্ধচন্দ্ৰেন চিচ্ছেদ্ ক্ষত্ৰধৰ্মা মহাবলঃ। ৬১ শ্লোক, ১০৯ অধ্যায়)। অসমীয়া মহাভাৰতত, অলপ পৰিৱৰ্তন কৰি ক্ষত্ৰধৰ্মাৰ নাম ক্ষেত্ৰেব্ৰহ্মা ৰাখিছে।

ক্ষেত্ৰেব্ৰহ্মা ধাইলা পাচে দ্ৰোণক সন্মুখে।।

দ্ৰোপদৰ পুত্ৰ ধৃষ্টদ্যুম্নৰ তনয়।

যুদ্ধত কুশল শুভনয় আতিশয়।।

অৰ্ধচন্দ্ৰ বাণ হানি কাটিলন্ত ধনু।

(৬) দ্ৰোণৰ শৰত সাত্যাকি-ভ্ৰাতৃ চেকিতানৰ সাৰথি নিহত হোৱাত সাৰথিবিহীন ৰথখনক ঘোঁৰাকেইটাই ৰণস্থলীৰ পৰা টানি লৈ গ'ল। (তুলনা : চেকিতানৰথং দৃষ্টবা বিদ্ৰুতং হতসাৰথিম্। ৬৯ শ্লোক, ১০৯ অধ্যায়)। কিন্তু, অসমীয়া মহাভাৰতৰ সাত্যাকি প্ৰৱেশৰ মতে, বিমুখে মৰা দ্ৰোণৰ শৰত ঘোঁৰা কেইটাৰো মৃত্যু হৈছে। এনেকুৱা নীতি বিগৰ্হিত কাৰ্যই গুৰু দ্ৰোণৰ চৰিত্ৰত চেকা পেলাইছে।

সাৰথি পৰিল ঘোঁৰা লৱৰ দিলেক।

বিমুখত গুৰু দ্ৰোণে খেপিলে সায়ক।।

শৰ পৰি চাৰি ঘোঁৰা গৈল যমঘৰে।

চেকিতান ভূমি মাজে কৰন্ত সমৰে।।

(৭) দ্ৰোণৰ শৰত ক্ষত-বিক্ষত হোৱা পাঞ্চাল সৈন্যই কোৱা-কুই কৰিছে যে ব্ৰাহ্মণে দুহুৰ তপস্যাব বলত ত্ৰুদ্ধ হৈ ক্ষত্ৰিয় বধ কৰিবলৈ ধৰিছে। যুদ্ধ ক্ষত্ৰিয়ৰ ধৰ্ম আৰু তপস্যা ব্ৰাহ্মণৰ ধৰ্ম। তপস্বী আৰু কৃতবিদ্যা ব্ৰাহ্মণে অকল দৃষ্টিৰেও দহু কৰিবলৈ সমৰ্থ হয়। (ধৰ্মো যুদ্ধং ক্ষত্ৰিয়স্য ব্ৰাহ্মণস্য পৰং তপঃ। তপস্বী কৃত্যবিদ্যাশ্চ প্ৰেক্ষিতেনাপি নিৰ্দহেৎ।। ৫৮ শ্লোক, ১০৯ অধ্যায়।)

ৰুদ্ৰ কন্দলীৰ দৃষ্টি-ভঙ্গী সুকীয়া। যুদ্ধত প্ৰবৃত্ত হোৱা ব্ৰাহ্মণ দ্ৰোণৰ কাৰ্যাৱলীক পাঞ্চাল সৈন্যই সমালোচনা কৰি তীব্ৰ গৰিহণা দিয়াৰ উপৰিও গালি-শপনিৰো আশ্ৰয় লৈছে। এনে ধৰণেৰে অপ্ৰিয় সত্যৰ প্ৰকাশিত তথ্যই মহাভাৰতৰ

গাভীৰ্য কিছু পৰিমাণে হ্ৰাস কৰিছে যদিও জনসাধাৰণৰ মনোৰঞ্জনৰ স্বার্থত ইয়াৰ প্ৰয়োজনীয়তা অনুভৱ কৰা যায়।

কিসক লাগিয়া ব্ৰহ্মকুলে উপজিলি।

কিসক লাগিয়া তুমি তপ আচৰিলি।।

শপি মাৰিবাক পাৰা কেনে কৰা যুদ্ধ।

কিসক লাগিয়া হাতে ধৰিলা আয়ুধ।।

বৈয়াকৰণ বৈশিষ্ট্য :

প্ৰাক-শঙ্কৰী যুগৰ পূৰ্বসূৰী কবি মাধৱ কন্দলী, হৰিবৰ বিপ্ৰই অনুসৰণ কৰা বৈয়াকৰণ ৰীতি ৰুদ্ৰ কন্দলীয়ে আৰ্হি স্বৰূপে লৈছিল।

‘সাত্যকি প্ৰৱেশ’ত সন্নিৱিষ্ট কৰা ব্যাকৰণৰ বৈশিষ্ট্যবোৰ তলত দেখুওৱা হ’লঃ

সৰ্বনাম	:	আমি, আমাক, আহাক, তান, তাৰ, তয়ু, তাসম্বাক, মই, মোৰ ইত্যাদি।
কালবাচক সৰ্বনাম	:	তেবে, তবে, তখন, তেখন ইত্যাদি।
ক্ৰিয়া-বিশেষণ	:	(দুবাৰ উক্তি) দুনাই দুনাই, নিতে নিতে, মনে মনে, খণ্ড খণ্ড, লাম্বে লাম্বে ইত্যাদি।
অনুকাৰ শব্দ	:	গিৰ্ গিৰ্।
বহুবচন	:	তাসম্বাক (তেঁহো শব্দৰ মান্যার্থক ২য়াৰ বহুবচন), গণ, জাক, সৰ আদি।
নিৰ্দিষ্টতাবাচক প্ৰত্যয়	:	শৰজাক (-জাক), শৰপাট (-পাট), ধনুখান (-খান), হস্তীগোট (-গোট), শৰজালে (-জালে) ইত্যাদি।
স্বৰভক্তি	:	পৰাণ (প্ৰাণ)। পাঞ্চগলৰ সাৰথিৰ লৈলন্ত পৰাণ।

প্ৰথম পুৰুষৰ বৰ্তমান কালত এক বচনৰ বৈশিষ্ট্য :

বোলে কৰি-এৰো আজি কলহৰ অন্ত।

অসমাপিকা 'কৰি'ৰ লগত সমাপিকা 'এৰো' ক্ৰিয়াৰ বৰ্তমান কালত
প্ৰয়োগ হৈছে।

(২) পাঁচনিৰ পাঁচনি বা ডবল পাঁচনি (Double Causative) :

পলুৱাইলা সাৰথি ঘোঁৰাক বেগে টানি।

(৩) সপ্তম্যন্ত বৰ্তমান কালত কৃদন্ত বিশেষ্য পদ 'অন্তে' বহুত ঠাইত
ব্যৱহাৰ হোৱা মন কৰিব লগীয়া কথা।

হানন্তে কাটন্তে বীৰ ভৈল আশকতি।

(৪) নিত্য বৰ্তমান কালৰ উত্তম পুৰুষৰ ক্ৰিয়াত 'ও'ৰ ব্যৱহাৰ হৈছে।

ইবেলাত যদি মই নকৰো সমৰ।

(৫) স্বৰূপভূত কালৰ উত্তম পুৰুষত 'ইলো'ৰ ব্যৱহাৰে আধুনিক যুগৰ
পৰ্যায় পাইছে।

হাঃ কি কৰিলোঁ মই কোঠাইক যাওঁ।

(৬) স্বৰূপভূত কালৰ দ্বিতীয় পুৰুষত (তুচ্ছাৰ্থক)- 'ইলি'ৰ ব্যৱহাৰ লক্ষ্য
কৰিব লগীয়া।

কিসক লাগিয়া ব্ৰহ্মকুলে উপজিলি।

(তুচ্ছাৰ্থক 'তই' কৰ্তা ইয়াত 'উহা' হৈ আছে)

(৭) স্বৰূপভূত কালৰ দ্বিতীয় পুৰুষত (মান্যার্থক)- 'ইলা'ৰ ব্যৱহাৰ কৰা
পৰিলক্ষিত হৈছে।

দ্রোণে দেখে পাণ্ডু বলে ব্যূহ বিধ্বংসিলা।

(৮) স্বৰূপভূত কালৰ তৃতীয় পুৰুষৰ এক বচনত - 'ইলে'ৰ ব্যৱহাৰত
আধুনিক অসমীয়াৰ ক্ৰিয়াৰ লক্ষণ প্ৰকাশ পাইছে।

বীৰকত বীৰক মাৰিলে ছুঃ বুলি।

(৯) -‘ইলো’ প্ৰত্যয়ান্ত স্বৰূপভূত কালৰ প্ৰথম পুৰুষৰ এক বচনত ক্ৰিয়াৰ লগত ‘হো’ সংযোগে জোৰ অৰ্থ বুজাইছে।

আমি সবে ধাইলোহৌ ৰাজাক পাচ কৰি।

(১০) -‘ইলা’ প্ৰত্যয়ান্ত স্বৰূপভূত কালৰ দ্বিতীয় পুৰুষৰ এক বচনত

(১) কিস লাগি এৰিলাহা আপোনাৰ কৰ্ম।

(২) পুৰাণ সংহিতা পঢ়িলাহা চাৰি বেদ।

(১১) -‘ইলে’ প্ৰত্যয়ান্ত স্বৰূপভূত কালৰ তৃতীয় পুৰুষৰ এক বচনৰ ৰূপ পুৰণি অসমীয়াৰ বৈশিষ্ট্য।

দ্রোণৰ হৃদয়ে ভেদিলেক পাঞ্চ শৰ।

(১২) -‘ইল’ প্ৰত্যয়ান্ত স্বৰূপভূত কালৰ তৃতীয় পুৰুষৰ এক বচনত হোৱা ব্যৱহাৰ তলত দেখুওৱা হ’ল।

দ্রোণে বুলিলন্ত হেন দাৰুণ বচন।

(১৩) ধাতুৰ পাচত -‘ইল’ প্ৰত্যয় যোগ দি কৃদন্ত বিশেষণ (Participle adjective) কৰা হৈছে। ই অতীত কালত ব্যৱহাৰ হয়।

(১) সিংহনাদ কৰি দ্রোণে দুগুণে কিটাইল।

(২) গদা ভঙ্গ ভৈলন্ত খঙ্গাইল নৃপবৰ।

(তুলনা : বিৰাইল বাঘিনী সমে কৰ পৰিহাস (মাধৱ কন্দলী)

(১৪) -‘ইলা’ প্ৰত্যয়ান্ত অতীত কালৰ কৃদন্ত বিশেষণ পদৰ ব্যৱহাৰ কোনো কোনো স্থানত আছে।

খেপিয়া পঠাইলা তাক মাৰিবাক মনে।

(১৫) -‘ইবা’ প্ৰত্যয়ান্ত অতীত কৃদন্ত পদৰ ব্যৱহাৰ আছে।

(১) প্ৰজা মাৰিবাৰ ফলে কৌৰৱ নৃপতি

পুত্ৰ পৌত্ৰ মৰিয়া যাইবেক অধোগতি।

(২) দুনাই ধনু ছেদিবাৰ বেগে যে লৰিলা।

(৩) তিনি শৰে ভেদিবাৰ আতাসেক দিলা।

(৪) বথ তন্ত্ৰিবাৰ দেখি সকলে পাঞ্চাল।

(৫) যুডিবাৰ শৰপাট আনক মাৰিয়া।

(বিশেষণীয় বিশেষণ)।

(১৬) চতুৰ্থী (৪ৰ্থী) বিভক্তিত 'লাগি', 'লাগিয়া' ব্যৱহাৰ হৈছে।

(১) কিস লাগি এৰিলাহা আপোনাৰ কৰ্ম।

(২) কিসক লাগিয়া হাতে ধৰিলা আয়ুধ।

(১৭) পঞ্চমী (৫মী) বিভক্তি 'হস্তে', 'হৈতে'ৰ প্ৰয়োগ হৈছে।

(১) অসুৰৰ হস্তে গদা পাইল জৰাসন্ধে।

(২) বথ হৈতে ৰাজা ঢলি পাবল ভূমিত।

(১৮) কৰ্ত্তা মান্যৱন্ত হ'লে তৃতীয় পুৰুষৰ ক্ৰিয়াৰ পিচত আ-কাৰ ব'হে।

(১) ধৃষ্টদ্যুম্নো তেতনে আপোন ৰথে গৈলা।

(২) পাঞ্চালক এৰি পাণ্ডৱক খেদি গৈলা।

(তুলনা : এহি বুলি মহাশ্বষি গৈলা তপোবনে। (মাধৱ কন্দলী)

(১৯) পৰিচিত অৰ্থৰ (অভিধা শব্দ) সলনি বেলেগ অৰ্থত ব্যৱহাৰ দেখুৱাইছে।

চিৰকালে (বহুত বেলিৰ মূৰত) দুঃশাসন চেতন লাভিল।

(তুলনা : চিৰকালে (বহুত বেলিৰ মূৰত) দশৰথে চেতনক পাইল। (মাধৱ কন্দলী)।

মূল সাত্যাকি প্ৰৱেশৰ অনুবাদক কবি ৰুদ্ৰ কন্দলী নিশ্চয় যোগ্য ব্যক্তি। সংস্কৃত আৰু অসমীয়া ভাষাৰ ওপৰত সমানে দখল থকা ব্যক্তিক ৰজা তাত্পৰ্য্যজ্ঞে এই গুৰু দায়িত্ব ন্যস্ত কৰিছিল। প্ৰাক-শঙ্কৰী যুগৰ কবিসকল মুখ্যতঃ ৰামায়ণ, মহাভাৰতৰ অনুবাদক। পৃষ্ঠপোষকতা আগ বঢ়োৱা ৰজাই সম্ভৱতঃ মূল সংস্কৃত গ্ৰন্থৰো যোগান ধৰিছিল।

অনুবাদ প্ৰকৃততে দুৰূহ কাম। বিদগ্ধ পণ্ডিতজনৰ ভাগ্যতহে পৃষ্ঠপোষকতাৰ সম্ভাৱনা উজ্জ্বল হয়। ৰুদ্ৰ কন্দলীৰ স্বকীয় প্ৰতিভা উদ্ভাসিত হৈছে আক্ষৰিক অনুবাদতকৈ ভাৱানুবাদতহে। অনুবাদ কাৰ্যত লাগতিয়াল বুলি বিবেচিত অভিধান, ব্যাকৰণ আদিৰ অভাৱ পূৰণ হৈছিল অগ্ৰণী কবিসকলে ইতিমধ্যে ৰচনা কৰা সাহিত্যৰ অঙ্গীভূত শব্দচয়ন, ব্যাকৰণ বৈশিষ্ট্য, লিখন-ৰীতিৰ সম্ভাৱৰ জৰিয়তে। বাছকবনীয়া শব্দচয়ন, সমীক্ষাত্মক বিশ্লেষণ, গ্ৰহণ আৰু প্ৰতিষ্ঠিত ৰচনাৰীতিৰ আলমত গঢ় লৈ উঠা ৰুদ্ৰ কন্দলীৰ মহাভাৰতীয় সাহিত্য নিঃসন্দেহে আদৰ্শণীয়।

— ড° সদা বেজবৰুৱা

সহায়ক গ্ৰন্থ :

- ১। হৰিনাৰায়ণ দত্তবৰুৱা (সম্পাদ), সপ্তকাণ্ড ৰামায়ণ, ১৯৮৫
- ২। হৰিনাৰায়ণ দত্তবৰুৱা (সম্পাদ), অসমীয়া মহাভাৰত (২য় খণ্ড), ১৯৫৫
- ৩। সোণাপতি দেৱশৰ্মা, সাহিত্যৰ সাজ, ১৯৭৬
- ৪। ডিব্ৰুগড়ৰ নেওগ, অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী
- ৫। ড° মহেশ্বৰ নেওগ, অসমীয়া সাহিত্যৰ ৰূপৰেখা, ১৯৭৪
- ৬। সত্যনাথ বৰা, বহল ব্যাকৰণ, ১৯৭১
- ৭। ড° বিৰিঞ্চি কুমাৰ বৰুৱা আৰু ড° মহেশ্বৰ নেওগ (সম্পাদ), হৰিবৰ বিপ্ৰৰ বৰুৱাহনৰ যুদ্ধ, ১৯৬০
- ৮। হেমচন্দ্ৰ বৰুৱা, অসমীয়া ব্যাকৰণ, ১৯৮৪
- ৯। দেৱানন্দ ভঁৰালি, অসমীয়া ভাষাৰ মৌলিক বিচাৰ, ১৯৯৩
- ১০। কালিৰাম মেধি, অসমীয়া ব্যাকৰণ আৰু ভাষাতত্ত্ব, ১৯৭৮
- ১১। ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মা, অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত, ১৯৮৬
- ১২। ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মা, ৰামায়ণৰ ইতিবৃত্ত, ১৯৮৪
- ১৩। ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মা, পুৰণি সাহিত্য অধ্যয়ন, ১৯৮৮

- ১৪। তীৰ্থনাথ শৰ্মা, সাহিত্যবিদ্যা পৰিক্ৰমা, ১৯৯১
- ১৫। হৰিদাস সিদ্ধান্ত বাগীশ (সম্পাদিত), মহাভাৰতম্, দ্ৰোণ পৰ্ব, ২৩ খণ্ড, ১৯৮১
- ১৬। গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়, চন্দ্ৰকান্ত অভিধান, ১৯৬২
- ১৭। হেমচন্দ্ৰ বৰুৱা, হেমকোষ, ১৯৮৫
- ১৮। Monier Williams, *A Sanskrit-English Dictionary*, 1984
- ১৯। Dr. Banikanta Kakati, *Assamese, Its Formation and Development*, 1941.
- ২০। Dr. Banikanta Kakati (ed), *Aspects of Early Assamese Literature*, 1959.

- ১। অসমীয়া মহাভাৰত (২য় খণ্ড), পৃঃ ১২০
- ২। অসমীয়া মহাভাৰত (২য় খণ্ড), সাত্যকি প্ৰৱেশ, পৃঃ ১২০
- ৩। অসমীয়া মহাভাৰত (২য় খণ্ড), সাত্যকি প্ৰৱেশ, পৃঃ ১১৯
- ৪। প্ৰাগুক্ত গ্ৰন্থ, পৃঃ ১১৪

মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণ

মাধৱ কন্দলীয়ে বৰাহী ৰজা মহামাণিক্য বা মহামাণিক শ্ৰৱণ কৰাবলৈ ৰচনা কৰা সাৰোদ্ধৃত *সপ্তকাণ্ড ৰামায়ণ* খনি আৰ্যমূলীয় ভাৰতীয় আঞ্চলিক ভাষাসমূহৰ ভিতৰত সৰ্বপ্ৰাচীন ৰামায়ণ। সংস্কৃত ভাষাত আদি কবি বাৰ্মীকি-ৰচিত ৰামায়ণখন যেনেকৈ পিচৰ যুগৰ প্ৰথিতযশা লেখকসকলৰ কাব্য ৰচনাৰ আদৰ্শ আৰু প্ৰেৰণাৰ উৎস আছিল, অসমীয়া ভাষাতো প্ৰাক্-শঙ্কৰী কবি মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণখনি পিচৰ যুগৰ কবিসকলৰ কাৰণে তেনেকৈয়ে আদৰ্শ আৰু প্ৰেৰণাৰ উৎস। অসমীয়া সাহিত্যৰ ইতিহাসত যুগপ্ৰৱৰ্তক শঙ্কৰদেৱে মাধৱ কন্দলীৰ পাণ্ডিত্য আৰু কবিত্বক স্বীকৃতি দি থৈ গৈছে।^১ শঙ্কৰদেৱে মাধৱ কন্দলীৰ ‘পদ আদৰ্শক চাই’^২ কাব্য ৰচনা কৰাৰ অস্পষ্ট ইঙ্গিত এটাও দি গৈছে। প্ৰাক্-শঙ্কৰী যুগৰ কবিসকলৰ ভিতৰত মাধৱ কন্দলী ৰচনাতে বৈষ্ণৱ যুগৰ কাব্যৰীতিয়ে এটা আদৰ্শনীয় নিৰ্দিষ্ট গঢ় লোৱা পৰিলক্ষিত হয়। শঙ্কৰদেৱকে মুখ্য কৰি পিচৰ বৈষ্ণৱ কবিসকলৰ ৰচনাৰীতিৰ ওপৰত মাধৱ কন্দলীৰ প্ৰভাৱ বহুমুখী। শঙ্কৰ-মাধৱ দুজনা গুৰুৱে উত্তৰাকাণ্ড আৰু আদিকাণ্ড সংযোজিত কৰি পূৰ্ণাঙ্গ কৰা মাধৱ কন্দলী-ৰচিত ৰামায়ণখনে পিচৰ যুগৰ ৰামকথা প্ৰণেতাৰসকলক গভীৰভাৱে প্ৰভাৱিত কৰিছে।

কন্দলী ৰামায়ণৰ কাণ্ডসংখ্যা :

মাধৱ কন্দলীয়ে ‘লঙ্কাকাণ্ড’ৰ সামৰণিত ‘সাতকাণ্ড ৰামায়ণ, পদবন্ধে নিবন্ধিলৌ’ বুলি কৈছে; পিচে কন্দলী ৰামায়ণত পাঁচোটা সৰ্গহে পোৱা যায়। শঙ্কৰ-মাধৱৰ সময়তে তেওঁৰ ৰামায়ণত মাজৰ পাঁচোটা কাণ্ডহে পোৱা গৈছিল কাৰণে গুৰু দুৰ্জনাই উত্তৰাকাণ্ড আৰু আদিকাণ্ডটো ৰচনা কৰি মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণখন সম্পূৰ্ণ কৰিছিল। আগে-গুৰিয়ে এই দুটা কাণ্ড নথকাৰ সম্পৰ্কত মতভেদ আছে, “কোনোৱে কয় আহোম-কছাৰীৰ যুদ্ধৰ কালত ধ্বংস হ’ল, কোনোৱে কয় জুয়ে পুৰিলে আৰু কোনোৱে কয় মূল বাৰ্মীকি ৰামায়ণো আদিতে মাজৰ পাঁচ কাণ্ডতে

সম্পূৰ্ণ হোৱাৰ দৰে মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণো মূৰতেই “পঞ্চকাণ্ড ৰামায়ণ, পদবজ্জে নিবজিলোঁ” আছিল আৰু লঙ্কাকাণ্ডতে আত্মপৰিচয় দি সামৰণি মৰা কথাই এই তৃতীয় মত সমৰ্থন কৰে।^{১০} ড° মহেশ্বৰ নেওগে কন্দলীৰ আত্মপৰিচয়ত থকা “সাতকাণ্ড ৰামায়ণ” শব্দটো লিপিকাৰৰ উদ্ভাৱন বুলিও অনুমান কৰিছে।^{১১}

মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণখনৰ আৰম্ভণি আৰু সামৰণিৰ তাৎপৰ্য আলোচনা কৰিলে আমাক নি এনে সিদ্ধান্তত উপনীত কৰায়, অযোধ্যাকাণ্ডৰ পৰা লঙ্কাকাণ্ডলৈ এই পাঁচোটা কাণ্ডতে সাতকাণ্ড ৰামায়ণৰ ‘লজ্জা পৰিহৰি সাৰোদ্ধৃত’ হোৱা ই এখন সম্পূৰ্ণ মহাকাব্য।

‘ৰামায়ণ’ শব্দৰ অৰ্থ হৈছে ৰামৰ অয়ন অৰ্থাৎ পৰ্যটন। ৰামৰ অভিষেকৰ উদ্দেশ্যে অযোধ্যাত উলহ-মালহ লগাৰ পৰা ৰাম বনলৈ গৈছে আৰু লঙ্কা জিনি ঘূৰি আহি পুনৰ উলহ-মালহৰ মাজত ৰাম অযোধ্যাত ৰজা হৈছেহি। এইদৰে ৰামৰ অয়ন য’ৰ পৰা আৰম্ভ হৈছিল পুনৰ তাতে সমাপ্ত হৈছে; গতিকে ৰাম-অয়নৰ সম্পূৰ্ণ বিৱৰণিৰে সৈতে অযোধ্যা কাণ্ডৰপৰা লঙ্কাকাণ্ডলৈকে এইখন সম্পূৰ্ণ ৰামায়ণ। মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণত অযোধ্যাকাণ্ডৰ আৰম্ভণিতে জগতৰ আধাৰ ৰামচন্দ্ৰৰ বন্দনাৰে মঙ্গলাচৰণ কৰি ‘দশৰথৰ গৃহে লীলাৰূপে অৱতৰি’ মনুষ্যৰ নিচিনা কৰ্ম কৰা ৰামৰ বিশ্বামিত্ৰৰ লগত লক্ষ্মণৰ সৈতে কৰা মিথিলা যাত্ৰা, বিশ্বামিত্ৰৰ যন্ত্ৰৰক্ষা তথা ৰাক্ষসবিনাশ, ধনুৰ্ভঙ্গ কৰি সীতাক বিবাহ কৰোৱা, ৰাম-সীতা, লক্ষ্মণ-উৰ্মিলা আদি চাৰি দম্পতীয়ে উলহ-মালহৰ মাজেদি অযোধ্যাত প্ৰৱেশ কৰাৰ চমু বৰ্ণনা দাঙি ধৰা হৈছে।^{১২} বাস্তৱিকীয় ৰামায়ণৰ তিনিওটা পাঠতে^{১৩} বালকাণ্ডতহে এইখিনি কথা আছে। ‘বালকাণ্ড’ৰ ৰাম সম্পৰ্কীয় কথাখিনি ‘লজ্জা পৰিহৰি সাৰোদ্ধৃত’ কন্দলীয়ে এইদৰে উপস্থাপন কৰি লৈছে অযোধ্যাকাণ্ডৰ কথালৈ গৈছে।

‘লঙ্কাকাণ্ড’ৰ সামৰণিত কন্দলীয়ে আত্মপৰিচয় দাঙি ধৰি লগতে “সাতকাণ্ড ৰামায়ণ সাৰোদ্ধৃতো নিবন্ধন” কৰা বুলি কৈ ৰামৰ অয়ন অৰ্থাৎ ৰামায়ণ সমাপ্তিৰো ইঙ্গিত দিছে।^{১৪}

মাধৱ কন্দলীৰ ‘ৰামায়ণ’ৰ ৰচনা ৰীতি সম্পৰ্কত কবিজনাই নিজে কৈ যোৱা কথাৰ পৰাই স্পষ্ট হৈ পৰে। কিত্তিকাকাণ্ডৰ সামৰণিত কৰিয়ে কৈছে^{১৫} বাস্তৱিকিয়ে গদ্য-পদ্য ছন্দত ৰচনা কৰা শাস্ত্ৰখন তেওঁ অতি যত্নেৰে বিচাৰ-বিমৰ্শ কৰি চাই, নিজৰ বুদ্ধি অনুযায়ী যি অৰ্থ বুজিলে, তাকে সংক্ষেপে পদ্যত নিবন্ধ

কৰিলে। কবিসকলে লোকব্যৱহাৰ অনুসাৰে কেতিয়াবা স্বকল্পিত কথা আৰু কেতিয়াবা (জনসমাজত প্ৰচলিত) লম্বা কথাৰে কাব্য ৰচনা কৰে। এই ৰচনা দেৱবাণী (অৰ্থাৎ সংস্কৃত ভাষাত ৰখিয়ে ৰচনা কৰা আৰ্য কাব্য) নহয়, ই লৌকিক (লোক ভাষাত ৰচিত) কথাহে। গতিকে ইয়াত ঘটা দোষসমূহ যেন গ্ৰহণ কৰা নহয়। সুন্দৰাকাণ্ডৰ সামৰণিত কৈছে— মহৰ্ষি বাৰ্ম্মীকিয়ে সংসাৰত অমৃত যেন কৰি ৰামায়ণ (মহাকাব্য) সৃষ্টি কৰিলে। ইয়াক শ্ৰৱণ কৰিলে কলি কালত নৰৰ সন্ধান হ'ব। XX সভাসদসকলে মধুৰ কোমল পদেৰে ৰচিত পৱিত্ৰ ৰামৰ চৰিত শ্ৰৱণ কৰক। এই ৰামায়ণৰূপ মহাৰস শ্ৰৱণত অমৃত, যমলোক নিবাৰক আৰু কলিমল নাশক। লম্বাকাণ্ডৰ অন্ততো কোৱা হৈছে— মহৰ্ষি বাৰ্ম্মীকিয়ে সাক্ষাৎ বেদস্বৰূপ ৰামায়ণ ৰচনা কৰিলে। ই শ্ৰৱণত অমৃতময়, পাপনাশক, সংসাৰ বন্ধন মোচনকাৰী। XX তাৰ আধাৰতে সপ্তকাণ্ড ৰামায়ণ পদ্যত নিবন্ধ কৰা হৈছে। তাত মহামণিকাৰ কথামতে কাব্যৰস প্ৰদান কৰা হৈছে। সেই কাৰণে যদি পণ্ডিতসকলৰ অসন্তোষ জন্মে, তেনে মূল ৰামায়ণত চাই মূল কথাখিনি নাপালে, তেতিয়াহে পদ্যকৰ্তাক দোষাৰোপ কৰে যেন।

কবিজনাৰ এই উক্তিসমূহৰ পৰা স্পষ্টভাৱে জনা যায় যে মহৰ্ষি বাৰ্ম্মীকিকৃত ৰামায়ণৰ আধাৰত ৰচিত মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণখনত মূলৰ বিস্তৃত প্ৰাসঙ্গিক কথাসমূহ বাদ দি সাৰখিনিহে উদ্ধৃত কৰিছে। লোকৰুচি অনুসৰি কন্দলীয়ে নিজা সংযোজনাও কৰিছে। কন্দলীৰ এই ৰামায়ণ 'মধুৰ কোমল পদে'ৰে ৰচিত। ৰামৰ পৰম পৱিত্ৰ চৰিত্ৰ এফালে যেনেকৈ কাব্যিক অমৃত ৰসযুক্ত, সেইদৰে ই কলিমলনাশক, 'পাতকৰ সাক্ষাত অগনি'।

কন্দলী-ৰামায়ণৰ কাব্যিক সুৰমা :

অসমৰ লোকভাষাক কাব্যভাষা ৰূপে সুপ্ৰতিষ্ঠিত কৰাত মাধৱ কন্দলীৰ কৃতিত্ব অতুলনীয়। আধাৰগ্ৰন্থ সংস্কৃত যদিও সংস্কৃত শব্দৰ প্ৰাচুৰ্যই থলুৱা ভাষাৰ মাধুৰ্য হানি কৰা নাই। তৎসম শব্দ, তন্ত্ৰৰ তথা দেশী শব্দ যথাযথভাৱে চয়ন কৰি কন্দলীয়ে অতি দক্ষতাৰে সৈতে ৰমণীয় কৰি গাঁঠিছে, তুলনাৰ কাৰণে ব্যাৱহাৰিক জীৱনৰ পৰা চিত্ৰ সংগ্ৰহ কৰিছে, জতুৱা ঠাঁচৰে তেওঁ ৰচনাখন জনসাধাৰণৰ আপোন কৰি তুলিছে, থলুৱা পটভূমিৰে বৰ্ণনীয় বিষয় প্ৰভাৱশালী কৰি তুলিছে। প্ৰসঙ্গৰ লগত খাপ খুৱাই পৰিস্থিতি অনুসৰি আৰু বক্তা-শ্ৰোতাৰ স্তৰ অনুযায়ী কন্দলীয়ে ভাষাৰ প্ৰয়োগ কৰিছে।

কন্দলীৰ সুষ্ম ভাষাপ্ৰয়োগৰ উদাহৰণ স্বৰূপে—

দৃঢ়বন্ধ ফটক চাৰিও দুৱাৰত।

বজ্জ লৌহে নিৰ্মিলে চাৰিয়ো ৰাজপথ।। ৪৬৫০

...খাল বাম পুৰিলোহো ভাঙ্গিলো সংক্ৰম।

দুৰ্ঘোৰ গুচায়া ভূমি কৰিলোহো সম।

লঙ্কাখান পুৰিয়া কৰিলো ছাৰমসি।

টোলৰ ভিতৰে যেন নিঙ্গনিয়ে পশি।। ৪৬৫৪

লোকব্যৱহাৰৰ পৰা লোৱা উপমাৰে কন্দলীয়ে মহাকাব্যৰ কাহিনী জনসাধাৰণৰ আপোন কৰি তুলিছে ‘বটালি নকাটে যেন বিনা হাঠুৰীৰে’, ‘দুইৰো ভৈলা শৰীৰ সবঙ্গা যেন জাল’, ‘বতাহতে খসি যেন পৰে পকা ফল’, ‘এক হাতে কোনে ধৰিবেক দুই শ’ল’, ‘তপত খোলাত কৰে মাছে যেন মত’, ‘পকা কষ্টকীক এৰি ডহা ফল খায়’ ইত্যাদি। কন্দলীয়ে এই নিচিনাকৈ জতুৱা ঠাঁচৰেও তেওঁৰ ৰচনাখনি মনোগ্ৰাহী কৰি তুলিছে, ‘লঙ্কাপুৰীখান কাংস পৰি জিম গৈল’, ‘ডালত ধৰিয়া কতো ওলোমা বাদুলী’, ‘কচু যেন ভেদো এক শৰৰ প্ৰহাৰে’, ‘মুখৰ গৰাস মোৰ তাকো কাঢ়ি লৈলে’, ‘পাপিষ্ঠীয়ে ধালিলন্ত অমৃতত বিষ’ ইত্যাদি। ‘বিড়ালীৰ যদি, দোষক ধৰিয়া, নিতেহি হাণ্ডি পেলাইব’— এই নিচিনা থলুৱা পটন্তৰে বৰ্ণনীয় বিষয়ক অধিক প্ৰভাৱোৎপাদক কৰি তুলিছে।

ভাৱ অনুসৰি ভাষাৰ প্ৰয়োগেৰে কন্দলীয়ে সাৰ্থকভাৱে ৰসভাৱৰ উৎকৃষ্ট ব্যঞ্জনা কৰিছে—

ভাইৰ সন্তাপে ৰাম দশ গুণে চণ্ড।

শৰীৰৰ মাংসক কৰিলা খণ্ড খণ্ড।। ৬১২৭

আস্ফোট কৰিয়া ৰামে বীৰ কাছে কাছি।

অৰ্দ্ধচন্দ্ৰ নৰাচ হানন্ত বাছি বাছি।।

ৰাৱণক নানা শৰ হানি বনমালী।

নাকে মুখে গাণ্ডি মুণ্ডে থৈলা শালি শালি।। ৬১২৮

উপযুক্ত ধনিকবিন্যাসৰ দ্বাৰা ইয়াত ৰামৰ প্ৰচণ্ড ক্ৰোধ যিদৰে ব্যঞ্জিত হৈছে, সেইদৰে বনমালী ৰামৰ সুকুমাৰতাও ব্যঞ্জিত হৈছে। সুকুমাৰ ভাবব্যঞ্জনাৎ সাৰ্থকতা লাভ কৰা কন্দলীৰ ভাষা প্ৰয়োগৰ এটি উদাহৰণ মন্দাকিনী নদীৰ পাৰত বহি ৰামে সীতাক চিত্ৰকূটত কোৱা এই উক্তি—

ৰাজহংস দেখা সীতা তোমাৰ গমন।
চক্ৰবাক্যুগল তোমাৰ দুই তন।। ২০৮১
কলহংসৰাৰ কাঞ্জি নুপুৰৰ নাদ।
বদন কমল তোৰ দেখন্তে আহ্লাদ।।
বদন উপৰে তোৰ নয়ন যুগলে।
খঞ্জন দুতয় যেন চলয় কমলে।। ২০৮২

সীতাৰণৰ সময়ত সীতাই ৰাৱণক কোৱা উক্তিত সীতাৰ ৰাৱণৰ প্ৰতি ক্ৰোধ, ঘৃণা, তৰ্ক, সৰ্বীয়নিৰ একত্ৰ ব্যঞ্জনা হৈছে—

মোহোক হৰিয়া য়েবে পাতালক যাস।
তহিতো ৰাঘৱে তোৰ চিন্তিবে বিনাশ।। ৩১৭৫
হাড়ী জাতি ছয়া পঢ়িবাক চাস বেদ।
অবিলম্বে ৰাঘৱে কৰি স্কন্ধছেদ।।
X X X লঙ্কাৰ অগনি কুণ্ড মোক য়েবে নিবি।
ৰামৰ হাতত মুঢ় অৱশ্যে মৰিবি।। ইত্যাদি।

মূল বান্দীক ৰামায়ণত এই প্ৰসঙ্গত (গৌড়ীয় পাঠ ৩/৫৪/৪৪-৫৩) ভালেখিনি উপমা, ৰূপক, নিদৰ্শনা আদি অলঙ্কাৰ প্ৰয়োগ কৰা হৈছে। কন্দলীৰ আৰ্হি সেয়ে হ'লেও একোটা প্ৰসঙ্গত এইদৰে উপমা বিধান কৰাত কবিজনাৰ স্বকীয় বৈশিষ্ট্য আছে—

প্ৰথম ৰোগত য়েবে নেদয় আসুধি।
ব্যাধি বাঢ়ি গৈলে পাচে হত হোৱে বুদ্ধি।। ৪৪২৯

জুই-আঙনীৰ মত দিৱয় ভুবুকি।। ৩০৯৫
 ৰৌদ্ৰৰসৰ লগত ৰজ্জিতা খাই পৰা কন্দলীৰ ভাষাৰ নিদৰ্শন—
 (ৰাৱণৰ) দশগোট মাথা কম্পাৱয় কুৰি কৰ্ণ।
 ক্ৰোধে কুৰিগোট চক্ষু সিন্দুৰৰ বৰ্ণ।। ৫৯৯২
 কুৰি পালি দশন চোবাবে কৰকৰি।
 দশখান যাস্তে যেন তেলী তেল পেৰি।।
 হাতে হাতে পিষয় কণ্ঠুতি কৰে শিৰ।
 ঘনে ঘনে কম্পে তাৰ সকল শৰীৰ।। ৫৯৯৩
 ভয়ানক ৰসৰ ব্যঞ্জনাত সাৰ্থক হৈছে এই বৰ্ণনাত
 (শূৰ্পণখাৰ) ভয়ঙ্কৰ বেষণ ভৈল পেটগোট খাল।
 লহ লহ জিহ্বাখন দেখিতে বিশাল।। ২৮২৮
 আকট বিকট দন্ত উচ্চ নাকগোট।
 কেশপাশ বিকৃত লেডুৱা দুই গুঁঠ।।
 ডিমৰুৰ পাত যেন খসমস গাৱ।
 লোমচয় উভতা ভেজুৰা দুই পাৰ।। ২৮২৯
 দুই গোট চক্ষু জ্বলে অগনিৰ ঠান।
 কুৰিগোটা নখ তাইৰ বজ্জৰ সমান।।

মাৰীচক বধ কৰাৰ সময়ত সীতাৰ বিপদৰ কথা ভাবি উদ্ধাউল হৈ থকা
 ৰামে লক্ষ্মণক “হাহা লখাই কিনো তুমি কৰিলা অকায/সীতাক এৰিয়া আইলি
 ঘোৰবন মাজ” বুলি উত্ৰাবল হৈ কোৱা কথাখিনি পৰিস্থিতিৰ অনুকূল হৈছে—

হৰি হৰি লখাই তই কি কৰিলি মোক।
 অগনি লগাইলি গাৱে কি কৰিবো তোক।। ৩৩১৫
 সীতাক এৰিয়া গৈলি দহে শোকে মোক।
 খাণ্ডা হানি মৰৌ মই তোৰ সুখ হোক।।
 + + প্ৰাণেশ্বৰী বিনে মই মৰিবৌ বনত।
 এবো কৈকেয়ীৰ হৌক কৌতুক মনত।।

সেইদৰে প্ৰজাবন্দৰ চকুৰ মণি হৃদয়ৰ ধন ৰামক বনত থৈ ঘূৰি অহা
সুমন্তক অযোধ্যাৰ নাৰীগণে পৰা গালিও পৰিস্থিতি সাপেক্ষে উপযুক্ত হৈছে—

এৰি আইলি ৰামক চণ্ডাল পাপশালী।।

কিনো হিয়াখন তোৰ বজ্জেসে গড়িল।

ৰামক এৰিতে কেনে মনত ফলিল।। ২১০০

জানিলোহো ইটো ভৰতৰ ভাৰি খাইলে।

ছলে নিয়া ৰামক বনত এৰি আইলে।।

নগৰৰ বাজ কৰি খেদাওঁ ইহাক।

মাধ ধৰ বুলিয়া গালিৰ দেই জাক।। ২১০১

এই বুলি কৈ পুৰনাৰীসকলে কান্দোনৰ ৰোল তুলিছে। বক্তা অনুসৰি
ভাষাৰ প্ৰয়োগতো কন্দলী সিদ্ধহস্ত। বাৰ্মীকি ৰামায়ণৰ হনুমান প্ৰাঞ্জ, নীতিবিদ
প্ৰভৃতি বৈশিষ্ট্যমণ্ডিত ব্যক্তিবিশেষ হ'লেও মাধৱ কন্দলীৰ শ্ৰোতাসকলৰ হনুমন্ত
এক বান্দৰ বিশেষহে। সেই কাৰণে ৰাৱণৰ সভাত ৰামদূতৰূপে উপনীত হওঁতেও
কন্দলীয়ে হনুমন্তৰ বচনত বান্দৰালিৰ ৰহণ সানিছে। হনুমন্তই লঙ্কাধিপতি ৰাৱণক
কৈছে—

এতিক্ষণে তোক নমাইবাক পাৰোঁ বাম হাতে ধৰি চুলিত।।

X X তই আসি মোৰ পাৱক মৰ্দস ধৃতি হৌক মোৰ গাৱে।। (৪৪৬৫ পদ)

দেখাত গ্ৰাম্যতা দোষদুষ্ট যেন লগা এনেকুৱা বহুতো উক্তি বক্তা, শ্ৰোতা
আৰু পৰিস্থিতিৰ বিচাৰত গুণতহে পৰিণত হয়।

বীভৎস ৰসৰ ব্যঞ্জনাতো কন্দলীৰ ভাষাই কৃতিত্বৰ দাবী কৰিব পাৰে।
হনুমন্তৰ মধুবন ধ্বংস প্ৰসঙ্গত আছে—

গগুগলিত কৰি, মধুফল ভুঞ্জি বীৰে, ঠিস ঠিস কৰিলন্ত পেট।

গৰ্ভৰ পুৰীষ জলে খথাৰে সিঙ্গুনে বাস্তি, দুৰ্গম কৰিলে সবে হেঠ।। ৪৩২৭

এইদৰে মাধৱ কন্দলীয়ে 'মধুৰ কোমল পদে'ৰে লোকভাষাত মহাকাব্যৰ
ভাঙনি কৰি অতুলনীয় কৃতিত্ব দেখুৱাই গৈছে।

ছন্দ— 'সৰ্বজনবোধে ৰামায়ণ সুপয়াৰ' কৰা কন্দলীৰ ৰচনাখনিত পয়াৰ
বা পদ নামৰ চতুৰ্দশাঙ্কৰী ছন্দৰ প্ৰয়োগেই বেছি; দুলৰী আৰু ছবি ছন্দৰ প্ৰয়োগে
পদছন্দৰ একেসুৰীয়া বিৰসতা ভঙ্গ কৰিছে। বিষয় অনুসৰি ঝুমুৰি ছন্দ কন্দলীয়ে
কেইবা ঠাইতো প্ৰয়োগ কৰিছে। ৰাৱণে হৰণ কৰি নিয়া সীতাৰ যি বৰ্ণনা সুগ্ৰীৱৰ

মুখত বুমুৰি ছন্দত দিয়া হৈছে, তাত সুগ্ৰীৱৰ ৰাধাতা, অপহৃত সীতাৰ থমকি থমকি উঠা উচুপনি, প্ৰিয়তমাৰ সন্তোষ পোৱা ৰামৰ হৃদয়ৰ খৌকি-বাখৌ অৱস্থা, সুন্দৰকৈ ব্যঞ্জিত হৈছে—

আকাশৰ পাথে যান্তি।

দশদিশে নিহালন্তি।।

ভয়ে আতি চমকন্তি।

কন্দন কৰিয়া যান্তি।। ৩৪২৬

লক্ষ্মণক সুমৰন্তি।

ৰাম ৰাম উচ্চৰন্তি।। ইত্যাদি।

সীতাৰ অলঙ্কাৰ দেখি “শোক দুখ অগনি শৰীৰ কৰে দাহা” অৱস্থা ঘটা ৰামে “সহিব নোৱাৰো ক্ৰোধে জ্বলয় প্ৰত্যেক” বুলি ক্ৰোধৰ আতিশয়ত কোৱা কথাখিনিও (৩৪৩৯—৪২ পদ) বুমুৰি ছন্দত প্ৰকাশ কৰি ৰামৰ ব্যাকুলতা ব্যঞ্জিত কৰাত সফল হৈছে। যুদ্ধৰ বৰ্ণনাতে বুমুৰি ছন্দৰ সাৰ্থক প্ৰয়োগ কৰা হৈছে। বালী-সুগ্ৰীৱৰ যুদ্ধৰ বৰ্ণনাটো যেন শঙ্কৰদেৱৰ ‘কীৰ্তনঘোষা’ত ‘কৃষ্ণ-জাম্বৱন্ত’ যুদ্ধৰ আৰ্হি হৈছে প্ৰকাশ পাইছে—

এহিমতে বীৰ দুই। যুজে একপিণ্ড ছই।।

শৰীৰত উঠে জুই। বলে দুই ক্ষীণ নুই।। ৩৫৪৭

বাছ বাছ বাঞ্ছিলন্ত। পাৰে পাৰে ছান্দিলন্ত।।

X X কিল ভুকু লাঠি হানি। ভূমিত আশ্বালে আনি।।

X X দুইকো দুয়ো পাৰে গালি। বাহুত মাৰয় তালি।।

বালীৰ হাতত পৰাজিত সুগ্ৰীৱৰ অচেতন অৱস্থাৰ পৰা চেতনা লাভ কৰাৰ পিচৰ কাৰ্যাৱলী তথা ৰামৰ প্ৰতি উক্তি ছবি ছন্দত নিবন্ধ। সেই বৰ্ণনাত পৰ্বই পৰ্বই সুগ্ৰীৱৰ ক্ষোভজনিত নিশ্বাস-প্ৰশ্বাসহে যেন ধ্বনিত হৈছে। কন্দলীৰ সমস্ত কাব্যখনিতে এইদৰে ছন্দ প্ৰয়োগৰ দক্ষতা দৃষ্টিগোচৰ হয়।

চৰিত্ৰ-চিত্ৰণৰ ক্ষেত্ৰত মূলতকৈ কন্দলীৰ বিশেষ পাৰ্থক্য নাই। যি সামান্য পাৰ্থক্য পৰিলক্ষিত হয়, তাৰ কাৰণ বাস্তৱিক ৰামায়ণৰ পৰা কন্দলীৰ ৰামায়ণলৈকে

ঘটা সময়ৰ ব্যৱধান, সমসাময়িক পৰিস্থিতি, স্থানীয় পৰিবেশ আৰু তাৰ পিচতে কবিজনৰ নিজত্ব ৰুচি বুলি ধৰিব লাগিব। কন্দলীয়ে মনস্তাত্ত্বিক দৃষ্টিৰেও কেতিয়াবা চৰিত্ৰসমূহৰ ভিতৰলৈ জুমি চোৱা দেখা যায়। পিতৃৰ বচন ৰাখি “মায়াময় ইটো, গৃহসুখ তেজি” বনলৈ যাবলৈ ওলোৱা ৰামে কন্দলীৰ ৰামায়ণত” “সুশোভন চিত্ত, ধৰ্মেৰে চৰিত্ৰ” সীতাৰ পৰা বিদায় ল’বলৈ যাওঁতে সীতাৰ কোনো অঙ্গ বাদ নপৰাকৈ ‘অমৃতৰ কুপ সম মন্থতৰপূৰ’ পৰ্যন্ত অঙ্গসৌষ্ঠৱ বৰ্ণনা কৰাৰ”^২ পাচত কৈছে—

সুৰগণ গন্ধৰ্ব নাগৰ তেজ হৰে।
বেশ দেখি কিমতে যুৱতে প্ৰাণ ধৰে।। ১৮৩৪
জীৱন্তে মৃতক মই তোক পৰিহৰো।
গলে শিলা বান্ধিয়া সাগৰে জাম্প কৰো।।

এইদৰে কন্দলীৰ ৰামায়ণত সীতায়ো তদনুৰূপ মনোভাৱ প্ৰকাশ কৰি কৈছে—
চম্পক কলিকা যেন মোৰ কলেৱৰ।
লুণ্ঠি ঘুণ্ঠি আছিলিহা যেহেন ভ্ৰমৰ।। ১৮৩৮
যেবে আসি বিকশিত ভৈল ফুলফল।
উপভোগ এৰি কেনে কৰাহা নিশ্ফল।।

চিত্ৰকূট পৰ্বতত বসন্তৰ শোভা দেখি ৰামৰ ‘কামব্যাধি পীড়িয়া নসহে মোৰ গাৱে’ হোৱা অৱস্থাও কন্দলীয়ে স্বতন্ত্ৰৰীয়াকৈ বৰ্ণনা কৰিছে। মূলত ‘সীতা-অনসূয়া সংবাদ’ত মাত্ৰ এটা শ্লোকত লক্ষ্মণে উৰ্মিলাক বিয়া কৰাইছে বুলি থকাৰ ঠাইত কন্দলীয়ে উৰ্মিলাৰ নখ-শিখ সৌন্দৰ্যৰ বৰ্ণনাৰে তেওঁৰ মূনিৰো মন হৰণ কৰিব পৰা লক্ষ্মীসম ৰূপগুণ ফুটাই তুলিছে (২৬৬৪-৬৯ পদ)। এই প্ৰসঙ্গতে কন্দলীয়ে সীতাক ‘জাতিস্মৰ কন্যা’ ৰূপে সজাইছে। কন্দলীয়ে “শোভন যৌৱন দেখি যুৱত মোহন” অৱস্থাৰ কুঁজী মছৰাই ভৰতৰ প্ৰতি যি ৰতিভাৱ পোষণ কৰাৰ কথা লিখিছে, বিকৃতাক্ষী অৱহেলিত যৌৱনা নাৰী এজনীৰ পক্ষে সেয়া অলপো অস্বাভাৱিক নহয়। সেয়েহে কুঁজীৰ এই বাহ্যা কন্দলীৰ সূক্ষ্ম মনোবিগ্ৰেষণৰহে পৰিচায়ক—

বয়সত বৰ মই ভৰতত কৰি।
কামবশ ভৈলে সিটো দোষক নধৰি॥ ২২৮৬
বিদিত কুমাৰে যেৰে লাজ কিছু কৰি।
গুপ্তৰূপে তথাপিভো হৈবো পটেশ্বৰী॥

বিষয়-বৰ্ণনত কন্দলীয়ে কাব্যসুলভ দক্ষতাৰ পৰিচয় দিছে। অযোধ্যাবৰ্ণন, ৰামৰ ভৱন তথা ৰাৱণৰ ভৱন বৰ্ণন, অযোধ্যাবাসীসকলৰ শোভাযাত্ৰা বৰ্ণন, চিত্ৰকূট আদি বন-উপবন বৰ্ণন, সেনাপ্ৰয়াণৰ বৰ্ণন, প্ৰাচীৰ বৰ্ণন প্ৰভৃতি সকলো বৰ্ণনাই কন্দলীৰ স্বকীয় প্ৰতিভাৰে সমৃদ্ধ।

অলঙ্কাৰ প্ৰয়োগৰ ক্ষেত্ৰত মূলৰ সমস্ত সাদৃশ্যাগৰ্ত্ত অলঙ্কাৰ কন্দলীৰ ৰচনাত পৰিলক্ষিত হোৱাৰ উপৰিও মূলৰ ভিত্তিত নতুন ৰূপ প্ৰদান কৰা আৰু কন্দলীৰ স্বকীয় প্ৰয়োগো আছে। বিৰহবিধুৰা সীতাৰ বৰ্ণনাত মূলৰ মনোৰম উপমাখিনিৰ^{১০} ভিত্তিত অভিপ্ৰেত চিত্ৰ ফুটাই তোলাত কন্দলী সফল হৈছে—

মেঘে যেন ঢাকি আছে সৰ্বোন্তম তাৰা॥ ৪১৫১
কেশে যেন ঢাকি আছে চম্পক মল্লিকা।
ভস্মে যেন ঢাকি আছে অগনিৰ শিখা॥

অৰ্থালঙ্কাৰৰ ক্ষেত্ৰত মূলৰ দ্বাৰা অনুপ্ৰাণিত হ'লেও যমক-অনুপ্ৰাস আদি শব্দালঙ্কাৰ প্ৰয়োগত কন্দলীৰ স্বকীয় বৈশিষ্ট্য স্বীকাৰ কৰিব লাগিব। লঙ্কাগাত ৰামৰ প্ৰত্যাগমনৰ অৰ্থে সুসজ্জিত কৰা অযোধ্যাৰ বৰ্ণনাত আছে—

সাজি মাজি পদূলি পদূলি ৰুইলা কল।
ৰত্নদীপ দিলা সুবৰ্ণৰ ঘটে জল॥
লবঙ্গ মালতী মালা সুগন্ধক কহে।
সুৰভি শীতল অনুকূল বায়ু বহে॥ ৬৫৯৮

সাহিত্যত সামাজিক পৰিবেশৰ প্ৰতিফলন ঘটে। কন্দলীৰ ৰামায়ণতো সমকালীন ধৰ্ম, সমাজ, লোকব্যৱহাৰৰ সুপ্ৰতিফলন ঘটিছে। বৈষ্ণৱধৰ্ম প্ৰচাৰৰ উদ্দেশ্যে মাধৱ কন্দলীয়ে ৰামায়ণ ৰচনা নকৰিলেও তেওঁৰ কাব্যৰচনাৰ প্ৰেৰণাৰ মূলতে বৈষ্ণৱভাবনা যে গ্ৰন্থখনৰ অন্তঃসাক্ষ্যই সেই কথা প্ৰমাণ কৰে^{১১}। নৱবৈষ্ণৱ

ধৰ্ম প্ৰচাৰৰ পূৰ্বে অসম প্ৰাপ্ত শৈৱ-শাক্ত ধৰ্ম প্ৰবল হৈ আছিল বুলি আমি মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণৰ পৰা জানিব পাৰোঁ। সেই সময়ৰ বিভিন্ন বৃত্তিগত জাতিসমূহ, ‘সৌৰাষ্ট্ৰ দেশৰ পৰা অহা বেদগবী দ্বিজ’, নাথ যোগীসকলৰ উল্লেখ— এনেকুৱা সামাজিক-ঐতিহাসিক তথ্যও এই ৰচনাত প্ৰকাশ পাইছে। ৰামৰ বাসভৱনৰ বৰ্ণনাৰ পৰা স্থানীয় স্থাপত্য কলাৰ এটা ধাৰণা কৰিব পাৰি। সাধাৰণ শ্ৰেণীৰ প্ৰজাৰ চিত্ৰায়ণ কন্দলীৰ ৰামায়ণৰ এটা গুৰুত্বপূৰ্ণ দিশ। লক্ষা জিনি ঘূৰি অহা ৰামক আদৰিবলৈ অযোধ্যাত সি সাজ-সজ্জা কৰা হৈছে তাৰ বৰ্ণনাত সাধাৰণ শ্ৰেণীৰ লোকৰ উলহ-মালহে সকলোতকৈ আগ ঠাই পাইছে—

ইভিতি সিভিতি প্ৰজা লৱৰা-লৱৰি।।

যেই যেন মতে আছে দিলেক লৱৰ।

ছৱালে কান্দন্তে মাৰে নিসঙ্কি চাপৰ।। ৬৬০০

নাৰীসৱে লৰি ভৈলা হৰষে ফৰষে।

কতো বিমুকুত কেশ কাখত কলসে।।

X X লাস বেষ কৰি নৰ-নাৰী সমুদাই।

ৰাম আসিবাৰ শুনি আথে বেথে যাই।। ৬৬০২

কথন শিল্পী মাধৱ কন্দলী :

কন্দলীৰ মনোৰম কথন-কুশলতাই মহাকাব্যখনৰ সু-বিস্তৃত কথাসমূহ আউল নলগাকৈ আঁত লগাই ৰাখিছে। “মাধৱে ভগন্ত মহামাণিয়ে শুনন্তি” বুলি মহামাণি ৰজাক শুনাবলৈ প্ৰণয়ন কৰা যদিও এই কাব্য ‘সৰ্বজন বোধে’ ৰচনা কৰি “শুন্যোক সভাসদ, মধুৰ কোমল পদ, পুণ্যকথা ৰামৰ চৰিত্ৰ” বুলি সকলোকে শুনাইছে। কন্দলীৰ মনোৰম কথকতাৰ উদাহৰণ স্বৰূপে—

মাধৱে বোলন্ত কথা ভৈল জপ্ৰজোল।

এক হাতে কোনে ধৰিবেক দুই শ’ল।।

ৰাৱণিৰ কথা যত এখন আছোক।

ৰামৰ কাহিনী কহো বানৰৰ শোক।। ৫০৯৭

এই বুলি কন্দলীয়ে শ্ৰোতাসকলক এটা দৃশ্যৰ পৰা দৃশ্যান্তৰলৈ লৈ গৈছে। “জনক জীউৰ কথা আছে এহিমানে” বুলি পুষ্পক বিমানত উঠি ইন্দুজিতৰ নাগপাশত মৃতপ্ৰায় হৈ থকা ৰাম-লক্ষ্মণক চাই সীতা ঘূৰি অহাৰ কথা সামৰি শ্ৰোতাবৃন্দক পুনৰ যুদ্ধক্ষেত্ৰৰ দৃশ্যলৈ লৈ গৈছে।

মাধৱ কন্দলীৰ পঞ্চকাণ্ড ৰামায়ণৰ আধাৰ বাল্মীকি ৰামায়ণ হ'লেও থলুৱা সমাজ, ধৰ্ম-কৰ্ম, ৰীতি-নীতি, ঘৰ-দুৱাৰ, গছ-গছনি, ফল-ফুলৰ চিত্ৰেৰে বনকোৱা এই সাহিত্য কৰ্মই আঞ্চলিক বৈশিষ্ট্যৰে স্বতন্ত্ৰ মহিমা লাভ কৰিছে।

মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণৰ আধাৰ :

মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণৰ আধাৰ বাল্মীকি ৰামায়ণৰ গৌড়ীয় পাঠ বুলিয়েই স্বীকৃত হৈ আহিছে যদিও এই সম্পৰ্কত যথেষ্ট আলোচনা কৰিব লগীয়া আছে। গৌড়ীয় পাঠৰ লগতেই কন্দলীৰ ৰামায়ণৰ অধিক সাম্য দেখা যায় যদিও গৌড়ীয় পাঠৰ লগত অমিল, অথচ দাক্ষিণাত্য আৰু পশ্চিমোত্তৰীয় পাঠৰ^১ দুয়োটা বা যেই সেই এটাৰ লগত মিলা কথাও ইয়াত কমখিনি নহয়। মাধৱ কন্দলীয়ে বাল্মীকি ৰামায়ণৰ যি পাঠ অনুসৰণ কৰিছিল সেই পাঠ যে গৌড়ীয় পাঠতকৈ কিছু ভিন্ন আছিল আৰু তাক কামৰূপীয় পাঠ বুলি চিহ্নিত কৰিব পাৰি, সেই সম্পৰ্কে তলত আলোচনা কৰা হ'ল।

মাধৱ কন্দলীয়ে তেওঁৰ ৰামায়ণত নিজাকৈ সংযোজনা কৰা প্ৰসঙ্গসমূহ বাদ দি গৌড়ীয় পাঠত নিমিলা প্ৰসঙ্গসমূহ এইদৰে ভাগ কৰিব পাৰি—

- | | |
|----------------------|---|
| ১। গৌড়ীয় পাঠত নাই | (ক) দাক্ষিণাত্য পাঠত আছে, |
| অথচ | (খ) পশ্চিমোত্তৰীয় পাঠত আছে, |
| কন্দলীৰ ৰামায়ণত আছে | (গ) দাক্ষিণাত্য আৰু পশ্চিমোত্তৰীয় দুয়োটা পাঠতে আছে। |
| ২। গৌড়ীয় পাঠত আছে | (ক) দাক্ষিণাত্য পাঠত নাই, |
| অথবা | |
| কন্দলীৰ ৰামায়ণত নাই | (খ) পশ্চিমোত্তৰীয় পাঠত আছে, |
| | (গ) দাক্ষিণাত্য আৰু পশ্চিমোত্তৰীয় দুয়োটা পাঠতে নাই। |

এনেকুৱা উদাহৰণ কেইটামান তলত দাঙি ধৰা হ'ল— গৌড়ীয় পাঠৰ মতে ৰামৰ প্ৰাসাদটো মেঘৰাশিৰ নিচিনা (অভ্ৰচয়োপম); দাক্ষিণাত্য পাঠৰ মতে 'কৈলাসসদৃশপ্ৰভ'; সেইমতে কন্দলীৰ ৰামায়ণতো "ৰামৰ প্ৰাসাদ শোভে কৈলাস সমান"। অন্তঃপুৰৰ যিসকল নাৰীয়ে কৈকেয়ীৰ ভয়ত কৌশল্যাক ৰামৰ বনবাস হোৱাৰ কথা ক'বগৈ পৰা নাছিল, তেওঁলোকৰ বিলাপটো গৌড়ীয় পাঠত নাই;

দাক্ষিঃ পাঠত থকাৰ দৰে কন্দলীৰ ৰামায়ণতো সেই বিলাপ আছে। মাধৱ কন্দলীত থকা লক্ষ্মণৰ শক্তিশেল প্ৰসঙ্গত সুৰেণে নিজে চাই লক্ষ্মণ জীৱিত আছে বুলি ৰামক সান্ত্বনা দি পিচত হনুমানক বিশল্যকৰণী আনিবলৈ পঠোৱাৰ কথা আৰু নিদ্ৰাভঙ্গৰ পিচত কুন্তকৰ্ণই ভূৰিভোজন কৰাৰ কথা দাক্ষিঃ পাঠৰ লগতহে মিলে।

ৰাৱণক হিতবচন কৈ অপমানিত হোৱা বিভীষণ দ্বিতীয় বাৰ মাক নৈকষীৰ ওচৰলৈ যাওঁতে দুয়োৰে মাজত হোৱা যি কথোপকথন কন্দলীৰ ৰামায়ণত আছে (৪৭৪৯—৫৩ পদ), সেয়া গৌড়ীয় পাঠত নাই পশ্চিমোঃ পাঠতহে আছে। ৰামৰ শৰত কুন্তকৰ্ণৰ মূৰ উফৰি গৈ ঘটোৱা দুৰ্ঘটনাসমূহৰ যি বৰ্ণনা কন্দলীয়ে দিছে (৫৫৫২ পদ), সেয়া পশ্চিমোঃ পাঠতহে আছে, গৌড়ীয়ত নাই।

এইখিনি কথা দাক্ষিঃ আৰু পশ্চিমোঃ পাঠত থকাৰ দৰে কন্দলীৰ ৰামায়ণতো আছে; কিন্তু গৌড়ীয় পাঠত নাই— বনগমনৰ আদেশ পোৱাৰ পিচত ৰামে গৈ কৌশল্যাক বিষ্ণুপূজা কৰি থাকোঁতে পোৱা; হনুমানে সুগ্ৰীৱক সীতা-অন্বেষণৰ কামত লাগিবলৈ কোৱাৰ সময়টো মাধৱ কন্দলীয়ে “কাৰ্তিক নিৱৰ্তি গৈল” বুলি কৈছে; দাক্ষিঃ আৰু পশ্চিমোঃ পাঠতো সেই সময়টো শৰৎ কাল; গৌড়ীয় পাঠত কালৰ উল্লেখ নাই। সাগৰৰ তীৰত কপিসকলে তেওঁলোকৰ সীতা-অন্বেষণত হোৱা দুৰ্গতিৰ কাৰণ বুলি দশৰথ, কৈকেয়ী, ৰাম, সীতা, সুগ্ৰীৱ আদিক দোষাৰোপ কৰি সম্পাতি অহাৰ আগৰ ৰাতিটোত কৰা কথোপকথন কন্দলীয়ে দাক্ষিঃ আৰু পশ্চিমোঃ পাঠৰ ভিত্তিত প্ৰস্তুত কৰিছে। এই কথোপকথন গৌড়ীয় পাঠত নাই।

কিছুমান কথা গৌড়ীয় আৰু পশ্চিমোস্তৰীয় এই উত্তৰ ভাৰতীয় দুয়োটা পাঠত আছে; কিন্তু দাক্ষিঃ পাঠত নথকাৰ দৰে কন্দলীৰ ৰামায়ণতো নাই। প্ৰহস্তৰ মৃত্যুৰ পিছত ৰাৱণ-মন্দোদৰীৰ সংবাদ, দুটা সৰ্গত (৬/৩৩,৩৪) গৌড়ীয় আৰু পশ্চিমোস্তৰীয় পাঠত বৰ্ণনা কৰিছে। দাক্ষিঃ পাঠত নথকাৰ দৰে এই সংবাদ কন্দলীৰ ৰামায়ণত নাই। সেইদৰে নাৰদৰ মুখত কুন্তকৰ্ণই ব্ৰহ্মা আদি দেৱগণে মন্ত্ৰণা কৰি ৰাৱণবধৰ উদ্দোষ্য বিষ্ণুক মনুষ্যৰূপে অৱতীৰ্ণ হ'বলৈ পঠোৱা বুলি শুনা কাহিনীটোৰ উল্লেখ দাক্ষিঃ পাঠতো নাই; কন্দলীৰ ৰামায়ণতো নাই। গন্ধমাদন লৈ আহোঁতে হনুমানে ভৰতক সাক্ষাৎ কৰা, ৰাৱণে মধুসূদন ৰামৰ হাতত মৃত্যুবৰণ কৰি বিষ্ণুৰ পৰম পদ লাভ কৰিব বুলি কোৱাৰ (৬/৪১/২৩-২৪) কথাও সেইদৰে দাক্ষিঃ পাঠ আৰু মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণত নাই।

কেৱল গৌড়ীয় পাঠতহে থকা অথচ অন্য দুয়োটা পাঠতে নথকাৰ দৰে কন্দলীৰ ৰামায়ণতো নথকা কেইটামান উল্লেখযোগ্য কথা হ'ল— এজন ব্ৰাহ্মণৰ শাপৰ ফলত কৈকেয়ী কুঁজীৰ কুমন্ত্ৰণাৰ বশ হোৱা (গৌ: ২/৮ সৰ্গ), বনগমনৰ আগ মুহূৰ্ত্তত সুমিত্ৰাই ৰামক উদ্দেশ্য কৰি কোৱা কথাখিনি তথা সুমিত্ৰাই এই প্ৰসঙ্গত লক্ষ্মণক কোৱা কথাত লক্ষ্মণ-পত্নীৰ উল্লেখ থকা (গৌ: ২/৯ সৰ্গ); বনলৈ যাওঁতে ৰামে বাটত শ্ৰীমতী নদী পোৱা (২/৪৬/৩) আৰু সুদৰ্শনা সৰোবৰৰ লগতে দূৰত দেখিবলৈ পোৱা মন্দাকিনী নদী আৰু চিত্ৰকূট পৰ্বতৰ বৰ্ণনা (২/৫২ সং); ভৰতে গুহক গঙ্গা পাৰ হৈ বিদায় দিয়া; ৰামে দুন্দুভি দৈত্যৰ কঙ্কাল নিষ্ক্ষেপ কৰাৰ সময়ত সুগ্ৰীৱে অৱতাৰণা কৰা 'বালীৰ দ্বাৰা ৰাৱণ নিগ্ৰহৰ বৃত্তান্ত'; তাৰাই বালীক ধন-ৰত্ন দি ৰামৰ লগত মিত্ৰতা কৰিবলৈ কোৱা আৰু তাৰাই ৰামক অভিশাপ দিয়াৰ আগতে বালীবধৰ কাৰণে তেওঁক তিৰস্কাৰ কৰা প্ৰভৃতি কথা গৌড়ীয় পাঠতহে আছে; অন্য দুটা পাঠত নথকাৰ দৰে মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণতো নাই।

এতিয়া দেখা গ'ল যে মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণৰ আধাৰ গৌড়ীয় পাঠতকৈ ভিন্ন অন্য এক পাঠহে। সেই পাঠ কামৰূপত প্ৰচলিত আছিল বুলি ভবাৰ এক সবল ভিত্তি আছে। বাৰ্মীক ৰামায়ণৰ গৌড়ীয় পাঠৰ চৈতন্যদেৱৰ সমসাময়িক^{১০} টীকাকাৰ লোকনাথে সুন্দৰকাণ্ডত থকা এটা শ্লোকৰ^{১১} ব্যাখ্যাত লিখিছে— “পদ্যমিদং কামৰূপীয় পুস্তকে বৰ্ততে ইতি ব্যাখ্যাতম্।” বাৰ্মীক ৰামায়ণৰ উত্তৰ ভাৰতীয় আৰু দাক্ষিণাত্য এই দুটা পাঠত ভাগ হোৱাৰ পিচত, উত্তৰ ভাৰতীয় পাঠটো পশ্চিমোত্তৰীয় আৰু পূবভাৰতীয় পাঠত ভাগ হৈ, ইয়াৰ দ্বিতীয়টো পাঠ যথাক্ৰমে গৌড়ীয় আৰু কামৰূপীয় পাঠত ভাগ হয়।

সামৰণিত কওঁ যে মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণখনৰ সাহিত্যিক, ঐতিহাসিক, ভাষিক গুৰুত্বৰ উপৰিও বাৰ্মীক ৰামায়ণৰ পাঠ নিৰ্ণয়ৰ ক্ষেত্ৰতো ইয়াৰ বিশিষ্ট ভূমিকা আছে।

দেৱজিৎ কাব্য :

মাধৱ কন্দলীৰ দ্বাৰা বিৰচিত বুলি দেৱজিৎ নামৰ এখন কাব্যৰ প্ৰচলন আছে।^{১২} মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণখনত থকাৰ দৰে ইয়াতো মাধৱ তথা মাধৱ কন্দলী— এই দুয়োটা নামেৰে ভণিতা পোৱা যায়—

(১) কৃষ্ণৰ ইন্দ্ৰৰ বৰ মিলিলা বিবাদ।

মাধৱে ৰচিলা পদ শুনা সভাসদ।। ৮

(২) কৃষ্ণৰ যশস্যা নাম পাপবিমোচন।

মাধৱ কন্দলী ভণে শুনা সুশোভন।। ১৮৬

(৩) মাধৱ কন্দলী ৰচিলন্ত ইটো পদ।

আকে শুনি এৰা সবে দুৰ্য্যোৰ আপদ।। ৯৩৮

তথাপি এই কাব্য ৰামায়ণকাৰ মাধৱ কন্দলীৰ ৰচনা বুলি মানিবলৈ টান। ৰামায়ণৰ তুনাত এই ৰচনাৰ কাব্যসুলভ গুণ নিম্ন মানৰ। মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণত থকাৰ দৰে ইয়াত কবিৰ আত্মপৰিচয় নথকাৰ কাৰণ এই বুলি ক'ব নোৱাৰি যে ই কন্দলীৰ ৰামায়ণ লিখি খ্যাতি লাভ কৰাৰ পিচত প্ৰণয়ন কৰা কাব্য।

মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণত শব্দচয়ন আৰু গ্ৰন্থনৰ যি নিপুণতা, পদবন্ধৰ যি কোমলতা, সাঙ্গীতিক লয়, ছন্দ-অলঙ্কাৰৰ যি মঞ্জুল প্ৰয়োগ আৰু ৰসৰ যি গভীৰ ব্যঞ্জনা আছে, দেৱজিৎ কাব্যত তেনে নিদৰ্শন পোৱা নাযায়। কন্দলীৰ ৰামায়ণৰ ভাষাৰ যি সাৱলীল গতি, তাৰ বিপৰীতে ইয়াত পদে পদে উজুটি খোৱা যেনহে লাগে—

সাৰ কৰি ধৰা সবে আমাৰ সন্মত।

মহাপুণ্য পদ ৰচিলোহো দেৱজিত।। ১৭৮

... ...

দেৱতা হৰক কেন উৎপাত তাক দেখা।। ৯৩৪

যদি ধৰি লোৱা হয় মাধৱ কন্দলীৰ প্ৰথম ৰচনা কাৰণে এই কাব্যৰ মান নিম্ন, তেতিয়াও 'মধুৰ কোমল পদে'ৰে 'নানা ৰসে ৰসৱন্ত' মহাকাব্য প্ৰণয়ন কৰা, বৈষ্ণৱ যুগৰ আদৰ্শনীয়, অপ্ৰমাদী পূৰ্বকবিজনাৰ ৰামায়ণৰ ৰচনা-সৌষ্ঠৱলৈ এই নিম্নস্তৰৰ কাব্য কলাৰ পৰা উত্তৰণ ঘটাটো অস্বাভাৱিক।

ৰামায়ণত বাৰম্বাৰ মহৰ্ষি বাস্মীকিৰ মূল মহাকাব্যখনৰ কথা উল্লেখ কৰি, পণ্ডিতসকলৰ কিবা বিষয়ত অসন্তোষ উপজিলে 'পুস্তক বিচাৰি' চাবলৈ কোৱা মাধৱ কন্দলীয়ে মূল আধাৰ গ্ৰন্থৰ আগুৰি নথকা উল্লেখৰে সৈতে নিম্ন কাব্যিক মানৰ পুথি এখন লিখাটো বিশ্বাসযোগ্য কথা নহয়।

ধৰ্ম প্ৰচাৰৰ উদ্দেশ্যে নহয়, বৰঞ্চ কাব্য প্ৰচাৰৰ উদ্দেশ্যেহে যি মাধৱ কন্দলীয়ে ‘নানা ৰসে ৰসৱন্ত’ ৰামৰ পৰম পৱিত্ৰ চৰিত্ৰ ৰচনা কৰিছিল, সেইজন কবিৰ কাৰণে উৎকট ভক্তিমূলক উপদেশেৰে ভৰা লঘু স্বভাবৰ কাব্য এখন ৰচনা কৰাৰ প্ৰবৃত্তি জন্মাটো স্বাভাৱিক নহয়।

কাব্য আদি ৰচনাৰ ক্ষেত্ৰত গুৰু বন্দনাৰ পৰম্পৰা শঙ্কৰদেৱৰ পিচতহে আৰম্ভ হৈছে। ‘দেৱজিত’ৰ প্ৰণেতাই লিখিছে—

গুৰুৰ চৰণ দুই হৃদয়ত ধৰি।

গুৰুৰ আজ্ঞাক মনে শিৰোগত কৰি।। ৯

কৃষ্ণৰ চৰণে মই পশিলো শৰণ।

দেৱজিত পদক ভাঙ্গিলো সুশোভন।।

পদ ভাঙিবলৈ আদেশ দিব পৰাকৈ মাধৱ কন্দলীৰ কোন গুৰু আছিল, যাৰ কথা তেওঁ মহাকাব্য ৰামায়ণত ঘুণাঙ্কৰেও উল্লেখ নকৰিলে? গতিকে দেৱজিতৰ ৰচয়িতা প্ৰাক্ শঙ্কৰী কবি মাধৱ কন্দলী নহয়।

‘লম্বা পৰিহৰি সাৰোদ্ধতে’ ‘সংক্ষেপ কৰিয়া পদ’ বিৰচন কৰি, মহৰ্ষি বাস্মীকি ৰচিত ‘সাক্ষাৎ বেদ’ সদৃশ ৰামায়ণখন যিজন মাধৱ কন্দলীয়ে মহামাণিক্য ৰজাক শুনাইছিল, সেইজন কবিয়ে দেৱজিতৰ মূল আধাৰ সম্পৰ্কত কোৱা সঙ্গতিবিহীন কথাখিনি কেতিয়াও ক’ব নোৱাৰে। দেৱজিতৰ আখ্যানভাগৰ ৰাম সৰস্বতীৰ দৰে “বৈশম্পায়ন বদতি শুনিও জন্মিজয়” (১১ পদ) বুলি পাতনি মেলিছে। আন হাতেদি “ঈশ্বৰৰ বাক্য যে বেদত হেন সাৰ/আক শুনি সভাসদ ছয়োক উদ্ধাৰ” (১০ পদ) বুলিও কৈছে। এই আখ্যান কোন ঈশ্বৰে ক’ত কৈছিল, তাৰ সম্বন্ধে পুথিখনত নাই। আন এঠাইতো “বৈশম্পায়ন বদতি শুনিও নৰেশ্বৰ” (৬৯৬ পদ) বুলি কোৱা হৈছে। বৈশম্পায়নৰ বাক্য আৰু ঈশ্বৰৰ বাক্য বুলি কৈ পুনৰ দেৱজিতৰ কথা অষ্টাদশ পুৰাণৰ বুলি বিসঙ্গতি আৰু বৃদ্ধি কৰিছে—

অষ্টাদশ পুৰাণৰ কথা অনুসাৰ।

কৰিলোহো মই দেৱজিতক প্ৰচাৰ।। ৫৭৬

... ..

অষ্টাদশ পুৰাণৰ ভাগৱত পদ।

হেলা এৰি শুনা সবে যত সভাসদ।। ৯৩৮

অষ্টাদশ পুৰাণৰ কথা অনুসাৰ।
দেৱজিত পদ মই কৰিলো প্ৰচাৰ।।

ৰামায়ণকাৰ মাধৱ কন্দলীৰ ওপৰত এনেকুৱা বিসঙ্গতি জাপি দিব নোৱাৰি। কৃষ্ণই ইন্দ্ৰৰ আৰু হৰৰ গৰ্ব চূৰ্ণ কৰাৰ উদাহৰণেৰে ৰচিত দেৱজিত কাব্যত কোৱা হৈছে—

ক্ষণমাত্ৰ গৰ্ব নসহন্ত দেৱ হৰি।
হেন জানি গৰ্ব নকৰিবা নৰনাৰী।।
যিটো নৰে গৰ্ব কৰি ফুৰয় বিস্তৰ।
অগ্নিতে কৰয় চূৰ দেৱ দামোদৰ।। ৯৩৭

অন্য এঠাইত কৈছে “আকে জানি গৰ্ব নকৰিবা একোজন/তিলমাত্ৰো গৰ্ব নসহন্ত নাৰায়ণ।। এতেকে নামক লোৱা সবে সাধুজন/কৃষ্ণৰ চৰণে লৈয়ো সত্বেৰে শৰণ” (১৭২ পদ)। নাৰায়ণে গৰ্ব নসহে কাৰণে নাম ল'ব লাগে বোলা কথাও সঙ্গতিহীন। দেৱজিতত গৰ্ব কৰোঁতাজনক দামোদৰে গৰ্ব চূৰ কৰাৰ উদাহৰণহে আছে; নাম লওঁতাজনৰ লাভ হোৱাৰ উদাহৰণ তাত নাই।

এঠাইত কৃষ্ণই কৈছে, “যিটোজনে মোৰ নলয় নাম গুণ/তাহাকে তোমাৰ হাতে মাৰাওঁ অৰ্জুন” (৭১৬ পদ)। কৃষ্ণৰ নাম-গুণ নোলোৱাৰ কাৰণে লোকক অৰ্জুনৰ হতুৱাই মৰোৱাৰ উদাহৰণ অন্য ঠাইতো নাই, দেৱজিততো নাই। এই ধৰণৰ সঙ্গতিহীন কথা মাধৱ কন্দলীৰ নিচিনা পণ্ডিত কবি এজনৰ ওপৰত আৰোপ কৰিব নোৱাৰি।

প্ৰাক্-শঙ্কৰী বৈষ্ণৱ উপাদানপ্ৰধান কাব্যসমূহত শিৱ বা শক্তিক বিমুগ্ধতকৈ হীনবল কৰি দেখুওৱাৰ প্ৰবৃত্তি পৰিলক্ষিত নহয়। মাধৱ কন্দলীয়েও এনে প্ৰবৃত্তি দেখুওৱা নাই। তেনে স্থলত তলত দিয়া ধৰণৰ সিদ্ধান্ত অমাধৱকন্দলীয়—

অৰ্জুনৰ সহায় আপুনি বনমালী।
কি কৰিতে পাৰে কোটি কোটি ৰুদ্ৰ মিলি।।

হেন জানি গৰ্ব নকৰিবা একোজন।

ঝাণ্ট কৰি লৈয়ো সৰে কৃষ্ণত শৰণ।। ৯৩৬

এই সিদ্ধান্ত ৰাম সৰস্বতীৰ “নোহে ইটো অগ্নজন পাণ্ডুসূত ভীম/কৃষ্ণ

প্ৰসাদে আৰ বীৰত্ব অসীম” (ভীমচৰিত)— এনেকুৱা সিদ্ধান্তৰ লগতহে মিলে।
ৰাম সৰস্বতীৰ ‘ভীমচৰিত’ৰ পদৰ প্ৰতিধ্বনিও ‘দেৱজিত’ত শুনা যায়—
ভীমচৰিতত—

মেলানি দিয়োক দাদা কৈলাসক যাওঁ।
দেৱজিতত কৃষ্ণ-অদিতিৰ সংবাদ—
দিয়োক মেলানি যাওঁ ইন্দ্ৰক যে ধাই।।
দিলোহো মেলানি পুত্ৰ শীঘ্ৰ কৰি যাও।
সন্মুখ সমৰে আজি ইন্দ্ৰক ভঙ্গাও।।

দেৱজিতত কৃষ্ণই নিজৰ আৰু ব্ৰহ্মা-বিষ্ণু-শিৱৰ স্বৰূপ সম্পৰ্কত কোৱা
কথাখিনিত শঙ্কৰদেৱৰ অনাদি পাতনৰ প্ৰতিধ্বনি সুস্পষ্ট—

মোহোক জানিবা সখি আদি নিৰঞ্জন।
কৌটি কৌটি ব্ৰহ্মাণ্ডৰ মই নাৰায়ণ।। ৭০৯
আৰ এক কথা কহোঁ শুনা ধনঞ্জয়।
কি কাৰণে ব্ৰহ্মা বিষ্ণু অজি আছোঁ মই।। ৭১০
ৰজ সত্ত্ব তম গুণে অজি তিনিজন।
আকাশতে থাকি মই বুলিলোঁ বচন।।
ৰজ গুণে ব্ৰহ্ম তুমি অজা চৰাচৰ।
সত্ত্ব গুণে বিষ্ণু তুমি পালা নিৰন্তৰ।। ৭১১
তম গুণে হৰ তুমি জগত সংহাৰ।
এহি বুলি তিনিকো যে দিছোঁ তিনি ভাৰ।

এনেবিলাক কাৰণত মাধৱ কন্দলীৰ নামত চলাই দিয়া ‘দেৱজিত’ কাব্যখন
কোনোবা শঙ্কৰোত্তৰ অখ্যাত কবিৰ ৰচনা বুলি ধাৰণা হয়। ৰাম সৰস্বতীৰ
বধকাব্যসমূহৰ আৰ্হিৰে স্বকল্পিত কাহিনী এটা লৈ তাৰ লগত নাম মাহাত্ম্যৰ
উপদেশ জুৰি দিছে। হয়তো কৃষ্ণৰ মাহাত্ম্য মানি ল’ব নোখোজা অবৈষ্ণৱ লোকৰ
গৰ্ব চূৰ কৰিবলৈ এই কাব্য ৰচনা কৰা হৈছিল। পুথিখনৰ গুৰুত্ব বঢ়াবলৈ গুৰু
দুজনৰ দ্বাৰা মান্যতাপ্ৰাপ্ত প্ৰতিষ্ঠিত কবি মাধৱ কন্দলীৰ নাম জড়িত কৰা হৈছে।
‘হাওৰে’, ‘জাঙ্ঘল্য সমান’ আদি ভাষাৰ গত এইজন কবিয়ে মাধৱ কন্দলীৰ পৰা
অনুকৰণ কৰিছে।

দেৱজিৎ কাব্যৰ আখ্যানটো এই— ইন্দ্ৰই স্বৰ্গত যজ্ঞ আৰম্ভ কৰিলে। তালৈ ব্ৰহ্মা, বিষ্ণু আৰু মহেশ্বৰো গ'ল। নাৰদে ইন্দ্ৰক ক'লে, “যদি যজ্ঞ কৰিবাক তোমাৰ আছে মন/কৃষ্ণক পূজিয়ো আগে সহস্ৰ-লোচন।। কৃষ্ণৰ মায়ায়ে নহৈবেক যজ্ঞচয়/আকে জানি কৃষ্ণক পূজিয়ো হৰিহয়”। কৃষ্ণৰ মহিমাৰ কথা ক'বলৈ গৈ নাৰদে ব্ৰহ্মামোহন, হৰিহৰৰ যুদ্ধ আৰু নাৰদৰ কৃষ্ণদৰ্শনৰ প্ৰসঙ্গ অৱতাৰণা কৰিছে (২৩—২৭ পদ)। নাৰদৰ কথা শুনি ইন্দ্ৰই ক'লে, “কৃষ্ণক নকৰোঁ পূজা মই একো কালে।। মোৰ পূজা কৃষ্ণে ভঙ্গ কৰিছে পূৰ্বত/X X X অধম আচাৰ কৃষ্ণ পৰম নিলাজ।। X X আপোনাৰ পুত্ৰবধু কৰি আছে ঘৰ/হেনয় আচাৰ কৃষ্ণ পাপমতি বৰ” (২৯—৩১ পদ)।

কৃষ্ণই নৰকাসুৰৰ ষোল হাজাৰ ৰমণী, নিজৰ পুত্ৰবধুৰ লগত ঘৰ কৰাৰ প্ৰসঙ্গটোৱে আমাক শঙ্কৰদেৱৰ পাৰিজাত হৰণ নাটত শচী-সত্যভামাই পৰস্পৰে পৰস্পৰৰ স্বামীৰ স্ত্ৰীঘটিত অনাচাৰৰ কথা কৈ গালাগালি কৰা কথালৈ মনত পেলায়। দেৱজিতৰ কবি সেই প্ৰসঙ্গটোৰ দ্বাৰা অনুপ্ৰাণিত হ'ব পাৰে।

ইন্দ্ৰই কৃষ্ণক তেনেদৰে নিন্দা কৰা শুনি “ব্ৰহ্মা বিষ্ণু হৰে কৰ্ণে দিলা হাত”। তেওঁলোকে ইন্দ্ৰ বা কৃষ্ণই অৰ্জুনৰ সৈতে আহি তেওঁৰ গৰ্ব চূৰ কৰিব বুলি সকীয়াই থৈ তাৰ পৰা স্বস্থানলৈ গুচি গ'ল। যজ্ঞ নিসিঁজাৰ কাৰণে বিমৰ্ষ হৈ ইন্দ্ৰই ঘনে ঘনে নিশ্বাস কাঢ়িবলৈ ধৰিলে। “কৃষ্ণৰ নিন্দাৰ ফল পাইবি বহুতৰ” বুলি ইন্দ্ৰক খঙেৰে কৈ নাৰদ পৃথিৱীলৈ আহিল। নাৰদৰ মুখে ইন্দ্ৰৰ সকলো কথা জানি কৃষ্ণই “সাগৰৰ ভাৰ্যা কাঢ়ি নিলে পুৰন্দৰ/সাগৰক দিবোঁ অঙ্গীকাৰ ৰাখি মোৰ” বুলি অৰ্জুনৰ সৈতে স্বৰ্গলৈ যাত্ৰা কৰিলে। এই অৰ্জুন কৃষ্ণই কোৱামতে “তুমি মই সখি একে ব্ৰহ্মা অৱতাৰ” অৰ্থাৎ এওঁলোক দুজন নৰ-নাৰায়ণৰ অৱতাৰ। অৰ্জুনে কৃষ্ণৰ শাৰঙ্গ ধনু আৰু সুদৰ্শন চক্ৰেৰে যুদ্ধ কৰিছে।

অৰ্জুনে সমস্ত দেৱতাক যুদ্ধত পৰাস্ত কৰাত দেৱগণে শিৱৰ শৰণাপন্ন হ'লগৈ। শিৱই অৰ্জুনৰ লগত যুদ্ধ কৰিবলৈ চোঁচা লোৱা দেখি দেৱতাসকলে আৰু চৰাচৰে ত্ৰাস পালে; সিদ্ধ মুনিগণে ধৰ্ম ধৰ্ম সুমৰিলে। পূৰ্বে কিৰাতৰূপী হৰৰ লগত কৰা যুদ্ধৰ কথা সুঁৱৰি অৰ্জুনে যেতিয়া যুদ্ধ নকৰিব খুজিলে, গীতাৰ আৰ্হিৰে সেই সময়ত কৃষ্ণই অৰ্জুনক যুদ্ধত প্ৰবৃত্ত হ'বলৈ উপদেশ দিবলৈ ধৰিলে। তিনি গুণত তিনিজন দেৱতা সৃষ্টি কৰি ভাগে ভাগে নাৰায়ণে অৰ্পণ কৰা দায়িত্ব যিহেতুকে মহেশে পালন নকৰি যুদ্ধ কৰিবলৈ আহিছে, অৰ্জুনে

তেওঁক যুদ্ধত পৰাস্ত কৰি যশস্যা আজিৰ লাগে। নহ'লে অৰ্জুনৰ লগতে কৃষ্ণকো দেৱগণে হাঁহিব।

অৰ্জুন আৰু হৰৰ মাজত হোৱা যুদ্ধৰ দীঘলীয়া বৰ্ণনা দাঙি ধৰিছে। কৃষ্ণই অৰ্জুনক আদেশ দিলে, “শৰৰ যে ঘৰ বান্ধি হৰক বন্দী কৰ”। অৰ্জুনে সেইমতে ইন্দ্ৰাদি দেৱগণৰ সৈতে হৰক বাণনিৰ্মিত ঘৰত বন্দী কৰি থ'লে। কৃষ্ণাৰ্জুনে দেৱমাতা অদিতিক সাক্ষাৎ কৰি সকলো কথা জনাই আহিল।

ইফালে বাণনিৰ্মিত ঘৰৰ পৰা দেৱতাসকলৰ সৈতে হৰ মুক্ত হৈ পুনৰ যুদ্ধত প্ৰবৃত্ত হ'ল। সদৌ শেষত অৰ্জুনে সুদৰ্শন চক্ৰেৰে যুদ্ধ কৰাত হৰৰ পাশুপাত অস্ত্ৰ ভয়তে তুণত সোমাই থাকিলগৈ। অৰ্জুনে শাৰঙ্গ ধনুৰে শৰ মাৰি হৰক পৃষ্ঠভঙ্গ দিয়ায়। হৰ ভয়ত পলাই গৈ ব্ৰহ্মাৰ শৰণাপন্ন হয়। এইদৰে অৰ্জুনৰ দ্বাৰা মহেশ পৰ্যন্ত দেৱতাসকল পৰাস্ত হোৱাৰ কাহিনী দেৱজিৎ কাব্যত বৰ্ণোৱা হৈছে। কাব্যখনত কাব্যিক সুসমাৰ সৰ্বতোভাৱে অভাৱ।

— কেশদা মহন্ত

সহায়ক গ্ৰন্থ :

অমৰেশ্ব ঠাকুৰ আৰু হেমন্ত কুমাৰ তৰ্কতীৰ্থ (সম্পা), বাম্পীকীয় ৰামায়ণম্ (গৌড়ীয় পাঠ)

ডিম্বেশ্বৰ নেওগ, নতুন পোহৰত অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী, ১৯৯৩

ড° মহেশ্বৰ নেওগ, অসমীয়া সাহিত্যৰ ৰূপৰেখা, ১৯৬৪

ড° সত্যেন্দ্ৰনাথ শৰ্মা, অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত, ১৯৮১

হৰিনাৰায়ণ দত্তবৰুৱা (সম্পা), শ্ৰীশঙ্কৰব্যাক্যামৃত, ১৯৬৪ সাতকাণ্ড ৰামায়ণ (মাধৱদেৱ, মাধৱকন্দলী আৰু শঙ্কৰদেৱৰ ৰচিত) ১৯৫৩

হেমচন্দ্ৰ গোস্বামী, অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি, প্ৰথম খণ্ড, ১৯২৭

কেশদা মহন্ত, অসমীয়া ৰামায়ণী সাহিত্য, কথাবস্তৱ আঁতিপুৰি, ১ম খণ্ড, ১৯৮৪, ২য় খণ্ড, ১৯৯০

- ১। পূৰ্বকবি অশ্বমাদী, মাধৱ কন্দলী আদি, পদে বিৰচিত বামকথা। ইত্যাদি (উত্তৰকাণ্ড, ৭০১৭ পদ)
- ২। অমৃত মন্ত্ৰন, ৩১১ পদ
- ৩। ডিম্বেশ্বৰ নেওগ, নতুন পোহৰত অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী, পৃ: ৮২ পৃ:
- ৪। মহেশ্বৰ নেওগ, অসমীয়া সাহিত্যৰ ৰূপৰেখা, পৃ: ৫৮
- ৫। সাতকাণ্ড ৰামায়ণ, ১৪৯২-১৫১৫ পদ
- ৬। 'বাস্মিকীয়া ৰামায়ণৰ পাঠ' শীৰ্ষক আলোচনা দ্ৰষ্টব্য, অসমীয়া ৰামায়ণী সাহিত্যঃ কথাবাস্তৱ আঁতিগুৰি, ১ম খণ্ড, পৃ: ৪-৫

- ৭। মহাঋষি বাস্মিকীয়ে ৰামায়ণ কৰিলন্ত সাক্ষাতে জানিবা যেন বেদ।
 শ্ৰৱণে অমৃতময় সকল পাপৰ ক্ষয় সংসাৰৰ বন্ধ হোৱে ছেদ।।
 কলিমল কলুষক বিনাশন যমপুৰী জিনিবাৰ শুনিবাৰ ইটো খণ্ড।
 প্ৰণমণ্ড সৰস্বতী শ্ৰীৰামদেৱেশে গতি সমাপতিভৈলা লঙ্কাকাণ্ড।।
 কবিৰাজ কন্দলী যে আমাকেসে বুলিৱয় কৰিলোহো সৰ্বজন বোধে।
 ৰামায়ণ সুপয়াৰ শ্ৰীমহামানিক্য যে বৰাহ ৰাজাৰ অনুৰোধে।।
 সাত কাণ্ড ৰামায়ণ পদবন্ধে নিবন্ধিলো লজ্জা পৰিহৰি সাৰোদ্ধৃত।
 মহামানিক্যৰ বোলে কাব্যৰস কিছু দিলো দুগ্ধক মথিলে যেন ঘৃত।।
 পণ্ডিত লোকৰ য়েবে অসন্তোষ উপজয় হাত যোৰে বোলো শুদ্ধবাক।
 পুস্তক বিচাৰি য়েবে তৈত্ত কথা নাপাইবাহা তেবে সৰে নিন্দিবা আমাক।।
 বলে সাগৰক তৰি দাশৰথি ৰামহৰি লঙ্কা নগৰীত পয়োসাৰ।
 যোৰ সমৰক কৰি ৰাঘৱক সংহৰিয়া দেৱতাৰ চিহ্নিলা নিস্তাৰ।।
 শুনিয়োক সভাসদ ৰামায়ণ কথা ইটো পাতকৰ সাক্ষাতে অগনি।
 মহাদুঃখ গৃহবাস জানিয়া এৰিয়ো আশ চিত্ত ৰঘুবংশ শিৰোমণি।।
 অগনিত পৰীক্ষিয়া সীতাক অযোধ্যা নিয়া, সৰুটুমে ভৈলা এক ঠাই।
 মাধৱ কন্দলী গাইলা শ্ৰীৰামে অযোধ্যা পাইলা, জয় জয় আনন্দ বধাই।।

- ৮। শুনিলাহা সামাজিক ৰামৰ চৰিত্ৰ। নানা ৰসে ৰসৱন্ত পৰম পৱিত্ৰ।। ৩৯৬৫
 আক শূনি ছইবে সবে মনত সন্তোষ। কিন্তু বঢ়া টুটা নধৰিবা গুণ দোষ।।
 বান্দীকি ৰচিলা শাস্ত্ৰ গদ্য পদ্য ছন্দে। তাহাক বিচাৰ আমি কৰিয়া প্ৰবন্ধে।। ৩৯৬৬
 আপোনাৰ বুদ্ধি অৰ্থ যিমত বুজিলো। সংক্ষেপ কৰিয়া তাক পদ বিৰচিলো।।
 সমস্ত ৰসক কোনে জানিবাক পাৰো। পক্ষীসব উৰই যেন পথা অনুসাৰে।। ৩৯৬৭
 কবিসব নিবন্ধ্য লোক ব্যৱহাৰে। কতো নিজ কতো লভা কথা অনুসাৰে।।
 দেৱবাণী নুহি ইটো লৌকিকহে কথা। এতেকে ইহাৰ দোষ নলৈবা সৰ্বথা।। ৩৯৬৮
- ৯। বান্দীকি যে মহা ঋষি ৰামায়ণ প্ৰকাশিল, সংসাৰত অজিলা অমৃত।
 আক শূনি নৰলোক কলিত সদগতি হোক আক শূনি হোৱে কৃতকৃত।। ৪৮২১
 মাধৱ কন্দলী বিপ্ৰে তাহান চৰণ স্মৰি কৰিলন্ত শ্লোকক উদ্ধাৰ।
 ** শুনিকোৱা সভাসদ মধুৰ কোমল পদ পূণ্য কথা ৰামৰ চৰিত্ৰ।
 যমপথ নিবাৰণ কলিমল সংহৰণ মহাৰস শ্ৰৱণে অমৃত।। *৪৮২৩
- ১০। পূৰ্ব উদ্ধৃত ৬৬৮৪-৮৭ পদ।
- ১১। এই প্ৰসঙ্গত কন্দলীৰ নিজা সংযোজনাসমূহৰ সম্পৰ্কত আলোচনা দ্ৰষ্টব্য — *অসমীয়া ৰামায়ণী সাহিত্য : কথাবস্তৱ আঁতিগুৰি*, ১ম খণ্ড, পৃঃ ৩৪৪-৪৯
- ১২। *সাতকাণ্ড ৰামায়ণ*, ১৮২৭ - ৩৩ পদ।
- ১৩। ‘প্ৰভাং নক্ষত্ৰৰাজস্য কালমেঘৈৰিৱাৱতম্’, ‘সংসক্তাং ধূমজালেন শিখামিৰ বিভাৱসৌ’
 : ইত্যাদি গৌ. ৫/১৮ সৰ্গ
- ১৪। দ্ৰষ্টব্য — ‘পূৰ্বকবি মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণত বৈষ্ণৱ উপাদান’ শীৰ্ষক আলোচনা,
অসমীয়া ৰামায়ণী সাহিত্য : কথাবস্তৱ আঁতিগুৰি, ১ম খণ্ড, পৃঃ ৬২-৭৪
- ১৫। বান্দীকীয় ৰামায়ণৰ পাঠবিভাজন সম্পৰ্কে দ্ৰষ্টব্য *অসমীয়া ৰামায়ণী সাহিত্য : কথাবস্তৱ আঁতিগুৰি*, ১ম খণ্ড, পৃঃ ৪-৫

১৬। দ্ৰষ্টব্য অসমীয়া ৰামায়ণ সাহিত্যঃ কথাবস্তুৰ আঁতিগুৰি, ২য় খণ্ড, পৃঃ ৩৭২-৭৩

১৭। সুৰ্ণস্য সুৰ্ণস্য সুৰ্ণস্য চ ভাৱিনি। ৰামেণ প্ৰহতং দেৱি সুৰ্ণস্যাস্থৰীয়কম্।।

(গৌঃ ৫।৩২।৪৫)

১৮। ১৯১০ খ্ৰিষ্টাব্দত হৰিশচন্দ্ৰ দেৱ গোস্বামী আৰু ধৰ্মদত্ত লহকৰৰ দ্বাৰা সম্পাদিত হৈ
প্ৰকাশ পাইছিল। হেমচন্দ্ৰ গোস্বামীৰ দ্বাৰা সম্পাদিত অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি 'ত
[vol 1] এই কাব্যৰ পৰা নিবাচিত অংশ প্ৰকাশিত হৈছে।

লেখক-লেখিকাসকলৰ চমু পৰিচয়

আই. এচ. মুমতাজা

গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়ৰ বুৰঞ্জী বিভাগৰ অধ্যাপিকা। তেওঁ গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়ৰ পৰা গৱেষণামূলক উপাধি লাভ কৰে। বুৰঞ্জী পাঠদানৰ উপৰিও তেওঁ কামৰূপ অনুসন্ধান সমিতিৰ সৈতে জড়িত। ১৯৯৩ ত পালিত হোৱা কামৰূপ অনুসন্ধান সমিতিৰ প্লেটিনাম জয়ন্তী উপলক্ষে প্ৰকাশিত স্মৃতিগ্ৰন্থৰ সহকাৰী সম্পাদিকাদ্বয়ৰ এগৰকী আছিল। এই গ্ৰন্থৰ অসমৰ ৰাজনৈতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস— ১২২৮ৰ পৰা ১৪৭০ লৈ প্ৰবন্ধৰ লেখিকা।

ডঃ উপেন্দ্ৰ নাথ গোস্বামী

১৯২৩ৰ ১৩ নৱেম্বৰত নলবাৰীত জন্ম। পিতৃ যামিনী কান্ত গোস্বামী। ২০০০ ৰ ১৩ নৱেম্বৰত মৃত্যু।

নলবাৰীৰ গৰ্ভন উচ্চ বিদ্যালয়ৰ পৰা প্ৰৱেশিকা ১৯৪২, ১ম বিভাগ। আই-এ, ১৯৪৫, ১ম বিভাগ। বাৰ্ধাত হিন্দী অধ্যয়ন, নিপুণ পৰীক্ষাত উত্তীৰ্ণ। কটন মহাবিদ্যালয়ৰ পৰা বি-এ, ১৯৪৭। গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়ৰ পৰা অসমীয়াত এম-এ, ১৯৫১। A Study of Kamrupi : A Dialect of Assamese বিষয়ত D. Phil, ১৯৫৮।

ডিব্ৰুগড়ৰ ডি-এইছ-এচ-কে মহাবিদ্যালয়ৰ প্ৰবক্তা ১৯৫২-৬০। কটন মহাবিদ্যালয়ৰ প্ৰবক্তা ১৯৬০-৬৪। গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়ৰ শ্ৰেণীসমূহৰ অসমীয়া বিভাগৰ প্ৰবক্তা ১৯৬৪-৮৭। বিভাগীয় মুৰব্বী হিচাপে অৱসৰ গ্ৰহণ ১৯৮৭।

সাহিত্য কৰ্ম : (১) সীমান্ত কেশৰী, ১৯৪৭, (২) বাপু মোৰ আই, ১৯৫০; (৩) ভাষা আৰু সাহিত্য, ১৯৫৬; (৪) সম্পাদনা- যতীন্দ্ৰ নাথ দুৱৰাৰ কথা-কবিতা, ১৯৫৭; (৫) A Study of Kamrupi A Dialect of Assamese, 1970, (৬) প্ৰবন্ধ-নিচয়, ১৯৭৪; (৭) বৈষ্ণৱ ভক্তিদাৰা আৰু সন্ত কথো, ১৯৭৫; (৮) An Introduction to Assamese, 1976; (৯) An Introduction to Deuri Language; (১০) অসমীয়া ভাষাৰ ৰূপকথা ১৯৭৭; (১১) ভাষা সমাজ সাহিত্য, ১৯৭৮, (১২) দেউৰী শব্দমালা, ১৯৮১; (১৩) প্ৰত্ন-অসমীয়া ভাষাৰ ৰূপতাত্ত্বিক বিশ্লেষণ, ১৯৮৫; (১৪) অসমীয়া ভাষা আৰু উপ-ভাষা, ১৯৮৬; (১৫) মণিমাণিক শব্দকোষ, ১৯৯৮। অসমীয়া ভাষাৰ বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস- আৰম্ভণিৰ পৰা, ১২২৮ লৈ, আৰু অসমীয়া লিপিৰ বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস-আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ লৈ প্ৰবন্ধৰ লিখক।

১৯৩৮ৰ যোৰহাটৰ তৈলপানীয় সত্ৰত জন্ম। পিতৃ মোহনচন্দ্ৰ মহন্ত।

গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়ৰ পৰা সংস্কৃতৰ এম-এত প্ৰথম শ্ৰেণীৰ প্ৰথম হয়।

যোৰহাটৰ জগন্নাথ বৰুৱা মহাবিদ্যালয়ত অধ্যাপনা কৰি অৱসৰ গ্ৰহণ কৰে।

সাহিত্য-কৰ্ম : কালিদাসৰ সাহিত্য, ১৯৭৪; অসমীয়া ৰামায়ণী সাহিত্য : কথা-বস্ত্তৰ আঁতি-গুৰি, ১ম খণ্ড ১৯৮৪ ; ২য় খণ্ড, ১৯৯০ ; বিচিত্ৰ ৰামায়ণী কথা, ১৯৮৬; মহাপুৰুষীয়া সাহিত্য : কেইটামান দিশ, ১৯৮৫ ; কৃষ্ণকথা : মূল ধাৰা, ১৯৯০।

বাপচন্দ্ৰ মহন্তৰ সৈতে যুটীয়াকৈ :- গোস্বামী তুলসীদাস আৰু ৰামচৰিত মানস, ১৯৭১;

অনুদিত সাহিত্য :- বাপচন্দ্ৰ মহন্তৰ সৈতে যুটীয়াকৈ, ৰামচৰিত মানস, ১৯৮০, সম্পাদিত গ্ৰন্থ :- বৈষ্ণৱানন্দ লহৰি, (উদিতৰাম দেৱ কৃত অসমীয়া অনুবাদ সহ), ১৯৮১ ;

শিশু পুথি : মহাভাৰতৰ সাধু দুটামান কণ্ঠ, ১৯৭০ ; ৰঘুবংশৰ কথা, ১৯৭০: ৰামায়ণৰ সাধু দুটামান কণ্ঠ, ১৯৮৭।

জগদ্ধাত্ৰী-হৰমোহন সাহিত্য বঁটা বিজয়িনী। এই খণ্ড সাহিত্যৰ বুৰঞ্জীৰ মাধৱ কন্দলীৰ ৰামায়ণ আৰু দেৱজিতৰ লিখিকা।

তাৰক চন্দ্ৰ গোস্বামী

১৯৩৮ৰ ১৬ এপ্ৰিল শনিবাৰে বৰ্তমান বৰপেটা জিলাৰ বৰনগৰ সৰভোগৰ নুনতোলা গাৱঁত জন্ম।

কটন মহাবিদ্যালয়, গুৱাহাটী, আই-এচ-চি, ১৯৫৯; ভোলানাথ বৰুৱা মহাবিদ্যালয়, গুৱাহাটী, অৰ্থনীতিত সন্মান সহ বি-এ, ১৯৬১; এলাহবাদ বিশ্ববিদ্যালয়, অৰ্থনীতিত এম-এ ১৯৬৫।

বৰনগৰ জুবোৰাম পাঠক উচ্চতৰ মাধ্যমিক বিদ্যালয়, সহকাৰী শিক্ষক, ১৯৬১-৬৩, গুৱাহাটী বাণিজ্য মহাবিদ্যালয়, প্ৰবক্তা, ১৯৬৫-৬৬; গুৱাহাটী ভোলানাথ বৰুৱা মহাবিদ্যালয়, প্ৰবক্তা, ১৯৬৬-৯৯ (অৱসৰ)।

আৱাহন, ৰামধেনু, সাদিনীয়া নৱযুগ, মণিদীপ, বৃধবাৰ, অগ্ৰদূত, দৈনিক অসম, আজিৰ অসম, নতুন দৈনিক, গৰীয়সী আদিত প্ৰবন্ধ প্ৰকাশ। The North East Times, Economic Note Book ত লিখে। হৰেকৃষ্ণ ডেকাৰ সৈতে উত্তৰ সম্পাদনা, ১৯৮৬। ডঃ হীৰেণ গোহাঁই আৰু অনিল ৰায়চৌধুৰীৰ সৈতে নতুন পৃথিৱী সম্পাদনা, ১৯৭১। অসমৰ বানপানী আৰু ইয়াৰ নিয়ন্ত্ৰণ সম্পৰ্কে ইংৰাজীত এখন গবেষণা পুস্তিকা, ১৯৬৭। অসমৰ অৰ্থনৈতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস— ১২২৮ ৰ পৰা ১৪৭০লৈ প্ৰবন্ধৰ লিখক।

ডঃ দীপ্তি ফুকন পাটগিৰি

জন্ম ১৯৫৬।

অসমীয়াত এম-এ, ১৯৭৮, পি-এইচ-ডি, ১৯৯১। গৱেষণাৰ বিষয়, “অসমীয়া ভাষাত ক্ৰিয়াপদৰ ঐতিহাসিক অধ্যয়ন।”

গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়ৰ অসমীয়া বিভাগৰ ৰিডাৰ।

প্ৰকাশিত গ্ৰন্থ : *ভাষাতত্ত্ব*, ১৯৯১; *সম্পাদনা, ভাষাৰ বিচিত্ৰ কথা*, ১৯৯৬।

অসমীয়া ভাষাৰ বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস ১২২৮ৰ পৰা ১৪৭০লৈ প্ৰবন্ধৰ লিখিকা।

ডঃ নবীন চন্দ্ৰ শৰ্মা

জন্ম ১৯৩৮।

অসমীয়াত এম-এ, ১৯৬৫, পি-এইচ-ডি, ১৯৭৭, গৱেষণাৰ বিষয় — উত্তৰ-পূৱ ভাৰতৰ বৈষ্ণৱ কবি : অনন্ত কন্দলী। গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়ৰ লোক-সংস্কৃতি গৱেষণা বিভাগৰ প্ৰাক্তন মুৰব্বী।

সাহিত্য ৰচনা :- অসমীয়া সাহিত্যৰ আলোকৰেখা, অসমীয়া ভাষা-সাহিত্যৰ ৰূপৰেখা, পুৰণি অসমীয়া সাহিত্যৰ সুৰভি, অসমীয়া লোক-সংস্কৃতিৰ আভাস, অসমৰ ওজাপালি, পশ্চিমৰ পৰা পূবলৈ, আইৰ মুখৰ সাধু, *Essay on the Folklore of North-Eastern India*, *The Vaisnavite Poets of the North Eastern India Ananta Kandali* সম্পাদনা— চন্দ্ৰ ভাৰতীৰ কুমৰ হৰণ কাব্য, ৰুদ্ৰসিংহৰ শিৱপুৰাণ, সূৰ্যখড়ি দৈৱজ্ঞৰ দৰঙ্গ ৰাজবংশাৱলী, শঙ্কৰদেৱৰ আদি দশম, কালীয়া দমন নাট, মাধৱদেৱৰ অৰ্জুন-ভঞ্জন, ৰাম-সৰস্বতীৰ খটাসুৰ বধ, ভীম চৰিত, ৰঘুনাথ মহন্তৰ অদ্ভুত ৰাময়ণ, ৰুচিনাথ কন্দলীৰ শ্ৰীশ্ৰীচণ্ডী, ডাক প্ৰবচন, বিশ্বেশ্বৰ দ্বিজৰ শ্ৰীশ্ৰীসত্যনাৰায়ণদেৱৰ পাঁচালী (সৰ্বটাক খণ্ড), নাৰায়ণদেৱৰ পদ্মাপুৰাণ, (ডাটিয়ালী খণ্ড), আচাৰ্য মনোৰঞ্জন শাস্ত্ৰী : জীৱন, সাধনা আৰু কৃতিত্ব ত্ৰৈলোক্যনাথ গোস্বামী : জীৱন আৰু কৃতি ইত্যাদি। যুগ-নিৰপেক্ষ সাহিত্য - মৌখিক সাহিত্য সাধুকথা, ফকৰা যোজনা, ডাকৰ বচন মন্ত্ৰ আৰু গোপীচন্দ্ৰৰ গানৰ লিখক।

ডঃ প্ৰভাস চন্দ্ৰ গোস্বামী

১৯২২ৰ ১১ ডিচেম্বৰত নলবাৰীত জন্ম। ১৯৯২ৰ ৬ ফেব্ৰুৱাৰীত মৃত্যু।

নলবাৰী গাৰ্ডন হাইস্কুল, প্ৰৱেশিকা ১৯৪১; যোৰহাট জগন্নাথ বৰুৱা মহাবিদ্যালয়, আই - কম, ১৯৪৩; কলিকতাৰ এখন মহাবিদ্যালয়, বি-কম, ১৯৪৫; কলিকতা বিশ্ববিদ্যালয়, এম-কম, ১৯৪৭; কলিকতা বিশ্ববিদ্যালয়, বি এল, ১৯৪৯; লণ্ডন স্কুল

অব্ ইকনমিক্সত গৱেষণা, ১৯৫৭ ; ডক্টৰেট উপাধি লাভ, ১৯৫৯।

গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়ৰ বাণিজ্য বিভাগৰ প্ৰবক্তা, ১৯৪৮ ; উত্তৰ-পূব ভাৰতৰ কৃষি-অৰ্থনীতি গৱেষণা কেন্দ্ৰ, যোৰহাট, ক্ৰমে গৱেষণা বিষয়া, সহকাৰী সঞ্চালক, আৰু সঞ্চালক, ১৯৬০-৭৪ ; অসম কৃষি বিশ্ববিদ্যালয়, যোৰহাট, অধ্যাপক ১৯৭৪-৮৩ ; গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়, বাণিজ্য বিভাগ, অধ্যাপক, ১৯৮৩-৯১ ; আমেৰিকা যুক্তৰাজ্যৰ মিনেচোটা বিশ্ববিদ্যালয়ৰ ভ্ৰমণকাৰী অধ্যাপক, ১৯৭৭।

ইণ্ডিয়ান চ'চাইটি অৱ এণ্ট্ৰিকালচাৰেল ইকনমিক্সৰ উপ-সভাপতি ১৯৭৭-৯৭
কিছু কাল ৰাজ্যিক পৰিকল্পনা পৰিষদৰ সদস্য।

ৰচনা : ১। *Economic Development of Assam, 1962* , ২। *Problems and Prospects of Industrialisation – A Study in North-East India* (edited), 1987 ; ৩। *Problems of Industrial Development in a Backward Economy - A Study in North-East India, 1985*; ৪। *Role of Small-scale Industries in Economic Development of North-East India 1986*, ৫। *Rural Development Programme and Role of Commercial Banks – A Study in North-East India, 1987*; ৬। *Financial Resources and Economic Development in the State Sector - A Study, 1990*. অসমৰ অৰ্থনৈতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস— আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ লৈ প্ৰবন্ধৰ লিখক।

বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকা

১৯৩৩ৰ ৩১ জুলাইত গোলাঘাট জিলাৰ বৰপথাৰৰ বাৰমুখীয়া গাঁৱত জন্ম।
পিতা* খগেশ্বৰ হাজৰিকা, মাতা* সোণেশ্বৰী হাজৰিকা।

বৰপথাৰ বৰমুখীয়া নিম্ন প্ৰাথমিক বিদ্যালয়ৰ শিক্ষান্ত পৰীক্ষা ১৯৪৩ ; বৰপথাৰৰ এম-চি দেব এম-ই স্কুল, বৰপথাৰ উচ্চ বিদ্যালয়, গোলাঘাট টাউন উচ্চ বিদ্যালয়, প্ৰৱেশিকা ১৯৫৩, ২য় বিভাগ ; গোলাঘাটৰ দেৱৰাজ ৰয় মহাবিদ্যালয়, আই-এ ১৯৫৫, ২য় বিভাগ ; গুৱাহাটীৰ ভোলানাথ বৰুৱা মহাবিদ্যালয়, বি-এ ১৯৬৫ ; গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয় শ্ৰেণীসমূহ, এম-এ, ভাষা শাখা, ১ম শ্ৰেণীৰ ১ম, ১৯৬৫।

সহকাৰী শিক্ষক, বৰপথাৰ উচ্চ বিদ্যালয় ১৯৫৫-৫৬; উপ-সম্পাদক *দৈনিক শান্তিদূত*, গুৱাহাটী ১৯৫৬; উপ-সম্পাদক, *নতুন অসমীয়া*, গুৱাহাটী ১৯৫৭; উঃ পূঃ সীঃ ৰেলপথ, মুখ্য কাৰ্যালয়, কেৰাণী, ১৯৫৮-৬০ ; সহকাৰী শিক্ষক, বৰপথাৰ উচ্চ বিদ্যালয়, ১৯৬০-৬২, ১৯৬৪-৬৬ ; প্ৰবক্তা, কটন মহাবিদ্যালয়, ১৯৬৬-৬৭ ; প্ৰবক্তা, দেৱৰাজ ৰয় মহাবিদ্যালয়, গোলাঘাট, ১৯৬৬-৬৭ ; প্ৰবক্তা, ভোলানাথ বৰুৱা মহাবিদ্যালয়, গুৱাহাটী, ১৯৬৮-৯৫ ; অৱসৰ ১৯৯৫।

সাহিত্য কৰ্ম : ১। *Assamese Language 'Origin and Development*, 1985 ২। *অসমীয়া ভাষাৰ উৎপত্তি আৰু ক্ৰমবিকাশ*, ১৯৮৮, ৩। *Caitanya's Impact on the Vaisnavism of Assam*, 1994 ; ৪। *অসমীয়া ভাষাৰ গঠন আৰু বিকাশ* (Dr. B. Kakati, *Assamese, Its Formation and Development* ৰ অসমীয়া ভাষাত বিশ্বস্ত অনুবাদ) ১৯৯৬। পাঁচশৰো ওপৰ প্ৰবন্ধ প্ৰকাশ। *অসমৰ ৰাজনৈতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস— আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮ লৈ*, *অসমীয়া লিপিৰ বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস— ১২২৮ৰ পৰা ১৪৭০ লৈ*, চৰ্যাগীত প্ৰবন্ধৰ লিখক।

ভুবনেশ্বৰী বৈশ্য

১৯৩৪ৰ ২০ জানুৱাৰীত নগাঁৱত জন্ম। পিতৃ * কল্পনাৰায়ণ মজুমদাৰ আৰু মাতৃ * মালতীপ্ৰিয়া মজুমদাৰ।

পাণবজাৰ ছোৱালী উচ্চ বিদ্যালয়ৰ পৰা প্ৰৱেশিকা, ১৯৫০, ১ম বিভাগ, অসমীয়াত ৮০শতাংশ নম্বৰ লাভ। কটন মহাবিদ্যালয়, ১৯৫২, আই-এ, ১ম বিভাগ। তাৰে পৰাই ১৯৫৪ত বি-এ, অসমীয়া অনাৰ্চ ২য় শ্ৰেণীৰ ১ম স্থান লাভ কৰে।

কটন মহাবিদ্যালয়ৰ অসমীয়া বিভাগৰ প্ৰবক্তা হিচাপে ১৯৫৮ ৰ ২৩ জুনত যোগদান। ১৯৭৪ৰ পৰা বিভাগীয় মুৰব্বী। ১৯৯২ৰ ৩১জানুৱাৰীত অৱসৰ। অৱসৰৰ পাচত ১৯৯৩-৯৫ত দক্ষিণ কামৰূপ ছোৱালী মহাবিদ্যালয়ত অধ্যক্ষৰ দায়িত্ব গ্ৰহণ।

সাহিত্য-কৰ্ম : ১। *বৈষ্ণৱ যুগৰ অসমীয়া সাহিত্য*, ১৯৬৩, ২। সম্পাদনা- *অসম গৌৰৱ, কটন মহাবিদ্যালয়, অসমীয়া বিভাগৰ দ্বাৰা প্ৰকাশিত* ১৯৭৮; ৩। *প্ৰাকৃত ভাষা সাহিত্য পৰিচয়*, ১৯৭৫; ৪। *সোণ জিলিমিলি ৰূপ জিলিমিলি*, ১৯৮৮; ৫। *প্ৰাকৃত সাহিত্য মঞ্জুয়া*, ১৯৮৯; ৬। *আৰব দেশৰ সাধু*, ১৯৯০; ৭। সম্পাদনা-*অসমৰ বৈষ্ণৱ সাহিত্য আৰু সংস্কৃতি*, ১৯৯১; ৮। *মোৰ জাপান ভ্ৰমণ*, ১৯৯৭; ৯। *মোৰ টাইপে, বেইজিং, বেংকক ভ্ৰমণ*, ১৯৯৮। *অসমৰ সাংস্কৃতিক বুৰঞ্জীৰ চমু আভাস, আৰম্ভণিৰ পৰা ১২২৮লৈ*, আৰু *হৰিহৰ বিপ্ৰৰ লৱ-কুশৰ যুদ্ধ, বক্সা হনৰ যুদ্ধ, আৰু তাম্ৰধ্বজৰ যুদ্ধৰ* লিখিকা।

ডঃ মিনতি হাজৰিকা

১৯৩৯ৰ ৩১ জুলাইত যোৰহাট নগৰত জন্ম। পিতৃ * ৰাধানাথ হাজৰিকা।

যোৰহাট দেৱীচৰণ বৰুৱা ছোৱালী মহাবিদ্যালয়ৰ প্ৰথম দলৰ ছাত্ৰী। তেওঁ ১৯৬১ত অসমীয়া বিষয়ত এম-এ পৰীক্ষাত উত্তীৰ্ণ হয়। ইতিমধ্যে তেওঁ বি-টি পৰীক্ষাতো উত্তীৰ্ণ হয়। ১৯৯০ত “অসমৰ মধ্যযুগৰ চৰিত পুথিৰ এটি অধ্যয়ন” শিতানত গবেষণা কৰি পি-এইচ-ডি ডিগ্ৰি লাভ কৰে।

যোৰহাটৰ দেৱীচৰণ বৰুৱা ছোৱালী মহাবিদ্যালয়ত ১৯৬২ত প্ৰবক্তা ৰূপে চাকৰি জীৱন আৰম্ভ কৰে আৰু ১৯৯৯ত অৱসৰ গ্ৰহণ কৰে।

সাহিত্য কৰ্ম : ১। মমতাৰ বাতৰি ১৯৬৭ ; ২। নেপাল দেশৰ সাধু, ১৯৭০, ৩। ভীম চৰিত, ১৯৭৮, ৪। দূৰ-দূৰণিৰ সাধু, ১৯৮৬ ; ৫। মহৎ লোকৰ লৰালি কাল, ১৯৮৯; ৬। নাৰীৰত্ন, ১৯৯৩ ; ৭। আকবৰ-বীৰবলৰ কাহিনী, ১৯৯৪; ৮। সম্পাদনা-মহাপুৰুষ মাধৱদেৱ বিৰচিত চোৰধৰা আৰু পিম্পৰা ওচোৱা আৰু মাধৱ কন্দলীৰ অযোধ্যা কাণ্ড ৰামায়ণ, ১৯৯৪ ; ৯। সম্পাদনা- মহাপুৰুষ শঙ্কৰদেৱ বিৰচিত কীৰ্তনৰ অন্তৰ্গত গজেন্দ্ৰোপাখ্যান ; বলিছলন আৰু দামোদৰ বিপ্ৰাখ্যান ১০। অসমৰ মধ্য যুগৰ চৰিতপুথিৰ এটি অধ্যয়ন , আৰু ১১। টুন-টুনীৰ সাধু। ৰামাই পণ্ডিতৰ শূন্য পুৰাণৰ লিখিকা।

ডঃ লীলাৱতী শইকীয়া বৰা

জন্ম ১৯৪৮।

অসমীয়া ভাষা শাখাত এম-এ, ১৯৭২ ;

অধ্যাপনা — আনন্দৰাম ঢেকিয়াল ফুকন মহাবিদ্যালয়, নগাওঁ, ১৯৭২, ডিব্ৰুগড় বিশ্ববিদ্যালয়, ১৯৭৩-৭৮ ; গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়, ১৯৭৮ ৰ পৰা বৰ্তমানলৈ।

সাহিত্য-কৰ্ম : সোণালী হাঁহি, ১৯৮৮; ভাষা-সাহিত্যৰ সুবাস, ১৯৯২; মাধৱ কন্দলী ৰামায়ণৰ ভাষা। চণ্ডীদাসৰ শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্তনৰ লিখিকা।

ডঃ সন্দা বেজবৰুৱা

১৯৩৪ৰ ২৮ ফেব্ৰুৱাৰীত শ্বিলঙৰ মৈদাম লাবানত জন্ম। পিতৃ * মুকুটবাম বেজবৰুৱা।

আউনীআটী কমলদেৱ উচ্চ বিদ্যালয়, কটন কলেজিয়েট উচ্চ বিদ্যালয় আৰু গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়ত শিক্ষা লাভ। বিজ্ঞানৰ স্নাতক উপাধি লাভ। অসমীয়া ভাষা শাখাত এম-এ। ১৯৯০ত আইনৰ স্নাতক। Institute of Oriental Philosophy, Vrindaban, U P ত ১৯৬২ৰ পৰা ১৯৬৪লৈ গৱেষণা। ১৯৬৮ত Assamese Version of the Mahabharata during the Vaisnava Period বিষয়ত D. Phil ডিগ্ৰী লাভ।

চাংসাৰি আৰু হেকৰা উচ্চ বিদ্যালয়ত সহকাৰী শিক্ষক। ধুবুৰীৰ ভোলানাথ মহাবিদ্যালয়ৰ প্ৰবক্তা ১৯৬৪-৯৪। ১৯৯৫ ৰ পৰা ধুবুৰী আদালতত অধিবক্তা। ধুবুৰী আইন মহাবিদ্যালয়ৰ প্ৰবক্তা ১৯৯৯-২০০১।

সাহিত্য-কৰ্ম : ১৯৫৯ৰ পৰা প্ৰবন্ধ প্ৰকাশ। প্ৰকাশিত গ্ৰন্থ : ১। প্ৰবন্ধ-জ্যোতি, ১৯৯৯। হেম সৰস্বতীৰ প্ৰহ্লাদ চৰিত, আৰু হৰ-গৌৰী সন্ধ্যা, কবিত্ব সৰস্বতীৰ জয়দ্ৰথ বধ, আৰু ৰুদ্ৰ কন্দলীৰ সাত্যকি প্ৰৱেশৰ লিখক।

অনুক্রমণী

(পৃষ্ঠাৰ সংখ্যা উল্লেখ কৰা হৈছে)

(কিতাপৰ নামবোৰ হেলনীয়া আখৰত)

অউ - কুং ১২

অকা ১০৮, ১১০

অগৰু ৮১, ৮৯, ৯৬

অগস্তি ২৮৩

অগুরু ১৩৫

অগ্নি ১২১

অগ্নিহোত্ৰ ১২৭

অঙ্গ ৩১

অঙ্গদ ১৩৫

অজগৰ ৮১

অজয় চন্দ্ৰ চক্ৰৱৰ্তী ৩৮৫, ৩৯১

অতিকথা ২৬৫

অতিলৌকিক সাধুকথা ২৬৬

অথৰ্ববেদ ২৯১

অদ্বয়বজ্ৰ ৩১০

অনঙ্গবজ্ৰ ৩১৭, ৩১৯

অনন্ত কন্দলী ৩৬৩

অনন্ত বড়ু ৩৬৬

অনাদি-পাতন ৪৫৭

অপুৰুষ নগৰী ১১১

অপব্ৰংশ ১৫৯

অপভ্ৰষ্ট ১৫৯

অভিশূৰাটক ২৬

অভিনবগুপ্ত ১২৮

অভিচাৰ মন্ত্ৰ ১২৮

অমৃতপ্ৰভা ১১, ১১৯, ১২৫, ২২৭, ২২৮

অম্বা ২৭

অমৰ নাথ মন্দিৰ ৩২

অমলেন্দু গুহ ৭৮

অমূৰ্তৰাজ ১০৭

অমৰসিংহ ২২৭

অযোধ্যা ২৪

অৰুণাচল ৬, ৮, ৩০, ৩৮, ৬৮, ১৫৮

অৰহৰ ৫৯

অৰমূলা ১০৮

অৰুনোদই ১৬৬, ২১৫

অৰ্থশাস্ত্ৰ ৩, ৮৩, ১০৫

অৰ্জুন ১৮

অৰ্জুনাস্থ ২২৮

অৰ্ধমাগধী ১৫৯, ১৬৯

অলৌকিক মালিতা ২৪১

অৰুণ ১৪

অৰুহট্ট ১৫৯

অশোক ১৬৪, ১৬৫

অশোকৰ শিলালিপি ১৫৯

অশ্বভৰ ১১৯, ১২৮

অষ্টিক ১০৮, ১১০, ১১৭, ১২০, ১২৬,

১২৯, ১৩৫, ১৩৬, ১৪০

অসবৰ্ণ বিবাহ ১২৫

অসম উপত্যকা ১৬৬

অসমীয়া ১৫৯, ১৬০, ১৬১, ১৭২, ১৭৩,

১৮৭, ১৮৮, ২১৩

৪৬২ অসমীয়া সাহিত্যৰ

- অসমীয়া মহাভাৰত ৪১৮
 অসমীয়া লিপি ২১৬, ২১৭
 অসমীয়া সাহিত্যৰ ইতিবৃত্ত ৩৬১
 অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি ৪১৮
 অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী ৩৬০
 অসমীয়া সাহিত্যৰ ৰূপৰেখা ৪২৩
 অসমীয়া সাহিত্যৰ সমীক্ষাত্মক ইতিবৃত্ত ৪১৪
 অসিত বন্দ্যোপাধ্যায় ৩৫৬, ৩৫৮
 আই-জ্যোপ-ত্যাৎ-ফা ৪৯
 আই নাম ৫৮
 আঙুঠী ১৩৫
 আজমিৰ জিলা ২১৩
 আজান ফকিৰ ২৫১
 আত্মাৰাম শৰ্মা ২১৮
 আদা ৫৯, ৬১, ৭৮
 আদাৰি যুগা ১৩৪
 আদি প্ৰাকৃত ১৭১
 আল্লাম ২১
 আফগানিস্তান ৬৮
 আবালি ১০৮
 আতীৰ উপভাষা ১৫৯
 আভোগ হুৰ ১৩৪, ১৩৯
 আম ৭৯
 আমবাৰী ৮৭, ১৫২
 আমবাৰী শিলালিপি ২২০
 আমৰ ৰস ১৩৬
 আমলখি ৫৯, ৭৯
 আৰ. চি. মজুমদাৰ ৯, ৩৩
 আৰ. জি. বসাক ৩৩,
 আৰখি ২৪, ২৬, ২৭
 আৰিমন্ত ৪১, ১৯১
 আৰ্য ব্ৰাহ্মণ্য ধৰ্ম ৫৭
 আৰ্যসকল ১০৯
 আৰ্যদেৱপাদ ৩২৩
 আৰ্য বিবাহ ১২৪
 আলপাইন ১১৪
 আলবেৰ্ণিনি ১০২
 আলু ৮১
 আলেকজেন্দ্ৰিয়া ১০৬
 আল্টেকাৰ ১১৩
 আল্লাউদ্দিন-ছচেইন-চাহ ৯৩
 আৰেস্তিক ১৭০
 আসাম ১৬৭
 আসাম বুৰঞ্জী ১৯২
 আসুৰ বিবাহ ৫৮, ১২৪
Aspects of Early Assamese Literature ৩৯৬, ৪১৪
 আত্ম ধান ৭৭
 আহোম ৮১, ৮৭
 আহোমৰ দিন ১৫০
 আহোম ৰাজ্য ৩৮
 আহোম লিপি ২১৩
 ইক্ষু ৮
 ইখ্ৰিয়াৰ-উদ্দিন-মুহম্মদ ৩৪
 ইচলাম ৫৭
 ইন্দোক ২৬, ১১০
 ইন্দ্র ১৯, ২৩, ১২১, ১৩৮
 ইন্দ্রজাল ১২৮
 ইন্দ্রধ্বজ উৎসৱ ১২৭
 ইন্দ্রনাৰায়ণ ৪১, ১৯১, ১৯২, ৪১২
 ইন্দ্রপাল ৩০, ৩১, ৩৩, ১১১, ১১৬, ১২২,
 ১২৯, ১৩১, ১৪৯, ১৫০, ২১৯, ২২৬, ৪২১
Inscription of Ancient Assam ২৪
 ইৰাৱতী
 ইন্টুংমিচ্ ৩৫, ৩৯
 উককথা ২৬৬

উগ্রতাৰা ১২০
 উষা ৮৮
 উজন্তি ১৩৫
 উট ৯৯
 উড়িয়া ১৫৯, ১৬১, ১৮৭, ২১৩
 উড়িয়া ২১৭
 উৎকল ৬৯
 উৎসেটন ৭০
 উত্তৰ গুৱাহাটী ৩২
 উত্তৰ পৰ্বতক ১৩১
 উত্তৰ বঙলা ১৬১
 উত্তৰ বঙ্গ ১৩, ১৪, ২২, ২৯, ৩০, ৩৩, ৩৫, ৪২, ১৬৬, ১৮৮
 উত্তৰ বৰবিল তামৰ ফলি ২৬, ২১৫
 উত্তৰ ব্ৰাহ্মী ২১৩
 উত্তৰ ৰাঢ় ১৯
 উত্তৰীয় ১৩৪
 উৎসৱ অনুষ্ঠানৰ লগত জড়িত গীত ২৫৪
 উদয়কৰ্ণ ৩৪
 উপকথা ২৬৬
 উপনাগৰ ১৫৯
 উপপত্নী ১২৬
 উপৰিকৰ ৭০
 উপৰিপুস্তক ২৫
 উপানহ ১৩৫
 উপেন্দ্ৰ চন্দ্ৰ লেখাৰু ৩৬৩
 উপেন্দ্ৰ নাথ গোস্বামী ৩৭০
 উমাচল ১২
 উমাচল শিলালিপি ১২১, ২১৪, ২২১,
 উমাপতি ৩২, ৩৩
 উমেশ মিত্ৰ ২৮৪
 উৰহী ৬২
 উৰিয়া ১৭, ১৮, ২১, ২৪, ৩৫

উলুবাৰী তামৰ ফলি ২১৫
 উল্লক ১৩৩, ১৩৯,
 উল্লী কাপোৰ ৮৮, ১৩৪,
 উল ৬৫, ৬৭
 ঋণাত্মক তুল্যতা ২৭৬
 ঋণাত্মক নিমিত্ততা ২৭৪
 এইচ. চি. ৰায়চৌধুৰী ৯
 এড্‌ৱাৰ্ড গেইট ৪৩, ৩৭৪, ৩৯৬
 এণ্ডেল ৪৩
An Advanced History of India ৯
 এম. এ. ষ্টেইন ১২
 এৰিষ্টোটল ১২৬
 এৰী ৬৫
 এৰীসূতা ৯৫
 ঐতিহাসিক মালিতা ২৩৮
 ওজাপালি ৫৮
 ওড্ড ২৩, ২৪
 ওপৰচকুৰা নগা গাওঁ ৫০
 ওৰণি ১৩৫
 ওল ৬২
 ও টেঙা ৫৯, ৭৯
 ঔষধি ৮১, ৮২
 ককেচীয় ১১০
 কঙ্কণ ১৩৫
 কঙ্কণপাদ ৩২৪
 কঙ্গুচিনা ১২৯
 কঙ্গোদ ১৮
 কচু ৬২, ৮১
 কছাৰী ৪৩, ৮১, ৮৭, ১০৭, ১৪৮
 কছাৰী ৰাজ্য ৩৮
 কঙ্ক পৰ্বত ৭
 কঞ্জিয়া ৩২
 কঁঠাল ৫৯, ৬২, ৭৯

৪৬৪ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

কঠীয়া ৬১

কড়ি ৯৩, ৯৪, ৯৯

কড়ি খেল ১২৭

কণামুচৰি ৮১

কথা গীত ২৭২

কথা গুৰুচৰিত ১৯৩, ৩৬৩, ৩৯১

কনকলাল বৰুৱা ৪০, ১২০, ১২২, ১২৯,

১৩৪, ১৪৬, ৩৭৪, ৩৯৬

কনৌজ ১৬, ২১, ৫৭, ১৫৪

কন্নড় ২১৩

কপাহ ৬৫, ৯৬

কপিলী উপত্যকা ১২১

কবিৰত্ন সৰস্বতী ৪১, ১৯৩, ১৯৯, ২১৯,

৩৭৫, ৩৭৬, ৩৮১, ৪১২, ৪১৪, ৪১৫, ৪১৬,

৪১৭, ৪১৮, ৪২১

কমতা ৩৮, ৩৯, ৫১, ৭৭, ১৮৯

কমতাপুৰ ৪০

কমাৰ ৮৬, ৯৬

কমৌলী তামৰ ফলি ১২৩

কম্বলান্ধৰপাদ ৩২৪

কৰণ ১১২

কৰণি ২৫০

কৰণিক ১১৩

কৰতোয়া ৪, ৭, ৮, ১৬, ২৭, ৩৮, ৪২, ৫৬,

১০৭, ১৫৩,

কৰধনি ১৩৫

কঁৰিয়া ৮৮

কৰিয়াপাৰা ১০১

কৰ্ণসুৰণ ১৪, ১৯

কৰ্জা ৫৯

কপুৰ ৫৯, ৮৯, ১৩৬

কৰ্মগীত ২৫৬

কৰ্মধ্বজপাল ৪৬

কলং ৩৮

কল ৫৯

কলাখাৰ ৫৯

কলিঙ্গ ২৩, ২৪

কলিতা ৫৭, ১০৮, ১১২, ১১৪,

কলুবায ১০৮

কল্যাণ চন্দ্ৰ ৩১

কল্যাণৰমা ১২

কলহণ ১১, ১১৯, ২২৭

কৰীন্দ্র ৰচনসমুচ্চয় ৩১, ২১৯, ২২৬

কস্তুৰী ৮৯, ১৩২, ১৩৫, ১৩৯

কাই-চেং-মুং ৪৮

কাইথেলী লিপি ২১৮

কাণ্ড-ৰং-মুং-বান্ ৫০

কাঁচুলি ১৩৪

কাছ ৫৯, ১৩৬

কাছাৰ ১৪, ৪৩, ১৮৮

কাছোমৰীয়া ভকত সেৱা ২৫০

কাজুৰগিৰ ১৭

কাঞ্চনজঙ্ঘা ৭, ৮, ২২৭

কাঞ্চনপৰ্বত ৭, ৮, ৫৬

কাটনি ৮৩

কাঠ ৮১, ৮২

কাঠ আলু ৬২

কাত্যায়ন ১১৩

কানাই বৰশী শিলালিপি ৩৫

কাপোৰ ৬৯

কামচৰাই ৮১

কামৰূপ ৩, ৪, ৫, ৬, ৭, ৮, ৯, ১০, ১৪,

১৭, ১৮, ১৯, ২০, ২১, ২২, ২৩, ২৫, ২৯,

৩১, ৩৩, ৩৪, ৩৯, ৫৫, ৫৬, ৫৭, ৯৬, ১১৭,

১১৮, ১২০, ১৪৫, ১৪৯, ১৫০, ১৫১, ১৬১,

১৬৬, ১৮৯

কামৰূপ নগৰ ৩২, ৯৬, ১১১,
 কামৰূপ পীঠ ৫, ৬, ১১, ১৪
 কামৰূপী অপভ্রংশ ১৮৭, ১৮৮
 কামৰূপী উপভাষা ১৬৯
 কামৰূপী প্রাকৃত ১৬১, ১৬৬, ১৬৭, ১৭৩,
 ১৮৭,
 কামৰূপী লিপি ২১৪, ২১৬, ২১৭, ২১৮
 কামৰূপী লোকগীত ২৫৩
 কামৰূপীয় পাঠ ৪৫১
 কামৰূপীয় পুস্তক ৪৫৩
 কামা ৫
 কামাখ্যা ৫, ৫৭, ১১৭, ১২০, ১২১, ১২৪,
 ১৩৯, ১৪৬
 কামাখ্যা দেৱীৰ লক্ষ বলিৰ তামৰ ফলি ২১৬
 কামাখ্যা মন্দিৰৰ শিলৰ ফলি ২১৬
 কামোহিত ১২০
 কামৌলি তামৰ ফলি ৩৩
 কাম্বোডিয়া ২১
 কায়স্থ ৫৭, ৫৮, ১১২, ১১৩
 কাক্তিকৈয় ১২১
 কাৰ্দৰঙ্গ ১৩২
 কাৰ্বি ১০৮, ১১০, ১২১
 কালগিৰি ৪৫
 কালসী ১৬৪
 কালিকা পুৰাণ ৩, ৪, ৫, ৬, ৭, ৮, ৩০, ৭৭,
 ৭৯, ৮৩, ৮৭, ১০৭, ১০৯, ১১৭, ১১৯, ১২৭,
 ১৩৪, ১৩৫, ১৩৭, ১৪৬, ১২২, ১৯৩, ১৯৪
 কালিকিষ্কৰ দত্ত ৯
 কালিদাস ১০৫, ১৩২
 কালিৰাম মেধি ১৬৮, ১৬৯, ১৮৮, ৩৭৪,
 ৩৯৫, ৩৯৬
 কালেয়ক ১৩১
 কাশীনাথ দীক্ষিত ১১৮, ১৩৮

কাঞ্চীৰ ১১, ১১৯
 কানীপাটক ১১১
 কাঁহ ৬৬, ৯৯
 কাঁহ-পিতল ৮৫
 কাহিনী ২৬৬
 কিংলুঙ্ ১৬৮
 কিষ্কিনী ১৩৫
 কিচ্ছা ২৬৬
 কিৰাত ৪, ১০৯, ১১০
 কিলিং ১০১
 কীচক বেণু ১৩৮
 কীমৰূপ ২৫, ৩১, ৩৮
 কীৰ্ত্তন-ঘোষা ৪৪৭
 কুকি ১০৮, ১১০, ১৩৫
 কুকুৰা ৭৯
 কুটিল লিপি ২১৩, ২১৪
 কুকুৰীপাদ ৩২৫
 কুকুম ১৩৫
 কুঁচিয়া ৫৭
 কুটনীয়তম্ ১১৬
 কুব্ৰেৰ ৪৫, ১২১,
 কুমৰ-হৰণ ৮১
 কুমাৰ ২২, ২৩, ২৭, ৮৭, ৯৬, ১১৫
 কুমাৰ পাল ৩৩, ৩৪
 কুমাৰী-পূজা ১২৭
 কুম্ভকাৰ ৫৮, ১১২, ১১৫,
 কুম্ভা ৮১
 কুলতা ১১৪
 কুলদেৱী ২৯
 কুলসোত্ত ১১১
 কুলা ৮৮
 কুশাগ লিপি ২১৪
 কুশী ৯, ১৩, ১৭, ১৯, ৪৩

৪৬৬ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

কুঁহিয়াৰ ৬২, ৭৮
 কৃষি ব্যৱস্থা ৬০
 কৃষ্ণবজ্ৰপাদ ৩২৭
 কৃষ্ণগুৰু ১৩৫
 কৃষ্ণাচাৰ্য ৩১০
 কৃষ্ণাচাৰ্যপাদ ৩২৫
 কেণ্ট ৮১, ১১২
 কেঁচাইখাতী ৪৫
 কেঁটেলা পহু ৮১
 কেয়ুৰ ১৩৫
 কেৰালা ২৯
 কৈলাস-বৰ্ণনা ৪১২, ৪১৫, ৪১৬, ৪১৭, ৪১৮
 কৈবৰ্ত ৮১, ৯৬, ১১২, ১১৪
 কোকৰাঝাৰ ৩৮
 কোঁচ ৪৩, ৮১, ৮৭, ১১২, ১১৬
 কোঁচ ৰাজ্য ৩৮
 কোমোৰা ৬২
 কোলতা ১১৪
 কোল পাৰ্ক ১৩৭
 কোৱঁৰ ভাগ পূবপাৰৰ ব্ৰহ্মত্ৰ-ধৰ্মত্ৰৰ তামৰ ফলি ২১৬
 কোশকৰণ ভূমি ৬৫
 কোশল ২৩, ২৪
 কোশী ১৬৬
 কোটিল্য ৩, ৫৬, ১০৫, ১২৬, ১৩১
 কোলিন্যা প্ৰথা ৫৮
 কোঁশাৰী ৯৩
 কোশিক ২৬, ১০৭
 ক্ৰমপুঞ্জিত সাধুকথা ২৭১
 ক্ৰোশঞ্জ ৩২
 ক্ষুদ্ৰ সত্য কাহিনী ২৭০
 ক্ষেত্ৰ ১৩০

ক্ষৌমবস্ত্ৰ ১৩৩
 ঝড়গ ৬৪, ৬৯
 খন্টা পাটক ১১১
 খনা ২৮৩
 খনামুখ তামৰ ফলি ৩০, ৩১, ১১১, ১১৩, ১২৯
 খৰাহী ৮৮
 খৰি ৮১, ৮২
 খৰিকা জহা ৭৭
 খৰিচা ৫৯, ১৩৬
 খলিমপুৰ তামৰ ফলি ২৫
 খাচি পাহাৰ ৬৫
 খাচিয়া ৫৮
 খাচী ১০৭, ১২০, ১২১, ১২৩, ১২৬, ১৩০
 খাছাৰ ৪৩
 খাছাৰ দেশ ৪৩
 খাজনা ৭০
 খাট-পালেং ৯৬
 খাম-জাং ৪৯, ৫০
 খাম্‌তি লিপি....
 খাম্-পাং-ফা ৪৯
 খাৰ ১৩৬
 খালৈ ৮৮
 ঝিকিছি ১৩৮, ২১৩
 ষ্টিলুৰ ফাট ৯৭
 খিল ১৩০
 ষীৰ ১৩৬
 খুঞ্জ ৪৯
 খুন ৫০
 খুন-চাম্-লুং ৫০
 খুন-লাই ৪৭, ৪৮, ৪৯
 খুন-লুং ৪৭, ৪৮, ৪৯
 ষেচাৰি ৫৯

খেন-খাম ৪৭
 খেৰ ৮২
 খেলা ধূলাৰ সৈতে জড়িত গীত ২৬২
 খেহ ৪৮
 খোৰা বজা ৮
 খোচ্ ১২০
 গগনা ১৩৮
 গঙ্গা ৮৭
 গছতল ১১৭
 গছতল তামৰ ফলি ২৯, ৩০, ৩১
 গছতল স্তম্ভলিপি ২২০
 গজাঙ্ক ৪১
 গঞ্জাম ১৭
 গাঁও ৫৯, ৮১, ১৩৬
 গড়গঞা ৮
 গড়গঞা বজা ১৩৩
 গড়গঞা লিপি ২১৮
 গড়গাওঁ ৫৭
 গণপতি বৰ্মা ১২
 গণেশ ১২১, ১৩৮, ১৩৯,
 গন্ধৰ্বৱতী ১২
 গবচন্দ ৩২
 গৰু ৭৯
 গৰুডক্ষজপাল ৪৬
 গাখীৰ ১৩৬
 গাজটেঙা ১৩৬
 গান্ধৰ্ব ৫৮
 গান্ধৰ্ব বিবাহ ১২৪
 গামোচা ১৩৭
 গাৰো ৪৩, ৫৮, ১০৭, ১১০, ১১৭, ১২১,
 ১২৩, ১৩০,
 গাৰো পাহাৰ ৬৫
 গাহৰি ৭৯, ৮১

গিয়াচুদ্দিন ৩৯
 গিয়াচুদ্দিন ইৰাজ ৯২
 গিয়াচুদ্দিন বাহাদুৰ চাহ ৯৩
 গিগাৰি ১৬৪
 গীত ১৩৭
 গীত-গোবিন্দ ১৫১
 গুই ৮১, ১৩৬
 গুজৰাটী ১৫৯, ১৬০
 গুজৰী ১৫১
 গুজ্জামণি ১৩৫
 গুণাভিৰাম বৰুৱা ১৯২
 গুপ্তৰীপাদ ৩২৮
 গুপ্ত লিপি ২১৩, ২১৪
 গুৰ ৬২, ৭৮
 গুৰু -চৰিত -কথা ৭৯, ৮৩, ৯৩, ১০১,
 ১০২, ১৯৪
 গুৰ্জৰ ২৯
 গুৱাকুছি তামৰ ফলি ৩০, ১২০
 গুৱা সজীহ মুদৈ ৯৭
 গুৱাহাটী ১৮, ২৩
 গুৱাহাটী তামৰ ফলি ৩০, ১১১, ১১৭,
 ১২৮, ১২৯, ২১৯
 গুহা সমাজ ৩২১
 গোপাল ২৯, ৩০, ৩১, ৩৩
 গোপাল (বঙ্গ) ২৪
 গো-পালন ৬৪
 গোপীচন্দ্র গীত ৩৪২
 গোপীচন্দ্রৰ গান ৩৪১
 গোপীচন্দ্রৰ গান ৩৪২
 গোপীচন্দ্রৰ পাঁচালী ৩৪২
 গোবৰ্দ্ধপাদ ১৭৩
 গোবৰ্দ্ধপুৰ ৬৯
 গোলাঘাট ৩৮, ১১৮

৪৬৮ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

গোবালপাৰা ১৩৩, ১৮৮

গোশীৰ্ষ চন্দন ১৩৫

গৌড় ১৫, ১৬, ১৭, ২৩, ২৪, ২৫, ২৯,

৩০, ৩১, ৩৩, ৩৯, ৪৬

গৌৰীনাৰায়ণ ৪৫, ৪৬

গৌলিকাম ৬৯

গ্রহবৰ্মন ১৬

গ্রাম ১১০

গ্রামেৰুক ১৩১

গ্রীক্-পর্যটক ৬৫

গ্রীচ ১০৬

ঘটকাসুৰ ১০৭, ১০৯

ঘটোৎকচ ৩, ৪৪

ঘন্টা ১৩৮

ঘাঘ ২৮৩

ঘাঘৰ মাঝি ১০২

ঘিউ ৫৯, ১৩৬

ঘোঁৰা ৬৪, ৭৯, ৯৬, ৯৯

ঘোঁৰা নিদান ১২২

ঘেঠকোলা (?) ১০১

চকোৰ ১৩৯

চক্ৰ ২৪

চক্ৰধ্বজ (কমতা) ১৯১

চক্ৰধ্বজ সিংহ (ৰেন) ৪২

চক্ৰপাণি শিকদাৰ ৪১২

চক্ৰান্ধা ১৬৮

চঞ্চালী ১১২

চট্ৰগ্রাম ১৮৮

চণ্ডাল ১১৬

চণ্ডী ১১৮

চণ্ডীদাস ৩৬৬

চণ্ডীদাস চৰিত ৩৬৭

চণ্ডীবৰ ৪০, ১৯৩, ৩৯৭

চন্দন ৮৯, ৯৬, ১৩৫

চন্দে নৌকি ১১১

চন্দ্ৰগিৰি ৪৫

চন্দ্ৰপুৰী ১৩, ১৭, ১৯, ২১, ২৬, ২৭

চন্দ্ৰমুখবৰ্মা ১৪

চপাখাম ১০১

চপাণ্ডিৰি ১০১

চফ্ৰাই ৫২

চম্পা মুগা ১৩৪

চৰগুৰা ৫৪, ১৫৩

চৰহা ৮৮

চৰাই ৮১

চৰাইদেউ ৫০, ৯৩, ১৫৩

চৰ্যগীত ১৯৭, ২২৭, ৩০৯

চৰ্যগীত আৰু বৌদ্ধ তন্ত্ৰ ৩১০

চৰ্যগীতি ৩১০, ৩১১

চৰ্যগীতীকোষ ৩১০, ৩১১

চৰ্যগীতি কোষ বৃত্তি-নাম ৩১০

চৰ্যগীতিপদাবলী ৩১০, ৩১১

চৰ্যচৰ্যটীকা ৩০৯, ৩১১

চৰ্যচৰ্যবিনিশ্চয় ৩১০

চৰ্যাপদ ১১২, ১১৬, ১২৭, ১২৯, ১৩১,

১৩৩, ১৩৫, ১৩৬, ১৩৮, ১৫১, ১৭২, ১৭৩,

১৭৪, ১৭৬, ১৭৯, ১৮০ ১৮২, ১৮৩, ১৮৪,

১৮৭, ১৯১, ৩১০

চাং ৮৮

চাং-চিহ্ন-জেন্ ১৮

চাও-চাং-ন্যোও ৪৯

চাও-ফাং-মুং ৫০

চাটিল্পাদ ৩২৮

চাদৰ ১৩৪

চান্দ সদাগৰ ৯৭

চাপকন ১৩৪

Some Epigraphic Records of the Medieval Period Eastern India ৬

চাম-লুং-ফা ৫০

চাম্ৰা ৬৯

চামৰাৰ বস্ত্ৰ ৮৮

চামৰুক ১৩২

চাৰিং ৪১

চাৰিদুৱাৰ ১০১

চালনী ৮৮

চালুইন ৬৮

চাহাবুদ্দিন ৭৮

চিকন্দৰ চাহ ৯৩

চিকাৰ ৬৩, ১২৭

চিত্ৰাচল ১২২

চি-পাম্ ৫০

চিফুং ১৩৮

চিয়াং ৩৮

চিয়া গীত ২৫০

চিলনী ৮১

চিলাৰায় ৯৩, ১৫১

চিলেট ১৩, ১৪, ১৯, ২১, ২২, ২৬, ১২১

চীন ১২, ১৫, ১৮, ২০, ২১, ৬৮, ১০৯

চুং ১২

চুকাফা ৮৭, ৯৩, ৯৭, ১০৩, ১৪৫, ১৪৮, ১৫৩

চুক্ৰেনমুং ১৩৩

চুঙাপিঠা ১৩৬

চুঙখাম সন্দিৰ ৯২

চুচেংফা ১৫৩

চুচেংফা ৭

চু-ডাং-ফা ৮৬, ৯২, ৯৭, ১৪৯, ১৫৩

চুতীয়া ৪৩, ৪৪, ৮১, ৮৪, ৮৫, ৮৭, ১৪৮

চুতীয়া ৰাজ্য ৩৮, ৭৭

চুতেও-ফা ৩৯, ৪৪, ৫১

চুৰিয়া ১৩৪

চুৰীৰ পহ ৬৫

চুং-মুং ৭, ৮৩, ৮৬, ৯২, ১৭৯

চুণ ১৩৭

চেং-কান্ ৫৪

চেন্-বী ৫০

চেনি ১৩৬

চেপা ৬৪, ৮৮

চেৰেকী ৮৮

চোমদেও ৪৮, ৪৯

চোলাচিমিনিয়া ৪৩

চৌৰোদ্ধৰণিকা ৫০

চ্যাং-কে ৫০

চ্যাক্-চাং-শাই ৫০

চ্য-কা-ফা ৪৪, ৪৭, ৪৯, ৫০, ৫১

চ্য-খাম্-ফা ৪০, ৪৯, ৫০, ৫১, ৫২

চ্য-খাম্-ফা ৫১, ৫২

চ্য-চেং-ফা ৫৪

চ্য জাং ফা ৫৪

চ্য-ডাং-ফা ৪২, ৫৩, ৫৪

চ্য-তু-ফা ৫২

চ্য ফাক্ ফা ৫৪

চ্য-বিন্-ফা ৫১

চ্য-ৰেন্-ফা ৫৩

চ্য-মুং-মুং ৪৬

ছতকা গীত ২৫৮

ছল-সাঁথৰ ২৮১

ছাগ ১৩৬

ছাগলী ৬৪

ছান্দোগ ১১৩

ছান্দোগ পৰিশিষ্ট প্ৰকাশ ৩২, ৩৩, ৭৯

ছিচিও তোচাগি ১০৮

ছিৰিও তোচাগি ১০৮

জগন্নাথ দাস ৩৬৭

৪৭০ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

জঘন বস্তু ১৩৯	জাতি লাউ ৬২
জনক ৯, ১৩, ১০৭	জাতী পটিকা ১৩৯
জনশ্রুতিগত কথা ২৬৫	জাপ ১৩১
জনশ্রুতিমূলক কথা ২৬৫	জাপি ৮৮
জনশ্রুতিমূলক কাহিনী ২৬৫	জামু ৫৯, ৭৯
জনা গাভৰুৰ গীত ৩৪৩	জাৰী ২৫২
জনদৰ্শন ১২০	জাল ৬৪
জনদৰ্শন স্বামী ১১৩	জালুক ৫৯, ৭৮
জন্তুকেদ্রিক সাধুকথা ২৬৭	জালুৰৈ কেওট ১১৪
জন্তু চিকাৰ ৬০	জিকিৰ ২৫১
জপ মন্ত্ৰ ৩০০	জীমূত বাহন ৫৯
জপা ৮৮	জীৰা ৫৯, ৭৮, ১৩৬
জমদগ্নি ৩০	জীৱজীৱক ১৩৯
জয়-টিং-ফা ৪৭	জীৱদেৱী ২৬
জয়দেৱ (নেপাল) ২২৯	জীৱৰা ২১, ২৪
জয়দ্রথ বধ ১৯৪, ৩৭৫, ৪১২, ৪১৫, ৪১৯, ৪২১	জীৱা ১২৪
জয়ধ্বজ পাল ৭, ৪৬	জীৱানন্দ ঠাকুৰ ২৮৪
জয়ধ্বজ সিংহ ১৪৯	জুম খেতি ৬০
জয়নন্দীপাদ ৩২৮	জুলুকি ৬৪, ৮৮
জয়ন্তাপুৰ ১১৮	জে ডোনাল্ড ৮৮
জয়ন্তীয়া ১২০, ১৩৫	জৈমিনীয় অশ্বমেধ পৰ্ব ১৯৯
জয়ন্তেশ্বৰী ১১৮	জোঙ্গ ১৩১
জয়পাল ৩২, ৩৩, ৩৪, ৯২, ১৩৩	জোঙ্গক ১৩১
জয়মাল ২৬, ২৭	জোনাগিৰি ৪৫
জয়ৱৰ্ধন ২৩	জৌগড় ১৬৪
জৰ্জ্ আব্রাহাম গ্ৰিয়ার্চন ১৫৯, ১৬১, ১৮৮, ৩৪১	জ্ঞানমূলক সাঁথৰ ২৭৯
জলকীয়া ৬০, ৭৮	জ্ঞানসিদ্ধি ৩১৬
জলপাইগুৰি ১৮৮	টংচু নগা ৫৪
জহা ৭৭	টঙালি ৮৪, ১৩৪
জাকৈ ৬৪	টকা ৮৮, ১৩৮
জাগলো ১৩২	টাই ৪৭
জাতৰৱৰ্ন ২৯, ৩১, ৩২	টাই-তিপাম ৫৩, ৫৪
	টিমন ৮৩
	টিমাছা ৪৩

টিয়া ৬৫	১৪, ১৫, ১৬
টীকাসৰস্ব ২২৭	ডুনি ৮৮
টুইল-খা-মালিক-উজ্বেক ৩৯	ডেটুচুং ৮
টুনি ৮১	ডেফ্ৰিপ্টিভ্ একাউন্ট অব্ আসাম ১০১
টেট্‌কুটি ২৬৯	ডোং ৬৩
টেট্‌কুটিমূলক প্রশ্ন ২৭৯	ডোম্বী ১১৬
টেটোনৰ সাধুকথা ২৭০	ঢল নদী ১১৮
টেটোনৰ সাধুকথা ২৭০	ঢাক ১৩৮
টেন্-চা ৫০	ঢাকা ২৬, ১৮৮
টেভেৰ্নিয়াৰ ৫৯, ১০১	ঢাৰি ৮৮
টোকাৰী ১৩৮	টেকীয়া ৮১
টোকাৰী গীত ১৭১, ১৭২, ২৫৭	টেন্‌চণপাদ ৩২৯
টোপনি নিওৱা গীত ২৬০	টোল ১৩৮
টোলোমি ১০৬	তথাগত ১১৯
ডংক ২৮৩	তন্তুৰায় ৫৮
ডগৰ ১৩৮	তন্ত্ৰ ২৯৩
ডফলা ১১০	তন্ত্ৰ-মন্ত্ৰ ১২৮
ডবাক ১০, ১২, ১৪	তবকৎ ই-নাচিৰি ৩৫, ৬৯, ৯৯, ১০১
ডম্বৰু ১৩৮	তৰাই ১০২
ডলা ৮৮	তৰুপ ১৩১
ডাউক ৮১	তাওকাক ৮৩
ডাক ২৮৩	তাও-চুলাই ৫২, ৫৩, ৫৪
ডাকৰ বচন ১৭২, ২৮৩	তাচিন্-প্লাও ৫৩
ডাকাৰ্গৰ ২৮৩, ৩১০	তাজিক ২৯
ডিব্ৰুগড় জিলা ৩৯	তাডকপাদ ৩৩০
ডিমৰু ৫৯	তাঁতী ৮৩, ৯৬, ১১৫
ডিমলা ৪০	তাম ৬৬, ৮৫, ৯৬, ৯৯
ডিমাছা ৪৩, ১১০	তামিল ২১৩
ডিমাপুৰ ৪৪, ৪৭	তামোল-পাণ ৫৯, ৭৯, ১৩৬, ১৩৭
ডিম্বেশ্বৰ নেওগ ১৬৩, ১৮৮, ২১৭, ৩৪৩, ৩৬০, ৩৭০, ৩৭৪, ৩৭৬, ৩৮২, ৩৮৪, ৪১৯, ৪২১, ৪২৪	তাম্ৰধ্বজ ৪১, ১৪৭, ১৯১, ১৯২, ৪২১, ৪২২, ৪২৩, ৪২৪, ৪২৯, ৪৩৫
ডিম্বেশ্বৰ শৰ্মা ১০৯, ১১৩, ১১৪, ১৩১	তাম্ৰেশ্বৰীৰ মন্দিৰ ১১৮, ১২১, ১৫৩
ডুবি তামৰ ফলি ৮, ৯, ১০, ১১, ১২, ১৩,	তাম্ৰেশ্বৰী মন্দিৰৰ তামৰ ফলি ২২০
	তায়িক ২৯

৪৭২ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

তাৰনাথ ১২৮, ৩২৩, ৩২৪, ৩২৫, ৩২৬, ৩২৭, ৩২৮, ৩২৯, ৩৩০, ৩৩১, ৩৩২, ৩৩৩, ৩৩৪, ৩৩৫, ৩৩৬, ৩৩৭, ৩৩৮ তাৰাপদ মুখাৰ্জী ৩১০, ৩১১ তিস্ক্যদেৱ ৩৩, ৩৪ চিনিচুকীয়া ৩৯ তিপাম ৫৩ তিব্বত ১৮, ৬৮, ৬৯, ৯৭, ১০৯, ১৩৪, ২২৮ তিব্বত-বৰ্মী ১১০ তিল ৬১, ৭৮ তিস্তা ৮, ২৬, ২৭ তীক্ষ্ণকান্তা ৫ তুলু ২১৩ তৃতীয় জয়সিংহ ২৯ তৃতীয় বলৰমা ৮, ২৩, ২৬, ২৭, ২১৫ তেজপাত ৫৯ তেজপুৰ ৮৭, ৯৩, ১৪৭ তেজপুৰ তামৰ ফলি ২৫, ২৬, ১১২, ১১৩, ১১৬, ১১৭, ১২৪ তেঁতেলি ৬২, ৭৯ তেমছি ১৩৮ তেমে-ৰাও ৫৩ তেলেগু ২১৩ তৈলপৰ্ণিকা ৮৯, ১৩১ তোৰা ৫৯ ত্যাও-খাম্ থি ৫২ ত্যাও-খুঞ্জুন ৪৯ ত্যাও-পুলাই ৪১, ৫২ ত্যাগসিংহ ৮, ২৭, ২৮ ত্ৰিনাথৰ পূজা ১২৭ ত্ৰিপুৰা ১৪, ১৯, ২১ ত্ৰিপুৰা বালাৰ পূজা ১২৭ ত্ৰিপুৰা-সুন্দৰী ১২৪	ত্ৰিপুৰী ৪৩ ত্ৰিশোতা ২৬ ত্ৰিছত ১৮ থাও-চেও-থেন্ ৫৩ থাও-মু-তাত্যাবিমু ৫৩ থাও-মুং-লুং ৫০ থাও-মুং-লুংতাথিখিন্ ৫২ থাকুন্-থা ৫১ থানেশ্বৰ ১৬ থেকেৰাফুলীয়া ২৫০ থেলন্ ১২১ দ-আটি-গাওঁ ৮৭ দই-কা-ৰং ৪৯ দই-খাম্ ৫০ দক্ষপাটি নৌকি ৩১১ দক্ষিণ-পশ্চিম কামৰূপী ১৮৮ দক্ষিণ-পূব বঙ্গ ১৩, ১৪, ২২, ২৬ দক্ষিণ ব্ৰাহ্মী ২১৩ দক্ষিণাত্য ২৯ দণ্ডি ৫৮ দণ্ডকাৰ ১১৪ দণ্ডবতী ১১ দ পৰ্বতীয়া ১২১ দবা খেল ১২৭ দৰং ৩৯, ৪১, ১১৭ দৰং ৰাজ বংশাৱলী ১৯২, ১৯৩ দৰ্শী ১৭০ দলুহাসনা ১২৩, ১৩৭ দামোদৰ গুপ্ত ১২৬ দায়ভাগ ৫৯, ১৩০ দাৰিকপাদ ৩৩০ দাৰ্জিলিং ১৮৮ দিক্ৰ ৬ দিক্ৰবাসিনী ৪, ৫, ৬, ৭, ৮, ৫৬, ১১৮
---	--

দিখৌ ৭, ৩৮, ৩৯, ৪৪, ৪৭, ৫০

দিখৌমুখ ৫০

দিগৰবাসিনী ৭

দিগ্লেখৰমা ২১, ২৪

দিচাং ৫০

দিচৈ ১৩২

দিজ্জৰতিহড়ী ১১৫

দিজ্জিনা ৮, ২৭, ৩২

দিনাজপুৰ ৩২, ৩৮

The History of Medieval Assam
৩৯৫

The Life of HiuenTsiang ১৭

*The Old Bengali Language and
the Text* ৩১০

*The Origin and Development of
the Bengali Language* ২২৯, ৩১২

*The Place of Assam in the History
and Civilisation of India* ৯

দিহিং ৫৩, ৫৪

দিহিঙীয়া ৰজা ৭, ৮, ৮৩, ৯২, ১৪৯

দিম্ৰী ৬৯

দিষ্টান ২৭৮

দীনেশ চন্দ্ৰ সৰকাৰ ৬

দীনেশ চন্দ্ৰ সেন ৩৫৬, ৩৫৮, ৩৬০

দুকুল বস্ত্ৰ ৩১৪

দুবৰণি ২২

দুৰ্গা ৮৭, ১৩৯

দুৰ্গাবৰ ১৫১

দুৰ্জয়া ২৯, ৯৬, ১১৯

দুৰ্লভ নাৰায়ণ ৪০, ৪১, ১০২, ১৯১, ১৯২,
১৯৩, ৩২১, ৩৭৪, ৩৭৫, ৩৯৫, ৩৯৬,
৩৯৭

দুৰ্লভা ৩০

দুৰাৰ ৯৮

দৃষ্টান্ত ২৭৮

দেউৰী ১২১

দেওপানী ২১, ১১৮, ১৩৯

দেওপাৰা তামৰ ফলি ৩.

দেৱজিৎ ৪৫৩, ৪৫৫, ৪৫৬, ৪৫৭, ৪৫৮,
৪৫৯

দেৱদাসী ৫৮, ১২৩

দেৱমতী ১৩

দেৱানন্দ উৰালি ১৬৭, ১৭০, ১৭১, ৩৭৪

দেৱীদাস ১৯৩

দেৱীপুৰাণ ১১৭

দেৱেন্দ্ৰ নাথ বেজবৰুৱা ৩৭০

দেহ বিচাৰৰ গীত ১৭১, ১৭২, ২৫০

দৈ ৫৯, ১৩৬

দৈ-কাণ্ড-ৰঙ্গ ৫৪

দৈৱজ্ঞ ১১২, ১১৪

দৈৱ বিবাহ ১২৪

দোলা ৯৬

দোহাকোষ ৩১০

দ্বিতীয় চন্দ্ৰগুপ্ত ৯৩

দ্বিতীয় জয়দেৱ ২৩

দ্বিতীয় দেৱগুপ্ত ১৬

দ্বিতীয় বলৰমা ২৪, ২৭

ধনশিৰী ২১

ধনসী ১৫১

ধনাত্মক তুল্যতা ২৭৬

ধনাত্মক নিমিত্ততা ২৭৬

ধনিয়া ১৩৬

ধনন্তৰি ২৯২

ধৰ্ম ১১৯

ধৰ্মধ্বজপাল ৪৭

ধৰ্ম নাৰায়ণ ৪০, ৪১, ১৯১, ৩৯৫, ৪২১

ধৰ্মপাল ৩০, ৩২, ৩৩, ৩৯, ১১১, ১১৩,

১১৪, ১১৫, ১১৮, ১২২, ১২৯, ১৩১.

৪৭৪ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

২১৯, ২২৬	নৰক ৪, ৯, ১০, ৫৬, ১০৭, ১০৯, ১১৬,
ধৰ্মপালি (গৌড়) ২০	১১৭, ১৪৫, ১৫২
ধৰ্মমঞ্জল ৩৫৬	নৰকাসুৰ গাওঁ ২৩
ধৰ্মসভা ২২৮	নৰনাৰায়ণ ৮, ৯৩, ৯৪
ধৰ্মানন্দ মহাভাৰতী ৩৪১	নৰবলি ১১৭, ১১৮, ১২১
ধৰ্মীয় কৃত্যৰ সৈতে জড়িত মন্ত্ৰ ৩০২	নৰা ৰজা ৫৪
ধৰ্মীয় গীত ২৪৬	ন.ৰজা ৫৩
ধৱলগিৰি ৪৫	নলবাৰী ৩৮
ধান ৫৯, ৬১	নৱগ্ৰহ মন্দিৰ ১২২
ধামপাদ ৩৩১	নৱ্য কামৰূপী লিপি ২২০, ২২১
ধীতিক ১১৯	নাও ৬৭, ৮৬, ৯৬,
ধীমাল ৪৩	নাগৰ ১৫৯
ধীৰনাৰায়ণ ৮, ৪৬	নাগশঙ্কৰ ১৫৩
ধুতী ১৩৪	নাগামিজ ১৫৮
ধুবুৰী ৩৮	নাগাৰ্জুন ১২০
ধুমছি ১৩৮	নাগালেণ্ড ১৫৮
ধূনা ৮২	নাঙল ৬১
ধেমাজি ৩৯	নাচিৰুদ্দিন ৩৪, ৩৯
ধৌলী ১৬৪	নাথ সম্প্ৰদায় ১৭১, ১৭২
ধানী বুদ্ধ ৩১৫	নামগড় ৮১
নগা ৮১, ১০৮, ১১০	নামদাং ৩৯, ৪৪, ৫১
নগাওঁ ৩৮, ১১৮, ১২১	নামৰূক ৫০
নগাওঁ তামৰ ফলি ২৭, ১১৩, ১১৫, ১৩০,	নামলিঙ্গানুশাসন ২২৭
২১৫	নাৰায়ণ দাস ৯৩
নগাজৰী খনিকৰ গাওঁ প্ৰস্তৰ খণ্ড লিপি ২১৪	নাৰায়ণ দেৱ ২০, ৩৬১, ৩৬৪
নগাফাট ৯৭	নাৰায়ণ ৰমা ১৩
নগেন্দ্ৰ নাথ আচাৰ্য ৩৯৫	নাৰিকল ৬২, ৭৯
নগেন্দ্ৰ নাথ বসু ৩২, ৩৫৭, ৩৫৯	নালন্দা ১০, ১১, ১২, ১৪, ১৫, ১৭, ১৮,
নঙ্গ-এণ্ডাঙ্গ ৫৪	১৯, ২২
নট ১২৩, ১৩৭	নালন্দা বিশ্ববিদ্যালয় ২২৮
নটী ১২৩	নাহালিয়া ৪৩
নদীয়া ৩৫, ৩৬	নিউভিল ১১৪
ন দুৱাৰ ১০১	নিচুকনি গীত ২৬১
নয়নদেবী ১৪	নিধনপুৰ তামৰ ফলি ১২, ১৩, ৫৭, ১১৫,

১১৬, ১৩৪, ১৬৩, ২১৫, ২২১
 নিৰঞ্জন সম্প্রদায় ১৭১, ১৭২
 নিধাৰিত গঢ়ী সাধুকথা ২৭১
 নীতিপাল ৮, ৪৭
 নীলগিৰি ৪৫
 নীলধ্বজ ৪২, ১৯১
 নীলৰতন সেন ৩১০, ৩১১
 নীলাচল ১৩৯
 নীলাচল তামৰ ফলি ২১৬, ২২০
 নীলাম্বৰ ৪২, ১৯১, ৩৮৫
 নুপুৰ ১৩৫
 নুমলিগড় ১৩৮
 নৃত্য ১৩৭
 নৃপ শক ১৫
 নেপাল ১৮, ২৩, ৫৬, ২১৩, ২২৮, ২২৯
 নেপুৰ ১৩৮
 নৈদানিক মালিতা ২৩৭
 নৈদানিক সাধুকথা ২৬৯
 নোৱাখালি ১৮৮
 নৌকি ৫৮, ১১১, ১১৫
 ন্যায়কৰণিক ১১৩
 ন্যায়পাল ২৯, ৪৫, ৪৬
 পচলা ৫৯
 পঞ্চ খণ্ড ১৩
 পটন্তৰ ২৭৪
 পটমঞ্জৰী ১৫১
 পটহ ১৩৮, ১৫১
 পতঞ্জলি ১৫৯, ২৯৭
 পদ্মোৰ্ণা ১৩২
 পদুম ১৩৯
 পদ্মা ১২৩
 পৰমান্ন ১৩৬
 পৰশুকুণ্ড ৩০
 পৰশুৰাম ৩০

পৰিহৰেশ্বৰ ১১৭
 পৰীক্ষিত হাজৰিকা ৩১০
 পৰ্বতীয়া তামৰ ফলি ১৩০, ২১৫
 পৰ্বতীয়া লোণ ১৩৬
 পল' ৬৪
 পৰিএ অসম ১১৭
 পশুপতি ২৩
 পশুপতি মন্দিৰ ২২৯
 পশুপালন ৬৩
 পশ্চিম কামৰূপী ১৮৮
 পশ্চিমপাৰ পৰানামব্রহ্মপুত্ৰৰ তামৰ ফলি ২১৬
 পশ্চিম বঙলা ১৬১
 পশ্চিমী হিন্দী ১৫৯
 পাং-চ্যুং ৪৭, ৫০
 পাইক ক্রয় আৰু হযৰ্গীৰ মাধৱলৈ দানৰ
 তামৰ ফলি ২১৬
 পাই-নাম-কিঙ ৫০
 পাগলাটেক ১৩৩
 পাণ্ডৰি ১৩৪, ১৩৫
 পাচি ৮৮
 পাঞ্জাবী ১৫৯
 পাট ৬৫
 পাটক ১১০
 পাটকাই ৪৭, ৫৪
 পাটনা ৬৯
 পাট-মুগা ৯৬
 পাটলিপুত্ৰ ৬৯
 পাটাদৈ ৬৭
 পাশু ৪৪, ১২১, ১৩৮
 পানী-কাউৰী ৮১
 পানৈ ১৩৫
 পামেত-পুং ৪৯
 পায়স ৫৯, ১৩৬
 পায়ী ৬, ৮

৪৭৬ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

পাৰ ৫৯, ১৩৬

পাৰ-লৌহিত্য ৩

পাৰিজাত-হৰণ ৪৫৮

পাৰ্জিটাৰ ১০৭

পালক ২২, ২৩, ২৭

পালি ১৬৪

পালিগ্ৰন্থ ১৫৯

পাশা খেল ১২৭

পাহাৰী ১৫৯

পিঠা ৫৯, ১৩৬

পিতল ৬৬, ৯৬, ৯৯

পিতৃতন্ত্ৰ ১৩০

পিপৰাৰা তুপ ২১৩

পিপলি ৫৯, ৭৮

পি. ভট্টাচাৰ্য ৩৩

পিৰ মহম্মদ য়ুচুফ ২৮৪

পীতাম্বৰ দ্বিজ ১৫১

পুঠিমেছীয়া ভকতসেৱা ২৫০

পুণ্ডৱৰ্ধন ৮, ১২, ১৩, ১৪, ১৫, ১৯, ২৩, ২৪, ২৬, ৩১, ৩২, ৩৩, ৩৪

পুৰণি কামৰূপৰ ধৰ্মৰ ধাৰা ১২০

পুৰন্দৰপাল ৩০, ১২৮, ২১৯, ২২৬

পুৰা কথা ২৬৫

পুৰাণ কথা ২৬৫

পুৰাণগত মালিতা ২৩৫

পুৰাবৃত্ত কথা ২৬৫

পুৰুষোত্তম দাস ২২০

পুষ্পভদ্ৰা তামৰ ফলি ৩২, ১১৫, ১২২, ১২৪, ২২৬

পুষ্যৱৰ্মা ১০, ১১, ১১৬, ১৯৩

পুষ্যাভিষেক ১২৭

পুৰ কামৰূপী ১৮৮

পূজা ৫৭

পুৰপাৰ আদি পৰকনাৰ দেৱত্ৰৰ তামৰ ফলি ২১৬

পুৰ বঙ্গ ৩১, ৩২

পূৰ্ণধৰীয়া সকাম ২৫০

পূৰ্ণসেৱা ২৫০

পূৰ্ণিয়া ১০৭, ১৬৬

পূৰ্ব বঙলা ১৬১

পূৰ্ব মৈথিলী ১৬৬

পূৰ্ব হিন্দী ১৫৯

পৃথু ৩৯

পৃথুপাল ৩৪, ৩৫

পেটাৰি ৮৮

পৈশাচ ৫৮

পৈশাচ বিবাহ ১২৪

পৈশাচী ১৫৯, ১৬৮

প্ৰণৱজ্যোতি ডেকা ৩১০

প্ৰজ্ঞাপাৰমিতা ৩১৪, ৩২০

প্ৰজ্ঞোপায় বিনিশ্চয় সিদ্ধি ৩১৮

প্ৰতাপ চন্দ্ৰ চৌধুৰী ২৪, ৩২, ১০৬, ১১৪, ১১৭, ১২৫, ১২৬, ১২৯, ১৩৪

প্ৰতাপধ্বজ ৫০, ৫১, ১৯১, ৩৯৫

প্ৰত্ন বাঙ্গালা ১৭৩

প্ৰথম সোমেশ্বৰ ২৯

প্ৰফুল্ল দত্ত গোস্বামী ৩৪৩

প্ৰবচন ২৭৪

প্ৰবাদ ২৭৪

প্ৰবাদ-বচন ১৭২

প্ৰবোধ চন্দ্ৰ বাগ্চী ৩১০

প্ৰয়াগ শিলাস্তম্ভ লিপি ২১৪

প্ৰহাস ৩২, ৩৩, ৯২

প্ৰহ্লাদ চৰিত ১৪৭, ১৯৪, ১৯৫, ১৯৮, ৩৭৪, ৩৭৬, ৩৮১, ৩৯৫, ৪২১

প্ৰাক-অসমীয়া লিপি ২২০, ২২১, ২২২, ২২৩, ২২৪

প্ৰাক-দ্ৰাভিড ১০৮

প্ৰাগজ্যোতিষ ৩, ৯, ১০, ১৮, ২৫, ৩৩, ৫৫,

১১৭, ১৬৬
 প্রাগজ্যোতিষ-কামৰূপ ১৬৬
 প্রাগজ্যোতিষ নগৰ ৭৯
 প্রাগজ্যোতিষপুৰ ৯৬, ১০৫, ১০৯, ১১১,
 ১২০, ১২২
 প্রাগজ্যোতিষ প্রাকৃত ১৬৬
 প্রাচীন অসমীয়া লিপি ২২০, ২২১, ২২২,
 ২২৩, ২২৪
 প্রাচীন নাগৰী ২১৩
 প্রাচৈতস ১১৩
 প্রাচ্য-শাসনাবলী ২১৬
 প্রাজাপত্য বিবাহ ৫৮, ১২৪
 প্রাজা ৩০
 প্রার্থনা মন্ত্ৰ ৩০১
 প্রালম্ব ২৫, ২৬, ২৭
 প্রোথিতকৰণ ৬০
 প্লিনি ১০৮
 প্লেটো ১৩
 ফকৰা ২৭৭
 ফকৰা-যোজনা ২৭৪
 ফটিয়া-ই-ইব্রিয়া ১৩২
 ফটি ৯৮
 ফাহিয়ান ৯৩
 ফুলগুৰীয়া ৪৩
 ফেস্ফুৰা ৪১
 ফেটী সাপ ৮১
 ফ্ল্য-কিন-ম্যুঙ ৫০
 বংশৰ পৰগনাৰ ব্রহ্মত্বৰ তামৰ ফলি ২১৬
 বক্তিয়াৰ খিলিজি, “বখতিয়াৰ খালজি”
 চাওক
 বক্ষ কপাট-পট ১৩৫
 বখতিয়াৰ খালজি ৩৫, ৩৯, ১৫০, ১৫৩
 বগৰি ৫৯, ৭৯

বঙৰা ৩২, ৩৩
 বঙলা ১৫৯, ১৬০, ১৭২, ১৮৭, ২১৩
 বঙলা লিপি ২১৭
 বঙ্গদেশ ২১, ৩২, ৩৫, ৩৮, ৫৭, ৬৯, ৯৩,
 ১২১, ১৬৭
 বঙ্গীয় সাহিত্য পৰিষৎ ৩১০, ৩৬২
 বঙ্গোপসাগৰ ২৪
 বচোৱাল ৮৪
 বজালী ১৮৮
 বজ্রদন্ত ৫৬, ১১৭
 বজ্রদেৱ ২২, ২৩, ২৭
 বজ্রযান ৩০৯
 বজ্রযানী সিদ্ধসকল ২২৭
 বজ্রলেপ ৬৭
 বড়গোকুৰ্গিৰি ২২৯
 বড়লী গাওঁ ২১৩
 বডাৰী ১৫১
 বড় চন্দ্ৰীদাস ১৬৬
 বড়ো ৪৩, ১০৮, ১১০, ১৩৬, ১৭৪
 বদৌচা ৫১
 বনঘোষা ২৫৪
 বনমাল ২৭, ১৬৩, ১৭৪
 বনমালাদেৱ ১১৩, ১২৭, ১২৯, ১৩০
 বনমালৰমা ৯২, ১১২, ১১৬, ১২৪, ১৩০,
 ১৩৭
 বনমালৰমাদেৱ ২৩, ২৫, ২৬, ২৭, ২১৫
 বন মানুহ ৬৫
 বনৰীয়া গাহৰি ৫৯
 বক্রবাহ পৰ্ব ৮১
 বক্রবাহনৰ যুদ্ধ ১৩৭, ১৩৮, ১৪৮, ১৯৪,
 ১৯৫, ১৯৮, ৩৯৫, ৩৯৭, ৩৯৯, ৪০১,
 ৪১১, ৪২১, ৪২৪
 বক্রবাহনৰ যুদ্ধ আৰু তাম্ৰলীজৰ যুদ্ধ ৩৯৬,

৪৭৮ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

৩৯৭

বৰকুমাৰ ৮৭

বৰখেলীয়া ভকত সেৱা ২৫০

বৰগঙ্গা ১৪, ১১৮

বৰগাওঁ তামৰ ফলি ২২, ২৩, ২৭, ২৮, ২৯,

১১১, ১১৩, ১২৭, ১৩৪, ১৩৫, ১৩৬

বৰগীত ১৫২

বৰচলা গাওঁ ৮৭

বৰতোপ ৮৬

বৰদুৱাৰ ৫০

বৰনদী ৩৮

বৰপথাৰ ২২

বৰপেটা ৩৮, ১৮৮

বৰসেৱা ২৫০

বৰহাট ৮১

বৰা ৭৭

বৰাক ৪৩

বৰাহ ১৩৬

বৰাহমিহিৰ ১৭২, ২৮৩, ৩৫১

বৰাহী ৮৪, ১৪৫, ১৪৮

বৰাহী ৰাজ্য ৭৭

বঁৰীয়া ১১৫

বৰেন্দ্ৰ ১২

বৰ্ণনাত্মক সাঁথৰ ২৭৮

বৰ্ত্ত ৩৫

বলভদ্র পূজা ১২১

বলৰমা ৮, ১১, ১২, ২৪, ৫৭, ১১১, ১১৩,

১১৫, ১১৬, ১২২, ১২৫, ১২৭, ১২৯,

১৩০, ১৩১, ১৩৬, ১৩৭, ২১৫, ২২৮

বলিবিধান ৫৭, ১১৭

বল্লভদেৱ ৩৪, ৩৫

বসন্তৰঞ্জন ৰায় ৩৪২, ৩৬৬

বসুন্ধৰ বৰ্মন ২২

বসুমতী ১০৯

বহু-পতি-বিবাহ ১২৬

বহু-পত্নী-বিবাহ ১২৬

বহু-বিবাহ ১২৫

বাওধান ৬১, ৭৭

বাংলা চন ১৫

বাংলাদেশ ১৩, ৩২, ৩৮

বাংশী ১৩৮

বাক্চা ১০১

বাঘ ৮১

বাজসেনেয়ী ১১৩

বাটক ১১১

বাটে ৮৬, ৯৬

বাণভট্ট ১৫, ১৬, ২১, ৫৬, ৯৩, ১০৫, ১৩২,

২১৯, ২২৬

বাণীকান্ত কাকতি ১১৪, ১১৬, ১১৭, ১১৯,

১৬০, ১৮৮, ৩৬৮, ৩৭০, ৩৯৬

বাথৌ ১৩৮

বাথৌ-ব্রাই ১২১

বাদ্য ১৩৭

বান্দৰ ৮১

বামন পুৰাণ ১৯৮

বামী ৫৯

বামুণী কোঁৱৰ ৫৩, ৯২, ৯৭, ১৪৯

বামুণী পাহাৰ ১৩৮

বামুণীয়া লিপি ২১৮

বাৰমাহী গীত ২৪৪

বালা ১৩৫

বালাটিকা ১৩৫

বাল্খ ২৯

বান্ধীকি ১৯৮

বান্ধীকি ৰামায়ণ ৪৪০

বাল্য বিবাহ ১২৪, ১২৫

বাসলী মাহাত্ম্য ৩৬৭
 বাসুদেব পূজা ১৯৪
 বাসুদেবীয় সম্প্রদায় ১১৮
 বাস্তবানুগ মালিতা ২৪৩
 বাস্তব ১৩০
 বাঁহ ৬৭, ৮১, ৮২
 বাঁহ-বেঁতৰ শিল্প ৮৮
 বাহিক ২৯
 বাঁহী ৮৮, ১৩৭
 বি এল মেহতা ২৮৫
 বিক্রমধ্বজপাল ৪৬
 বিক্রমাদিত্য ৩১
 বিগ্রহস্তম্ভ ২২, ২৩, ২৮
 বিচনী ৮৮
 বি চি ল ১০৭
 বিজয় ২২, ২৭
 বিজয়ধ্বজ ৪৬
 বিজয়ধ্বজপাল ৩৮, ৪৬
 বিজয়সেন ৩৩, ৩৪
 বিজ্ঞানবতী ১৪
 বিদেহ ১০৭, ১০৯, ১৬৬
 বিদ্যাপতি ৩৬৬
 বিধবা বিবাহ ১২৫
 বিনয়তোষ ভট্টাচার্য ২২৯
 বিনয় মন্ত্ৰ ৩০২
 বিনোদ বিহারী কাব্যতীর্থ ৩৫৭
 বিপণি ১৩৩
 বিবিধ বিষয়ক গীত ২৬২
 বিয়ানী বাজার ১৩
 বিয়াৰ গীত ২৫৬
 বিৰিঞ্চি কুমাৰ বৰুৱা ১০, ১০৭, ১১৭,
 ১১৯, ১২০, ১২৬, ১৩৪, ১৩৫, ১৩৬,
 ১৪০, ৩৯৫

বিন্ধ্য ৩১
 বিশ্বসিংহ ৮, ৯৩
 বিশ্বামিত্র ১০৭
 বিশ্বেশ্বৰ হাজৰিকা ১৬৬ ১৮৮
 বিশ্ববৎতিথি ১২৭
 বিশ্ব ৮৭, ১০৯, ১৩৮, ১৪৭
 বিশ্ব মূৰ্তি ১১৮
 বিশ্বয়াবহ মালিতা ২৪১
 বিশ্বয়াবহ সাধুকথা ২৬৮
 বিহু দিয়া ৬৪
 বিহাৰ ১৫, ১৮, ৩৫, ৯৩, ১৬৬
 বিহু গীত ২৫৪
 বীজমন্ত্ৰ ২৯৯
 বীণ ১৩৮
 বীৰপাল ৪৫, ৪৬
 বীৰবাছ ২৬, ২৭
 বুকু কাৰ্য্য ৯৩
 বুঢ়া দেৱতা ১২১
 বুঢ়ী গুমা ১০১
 বুঢ়ীদিহিং ৩৮, ৩৯, ৪৪, ৪৭, ৫০
 বুদ্ধদেৱ ৯, ২০, ৩১২, ৩১৩, ৩১৪
 বুদ্ধদেৱ (গৌড়) ৩৩
Buddhist Mystic Songs ৩১০
 বুৰঞ্জী-বিবেক-ৰত্ন ১৯২
 বন্দারনী কাপোৰ ৮৩
 বৃষোদকা ৫
 বৃহৎসংহিতা ৩৫১
 বেজেনা ৬২
 বেণীমাধৱ বৰুৱা ১৬৪, ১৬৬, ১৮৮
 বেণুধৰ শৰ্মা ২৩৩
 বেঁত ৬৭, ৯১
 বেতনা ৪১
 বেদ ১২৬.

৪৮০ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

বেল ৫৯
বেলেড ২৩৩
বেশ্যা ১২৩
বৈতানিক ১২৭
বৈদ্য ১১২
বৈদ্যগড় ৪১
বৈদ্যদেৱ ৩৩, ৩৪, ৪০, ১২৪
বৈষ্ণৱ ১১৬
বৈষ্ণৱ ধৰ্ম ৫৭
বৌদ্ধ ১১৬, ১১৯, ১২০, ১৪৯
বৌদ্ধ ধৰ্ম ও চৰ্যা-গীতি ৩১০
বৌদ্ধ সংস্কৃত ১৫৯
ব্যঙ্গ্যাত্মক মালিতা ২৪২
ব্যৱহাৰি হৰদত্ত কায়স্থ ১১৩
ব্ৰহ্মকুণ্ড ৩০
ব্ৰহ্মদেশ ৬৯
ব্ৰহ্মপাল ৮, ২৭, ২৮, ২৯, ৩৩, ১৯৩
ব্ৰহ্মপালৰ বংশ ১১৬
ব্ৰহ্মপুত্ৰ ৭, ৮, ১৪, ৩৮, ৫৬, ৮১
ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকা ৪৩, ৩৭
ব্ৰহ্মা ১৯, ১৩৮
ব্ৰাচড় ১৫৯
ব্ৰাহ্ম বিবাহ ৫৮, ১২৪
ব্ৰাহ্মণ ৫৭, ৫৮, ১১২
ব্ৰাহ্মী ২১৩
ব্ৰিতু ৩৫
ভক্তিমাধৱ চট্টোপাধ্যায় ৩৫৬, ৩৫৭, ৩৬০
ভগদত্ত ৩, ২৫, ৫৬, ১০৫, ১০৯, ১৪৫
ভগদত্ত ৰোগ ১২৮
ভড্ডৰ ২৮৩
ভড্ডৰী ২৮৩
ভদ্ৰশ্ৰিয় ১৩১
ভদ্ৰসেন ৪৫

ভৰচন্দ্ৰ ৩২
ভৱানন্দ ৯৮
ভাইতবাৰী ২২৯
ভাং ৭৮
ভাগলপুৰ ১৭, ১৮
ভাগৱত পুৰাণ ৫৬
ভাজনী ৪২, ৫৪
ভাটৌ ৬৫
ভাৱাইয়া গীত ২৫৮
ভাস্কৰ ৰমা ১৩, ১৪, ১৫, ১৬, ১৭, ১৮, ১৯, ২০, ২১, ২২, ৫৫, ৫৬, ৫৭, ৬২, ৭৮, ৭৯, ৮৩, ৯৩, ১০১, ১১৩, ১১৬, ১১৯, ১২০, ১২২, ১২৪, ১৩০, ১৩২, ১৩৪, ১৩৫, ১৩৬, ১৩৭, ১৪৯, ১৫৪, ১৬৩, ১৭২, ১৭৪, ২১৪, ২১৫, ২১৯, ২২১, ২২৬, ২২৮
ভাস্কৰাৰ ১৫
ভাস্কৰ্য ১৩৭
ভিচ্জট ১২৪
ভিট্টি ১৩০
ভিতৰুৱা সকাম ২৫০
ভিষজ্ ১১২, ১১৫
ভীম ৩, ৪৪, ১৩২
ভীম চৰিত ৪৫৭
ভীষ্মক ৪৫
ভুটান ৬৮, ১৩৪
ভূৱনেশ্বৰ শিলালিপি ২১৭
ভূসুকপাদ ১৭৩, ৩৩৩
ভূঞা ৰাজ্য ৩৮, ৭৭
ভূতিৰমা ১৩, ১৪, ১৭, ১৯, ২৬, ১১৮, ১৩০, ১৬৩
ভূদেৱ চৌধুৰী ৩৫৮, ৩৫৯, ৩৬২
ভূমি ১০৯
ভূমি ক্ৰয় বিক্ৰয়ৰ শিলালিপি ২১৬

ভেড়া ৭৯
 ভেমছি ১৩৮
 ভেৰি ১৩৮
 ভেৰী ৮১
 ভৈৰৱ ১৩৯
 ভৈৰৱী ১৫১
 ভৈৰৱী মন্দিৰ ১১৮
 ভোগৱতী ১৪
 ভোজপুৰী ১৫৯
 ভোজৱৰ্মন ২৯
 ভোৰতাল ১৩৮
 মকৰকুণ্ডল ১৩৫
 মগধ ১৪, ১৫, ২১, ২২, ৩১, ১৬১
 মগহী ১৫৯
 মগু ৭৮
 মঙ্গলদৈ ১২১
 মঙ্গোলীয় ১১৭
 মঙ্গোলীয়সকল ১০৮, ১১০, ১১৬
 মচুৰ ৭৮
 মটক ১৪৫
 মণিকূট ১১৯
 মণিপুৰ ৬৯
 মণি-মুক্তা ৯৬
 মণিৰাম দেৱান ১৯২
 মনীন্দ্র মোহন বসু ৩১০
 মতা ছাগলী ৫৯
 মৎস্য-পুৰাণ ৩৫২
 মৎস্যেন্দ্ৰ নাথ ১৪৯
 মদন পূজা ১২৭
 মধুমদ ১৩৬
 মনকৰ ১৫১
 মনসা পূজা ১২১
 মনুষ্য ক্ৰয়-বিক্ৰয় পত্ৰ ২১৬

মনুসংহিতা ১২৬
 মনোৰথ ১২৩
 মন্ত্ৰ ১৭১, ১৭২, ২৯০
 মন্ত্ৰ আৰু গীত ৩০৭
 ময়ানামতীৰ গান ৩৪২
 ময়ূৰধ্বজপাল ৪৬
 ময়ূৰশাস্ত্ৰ ১৩, ১৭, ১৯
 ম'ৰা ৬৫
 মৰাণ ৪৩, ৮৪, ১৪৫, ১৪৮
 মৰিচ ১৩৬
 মৰ্চিয়া গীত ১৫২
 মল্লাৰী ১৫১
 মহং ৮১
 মহ' ৬৪, ৭৯, ৮১
 মহম্মদ চাহাবুদ্দিন ১৫০
 মহম্মদ-বিন-বখ্তিয়াৰ ৮৪, ৯৭
 মহম্মদ শহীদুল্লাহ ৩১০, ৩৬৮
 মহাদ্বাৰাধিপতি ১১৫
 মহাপ্ৰতিহাৰ ১১৫
 মহাভাৰত ৩, ৫৬, ১০৫, ১০৯, ১১৬, ১২২
 মহাভৈৰৱ মন্দিৰ ১১৭
 মহামণিকা ১৯১, ১৯২, ৪৪০, ৪৪২, ৪৫৫
 মহামাতা ১১৫
 মহামানি ৪৫০
 মহামায়াৰ মন্দিৰ ১১৮
 মহামুনি ১১৯
 মহাযান ৩০৯, ৩১৪
 মহাসামন্ত ১১৪
 মহাসেন গুপ্ত ১৪, ১৫, ১৬
 মহাসৈন্যপতি ১১৫
 মহিষমৰ্দ্দিনী ১১৮
 মহীধৰপাদ ৩৩৪
 মহীপাল ২৯

৪৮২ অসমীয়া সাহিত্যৰ

মহীৰঙ্গ দানৱ ১০৯	মানসেহুৰা ১৬৪
মহেন্দ্ৰ কন্দলী ১৯৪	মানাহ ৪৭
মহেন্দ্ৰ পৰ্বত ১৩	মান্দই ১০৮
মহেন্দ্ৰৱৰ্মা ১২, ১৩, ১৪	মায়ন ৩৩, ৩৪
মহেশ্বৰ নেওগ ১১৭, ২১৬, ৩৯৫, ৩৯৬, ৩৯৮, ৪১৪, ৪১৯, ৪২১, ৪২৩, ৪৪১	মাৰাঠী ১৫৯, ১৬০
মাও-চান্ ৫০	মাৰ্কণ্ডেয় (বৈয়াকৰণ) ১৫৯
মাও-লুং ৪৯	মাৰ্কণ্ডেয় পুৰাণ ১২১
মাংস ১৩৬	মালায়ালম্ ২১৩
মাকৈ ৬১	মালশী ১৫১
মাখন ১৩৬	মালিক-উজ্জ্বেক-তুঘীল-খান ৯৩
মাগধী ১৫৯, ১৬০, ১৬১, ১৬৮	মালিতা ২৩৩
মাগধী অপভ্রংশ ১৮৮	মাহাৰাষ্ট্ৰী ১৫৯
মাগধী প্ৰাকৃত ১৮৮	মাহুত-গীত ২৫৮
মাছ ৮১, ১৩৬	মিকিৰ পাহাৰ ৬৫, ১১৮
মাছ মৰা ৬৩	মিচিমি ১১০
মাছৰোকা ৮১	মিছিং ১১০
মাটিমাহ ৫৯, ৬১, ৭৮	মিজো ১১০
মাণিক চন্দ্ৰ ৰাজাৰ গান ৩৪২	মিঠা হোলাং ৮৬
মাতৃপ্ৰধান ব্যৱস্থা ৫৮	মিতাক্ষৰ ৫৯, ১৩০
মাতৃসূত্ৰীয় সমাজব্যৱস্থা ১৩০	মিতালী চট্টোপাধ্যায় ২১৭
মাদল ১৩৮	মিথিলা ২১, ৪২, ৫৭, ১৬৬
মাদলি ১৩৮	মিন্‌হাজ ৩৫
মাদাৰ গডেচ কামাখ্যা ১১৬	মিৰ্জুম্‌লা ৫৭
মাধৱ কন্দলী ১৪৮, ১৫৩, ১৮৭, ১৯০, ১৯১, ১৯৩, ১৯৮, ১৯৯, ২১৯, ৩৬৭, ৩৯৫, ৪১৬, ৪১৭, ৪২৪, ৪৩০, ৪৩৪, ৪৪০, ৪৪১, ৪৪২, ৪৪৬, ৪৪৯, ৪৫০, ৪৫১, ৪৫৩, ৪৫৪, ৪৫৫, ৪৫৬, ৪৫৭	মীননাথ ১২০, ১৭৩
মাধৱদেৱ ৯৪, ১০২, ১৯৩	মুং-কং ৪৯
মাধৱদেৱ (কামৰূপেশ্বৰ) ২১৬, ২২০	মুং-চে-খু ৫০
মাধাই নগৰ তামৰ ফলি ৩৩	মুং-টি ৫০
মান ৪৭	মুং-না ৫০
	মুং-ৰি-মুং-ৰাম ৪৮, ৪৯
	মুং-লাক্-খেন ৫০
	মুইছাল গীত ২৫৮
	মুকুট ১৩৪, ১৩৫
	মুক্তাধৰ্মনাৰায়ণ ৬, ২২০

মুগা ৬৫
 মুদৈ ৯৬
 মুনিদত্ত ৩০৯, ৩১২, ৩২০, ৩২১
 মূৰ্খৰ সাধুকথা ২৭০
 মৃগয়াৰসিক ১২৮
 মৃগাক্ষ ১৫, ৪১, ৪২
 মৃদঙ্গ ১৫১
 মেক কোৰ্ছ ১০১
 মেখলা টীকা ৩১০
 মেখেলা ১৩৪
 মেগাস্থিনিচ্ ৬৬, ১০৮, ১২৯, ৩৫২
 মেঘনা ৫৬
 মেঘবাহন ১১, ১১৯, ২২৮
 মেঘালয় ১৫৮, ২২৯
 মেছ ৪৩
 মেজাঙ্কৰি মুগা ১৩৪
 মেঠ ৮১
 মেৰু পাঠক ১১১
 মেৰু পূজা ২৫০
 মৈত্ৰেয় নাথ ৩১৭
 মৈথিলী ১৫৯, ২১৩
 মৈথিলী লিপি ২১৬
 মৈমনচিং ২৬, ৪০
 মৌখিক সাহিত্য ২৩১
 ম্যানমাৰ ৫০
 ম্যাং-দুন্-চুন্-খাম্ ৫০
 ম্যাং-মাও-লুং ৪৭, ৫১
 ম্যা-সু-ম্যু-জা ৪৯
 ম্লেচ্ছ ১০৯
 যজ্ঞবতী ১২
 যতীন্দ্ৰ নাথ গোস্বামী ৩৬৪
 যমুনা ৮৭
 যশোধৰ্মা ১৩

যাদুবিদ্যাৰে সৈতে জড়িত মন্ত্ৰ ৩০২
 যাদুমূলক মালিতা ২৪১
 যাদুমূলক সাধুকথা ২৬৮
 যুগল চন্দ্ৰ দাস ১৫৩
 যুগী ৮৩
 যুধিষ্ঠিৰ ১৩২
 যু-চাই ১২
 য়ুনা ৬৮
 যোগিনীতন্ত্ৰ ৭, ৯, ৫৬, ৫৯ ৭২, ৮১, ১২৭,
 ১৩৫, ১৩৮, ১৪৬, ১৪৭, ১৯২, ১৯৩,
 ১৯৪, ২২৭
 যোগেশ চন্দ্ৰ বিদ্যানিধি ৩৫৮
 যোজনা ২৭৪
 যোনি পূজা ১১৭
 যোৰহাট ৩৮
 যোৰা নাম ২৫৬
 যৌতুক স্বৰূপ ব্ৰহ্মাৰ তামৰ ফলি ২১৬
 বং ৮১
 বংপুৰ ৩২, ৩৮, ৪০, ১৮৮
 বক্ষিতা ১২৬
 বঘুদেব ৮
 বঘুবংশ ১০৫, ১৩২
 বঘোলি ২৩
 বঙালাউ ৬২
 বণন্তন্ত্ৰ ২৭
 বত্ৰধ্বজপাল ৩৮, ৩৯, ৪৫, ৪৬
 বত্ৰপাল ২২, ২৩, ২৭, ২৮, ২৯, ৩০, ৩১,
 ৩৩, ৮৭, ১১৩, ১১৬, ১১৭, ১২০, ১২৭,
 ১৫০, ২১৯
 বত্ৰপুৰ ৪৬
 বত্ৰবতী ১১
 বত্ৰসিংহ ৪১
 বত্ৰা ৩১

৪৮৪ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

ৰবিন্‌চন ১০১

ৰমেশ চন্দ্ৰ দত্ত ৩৬৭

ৰাইচ্ ডেভিডচ্ ৩১২

ৰাউত্তকোচি তামৰ ফলি ২২০

ৰাক্ষস বিবাহ ৫৮, ১২৪

ৰাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যায় ৩৬৮

ৰাঙ্গলগিৰি ৪৫

ৰাজতৰঙ্গিণী ১১৯, ২২৭

ৰাজনী ৪১, ৫১

ৰাজৰাজ ২৯

ৰাজমোহন নাথ ১১৮

ৰাজসূয় ১৩২

ৰাজস্থানী ১৫৯

ৰাজ্জী ২২৯

ৰাজ্যদেৱী ৩১

ৰাজ্যপাল ২৯

ৰাজ্যমতী ২৩, ২২৯

ৰাজ্যবৰ্ধন ১৬

ৰাজ্যশ্ৰী ১৬

ৰাণক ১১৫

ৰাণী ২২৯

ৰাতিখোৱা সম্প্ৰদায় ২৫০

ৰাভা ৪৩, ১১০

ৰামচন্দ্ৰ ৪১

ৰামচৰণ ঠাকুৰ ৪০, ৪১৪

ৰামপাল ৩৩, ৩৪

ৰাম সৰস্বতী ৪৫৫, ৪৫৭

ৰামাই পণ্ডিত ৩৫৬

ৰামানন্দ দ্বিজ ১৯৩

ৰামায়ণ ৩, ৭৭, ১০৫, ১০৭, ১০৯, ১২২,

১৯৪, ৩৫১, ৪৪০, ৪৪১

ৰায়াৰিদ্‌ৱ ৩৪

ৰিজলী ৪৩

ৰিহা ১৩৪

ৰুকুনুদ্দিন-বৰবাক্-চাহ ৪২

ৰু-চাও ৫০

ৰুদ্ৰ কন্দলী ১৪৭, ১৯৯, ২১৯, ৪২১, ৪২২,
৪২৩, ৪২৫, ৪২৬, ৪২৭, ৪৩১, ৪৩২, ৪৩৩,
৪৩৭

ৰুদ্ৰসিংহ ৫৫, ২১৬

ৰু-পাক ৫০

ৰু-ৰিং ৫০

ৰূপ ৬৬, ৮১, ৮৪, ৯৬, ৯৯

ৰূপৱতী ৪৫

ৰূপেশ্বৰ দত্ত ৩৪৯

ৰেচম ৬৫, ৬৯

ৰেমছি ১৩৮

ৰোম ১০৬

ৰোমান্টিক সাধুকথা ২৬৮

লক্ষীমপুৰ ৩৯, ১১৮, ১৪৫

লক্ষণসেন , ৩৩, ৩৪, ৩৫

লক্ষণসেনৰ তামৰ ফলি ২১৭

লক্ষণৱতী ৩৫

লক্ষ্মীনাৰায়ণ ৮

লক্ষ্মীনাৰায়ণ পূজা ১১৯

লক্ষ্মীনাৰায়ণৰ ভূমি দানৰ তামৰ ফলি ২১৬

লঙ্গো ৪৮

ল'ৰা ছোৱালীৰ সৈতে জড়িত গীত ২৬০

ললিতকান্তা ৪, ৫, ৬, ৮

লৱ-কুশৰ যুদ্ধ ১৯৮, ৩৯৮, ৩৯৯, ৪১১

লা ৬৬, ৬৯, ৮১, ৮২

লাইশাক ৬২, ৭৮

লাক্ষা ৮

লাডাখ ১০৯

লামা তাৰনাথ ১১৯

লাক ১৩৬

লালুং ৪৩
 লাসটকীয়া (লাখটকীয়া?) ধনাই মুদৈ ৯৭
 লাহী ধান ৭৭
 লীলা গগৈ ৩৪৩
 লুইপাদ ১২০, ১৭৩, ৩৩৫
 লেংদন ৪৭, ৪৮, ৪৯
 লেখক ১১২
 লেখয়িতা ১১৪
 লেপেটকটা তামৰ ফলি ২১৬
 লো ৬৬, ৮১, ৮৫, ৮৬
 লোক-গীত ২৩২
 লোকনাথ ৪৫৩
 লোকৰক্ষিত ৩১৪
 লোণ ৬৭, ৬৯, ৮১
 লো-স্তুন্-পা ১১, ১২, ১১৯, ২২৮
 লোহিত জিলা ৬, ৩০, ৩৮
 লৌহিত্য ১৩
 রাং-হিউৱেন-চি ১৮, ২২৮
 ৰিব্বাপাদ ৩৩১
 ৰীণাপাদ ৩৩২
 শক ২৯
 শক্ৰোত্থান ১২৭
 শগুন ৮১
 শঙ্কৰ দিগ্বিজয় ১২৮
 শঙ্কৰদেৱ ৪১, ৫৬, ৫৭, ৫৮, ৮৩, ৮৭, ৯৩, ৯৪, ১০২, ১১৮, ১২২, ১৩৬, ১৪০, ১৪৯, ১৫২, ১৯৩, ১৯৪, ১৯৮, ১৯৯, ৩৬৩, ৩৬৪, ৩৬৭, ৩৮৪, ৩৯৭, ৪১৬, ৪৪০, ৪৪৭, ৪৫৭, ৪৫৮
 শঙ্কৰ-নাৰায়ণ শিলা মূৰ্তি লিপি ২৪
 শঙ্কৰাচাৰ্য ১২৮
 শঙ্খ ১৩৮, ১৫১
 শঙ্খধ্বজপাল ৪৬

শৰৎস্তু ৬৫, ১৩৪
 শদিয়া ২৪, ৪৫, ৪৬, ৮১, ৮৭, ১২১
 শমন ছই-লি ১৭, ১৮
 শৰণীয়া ৪৩
 শৰণীয়া কছাৰী ১১৬
 শৰাই ১৩৭
 শৱদাহ ৬০
 শৱৰ ১১৬
 শৱৰপাদ ১৭৩, ৩৩৬
 শৱৰী ১৫১
 শৱৰোৎসৱ ১২৭, ১৫১
 শশাঙ্ক ১৬, ১৭
 শশিভূষণ দাশগুপ্ত ৩১০
 শশিশেখৰ তিৱাৰী ২৮৬
 শাক্ত ১১৬
 শাক্তধৰ্ম ৫৭
 শাগ জাতি ১০৭
 শাস্তিপাদ ৩৩৬
 শান্তিভিক্ষু শাস্ত্রী ৩১০
 শাম শাস্ত্রী ১৩১
 শাৰদা লিপি ২১৩
 শালস্তম্ভ ২২, ২৭, ২৮, ১৯৩
 শালস্তম্ভ বংশ ১১৬
 শালিকা ৮১
 শালিধান ৭৭
 শাহবাজগটী ১৬৪
 শিমলু ৭৯
 শিমলুগুৰি ৫০
 শিলৰ সাঁকো ৮৬, ১০১
 শিলাদিত্য ১৫৪
 শিলিমপুৰ ৩২, ৩৩, ৯৩
 শিৱ ৮৭, ১৩৯
 শিৱ চতুৰ্দশী ব্ৰত ১২৭

৪৮৬ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

শিৱনাথ ভট্টাচাৰ্য ৩৯৮

শিৱসাগৰ ৩৮, ৩৯, ১১৭, ১৪৫, ১৮৮

শীলভদ্ৰ ১৭

শুভক্লৰপাটক তামৰ ফলি ৩১, ৩২, ১১৩, ১১৪, ১১৫, ১৩০

শুদ্ধ ৭০

শুৱালকুছি ৮৭

শুকৰাঙ্ক ৪১

শুভৰাঙ্ক ৪১

শূন্য পুৰাণ ৩৫৬

শূন্যযান ৩০৯

শৈৱ ১১৬

শোণিতপুৰ ৩৯, ১১৮, ১৩৯

শোৱালকুছি তামৰ ফলি ১১৫

শৌৰসেনী ১৫৯, ১৬৮, ১৭২

শ্মশানকালীৰ পূজা ১২৭

শ্যামা দেৱী ১৫

শ্ৰাবন্তি ৩২

শ্ৰীকৃষ্ণ-কীৰ্ত্তন ৩৬৬

শ্ৰীচন্দ্ৰ ৩১

শ্ৰীধৰ দাস ৩২, ২১৯, ২২৬

শ্ৰীফল ৭৯

শ্ৰীৰাম আতা ৯৪

শ্ৰীসূৰ্যপাহাৰ ১২১

শ্ৰীহট্ট ১৮৮

শ্ৰীহৰিষ ২৫

শ্ৰীহৰ্ষ ২৩, ২৫, ২২৯

শ্ৰুতিধৰ ৮, ২৭

শ্বেতগিৰি ৪৫

ষষ্ঠ বিক্ৰমাদিত্য ৩১

ষাউ গৰুৰ শিং ৬৯

সঙ্গীত দামোদৰ ১৫১

সঙ্গীতি সাহিত্য ৩১৪

সতী যোৱা প্ৰথা ১২৬

সত্যনাৰায়ণ-প্ৰত্যক্ষ নাৰায়ণৰ ভূমিদানৰ

তামৰ ফলি ২২০

সত্যেন্দ্ৰ নাথ শৰ্মা ৩৬১, ৪১৪, ৪১৯

সত্যেন্দ্ৰ নাৰায়ণ গোস্বামী ৩৬৪, ৩৮২.

৩৮৮, ৩৯৬

সদুক্তি-কৰ্ণামৃত ৩২, ২১৯, ২২৬

সদগুৰু নাথ ৩২১

সধৰ নৌকি ১১১

সঙ্ঘা ৩৮, ৩৯, ৪০

সঙ্ঘা ভাষা ৩২১, ৩২২

সপ্তকাণ্ড ৰামায়ণ ৪২৪

সভায়িকা ১২৪

সমতট ১৯

সমস্যা প্ৰধান সাঁথৰ ২৮০

সমস্যামূলক সাধু ২৭২

সমাৱৰ্তন ১২৫

সমুদ্ৰগুপ্ত ১০, ১১, ২১৪

সমুদ্ৰপাল ২২০

সমুদ্ৰবৰ্মা ১১

সৰস্বতী ১৩৯

সৰহপাদ ১২০, ১৭৩, ২২৯, ৩৩৭, ৩৩৮

সৰিয়হ ৫৯, ৬১, ৭৮, ১৩৬

সৰুপথাৰ ২১

সৰোজবজ্জ ৩১০

সৰ্পস্তম্ভ ৮৭

সৰ্বানন্দ (বন্দ্যপট্টায়) ২২৭

সৰ্বানন্দ ৰাজকুমাৰ ১৩৩, ১৫১

সৰ্বেশ্বৰ কটকী ২১৪

সৰ্বেশ্বৰ ৰাজগুৰু ১১৮

সহজযান ৩০৯

সাঁচিপাত ৮১

সাজেকথা ২৬৬

সাতসবী ১৩৫
 সাতসবী বুঝা ৯৩
 সাতাকি প্রবেশ ১৯৪, ১৯৫, ১৯৯, ৪২১,
 ৪২২, ৪২৩, ৪২৭, ৪৩২, ৪৩৪, ৪৩৭
 সাধু ২৬৬
 সাধুকথা ২৬৫, ২৬৬
 সাঁথৰ ২৭৪, ২৭৮
 সাব্বতী ১৫১
 সালন্ত ২৫
 সিদ্ধুয়ায় ৪০
 সুকুমাৰ মহন্তৰ ঘৰত পোৱা অসম বুঝা
 ৩৮৫
 সুকুমাৰ সেন ১৭৩, ২১৭, ৩১০, ৩১১,
 ৩৬৬, ৩৬৭, ৩৬৮, ৩৬৯,
 সুকুৰ মায়ুদ ৩৪২
 সুগন্ধি তেল ১৩৫
 সুগন্ধি দ্রব্য ৮৮
 সুনীতি কুমাৰ চেটাৰ্জী ৯, ৪৩, ১৮৮, ২২৯,
 ৩৬৬, ৩৬৭, ৩৬৮
 সুপ্রতিষ্ঠিতবৰ্মা ১৫
 সুভাষিত ১৩৯
 সুমথিৰা ৫৯
 সুবমা ৪৩
 সুবা ১৩৬
 সুবেঞ্জবৰ্মা ১২১, ২১৪, ২২১
 সুবৰ্ণকুডা ৬৬, ১৩২, ১৩৪
 সুবৰ্ণকুডাক ১৩১
 সুস্থিতবৰ্মা ১৪, ১৫
 সূত ১১৫
 সূৰ্য ৮৭, ১২১, ১৩৮
 সূৰ্য-উপাসক ১১৯
 সূৰ্যকান্ত খনিকৰ ৭
 সেক্যাকাৰ ১১৪

সেন্দূৰ ১৩৫
 সোণ ৬৬, ৮১, ৮৪, ৮৫, ৯৬
 সোণকুৰিহা ১৩৪
 সোণাৰী ৮৪, ৯৬
 সোণোৱাল ১৩২
 সোমালনা ৫
 সোবলশিৰী ৫, ৭, ৩৮, ৩৯, ৪৪, ৬৬, ৮১,
 ১৩২
 সৌমাৰ ১৪৫, ১৪৮
 সৌমাৰ প্রাকৃত ১৬৭
 স্বৰ্ণ-পুৰাণ ৩৫১
 স্বৰ্ণ-গুপ্ত ১২
 স্ততিমূলক মন্ত্ৰ ৩০২
 স্তম্-পা ১১
 স্থাপত্য ১৩৭
 স্থিতবৰ্মা ১৪, ১৫
 স্থিৰীকৃত বাক্ বৈশিষ্ট্য ২৭৪
 স্নাতক ১২৫
 স্বৰ্ণনিৰায়ণ ১৪৯
 স্বৰ্ণমুদ্রা ৭০
 হসেবেগ ১৬
 হডগেশ্বৰ ২৬
 হয়গ্ৰীৱ ১১৯
 হৰগৌৰী সঙ্ঘাট ১২২, ১৪৭, ৩৭৪, ৩৭৫,
 ৩৮২, ৩৮৪, ৩৮৬, ৩৮৮, ৩৯২
 হৰণলুকা ১২৮
 হৰপ্রসাদ শাস্ত্ৰী ১৭৩, ৩০৯, ৩১০, ৩৫৬,
 ৩৬২, ৩৬৮
 হৰিশ ১৩৬
 হৰিশা ৫৯, ৮১
 হৰিনাৰায়ণ দত্তবৰুৱা ৩৯৮, ৪১২
 হৰিবংশ ৫৬
 হৰিবৰ বিপ্র ১২৩, ১৩৭, ১৪৮, ১৫৩,

৪৮৮ অসমীয়া সাহিত্যৰ বুৰঞ্জী

১৯৮, ৩৬৭, ৩৯৫, ৩৯৯. ৪০০, ৪১১, ৪১৭,
 ৪২১, ৪২৪, ৪৩০, ৪৩৪
 হৰিহৰ বিপ্ৰ ৪১, ২১৯
 হৰিহৰ শিলামূৰ্তি লিপি ২৪
 হৰ্জৰবৰ্মা ২২, ২৩, ২৪, ২৬, ২৭, ৮৪, ৯২,
 ৯৩, ১১৫, ১১৭, ১৩৩
 হৰ্ষচৰিত ১৫, ১৬, ৫৬, ৯৩, ১০৫, ১৩২,
 ১৩৬, ১৩৯, ২১৯, ২২৬
 হৰ্ষদেৱ ২৩, ২৭
 হৰ্ষপাল ৩১, ৩২, ৩৩, ২১৯, ২২৬
 হৰ্ষবৰ্ধন ১৬, ১৭, ১৮, ১৯, ৫৬, ৬২, ৭৮,
 ৭৯, ৮২, ৮৩, ৯৩, ১৩২, ১৩৫, ১৫৪, ১৭২,
 ২১৯, ২২৬, ২২৮
 হৰ্ষবৰ্মা ২৩
 হলাৰ ফাট ৯৭
 হস্তীবিদ্যাৰ্ণৱ ১২২
 হাওৰাঘাট তামৰ ফলি ১১১
 হাঁচতি ৮৪
 হাজং ৪৩
 হাজাৰ বছৰৰ পুৰাণ বান্ধালা ভাষায় বৌদ্ধ
 গান ও দোহা ৩১০
 হাজো ১১৯
 হাট ৯৮
 হাটকশুলিন্ ১০৯
 হাটকাসুৰ ১০৯
 হাটকেশ্বৰ ১০৯
 হাতী ৭৯, ৮১, ৯৬
 হাতীখকীয়া নগা গাওঁ ৫০
 হাতী দাঁত ৬৯, ৯৬
 হাতী ধৰা ৬৩
 হাতী-পালন ৬৪
 হাবুং ৫০, ৫৩, ৯৭
 হাম্বুংথল তামৰ ফলি ২২, ১১৫

হাৰ ১৩৫
 হাকপ্লেঞ্চৰ ৯৬
 হালধি ৫৯, ৭৮, ১৩৫, ১৩৬
 হালুৱৈ কেওঁট ১১৪
 হাঁহ ৫৯, ১৩৯
 হাঁহ-পাৰ ৭৯
 হিউয়েন-চাং ১৫, ১৭, ১৮, ১৯, ২১, ৫৬,
 ৬২, ৭৯, ১০৬, ১১৯, ১২০, ১৩৪, ১৬১,
 ১৭১, ২২৮
 হিডিস্বা ৪৪
 হিডিস্বা ৰাজ্য ৪৩
 হিতেশ্বৰ বৰবৰুৱা ১৫০, ১৫৩
 হিন্দী ১৬০
 হিন্দু ৫৭
 হিমালয় ২৪
 History of Assam ৩৭৪
 History of Bengali Literature ৩৬০
 হীৰা ৮৭, ১১৫
 হুঁচৰি গীত ২৫৪
 হুচেন চাহ ৩৮৫
 হেংদান ৪৮
 হেঙ্‌সিৰা ৮
 হেডন ১০৮
 হেমকোষ ৩৮৫
 হেমচন্দ্ৰ গোস্বামী ৩৭৪
 হেম সৰস্বতী ৪১, ১৪৭, ১৯১, ১৯৮, ১৯৯,
 ২১৯, ৩৭৪, ৩৭৬, ৩৭৮, ৩৮১, ৩৮২, ৩৮৩,
 ৩৮৪, ৪২১
 হেমেন্দ্ৰ নাথ দত্ত ২২
 হেককত্তৱ ৩২১
 হোকৰা কুছীয়া লোণ মূদৈ ৯৭
 হোচেন- চাহ ৪২
 হোজাই ৪৩